अलौकिक यथार्थ

श्री बाबा नीब करौरी जी महाराज

राजीदा

अलौकिक यथार्थ

श्री बाबा नीब करौरी जी महाराज

रवि प्रकाश पाण्डे 'राजीदा'

श्री हनुमान मन्दिर एवं आश्रम
कैंची धाम (नैनीताल)

प्रकाशक :
श्री केहर सिंह
रिटायर्ड आइ.ए.एस.
श्री कैंची हनुमान मन्दिर तथा आश्रम
नैनीताल

© श्री कैंची हनुमान मन्दिर तथा आश्रम ट्रस्ट

प्रथम संस्करण 1983
द्वितीय संस्करण 1995
तृतीय संस्करण 2004

लेसर टाइप सैटिंग, प्रगति लेसर टाइप सैटर्स प्रा. लि., बेगम पुल, मेरठ द्वारा
तथा मुद्रण डी. के फाइन आर्ट प्रैस (प्रा.) लि. दिल्ली-52

बंदना

सिद्धि–सदन, सिन्दुर–बदन, गन–नायक, शुभ ऐन ।
देहु कृपाकरि गुरु भगति, सुरति सतत दिन रैन ।।
श्री चरनन की चन्द्रिका मेटत उर अँधियार ।
ललित भंगिमा भ्रूचपल सुमिरत हरत विकार ।।
छमाशील, लीला वपुष, प्रकटे द्विजवर गेह ।
मम मानस मन्दिर बसहु, सत्‌गुरु सहित सनेह ।।
नमत नाथ जन दीन हित, भ्रमित त्रसित कलिवास ।
दानी दाता देव तुम, हरहु सकल भ्रम पास ।।
सदा सदा मैं शरण तव, शरणागत की आस ।
शरणागतहि उबारिये, गुरु श्री लछमन दास ।।

श्री गुरु चरन सरोज रज, निजमनु मुकुर सुधार ।
बरनऊँ गुरुवर विमल जस, पावन चरित अपार ।।

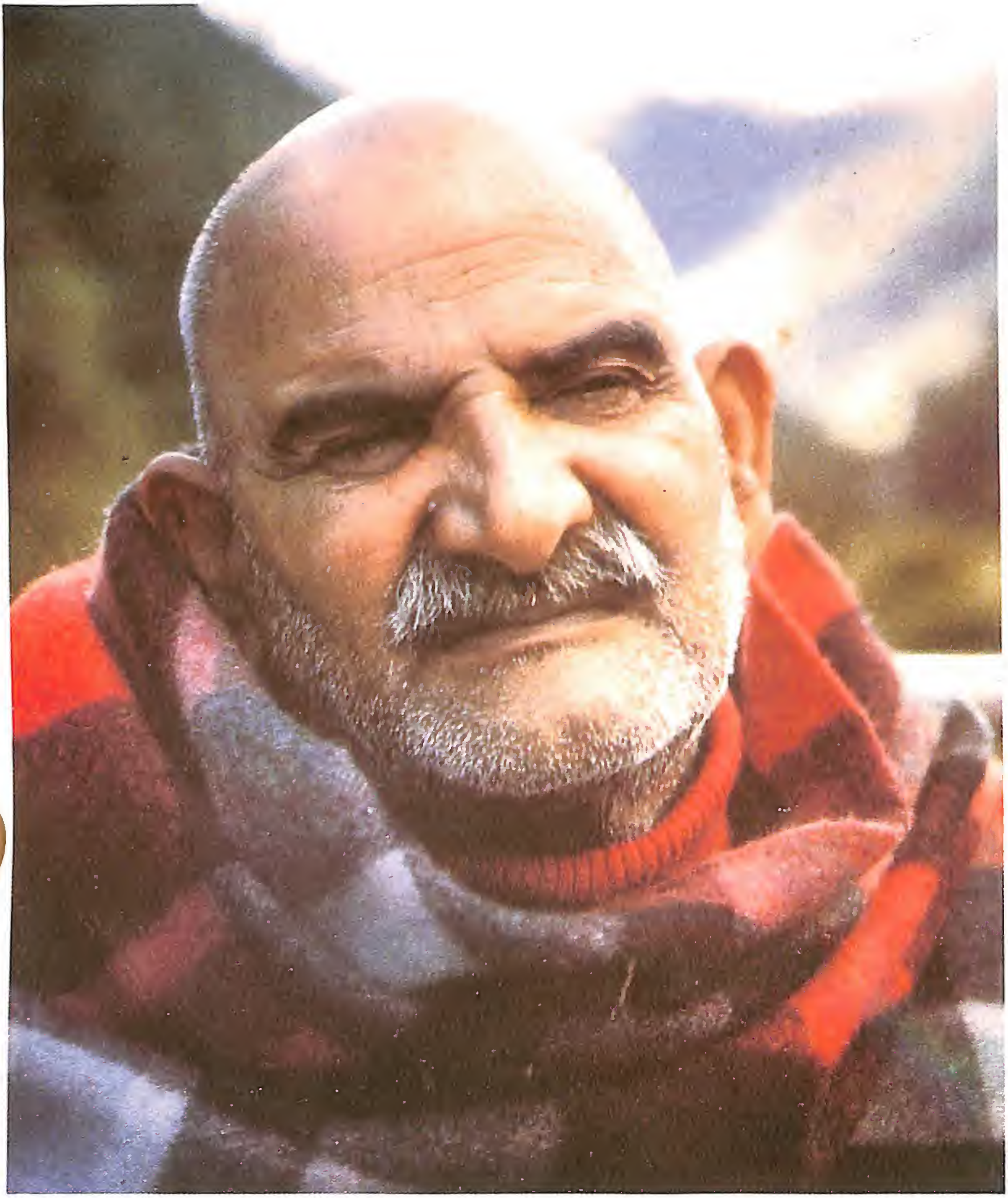

बाबा महाराज

कृपा याचना

हे अशरण शरण ! हे भक्त वत्सल ! हे कृपा मूर्ति ! हे क्षमा मन्दिर! आपके अनेक नाम हैं । कोई आपको लछमन दास नाम से जानता है, कोई बाबा नीब करौरी तो कोई तलैया बाबा आदि । कोई आपको 'महाराज' कह कर सम्बोधित करता है, कोई 'सरकार', तो कोई केवल 'बाबा' । सभी सार्थक हैं, पर इस दास को बाबा शब्द सर्वाधिक प्रिय है । आप प्रत्येक गृहस्थ के वयोवृद्ध बाबा बन कर रहे, सब की चिन्ताओं का वहन करते रहे। आपके निष्कपट एवं सरल व्यवहार, विशुद्ध प्रेम और अहेतुक अपनत्व के आगे सभी अपने अन्तर्मन की व्यथा को निःसंकोच व्यक्त करते और आप उन्हें आश्वस्त करते रहे । हे भगवान आप सर्वसमर्थ हैं, सर्वद्रष्टा हैं, सर्वश्रोता हैं और सर्वव्यापक हैं । महाराज ! आप ही राम हैं, आप ही कृष्ण हैं, आप ही शिव हैं, आप ही भगवती दुर्गा हैं और आप ही हनुमान हैं । यह आपकी लीला की विशेषता थी जिसने हमारी आँखों में परदा डाल दिया और हम आपको जान न सके । जानते भी कैसे ? सान्निध्य भले ही प्राप्त हुआ, पर गुरु–कृपा बिना परिचय नहीं । भगवान् मिल गये और हम परिपाटी निभाने लगे । अज्ञानवश भगवान् को ही गुरु मानने लगे । आपने कहा, **"हम शिष्य नहीं भक्त बनाते हैं ।"** इतना संकेत यथेष्ट था, पर हम अचेत थे । हमारा हृदय नहीं चेता । हे नरहरि ! आप हमारे सम्बन्ध की रक्षा करें । आपके पादपद्मों में इस दासानुदास का कोटिशः प्रणाम ।

बाबा ! यह आपका स्वभाव रहा कि आपने सदैव हर तिरस्कृत को ऊपर उठाया और उसे लोकप्रिय बनाया, फिर भले

ही वह भूमि हो या व्यक्ति । अपने जन की साधारण रुचि को रखने में भी आप सदा तत्पर रहे । आपके इस अवोध दास के मन में एक लालसा जाग उठी है । आप सर्वज्ञ हैं, आपकी गति सर्वत्र है । अन्तर्मन में उठने वाले इन विचारों की सत्यता आपसे छिपी नहीं है । **"सन्त और भगवान से कुछ माँगना नहीं पड़ता, वे जो उचित हो उसे स्वतः देते हैं"**, ऐसा आप कहते रहे । हे प्रभु ! यदि यह रुचि आपको उचित जान पड़े तो मेरा विश्वास है कि आपकी कृपा इस कार्य को अवश्य पूर्ण करेगी। हे कृपा–सागर ! प्रति पल, होने वाली आपकी अनुपम, अलौकिक एवं आनन्दमय लीला–सौरभ को सर्वत्र प्रसारित करने की कामना है, पर हूँ लाचार। 'भाग छोट अभिलाष बड़', इस महान कार्य के लिये मैं अपने को नितान्त अयोग्य पाता हूँ । शब्दों में आपकी अलौकिकता को व्यक्त करने की सामर्थ्य नहीं है । आप अनन्त हैं और आपकी अनन्त लीलाओं की भाषा में अभिव्यक्ति का प्रयास, दोनों हाथों से सागर उलीचना है । कितना ही कहा जाय और कितना ही लिखा जाय, सन्तोष नहीं हो सकता । आप अद्‌भुत और अद्वितीय हैं । नेति–नेति कह कर मौन हो जाना सभी ने चाहा, पर भगवान् की महिमा का गान किये बिना कोई न रहा । इस दास की स्थिति और भी गिरी है। एक ओर साधन की निजी निर्बलता, तिस पर भाषा, साहित्य और कला का बोध नहीं । ऐसी दशा में इस लीलामृत को सुरक्षित कर पाना और उसे सुपात्र तक पहुँचा सकना किसी प्रकार भी सम्भव प्रतीत नहीं होता । अपने जीवन की इस सन्ध्या बेला में, अपनी टूटी–फूटी नौका और जीर्ण पतवारों को लेकर, मुझ जैसे अकुशल नाविक के लिये इस तूफानी समुद्र में उतरना दुस्साहस मात्र है । केवल आपकी अलौकिक शक्ति के सहारे मैं इस दुष्कर कार्य के लिये उद्यत् हुआ हूँ ।

बाबा ! आपकी दिव्य देह से निरन्तर होने वाली लीलाओं का सामंजस्य साधारण मानवीय अनुभवों से न होने के कारण, ये सत्य होते हुए भी विश्वसनीय प्रतीत नहीं होतीं । इनकी अनुभूति लोगों को व्यक्तिगत रूप से हो पायी है, इस कारण प्रकाश में न आ सकी । भक्तजन आपकी लीला सम्बन्धी अपने अनुभवों की चर्चा आपस में कर आनन्दित होते रहे, पर लिपिबद्ध न कर पाये। इस प्रकार यह विश्व की वस्तु कुछ भक्तों तक ही सीमित रह गयी और मौखिक होने से कालान्तर में लुप्त भी हो सकती है । बाबा! आप सदा अमानी रहे, अपनी महानता छिपाये रहे और सदा आडम्बर रहित सामान्य मनुष्य के रूप में जन समुदाय के बीच लोक कल्याण कार्य करते रहे । प्रचार किसी रूप में भी आपको भाया नहीं । आपकी इच्छा का ध्यान रखते हुए भक्तजन अपरिचितों से अपने सुन्दर अनुभवों की अभिव्यक्ति करने का साहस भी न कर पाये । यह आपकी इच्छा शक्ति की विशेषता रही कि आपके सान्निध्य से प्रभावित होने वाले देश–विदेश के प्रतिष्ठित व्यक्ति, लेखक एवं पत्रकार भी आपकी समाधि के पूर्व आपके विषय में कुछ खास नहीं लिख पाये ।

हे नर–रुप हरि ! आपने अपनी नर लीला लोक दृष्टि से समाप्त दर्शा दी है । आपका इस प्रकार ओझल हो जाना भी आपकी एक विचित्र लीला ही है । आपका आर्द्र स्वभाव अब भी सजग है और पूर्ववत् दीन जनों के योग और क्षेम के वहन में सक्रिय है । भगवान, मैं जानना चाहता हूँ कि जन–जीवन को एक नया दृष्टिकोण प्रदान करने वाली तथा नयी दिशा दिखाने वाली आपकी अलौकिक लीलाओं में अब भी किसी प्रकार का परदा आवश्यक है ? यदि इस कार्य में आपकी अनुमति हो तो कृपाकर आप इस दास के हृदय में विराजें, बुद्धि को आलोकित करें और

इस शिथिल लेखनी को चलायमान कर कृतार्थ करें । असम्भव कार्य को सम्भव करने की सामर्थ्य केवल आप में है । आपकी कृपा होने पर मेरी समस्त कठिनाइयाँ दूर हो जायेंगी और कार्य अनायास सम्पन्न हो जायेगा ।

हे कृपा के सागर ! मैं आपकी कृपा का आकांक्षी हूं ।

श्रद्धा के यह पुष्प कछु, चरनन धरे सम्हार ।
परम पूज्य गुरु देव प्रभु, कर लीजै स्वीकार ।।

श्री कैंचीधाम, जिला नैनीताल,
भाद्र–शुक्ल, अनन्त चतुर्दशी,
21 सितम्बर 1983

आपका
चरणाश्रित

अनुक्रमणिका

पृ. स.

1. आमुख — VII – XII

2. संदर्भ–संकेत सारिणी — XIII–XVI

भाग एक–चरितामृत

1. ***परिचय*** — 1 – 11

   बाबा के स्थूल रूप में अनन्त शक्ति के दर्शन । सूक्ष्म भौतिक परिचय–जन्म, पलायन, निर्माण कार्य एवं महाप्रयाण ।

2. ***स्वभाव एवं स्वरूप*** — 13 – 33

   अलौकिक शक्ति सम्पन्न दिव्य पुरुष – लोक कल्याण एवं धर्म प्रचार हेतु अवतरित । आडम्बर रहित, निज प्रशंसा एवं प्रचार से अरुचि, द्वन्द्वातीत पर लोक–दृष्टि से वास्तविकता को छिपाने के लिये मानवीय दुर्बलताओं का प्रदर्शन, इस प्रकार अज्ञात सामान्य व्यक्ति के रूप में विचरण । करुणा–कृपा की मूर्ति, वसुधैव कुटुम्बकम् का पोषण और जगत पिता के रूप में त्रिताप निवारण । दीन–हीन प्रिय, अनुपम क्षमाशीलता, संग्राही होते हुए भी अपरिग्रही, याचक नहीं प्रभु, अन्य साधुओं से भिन्नता । आहार, निद्रा, विचरण, हास्य विनोद और व्यवहार । स्वयं निर्भय और अभय कर्ता, उच्च भगवत् निष्ठा एवं विश्वास । शाब्दिक ज्ञान, उपदेश और प्रवचन अमान्य । वाणी रहस्यमय एवं सार्थक । किसी भी भाषा में की गयी अभिव्यक्ति की जानकारी । पुनर्जन्म, उदारता, मातृ–पितृ भक्ति, भगवत् दर्शन, निष्काम कर्मयोग, ध्यान आदि विषयों में बाबा के कतिपय विचारों का परिचय । बाबा का सत्संग एवं दर्शन ।

3. ***निर्माण कार्य*** — 35 – 67

   हनुमान गढ़, भूमियाधार, कैंची, काकड़ीघाट, लखनऊ, कानपुर, वृन्दावन, दिल्ली आदि स्थानों में सुन्दर, शान्त और भव्य आश्रमों एवं मन्दिरों की स्थापना और उनका प्रतिष्ठानों को अर्पण ।

4. ***बाबा की रहस्यात्मकता*** — 69 – 75

   एक दृष्टि

5. *बाबा का दरबार*
एक झांकी 77 – 80

भाग दो – लीलामृत

6. *सर्वज्ञता* 83 – 129
सब से सुपरिचित, सब के भावों और विचारों की जानकारी । अव्यक्त इच्छा की पूर्ति, चिन्ताओं का निवारण । आदेशों की सार्थकता । सब के भूत, भविष्य और वर्तमान की जानकारी ।

7. *सर्वव्यापकता* 131 – 169
देश–काल की सीमा से परे – सर्वत्र कार्यरत, कहीं दृश्यमान और कहीं अदृश्य, वस्तु मार्ग में व्यवधान नहीं । आकाश तत्व पर पूर्ण अधिकार ।

8. *सर्वशक्तिमत्ता* 171 – 265
दृढ़ इच्छा शक्ति के खेल और प्रेरणा शक्ति के कार्य । प्रकृति पर पूर्ण नियन्त्रण – पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश तत्वों पर पूर्ण अधिकार ।

9. *करुणा के सागर और कृपा की मूर्ति* 267 – 315
करुणा और कृपा बाबा की स्वभावतः सहज क्रिया । परिवार और व्यक्तियों के रोग, शोक, दुःख, दारिद्र्य का निवारण कर उनका कल्याण करना उनका कार्य ।

10. *विविध लीलाएँ* 317 – 353
बाबा के निकटतम् दर्शन उनके साथ की गयी यात्राएँ । व्यक्तियों के साथ उनके सम्बन्ध, व्यवहार, वार्ताएँ अथवा उनके अद्भुत कार्यों के प्रसंगों का उल्लेख ।

11. *महाप्रयाण और उसके बाद* 355 – 403
शरीर शान्त कर दर्शाने की नाटकीय लीला । भक्तों के योग–क्षेम में अब भी उनके कार्यों की स्पष्ट झलक ।

12. *समर्पण*

13. *परिशिष्ट* 405 – 412

आमुख

ईश्वर सर्वज्ञ है, सर्वव्याप्त है और सर्वशक्तिमान है । वह संसार के लिये करुणा–वरुणालय है । यह बात इसलिए भी समझ में आती है कि आखिर अखिल ब्रह्माण्ड का सृष्टा, नियन्त्रक और लयकर्ता इसके अतिरिक्त और हो भी कौन सकता है ? हम उसे जानते नहीं, क्योंकि वह हमें दिखायी नहीं देता और यदि वह किसी प्रकार दिखायी भी देता हो तो हम उससे परिचित नहीं हो पाते । फिर भी, हम उसे नहीं जानते हुए भी मानते हैं । पर सब प्रकार से सीमित किसी मानव में यदि इन दिव्य गुणों की उपस्थिति झलकने लगे तो लोगों का संशयग्रस्त होना स्वाभाविक है और इससे उत्पन्न होने वाला मतिभ्रम, ऐसे दिव्य गुणों से परिपूर्ण महापुरुष को ईश्वर का प्रतिरूप जानने–मानने से रोकता है ।

फिर, ईश्वर वस्तुतः निर्गुण व निराकार है और उसकी प्रकृति सगुण, साकार । वह अपनी प्रकृति में भी व्याप्त रहता है । तत्वतः सगुण–साकार, निर्गुण–निराकार की सजग अनुभूति है । इस प्रकार प्रत्येक मानव अथवा प्राणिमात्र में ईश्वर विद्यमान है । निर्विकार और शुद्ध चित्त महापुरुष में उसकी पूर्ण प्रतिष्ठा झलकती है, इसलिए ऐसे महामानव ईश्वर के अवतार कहे जाते हैं । ऐसे अवतरित पूर्ण पुरुष का दृश्यमान रूप भले ही हाड़–मांस से निर्मित दिखायी दे, पर होता वह दिव्य है । उसमें ईश्वरीय विशेषताएँ यथावत् विद्यमान रहती हैं । साधारण मानव की भाँति वह प्रकृति के अधीन नहीं रहता, अपितु सम्पूर्ण प्रकृति उसके अधीन रहती है । श्री परम पूज्यपाद बाबा नीब करौरी जी महाराज इस अलौकिक प्रक्रिया के एक जीवन्त यथार्थ हैं । बाबा के मानव रूप में एक दिव्य लहर आयी जो लोगों को अपनी कृपा और प्रेम में निमग्न कर गयी । अविश्वसनीय सी बात तो यह है कि उनके महाप्रयाण के बाद इस लहर ने ज्वार का रूप ले लिया है और लोगों को उनकी कृपा की उत्तरोत्तर अनुभूति होती जा रही है । विश्वभर में उनके अनेक नये भक्त स्वतः बनते जा रहे हैं और इन भारतीय और विदेशी नये भक्तों की उन पर आस्था देखते ही बनती है ।

बाबा महाराज की लीलाएँ व्यक्तियों के निजी अनुभव हैं । उन्होंने प्रदर्शन के रूप में अपनी शक्तियों का यथासम्भव उपयोग नहीं किया । अपनी यथार्थता को वे बड़े कौशल से छिपाये रहे । प्रशंसा और प्रचार उनके लिये सदा सारहीन और तुच्छ रहे । इन कारणों से उनके पार्थिव लीला काल में उनके मनुष्येतर कार्यों को लिपि–बद्ध करने का साहस किसी में न हुआ । एक बार हिमांचल प्रदेश के उप–राज्यपाल स्व. राजा भद्री ने बड़े

प्रयत्न से बाबा की अनेक लीलाओं का संकलन किया था । बाबा ने उसके प्रकाशन की अनुमति उन्हें नहीं दी और अपने सामने ही उस संकलन को नष्ट करवा दिया । अपने समय के अच्छे विचारक और कुशल लेखक स्व. के.एम. मुन्शी जी, बाबा की लीलाओं से प्रभावित होकर, बिना उनसे अनुमति प्राप्त किये, भूल से उनके सम्बन्ध में कतिपय लेख प्रकाशित कर बैठे जिनके लिये उन्हें बाबा के आगे खेद प्रकट करना पड़ा । सामान्य लोग बाबा की तद्विषयक अरुचि को ध्यान में रखते हुए अपरिचित लोगों से अपने सुन्दर अनुभवों को भी छिपाते रहे ।

इस दिशा में सराहनीय प्रयास बाबा के एक अमरीकी भक्त डा. रिचार्ड एल्पर्ट, प्रो. मनोविज्ञान हारवर्ड विश्वविद्यालय, बोस्टन ने किया, जिन्हें बाबा ने भारतीय नाम 'रामदास' दिया था । आपने सन् 1971 में अपनी पुस्तक 'बी हियर नाव' में बाबा के प्रभावपूर्ण सम्पर्क का उल्लेख करते हुए यह बताया कि किस प्रकार डा. रिचार्ड एल्पर्ट की परिणति रामदास में हुई। इस पुस्तक में सम्भवतः बाबा के विवरणों से उन्हें सन्तुष्टि नहीं हुई, इसलिए उन्हें उन पर एक और पुस्तक लिखने की प्रेरणा हुई । बाबा की महासमाधि के छह वर्ष बाद सन 1979 में, आप 'मिरेकिल ऑफ लव' नाम से बाबा पर एक पुस्तक लिखने में सफल हुए, जिसका प्रकाशन संयुक्त राज्य अमरीका से हुआ । इस प्रकाशन से विश्व को इस अलौकिक विभूति के दर्शन हुए, फलतः सर्वत्र लोगों की उनके प्रति जिज्ञासा जाग्रत हुई । इनके अतिरिक्त अन्य लोगों ने भी न्यूनाधिक मात्रा में बाबा के बारे में अंग्रेजी भाषा में लिखा है ।+ इस प्रकार इस भाषा में उनके विषय में कुछ साहित्य उपलब्ध है ।

हिन्दी भाषा में बाबा के सम्बन्ध में साहित्य का अभाव बहुत समय से लोगों को खल रहा है । इस दिशा में 'पद्य' के रूप में प्रथम प्रयास श्री प्रभु दयाल शर्मा का रहा, जिन्होंने 'विनय चालीसा' और 'पुष्पांजलि' नामक

+ अनेक साधु-सन्तों और लेखकों ने अपनी पुस्तकों और पत्रिकाओं में महाराज के सम्बन्ध में अपने अनुभव अंग्रेजी भाषा में व्यक्त किये हैं :-

1. श्री शिवानन्द आश्रम ऋषिकेश की पत्रिका 'दि डिवाइन लाइफ' में यदा कदा बाबा के बारे में लेख प्रकाशित हुए हैं ।

2. उपरोक्त आश्रम के वर्तमान अध्यक्ष श्री स्वामी चिदानन्द जी ने सन् 1976 में "बाबा नीब करौरी" शीर्षक से अपने एक लेख में उनकी अलौकिकताओं का उल्लेख करते हुए उन्हें 'वन्डर मिस्टिक आफ नार्दर्न इन्डिया' कहा है ।

3. फ्रान्स के चिकित्सक डा. ए.जे. वेनट्रोब ने, जो भारत में सन्यास लेने के बाद स्वामी विजयानन्द नाम से जाने गये, अपनी पुस्तक 'इन दि स्टेप्स आफ योगीज' में बाबा के सम्बन्ध में रोचक अनुभव व्यक्त किये हैं ।

4. 'हन्टिंग दि गुरु इन इन्डिया' नामक पुस्तक में एन मार्शल ने भी महाराज की अलौकिक शक्तियों की प्रशंसा की है ।

5. भारतीय सन्त श्री स्वामी राम ने,जो संयुक्त राज्य अमरीका में हिमालयन 'अन्तर्राष्ट्रीय योग, विज्ञान और दर्शन संस्थान के अध्यक्ष हैं अपनी पुस्तक "लिविंग विद हिमालयन मास्टर्स" में बाबा के सम्बन्ध में अपने अनुभव प्रकाशित किये हैं ।

दो छोटी रचनाओं में बाबा के चरित्र की सुन्दर झांकी प्रस्तुत की है । बाबा के महाप्रयाण की तिथि पर प्रति वर्ष उनके वृन्दावन आश्रम से एक पत्रिका 'स्मृति–सुधा प्रकाशित होती है जिसमें बाबा के सम्बन्ध में लोग अपने अपने अनुभव लिपिबद्ध करते हैं । इनके अतिरिक्त बाबा के समाधिस्थ होने के बाद कुछ समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में भी उनके बारे में कुछ लेख हिन्दी भाषा में प्रकाशित हुए हैं ।

प्रस्तुत पुस्तक के लिखने के पूर्व बाबा के सम्बन्ध में उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया गया है । अपनी ओर से अनेकानेक अप्रकाशित लीलाओं का संकलन भी किया गया है और प्रकाशित प्रसंगों की यथासम्भव छान–बीन और पुष्टि स्वतन्त्र रूप से कैंची और वृन्दावन के आश्रमों में आगन्तुकों से और भूमियाधार, नैनीताल, कानपुर, ग्राम नीब करौरी और ग्राम अकबरपुर के लोगों से की गयी है । श्री रामदास ने अपनी पुस्तक 'मिरेकिल आफ लव' में आधुनिक मानसिक प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए बाबा के चरित्र का निरूपण विलक्षण शक्तियों से सम्पन्न एक महा मानव के रूप में किया है, भगवान् के रूप में नहीं । प्रस्तुत पुस्तक भारतीय दृष्टिकोण से प्रभावित हो कर लिखी गयी है । बाबा महाराज की दिव्य लीलाओं से होने वाले अनुभव उनकी अलौकिक महानता को स्वतः प्रतिष्ठित करते हैं । इस दृष्टि से इन सभी अनुभवों का विभाजन 'लीलामृत' के विभिन्न प्रकरणों में ईश्वरीयगुण–सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता, सर्वशक्तिमत्ता और इनके अन्तर्गत अन्य गुणों के आधार पर किया गया है । ये ईश्वरीय गुण अन्योन्याश्रित हैं, इस कारण प्रत्येक प्रकरण में वर्णित बाबा की लीलाओं में अन्य गुणों की भी कुछ न कुछ झलक मिलनी स्वाभाविक है । भगवान् करुणा के सागर भी कहे जाते हैं, इस प्रकार बाबा की करुणा और कृपा का अलग प्रकरण दिया गया है। 'विविध लीलाओं' के प्रकरण में बाबा की हास्य, विनोद प्रियता, उनके साथ की गयी भक्तों की यात्राओं आदि के कुछ संस्मरण, इस विश्वास के साथ प्रस्तुत किये गये हैं कि पाठक बाबा के सहज दर्शन कर सकें । स्वप्नों में बाबा के दर्शन की सार्थकता का उल्लेख भी इस प्रकरण में किया गया है । 'महाप्रयाण और उसके बाद' का प्रकरण लीलात्मक होने से 'लीलामृत' में ही समाविष्ट किया गया है । लीलामृत की सभी घटनाएँ भक्तों के अपने अनुभव हैं उन्हें यथासम्भव यथावत् प्रस्तुत किया गया है । शीर्षकों के बाद या उप शीर्षकों के पूर्व पाठकों को कुछ टिप्पणियाँ पढ़ने को मिलेंगी, जिनका अभिप्राय प्रसंगों का पूर्वाभास या स्पष्टीकरण है । प्रत्येक अध्याय की इति श्री 'राम' नाम से हुई है, क्योंकि यह नाम महाराज को अत्यधिक प्रिय रहा।

इसके पूर्व 'चरितामृत' के अन्तर्गत 'परिचय' और 'स्वभाव और स्वरूप' के प्रकरणों में महाराज के रूप की झांकी प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया

है । 'निर्माण कार्य' के प्रकरण में बाबा के आश्रम एवं मन्दिरों का क्रमिक वर्णन है और तत् सम्बन्धी कतिपय लीलाओं का उल्लेख भी साथ में किया गया है । इस प्रकरण में बाबा के उन आश्रमों एवं मन्दिरों का भी उल्लेख हुआ है जिन्हें उनके महाप्रयाण के बाद भक्तों ने उनके नाम से बनवाया । इसके बाद उनकी रहस्यात्मकता पर अपनी अल्पबुद्धि से कुछ प्रकाश डालने का दुस्साहस भी किया गया है । अन्त में बाबा के दरबार का आँखों देखा वर्णन पाठकों को परिवेश के साथ महाराज के पूर्ण दर्शन कराने के उद्देश्य से दिया गया है ।

महाराज का आचरण सदा अप्रत्याशित ही रहा । जोकुछ भी उनके बारे में कोई सोचता या करता बहुधा बाबा उसके विपरीत ही कार्य करते दिखायी देते । उनकी वाणी और उनके कार्य सभी रहस्य पूर्ण रहे । यद्यपि उनकी अद्भुत लीलाओं की चर्चाएँ उनके जीवन काल में और बाद में भी मौखिक बनी रहीं पर इनकी सत्यता पर सन्देह करना उचित नहीं है, क्योंकि ये सभी जाति, वर्ग और राष्ट्र के लोगों के अपने अनुभव हैं । इन्हें अन्ध श्रद्धा कह कर भी टाला नहीं जा सकता । 'मिरेकिल आफ लव' में देश, काल और सम्बन्धित व्यक्तियों का समुचित स्पष्टीकरण न होते हुए भी वह पुस्तक बाबा की कृपा से विश्व को प्रिय हुई । उसकी माँग इतनी हुई कि शीघ्र ही दूसरा संस्करण प्रकाशित करना पड़ा । इतना ही नहीं इस पुस्तक के प्रकाशन के छः वर्षों के भीतर ही लेखक की अनुमति प्राप्त कर जर्मनी ने इस का अनुवाद प्रकाशित कर दिया है और ऐसा सुना जाता है कि फ्रान्स और इटली में भी इसका अनुवाद हो रहा है । प्रस्तुत पुस्तक में यथा सम्भव घटना से सम्बन्धित व्यक्तियों की जानकारी देने की पूरी चेष्टा की गयी है । इस कार्य में अनेक कठिनाइयाँ हैं, यथा घटनाओं से सम्बन्धित व्यक्तियों की खोज और फिर उनसे सम्पर्क स्थापित करने की समस्या । कहीं पात्रों की सामाजिक प्रतिष्ठा में आक्षेप होने की आशंका से उनके नामों का उल्लेख नहीं किया जा सकता । कहीं व्यक्ति अपना अनुभव तो देता है, पर अपने नाम का उल्लेख नहीं चाहता । इनके अतिरिक्त दरबार में देखने–सुनने में आने वाली अनेक आश्चर्योत्पादक घटनाओं से सम्बन्धित नवागन्तुकों के परिचय उपलब्ध नहीं हैं क्योंकि बाबा को प्रचार नितान्त अप्रिय था और उनकी रुचि के विरुद्ध कोई ऐसा संग्रह कर नहीं पाता था । अतः कुछ ऐसे भी प्रसंगों का समावेश हुआ है जिनमें सम्बन्धित व्यक्तियों के नामों का उल्लेख नहीं हो पाया । विश्वसनीय व्यक्तियों से प्राप्त ऐसे प्रसंगों को जन–श्रुति के आधार पर स्थान दिया गया है ।

इन घटनाओं को काल–क्रम के अनुसार भी नियोजित नहीं किया जा सकता क्योंकि घटना के निश्चित काल का स्मरण करने में लोग असमर्थ

दिखायी देते हैं । अपने सुन्दर अनुभवों का वर्णन वे सविस्तार करते हैं, उनके स्मृति पटल में ये अमिट हैं । अतः इन घटनाओं को प्रतिपाद्य विषय के अनुसार ही रखा गया है ।

बाबा की कृपा करने की अपनी अनूठी शैली थी । जिन पर उनकी कृपा बार–बार हुई वे इस शैली से परिचित हो गये और उनका विश्वास भी दृढ़ हो गया । महाप्रयाण के बाद भी भक्तों के योग–क्षेम के निर्वाह में उनकी इस अद्भुत शैली के अधिकाधिक दर्शन होते हैं । बाबा की कुछ लीलाओं में उनका पार्थिव रूप न देख पाने से, उन पाठकों को जिन्हें उनका सान्निध्य प्राप्त न हो सका, बात कुछ दुरूह हो सकती है पर उपरोक्त परिपेक्ष्य में इनका उचित मूल्यांकन किया जा सकता है । वस्तुतः ये अलौकिक विभूति के कार्य हैं और भौतिक धरातल से ऊपर की बातें हैं, इसलिए अपने को ऊपर उठाये बिना सामान्य व्यक्ति के लिये ऐसे प्रसंगों में बाबा का अस्तित्व खोज पाना निस्सन्देह कठिन है ।

इस पुस्तक में वर्णित बाबा से सम्बन्धित अनुभव प्रतिपल होने वाली उनके अनन्त लीला सागर की कतिपय बूँदें मात्र हैं जिससे उस महासागर की थाह और विस्तार का बोध तो नहीं हो सकता पर उसकी विशेषताओं का अभिज्ञान हो सकता है । साधारण व्यक्ति की दृष्टि में ये रहस्यमय हैं और बोधगम्य प्रतीत नहीं होतीं । इस हेतु आरम्भ में ही 'कृपा याचना' के प्रकरण में बाबा से ही इस कार्य को सफल बनाने की याचना की गयी है ।

बाबा का सान्निध्य पाकर सभी लोगों की एक मात्र धारणा यही है कि समस्त दिव्य गुणों से युक्त, परोपकाररत कृपा निधान बाबा हनुमान जी की ही प्रतिमूर्ति हैं । "कवन सो काज कठिन जग माहीं, जो नहीं होत तात तुम्ह पाहीं", यह उक्ति उन पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होती है । हनुमान अमर कहे जाते हैं, इस कारण बाबा द्वारा होने वाली उनकी अयाचित एवं अभेदपूर्ण कृपा का रूप भी अक्षय है । उनकी रहस्यपूर्ण लीलाओं से सत्य के वास्तविक स्वरूप को जानने की इच्छा होती है जिससे जगत के समस्त पदार्थों में स्वेच्छा से मौलिक परिवर्तन लाया जा सकता है । उनका महान चरित्र अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभाव पूर्ण है जिससे उनके प्रति आस्था को बढ़ावा मिलता है और व्यक्ति को आत्मिक सुधार की प्रेरणा मिलती है । फलतः उन की कृपा की अनुभूति होने लगती है और किसी रूप में अथवा स्वप्न में उनके दर्शन भी होने लगते हैं । अतः बाबा के चरित्र एवं लीलाओं के सम्यक् चिन्तन एवं मनन से पाठकों के विचारों एवं मनोवृत्तियों में सुन्दर परिवर्तनों का आना स्वाभाविक है । यही इस पुस्तक की उपादेयता है ।

मुझे सर्वप्रथम बाबा के दर्शन सन् 1944 में ब्लण्टस्क्वायर लखनऊ में अपने पड़ोस और घर में एक ही दिन हुए । इसके बाद सन् 1953 से यह

सम्पर्क बराबर बढ़ता ही गया । कैंची आश्रम में उनके सान्निध्य में रहने का सुअवसर उनकी कृपा से मुझे सन् 1966 से 31 अगस्त 1973 के बीच समय-समय पर प्रति वर्ष मिलता ही रहा । इस प्रकार बाबा के भक्तों से सम्पर्क भी बढ़ा और उनके सुन्दर अनुभवों को सुनने का सौभाग्य भी प्राप्त होता रहा ।

इस अद्‌भुत एवं अलौकिक विभूति की महानता को व्यक्त करने की क्षमता मुझ जैसे अल्पज्ञ में नहीं है । अतः इस दुस्साहस के लिये पाठकों से क्षमा चाहता हूँ । मैं श्री सिद्धि माँ++ के चरण कमलों में सादर नमन करता हूँ, जिन्होंने मुझे इस कार्य के लिये प्रेरित किया और मुझे सुविधाएँ प्रदान कीं । श्री केहर सिंह (अवकाश प्राप्त) आइ. ए. एस. के प्रति भी जिनका बाबा से निकट सम्पर्क रहा, मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ । आपने बाबा से सम्बन्धित अपने, अपने मित्र उच्चअधिकारियों के तथा अन्य लोगों के अनेकानेक अनुभवों की जानकारी मुझे सुलभ की । मैं अन्य उन सभी लोगों को भी धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इस कार्य के लिये मुझे अपने अनुभवों से अवगत किया, मेरा उत्साह बढ़ाया या किसी रूप में मेरी सहायता की । इस पुस्तक में प्रकाशित बाबा के अनेक छाया-चित्रों की उपलब्धि और इनके प्रकाशन की अनुमति मुझे हनुमान फाउन्डेशन अमरीका से प्राप्त हुई, इसके लिये मैं उनका आभारी हूँ ।

इस पुस्तक में जिस महान विभूति के चरित्र एवं कार्यों का वर्णन हुआ है वह सदा अपने नाम और महानता को छिपाये रही । उनकी कृपा से जो कुछ भी मुझसे बन पड़ा वह पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है । अतः इस पुस्तक का प्रकाशन, मैं निःस्वार्थ भाव से लोक हित में कर रहा हूँ । यदि इस कार्य से, मेरे न चाहते हुए भी, किसी की भावना को किसी प्रकार की ठेस पहुँचे तो इसके लिये मैं विनीत भाव से क्षमा प्रार्थी हूँ ।

अन्त में, मैं इस पुस्तक को और इसके समस्त मूल अधिकारों को श्री कैंची हनुमान मन्दिर एवं आश्रम प्रतिष्ठान (ट्रस्ट) को समर्पित करता हूँ और आशा करता हूँ कि वे मेरी इस सेवा को स्वीकार कर मुझे अनुग्रहीत करेंगे ।

श्री कैंचीधाम, ज़िला नैनीताल — रवि प्रकाश पाण्डे
गुरु पूर्णिमा — 'राजीदा'
11 जुलाई 1987.

++ श्री सिद्धि माँ के लिये इस पुस्तक में श्री माँ का भी प्रयोग हुआ है । सामान्यतः आप 'माँ' शब्द से ही सम्बोधित की जाती हैं ।

संदर्भ-संकेत सारिणी

सांकेतिक संख्या	विषय	लीलामृत प्रसंग संख्या
1	प्रकृति के तत्वों पर अधिकार	146 से 190
2	अपने शरीर और वाह्य जगत में परिवर्तन	131 से 145, 349
3	विभिन्न रूपों में दर्शन	191 से 205
4	कहीं भी प्रकट हो जाते	43, 178 से 186
5	क्षण मात्र में अदृश्य हो जाते	107 से 113
6	बाबा की आयु	345 से 348, 419
7	घरों में जाकर उद्धार करते	8, 14, 62, 63, 97
8	शिक्षा दिलवाते	288
9	विवाह रचाते	263, 281, 286, 291, 318
10	संतति सुख प्रदान करते	217 से 220
11	अकाल मृत्यु निवारण और मृत में प्राणों का संचार करते	305 से 308, 221 से 227, 272
12	रोगों से छुटकारा दिलाते	235 से 242, 269, 297
13	दारिद्र्य का अपहरण	282, 315
14	संकटों से मुक्ति	266, 268, 270, 287, 290, 294, 299, 305, 306, 343, 245
15	कोई भी कार्य असम्भव न था	190, 210 से 213, 215, 219, 235, 236
16	विचारों को जानते, अन्तर्द्वन्द्व में रस लेते	36, 44, 45, 71, 159, 300, 123.
17	सब से पूर्व परिचित प्रतीत होते	2, 3, 5. 74
18	जो चाहते वही होता	325, 326, 339, 349, 112, 113, 143, 144
19	स्थान-स्थान में बाबा के दर्शन	119, 120
20	भक्त की पुकार पर उपस्थित	121, 186, 288

21	परिस्थितियों का सृजन	79, 172, 173, 174, 300 देखिये (हनुमान विग्रह पर मुष्टि प्रहार) 'परिचय', 383
22	प्रेरणा शक्ति के कार्य	244 से 257
23	शिव रूप में दर्शन	(देखिये 'परिचय')
24	राम रूप में	200
25	माँ दुर्गा के रूप में	202
26	बाल गोपाल के रूप में	199
27	हनुमान के रूप में	198
28	किसी भी रूप में	191 से 197, 203 से 205
29	महाप्रयाण एक लीला	380 से 419
30	दर्शन के आगे लीला सामान्य प्रतीत होती	165 से 166, 211 से 213, 215
31	करुणा कृपा की मूर्ति	258 से 322
32	प्रतिष्ठित व्यक्ति भी क्रोध के भाजन बन जाते	76
33	क्रोध के बहाने कृपा	308
34	समता का भाव–हाथ मिलाते	295
35	व्यक्ति अपनी बात कहना भूल जाता	120
36	'तू' शब्द से सम्बोधित करते	253
37	अपरिचित को उसके नाम से बुलाते	5
38	बिना आग्रह के गृहस्थ में प्रवेश	8
39	विवाह वहीं होता जहाँ बाबा कहते	291, 306
40	दूसरों के रोगों को अपने में ले लेते	243, 269, 297
41	महामृत्यु में विधि का विधान मानते	22, 303, 304, 94
42	अन्त समय में आनन्द पूर्ण स्थिति पैदा कर देते	303, 304, 265
43	कृतज्ञता व्यक्त करने का अवसर न देते	185, 186, 225
44	याद करते ही उपस्थित हो जाते	43, 121, 129
45	तिरस्कृत भूमि का चयन	देखिये 'निर्माण-कार्य'— हनुमानगढ़,

		नीब करौरी, लखनऊ, वृन्दावन हनुमान मन्दिरों का निर्माण
46	अनपढ़ के मुँह से गीता पाठ	245
47	डा. रिचार्ड एल्पर्ट का रूपान्तर	251
48	सब जानते हुए भी अनजान दिखायी देते	320, 322
49	चुराई वस्तु चुराने वाले को ही दे देते	321, 322
50	राजकीय दण्ड से मुक्त कर देते	320
51	कानून के मुखापेक्षी नहीं रहे	320, देखिये 'निर्माण-कार्य'— हनुमानगढ़, लखनऊ हनुमान मन्दिरों का निर्माण
52	मनोरथ पूर्ण करने में कल्पतरु	173, 174, 184, 186, 215 से 227, 239, 265, 277, 278, 286, 290, 306, 318
53	पृथ्वी और अग्नि रिजर्व बैंक के नोट प्रस्तुत करती	150, 175
54	जल की परिणति दूध, घी और पैट्रोल में	160, 162, 164
55	सामग्री का आवश्यकतानुसार बढ़ना	155 से 159
56	सूखी रोटी से तृप्ति	335
57	परमहंस की स्थिति	355
58	भोजन बाबा ही करवाते	155 से 157
59	हरिजनों द्वारा दिए गए भोजन में उत्साह	317
60	मार्मिक साधारण वार्ता भाव विभोर कर देती	148
61	मूर्ति से अश्रुपात और मूर्ति को दुग्ध पान	144 तथा 'निर्माण कार्य' – कैंची आश्रम एवं मन्दिर का निर्माण

62	डाँट–मार खाकर भी व्यक्ति बाबा को न छोड़ पाता	76, 308
63	बाबा का सत्संग	84
64	यातायात सम्बन्धी कठिनाई नहीं हो पाती	362
65	बाबा के दर्शन उनकी कृपा से ही होते	111, 187, 188
66	बिना पूछे प्रश्नों का उत्तर	10, 12
67	सर्वत्र सब को देखते और सब की सुनते रहते	76 से 80, 82 से 84, 88 से 90, 100
68	स्वप्नों में सार्थक आदेश	373, 377, 413
69	काया कभी विशाल, क्षीण और कभी सूक्ष्म	139, 191, 108, 109
70	एक हाथ का भार भी असह्य	138
71	काया पुष्प की भाँति हल्की	136, 137
72	स्वयं अन्तर्धान होते, परिकरों सहित भी	187, 188
73	स्वप्न की सार्थकता स्पष्ट प्रमाणों से	374, 375, 378
74	बिना उपकरणों के वैज्ञानिक चमत्कार	228 से 234
75	औपचारिकता के निर्वाह में भविष्य की वार्ता	देखिये 'निर्माण कार्य'– कैंची आश्रम एवं मन्दिर का निर्माण
76	गायें आदेश पालन करतीं	135
77	कर्नल जे. सी. मकन्ना	252
78	दुष्कर कार्य का समाधान	373
79	बीस साल बाद	28
80	मूर्ति की दरार मिट गई	349
81	प्रयोजन अज्ञात रहता	340
82	अनुपस्थिति में उपस्थिति	189
83	दर्शन से आत्म–विस्मृति	372

भाग – एक

चरितामृत

बाबा का प्रारम्भिक छाया चित्र

परिचय

हमारे देश भारत पर चीन का अप्रत्याशित आक्रमण हो रहा था । एलेनगंज इलाहाबाद में एक गृहस्थ के घर एक तख़्त पर धोती पहने कम्बल ओढ़े विराजमान थे एक महानुभाव, विशाल शरीर, चौड़ा वक्षस्थल, आजानुबाहु, भरा बदन, उच्च ललाट, लम्बी नासिका, मोहक नेत्र, चित्ताकर्षक मन्द मुस्कान उनकी आनन्दमयी देह का यह रूप दर्शनीय था । उनके पैरों के पास बैठा यह चरणाश्रित दुःखी था उस दिन के दैनिक समाचार से । चीन तेजपुर से आगे घुसता चला आ रहा था । भारतीय सेना शत्रु का सामना नहीं कर पा रही थी । देश की इस भयावह स्थिति से प्रेरित होकर मैंने इस प्रसंग में उनसे अपने नैराश्यपूर्ण विचार व्यक्त किये । वे सहजभाव से बोले, "**भारत ऋषि मुनियों का देश है । यह धर्म परायण है । कम्युनिज्म यहाँ ठहर नहीं सकता । चीन वापस लौट जायेगा ।**" मैं मन ही मन यह सोच कर दुःखी हो गया कि इस संकटापन्न स्थिति में भी हम भारतवासी कितने उदासीन हैं । मैं तुरन्त विनम्रतापूर्वक बोल उठा, "बाबा ! यदि चीन को लौट ही जाना है तो निरर्थक आक्रमण क्यों कर रहा है ?" मेरे प्रश्न करते ही उन्होंने एक संक्षिप्त उत्तर दे दिया, "**तुम्हें जगाने को**" । मुझे सन्तोष नहीं हुआ, पर मैं मौन हो गया । इस वार्ता के तीसरे दिन प्रातःकाल अखबारों में बड़े–बड़े अक्षरों में प्रमुख समाचार यही था कि चीन की सेनाएँ शान्ति से लौट रही हैं और इसका कोई कारण समाचार पत्रों में व्यक्त नहीं किया गया था । मुझे बाबा की बात स्मरण हो आयी और मैं आश्चर्यचकित हो गया । इस घटना के बाद से भारत सरकार ने पश्चिमी, उत्तरी और पूर्वी सीमाओं की सुरक्षा के लिये जो ठोस प्रयास किये उससे बाबा की जगाने वाली बात भी समझ में आगयी ।

ये थे विश्व के असंख्य लोगों के श्रद्धेय, परम पूज्य पाद, अनन्त श्री विभूषित श्री महाराज जो ग्राम अकबरपुर, जिला आगरा, में लक्ष्मी नारायण शर्मा और ग्राम नीब करौरी, जिला फर्रुखाबाद में बाबा लछमन दास नाम से जाने गये । एक बार बाबा अपने साधना स्थल नीब करौरी ग्राम से पास के

रेलवे स्टेशन फर्रुखाबाद पहुँचे । यहाँ आप एक गाड़ी के प्रथम श्रेणी के कक्ष में जा बैठे । उस समय भारत में अँग्रेजी शासन था । एक ऐंग्लो-इन्डियन कण्डक्टर ने केवल इनका साधु वेश देख कर ग्रामीण स्टेशन पर इन्हें गाड़ी से उतार दिया । आप सहज भाव से प्लेटफार्म में एक स्थान पर जा बैठे । इसके बाद उस गाड़ी का चलना सम्भव नहीं हो पाया । गाड़ी दो घण्टे रुकी रह गयी । स्टेशन के कर्मचारी बेकार इधर-उधर चक्कर काटते रहे । ड्राइवर से विलम्ब का कारण पूछने पर उसका उत्तर स्पष्ट था कि इन्जन में मशीन सम्बन्धी कोई खराबी नहीं । इन्जन पूरा कार्य कर रहा था, पर पहिये आगे नहीं बढ़ रहे थे । इसका कारण उसकी समझ से बाहर था । गाड़ी के सभी डिब्बों की जाँच-पड़ताल हो जाने के बाद किसी को कोई उपाय न सूझा । कुछ कर्मचारियों ने जो निरर्थक प्लेटफार्म में घूम रहे थे, उपहास के तौर पर, बाबा से गाड़ी चलवाने की प्रार्थना की । बाबा बोले, **"हम को गाड़ी से निकाल दिया है और हम ही से गाड़ी चलवाने को कह रहे हो !"** वे बोल, **"आपके पास टिकट न होगा ।"** इस पर बाबा ने कई प्रथम श्रेणी के सही टिकट प्रस्तुत कर दिये । आश्चर्य चकित हो इन लोगों ने उन्हें यथा स्थान गाड़ी में बिठा दिया और गाड़ी चलवाने का निवेदन किया । बाबा ने आज्ञा दी और गाड़ी चल पड़ी । यह बाबा के लिये कोई बड़ा करिश्मा था नहीं, उन्होंने जीवन में रुकी किसकी गाड़ी नहीं चलाई ! यहीं से बाबा लछमन दास, बाबा नीब करौरी नाम से प्रख्यात हुए ।

इसके पूर्व भी इसी प्रकार की उल्लेखनीय घटनाएँ हुई थीं । एक दिन गंगा स्नान के लिए बाबा अपनी गुफा से बाहर निकले ही थे कि उन्हें सामने लगभग दो सौ मीटर दूर पर रेल की पटरी पर फर्रुखाबाद को एक गाड़ी जाती दिखायी दी । बाबा के साथ हर एकादशी और पौर्णमासी को गोपाल नामक एक बहेलिया और एक मुसलमान गंगा-स्नान के लिये जाया करते थे । यह बाबा की मौज थी कि उन्हें उस गाड़ी पर बैठ कर जाने की इच्छा हुई । फिर क्या था, चलती गाड़ी एकाएक रुक गयी और तब तक रुकी रही जब तक कि बाबा अपने परिकरों के साथ उसमें सवार नहीं हो लिये । उनके बैठते ही गाड़ी चल पड़ी । चालक के लिये भी यह सब रहस्य बन कर रह गया । बाबा की इस लीला स्मृति में ग्रामवासियों के आग्रह पर भारत सरकार ने नीब करौरी ग्राम के इस स्थान पर अब 'लछमन दास पुरी' रेलवे स्टेशन बना दिया हैं ।

महाराज का वास्तविक परिचय दे सकना मानवीय सामर्थ्य के बाहर है । प्रकृति के सभी तत्वों पर उनका पूर्ण अधिकार रहा[1]।+ वे अपने शरीर

+ 1, 2, 3 आदि इस प्रकार के संदर्भ-संकेतों के लिये, संदर्भ-संकेत सारिणी का अवलोकन करें ।

में अथवा बाह्य जगत में जैसा भी परिवर्तन चाहते करने में समर्थ थे[2] । वे अपने को किसी रूप में दर्शा सकते और अपनी लीलाओं में विभिन्न रूपों में भी दिखायी दिये[3] । वे कहीं भी अपने को प्रकट कर सकते[4] और क्षण मात्र में अदृश्य हो जाते थे[5] । उनकी अवस्था के बारे में निश्चयात्मक रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता । उनकी लीलाओं से ऐसा भासित होता है कि वे इस जन्म से पूर्व भी नीब करौरी नाम और रूप या अन्य साधु सन्तों के रूप में कार्य करते रहे[6] । इन कारणों से उनकी कोई पहचान नहीं हो सकती । लोग उनको केवल उनकी कृपा से ही जान पाये । उनका भौतिक परिचय इस सम्बन्ध में निरर्थक है । यथार्थ में वे एक उदाहरण मात्र हैं कि किस प्रकार अनन्त शक्ति स्थूल रूप धारण कर मनुष्यों के मध्य दीर्घ काल तक रह सकती है ।

बाबा आध्यात्मिक महामानव रहे । वे निःसन्देह वसुधैव कुटुम्बकम् के पोषक थे । उन्होंने विश्व में एक बृहत् भक्त परिवार का निर्माण किया जिसमें बाल–वृद्ध, स्त्री–पुरुष, सभी जाति, वर्ण और राष्ट्र के लोग हैं । अपने इस परिवार के ये सदा आदरणीय वृद्ध रहे । उनके इस विशाल एवं विश्व–व्याप्त परिवार में उनका निजी लघु परिवार भी समाहित हो जाता है जिसका इस स्थिति में अलग से उल्लेख गौण हो जाता है और भ्रान्ति मूलक भी हो सकता है । बाबा में भेद दृष्टि थी नहीं, सम्भवतः इसी कारण से उन्होंने इस लघु परिवार की चर्चा भक्त समुदाय में कभी भी नहीं की । फलतः उनके निकटतम भक्तों को भी इसकी जानकारी नहीं रही ।* इस परिवार की जानकारी प्रथम बार भक्तजनों को बाबा की महासमाधि के अवसर पर हुई और उनके अन्तिम संस्कार में सभी ने मिल कर भाग लिया । इन दोनों परिवारों में प्रेमपूर्ण भाईचारे का सम्बन्ध होने से ये भिन्न नहीं एक ही प्रतीत होते हैं ।

अतः पाठकों की साधारण तुष्टि के लिये इतना कहना यथेष्ट होगा कि इस धरा–धाम ग्राम अकबरपुर, जिला आगरा में अनुमान है कि इस शताब्दि के कुछ ही पूर्व, बाबा एक सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में अवतरित हुए और

**बाबा के परम भक्त श्री के. एम मुन्शी भूतपूर्व राज्यपाल उत्तर प्रदेश लिखते हैं – "नीब करौरी बाबा हमेशा एक कम्बल लपेटे घूमा करते हैं । वे प्रायः नैनीताल आते हैं और हनुमानगढ़ में ठहरते हैं । कोई नहीं जानता कहाँ से आते हैं और कहाँ चले जाते हैं । कोई उनका नाम भी नहीं जानता – – ।" (देखिये स्मृति सुधा पृष्ठ 17, सम्वत् 2034)*

जै जै नीब करौरी बाबा । कृपा करहु आवें सद् भावा ।।
कैसे मैं तव स्तुति बखानू । नाम ग्राम कछु मैं नहिं जानू ।। } विनय चालिसा की प्रथम चौपाई

लक्ष्मी नारायण कहलाये । कुछ विशेष कारणों से ग्यारह वर्ष से पूर्व ही आपको घर छोड़ देना पड़ा और आप भाग कर गुजरात पहुँच गये । इस अल्प अवधि में आप की भौतिक शिक्षा हो ही क्या सकती थी ? पर जब तक आप घर रहे भी आपने इस ओर कोई रुचि नहीं दर्शायी । बाबा भक्त समुदाय के बीच बहुधा कहा करते थे **"इस संसार में सब शिक्षित हो कर आते हैं और ईश्वर ही महान् शिक्षक है ।"** वास्तव में आप को पढ़ा कौन सकता था ? और पढ़ाता भी तो क्या ? आप जन्म से ही सिद्ध थे । कहते हैं कि उस छोटी उम्र में आपने एक बार घर के लोगों को पूर्व सूचना दी कि आज रात डाका पड़ेगा पर आपका बाल स्वभाव समझ कर किसी ने आपकी बात को कुछ महत्व नहीं दिया । बाबा की बात सत्य घटित हुई, उस रात आपके घर डाका पड़ा ।

अस्तु, गुजरात में आप किसी वैष्णव सन्त के आश्रम में रहे, जिसने आपको लछमन दास नाम दिया और वैरागी वेश धारण करवाया । गुजरात में आप लगभग सात वर्ष रहे । यहां आपकी लम्बी जटायें हो गयीं । आप मूँज की करधनी से लंगोट बाँधे रहते और आप के पास सम्पत्ति कहने को एक तोबा (कमण्डल) था । मौरवी से लगभग चालीस कि.मी. दूर ग्राम बबानियां में आप श्री राम बाई के आश्रम में भी रहे और यहाँ पास में एक तालाब के भीतर आप साधना करते थे । बाबा का विषम परिस्थिति में घर से भाग कर जाना एक निमित्त था, वास्तव में आगे होने वाली उनके जीवन की महान् लीलाओं की यह भूमिका थी ।

बबानियां से आपने देश भ्रमण के लिये प्रस्थान किया । आप इस यात्रा में जिला फर्रुखाबाद में ग्राम नीब करौरी पहुँचे, जहाँ आपने विश्राम किया । आपकी वाणी दिव्य थी, जो भी शब्द आपके मुँह से निकलते सत्य घटित होते पाये गये । इस कारण ग्रामवासियों का बाबा लछमन दास से लगाव हो गया । इन लोगों ने आपको अपने गाँव में ही रोक लिया और आपकी सुविधा को ध्यान में रखते हुए आपके लिये जमीन के नीचे एक गुफा बना दी । बाबा इसके भीतर अपनी साधना में लीन रहते थे । आप दिन भर गुफा में रहते और रात्रि के अंधेरे में बाहर आते थे । वे कब दिशा–मैदान जाते थे किसी ने उन्हें नहीं देखा । इस प्रकार ग्राम के लोगों से आपका सम्पर्क कम रहा । कालान्तर में प्रकृति के कार्यों से यह गुफा नष्ट हो गयी** । इसके बाद, इस गुफा से दो सौ मीटर दूर पर एक

*** इस पुरानी गुफा के नष्ट होने के लगभग साठ वर्ष बाद श्री माँ के आदेश और ग्रामवासियों के सहयोग से यह कच्ची गुफा भूमि खोद कर प्रकाश में ले आयी गयी और भक्तों के दर्शनार्थ सुरक्षित रखदी गयी है ।*

दूसरी गुफा का निर्माण किया गया जो आज भी सुरक्षित है । इस गुफा की ऊपरी भूमि पर बाबा ने हनुमान मन्दिर बनवाया जिसकी प्रतिष्ठा में आपने एक महीने का महायज्ञ किया । इस अवसर पर आपने अपनी जटायें भी उतरवा दीं और मात्र एक धोती धारण करने लगे जिसे आप आधी पहनते और आधी ओढ़े रहते थे ।

इस नयी गुफा में आने के बाद से बाबा का सम्पर्क गाँव वालों से बढ़ता चला गया । यहाँ उनकी अनेक लीलाएं हुईं जो अब भी ग्राम वासियों से सुनी जा सकती हैं । यहां गोपाल नामक एक तिरस्कृत बहेलिया आपका भक्त हो गया जो आपकी गुफा में नित्य सेवा के लिये आता था । नीब करौरी के समवयस्क युवकों के साथ बाबा का मेल-जोल बढ़ गया, वे उनके साथ खेल-कूद में भाग भी लेने लगे । बाबा इनसे इतने घुले-मिले रहते थे कि उनकी लीला वैचित्र्य को समझ पाना इनके लिये कठिन था । आँख-मिचौनी के खेल में कोई कहीं भी जंगल में छिपा हो आप उसे तुरन्त ढूंढ लेते पर आप जब स्वयं छिपते तो अदृश्य हो जाते थे । वृक्षारोहण में उनका पीछा करते जब अन्य लोग उस पेड़ पर चढ़ते तो ऊपर पहुँचने पर बाबा पास के दूसरे पेड़ पर दिखायी देते । छलाँग मार कर दूसरे पेड़ पर जाते वे कभी किसी को दिखायी नहीं दिये, फिर भी यह बात सखाओं के लिये एक साधारण आश्चर्य की बन कर रह जाती । तालाब में भी बाबा लुप्त हो जाते और बहुत देर बाद दिखायी देते थे ।

एक दिन गोपाल से भूल हो गयी । उसे बाबा की आज्ञा का ध्यान नहीं रहा और वह दूध का लोटा लिये उनकी गुफा में प्रवेश कर गया । भीतर जाते ही वह त्रसित हो गया । वहाँ खड़े रहने की उसमें सामर्थ्य नहीं रही । उसने बाबा को सर्पों से लिपटे समाधि में लीन देखा । उनके इस शिव रूप को देख कर उसके हाथ से दूध का लोटा गिर गया और वह बाहर भाग आया और बेहोश होकर गिर गया । बाबा ने बाहर आकर उसे उठाया । उनके स्पर्श से उसमें चेतना आ गयी । वे उससे कहने लगे, **"बिना आज्ञा तुम्हें गुफा में प्रवेश नहीं करना चाहिये था ।"**

एक बार कई दिनों तक बाबा को भोजन प्राप्त नहीं हुआ, हो सकता है कि यह उनकी माया ही रही हो, पर वे क्षुधा से पीड़ित प्रतीत हुए । ग्रामवासियों का कहना है कि बाबा ने क्रोध में हनुमान जी के विग्रह पर डंडे से प्रहार किया और कहने लगे, **"क्या भूखा मार डालेगा"** ? इस घटना के बाद शीघ्र ही अज्ञात प्रेरणा से अनेक लोग, जो नीब करौरी ग्राम के नहीं थे, फल-फूल, भोजन, मिष्ठान की थालें लिये मन्दिर में उपस्थित हो

गये । निःसन्देह यह उनकी सृजनात्मक लीला थी, पर हनुमान विग्रह पर प्रहार की बात आसानी से समझ में नहीं आती । कोई भक्त ऐसी धारणा भी नहीं कर सकता तो फिर महाराज ऐसा कैसे कर पाये ! वस्तुतः बात यह है कि बाबा हनुमान के भक्त नहीं अवतार थे । उनकी लीलायें हनुमान जी की लीलाओं से अधिक मेल खाती हैं और वे सदा हनुमान के रूप में ही पूजे गये ।

सन् 1935 में एक बार एक सेठ चाँदी की थाल में अनेक स्वर्ण मुद्रायें सजा कर बाबा को अर्पण करने नीब करौरी ग्राम में उपस्थित हुआ । उस समय उनके पास गोवर्धन आदि कई ब्राह्मण थे । बाबा ने सेठ की भेंट स्वीकार नहीं की । ब्राह्मण वर्ग यह चाहता था कि जब बाबा को कुछ लेना पसन्द नहीं तो यह धन-राशि उन्हें दिलवा देते । बाबा ने उनकी बात नहीं मानी इस कारण ब्राह्मण अप्रत्यक्ष रूप से उनके विरोधी हो गये । इस घटना के बाद एक पूर्णमासी के सवेरे एक सेठ आगामी वार्षिक यज्ञ के लिये तीस कनिस्तर शुद्ध घी लेकर वहाँ पहुँचा । बाबा उस समय गंगा स्नान के लिये फर्रुखाबाद गये थे । उनकी अनुपस्थिति में ब्राह्मणों ने उस सेठ से बाबा की निन्दा की और घी के टिन उसी के साथ लौटा दिये । बाबा फर्रुखाबाद से ही यह सब देख रहे थे । गाँव आने पर उन्होंने उन ब्राह्मणों को बुला कर बहुत फटकारा और अगले वार्षिक यज्ञ का विचार ही त्याग दिया । इसके कुछ समय बाद आपने एक दिन नीब करौरी ग्राम को ही छोड़ दिया । आपने भले ही अठारह वर्ष वास करने के उपरान्त इस गाँव को क्षण मात्र में हमेशा के लिये त्याग दिया, पर इसके नाम को स्वयं धारण कर इसे विश्वविख्यात एवं अमर बना दिया ।

इस प्रकार सन् 1935 के पश्चात् आपने किलाघाट, फतेहगढ़ में गंगा के किनारे वास किया । वहाँ गायें भी पालीं जो आपकी आज्ञा का अनुसरण करते हुए आपके दर्शनार्थियों का मनोरंजन भी करती थीं[76] । यहाँ आपने अनेक फौजियों को अपने दर्शन से कृतार्थ किया और भारतीय साधु वर्ग से घृणा करने वाले कर्नल मकन्ना का हृदय परिवर्तन कर उसे अपना परम भक्त बना लिया[77] ।

किलाघाट से बाबा का सम्पर्क नागरिकों से बराबर बढ़ता ही चला गया । इसके बाद वे एक स्थान में बहुत दिनों तक नहीं रहे । सम्भवतः वे इधर-उधर भ्रमण ही करते रहे । चौथी दशक में नैनीताल आने के पूर्व आप कहाँ-कहाँ गये और आपकी क्या-क्या लीलाएँ देखने में आयीं, इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता । पर यह अवश्य देखने में

आया कि धीरे–धीरे उनकी मान्यता बरेली, हल्द्वानी, अल्मोड़ा, नैनीताल आदि उत्तर प्रदेश के स्थानों में बढ़ती गयी और इसका विकास लखनऊ, कानपुर, वृन्दावन, इलाहाबाद, दिल्ली, शिमला और सुदूर दक्षिण में मद्रास आदि बड़े शहरों में हो गया । ग्रामीण एवं मध्यवर्ग के लोगों के अतिरिक्त मान्य एवं प्रतिष्ठित वर्ग के लोग भी अत्यधिक संख्या में इनके भक्त होते गये । हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी जाति और वर्ग के स्त्री–पुरुष बाल–वृद्ध एवं विदेशी लोगों के आप आराध्य हो गये । राष्ट्रपति वी. वी. गिरि, उपराष्ट्रपति गोपाल स्वरूप पाठक, राज्यपाल कन्हैया लाल माणिक लाल मुन्शी, उपराज्यपाल भगवान सहाय, राजा भद्री, न्यायमूर्ति वासुदेव मुखर्जी, जुगल किशोर बिड़ला, सुमित्रानन्दन (कवि), अनेकानेक राजनैतिक दलों के नेता गण, अंग्रेज जनरल मकन्ना, अमरीका के डा. रिचार्ड एल्पर्ट आदि लोग इनके भक्त हो गये । प्रधान मन्त्री जवाहर लाल नेहरू को बाबा के दर्शन श्री भगवान् सहाय के माध्यम से हुए. । फौजी, सिविल और पुलिस अधिकारियों के तो बाबा उपास्य बने रहे । महाराज की भक्ति पुरुषों तक ही सीमित नहीं रही । जो भी आपका भक्त बनता सपरिवार बनता था । बाबा के भक्तों की सूची तैयार करना सम्भव कार्य नहीं है । आश्चर्य की बात यह है कि देश और विश्व के कोने–कोने से लोग बिना किसी प्रचार के केवल आपकी प्रेरणा से आपके पास आते गये । भक्त और भगवान सजातीय हैं, इनका सम्बन्ध आत्मीय है । इस प्रकार बाबा ने एक बृहत् परिवार का निर्माण किया जिसमें सभी वर्ग, वर्ण और धर्म के लोग हैं ।

इस शताब्दी के चौथे दशक बाद बाबा ने नैनीताल को अपनाया, सम्भवतः यहाँ हनुमान मन्दिर एवं आश्रम बनाने की इच्छा आप में हुई हो । आप नैनीताल आते जाते रहते, पर स्थाई रूप से यहाँ नहीं रहते थे । इस नगर के सभी लोग इनके भक्त हो चले और जब कभी आप इधर आते–जाते दिखायी देते तो लोग अपने घरों और दुकानों से उठकर मन्त्र–मुग्ध से आपके पीछे–पीछे चलने लगते । रास्ता चलता आदमी भी अपना जरूरी काम छोड़ देता । बाबा जिस घर में चले जाते वहाँ ऐसा उल्लास छा जाता जिसका वर्णन नहीं हो सकता । बाबा इस नगर में अमुक समय में कहाँ हैं, इस खोज की आवश्यकता ही नहीं होती थी । आप जहाँ भी होते उस स्थान की आनन्दपूर्ण छटा स्वतः आपकी उपस्थिति का द्योतन करती । बाबा कभी किसी भक्त के घर भी ठहर जाते, पर अधिकतर आप नैनीताल से दो कि.मी दूर उसके प्राकृतिक द्वार पर स्थित, मनोरा नामक निर्जन पर्वत पर या उसके पास मोटर सड़क की दीवारों पर रात बिता देते

थे । इस प्रकार आप इस पर्वत को अपनत्व देते रहे । गृहस्थ की सुख सुविधाओं के अभ्यस्त यहाँ के भक्त जन इस स्थान में आपके साथ लगातार रात भर जागते रहते और रात–रात भर जागते रहने पर भी कभी उनके दैनिक कार्यों में किसी प्रकार की शिथिलता न आती, अपितु वे अपने में नवीन स्फूर्ति का अनुभव करते थे ।

इसी स्थान में बाबा ने हनुमान गढ़ की स्थापना की और इसके बाद ऐसे कार्यों का क्रम चालू हो उठा । आपने भूमियाधार, कैंची, काकड़ी घाट आदि स्थानों में मन्दिर बनाये और साथ ही कानपुर, शिमला, लखनऊ, वृन्दावनं, दिल्ली आदि स्थानों में भी हनुमान मन्दिर और आश्रम बनवाते रहे । इन कार्यों के लिये बाबा इन स्थानों में आते–जाते रहते । इनकी सुव्यवस्था हेतु वे स्वयं इन स्थानों में रहे और बाद में इन्हें प्रतिष्ठानों (ट्रस्ट) के सुपुर्द करते गये और तदनन्तर आपने इनसे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखा । इन मन्दिरों के निर्माण और व्यवस्था के लिये जब भी बाबा आते हर समय उनका दरबार लगा रहता जिसमें भाँति–भाँति की अनेकानेक लीलाएँ देखने में आती थीं ।

बाबा का सादा जीवन सदा परोपकार में ही व्यतीत हुआ । प्रत्यक्ष में वे रास्ते चलते अपरिचित व्यक्ति की अव्यक्त समस्याओं का हल बिना पूछे बताते रहते और परोक्ष में कितने उपकार वे करते थे कहा नहीं जा सकता । उनकी मुद्राएँ प्रतिपल बदलती रहती थीं जिनका सम्बन्ध प्रत्यक्ष और परोक्ष में किये गये कार्यों से होता था । बाबा की न अपनी कोई चाह थी और न अपना कोई कार्य । अपने देह का भान भी उन्हें रहता न था । आपके शौच, स्नान, भोजन आदि की चिन्ता भक्तजन ही किया करते थे । करुणा और कृपा की मूर्ति, बाबा जगत पिता थे । उनमें भेद दृष्टि थी नहीं । वे स्वतः लोगों के घरों में जाकर अपनी अलौकिक शक्ति से उनका उद्धार करते[7] और साधकों की साधना में योगदान दिया करते । आपने असंख्य लोगों की परवरिश की । कितनों को शिक्षा दिलवायी[8] और कितनों के विवाह रचाये[9] । वे किसी को दुःखी नहीं देख पाते थे । सन्तानहीनों को आशीर्वाद दे सन्तति सुख प्रदान करते[10] और अवसर पड़ने पर मृत में भी प्राणों का संचार कर दिया करते[11] । रोगों से छुटकारा दिलाने[12], दारिद्र्य के अपहरण[13] और संकटों से बचाने में[14] बाबा अद्भुत थे । इस प्रकार बाबा अपने व्यापक कार्यों में सदा लगे रहते । उनके समस्त कार्य कल्पनातीत रहे । बुद्धि उन्हें देख कर चकरा उठती और व्यक्ति अवाक् रह जाता । असम्भव उनके लिये कुछ भी न था[15] ।

11 सितम्बर 1973, अनन्त चौदस की रात्रि में एक बजकर पन्द्रह मिनट में अपनी पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार बाबा ने भक्त गणों से दूर राम कृष्न मिशन अस्पताल, वृन्दावन में स्वेच्छा से हृदय गति रोक कर शरीर त्याग दिया । यह भी उनकी लीला ही कही जा सकती है जिसका विषद् वर्णन लीलामृत में 'महाप्रयाण और उसके बाद' शीर्षक अध्याय में किया गया है ।

बाबा की दिव्य देह से चलता हुआ लीलाओं का यह क्रम अनवरत है । महाप्रयाण के बाद भी उनकी कृपा की अनुभूति लोगों को बराबर हो रही है । यह इस तथ्य का परिचायक है कि आप लीला पुरूष हैं और जन्म मृत्यु से परे हैं । आपकी यह लीलात्मक जीवन गाथा विश्व का एक महानतम् रहस्य है ।

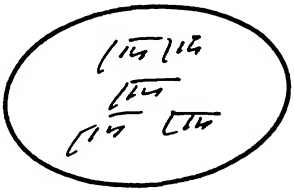

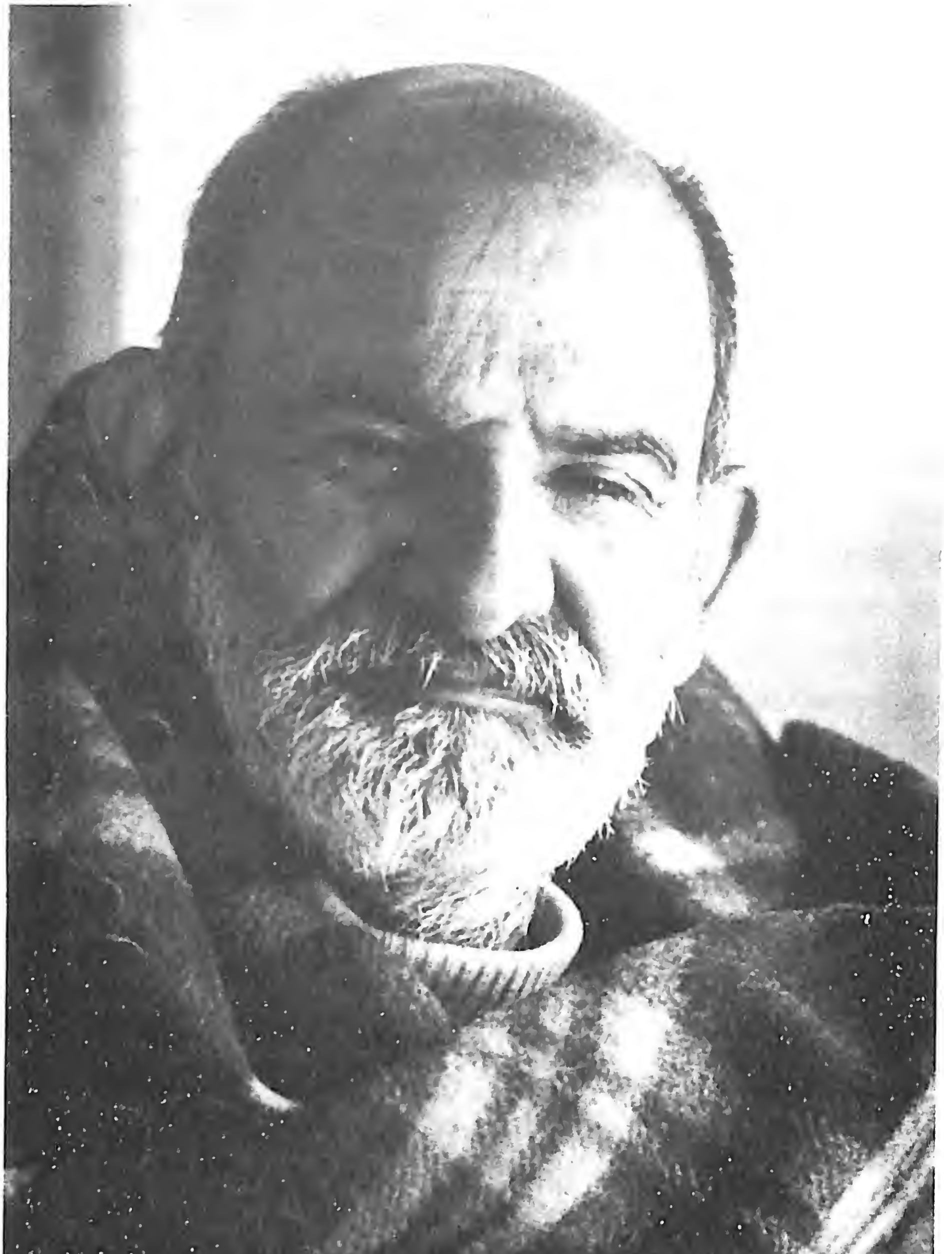

दिव्य स्वरूप और द्वन्द्वातीत स्वभाव

स्वभाव और स्वरूप

विश्व की यह महानतम् विभूति अद्भुत शक्तियों से सम्पन्न रही । उनकी दिव्य देह निरन्तर अनेक प्रकार की आश्चर्यजनक लीलाओं का स्रोत बनी रही । बाबा की कथनी और करनी यद्यपि अत्यन्त सरल एवं लौकिक दिखायी देतीं पर होतीं वे नितान्त दिव्य । उनकी वाणी दिव्य उनकी दृष्टि दिव्य और उनका स्पर्श भी दिव्य रहा । एक बार दर्शन हो जाने पर सपरिवार उनका भक्त बन जाना स्वाभाविक था, पर वर्षों साथ रह कर भी उन्हें जान सकना सम्भव न था । किसी की भी करनी उनकी दृष्टि से परे नहीं रह पाती थी । बाबा सब के मन में उठने वाले विचारों को जानते और उनके अन्तर्द्वन्द्वों में रस लेते[16] । वे सब से पूर्व परिचित जान पड़ते और नव आगन्तुक से उनके सम्बन्धियों के नाम लेकर वार्ता करने लगते[17] । प्रत्येक व्यक्ति के भूत, भविष्य और वर्तमान की उन्हें पूर्ण जानकारी होती । उनकी इच्छा शक्ति इतनी प्रबल थी कि वे जो चाहते वह घटित होकर रहता और जो नहीं, उसका होना भी सम्भव नहीं हो पाता था[18] ।

पौराणिक लीलाओं में कुछ ही भक्तजन अपना विश्वास स्थापित कर पाते हैं, अन्य लोग उनकी प्राचीनता के कारण उन्हें केवल मान्यता दे देते हैं । बीसवीं शताब्दी में हर समय होने वाली बाबा की लीलाएँ पौराणिक लीलाओं की सत्यता पर विश्वास दिलाती हैं । कौशल्या जी को राम दो स्थानों में एक ही साथ दिखायी दिये, पर सरदार रणजीत सिंह, उत्तर प्रदेश परिवहन के चालक को, प्रथम दर्शन के बाद ही, चलती बस से वे स्थान–स्थान पर पैदल जाते दिखायी दिये[19] । सभी देवी देवताओं के वाहन बताये गये हैं, पर बाबा अपने भक्त की पुकार पर, कहीं भी हों, बिना वाहन के तुरन्त उपस्थित हो जाते थे[20] । राम जी के कर स्पर्श से सुग्रीव का शारीरिक क्लेश दूर हुआ, आप अपनी कृपा से सदा भीषण एवं असाध्य रोगों से छुटकारा दिलाते रहे[12] आदि ।

भारत के सन्त महात्माओं में जो–जो निजी विलक्षणताएं दिखायी दीं, वे सभी सामूहिक रूप से उन में विद्यमान थीं । इनके अतिरिक्त जिन

विशेषताओं की मानवीय बुद्धि कल्पना भी नहीं कर सकती, वे भी उनमें दिखायी देती रहीं । वे सभी प्रकार की स्थिति और परिस्थितियों की सृष्टि करने में समर्थ रहे[21] और उनमें उनका पूर्ण नियन्त्रण भी रहता था । वे अप्रत्यक्ष रूप से, लोगों को चाहे वे कहीं भी हों, प्रेरित करते थे[22] । इस प्रकार कुछ न करते हुए भी वे सब कुछ करते रहते । उनके समस्त कार्य उनकी सर्वज्ञता, सर्वव्यापकता और सर्वशक्तिमत्ता के परिचायक हैं । एक बार स्वामी करपात्री जी महाराज ने पं० शंकर प्रसाद व्यास जी (बनारस) से बाबा का परिचय देते हुए कहा, "इस कलिकाल में अनेक विद्वान सन्त हुए और हैं पर बाबा नीब करौरी जैसा सिद्ध सन्त नहीं ।" श्री शिवानन्द आश्रम के सम्प्रति अध्यक्ष श्रीस्वामी चिदानन्द जी आपको "लाइट आफ लाइट्स" और "पावर आफ पावर्स" कहते हैं । इन्हें परम योगी, सन्त शिरोमणि आदि जो भी कहें वे निस्सन्देह नर रूप में अवतरित साक्षात् हरि ही थे । अनन्त श्री विभूषित बाबा में लोगों को अपने-अपने इष्ट देव के दर्शन होते रहे । कोई शिव रूप में उनके दर्शन कर अचेत हो जाता[23], कोई उनमें राम के दर्शन कर पागल हो बैठता[24], कोई उनमें दुर्गा माँ के दर्शन कर विह्वल हो रोने लगता[25], कोई उनकी विशाल काया को बाल गोपाल के रूप में देख आनन्द विभोर हो जाता[26] और कोई उनको हनुमान के रूप में परिवर्तित होते देख भयभीत हो उठता[27] । किसी को उनकी मानवीय देह, अपने अविश्वास से भ्रमित कर देती और वह उनके विषय में अनुचित धारणा बना लेता । वास्तव में वे जैसे को तैसा दिखायी देते रहे । बाबा अपने को किसी भी रूप में[28] व्यक्त कर सकते थे, इस कारण वे क्या थे और क्या नहीं निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता । अपने शरीर को शान्त कर दिखलाना भी, जन दृष्टि से अपने को ओझल करने की उनकी एक विलक्षण लीला ही कही जा सकती है[29] । संक्षेप में उनका जीवन अवतारवाद की सार्थकता को पुष्ट करता है ।

बाबा अपने भगवत् स्वरूप को सदा छिपाये रहे । यद्यपि अलौकिकता छिप नहीं पाती, पर सभी अवतारी पुरुषों ने इसे छिपाने का प्रयास किया । बाबा की विशेषता यह रही कि वे अपनी महानता ही नहीं, जन समुदाय के बीच रहते हुए, स्वयं अपने को भी छिपाये रहे और सदा अज्ञात सामान्य मनुष्य की भाँति विचरण करते रहे । यद्यपि अकबरपुर और नीब करौरी ग्राम दोनों उत्तर प्रदेश में ही हैं और पचास वर्षों से अधिक उत्तर प्रदेश उनकी लीला स्थली बनी रही, जहाँ उन्होंने अनेक आश्रम और भव्य मन्दिरों का निर्माण कराया, पर न उनके गाँव के लोग यह जान पाये कि उनके लक्ष्मी नारायण शर्मा ही बाबा लछमन दास या बाबा नीब करौरी कहे जात हैं और न नीब करौरी ग्राम के लोग यह जान सके कि उनके गाँव के नाम से

विश्वविख्यात बाबा ही उनके लछमन दास बाबा हैं । अन्य लोगों का तो कहना ही क्या, वे तो यह भी न जान सके कि वैष्णव मत में दीक्षित बाबा का वास्तविक नाम नीब करौरी कैसे हो सकता है ? इस प्रकार सब भाँति अपने को छिपाकर रखना उनका प्रयोजन था । ऐसा प्रतीत होता है कि जिस कार्य के लिये वे अवतरित हुए थे उसके निर्वाह के लिये उनका ऐसा आचरण अनिवार्य था । उन्हें स्वार्थान्ध मनुष्यों के बीच रह कर, जिनकी मनोवृत्तियों से वे सदा सुपरिचित होते, लोक–कल्याण कार्य करना था । बाबा अपने कार्यों का श्रेय ऐसे ही लोगों को दिलाते और अपने में विपरीत गुणों का खुलकर प्रदर्शन करते थे जिस से लोगों का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट न हो । उनकी बातें उलटी–सीधी हुआ करतीं पर परिणाम में भूमि में बोये गये बीजों से उत्पन्न पौधों की भाँति सदा शुभ होतीं । वे स्वार्थी दर्शकों का विश्वास अपने में स्थिर नहीं होने देते थे, पर शहद को देख कर मक्खियों का उस पर मडराना स्वाभाविक ही होता है । इस सम्बन्ध में एक भक्त की शंका के उत्तर में आपने एक बार कहा था, "**अगर आदमी हमें जान जायेगा तो दुनियां हमारे रोम–रोम को नोच कर ताबीज बनाने लग जायेगी ।**" बात सही है, आपकी चिता भस्म से भीषण रोग का उपचार भी होते देखा गया है । जहाँ कहीं भी उनकी लीला चमत्कृत हो उठती और दर्शकों का उसे देखकर चकित होना स्वाभाविक होता, आप अपनी योग माया से उनकी बुद्धि पर ऐसा परदा डालते कि आपके दर्शन के आगे आपकी लीला सामान्य प्रतीत होती[30] । आप मूलतः करुणा और कृपा की साक्षात मूर्ति रहे[31] । लोगों को रोग, शोक, दुःख और दारिद्रय से मुक्त कर और उनमें सेवा और सद्भाव का विकास कर, उन्हें यथार्थ में आस्तिक बनाने के लिये ही आप अवतरित हुए थे । सच्चा साधक कहीं भी हो, उनकी दृष्टि से छिपा नहीं रह सकता था और वे उसकी प्रगति में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सदा सहायक बने रहे । आप सभी आश्रमों और गुफाओं में जाते और सभी साधकों को कृतार्थ करते ।

इस प्रकार बाबा का कार्य सामूहिक न होकर पृथक्–पृथक् व्यक्तियों से सम्बन्धित रहा । उन्होंने कभी भाषण या प्रवचन नहीं दिया । इसे वे भाषा का खिलवाड़ मानते रहे । आग्रह करने पर आप यह कहकर टाल देते कि **हम पढ़े–लिखे नहीं हैं** । इस प्रकार जन समुदाय के बीच रहते हुए उन्होंने आधुनिक वातावरण में मानवता के उच्चतम मूल्यों को स्वयं अपने आचरण द्वारा व्यावहारिक रूप दिया जिससे लोगों में जागृति हुई । उनकी मानवीय चारित्रिक विशेषताएं इस कारण शिक्षाप्रद ही नहीं, अनुकरणीय और उल्लेखनीय भी हैं ।

अपने को सामान्य व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करने के लिये उन्होंने सदा अपने में मानवीय दुर्बलताओं का प्रदर्शन किया । उनका यह कार्य बड़े

कौशल से हुआ करता । इससे उनके चरित्र में किसी प्रकार की विकृति नहीं आने पाती और लोगों को उनका आचरण सराहनीय प्रतीत होता । यद्यपि मान–अपमान का आपके लिये कोई महत्व न था, पर आप सदा अमानी बने रहे । अहं–भाव ही समस्त मानवीय दुर्बलताओं का मूल है । इसके पोषण की प्रवृत्ति से आध्यात्मिक स्वास्थ्य बन नहीं पाता । वे जानते हुए भी कुछ ऐसा कार्य निःसंकोच कर देते जिससे उनका अपमान होना अनिवार्य होता । आपकी ऐसी क्रीड़ा का उद्देश्य भक्तगणों के लिये मार्ग दर्शन करना अथवा किसी व्यक्ति विशेष के कल्याण की भावना से उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करना रहता । सड़क के नियमों का उल्लंघन होने पर वे चौराहे में खड़े सिपाही की गाली और मार भी सहन कर लेते और किसी व्यक्ति द्वारा उस सिपाही की शिकायत हो जाने पर, जब वह दण्डनीय ठहराया जाता, बाबा स्वयं जाकर उसके हित में लड़ते और उसे दण्ड से मुक्त करा आते । अपने अपमान कर्ता के प्रति उनका व्यवहार सदा उदारता पूर्ण रहता ।

बाबा ने किसी प्रकार का बाह्य आडम्बर नहीं अपनाया जिससे लोग उन्हें साधु बाबा मान कर आदर करते । उनके माथे में न त्रिपुण्ड लगा होता न गले में जनेऊ या कण्ठ माला और न देह में साधुओं के से वस्त्र ही । जन समुदाय में आने पर आरम्भ में आप केवल एक धोती से निर्वाह करते रहे, बाद में आपने एक कम्बल और ले लिया । अन्य लोगों की क्यां कहें, साधक स्तर के साधु आपको सेठ समझने लगते पर आपके नगे पैरों को देख भ्रमित हो जाते । कभी उनके आश्रम में ही कोई नवागन्तुक उन्हीं से बाबा के बारे में पूछने लगता और वे कहते, **"यहाँ बाबा–वाबा नहीं है, जाओ हनुमान जी के दर्शन करो ।"** वे किसी को भी प्रभावित करना नहीं चाहते थे । इस कारण आपमें किसी प्रकार का बनावटीपन नहीं दिखायी दिया । वे जिससे भी मिलते सहज और सरल भाव से ।

कभी–कभी बाबा बालकों की भाँति सामान्य बात की रट लगाये रहते जिससे उनके प्रति लोगों की धारणा में अन्तर आ जाता और उनकी महत्ता घट जाती । पर बाबा के समस्त कार्यों में कोई न कोई प्रयोजन अवश्य निहित रहता जिसकी जानकारी लोगों को उस समय नहीं हो पाती थी । कुमाऊं की भाषा के 'नान्', 'ठुल' शब्द भाषा के 'छोटे', 'बड़े' शब्दों के समानार्थक हैं । बाबा 'नान्–नान्', 'ठुल–ठुल' शब्दों की रट लगाये रहते । इनकी पुनरावृत्ति एक दिन में कई दरबारों में हो जाती और कभी कई दिनों तक चलती रहती । पर अलौकिकता यह थी कि बाबा के मुखारविन्द से निकले इन शब्दों को सुनते–सुनते भक्तों के हृदय से छोटे–बड़े, ऊँच–नीच की भेद दृष्टि ही मिट गयी । फलतः बाबा ने जिस बृहत् भक्त परिवार का

इस लोक में सृजन किया उसमें सभी जाति और वर्ग के लोग एक दूसरे को नमन करते और परस्पर गले मिलने लगे । इससे रुढ़िवादिता की जकड़न जाती रही और प्रेम और सद्भाव का अभ्युदय हुआ । इस प्रकार आध्यात्मिक प्रगति को बल मिला । कभी आप **"दीन बन्धु दीनानाथ मेरी डोरी तेरे हाथ"** या कभी **"सुखी मीन जहं नीर अगाधा, जिमि हरि सरन न एकउ बाधा"** कहा करते । उनके ऐसे कथन का अभिप्राय लोगों में आस्तिकता का भाव दृढ़ करना होता ।

लोगों में अपनी मान्यता पर रोक लगाने की एक और युक्ति भी बाबा के पास थी । वे अपना प्रचार होने नहीं देते थे । इस हेतु बाबा अपने परिकरों में, जो लोगों में आकर उनकी प्रशंसा करता या उनके बारे में अधिक जानकारी बढ़ाने का प्रयास करता, उसे अधिक समय तक अपने पास नहीं रहने देते थे । जब कोई श्रद्धालु किसी व्यक्ति को उनकी महानता से प्रेरित कर उनके दर्शन कराने ले आता तो बाबा उसे अपना ऐसा परिचय देते जिससे उनके बारे में सुनी प्रशंसाएँ सब झूठी प्रतीत होने लगती और स्वयं वह श्रद्धालु हतप्रभ हो जाता । इतने पर भी प्रचार माध्यमों में बाबा की बिना किसी प्रकार की चर्चा के, उनकी ख्याति विश्व भर में फैल उठी । वास्तव में जो संसार को उदासीन भाव से ठुकराता है, संसार उसी के पीछे भागने लगता है । भारत के कोने–कोने से और विदेशों से आये संभ्रांत एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति केवल दर्शनमात्र से इनके भक्त बनते चले गये और इनकी पूजा–आराधना करने लगे ।

जहाँ एक ओर बाबा लौकिक सम्मान और आदर की उपेक्षा करते वहाँ दूसरी ओर भक्तों द्वारा की गयी विधिवत् पूजा को भी स्वीकार कर लेते । सम्भवतः भक्तों में सद्भाव पल्लवित करने के लिये ही वे ऐसा करते हों । वास्तव में उन्हें इस पूजा के होने या न होने से कोई ग़रज न थी । ऐसा भी प्रायः देखने में आता कि जब कभी बाबा का पूजन होता वे किसी न किसी से वार्ता में व्यस्त होते या स्वयं अपने में खो जाते ।

लोभ–मोह का नितान्त अभाव होते हुए भी बाबा अपने में इनकी कमी नहीं दर्शाते थे । वे सदा अनेक स्थानों में रमणीक आश्रम एवं भव्य मन्दिरों का निर्माण कराते रहे । इस हेतु जहाँ धनी–मानी लोगों को इन कार्यों में धन लगाने के लिये प्रोत्साहित करते दिखायी देते वहीं किसी गरीब के दिये धन को माथे से लगा लेते । आश्रम एवं मन्दिरों की समस्त वस्तुओं की वे बहुत कदर करते, पर यथार्थ में न उनको इनसे मोह रहा। और न इनका लोभ ही । वे प्रत्येक आश्रम एवं मन्दिर की सुव्यवस्था बना कर इन्हें प्रतिष्ठानों के सुपुर्द करते गये फिर उनसे आपने अपना किसी

प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखा । यहां आप निष्काम कर्म योगी के रूप में देखे जा सकते हैं । बाबा सब से यही कहते थे कि विदेशियों से धन नहीं माँगना चाहिये । उन्होंने इन आश्रमों और मन्दिरों के निर्माण में विदेशियों की भेंट स्वीकार नहीं की, पर ऐसा भी देखने में आता कि कभी वे किसी से ऐसी वस्तु माँगने लगते जिसका त्याग करने में वह व्यक्ति अपने को असमर्थ पाता । यह उनकी लीला ही हुआ करती थी, जिसका उद्देश्य आगन्तुक के मन में अपने प्रति उठने वाले सद्भावों को गिराना होता[47] । अस्तु, इन आश्रमों और मन्दिरों का बाबा के लिये कोई महत्व नहीं था । वे निर्जन स्थानों में, सड़क की दीवारों पर या जंगलों में आनन्द से रात बिता देते, पर इन मन्दिरों की आवश्यकता जन साधारण के लिये और ऐसे सुव्यवस्थित आश्रमों की उपयोगिता गृहस्थ एवं साधुवर्ग के लिये, इस घोर भौतिकवादी युग में श्रेयस्कर समझते थे ।

बाबा का क्रोध प्रदर्शन भी अनोखा था । उनकी डाँट–डपट का सामना कर पाना कठिन होता । उस समय वे रूद्र रूप हो उठते, अशिष्ट भाषा का प्रयोग भी निःसंकोच करते और कभी हाथ पैर भी चला बैठते । जिसपर क्रोध किया जाता उसके अलावा अन्य लोग भी घबरा उठते, पर उनके क्रोध की विशेषता यह थी कि यह प्रदर्शन जैसा दिखायी देता वस्तुस्थिति उसके विपरीत ही होती । वे इस घटना के तुरन्त बाद ही इतने शान्त और दयालु प्रतीत होते जैसे कुछ हुआ ही न हो । इनके क्रोध को बनावटी जानकर भी ऐसी परिस्थिति का सामना कोई नहीं कर पाता था । बड़े–बड़े प्रतिष्ठित व्यक्ति इनके क्रोध के भाजन बने[32] । जिस व्यक्ति पर क्रोध किया जाता उसपर इस बहाने विशेष कृपा भी हुआ करती[33] । बाबा के क्रोध का प्रयोजन वास्तव में परोक्ष हुआ करता था, भले ही उसका निमित्त प्रत्यक्ष हो । इससे लोगों का अरिष्ट भी कटते देखा गया । इस प्रकार आपका क्रोध आपके प्रेम का ही एक परिवर्तित रूप था ।

इसमें सन्देह नहीं कि बाबा कामजित थे । नारद एवं जैमिनी सरीखे देव ऋषि और महान् सन्त जहाँ असफल होते दिखायी दिये, आप उन समस्त परिस्थितियों का सामना अनायास करते रहे । भारतीय साधु समाज के इतिहास में बाबा अनुपम हैं । सभी साधु सन्त स्त्री वर्ग से किसी प्रकार का सम्पर्क नहीं रखते । वे अपने को यथा सम्भव दूर रखते हैं । यह बाबा की ही विशेषता थी कि वे स्त्री वर्ग से घुल–मिल कर रह सके । वे निर्विकार थे, इस कारण किसी भी महिला का, भारतीय हो या विदेशी, हाथ पकड़ सकते और कौतुकवश उसकी नाक पकड़ कर हिला भी देते । उनके इस कार्य में दर्शकों को किसी प्रकार की अभद्रता नहीं दिखायी देती थी । पुरुष वर्ग तो उनके पैर दबाता ही रहा, महिलाओं को भी उनके चरण चापने में संकोच

नहीं होता था, अपितु उनके दर्शन एवं स्पर्श से सब के भीतर सात्विक भावों और विचारों का संचार होता और सभी अपने को कृतार्थ समझने लगते। वास्तविकता यह थी कि बाबा ने मनुष्य मात्र को अपनी सन्तति के रूप में लिया था और तदनुसार ही उनका भाव रहा। वे बहुधा कहते, **"तुम दो चार बच्चों से परेशान हो, हमारे इतने बच्चे हैं"**। बाबा का इस प्रकार स्त्री वर्ग से घुल-मिल कर रहने का एक और भी अभिप्राय रहा। वे अपनी कृपा पुरुष वर्ग तक ही सीमित न रख कर, सदा उपेक्षित स्त्री वर्ग को भी प्रदान करना चाहते थे। स्त्री वर्ग की आध्यात्मिक प्रगति के लिये उन्होंने इन्हें पुरुषों के समान अधिकार दिये। इनकी विषम परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, इन्हें विशेष सुविधाएँ उपलब्ध करायीं। ये आश्रम के सभी कार्यक्रमों में भाग लेतीं और निरन्तर आश्रम की सेवा में रत रहतीं। स्त्री वर्ग ने भी अपनी रुचि के अनुसार बाबा की गुरु, पिता, भाई, पुत्र आदि के रूप में उपासना की। आज बाबा के आश्रमों में माइयों का स्थान बहुत आदरणीय है। करुणा, दया, भक्ति-भावना से ओत-प्रोत ये माइयाँ सेवा कार्य में रत रहते हुए आध्यात्मिक क्षेत्र में पुरुषों की अपेक्षा बहुत आगे हैं। सेवा आध्यात्मिक प्रगति का सुगम सोपान है और यह महिलाओं के स्वभावानुकूल भी है। लोगों में सद्गुणों का समावेश हो और अवगुणों का निवारण हो इस हेतु बाबा जन समुदाय के बीच अच्छे कार्यों की प्रशंसा करते, जिससे लोगों को ऐसे कार्यों की प्रेरणा मिले। बुरे कार्यों की वे निन्दा किया करते थे ताकि लोग उन्हें त्याज्य समझें। जो महिला मन, वचन और कर्म से अपने पति की अनुरागिणी हो उसके प्रति अन्तर्यामी बाबा का सहज स्नेह जाग्रत हो जाता और वे सर्व साधारण के बीच उस महिला को सती की उपाधि से सम्बोधित कर उसकी बहुत प्रशंसा करते। इसके विपरीत जो स्त्री-पुरूष आपस में कलह कर गृहस्थं की शाँति भंग करते, ऐसे लोगों को बाबा अपने पास अधिक नहीं ठहरने देते थे, भले ही अप्रत्यक्ष रूप से उन पर कृपा करते हों। ऐसे व्यक्तियों के कलह की चर्चा उनकी उपस्थिति में ही वे सब लोगों के सामने हँसते मुस्कराते, बिना किसी हिचकिचाहट के किया करते। इससे उपस्थित अन्य लोगों को भी आत्म-सुधार की प्रेरणा मिलती रहती। बाबा कहते थे, **"पति कैसा भी क्यों न हो, परिवार को सूत्रबद्ध रखने के लिये पत्नी को धैर्य और निष्ठा से काम लेना चाहिये। अपने पति के प्रति समर्पित पत्नी योगियों से भी महान है। माँ का रूप ही ईश्वर का रूप है।"**

बाबा करूणा और कृपा के अपार सागर रहे[31]। वे सब से सच्चा प्रेम करते। उनके व्यापक प्रेम में देश जाति और वर्ग का कभी कोई भेद नहीं

दिखायी दिया । सच्चा प्रेम बदला नहीं चाहता, उसमें अपना बल होता है । बाबा ने कोई कार्य निजी स्वार्थ के लिये नहीं किया । यही कारण है -लोग विश्वभर से उनकी ओर आकृष्ट हुए । उनकी आत्मीयता ऐसी थी कि प्रत्येक व्यक्ति यही अनुभव करता कि बाबा का उससे विशेष लगाव है और यही समझता कि बाबा उसी के हैं । वे स्वयं किसीसे किसी प्रकार की दूरी नहीं रखते थे । स्त्री, पुरूष, युवा, वृद्ध सब से उनका निकटतम सम्पर्क रहा । भक्तगण उन्हें श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखते और वैसा ही व्यवहार करते, पर वे सदा समता का भाव रखते । कभी वे पास में बैठे व्यक्ति से किसी बात पर हाथ मिलाने को कहते और उसे संकुचित हुआ देख जल्दी से उसका हाथ अपने हाथ में ले लेते[34] । उनसे वार्ता करने में किसी को किसी प्रकार का भय नहीं होता था । वे प्रेम उड़ेलते, प्रसाद खिलाते, आप भी हँसते और दूसरों को भी हँसाते रहते । यद्यपि दर्शनार्थी को अपने ढंग से वार्ता करने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी, पर वह वही बात कह पाता था जिसे बाबा उसके मुँह से कहलवाना या सुनवाना चाहते हों । जो वे न चाहते हों उसे वह व्यक्ति या तो कहना भूल जाता[35] या फिर प्रयास करने पर भी उस स्वतन्त्र वातावरण में नहीं कह पाता था । वे सब से इस प्रकार घुले–मिले थे जैसे माता–पिता अपनी सन्तति से । वे विश्व के बड़े से बड़े व्यक्ति को 'तू' या 'तुम' शब्द से सम्बोधित करते[36] और अपने लिये सदा हम शब्द का प्रयोग करते । उनके 'तू' 'तुम' और 'हम' शब्द प्रेम में पगे रहते । **"तुम समझते नहीं, हमारी कही सुनो," "हमें बावला मत बनाओ, हम सब जानते हैं"** आदि उनके वाक्य अत्यन्त मोहक होते थे ।

बाबा वस्तुतः 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के पोषक रहे । वे गृहस्थों के घरों में भी सहज भाव से निवास करते । उस परिवार के बीच बैठे वे अतिथि नहीं उसके मुखिया दिखायी देते । मुखिया के नाते आप गृहस्थों की दैनिक समस्याओं को बड़े चाव से सुनते, उचित राय देते और अप्रत्यक्ष रूप से सहायक होते । बाबा की कृपा पर सभी लोगों का विश्वास दृढ़ होता और सभी को उनका भरोसा था । कभी–कभी रास्ते चलते किसी अपरिचित व्यक्ति को उसके नाम से बुलाते[37] और बिना उसके कुछ पूछे उसे उचित परामर्श दे उसकी चिन्ताओं का समाधान कर देते । वे किसी भी घर में बिना गृह–स्वामी के आग्रह के प्रवेश कर जाते[38] । उनका प्रयोजन उसे कुछ देना ही होता, उससे कुछ लेना नहीं । मनुष्य को बाबा बहुत असहाय प्राणी मानते और संसार के बन्धनों से जकड़े चिन्ताग्रस्त जीवन के प्रति उनकी सहज सहानुभूति रहती थी । मनुष्य को इन विषम परिस्थितियों से छुटकारा दिलाना उनका उद्‌देश्य रहता । वे लोगों को उनके विवाह के सम्बन्ध में भी

अपनी सम्मति देते और बहुधा विवाह के लिए उपयुक्त कन्या और वर भी बताते थे । कुछ लोगों को बाबा का ऐसा आचरण रुचिकर नहीं हुआ । वे साधु सन्तों का गृहस्थ के विवाह आदि सांसारिक कृत्यों से सम्बन्ध रखना अनुचित समझते थे । ऐसे विचारक बाबा की आध्यात्मिकता से अनभिज्ञ जान पड़े । "पर हित द्रवहिं सन्त सुपुनीता," ऐसे करुणामय का स्वभाव ही कृपा करना था । उनमें भेद दृष्टि थी नहीं । धन के अभाव में या विषम परिस्थितियों में पड़ा गृहस्थ जब अपने बच्चों का विवाह करना चाहता तो उसके मानसिक कष्टों की अनुभूति सहृदय बाबा को ही हुआ करती । बाबा जिस विवाह में अपनी सम्मति देते, परोक्ष रूप से अपनी अलौकिक शक्तियों द्वारा उसे सुचारु रूप से पूर्ण कर उस गृहस्थ को तज्जन्य चिन्ताओं से मुक्त कर देते । व्यक्ति या गृहस्थ की प्रतिकूल परिस्थितियां उनकी कृपा से अनुकूल हो जातीं और उसे अनेक सन्तोषपूर्ण, सुखद एवं आश्चर्यजनक अनुभव होते । जब किसी अवसर पर बाबा वर या कन्या किसी को सुझाते तो विवाह वहीं होकर रहता[39] भले ही किसी पक्ष को वह सम्बन्ध स्वीकार न हो ।

वे जगत-पिता थे, लोगों को दुःखी नहीं देख सकते थे । लोगों को दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों से मुक्त करना उनका कार्य था[12,13,14] । इसके लिये वे अपनी दिव्य शक्तियों का प्रयोग किया करते । कभी वे व्यक्तियों के रोगों को अपने ऊपर ले लेते और बिना उन्हें बताये स्वयं झेल लेते और उन्हें सुखी बना देते[40] । अकाल मृत्यु होने पर, वे मृत में प्राणों[11] का संचार कर देते, पर महामृत्यु में वे विधि के विधान को मानते थे[41] । उनकी ऐसी कृपा किस पर, कब और कैसे होती थी, इसका कोई उत्तर नहीं जान पड़ता । इसे भगवान् और सन्त की मौज या लहर कहा जा सकता है, वह जिसको जब प्लावित कर दे । ऐसा भी देखा गया कि बाबा अस्पताल में, प्रेमाश्रु बहाते हुए अपने प्रिय भक्त को प्राण छोड़ते देखते रहे और वह आत्मविभोर हो, हाथ जोड़े आपके दर्शन करता हुआ इस संसार से चल बसा । उसके अन्तिम क्षणों में ऐसी आनन्दपूर्ण स्थिति का पैदा हो जाना बाबा की ही कृपा का फल था[42] ।

अपने द्वारा किये गये उपकारों के लिये बाबा कृतज्ञता की आकाँक्षा नहीं करते थे । इसी कारण वे सदा अपना कार्य अप्रत्यक्ष रूप से ही करते रहे । कहीं परिस्थितिवश उन्हें प्रत्यक्ष कृपा करनी पड़ती तो वे अपना काम कर अपनी राह पकड़ते[43] और उस व्यक्ति को धन्यवाद देने का अवसर भी न देते । मनुष्य दुःख में भगवान् को याद करता है, बाबा स्वभावतः अयाचित कृपा करते और आर्त की पुकार पर तो वे स्वयं प्रकट हो जाते[44]। लोगों की छोटी से छोटी रुचि को पूर्ण करने में भी वे सदा तत्पर रहे ।

बाबा को स्वभावतः दीन–हीन अत्यधिक प्रिय थे, जो उनकी कृपा पाकर लोकप्रिय हो उठे । उन्होंने सर्वत्र वीरान, बंजर और तुच्छ भूमि का ही चयन किया[45] और उनमें भव्य मन्दिर बनाये जो अपनी विशेषताओं के कारण प्रसिद्ध हुए । अनाथ और अनपढ़ ठाकुर भगवान सिंह को अपने हाथों जनेऊ पहनाकर आपने उसे वृन्दावन हनुमान मन्दिर का पुजारी बना दिया और उसके मुँह से गीता सुनवाकर उसकी प्रतिष्ठा बढ़ा दी[46] । यह बाबा के सम्पर्क की ही विशेषता रही कि नितान्त भौतिकवादी, अमरीका के डा. रिचार्ड एलपर्ट का रुपान्तर विश्व में आध्यात्मवादी रामदास के नाम से हुआ[47] । इस प्रकार बाबा में मानवता की पराकाष्ठा दिखायी देती रही । वे मानवता को आध्यात्म की आधार शिला मानते थे ।

बाबा की क्षमाशीलता भी अनुपम रही । उन्होंने किसी को भी उसके दुष्कृतों के लिये हेय दृष्टि से नहीं देखा । सब कुछ जानते हुए भी वे अनजान बने रहते[48] । वास्तव में 'जौं करनी समुझै प्रभु मोरी, नहिं निस्तार कलप सत् कोरी', यही तो भगवत् स्वरूप है । काम, क्रोध, मद, मोह लोभ को वे मानवीय दुर्बलता मानते थे और इससे प्रेरित अपराधों को बाबा विशेष महत्व नहीं देते थे । लोभवश आश्रम और मन्दिर की वस्तु चुराने वाले को आप सहज भाव से क्षमा कर देते और कभी–कभी तो चुराई हुई वस्तु उसी को दे देते[49] । यदि इस अपराध के कारण कोई उस व्यक्ति से दुर्व्यवहार करता तो बाबा अत्यन्त दुःखी हो जाते थे । अपराध विशेष से त्रसित शरणागत व्यक्ति को वे, अपनी उदारता के कारण, राजकीय दण्ड से मुक्त कर देते[50], इसके लिये वे उस व्यक्ति से सच्चा प्रायश्चित् करवा देते थे । महाराज शरणागत भक्त वत्सल रहे, उनका यह दण्ड विधान अपने में अनोखा रहा । उनके दरबार से मुक्त किया व्यक्ति राजकीय न्यायालयों में दण्ड का भागी नहीं हो पाता था ।

बाबा नितान्त अभय रहे । उनमें दैहिक, दैविक और भौतिक भय किंचित मात्र भी न था । वे सूने जंगलों में आनन्द से रात बिता देते थे । भयानक और विषैले जन्तुओं की उन्हें चिन्ता न होती । अपनी फ़कीराना मौज में वे राजकीय कानूनों की परवाह भी न करते । लोगों के उपकार में, शरणागत अपराधियों को क्षमा प्रदान करने में और मन्दिर एवं आश्रमों के निर्माण कार्यों में वे लौकिक कायदे कानूनों के मुखापेक्षी नहीं रहे[51] ।

संग्राही दिखायी देते हुए भी बाबा नितान्त अपरिग्रही रहे । जहाँ एक ओर जनता द्वारा मन्दिर और आश्रम के लिये दी गयी साधारण वस्तु की बरबादी वे नहीं देख पाते थे और सभी वस्तुओं का लेखा–जोखा स्वयं देखने का नाटक किया करते, वहीं दूसरी ओर उन्हें अपने गुज़ारे की कोई चिन्ता न थी । समाज की आवश्यकता के लिये वे अपने शरीर को एक धोती और

कम्बल से ढके रहते थे और बदलने के लिये उनके पास दूसरा कपड़ा नहीं रहता था । किसी गृहस्थ द्वारा धोती समर्पित की जाने पर वे अपनी धोती प्रसाद रूप में उसी घर में छोड़ देते और कभी सप्ताह भर भी स्नान न होता तो धोती बदलने का प्रश्न भी न रहता ।

बाबा पुनर्जन्म को मानते थे और बहुधा कहते कि **हमारा इस जन्म में उन्हीं लोगों से संयोग होता है जिनसे हमारा सम्बन्ध किसी न किसी रूप में पूर्व जन्म में रहा और इस मिलन की एक अज्ञात, पर निश्चित अवधि होती है और उसके बाद वियोग हो जाता है** । उदारता को वे जन्म जन्मान्तरों के सुकृतों का परिणाम बताते और कहते, **"स्वयं कष्ट उठाकर त्याग कर पाना कठिन होता है । ऐसा कार्य मनुष्य पूर्व जन्मों के सुसंस्कारों के कारण ही कर पाता है ।"** बाबा की अपनी उदारता की कोई सीमा ही न थी । उनके प्रत्येक कार्य बड़े पैमाने में हुआ करते । देने में उन्हें विशेष आनन्द आता । अदेय उनके लिये कुछ भी न था । सब के मनोरथ पूर्ण करने में वे कल्पतरु थे[52], परन्तु हितकर इच्छा को ही महत्व देते, अहितकर को नहीं । उनके आश्रमों में हज़ारों दर्शनार्थी नित्य प्रसाद पाते, प्रत्येक व्यक्ति को उसके घर के लिये भी सुचारु रूप से बंधा प्रसाद दिया जाता । आगन्तुक साधुओं को भोजन के अतिरिक्त धन और कम्बल भी दिये जाते । बाबा यही कहते, **"खाली नहीं करोगे तो भरेगा कैसे ?"** उनको कभी भी कमी के दर्शन नहीं हुए । सूर्य ने क्या कभी अन्धकार देखा है ? यह हमारे जीवन में संकीर्ण मनोवृत्तियों की कालिमा है जो हमें कमी की अनुभूति कराती है, अन्यथा उस पूर्ण के दरबार में कमी कहाँ ?

बाबा याचक नहीं प्रभु थे । उनका जीवन इतना सादा था कि उन्हें दिया भी जाता तो क्या ? वे कहते थे, **"ईश्वर के आगे सब गरीब हैं ।"** पर बाबा सब प्रकार से समर्थ थे । उनमें रंक को राजा और राजा को रंक बनाने की क्षमता थी । वे सदा महाराज कहलाये । यदि वे याचना भी करते तो किससे करते और किस चीज की करते ? उनकी इच्छा शक्ति से पृथ्वी और अग्नि भारतीय रिजर्व बैंक के नोट प्रस्तुत करती[53], जल की परिणति दूध और घी में हो जाती[54] और उपलब्ध सामग्री आवश्यकतानुसार बढ़ जाती[55] । ऐसे अवसर स्थिति विशेष में आते और वे इनका प्रयोग दूसरों के लिये ही किया करते । लोगों में दानशीलता, परोपकार और त्याग की भावना बढ़ाने के लिये ही वे धनी लोगों को आश्रम और मन्दिर के निर्माण, भण्डारे और निर्धन लोगों की सहायता में धन लगाने का आदेश देते रहे ।

बाबा का बाल स्वभाव था इसलिए बच्चों और युवकों के प्रति उनका प्यार भरा उदारता पूर्ण व्यवहार रहा । वे लोग अपने स्वभावगत दोषों के लिये क्षम्य ही नहीं थे, बाबा उन्हें प्रोत्साहित भी करते दिखायी देते थे । उनके प्रति बड़ों की कटु आलोचनाओं पर ध्यान न देकर, वे उनकी इच्छाओं को महत्व देते थे । बात असल में यह थी कि उनका अन्तर्मन बाबा के हाथ में था । अपने भक्तों के विविध प्रकार होते हुए भी बाबा किसी से दुर्व्यसन छोड़ने को नहीं कहते थे, अपितु इसके लिये व्यक्ति को परोक्ष रूप से अवसर भी दिया करते । यह उनके सान्निध्य का ही प्रभाव रहा कि कालान्तर में सभी अनायास अपने दुर्व्यसनों से मुक्त हो गये । अस्तु, बाबा बच्चों और युवकों से इतनी ही अपेक्षा करते थे कि वे अपने माता–पिता और गुरुजनों को नमन करें । अपने माता–पिता के अनुरागी उनको अत्यधिक प्रिय हुआ करते थे । माता–पिता का जीता–जागता रूप ही सर्व प्रथम हममें पूज्य भाव पैदा करता है । ऐसा आचरण लौकिक एवं पारलौकिक दृष्टि से समीचीन भी है । सम्भवतः इसी कारण से बाबा अपने सामने ही सदा बच्चों और युवकों को दरबार में उपस्थित उनके माता–पिता और अध्यापकों को नमन करने का आदेश दे उनके चरणों में सिर रखवाया करते । वे अनेक उदाहरण भी देते कि किस प्रकार अमुक अपनी माँ को कन्धे में ले जाकर गंगा स्नान कराता है और अमुक अपने माता–पिता को भोग लगाकर स्वयं भोजन ग्रहण करता है, आदि । एक प्रसंग में बाबा ने कहा, **"माता–पिता के जीवित रहते भगवान् की खोज आवश्यक नहीं है । माता–पिता की बोलती–चालती मूर्ति की पूजा कठिन है और यह ही सबसे बड़ी साधना है"** । बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध में बाबा कहते, **"सभी शिक्षित हो कर इस संसार में आते हैं । ईश्वर से बढ़कर कोई शिक्षक नहीं है ।"**

बाबा अन्य साधु सन्तों से भिन्न दिखायी दिये । वे सदा आडम्बर रहित रहे । अन्य साधु–सन्त बच्चों को अनाधिकारी मानकर उन्हें अपने पास आने के लिये प्रोत्साहित नहीं करते, पर बाबा इन्हें अपना अमृतमय प्रसाद खिलाकर तृप्त करते रहे । उनका दरबार बच्चों के लिये सदा उसी प्रकार खुला रहता जैसे अन्य स्त्री–पुरूषों के लिये । प्रायः ऐसा देखा जाता है कि भारतीय साधु समाज केवल पारलौकिक विषयों में रुचि रखता है और उसी का उपदेश करता है । बाबा सभी लौकिक और पारलौकिक विषयों के विशेषज्ञ थे, वे सभी प्रकार की वार्ता करते । यहाँ तक कि बच्चों के पालन पोषण की विधि और रोगों का उपचार भी वे बताते । और भी, साधु और सन्तों के दर्शन करने के लिये लोगों को उनके स्थान पर जाना पड़ता है ।

बात उचित है, प्यासा ही कुएँ के पास जाता है, पर बाबा स्वयं लोगों के घरों में जाकर उन्हें तृप्त करते रहे ।

आहार-निद्रा का ढंग भी बाबा का निराला रहा । कभी वे बिना आहार के ही विचरण करते तो कभी किसी दिन अनेकानेक गृहस्थों के आतिथ्य ग्रहण करने पर भी अपने को भूखा दर्शाते । कभी किसी चरित्रवान की एक सूखी रोटी उन्हें तृप्त कर देती[56] । बाबा के अत्यधिक भोजन करने का कारण बताना कठिन है । संयुक्त राज्य अमरीका में हिमालयन अन्तर्राष्ट्रीय योग, विज्ञान और दर्शन संस्थान के अध्यक्ष स्वामी राम अपने अनुभवों के आधार पर बताते हैं कि बाबा को अपने 'स्व' का बोध नहीं था, इस प्रकार उनका आचरण बच्चों का सा था । वे अत्यधिक भोजन कर जाते थे, पर जब उन्हें अवगत करा दिया जाता कि वे भोजन कर चुके हैं तो वे फिर नहीं करते थे । बात समीचीन जान पड़ती है क्योंकि उनके आश्रमों में भी परिकरों को उन्हें शौच, स्नान और भोजन की याद दिलानी पड़ती थी । स्वामी रामानन्द जी कहते हैं कि बाबा के समस्त व्यवहार प्रभु के साथ उनकी सम्बद्धता से परिचालित हुआ करते हैं । वे परमहंस स्थिति में रहा करते हैं[57] । अस्तु, बाबा स्वयं गृहस्थों के घरों में खाते ही न थे, प्रत्युत अपने साथ के लोगों को भी खिलवाया करते थे । उनके लिये यह आवश्यक नहीं था कि वे निमन्त्रण पर ही जाते । वे अपने परिकरों के साथ किसी भी गृहस्थ में प्रवेश कर जाते और वहां जो भी भोज्य पदार्थ बना होता, उसे भक्तों सहित पाते । बाबा के ऐसे आचरण से उस गृहस्थ के बने भोजन की मात्रा में किसी प्रकार की कमी नहीं आ पाती थी । उनकी कृपा से भोजन सामग्री इतनी बढ़ जाती कि वह गृहस्थ और अतिथियों के लिये पर्याप्त हो जाती । गृहस्थ अतिथि सत्कार करता दिखायी देता, पर वास्तव में भोजन बाबा ही कराते होते[58] । इस प्रकार उस गृहस्थ की लाज की रक्षा भी वे ही करते । बाबा शाकाहारी रहे, पर हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी के यहाँ खाना खा लेते थे । हरिजनों से प्राप्त भोजन में वे विशेष उत्साह दर्शाते[59] । बाबा के कार्य निष्प्रयोजन नहीं हुआ करते । जिसके घर भी उन्होंने भोजन ग्रहण किया उसके लौकिक एवं आध्यात्मिक स्तर को उन्होंने उठा दिया । यही कारण है कि बाबा के असंख्य भक्तों में हीनता का भाव नहीं दिखायी देता । सब में प्रेम और सन्तोष के दर्शन होते हैं ।

रात-दिन विचरण करते हुए भी बाबा थकते न थे । जब कभी वे आँखे बन्द कर लेटे दिखायी देते तो यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा

सकता था कि वे सो ही रहे हैं । वे शरीर से अन्यत्र हो, कहाँ क्या कर रहे हैं, यह कोई नहीं जान पाता था ।

बाबा का व्यवहार व्यक्ति के अनुकूल होते हुए भी भेदभाव पूर्ण न था । संभ्रांत एवं प्रतिष्ठित वर्ग में इनकी मान्यता बहुत थी और साधन सम्पन्न होने के कारण वे इन्हें अपने घरों में ले जाते थे, पर निर्धन, दीन-दुःखी लोगों से उनका सहज लगाव था । इनके घरों में बाबा स्वतः जाते और माँग कर भोजन करते । कुछ नासमझों की ऐसी धारणा रही कि बाबा बड़े लोगों के हैं । ऐसा दोष कोई भगवान् पर भी लगा सकता है । वे सदा असहाय और दीन की, मन से कद्र करते रहे । बाबा का उद्देश्य सम्पन्न व्यक्तियों में, अपनी मान्यता से उनका अभिमान गिरा कर, उदारता का भाव जाग्रत करना रहा जिससे असहायों को लाभ पहुँचे और सम्पूर्ण समाज का कल्याण हो । लोगों की संकीर्ण मनोवृत्तियों में सुधार लाने के लिये वे व्यवहार की शुद्धता को महत्व देते थे ।

हास्य और विनोद बाबा को अत्यधिक प्रिय रहे । उनका मुख मण्डल दर्शकों की चित्तवृत्तियों को निरन्तर अपनी ओर आकृष्ट किये रहता । वे मुस्कराते और दर्शकगण हँसते रहते । हँसने-हँसाने के अलावा वे रोने और रुलाने की कला में भी अद्वितीय थे । रामायण की कतिपय चौपाइयां और मार्मिक साधारण वार्ता भी उन्हें भाव विभोर कर देती[60] और उनका अविरल अश्रुपात होने लगता । रोता हुआ कोई व्यक्ति उनके पास आता तो उनकी आँखों से आँसू बह निकलते । ऐसी संवेदना गृहस्थ और साधुओं में भी नहीं देखी जाती । बाबा का हृदय सदा दया से परिपूर्ण रहता । उनके फोटो चित्रों के आगे रोने पर उनके चित्रों से आँसू गिरते देखे गये हैं । भावुक व्यक्ति विशेषतः महिलाएँ उनके स्पर्श मात्र से विभोर हो जातीं और सिसक-सिसक कर रोने लगतीं । इस प्रकार का रोना भी आत्मोन्नति का सर्वोच्च साधन है ।

बाबा ने बाल्यकाल में ही घर छोड़ दिया था । इस कारण वे हिन्दी का केवल साधारण बोध भर कर पाये । हिन्दी के अक्षर भी वे भलीभाँति नहीं बना पाते थे । उनकी वाणी का लहजा ब्रज भाषा का रहा और वे अधिकांश हिन्दी उर्दू मिश्रित भाषा का प्रयोग करते रहे । इस संसार में ईसा, मुहम्मद, राम, कृष्ण, कबीर, पीटर आदि अनेक व्यक्ति हुए जो पढ़े-लिखे नहीं थे, पर उनकी महानता लोक मान्य रही । बाबा में ऐसी क्षमता रही कि विश्व की किसी भी भाषा में अभिव्यक्त विचारों और भावों को वे जान जाते । विदेशियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों का उत्तर कभी-कभी आप दुभाषिये के बताने के पूर्व ही दे बैठते और कभी अंग्रेजी के शब्द एवं वाक्य आपके मुँह से सहज रूप में निकल पड़ते । एक बार हनुमान गढ़, नैनीताल में बाबा

एक पेड़ के नीचे अकेले दो जर्मन साधुओं से लगभग घंटाभर, बिना दुभाषिये के, बातें करते रहे । भक्तजन दूर से यह दृश्य देख रहे थे । बाबा और दोनों जर्मन साधु बहुत हँसते हुए बातें करते रहे और अन्त में वे दोनों बहुत प्रसन्न एवं सन्तुष्ट मुद्रा में उनके पास से लौटते दिखायी दिये । एक बार वैदिक ऋचाओं के उच्चारण में भूल हो जाने पर बाबा स्वयं सुधार करते देखे गये । आप आदेश या सम्मति थोड़े पर सरल और स्पष्ट शब्दों में दिया करते, पर उनका आशय सदा गूढ़ हुआ करता । यहाँ तक कि उनके मुँह से निकले 'आ' या 'जा' शब्द भी विशेष अर्थ रखते थे । बाबा व्यक्ति के हित को ध्यान में रखते हुए उचित समय पर उसे अपनी सम्मति देते और परोक्ष रूप से उसके कार्य को पूर्ण करने में सहायक होते । जिन लोगों को आपकी रहस्यमय वाणी का अनुभव हुआ वे उनकी आज्ञा यथावत् पालन करना ही श्रेयस्कर समझने लगे । आपके आदेशों को न मानने अथवा अपनी बुद्धि का प्रयोग कर उनमें किसी प्रकार का हेर–फेर करने से परिणाम नैराश्यपूर्ण या अहितकर होते रहे । जब बाबा किसी नास्तिक या दुष्ट को भक्त, योगी या सन्त कह कर सम्बोधित करते तब उनका आशय उसमें ऐसे बीज का आरोपण होता जो कालान्तर में प्रस्फुटित, अंकुरित और पल्लवित हो पुष्पित और फलित होता । ऐसे सुन्दर परिवर्तन लोगों में देखे गये[36] ।

बाबा को शाब्दिक ज्ञान रुचिकर न था । आप कहते थे कि भारत का बच्चा–बच्चा इसमें प्रवीण है । आप साधारणतः उपदेश, प्रवचन, शिक्षा आदि नहीं दिया करते थे, भले ही प्रसंगवश कोई चर्चा उपदेशात्मक हो जाय । आपकी वार्ताओं की रोचकता श्रोताओं के मन को इस प्रकार उलझाये रहती कि रात बीत जाती और सवेरा हुआ देख सब को आश्चर्य होने लगता । ऐसी मानसिक स्थिति बिना भाषण और प्रवचनों के सभी को सुलभ थी । कभी आध्यात्मिक प्रसंग चल पड़ने पर उनके मुँह से जो वाक्य निकलते, वे सीधे हृदय को स्पर्श करते और महामन्त्र प्रतीत होते । वे तत्वदर्शी थे, सबसे प्रेम करते और कहते, **"हम शिष्य नहीं भक्त बनाते हैं ।"** उनकी दृष्टि में उपदेशक और शिक्षक अपने अहम् भाव का पोषण करते हैं ।

बाबा बहुधा कहते, **"हम जिस का हाथ पकड़ लेतें हैं, फिर उसे कभी नहीं छोड़ते भले ही वह हमें छोड़ दे ।"** इसका तात्पर्य यह था कि वे जिसे भी एक बार अपनी शरण में ले लेते उसके निरन्तर योग और क्षेम का उत्तरदायित्व स्वयं वहन करते और यदि खुशहाल होने पर वह व्यक्ति उन्हें भूल जाता तो इससे बाबा की कृपा पर कोई अन्तर नहीं आता वह यथावत् बनी रहती । वास्तव में वे किसी की कृतज्ञता के भूखे

नहीं रहे । बाबा की इस बात में इतना बल है कि उनके महाप्रयाण के बाद भी लोगों का उन पर विश्वास बना है । जब कभी उनके भक्तों के जीवन में नैराश्यपूर्ण स्थिति पैदा हो जाती है, उन्हें उनके बल का भरोसा होने लगता है और उनकी घबराहट विलीन हो जाती है ।

बाबा ने जात–पाँत और विभिन्न धर्मावलम्बियों में भेद नहीं माना । हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, हरिजन, बाल, वृद्ध स्त्री–पुरुष आदि सभी उनके भक्त रहे और सब पर उनकी कृपा समान रही । वे धर्म परिवर्तन के पक्ष में नहीं रहे और सब को उनके धर्म, अवस्था, स्थिति और क्षमता के अनुसार प्रोत्साहित कर उनके विश्वास को बढ़ावा देते रहे और अपनी प्रत्यक्ष कृपा उन पर बरसाते रहे । वे कहते, **"सभी धर्म मूलतः एक हैं, सब ईश्वर की ओर ले जाते हैं । सब मनुष्य भी समान हैं । वह खून सब में है जो हृदय से होकर शरीर में दौड़ता है ।"** वे मुसलमानों को इस्लाम का महत्व बताते, सिखों को उनके गुरुजनों का । ईसाइयों को ईसा की विशेषता बताते–बताते प्रायः वे भाव विभोर हो उठते और उनका अश्रुपात होने लगता । भारतीय राजदूत श्री किदवई के आग्रह पर वे मक्का, अमरीकी भक्तों के अनुरोध से गिरजाघरों और अन्य भक्तों के साथ मन्दिरों में गये और सभी धर्मों का उन्होंने समान रूप से आदर किया । उन्होंने किसी भी धर्म और मान्यता का कभी विरोध नहीं किया, पर स्वयं इनसे नियन्त्रित भी नहीं रहे । मानवता को प्राथमिकता देने में और कर्मकाण्ड को समरस बनाने में, अवसर पड़ने पर शास्त्रीय विधानों के विपरीत कार्य करने में आपको संकोच करते नहीं देखा गया । अपने आश्रमों में पूजा और वार्षिक अनुष्ठानों में उन्होंने भाग नहीं लिया और मन्दिरों की प्रतिष्ठा जैसे कार्यों से भी आप सदैव अलग रहे, यद्यपि इन समस्त कार्यों का भार आप पर ही रहता और उनका संचालन भी आप से ही होता, परन्तु कर्त्ता के रूप में आप कभी भी प्रत्यक्ष नहीं हुए । अपने धर्म का पालन करने वाले आपको बहुत प्रिय होते और ऐसे सुपात्र पर आपकी कृपा भी विशेष होती । अनीति, अनाचार, छल, कपट, दम्भ आदि की निन्दा वे भक्तों में त्याज्य भाव पैदा करने के लिये किया करते थे ।

यद्यपि बाबा वैष्णव मत में दीक्षित थे तथापि साधना की कोई स्पष्ट पद्धति आपमें नहीं दिखायी दी । आपको नियम, आसन, प्राणायाम, तीर्थ–स्नान, मन्दिर–दर्शन, जप, यज्ञ, अनुष्ठान आदि की आवश्यकता न थी । बातें करते हुए भी आपके दाहिने हाथ का अँगूठा चारों अंगुलियों में दौड़ लगाता रहता और कभी ऐसी स्थिति हो जाती थी कि आपको अपना भान ही नहीं रहता । आप कभी 'राधा–राधा' बहुधा 'राम–राम' कहते

सुनायी पड़ते । निज स्वरूप में लीन आप ही सब कुछ थे । रामचरितमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम सम्बन्धी सभी सार गर्भित चौपाइयां आपके चरित्र में पूरी तरह घटित होती पायी जाती हैं । बाबा कहते **"राम नहीं रहे, कृष्ण नहीं रहे, पर नाम बना रहा । नाम लेने से सब काम पूरे हो जाते हैं"** और अपनी गर्दन हिलाते हुए दोहराते **"सब काम पूरे हो जाते हैं ।"** बाबा के ऐसे आचरण भक्तों को प्रिय लगते और उनके विश्वास को इनसे दृढ़ता प्राप्त होती ।

भगवत् निष्ठा बाबा में उच्च कोटि की दिखायी दी । वे अन्न में ब्रह्म और जीव में ईश्वर की स्थिति मानते और तदनुसार ही आपका इन के प्रति भाव रहता । भगवत् दर्शन के सम्बन्ध में आप कहते थे कि **भगवान् अपनी प्रकृति में पूर्ण रूप से विद्यमान हैं । वे सर्वत्र हैं और कभी भी हमारी आँखों से ओझल नहीं होते । यदि हम उन्हें नहीं देख पाते या सच्चाई से उन्हें देखने का प्रयास नहीं करते तो दोष हमारा है । हम भेद दृष्टि से काम लेते हैं । हमारी संकीर्ण मनोवृत्तियां हमें इस प्रकार उलझाये रखती हैं कि हम सदा उन्हें भूले रहते हैं । मन शुद्ध न होने से हमें वह शान्ति एवं भगवत् प्रेम प्राप्त नहीं हो पाता जिससे उनका प्रत्यक्ष अनुभव हो सके ।** वे प्रेम को ही भगवत् प्राप्ति का साधन बताते और बार–बार कहते, **'रामहि केवल प्रेम पियारा'।** इस सम्बन्ध में उनसे पूछने पर कि जब सच्चाई से हम भजन कर नहीं पाते तो यह सब हमारा ढोंग व्यर्थ है ? बाबा कहते, **"सच्चाई से कर नहीं सकते, झूठ करना नहीं चाहते तो तुम करोगे क्या ?"** यद्यपि उनके लिये सब कुछ प्रपंच ही था, फिर भी वे हमारे लिये कपट रहित ढोंग को उचित बताते और कहते **"आरम्भ में सभी से ढोंग होता है, पर कालान्तर में हृदय के परिष्कृत होने पर सच्चाई स्वतः आ जाती है । चमड़े की आँखों से कहीं भगवान् दिखायी देता है ? दर्शन के लिये दिव्य दृष्टि चाहिये जो चित्त के शुद्ध होने पर प्राप्त होती है । इसके लिये भजन और आचरण अपेक्षित हैं । झूठे–झूठे राम नाम लेते जाओ, कभी सच्चा राम निकल आयेगा, मुक्त हो जाओगे ।"** सहस्त्र नाम तत्तुल्यम् राम नाम वरानने ।

बाबा कहते **"मनसा, वाचा, कर्मणा से लकीर पीटते जाओ तभी हृदय में भगवान् का वास होगा और तभी निष्काम कर्म हो पायेगा । निष्काम कर्म भगवान् के अलावा कोई नहीं कर सकता । यह कृपा साध्य है, कर्म साध्य नहीं । उसकी कृपा पर किसी का अधिकार नहीं है । वह दे, न दे या छीन ले ।"**

ईश्वर प्राप्ति में मोह और अभिमान को आप सब से बड़ा बाधक बताते और कहते, **"घट में जब तक मोह अभिमान, पण्डित मूरख एक समान ।"** आप कहते, **"सारा ब्रह्माण्ड हमारा घर है, इसमें रहने वाले सब हमारे परिवार के हैं । हर स्त्री माँ और बहिन है और हर पुरुष पिता और भाई । यह सब ईश्वर का परिवार है । तुम उत्कृष्ट सेवा तभी कर सकते हो, जब तुम्हारा ध्यान ईश्वर पर केन्द्रित हो । ईश्वर को किसी रूप में देखने के प्रयास से अच्छा यह है कि हर वस्तु में उसे देखा जाय ।"**

बाबा केवल भगवान् को ही कर्ता मानते थे और मनुष्य को असहाय प्राणी । वे कहते थे, **"मनुष्य से क्या माँगना, वह दे क्या सकता है ? सन्त और भगवान् सर्व समर्थ हैं, परन्तु उनसे माँगना नहीं पड़ता । वे सर्वज्ञ हैं, जो उचित है उसे स्वतः देते हैं ।"** इस प्रकार भगवत् इच्छा को वे सर्वोपरि बताते और शरणागति पर बल देते जिससे लोगों में भगवत् प्रेम और विश्वास हो और वे अकारण चिन्ताओं से मुक्त हों । स्वयं असंख्य परिवारों, दीन-दुखियों, आश्रम, भण्डारे आदि की चिन्ता वहन करते हुए भी वे कभी चिन्तित नहीं दिखायी दिये । छोटे-बड़े सभी कार्य उनकी आज्ञा से ही संचालित होते, पर उन्हें न कभी किसी से परामर्श लेने की आवश्यकता हुई और न वे आगे पीछे का चिन्तन करते ही दिखायी दिये । वे कहते थे, **"ईश्वर के भरोसे सब कार्य सहज रूप से हो जाते हैं । ईश्वर की कृपा से ही मनुष्य सफल होता है । कठिन परिश्रम ही यथेष्ट नहीं होता ।"**

बाबा की आस्तिकता इतनी प्रबल थी कि उनके सान्निध्य में आकर कोई व्यक्ति नास्तिक नहीं रह पाता था । उसकी धारणा में परिवर्तन आना स्वाभाविक हो जाता । भौतिकवादी डा. रिचार्ड एल्पर्ट आध्यात्मवादी राम दास बन गये[47] । यदि कोई घोर नास्तिक हठात् अपनी विचारधारा को उनके पास बैठ कर भी बनाये रखना चाहता हो तो बाबा उसकी मनःस्थिति को देख ऐसी लीला का प्रदर्शन करते जिससे तुष्ट हो वह आस्तिकता को अंगीकार करने लगता । इसी प्रयोजन से बाबा ने एक बार वृन्दावन आश्रम में हनुमान जी की मूर्ति से अश्रुपात होते दिखाया और कैंची आश्रम में हनुमान जी की मूर्ति को एक बाल्टी दूध पिलाया[61] ।

ध्यान को बाबा अवश्य महत्त्वपूर्ण बताते थे, पर जब कोई व्यक्ति उनके पास बैठ कर ध्यान लगाता तो वे तुरन्त उसके ध्यान को तोड़ देते थे । मैंने अनेक बार उनके दरबार में, जब वे लोगों से वार्ता करते रहते, उनके पाद-पद्मों को अपने हाथ में लेकर ध्यान लगाने की चेष्टा की । कभी बाबा अपना पैर हटा लेते, कभी वे मेरी हथेली में अपने अँगूठे को हिलाते रहते

और कभी वे उस समय दरबार में चलती हुई चर्चा पर मुझ से ही प्रश्न कर देते और मुझे निरुत्तर हो लज्जित होना पड़ता । बात असल में यह थी कि वे प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता को जानते थे और अपनी ध्यान की उच्च एवं प्रभाव पूर्ण स्थिति को भी । एक बार इसी संदर्भ वे बोले, **"मस्तिष्क की सीमा होती है । तुम शरीरस्थ हो । ये चीजें धीरे–धीरे प्राप्त करने की हैं, ऐसा न करने से पागल भी हो सकते हो । यह सत्य है कि एकाग्र मन ही अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है और यही आत्म दर्शन है, पर ईश्वर स्मरण और प्राणियों की सेवा करने वाले को ध्यान और पूजा की आवश्यकता नहीं है । यह सरलतम साधन है ।"** बाबा कष्ट–प्रद साधना को महत्व न देकर हृदय की शुद्धता पर जोर देते थे ।

सही मायने में बाबा का सत्संग उनका दर्शन और स्पर्श ही था । उनका दर्शन व्यक्ति की निजी योग्यता पर निर्भर करता था, क्योंकि वे जैसे को तैसा दिखायी देते थे । बाबा की दृष्टि आनन्दमय थी, उनकी मुद्राएँ बहुत आकर्षक होतीं और वाणी में उनके जादू था । व्यक्ति उनकी डाँट और मार खाकर भी उन्हें छोड़ना नहीं चाहता था[62] । जो लोग उनके पास आते वे लौट कर जाना नहीं चाहते थे । बाबा प्रत्येक व्यक्ति से अलग–अलग जाने को कहते और फिर प्रायः किसी दूसरे दिन आने को भी कहते । यह उनका प्रेम था जो लोगों को आकृष्ट किया करता । वे कहते भी थे, **"तुम हमारे पास इसलिए आते हो कि हम तुमसे प्रेम करते हैं ।"** उनकी बात सही इसलिए जान पड़ती है कि गृहस्थ के माया–मोह में पड़ा व्यक्ति उनसे प्रेम करने में असमर्थ था । वह स्वार्थवश ही उनके पास जाता था, पर बाबा निस्वार्थ प्रेम करते । वे प्रत्येक व्यक्ति को प्रसाद देकर ही विदा किया करते । लोगों के आने–जाने का यह अनवरत क्रम लगा ही रहता था । सूक्ष्म में बाबा का सत्संग आओ, खाओ और जाओ ही था[63] । उनकी अलौकिक शक्ति दर्शनार्थियों के आने–जाने की सुविधाओं का भी ध्यान रखती थी । किसी को यातायात सम्बन्धी कठिनाई नहीं होने पाती[64] । पर्वतीय भाग में जहाँ ऐसी कठिनाइयां स्वाभाविक हैं, स्त्री, बाल, वृद्ध सभी हर समय उनका भरोसा कर दर्शन करने चले आते और किसी को भी इस सम्बन्ध में निराश नहीं होना पड़ता । इतने पर भी महान् आश्चर्य को बात यह है कि बाबा के दर्शन उनकी कृपा से ही प्राप्त होते[65], व्यक्ति अपनी सामर्थ्य से उन्हें नहीं पा सकता था ।

प्रश्नों का उत्तर देना बाबा को प्रिय था । वे लोगों की समस्याओं को हल करने में बहुत आनन्द लेते थे और दिन–रात लोगों के प्रश्नों का उत्तर हँसते–मुस्कराते देते रहते । राजनैतिक, सामाजिक, वैयक्तिक, दार्शनिक, योग, भक्ति, नीति, आचार आदि सभी विषयों से सम्बन्धित प्रश्न हुआ करते । वे जटिल से जटिल प्रश्नों का उत्तर थोड़े शब्दों में देते जिनकी सरलता और स्पष्टता देखते ही बनती थी । बाबा के उत्तरों के औचित्य पर प्रश्नकर्ता मोहित हो जाता था । भूत, भविष्य और वर्तमान सभी उनकी आँखों के आगे नाचता रहता । किसी भी प्रश्न के उत्तर में वे सोचते विचारते नहीं देखे गये । वे सदा प्रश्न करते ही उत्तर दे बैठते । कभी–कभी ऐसा भी देखने में आता कि पूछने वाला अपनी बात पूरी तौर से कह भी नहीं पाया और बाबा ने छोटा और सही उत्तर दे भी डाला । कभी पूछने वाले के मन में एक के बाद दूसरे प्रश्न उठते चले जाते तो वे सभी प्रश्नों का उत्तर उसके पूछने के पहले ही दे जाते[66] ।

बाह्य दृष्टि से बाबा दिन–रात जन समुदाय से घिरे दिखायी देते, पर इतने घुले–मिले रहने पर भी वे निसंग रहे । वस्तुतः वे अप्रत्यक्ष रूप से अपने व्यापक कार्य में रत रहते । वे सर्वत्र सब को देखते रहते, सर्वत्र सब की सुनते रहते[67] और यथोचित कार्य करते । वे सब को प्रेरित[22] करते और स्वप्नों में आकर सार्थक आदेश भी देते[68] । वायु की भाँति सब को स्पर्श करते हुए भी वे निर्लिप्त थे । उनके कार्य सदा अप्रत्याशित ही रहे । बाबा कब क्या करेंगे, इसका कोई अन्दाज़ा नहीं लगा सकता था । कहीं वे साथ के लोगों को छोड़ कर अकेले चल देते और कहीं जहाँ उनकी आशा भी नहीं की जाती, आकर भक्तों को दर्शन दे कृतार्थ कर जाते थे । वे कभी कहते भी थे, **"दुनियाँ में हूँ, दुनिया का तलबदार नहीं । बाजार से गुजरा हूँ पर खरीददार नहीं ।"**

इस प्रकार महाराज एक खुली पुस्तक के रूप में रहे जिसे कोई भी पढ़ सकता था, परन्तु उसे समझने की क्षमता किसी में भी नहीं दिखाई दी। वे देखने में और, वास्तव में कुछ और ही थे । मनुष्य स्वभावतः समाज में अपना परिचय अच्छा देना चाहता है, इस कारण अपनी कमज़ोरियों को छिपाते रहता है, पर इसके विपरीत बाबा अपने में मानवीय दुर्बलताओं का प्रदर्शन निःसंकोच किया करते और संसार से किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं रखते । इतने पर भी उनके कार्यों का प्रभाव जन मानस में ऐसा पड़ा कि वे सदा लोगों की श्रद्धा और प्रेम के भाजन बने रहे । तर्क और गुणों के आधार पर उनके बारे में कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता । यद्यपि लोक दृष्टि से आपने मान–अपमान, उचित–अनुचित, न्याय–अन्याय आदि को

महत्व नहीं दिया, पर आपके कार्य सदा श्रेयस्कर ही रहे । वास्तव में आप गुणातीत एवं द्वन्द्वातीत थे । ऐसा जान पड़ता है कि एक महान अलौकिक शक्ति स्थूल रूप धारण कर लोगों के सामने आयी जिसकी थाह मानवी बुद्धि नहीं पा सकी । आपकी विलक्षणताओं को देख कर यह कहा जा सकता है कि आपके प्रत्यक्ष और परोक्ष दो रूप रहे । दोमों रूप निरन्तर सक्रिय रहते हुए भी एक दूसरे पर आश्रित नहीं थे । प्रत्येक स्वतन्त्र रूप से कार्य करता और अवसर पड़ने पर सहयोगी बन सकता । प्रत्यक्ष रूप स्थूल था और लीलात्मक, पर परोक्ष रूप विभु था – सर्वज्ञ, सर्व व्यापक और सर्व समर्थ । दोनों रूपों की एकता में आनन्द की ऐसी छटा व्याप्त रहती जिससे उनका चतुर्दिक वातावरण तदनुरूप हो जाता और वह दर्शकों को ऐसी सुखानुभूति कराता कि वे स्वयं अपने को भूल जाते ।

सारांश में बाबा का जीवन भक्त हृदय को नर रूप में हरि के दर्शन कराता है । वह जिज्ञासु को मानव जीवन की कल्पनातीत सम्भावनाओं का और कर्मिष्ठ को कार्य की वास्तविक दिशा का बोध कराता है ।

जटाएँ उतरवाने के बाद नीब करौरी हनुमान मन्दिर में

निर्माण–कार्य

यद्यपि बाबा ने अपने जीवन के पूर्वार्ध में अनेक कष्ट साध्य तप किये – ग्राम बबानियां, गुजरात में तालाब में रह कर और ग्राम नीब करौरी में भूमि के अन्दर गुफा में बैठ कर – पर जन साधारण के लिये, जीवन के उच्चतम लक्ष्य की प्राप्ति हेतु, उन्होंने कष्टप्रद साधना को महत्व नहीं दिया । इनके लिये वे प्राणि मात्र की सेवा और निरन्तर ईश्वर स्मरण से बढ़ कर कोई सुगम साधन नहीं मानते थे । आश्रमों से सेवा भाव और मन्दिरों से ईश्वर स्मरण की प्रवृत्ति का पैदा होना स्वाभाविक है । सम्भवतः ऐसे सुसंस्कारों को जागृत करने के लिये ही आपने अनेकानेक स्थानों पर सुन्दर, स्वच्छ और शान्तिपूर्ण आश्रमों और भव्य मन्दिरों का निर्माण किया ।

हनुमान विग्रह बबानियां (गुजरात)

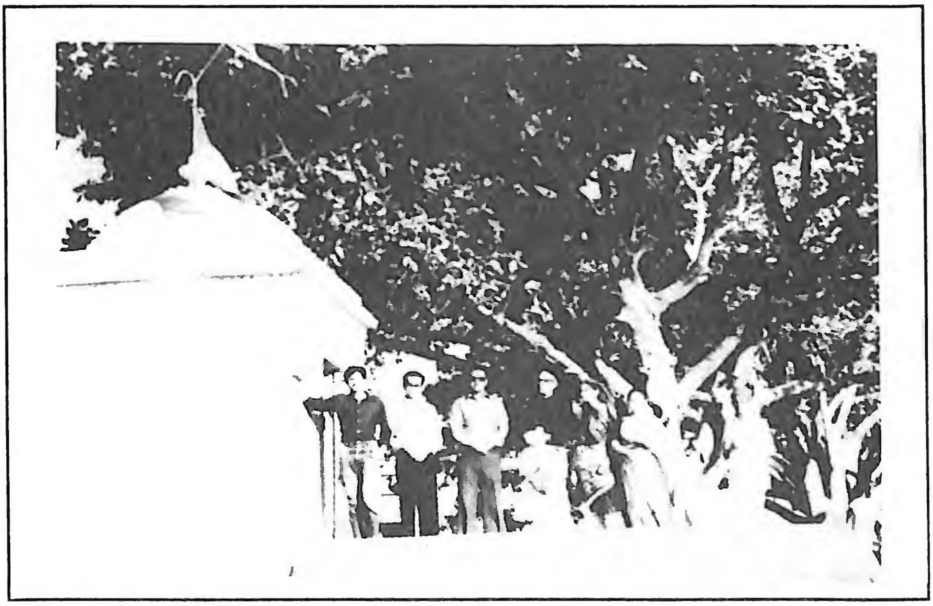

हनुमान मन्दिर, बबानियां (गुजरात)

ऐसा अनुमान है कि महाराज ने सर्वप्रथम हनुमान जी की मूर्ति का निर्माण तब किया जब वे मौरवी से लगभग चालीस कि.मी. दूर, ग्राम बबानियां गुजरात में श्री रामबाई आश्रम के पास एक तालाब में साधना किया करते थे । आपने यह मूर्ति तालाब के किनारे खुले में स्थापित की थी । सन् 1916 में आप देश भ्रमण हेतु उत्तरी भारत को चले आये थे । कालान्तर में वहाँ पास में श्रीमत् रामचन्द्र श्वतेम्बर जैन आश्रम के एक सदस्य ने इस मूर्ति के लिये, सम्भवतः आपकी प्रेरणा से एक छोटा मन्दिर बनवा दिया जहां इसके दर्शन हो सकते हैं ।

नीब करौरी हनुमान मन्दिर

महाराज बबानियां छोड़ने के बाद सम्भवतः फर्रुखाबाद जिले में नीब करौरी ग्राम पहुँचे थे । जैसा पहले उल्लेख किया जा चुका है, यहाँ ग्राम वासियों ने उनके लिये जमीन के नीचे एक गुफा बना दी जिसमें वे तपश्चर्या करने लगे । जब कालान्तर में यह गुफा नष्ट हो गयी तो गाँव वालों ने बाबा की इच्छानुसार गोवर्धन ब्राह्मण की उपेक्षित भूमि में, जहाँ गधे बंधे रहते और सूअर विचरण किया करते थे, दूसरी गुफा का निर्माण किया । इस पिछड़े भूभाग में कोई मन्दिर नहीं था, बाबा ने अपनी इस गुफा की ऊपरी भूमि पर एक हनुमान मन्दिर बनवाया । आपने इसके निर्माण के लिये उस गाँव के एक धनाढ्य दुकानदार से कहा था । इस छोटे मन्दिर के बनाने की उस समय कुल लागत पचास रूपये थी । इस व्यक्ति ने बाबा की बात मान ली थी और कुछ ईटें वहाँ डलवा कर काम बन्द कर दिया । कुछ समय बाद उसकी दुकान में आग लग गयी और उस आग को बुझा सकने का वहाँ कोई साधन भी न था । वह घबराया हुआ बाबा की शरण में आया और उनसे प्रार्थना करने लगा । बाबा बोले, **"तूने हनुमान जी का मन्दिर बनाने का वायदा किया था और उसे पूरा किया नहीं । अब कोई क्या कर सकता है ? जा, उनसे क्षमा माँग और मन्दिर बनवा दें ।"** यह दुकानदार इधर हनुमान जी से क्षमा माँग रहा था, उधर उसकी दुकान में आग स्वतः बुझ गयी । कहा जाता है कि केवल थोड़ी मिर्चा जल पायीं और शेष दुकान को कोई क्षति नहीं पहुँची । इस घटना से प्रभावित होकर इस व्यक्ति ने यथाशीघ्र यह मन्दिर बनवाया जिसकी प्रतिष्ठा महाराज ने करवायी । श्री हनुमानजी के विग्रह के बांई ओर पास में आपने शिवलिंग की भी स्थापना करवायी और सामने पीपल, नीम और वटवृक्ष के नीचे एक हवन कुण्ड का भी निर्माण करवाया ।

इस हवन कुण्ड के सामने लगभग दस गज दूर एक बड़ा कुआँ भी बनवाया । इस कार्य के लिये बाबा ने श्री रामसेवक गुप्ता के पिता से कहा था । वे अब नहीं रहे पर उनके पुत्र, पौत्र आदि उस गाँव में हैं । कहते हैं कि गुप्ताजी के कोई सन्तान नहीं थी, वे मन ही मन इस कारण दुःखी थे । यद्यपि उन्होंने इस सम्बन्ध में बाबा से कुछ कहा नहीं, पर वे स्वतः बोले, **"कुआँ बनवा दे; तेरे सन्तान हो जायेगी ।"** गुप्ता जी ने यह कार्य सहर्ष किया और कुछ काल पश्चात् उन्हें रामसेवक जी के रूप में पुत्र की प्राप्ति हुई । आरम्भ में कहते हैं कि इस कुएँ का जल खारा था । बाबा ने इस में दस बोरे चीनी डलवा दी जिससे पचास वर्ष बाद आज भी इसका जल मधुर बना है ।

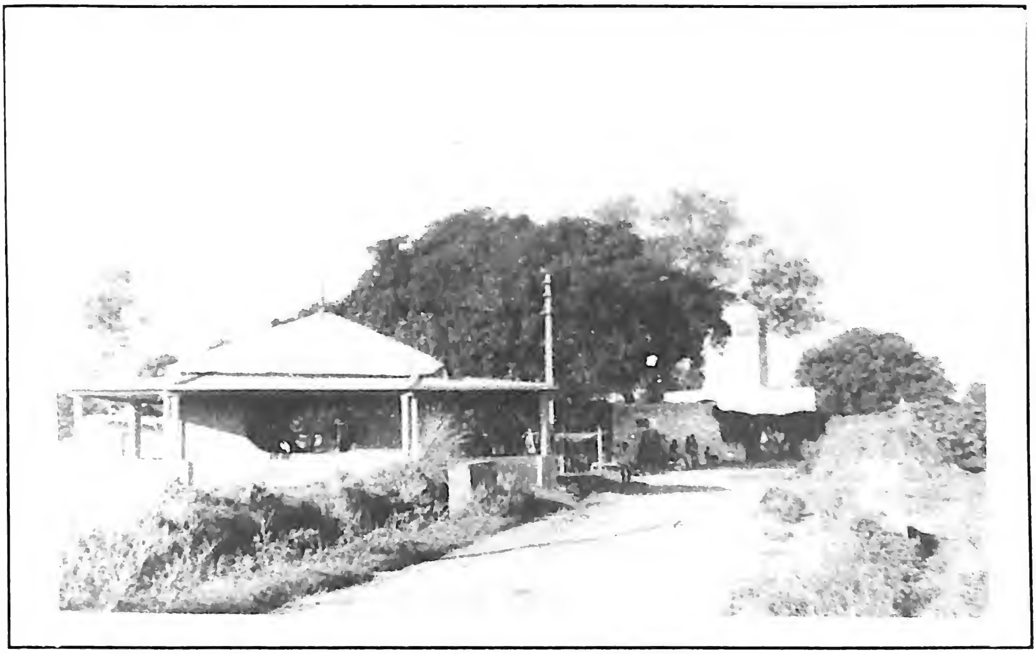

नीब करौरी के मन्दिरों एवं आश्रम का एक दृश्य

मार्च 1934 में इस मन्दिर की प्रतिष्ठा में महाराज ने एक महीने के एक वृहत् यज्ञ का अनुष्ठान किया । इस यज्ञ में निरन्तर तीस दिन तक घी की आहुति पड़ती रही । सैकड़ों मन घी काम में आया । लगभग तीस हजार आदमियों का भण्डारा हुआ । तभी से यहाँ इस महीने में मेला लगने की परिपाटी चल पड़ी । दूर–दूर से इस मेले में दुकानें आयीं और जिला अधिकारी को इसका प्रबन्ध करना पड़ा । अनेक साधुओं ने इस भण्डारे में प्रसाद पाया । कहते हैं कि यहाँ एक साधु ने अपनी सिद्धि का दुरुपयोग किया । बाबा ने उसे बुलाकर बहुत फटकारा । वह श्राप देता हुआ चला गया कि तेरे मेले में विघ्न पड़ा करें, पर बाबा के प्रताप से कुछ क्षति नहीं

होने पायी । गाँववासी कहते हैं कि इस श्राप के कारण प्रति वर्ष इस अवसर पर यहाँ आँधी आती है और ओले भी पड़ जाते हैं ।

कालान्तर में महाराज की महासमाधि के बाद, श्री माँ ने बाबा के इस साधना–स्थल की खोज की और इसे सुव्यवस्थित बनाने का प्रयास किया । सन् 1981 में गोवर्धन का शरीर शान्त हो गया, उनकी पत्नी ने यह समस्त भूमि प्रतिष्ठान (ट्रस्ट) के नाम कर दी । इस प्रतिष्ठान ने कुछ निर्माण किये और इसे सुन्दर और सुव्यवस्थित बना दिया । 15 फरवरी 1984 के दिन यहाँ बाबा और दुर्गामाँ के विग्रहों की स्थापना बड़े समारोह के साथ की गयी, जिससे यहां का वातावरण पुनः उल्लासपूर्ण हो गया । ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे बाबा वहां फिर प्रकट हो गये हों ।

हनुमानगढ़ नैनीताल

सन् 1935 के बाद महाराज इधर–उधर भ्रमण ही करते रहे । इस शताब्दी के चौथे दशक के बाद, वे नैनीताल आने जाने लगे । नैनीताल से दो कि.मी. दूर उसके प्राकृतिक द्वार पर स्थित मनोरा पर्वत पर ही वे अधिकतर रहा करते थे । इस प्रकार सर्वप्रथम उन्होंने इस पर्वत को ही अपनाया । मनोरा का यह पर्वत आदि काल से ही कच्चा था । इसमें बजरी बहुत और चट्टान कम हैं । इस कारण इसमें कभी भी निर्माण कार्य नहीं हो सका । एक बार इस पर्वत के एक भाग के गिर जाने से नैनीताल आने वाली मोटर सड़क इस तरह नष्ट हुई कि उसका पुनः निर्माण सम्भव नहीं हो पाया । फलतः पास के पर्वत को काटकर नयी सड़क बनानी पड़ी । यह पर्वत आदि काल से बंजर वीरान और तिरस्कृत रहा । यह भूमि केवल मृत बच्चों को दफ़नाने के काम में लायी जाती थी । रात्रि के गहन अन्धकार में यह पर्वत भयावह प्रतीत होता था । बाबा की चरण–रज के प्रताप से इसका भाग्य चमक उठा । बाबा ने इसे आश्रम और मन्दिरों के निर्माण के लिये चुना और बिना किसी प्रकार के विरोध के इसमें आसानी से कब्जा भी हो गया । बाबा ने इसका नाम हनुमान गढ़ रखा ।

आरम्भ में बाबा ने यहां हनुमान जी की एक छोटी मूर्ति 15 जुलाई 1952 के दिन स्थापित करने का आदेश दिया, इसलिए कि लघु हनुमान जी इस वृहत् कार्य का भार अपने ऊपर ले लें । यह लघु हनुमान विग्रह अब भी यहाँ उपस्थित है । यहाँ बाबा ने रामायण और हनुमान चालीसा के सैकड़ों अखण्ड पाठ करवाये । वर्षों अखण्ड कीर्तन होता रहा जिससे यह भू–भाग और इसका चतुर्दिक वातावरण पावन हो उठा । बाबा के इस पर्वत

को अपनाने के बाद इसमें अनेक वज्राघात हुए जिससे इस पर्वत में दृढ़ता आयी और निर्माण कार्य सम्भव हो सका । इस कच्चे पर्वत पर आरम्भ में लघु हनुमान की स्थापना भी सम्भव नहीं हो पा रही थी । इसके लिये अनेक प्रयत्न करने पड़े और अन्त में बाबा की कृपा से यह कार्य सम्पन्न हुआ । इसके बाद इस पर्वत पर अनेकानेक मन्दिर और इमारतों का निर्माण आसानी से हो गया ।

हनुमान गढ़, नैनीताल के मन्दिरों एवं आश्रम की छवि

यहाँ का हनुमान विग्रह सात फुट ऊंचा है । माखन नामक एक कारीगर ने इसे हनुमान गढ़ ही में बनाया था । हनुमान जी का मुख मण्डल बनाने में उसके सभी प्रयत्न विफल हो गये । अन्त में आधी मूर्ति बनाकर उसे निराश हो काम छोड़ देना पड़ा । उन दिनों बाबा नैनीताल में थे नहीं, पर उनकी दृष्टि से कुछ छिपा नहीं था । उन्होंने अपने भक्त श्री शिवदत्त जोशी की कन्या को स्वप्न में दर्शन दिए और बताया कि किस प्रकार यह कार्य हो सकता है । इस स्वप्नादेश के अनुसार कार्य करने से माखन अपने कार्य में सफल हुआ[78] । हनुमान मन्दिर के इधर–उधर अन्य देवी देवताओं के छोटे मन्दिर बनाने के बाद पर्वत शिखर पर बाबा की कुटिया के पास दूसरी चोटीं पर शिव मन्दिर बनाया गया, जिसमें शिवलिंग के साथ माँ पार्वती, गणपति और कार्तिकेय की मूर्तियां 25 जून 1954 के दिन स्थापित की गयीं । पहली चोटी में श्री सीताराम मन्दिर का निर्माण हुआ जिसमें राम,

लक्ष्मण और सीता की अष्ट धातु की मूर्तियां 30 मई 1955 राम नवमी के दिन स्थापित की गयीं । इन दोनों चोटियों को सीमेंट के एक चौड़े पुल से संयोजित किया गया, जिससे इस स्थान की रमणीयता और भी बढ़ गयी । जिस स्थान में बाबा की कुटिया थी, वहाँ अब उनके विग्रह के स्थापन की योजना है । इन भव्य मन्दिरों के अतिरिक्त यहाँ आश्रम और कीर्तन भवन का भी निर्माण हुआ ।

हनुमान गढ़ में बाबा ने हनुमान जी की प्राण प्रतिष्ठा का दिन 16 जून 1953 निश्चित कर दिया था । बाबा इस प्रतिष्ठा के सात दिन पहले से ही हनुमान गढ़ आ गये थे । वर्षा ऋतु थी । तीन चार दिन पूर्व से पानी बरसता चला जा रहा था और दो दिन प्रतिष्ठा के शेष रह गये थे । भण्डारे की सामग्री हनुमान गढ़ में एकत्रित नहीं हो पायी थी । मोटर रोड से उन दिनों हनुमान गढ़ पगडन्डी के सहारे ही जाया जा सकता था । प्रतिष्ठा दिवस की पूर्व रात्रि में बाबा ने हरिदास बाबा को अपनी कुटिया में बुलाया और कहने लगे, **'कल क्या होगा ? आटा, लकड़ी कुछ भी नहीं है ।"** यह कह कर जोर से हँसने लगे और अपने दोनों हाथों से पकवान खाने की मुद्रा एवं क्रिया का प्रदर्शन भी करने लगे । इसके बाद आपने हरिदास बाबा को किसी को साथ लेकर मोटर सड़क पर जाने का आदेश दिया । प्रातः तीन बजे का समय था, एक ट्रक वहाँ सड़क पर आकर रूका और उसमें बरतन, आटा, घी, लकड़ी आदि भण्डारे की सारी सामग्री भरी पड़ी थी । उस समय वर्षा भी शान्त हो गयी थी । डोटियालों (नैपाली कुलियों) का एक गिरोह, उस समय, अपने घर नैपाल जाने के लिये इस स्थान से आगे पैदल जा रहा था । उन्हें रोक कर सामान ऊपर ढुलवाने का काम सौंपा गया और एक घण्टे में सब सामग्री ऊपर पहुँच गयी । इसके बाद पुनः मूसलाधार वर्षा होने लगी । सवेरे तक पानी बरसता चला गया । सात बजे महाराज अपनी कुटिया से बाहर चले आये और अपने कम्बल को दूर फेंक कर कहने लगे, **"पवन तनय बल पवन समाना ।"** शीघ्र ही बादल छंट गये । सूर्य भगवान् के दर्शन होने लगे और प्राण प्रतिष्ठा की तैयारी आरम्भ हो गयी । धीरे-धीरे अपार जन समुदाय एकत्रित हो गया । महाराज पर्वत शिखर से उतर कर अन्यत्र चले गये और वहाँ से लौटने पर अपनी कुटिया में बन्द हो गये । प्राण प्रतिष्ठा और भण्डारे का कार्य विधिवत् चलता रहा । यह भण्डारा अनुपम था । बहुत बड़े कड़ाहों में हलुआ पूरी उतारी जा रही थीं । नैनीताल के लगभग सभी स्त्री पुरूष और बच्चों ने प्रसाद ग्रहण किया । दिन-रात भण्डारा चलता रहा । गोदाम के सभी घी के टिन खाली हो चुके थे, भण्डारे के

कार्यकर्ताओं को घी की चिन्ता हो रही थी । इस बीच बाबा ने एक सेवक से घी के कुछ खाली टिनों को पानी से भरवा दिया । जब कार्यकर्ताओं ने बाबा से इस सम्बन्ध में अपनी चिन्ता व्यक्त की तो वे उन्हें डांटते हुए बोले, **"गोदाम देखा ? जाओ देखो ।"** वे पानी से भरे टिन शुद्ध घी के हो गये थे और भण्डारा यथावत् चलता रहा ।

हनुमान गढ़ का निर्माण हो जाने पर सरकार ने यहाँ वेधशाला का निर्माण किया, इस कारण इस स्थान को सुन्दर मोटर–सड़क, बिजली और पानी के नलों की भी सुविधा प्राप्त हो गयी । फलतः लोगों का यहाँ आना–जाना सुगम हो गया और यह नैनीताल का प्रिय दर्शनीय स्थल बन गया जिसे देखे बिना नैनीताल की यात्रा अब अधूरी प्रतीत होती है । यह बाबा की कृपा का फल है कि इस पर्वत की चन्द वर्षों में काया ही पलट गयी ।

भूमियाधार आश्रम एवं मन्दिर

हनुमान गढ़, नैनीताल में रहते हुए महाराज कभी–कभी पास में भूमियाधार और गेठिया भी जाया करते थे । इन स्थानों के भी अनेक परिवार आपके भक्त हो गये । भूमियाधार में ठाकुर पदमसिंह के पुत्र पूरन सिंह ने मोटर मार्ग के किनारे पर अपना मकान और उसके पास की समस्त भूमि 11 दिसम्बर 1961 के दिन महाराज को अर्पित कर दी । हनुमान गढ़ का कार्य पूरा हो जाने पर बाबा यहीं आकर ठहरा करते थे । कुछ समय बाद हनुमान गढ़ को एक सरकारी प्रतिष्ठान (ट्रस्ट) के सुपुर्द कर आपने उससे अपना सम्पर्क हटा दिया ।

भूमियाधार, भवाली से चार कि.मी. दूर काठगोदाम रोड पर स्थित है । यहाँ बाबा ने एक छोटा आश्रम बना दिया और एक छोटी हनुमानजी की मूर्ति भी स्थापित कर दी यह आश्रम एक हरिजन बस्ती में है । हरिजन बाबा को बहुत प्रिय थे, सम्भवतः इस भूमि का चयन उनके कल्याण की भावना से ही किया गया हो । बाबा की उपस्थिति में यहाँ नित्य दर्शनार्थियों का मेला लगा रहता था । स्थानाभाव के कारण वे सायंकाल तक अधिकांश दर्शनार्थियों को विदा कर दिया करते थे । भूमियाधार में बाबा कभी यहाँ कभी वहाँ दूर दूर तक मोटर सड़क की दीवार पर बैठे दिखायी देते और दर्शक गण वहीं एकत्रित हो जाते । इस स्थान की देख–रेख का भार महाराज ने ब्रह्मचारी बाबा को सौंपा जो आपके एकनिष्ठ भक्त रहे । ब्रह्मचारी अपनी यौवनावस्था में घर से भाग कर काम की

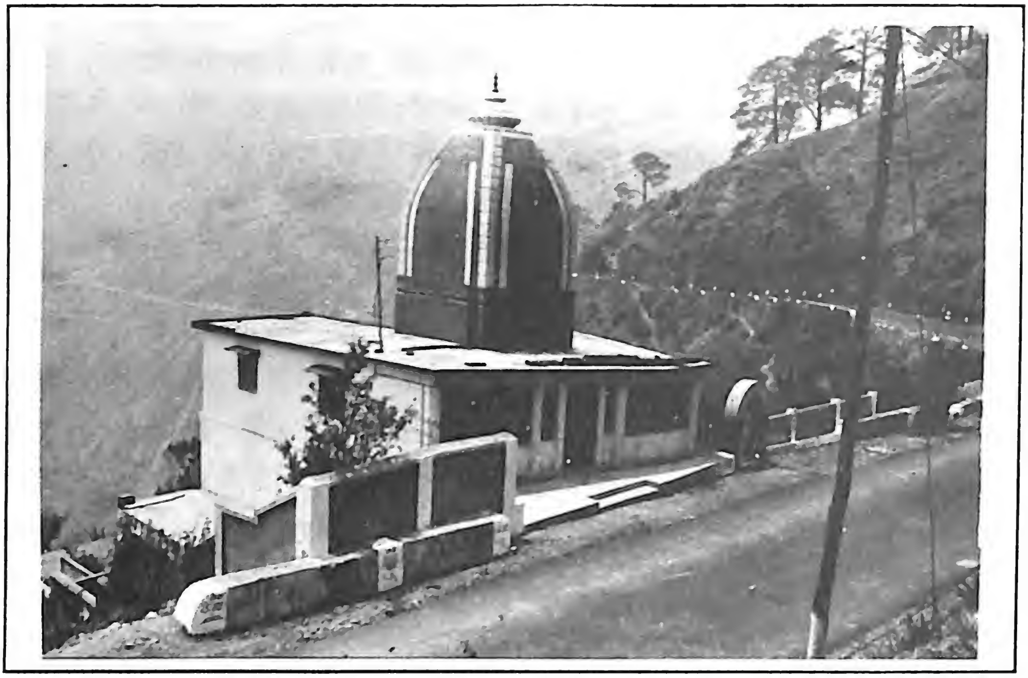

भूमियाधार हनुमान मन्दिर एवं आश्रम

खोज में नैनीताल आये थे और हरिदास बाबा ने इन्हें हनुमान गढ़ के सेवा कार्य में रख लिया था । बाद में बाबा ने इन्हें आदेश दिया, "**यहीं रहो भगवान् का भजन करो, बार बार इस संसार में नहीं आना पड़ेगा ।**" प्राणि मात्र की सेवा का आदेश भी उन्होंने दिया । इनसे दाढ़ी रखने को कहा और ब्रह्मचारी नाम देकर बाबा बना दिया । आप छः महीने रात–दिन खड़े रहे, वर्षों मौन रहे और आठ वर्ष तक आप ने अन्न ग्रहण नहीं किया केवल फलाहार करते रहे । एक बार बाबा ने आपकी परीक्षा ली और आपसे आश्रम छोड़ कर चले जाने को कहा । आप अत्यन्त दुःखी हो गये और कातर स्वर में निवेदन करने लगे, "बाबा ! मैं अपना शरीर छोड़ सकता हूं पर आपको नहीं ।"

यहाँ रहते महाराज ने कैंची तपोभूमि की खोज आरम्भ की और वहाँ आश्रम और मन्दिरों का निर्माण कार्य होने पर, यहाँ ठाकुर के मकान का पुनः निर्माण कराया । मोटर सड़क के आगे के कक्ष को हनुमान मन्दिर के लिये निश्चित किया, जिसमें जयपुर से हनुमान जी की नयी मूर्ति मंगवाकर सन् 1965 में उसकी स्थापना करायी । यहाँ की पुरानी मूर्ति कैंची फार्म के मन्दिर में पहुँचा दी गयी । इस छोटे आश्रम में वृहत् भण्डारे के लिये स्थान की कमी थी, इस कारण भण्डारे की तैयार सामग्री कैंची आश्रम से ले जाई गयी ।

कैंची आश्रम एवं मन्दिर

भूमियाधार में रहते हुए महाराज ने कैंची धाम का निर्माण किया । यह एक रमणीक एवं शान्त स्थान है । पहाड़ की तलहटी में 3500 फुट की ऊँचाई पर स्थित है । यह क्षेत्र वनों से आच्छादित पर्वत मालाओं से घिरा है। यह भूमि आदि से ही सन्त महात्माओं को आकर्षित करती रही । इस शताब्दी के आरम्भ में यहाँ चट्टानों से निर्मित एक प्राकृतिक गुफा में सोमवार गिरि नाम के एक विख्यात सिद्ध बाबा रहते थे । इस भूमि के पूर्वी और उत्तरी किनारों को स्पर्श करती हुई एक नदी बहती है जिसे महाराज ने उत्तर वाहिनी गंगा नाम दिया । पश्चिम एवं दक्षिण में यह एक उच्च पर्वत से जुड़ा है । नदी पार इसके पूर्व में गर्गाचल पर्वत है जो आदि काल में गर्ग ऋृषि की तपोभूमि रही । सन् 1950–53 में यहाँ पंजाब के एक सन्त कमला गिरि ने वास किया और वे यहाँ पर शिव पुराण और देवी भागवत् का पाठ कराते रहे । इनके बाद एक प्रेमी बाबा ने इस स्थान को अपनाया, पर वे नदी के उस पार श्री विष्णुदत्त तिवारी के खेत में स्थित एक कोठरी में रहते थे ।

25 मई 1962 के दिन महाराज श्री तुलाराम साह और श्री सिद्धि माँ के साथ कार में भूमियाधार से शीतला खेत, आदि–हेड़ियाखान बाबा के स्थान को जा रहे थे । एकाएक वे बोल उठे, **"श्याम लाल बड़ा अच्छा आदमी था ।"** है 'न कह कर उन्होंने 'था' का प्रयोग किया, इस से आप दोनों को अपने समधी के बारे में चिन्ता हो उठी । रानीखेत पहुँचने पर आप लोग श्री कुन्दन लाल साह के घर रुके जो उस समय बीमार पड़े थे । वहीं टेलिफोन द्वारा समाचार प्राप्त हुआ कि हृदय की गति के रुक जाने से श्याम लाल जी का देहान्त हो गया । बाबा ने उनके निधन पर आप दोंनों को नैनीताल जाने का आदेश दिया । इस प्रकार रानीखेत से नैनीताल को वापस आते हुए मार्ग में कैंची स्थान में बाबा कार से उतर गये और श्री पूर्णानन्द तिवारी के घर पहुँचे ।

तिवारी जी को बाबा के दर्शन सन् 1942 में खुफिया डांठ नामक एक निर्जन नाले के पास उस रात्रि में हुए थे जब वे नैनीताल से बस न मिलने के कारण गेठिया होते हुए पैदल कैंची आ रहे थे । बाबा से तब विदाई लेते समय आप ने पूछा था कि अब कब उनके दर्शन होंगे, इस पर बाबा का उत्तर था – 'बीस वर्ष बाद' । इतनी लम्बी अवधि सुन कर तिवारी जी चकरा गये थे और मौन होकर चले आये[79] । वास्तव में 1962 में बीस

वर्ष बाद वह समय आया जब बाबा ने स्वयं इनके घर आकर दर्शन दिये और बोले, **"हमें सोमवार गिरि का हवन कुण्ड दिखलायेगा ?"** तिवारी जी तुरन्त तैयार हो गये, पर बाबा ने यह काम दूसरे दिन चार बजे सुबह के लिये छोड़ दिया । तिवारी जी को बाबा के इस प्रकार बात टालने में विश्वास नहीं हुआ पर वे चुप रहे । बाबा कहने लगे, **"क्या हम झूठे हैं ?"** और इसी वाक्य को दोहराने लगे । तिवारी जी ने विनम्र भाव से क्षमा मांगी और बाबा भूमियाधार की ओर अकेले पैदल चल दिये ।

दूसरे दिन निर्धारित समय पर बाबा पूर्णानन्द के घर उपस्थित हो गये। यहाँ शौच आदि से निवृत्त हो, उन्होंने साधारण मनुष्य की भाँति कैंची के बारे में पूछताछ की । इसके बाद वे प्रेमी बाबा की कुटिया में गये । वहाँ उन्होंने दाल–रोटी खायी, इसके बाद वैशाख की उस दुपहरी में पूर्णानन्द, प्रेमीबाबा और अन्य व्यक्तियों के साथ, बाबा ने नदी पार की । तिवारी जी और उनके साथियों ने घास साफकर उस जंगल में बाबा को हवन कुण्ड दिखाया । बाबा ने उस कुण्ड के ऊपर तत्काल चबूतरा बनाने का आदेश दिया । यह वही स्थान है जहाँ पर हनुमान जी का विग्रह स्थापित किया गया । महाराज भूमियाधार लौट आये और उन्होंने इस कार्य के लिये चार बोरे सीमेन्ट भिजवा दिया । जब यहाँ चबूतरा बनाया जा रहा था, फौरेस्ट गार्ड ने एतराज किया और इनके हथियार गेंडा, बेलचा आदि सब जब्त कर लिये, क्योंकि यह भूमि उत्तर प्रदेश सरकार के वन विभाग की थी । जब इन दोनों दलों में वाद–विवाद चल रहा था महाराज घटना स्थल पर उपस्थित हो गये और उन्होंने श्री आर.सी. सोनी साहब को, जो उस समय वहाँ वन विभाग के 'चीफ कन्जरवेटर' थे, टेलिफोन द्वारा बुलवाया । झगड़ा शान्त हुआ । सोनी साहब ने बाबा की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस भूमि की नाप करवा कर लिखा–पढ़ी करवायी । बाद में श्री चरण सिंह ने, जो उस समय उत्तर प्रदेश सरकार के वन विभाग के मन्त्री थे, यह भूमि बाबा के नाम लीस में देदी और स्वयं उनके दर्शन करने कैंची आये । कहते हैं, उस समय बाबा ने उन्हें आशीर्वाद दिया, **"जा, तू भारत का प्रधान मन्त्री हो जायेगा ।"** उस समय की आपकी स्थिति को देखकर यह विश्वास नहीं किया जा सकता था कि आप कभी भारत के प्रधान मन्त्री भी बन पायेंगे । बात सामान्य बनकर रह गयी और केवल औपचारिक समझी गयी । कालान्तर में समय ने एकाएक करवट ली और बाबा का आशीर्वाद सार्थक हुआ ।

एक दिन यहाँ एक शिला पर बैठे बाबा अपने भक्तों से बोले, **"यहाँ आश्रम बनेगा और मन्दिर बनेंगे जिनकी ख्याति विश्व भर में फैलेगी ।"** धीरे–धीरे पेड़ आदि कटवाकर जंगल साफ किया गया । भूमि जहाँ समतल हो सकती थी बनायी गयी । बिना किसी योजना और डिजाइन के, केवल बाबा के निर्देश के अनुसार कार्य करते हुए क्रमशः राम कुटी, विष्णु कुटी, कृष्ण कुटी, राधा कुटी, कृष्ण–बलराम कुटी और श्याम कुटी आदि सुन्दर इमारतों का निर्माण हो गया । अनेक भव्य मन्दिर, एक धर्मशाला और महाराज की कुटिया भी बन कर तैयार हो गयी । महाराज के संकल्प ने साकार होना ही था, कैंची की ख्याति विश्व भर में फैल गयी। कनाडा, अमरीका, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रीका, ग्रीस, फ्रांस, इंग्लैंड आदि स्थानों से दर्शनार्थी यहाँ आने लगे । सभी लोग मन्दिरों में मूर्तियों की सुन्दरता, आश्रम की शोभा और इस स्थल की स्वच्छता और शान्ति से प्रभावित हो जाते हैं और उनमें यहाँ वास करने की स्वाभाविक इच्छा जाग्रत हो जाती है ।

अस्तु, हवन कुण्ड के ऊपर सर्व प्रथम हनुमान जी के विग्रह की स्थापना हुई । तदनन्तर इसके साथ ही लगे दूसरे कक्ष में श्री लक्ष्मी नारायण जी की और तीसरे कक्ष में शिवलिंग के साथ माँ पार्वती, श्री गणेश और कार्तिकेय की प्रतिष्ठाएँ हुईं । हनुमान विग्रह के स्थापना के दिन सायंकाल के समय, बाबा ने मन्दिर में प्रवेश किया । इस अवसर पर उनके आदेश से एक बाल्टी भर कर दूध लाया गया । बाबा ने उपस्थित लोगों से कुछ क्षणों के लिये अपनी आँखे बन्द करने को कहा और समस्त दूध अपने कर कमलों से हनुमान जी को पान कराया । इस दृश्य को देख पाना साधारण लोगों की सामर्थ्य के बाहर था इस कारण सब से आँखे न खोलने को कह दिया गया था ।

इसके बाद इस ब्लाक के दूसरी ओर प्रांगण के दूसरे सिरे पर एक और मन्दिर का निर्माण हुआ । इसके लिये देवी की मूर्ति जो जयपुर से मँगायी गयी थी लम्बाई में छोटी प्रतीत हुई । जब वह मन्दिर परिसर के भीतरी द्वार पर लायी गयी तो उसका भार बाबा की माया से इतना अधिक बढ़ गया कि अनेक लोग मिल कर भी उसे आगे नहीं ला सके । उनके आदेश से यह मूर्ति पास में लक्ष्मी नारायण ब्लाक के चौथे कक्ष में ही रखवा दी गयी । बाबा ने इस मूर्ति को वैष्णवी देवी नाम से सम्बोधित किया । बाबा के महाप्रयाण के बाद दूसरे वर्ष 15 जून 1974 के दिन इसी कक्ष में वैष्णवी देवी के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा हुई ।

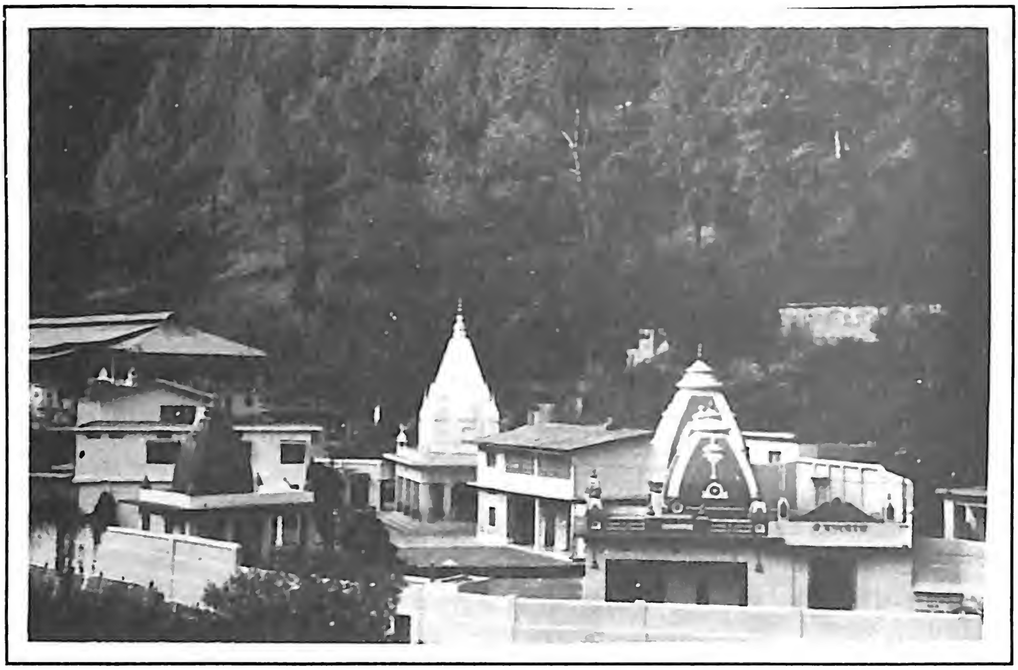

कैंची के मन्दिरों एवं आश्रम का एक दृश्य

उपर्युक्त मन्दिर के लिये देवी की एक बड़ी मूर्ति जयपुर से मँगवायी गयी जिसकी स्थापना बाबा ने 15 जून 1973 को विन्ध्यवासिनी देवी के विग्रह के रूप में करवायी । इस पर्वतीय प्रदेश में आदि से ही शैव और शाक्त मत का बोलबाला था । यहां देवी के मन्दिरों में पशुबलि की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही थी । इस प्रथा पर प्रतिबन्ध लगाने के लिये बाबा ने अपने मन्दिरों में वैष्णवी देवी और विन्ध्यवासिनी देवी की स्थापना करायी ।

सन् 1973 में बाबा कभी–कभी अपनी कुटिया की दक्षिण दिशा की खिड़की से बाहर उस स्थान पर अपनी नज़र गड़ाये रहते जहाँ पर अमरीकी समुदाय उनके सामने बैठ कर कीर्तन किया करता था । एक बार वे गम्भीर वाणी में बोले, **"अभी एक मन्दिर और बनना है ।"** यह मन्दिर किस का होगा और कहाँ बनेगा, इस सम्बन्ध में उन्होंने कुछ कहा नहीं । इसी वर्ष उनकी महासमाधि के बाद जब वृन्दावन से उनका अस्थि कलश कैंची आश्रम लाया गया तो लोगों ने बिना विचारे उसे इस खिड़की के आगे उसी स्थान में रख दिया जिसे वे गौर से देखते रहते थे । इसके उपरान्त इस कलश की यथोचित सुरक्षा का प्रश्न उपस्थित हो गया । श्री माँ ने इस हेतु इस स्थान पर मन्दिर बनवाने की इच्छा व्यक्त की और कहा कि इस अस्थि कलश के ऊपर ही महाराज के विग्रह की स्थापना होनी चाहिए । धीरे–धीरे सब साधन स्वतः जुटते चले गये और देखते–देखते इस छोटी–सी भूमि में, राम–राम

रटते-रटते कारीगरों ने, बिना किसी योजना और डिजाइन के, संगमरमर का एक विशाल मन्दिर बना दिया । महाराज का विग्रह जयपुर से बनकर आया और 15 जून 1976 को बड़े समारोह के साथ उसकी प्रतिष्ठा हुई । इस मन्दिर के निर्माण से कैंची के सौन्दर्य में चार चाँद लग गये । इस प्रकार बाबा की वाणी सार्थक होती देखी गयी ।

मोटर सड़क से उत्तर वाहिनी गंगा को पार कर आश्रम में जाने के लिये वन विभाग ने एक लकड़ी का पुल बना दिया था जिसमें बाबा बहुधा बैठे दिखायी देते थे और बहुत लोगों को उनके दर्शन इसी पुल पर हुआ करते । कुछ काल पश्चात् एक दिन बाबा ने उत्तर प्रदेश परिवहन के जनरल मैनेजर श्री वैश्य से कहा कि वे जाकर अपने मित्र किशन चन्द, डिवलपमेंट कमिश्नर (जो बाद में इमर्जन्सी के दौरान दिल्ली के उप-राज्यपाल भी रहे) को अपनी ओर से सुझाव दें कि आश्रम में पक्का पुल बनवा दिया जाय । फिर बोले, "**वह बाबा और मन्दिरों में आस्था नहीं रखता इसलिए हमारा नाम न लेना** ।" बाबा के आदेशों में उनकी शक्ति भी कार्य करती थी । यद्यपि यह कार्य किशन चन्द जी के मनोनुकूल नहीं था पर वे कहने लगे, "तुम कहते हो तो मैं यहाँ पक्का पुल निर्माण करने के आदेश जारी करा दूंगा, मुझे मन्दिर और बाबा लोगों में विश्वास नहीं है ।" पक्का पुल बन जाने के कुछ काल बाद लकड़ी का पुल हटा दिया गया ।

महाराज ने यह आश्रम गृहस्थ और सन्यासियों के लाभ के लिये बनाया । गृहस्थों के लिये उन्होंने आश्रम में वे सभी सुविधाएँ सुलभ की जिनके वे आदी हैं । विशाल भोजनालय के अतिरिक्त अनेक शौचालय और स्नानागार यहाँ बने हैं । बिजली मेन लाइन से ट्रान्सफार्मर द्वारा सुलभ की गयी है । यहाँ आगन्तुकों की संख्या अत्यधिक होने के कारण गर्गाचल पर्वत में भी दो इमारतों का निर्माण हुआ । आश्रम से लगभग आधा कि.मी दूर पर आश्रम का अपना फार्म है जहाँ फल और सब्जियाँ पैदा की जाती हैं । बाबा ने यहाँ हनुमान मन्दिर, गोशाला और फार्म के कार्यकर्ताओं के लिये मकान भी बनवाये हैं । इनके अतिरिक्त बाबा ने आश्रम के पास ही डाकघर और रोडवेज का स्टेशन भी खुलवा दिया जिससे यह पर्यटकों के लिये भी दर्शनीय स्थल हो गया ।

बाबा की उपस्थिति में यहाँ नित्य भण्डारा हुआ करता था । प्रत्येक दर्शनार्थी को भरपेट खिलाया जाता और प्रचुर मात्रा में सुचारु पैकेटों में बन्द प्रसाद उसके घर के लिये भी दिया जाता था । साधु–सन्तों की धन और कम्बलों से भी सेवा की जाती थी । यहाँ के सभी मन्दिरों की स्थापना 15 जून को हुई है और उसी दिन बाबा के मन्दिर की भी प्रतिष्ठा की गयी । उनके समय से ही यहाँ 15 जून को प्रतिष्ठा दिवस मनाने की परिपाटी चली आ रही है । इसके एक महीने पूर्व से ही यहाँ अखण्ड पाठ, कीर्तन और विशेष पूजन होता रहता है और अन्त में एक बृहत् भण्डारे के रूप में यह उत्सव मनाया जाता है ।

महाराज स्थायी रूप से कहीं निवास करते नहीं थे । वे कैंची आते–जाते रहते, इस प्रकार यहाँ अधिक समय रह पाते थे । वर्ष में वे यहाँ लगभग तीन महीने रहते होंगे, इस कारण यहाँ उनकी अनेक लीलाएँ देखने में आयीं ।

यहाँ के प्रमुख उत्सव प्रतिष्ठा–दिवस, गुरु पौर्णिमा और आश्विन की नव रात्रियाँ हैं ।

काकड़ीघाट हनुमान मन्दिर

अल्मोड़ा–मार्ग पर खैरना के पुल से कुछ दूर उत्तर में काकड़ीघाट स्थित है । यहाँ वनाच्छादित पर्वत के एक निर्जन भाग में पहले सोमवारगिरि

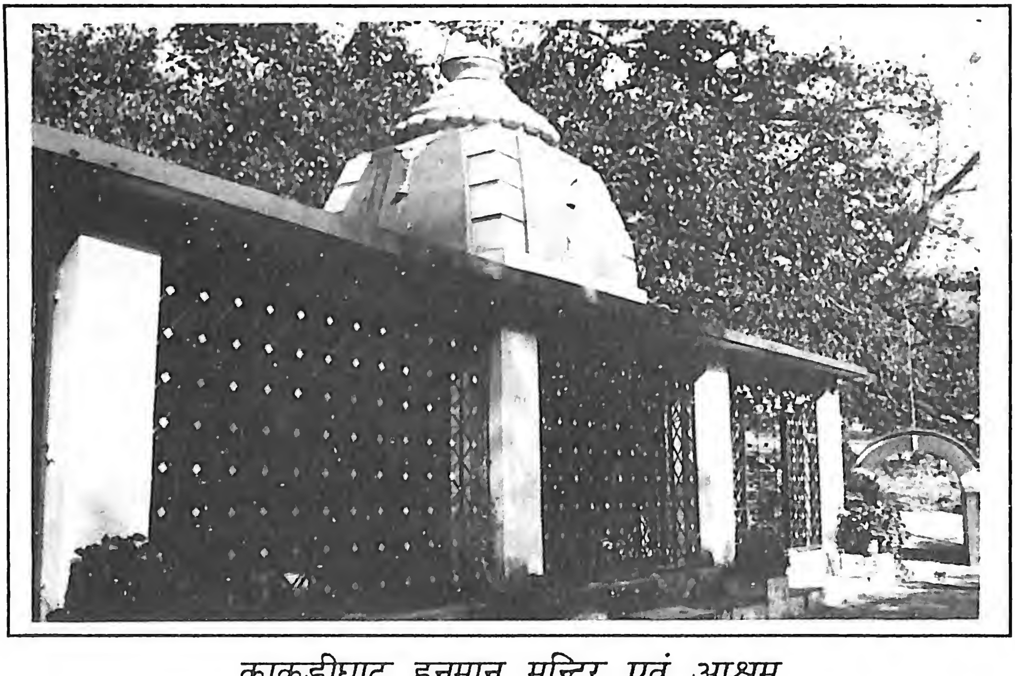

काकड़ीघाट हनुमान मन्दिर एवं आश्रम

बाबा भी रहा करते थे । इसकी पूर्वी सीमा में एक नदी बहती है जिसे पार करने के लिये लगभग सौ वर्ष पुराना लोहे का पुल है, जिससे होकर लोग बद्रीनाथ को पैदल जाया करते थे । महाराज ने यह भू–भाग हनुमान मन्दिर के निर्माण के लिये चुना और कैंची में रहते हुए उन्होंने यहाँ हनुमान विग्रह की स्थापना करायी । यह भूमि वन विभाग से बाबा ने लीस में प्राप्त की थी ।

जिस दिन हनुमान जी की मूर्ति स्थापना हेतु यहाँ लायी गयी, बाबा की कृपा से लोगों को एक अद्‌भुत दृश्य देखने को मिला । कभी यहाँ कोई लंगूर भले ही दिखायी दे जाय, पर बन्दरों का यहाँ अभाव था । जब ट्रक से उतार कर मूर्ति नदी के बीच से उस पार मन्दिर की ओर ले जायी जा रही थी, एकाएक अनेक बन्दर पुल में और इधर–उधर पर्वत के वृक्षों में अपने पैरों पर खड़े होकर और अपने हाथों को उठा–उठा कर एक साथ ऐसे चिंकारने लगे जैसे वे हनुमान जी की स्थापना का स्वागत कर रहे हों । बाबा की इस लीला का प्रयोजन इस विग्रह के प्रति विश्वास पैदा करना हो सकता है। अवसर के अनुसार वे सभी प्रकार की सृष्टि रचने में समर्थ थे । यहाँ भी स्थानाभाव के कारण भण्डारे की तैयार सामग्री ट्रकों में कैंची आश्रम से ही लायी गयी ।

सोमवारगिरि बाबा शिव के अनन्य भक्त थे । उनके समय का यहाँ एक शिवलिंग था । सन् 1982 नवम्बर के महीने में श्री माँ ने यहाँ भागवत् का प्रवचन कराया और इस अवसर पर इस लिंग के लिये मन्दिर की विधिवत् व्यवस्था भी करायी ।

हनुमान मन्दिर पिथौरागढ़

काकड़ीघाट में मन्दिर की स्थापना के बाद बाबा के आदेश और अधिकारी वर्ग के सहयोग से पिथौरागढ़ में हनुमान मन्दिर की स्थापना की गयी । सन् 1970 की विजया दशमी के दिन पिथौरागढ़ जल–संस्थान के निकट एक पर्वत शिखर पर इस कार्य का समापन बड़े समारोह से हुआ । यहाँ के लोगों का यह अनुभव है कि जब से यहाँ पर बाबा ने हनुमान विग्रह की स्थापना करायी इस नगर की समृद्धि दिन प्रति दिन बढ़ती चली गयी । आरम्भ में यह जिला अल्मोड़ा की तहसील मात्र थी, पर अब भारत की उत्तरी सीमा पर एक विस्तृत आधुनिक जिला नगर है ।

इस स्थापना के अतिरिक्त भक्तजनों ने बाबा की अनुमति प्राप्त कर पौड़ी, गेठिया, काठगोदाम, हल्द्वानी और कीछा में भी हनुमान मन्दिरों का निर्माण किया । बाबा इन मन्दिरों में कभी–कभी चले आते थे ।

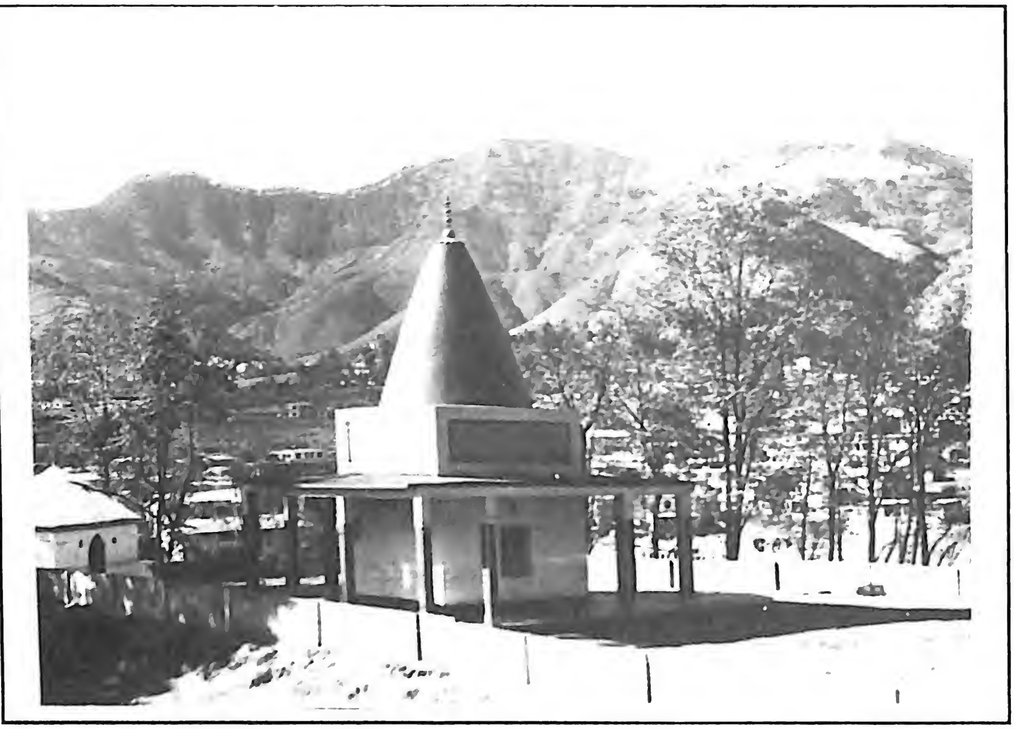

हनुमान मन्दिर पिथौरागढ़

पनकी, कानपुर में नया हनुमान मन्दिर

पनकी, कानपुर में एक पँचमुखी हनुमान मन्दिर है, वहीं एक स्थान पर बाबा ने एक और हनुमान मन्दिर बनाना चाहा । इसके लिए नगर प्रशासन से सन् 1961 में भूमि उपलब्ध की गयी और हनुमान मन्दिर का निर्माण कार्य आरम्भ किया गया । यह कार्य बाबा ने श्री देवकामता दीक्षित को सौंपा । आपने इसके लिये जयपुर में संगमरमर की एक श्वेत मूर्ति बनवायी । मूर्तिकार एक वयोवृद्ध अनुभवी व्यक्ति था । ऐसा प्रतीत होता है कि उसने अपना सम्पूर्ण कौशल इस मूर्ति में समाहित कर दिया । यह उसकी अन्तिम कृति बन कर रह गयी और उसका शरीर शान्त हो गया ।

सम्वत् 2020 माघ शुक्ला सप्तमी तदनुसार 21 जनवरी 1964 के दिन इस विग्रह की स्थापना हुई । इस विराट प्राण–प्रतिष्ठा में पनकी में अपार जन समुदाय उमड़ पड़ा । अनेक वाहन दर्शनार्थियों को निःशुल्क लाने–ले जाने की सेवा करते रहे । सम्पूर्ण दृश्य प्रयाग के कुम्भ मेला का सा दिखायी दे रहा था । प्रतिष्ठा समारोह बड़े नियन्त्रित एवं सुचारु रूप से चलता रहा ।

नया हनुमान मन्दिर पनकी, कानपुर

इस स्थापना में बाबा की अद्भुत लीलाओं के दर्शन भक्तों को हुए । स्थापना की तिथि निर्धारित करते समय बाबा ने कहा था कि उस दिन कानपुर में बहुत सर्दी पड़ेगी पर पनकी में शीत का प्रकोप नहीं होगा । वास्तव में सभी भक्तों को इस आश्चर्यजनक विलक्षणता का अनुभव हुआ ।

बाबा के अनन्य भक्त दीक्षित जी, जो वहाँ उपस्थित थे बताते हैं कि खाद्य सामग्री स्वतः बढ़ती चली गयी । जितना प्रबन्ध था उससे आठ सौ गुना व्यक्तियों ने प्रसाद पाया और सभी को घर के लिये भी प्रसाद दिया गया । इतना होने पर भी साठ प्रतिशत प्रसाद बचा रह गया जो बाद में कई दिनों तक वितरित होता रहा और बड़े प्रयत्न से समाप्त किया गया । सम्पूर्ण वनस्पति घी जो इस कार्य के लिये एकत्रित किया गया था वह असली घी में परिवर्तित हो गया था जो एक गुप्त घटना थी जिसे विरले ही लोग जान सके ।

इस अवसर पर बाबा 4 चर्च लेन इलाहाबाद में एक बन्द कमरे में पड़े रहे और कानपुर नहीं गये । पनकी में कुछ भक्तों को इस शुभ अवसर

पर उनके प्रत्यक्ष दर्शन हुए और वे घन्टों उनके साथ रहे और बातें करते रहे । अन्य लोगों को, जो उत्कण्ठा से उनकी बाट जोह रहे थे, समारोह की विलक्षणता से उनकी उपस्थिति का बराबर आभास होता रहा ।

मन्दिर परिसर के अग्रभाग में प्रसाद पुष्प आदि के लिये छोटी–छोटी दुकानें बनायी गयी हैं और इसके पृष्ठ भाग में एक विद्यालय का निर्माण भी किया गया है ।

लखनऊ में पास–पास दो हनुमान मन्दिरों की स्थापना

लखनऊ में बाबा ने दो हनुमान मन्दिरों का निर्माण कराया । पहला मन्दिर आपने हनुमान सेतु के पास गोमती के किनारे नगरपालिका की भूमि पर, जहाँ धोबी कपड़ा धोया करते थे, बिना किसी अनुमति के बना दिया और तुरन्त वहाँ हनुमानजी के विग्रह की स्थापना बिना किसी शास्त्रीय विधान के कर दी । इस मन्दिर से लगभग तीन सौ गज दूर एक स्थान पर एक दिन बाबा अपने पैर पटकते हुए बोले, **"यहाँ एक और हनुमान मन्दिर बनेगा जो बहुत विख्यात होगा और दूर–दूर से लोग पत्र भेजकर हनुमानजी से अपने कष्टों के निवारण की प्रार्थना किया करेंगे और हनुमानजी उनके कष्टों को दूर करेंगे ।"** यह लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार के पास सड़क के दूसरी ओर वही स्थान है जहां अब संकटमोचन हनुमानजी का मन्दिर है । पास–पास दो हनुमान मन्दिरों की बात उस समय लोगों के समझ में नहीं आ रही थी ।

धीरे–धीरे गोमती के किनारेवाले मन्दिर का नगरपालिका एवं उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विरोध बढ़ता चला गया । सरकार उसे तुड़वाना चाहती थी क्योंकि इसके कारण गोमती के जल प्रवाह की दिशा में जो परिवर्तन आ गया था उससे दूसरे किनारे में स्थित सरकारी इमारत, मोती महल की सुरक्षा के लिये भय पैदा हो गया था । जब वे उस मन्दिर को तुड़वाने में असमर्थ रहे तो उन्हें महाराज से समझौता करना पड़ा । गोमती के किनारे वाली भूमि से बाबा का कब्जा छुड़ाने के लिये उन्होंने बाबा को पचीस हज़ार रुपयों की धनराशि एवं वह भूमि मुआवजे में दी जिसमें अब संकट मोचन हनुमान मन्दिर स्थित है । इन्हीं दिनों बाढ़ के कारण गोमती पर पुराने पुल के क्षतिग्रस्त हो जाने से उसका नवनिर्माण कार्य चल रहा था जिसे महाराष्ट्र की पुल–निर्माण कम्पनी कर रही थी । एक विशेष संयोग से इस कम्पनी के

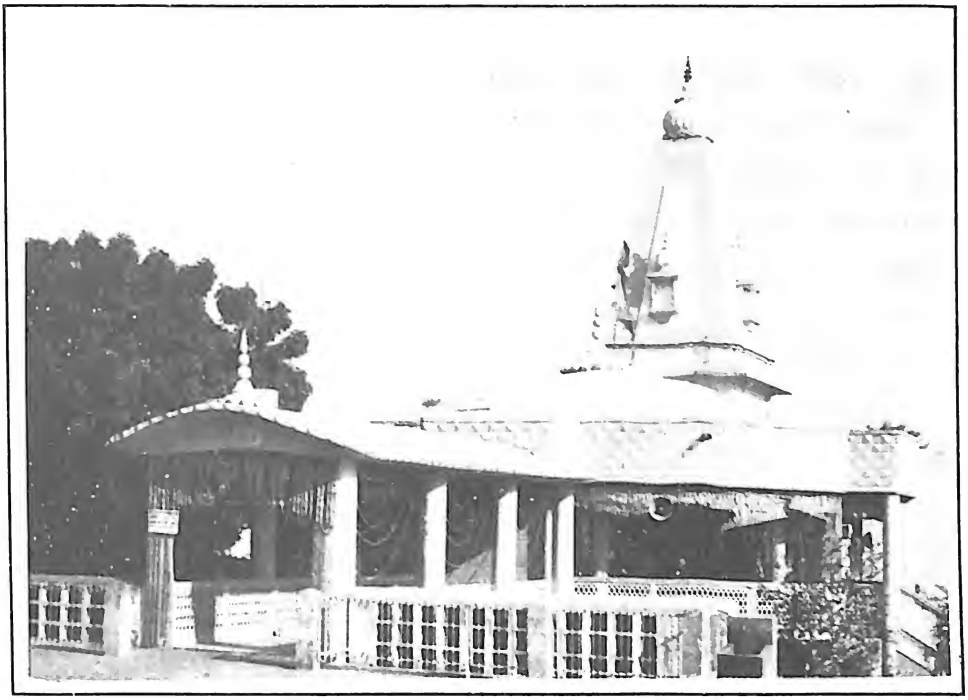

संकट मोचन हनुमान मन्दिर, लखनऊ

मालिक श्री एस.बी. जोशी को बाबा के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ और उनमें इच्छा हुई कि वे उनकी कुछ सेवा करें । मुआवजे की धन राशि सरकार से लेकर आपने उपर्युक्त भूमि पर एक भव्य मन्दिर का निर्माण किया । कानपुर के श्री देवकामता दीक्षित के सौजन्य से श्वेत संगमरमर से बनी हनुमान जी की एक विशाल मूर्ति स्थापना हेतु प्राप्त हुई । इस मन्दिर का शिलान्यास एवं विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा का सौभाग्य बाबा की कृपा से श्रीजगन प्रसाद रावत, तत्कालीन निर्माण मन्त्री को प्राप्त हुआ । गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी 1967 के दिन उत्तर प्रदेश की राजधानी में यह प्रतिष्ठा समारोह बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया और तब से प्रति वर्ष प्रतिष्ठा दिवस मनाने की परिपाटी चली आ रही है ।

यह मन्दिर एक त्रिभुजाकार भूमि पर स्थित है जिसके दो ओर बड़ी–बड़ी सड़कें हैं और एक ओर गोमती नदी का बाँध है । रास्ते चलते लोगों को भी बाहर सड़क से हनुमानजी की विशाल मूर्ति के पूर्ण दर्शन होते हैं और वे श्रद्धापूर्वक नमन करते जाते हैं । मन्दिर दो मंज़िला है । नीचे का खण्ड सत्संग, प्रवचन आदि के लिये उपयोगी है । ऊपरी खण्ड में हनुमान जी का विग्रह विराजमान है । स्थापत्य कला का यह एक उत्तम उदाहरण है । भीतरी दीवारों पर विग्रह के एक ओर सीता राम जी

की आकर्षक चित्र–मूर्ति है और दूसरी ओर सेतुबन्ध रामेश्वरम् का सुन्दर दृश्य प्रस्तुत किया गया है । इस मन्दिर के बाईं ओर भी बाबा महाराज का दो मंजिला विशाल मन्दिर बनाने की योजना है जिसके ऊपरी खण्ड में उनके विग्रह की स्थापना होगी । ये दोनों मन्दिर एक पुल द्वारा संयोजित किए जायेंगे ताकि लोगों को एक मन्दिर से दूसरे में जाने में किसी प्रकार की असुविधा न हो । इस मन्दिर के पीछे शिव, गौरी और गणेश के मन्दिरों का निर्माण किया गया है । यह इस मन्दिर का ही प्रभाव है कि गोमती पर नये पुल के तैयार होने पर उसे हनुमान–सेतु नाम दिया गया ।

गोमती के किनारे वाले मन्दिर का मुआवजा दे चुकने के बाद भी सरकार उसमें हस्तक्षेप न कर सकी क्योंकि जनता में इस विषय पर विरोध की भावना जाग्रत हो चुकी थी । फलतः बाबा के दोनों मन्दिर सुरक्षित रहे । पुराने मन्दिर की देख–भाल बाबा ने एक साधु व्यक्ति के सुपुर्द करदी और संकटमोचन के लिये एक प्रतिष्ठान (ट्रस्ट) बना दिया ।

बाबा के कथन के अनुसार इस मन्दिर की मान्यता दिन–दिन बढ़ती जा रही है । हनुमानजी की कृपा लोगों पर ऐसी बरस रही है कि दूर–दूर से उनके नाम पत्र आते हैं जिन्हें पढ़ कर पुजारी उन्हें सुनाया करता है । नगरवासियों के हृदय में इस मन्दिर ने विशिष्ट स्थान बना लिया है जिसका प्रमाण इसके दर्शनार्थियों की बढ़ती संख्या है । मन्दिर के अतिरिक्त यहाँ रहने की व्यवस्था है और मिठाई आदि की दुकानें भी बनायी गयी हैं ।

संकटमोचन हनुमान मन्दिर, शिमला

पाँचवें दशक के अन्त में शिमला नगर से लगभग पाँच कि.मी. दूर सामने दूसरी ओर एक पर्वतमाला पर स्थित, प्राकृतिक छटा से परिपूर्ण, सुन्दर, शान्त और एकान्त वन प्रदेश में एक बार महाराज ने एक कुटिया में दस दिन वास किया और इस प्रकार आप ने उस भूमि को अपनाया । वहाँ के उप–राज्यपाल एवं नगर के संभ्रान्त लोगों को तभी बाबा के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ । बाबा ने वहाँ सुन्दर मन्दिर बनाने की अपनी इच्छा उनसे व्यक्त की । यह स्थान तारा देवी के पास है और यहाँ आने के लिये राष्ट्रीय मार्ग से दो सौ मीटर नीचे उतरना पड़ता है ।

महाराज की इच्छा ने साकार होना ही था । इस शुभ कार्य के लिये यह भूमि सरकार से प्राप्त हुई । बाबा के तत्कालीन भक्त स्व. राजा भद्री एवं श्री भगवान सहाय का इस कार्य में विशेष सहयोग रहा । यह निर्माण कार्य 1962 में प्रारम्भ हुआ और 21 जून 1966 के दिन संकट मोचन

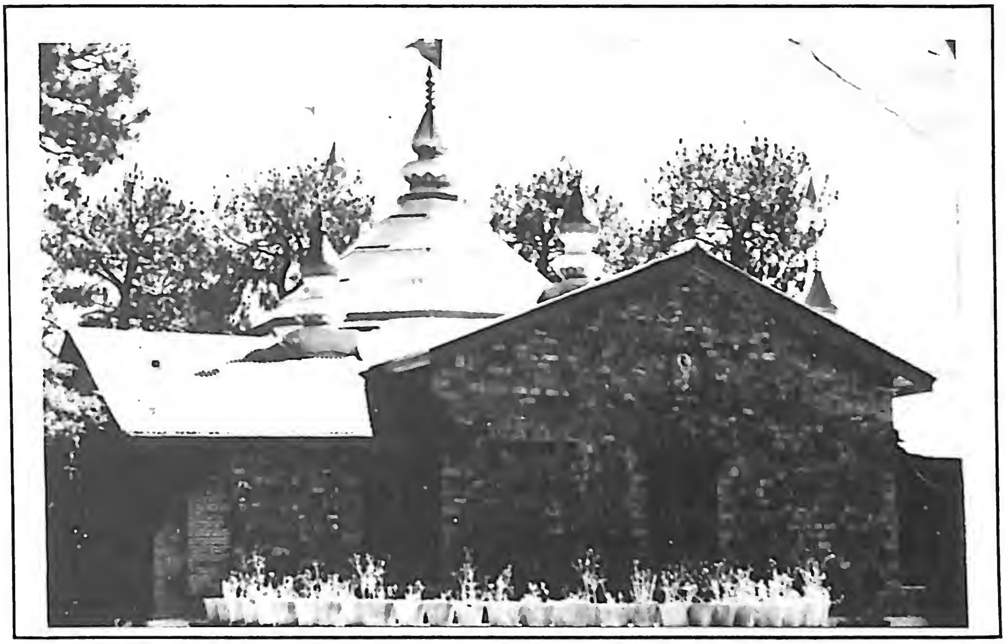

संकट मोचन हनुमान मन्दिर, शिमला

हनुमान मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई । इस मन्दिर के मध्य में श्री सीताराम का विग्रह है जिसके एक ओर शिव और दूसरी ओर हनुमानजी की मूर्तियां स्थापित की गयीं हैं । इस मन्दिर की बनावट चित्ताकर्षक है और इसका चतुर्दिक वातावरण अत्यन्त रमणीक है । बिजली और पानी की यहाँ पर्याप्त सुविधाएँ हैं । मन्दिर तक गाड़ियों के आने-जाने का पक्का मार्ग बना हुआ है और पैदल चलने का छोटा रास्ता भी अलग है । मन्दिर परिसर में बच्चों के लिये एक छोटी पाठशाला का भी निर्माण किया गया है और एक बृहत् धर्मशाला भी बनायी जा रही है । महाराज के विग्रह की स्थापना की भी योजना है । इस मन्दिर की शिमला नगर में बड़ी मान्यता है । राम नवमी और हनुमत् जयन्ती यहाँ बड़े समारोह के साथ मनायी जाती हैं । इन अवसरों पर यहाँ वृहत् भण्डारा हुआ करता है । इनके अतिरिक्त निर्जला एकादशी और दशहरा भी बड़े उत्साह से मनाये जाते हैं ।

वृन्दावन आश्रम एवं मन्दिर

महाराज जब कभी वृन्दावन जाते अपने साथ के लोगों को धर्मशाला में या अन्यत्र ठहराया करते और स्वयं परिक्रमा मार्ग में जहाँ अब गोरे दाऊ का मन्दिर है, हाथीवाले बाबा के पास ठहरते थे । पहले यहाँ केवल

हाथीवाले बाबा की एक झोंपड़ी मात्र थी, उसके पास एक नीम के पेड़ के नीचे महाराज लेटा करते थे । यह भूमि शुष्क और अत्यन्त ऊबड़–खाबड़ रही जिसमें यत्र–तत्र बेर और कटील की झाड़ियों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं दिखायी देता था । बाबा का यहाँ आकर इस स्थान में लेटना, मनोरा पर्वत, नैनीताल की भाँति इस भूमि को अपनाना था । आपने इस निर्जन तिरस्कृत भूमि को मन्दिर और आश्रम के निर्माण हेतु चुना । अपने इस चुनाव पर भक्तों का कोई उत्साह न देख कर बाबा स्वतः कहने लगे, **"आगे चलकर यहाँ नगर बस जायेगा ।"** वास्तव में उनके चरण रज के प्रताप से यह लोकप्रिय हो गया ।

यह वृहत् भूमि श्री हरिकिशन वैद्य जी की थी । बाबा ने इसको आश्रम और मन्दिर के निर्माण के लिये खरीदवाया । आरम्भ में यहाँ भी आपने लघु हनुमान की स्थापना करायी । भीतर आश्रम परिसर में दो मंज़िलों का बड़ा धर्मशाला बनवाया जिसके सामने बड़े फासले में मन्दिर परिसर तक दो कतारे रहने के कमरों की बनायीं । आश्रम का अपना कुंआ और पम्पिंग सेट है । सर्वत्र नलों, शौचालयों, स्नानागारों की सुविधाएँ हैं । सुन्दर वाटिकाओं से हरा–भरा यह पुनीत स्थल आगन्तुकों के चित्त को आकर्षित करता है ।

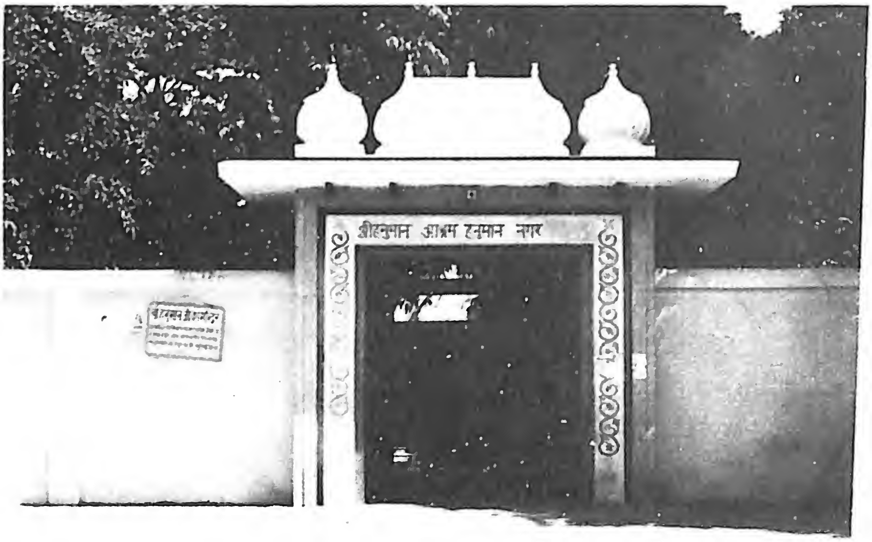

हनुमान मन्दिर एवं आश्रम, वृन्दावन

सम्वत् 2025 में यहाँ हनुमान मन्दिर श्री मंगतूराम जयपुरिया ने अपने भाई रायसाहब स्व. सेठ पूरनमल जी, जयपुरिया की स्मृति में बनाया । जब

इस मन्दिर के लिये हनुमानजी की मूर्ति जयपुर से लायी गयी तो वृन्दावन आने पर वह खण्डित पायी गयी, पर बाबा की महिमा से मूर्ति का यह दोष बिना उपचार के जाता रहा[80] । इस मन्दिर का पुजारी, बाबाने एक अनपढ़ ठाकुर को बनाया, पर लोगों को उसके मुँह से गीता सुनवाकर उसकी प्रतिष्ठा बना दी[46] । सम्वत् 2030 में वैष्णवी देवी मन्दिर की स्थापना श्री होदा राम जी ने अपने माता–पिता की स्मृति में की और सम्वत् 2027 में यहाँ सत्संग और कीर्तन भवन का निर्माण हुआ । धर्मशाला और आश्रमवासियों के कमरों की दो कतारों के बीच उस खुले स्थान में जहाँ बाबा की चिता प्रज्वलित की गयी थी उनके मन्दिर का निर्माण किया गया और उसमें बसन्त पंचमी 9 फरवरी 1981 के दिन उनके विग्रह की स्थापना की गयी ।

कालान्तर में इस भू–भाग में अनेक निर्माण कार्य होते गये । हाथी बाबा की झोपड़ी गायब हो गयी और गोरे दाऊ में अनेक पक्की इमारतें बन गयीं । बिजली, पक्की सड़क और पानी की सुविधाएँ सुलभ हो जाने से यह स्थान पूरी तरह आबाद हो गया । बाबा की वाणी सच्ची उतरी । सुन्दर इमारतों और बाग़–बगीचों से हरा–भरा यह स्थल दर्शनीय हो गया ।

दिल्ली आश्रम एवं मन्दिर

दिल्ली में महरौली से ग्यारह कि. मी दूर जौनापुर और मांडी गाँव की सीमा के पास तीस एकड़ निर्जन पथरीली एवं शुष्क भूमि यहाँ के ग्रामवासियों ने बाबा को समर्पित की । यह बृहत् भूमि ग्रामवासियों के कभी किसी काम की नहीं थी । आदिकाल से यहाँ पानी का अभाव रहा इस कारण वे लोग इस भूमि का त्याग आसानी से कर पाये । इस शुभ कार्य में श्री महावीर त्यागी, डिवलपमेंट कमिश्नर एवं श्री आर. एस. यादव बी. डी. ओ. का विशेष योग दान रहा । जब त्यागी जी ने यहाँ की पानी की समस्या बाबा के आगे रखी तो उन्होंने आशीर्वाद देते हुए कहा कि **जहाँ भी आश्रम की भूमि तू खुदवायेगा वहीं से पानी निकल आयेगा ।** नब्बे फिट की गहराई में चट्टानों को तोड़ने पर भी जब गीली धरती के दर्शन नहीं हुए तो बाबा ने और अधिक खोदने का आदेश दिया, एक सौ पचास फुट की गहराई में पहुँचने पर पानी की भर मार हो गयी । अब दूर–दूर तक ग्रामवासी यहाँ से पानी ले जाते हैं । 20 अप्रैल 1971 रामनवमी के दिन यहाँ हनुमान मन्दिर की स्थापना हुई, इसका उद्घाटन यहाँ के राज्यपाल ने किया । बाबा इस अवसर पर वृन्दावन ही रहे । वहाँ उन्होंने इस उपलक्ष्य में भण्डारा किया । दिल्ली आश्रम में केवल लड्डुओं का भोग लगा जिनकी

संख्या स्वतः बढ़ती गयी । यादव जी कहते हैं कि आठ दिन तक लगातार बाँटने पर बड़ी कठिनाई से उनका निबटारा हो पाया । बाबा का आदेश था कि यहाँ देवी के विग्रह की स्थापना हो, अतः यह कार्य 9 जुलाई 1983 को सम्पन्न किया गया । अब यहाँ बाबा के विग्रह की योजना शेष है ।

दिल्ली के मन्दिरों एवं आश्रम का एक दृश्य

इस आश्रम में सुन्दर गोशालाएँ हैं जिनमें गायों के पालन पोषण की उत्तम व्यवस्था है । इस शुष्क भूमि से होकर जाने वालों के लिये प्रवेश द्वार पर पानी पिलाने का अच्छा प्रबन्ध है । मन्दिर के पीछे श्री सेवानन्द बाबा की कुटिया एक तपोवन का दृश्य प्रस्तुत करती है । महाराज के समय आप वृन्दावन आश्रम की देख–भाल करते थे । उनके महाप्रयाण के बाद आप को इस आश्रम का कार्य भार सौंपा गया है ।

धार चूला हनुमान मन्दिर

भारत नेपाल की सीमा पर धारचूला में हनुमान मन्दिर की स्थापना महाराज के समाधिस्थ होने के बाद, 11 अक्टूबर 1978 विजया दशमी के शुभ अवसर पर हुई । बाबा के इस आदेश की पूर्ति उनके भक्त श्री एम. एल. साह द्वारा हुई जो उस समय वहाँ तहसीलदार थे । यह भूमि जहाँ इस मन्दिर का निर्माण किया गया, आदि से ही हनुमानगढ़ कही जाती थी, यद्यपि यहाँ न हनुमानजो की कोई मूर्ति थी और न मन्दिर ही । काली नदी के किनारे यहाँ पर एक अष्टभुजाकार मन्दिर बनाया गया जिसमें हनुमानजी

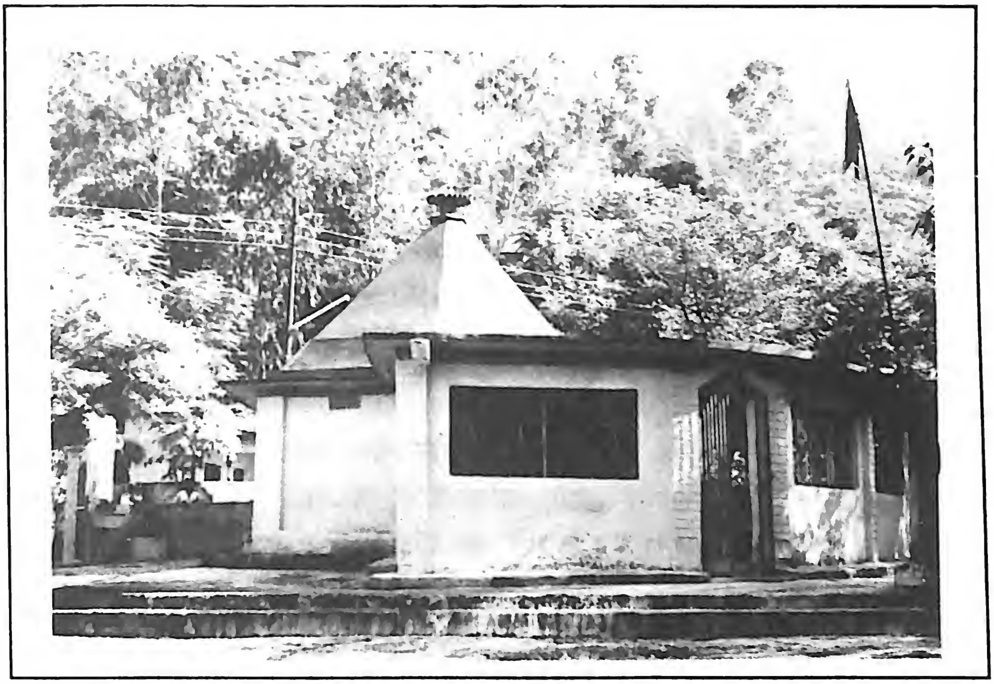

हनुमान मन्दिर, धारचूला

की साढ़े चार फुट ऊंची मूर्ति जयपुर से लाकर स्थापित की गयी । इस मन्दिर के निर्माण से धारचूला निवासियों की आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों में आश्चर्यजनक सुधार आ गये । एक ओर दूरस्थ इस छोटे पर्वतीय भू–भाग में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लागू की गयी तीन सौ करोड़ रूपयों की विद्युत् योजनाओं से यहाँ के लोगों की समृद्धि में आशातीत वृद्धि हो गयी और दूसरी ओर दिनानुदिन उनका विश्वास रुढ़िवादिता से हट कर हनुमानजी और महाराज की शक्तियों में दृढ़ होता जा रहा है । इस मन्दिर की मान्यता सीमा के दूसरी ओर नेपाल में भी प्रसारित हो गयी । यहाँ हर घर और दुकान में बाबा के छायाचित्र दिखायी देते हैं । यह मन्दिर मानसरोवर यात्रा मार्ग में है और इसके निर्माण के बाद ही लोगों को मानसरोवर यात्रा का सौभाग्य पुनः प्राप्त हुआ ।

जिप्ती का हनुमान मन्दिर

धारचूला से आगे जिप्ती नामक स्थान में बाबा के कुछ सैनिक भक्तों के प्रयास से 28 अक्टूबर 1982 के दिन हनुमानजी के एक छोटे मन्दिर की स्थापना हुई । इसके लिये मूर्ति कैंची आश्रम से भेजी गयी । मानसरोवर यात्रा मार्ग में यह अन्तिम मन्दिर है । इस मन्दिर की नींव एक मुसलमान सैनिक ने डाली और एक ईसाई सैनिक ने यह मन्दिर बनाया ।

वीरापुरम आश्रम एवं मन्दिर, मद्रास

मद्रास से 32 कि.मी. दूर वीरापुरम के एक विस्तृत और वीरान मैदान में महाराज के एक भक्त श्री हुकम चन्द ने 19 जनवरी 1984 के दिन उनके मन्दिर और आश्रम की स्थापना की । आप ने इस भूमि पर बाबा के विग्रह के अतिरिक्त सुब्रह्मण्यम स्वामी, गणेश जी, हनुमानजी और नवग्रहों के मन्दिरों की भी स्थापना की । इस भूमि को ग्यारह वर्ष पूर्व बाबा ने किस प्रकार अपने चरणकमलों से पवित्र किया इसका उल्लेख 'लीलामृत' में हुकम चन्द जी से सम्बन्धित लीला में किया गया है[81] । वीरापुरम में उत्तरी भारत के सन्त के विग्रह की यह अद्वितीय प्राण–प्रतिष्ठा दक्षिण भारत के एक सिद्ध सन्त द्वारा बड़े हर्ष और उल्लास से की गयी जिसमें देश–विदेश के भक्तों ने भाग लिया । दक्षिण भारत के प्रतिष्ठित ब्राह्मणों ने इस कार्य को विधिवत् पूर्ण किया ।

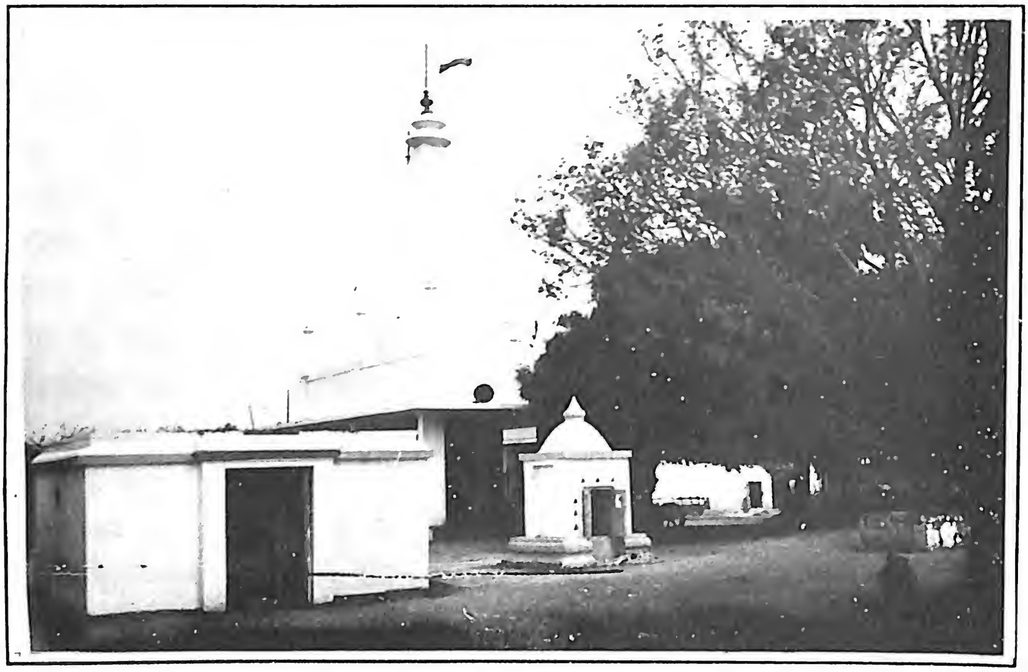

वीरापुरम, मद्रास के मन्दिर एवं आश्रम का एक दृश्य

यहाँ महाराज का मन्दिर और आश्रम बनाने का कोई विचार हुकम चन्द जी का कभी रहा नहीं और न यह बात उनकी जानकारी में थी कि उस भूमि में बाबा के पदार्पण भी हुए थे । कुछ ऐसे संयोग बने और एक अज्ञात प्रेरणा रही जो इस कार्य में सहायक हुई । इस स्थापना के पूर्व मद्रास में पीने के पानी की अत्यधिक कमी हो चली थी जिससे जन–जीवन कष्टप्रद

हो चुका था । जब बाबा की मूर्ति 21 दिनों तक जलमग्न की गयी तो एकाएक आकाश बादलों से आच्छादित हो गया और समस्त तमिलनाडु में असामयिक घोर वर्षा होती रही । सभी तालाब जो शुष्क हो चले थे, जल से इस प्रकार प्लावित हो गये कि आगामी दो वर्षों के लिये ऐसे कष्ट की सम्भावना ही नहीं रही । जिनका जीवन ही सर्व–जन हिताय रहा उनके विग्रह की स्थापना में ऐसी सुखद घटनाओं का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है ।

गर्जिला (कोटमन्या) हनुमान मन्दिर

15 अप्रैल 1984 हनुमान जयन्ती के शुभ अवसर पर गर्जिला ग्राम, कोटमन्या, डीडीहाट, जिला पिथौरागढ़ में बाबा के छाया–चित्र के साथ हनुमान विग्रह की स्थापना की शुभ प्रेरणा श्री ईश्वरचन्द्र जोशी, प्रधान अध्यापक को हुई । इस मन्दिर का निर्माण स्थानीय लोगों की उच्च भावनाओं और उनके श्रमदान से हुआ । निर्माण कार्य के समय जब सर्वत्र सीमेंट लगाया जा रहा था, घोर वर्षा आरम्भ हो गयी । इस सम्पूर्ण कार्य के व्यर्थ हो जाने की सम्भावनाओं से सब के मन में भय हो रहा था । सभी बाबा को याद करते हुए कार्य कर रहे थे । प्रकृति के नियन्त्रक बाबा की शक्ति सक्रिय हो उठी । ऐसी विलक्षणता देखी गयी कि मन्दिर और उसके पास की भूमि को छोड़ चारों ओर वर्षा होती रही और निर्माण कार्य यथावत् चलता रहा ।

इस मन्दिर की स्थापना बड़े हर्ष और उल्लास के साथ हुई । जोशी जी के पिताजी ने, जो 85 वर्ष के कर्मठ ब्राह्मण हैं, दोनों आँखों में मोतियाबिन्द से लाचार होते हुए भी यथाशक्ति इस कार्य में सहयोग दिया । यज्ञ, सुन्दर काण्ड का पाठ, सत्य नारायण के पूजन और कीर्तन के बाद प्राण प्रतिष्ठा हुई । अन्त में जब आरती के बाद परिक्रमा हो रही थी, इन वृद्ध महाशय की आँख में रोशनी आ गयी और ये बाबा के छाया–चित्र और स्थापित विग्रह के दर्शन कर अत्यधिक प्रसन्न हुए । आँखों से देखते हुए इन्होंने परिक्रमा की और उपस्थित सभी लोगों के दर्शन कर इनके हर्ष का पारावार ही नहीं रहा । इसके बाद जब इन्होंने मूर्ति को पुनः नमन किया तो इनकी स्थिति पूर्ववत् हो गयी । उस रात ये नैराश्यपूर्ण मानसिक स्थिति में सोये और महाराज ने स्वप्न में इन्हें दर्शन देकर आश्वस्त किया । दूसरे दिन प्रातःकाल ही इनके दूसरे पुत्र, जो धारचूला में अध्यापक हैं, एकाएक इन्हें लेने आ गये । उन्होंने वहां सीतापुर कैम्प अस्पताल में इनकी आँख का आपरेशन करवाया और इस आयु में भी, बाबा की कृपा से, इनकी आँख में रोशनी आ गयी ।

घारचूला की भाँति गर्जिला में भी घर–घर और हर दुकान में बाबा के छाया–चित्रों के दर्शन होते हैं ।

बाबा नीब करौरी आश्रम, बद्रीनाथ

बाबा जब कभी बद्रीनाथ जाते वे नर पर्वत पर किसी बाबा की झोपड़ी में निवास करते और अपने साथ के भक्तों को उनकी सुविधा के लिये नारायण पर्वत में ठहराया करते थे । उन दिनों नारायण पर्वत ही आबाद था और नर पर्वत वीरान था । इस प्रकार नर पर्वत पर निवास कर उन्होंने इस पर्वत को मनोरा पर्वत, नैनीताल की भाँति अपनत्व दिया । फलतः इस पर्वत पर बद्रीनाथ मन्दिर के प्रवेश द्वार के सम्मुख की बृहत् भूमि बाबा को प्राप्त हो गयी जहाँ अभी बाबा का आश्रम बनना शेष है । जब से बाबा ने इस पर्वत को अपनाया धीरे–धीरे इसकी काया ही पलट गयी । यहाँ अनेक भव्य इमारतों का निर्माण होने लगा, अच्छी दुकानें और सुगम सड़कें बन गयीं । इस प्रकार इस पर्वत की उपेक्षा समाप्त हो गयी और यह पर्यटकों का प्रिय स्थल बन गया । सन् 1983–84 में बद्रीनाथ टैम्पल कमेटी ने बाबा से पूर्व में प्राप्त धन राशि से उनका एक छोटा आश्रम नारायण पर्वत में बना दिया ।

ऋषिकेश हनुमान मन्दिर

सन् 1970 में वीरभद्र ब्लाक ऋषिकेश में महाराज ने एक एकड़ भूमि वन विभाग, उत्तर प्रदेश से मन्दिर और आश्रम हेतु 'लीस' में प्राप्त की थी । यह स्थान हरिद्वार रोड पर ऋषिकेश से छः कि.मी. दूर पर आइ.डी.पी.एल. फैक्टरी के प्रमुख प्रवेश द्वार के सम्मुख स्थित है । बाबा के महाप्रयाण के बाद ग्यारह वर्षों तक यह भूमि अछूती पड़ी रही । उनके संकल्प ने व्यर्थ होना था नहीं, भक्तों ने इस भूमि की खोज आरम्भ की । नवम्बर 1983 में एक दिन श्री पी.के. चोपड़ा, जनरल मैनेजर, जल संस्थान देहरादून अपनी कार में सपरिवार इस कार्य हेतु ऋषिकेश पहुंचे । यहाँ भटकते हुए वे एक ऐसे स्थान में पहुँचे जहाँ से दो रास्ते फटते थे । वे वहाँ पर उपस्थित कुछ युवकों से इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने की चेष्टा कर रहे थे, एकाएक एक कम्बल ओढ़ा और बीड़ी पीता हुआ ग्रामीण व्यक्ति, जो अब तक आपकी बात पास से सुन रहा था, आगे आया और उसने गन्तव्य की ओर आपको रास्ता बताया । अपनी सुविधा के लिये आपने इसे आग्रह पूर्वक अपनी गाड़ी में बिठा लिया । उस व्यक्ति ने बाबा की इस भूमि का

आद्यन्त इतिहास चोपड़ा जी को सुनाया और बताया कि किस प्रकार यह भूमि उन्होंने वन विभाग से कितने वर्षों की 'लीस' में प्राप्त की और उस समय कौन एम.एल.ए. और कौन डी.एफ.ओ. उनके इस कार्य में सहायक हुए। अन्त में उसने बताया कि वह भूमि इस समय एक डाक्टर के कब्जे में है जो उसमें खेती करता है । वह व्यक्ति गाड़ी में बैठा बीड़ी पीता जा रहा था और चोपड़ा जी की पत्नी के मन में भय हो रहा था कि कहीं उसकी असावधानी से बीड़ी की किसी चिन्गारी से सीट का कवर न जल उठे । इसके तुरन्त बाद ही वह स्वतः उनसे बोला, "माँ ! लो, मैं बीड़ी फेंक देता हूँ" और उसने बीड़ी बाहर फेंक दी । थोड़ी देर में गाड़ी ठिकाने आ गयी और उसने बाबा की भूमि उन्हें दिखायी । उसने उनके साथ भीतर चलना स्वीकार नहीं किया और कहने लगा, "मैं डाक्टर से नहीं मिलता ।" आप लोगों का ध्यान उस भूमि की ओर आकर्षित हो गया था, इतने में वह व्यक्ति ऐसा गायब हुआ कि दूर तक भी उस सीधी सड़क पर कहीं दिखायी नहीं दिया । अपने उपकार के लिये धन्यवाद देने का मौका भी न देने वाला वह व्यक्ति बाबा के अलावा कौन हो सकता था ? चोपड़ा जी के मन में यही विचार आया कि अपने काम को पूरा कराने के लिये बाबा स्वयं इस रूप में प्रकट हुए ।

यह भूमि डाक्टर के कब्जे से छुड़ा ली गयी और यह विचार किया गया कि 10 जुलाई 1984 को वहाँ साधारण रूप से लघु हनुमानजी की स्थापना कर दी जाय ताकि वे आगे का कार्यभार स्वयं ग्रहण कर लें, पर उस दिन बिना बुलाये बड़ा जन समुदाय वहाँ एकत्रित हो गया और अच्छे वेदपाठी पण्डित भी बिना किसी निमन्त्रण के स्वतः चले आये । इस प्रकार यह प्रतिष्ठा कार्य हर्ष और उल्लास के साथ पूर्ण हुआ । इसके लिये ट्रस्ट का आयोजन किया गया और तत्सम्बन्धी अनेक कार्य किये गये ।

अप्रैल 1985 में यहाँ हनुमान जयन्ती बड़े समारोह से मनायी गयी । दूर दूर से आये हुए तथा स्थानीय भक्तों ने हनुमान चालीसा और सुन्दर काण्ड का सस्वर सामूहिक पाठ किया । सम्पूर्ण वातावरण राममय हो गया और हनुमानजी के नाम से गूंज उठा । जब पाठ का समापन हो रहा था, एक बड़ा बन्दर प्रवेश द्वार से सीधे भीतर आया और जन समुदाय के बीच से जाते हुए उसने मन्दिर की दाहिनी ओर से परिक्रमा की । इसके बाद उसने कपड़ा उठा कर प्रसाद की टोकरियों से एक मुट्ठी भरकर प्रसाद लिया और पीछे मुड़ कर उसने अपने शरीर को इतना छोटा और पतला बना लिया कि पास-पास लगे कटीले तारों के बीच से इधर-उधर छलाँगें मार कर उसने अद्भुत कला का प्रदर्शन किया । इसके बाद वह महाराज

ऋषिकेश हनुमान मन्दिर एवं आश्रम

के निमित्त बनी कुटिया में प्रवेश कर गया । इस कुटिया में केवल एक दरवाजा है और एक भी खिड़की नहीं है । सभी भक्तों की यही धारणा रही कि हनुमानजी प्रकट हो गये । वे लोग कुटिया के बाहर से ही फलों को भीतर फेंक कर उन्हें हनुमानजी को अर्पण करने लगे । कुटिया के भीतर जाने का साहस किसी में भी नहीं हुआ । कुछ समय तक सभी लोग कुटिया को चारों ओर से घेरे रहे । बहुत समय इस प्रकार बीतने पर, जब उन्होंने झाँक कर कमरे के भीतर देखा तो वहां कोई बन्दर न था । हनुमानजी अन्तर्धान हो चुके थे । हनुमान के रूप में बाबा की ही यह लीला समझी गयी । दैनिक पत्र 'हिन्दुस्तान' 16 अप्रैल 1985 में इस समारोह का उल्लेख हुआ था ।

हनुमान विग्रह एवं बाबा नीब करौरी आश्रम, टाओस अमरीका

त्रेता में हनुमान जी समुद्र लाँघकर लंका गये थे, पर बीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में उनका विग्रह छलाँग मारती मुद्रा में अनेक महासागरों को पार करता हुआ जब सेन्फ्रान्सिसको पहुँचा तो वहाँ महाराज के भक्तों द्वारा उसका भव्य स्वागत हुआ। हनुमान के विग्रह को अमरीका ले जाने की प्रेरणा

श्री रामदास (डा. रिचार्ड एल्पर्ट) को हुई। आपने जयपुर में 1500 पौंड वजन की यह मूर्ति बनवायी जो विमान द्वारा सन् 1979 में अमरीका पहुँचायी गयी। उस समय सेन्फ्रान्सिसको में उपस्थित अमरीकी भक्तजन इस विग्रह के लिये अमरीका में उपयुक्त स्थान के सम्बन्ध में विचार करने लगे । कोई न्यू–इंग्लैंड और कोई कैनाडा चाहता तो कोई बड़ी चहल–पहल की जगह न्यूयार्क का सुझाव दे रहा था। इस कारण कोई भी निर्णय नहीं हो पाया । इस वाद–विवाद के दौरान हनुमान जी ने अपना स्थान स्वयं निश्चित कर लिया । महाराज के एक अमरीकी भक्त, जिनको बाबा ने भारतीय नाम विष्णु दिया था, मूर्तियों में रूचि न रखते हुए भी, किसी अज्ञात प्रेरणा से, इस विग्रह को टाओस, न्यू–मैक्सिको में स्थित अपने मकान में रखने के लिये तैयार हो गये । इस सुझाव पर उपस्थित सभी लोगों ने यह निर्णय किया कि जब तक हनुमान जी के लिये स्थाई रूप से कोई स्थान विशेष का चुनाव नहीं हो जाता तब तक उन्हें टाओस में

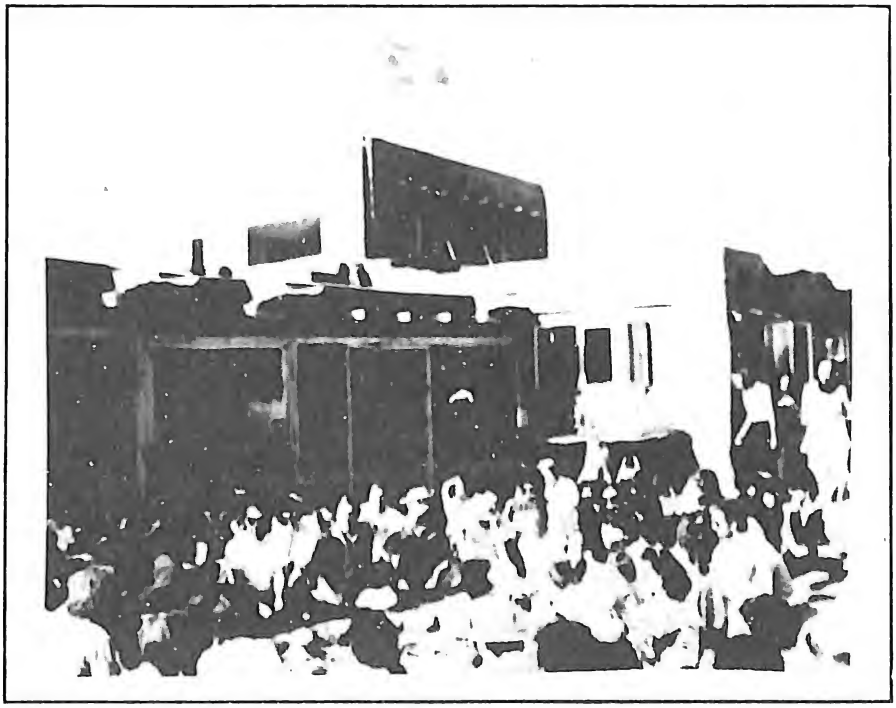

टाओस, अमरीका में हनुमान विग्रह
बाबा नीब करौरी आश्रम,

रहने दिया जाय । यह मूर्ति वहाँ विष्णु के मकान के पीछे के कमरे में रख दी गयी । इसके एक वर्ष बाद, जब विष्णु परिवार सहित अपने सात एकड़ फार्म के मकान में चला गया तो इस मूर्ति को वहाँ पीछे गोदाम के एक कमरे में स्थान दिया गया जहाँ ठण्डक अत्यधिक थी ।

न्यू–मैक्सिको में टाओस एक रमणीक स्थान है । यह चारों ओर हिमाच्छादित पर्वत मालाओं से घिरा है । यहाँ रहते हनुमानजी और विष्णु में बड़ी प्रीति हो गयी । विष्णु के स्वभाव में मौलिक परिवर्तन आ गये । वह हनुमानजी के कक्ष को सदा स्वच्छ और सुन्दर बनाता रहता, उसे 'हीटर' से गर्म रखता और फल, फूल, मिष्ठान्न आदि से उनकी सेवा करता । अब वह मालिक नहीं हनुमानजी का सेवक है । स्थिति ऐसी हो गयी है कि अब उसे हनुमानजी का बिछोह सहन नहीं है और वह उनकी सेवा को अपना सौभाग्य मानने लगा है । सन् 1984 में उसने महाराज के अमरीकी भक्तों की संस्था "हनुमान फाउन्डेशन" को इस सम्बन्ध में अपने बड़े मकान का कुछ भाग और भूमि सस्ते दामों में देने का वचन दिया और अपना शारीरिक सहयोग देने का भी वायदा किया ।

यहाँ नित्य स्थानीय लोगों द्वारा हनुमान चालीसा का पाठ, रामनाम कीर्तन और भक्तों का सत्संग होता है और बाबा की महानिर्वाण की तिथि में प्रति वर्ष भण्डारे की प्रथा भी चल पड़ी है । अभी तक यहाँ कोई मन्दिर एवं आश्रम का निर्माण नहीं हुआ है, पर हनुमानजी अपने अमरीकी भक्तों की अर्चना से सन्तुष्ट हैं ।

बाबा के सभी आश्रमों और मन्दिरों में विधिवत् पूजा–पाठ, यज्ञ आदि हुआ करते हैं । प्रत्येक आश्रम में हनुमान जी का मन्दिर तो है ही, इसके अतिरिक्त राम, शिव और देवी के मन्दिर भी हैं । बाबा कहते थे कि **लोग धर्म और कर्म के प्रति उदासीन होते जा रहे हैं और आगे बहुत बुरा समय आयेगा तब ये मन्दिर ही मनुष्य को भगवान् की याद करायेंगे** । इनको उपयोगी और बहुजन हिताय बनाने के लिये उन्होंने इन मन्दिरों को सड़कों के पास और प्रायः बड़े–बड़े नगरों में ही बनाया ।

कूर्मांचल प्रदेश में जहाँ आदि से ही शिव और शक्ति की उपासना अधिक प्रचलित रही, आपने स्थान–स्थान में हनुमान मन्दिरों की स्थापना कर घर–घर हनुमान चालीसा और रामायण का प्रचार करा दिया । इस प्रकार वैष्णव धर्म भी पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित हो गया ।

बाबा स्वयं लोगों की लौकिक इच्छाओं की पूर्ति कर उनका हृदय परिवर्तन करते रहे । आपने इन मन्दिरों में स्थापित विग्रहों को भी अपनी

अलौकिक शक्ति से चिन्मय बना दिया और ये भी आपकी ही भाँति लोगों की कामनाओं को पूर्ण करते रहते हैं । यही कारण है कि इन मन्दिरों की मान्यता दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है ।

इन मन्दिरों की स्वच्छता, सुन्दरता, भव्यता एवं शान्ति एक ऐसे गम्भीर और रमणीक वातावरण को प्रस्तुत करती है, जिसमें धार्मिक व्यक्तियों के अतिरिक्त पर्यटकों की भी चित्तवृत्ति शान्त हो जाती है और आध्यात्मिकता की ओर आकृष्ट हो उठती है । ऐसा कोई विरला ही व्यक्ति होगा जिसमें एक बार इन आश्रमों में आने पर यहाँ निवास करने की स्वाभाविक इच्छा जाग्रत न हुई हो । ये वास्तव में बाबा के आनन्दमय स्वरूप को झलकाते हैं ।

एक बात ध्यान देने की यह है कि बाबा के आश्रम और मन्दिरों के पास अपनी कोई सम्पत्ति नहीं है जिससे वे आर्थिक दृष्टि से आत्म निर्भर हो सकें । इस महँगाई के युग में प्रति वर्ष बढ़ते हुए खर्चों का भार बाबा अब भी स्वयं वहन कर रहे हैं । उनकी कृपा से मन्दिरों के चढ़ाव से ही, बिना किसी चिन्ता और कष्ट के, वर्ष भर के व्यय की पूर्ति हो जाती है ।

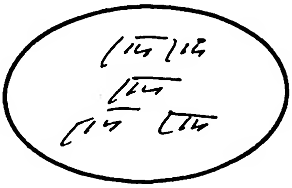

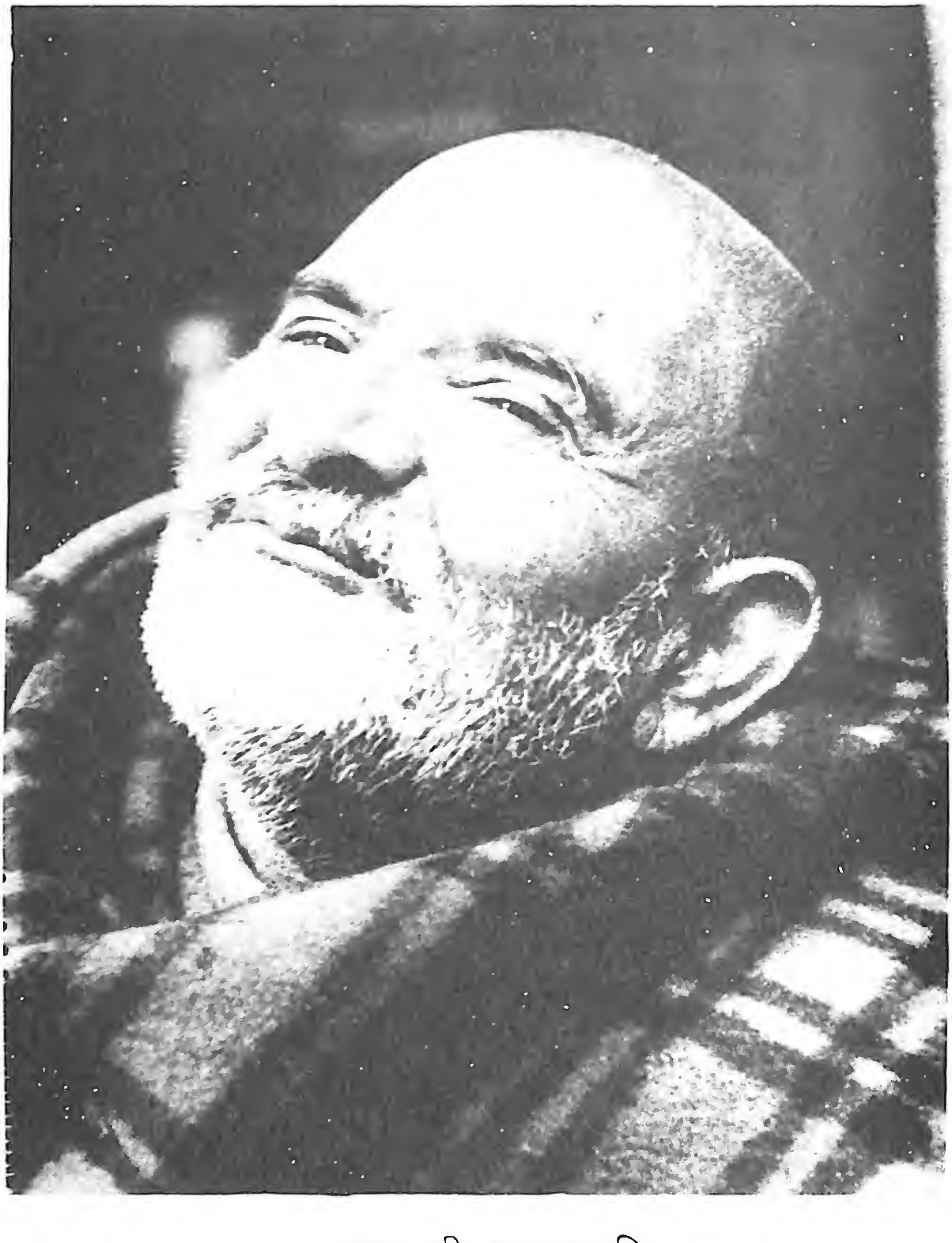

बाबा की चल–समाधि

बाबा की रहस्यात्मकता

बाबा की सभी बातें देखने में सामान्य होते हुए भी प्रभाव में अद्‌भुत रहीं । मनुष्य के लिये बाबा और उनके कार्य सदा रहस्यपूर्ण बने रहे । कल्पनातीत होने से बुद्धि चकरा कर रह जाती और कारण खोजने में अपने को असमर्थ पाती । हमारे मस्तिष्क और मन एक सीमा के भीतर ही कार्य करते हैं । इस कारण तर्क और विश्वास भी सीमित हैं । अलौकिक कार्य इनसे नहीं समझे जा सकते । आध्यात्मिक जगत की सच्ची अनुभूति श्रद्धा और प्रेम से ही हो पाती है । जो सर्वशक्तिमान है और असीम है, वह दुर्बल मानवीय सीमा से भी आबद्ध हो सकता है, इस सत्य का बोध तर्क और विश्वास से नहीं हो पाता ।

जो सर्वशक्तिमान है, वह सब कुछ करने में समर्थ है । उसका नर रूप में अवतरित होना और उसके अनुकूल आचरण कर दिखाना, उसकी अनन्त शक्ति का समर्थन ही है । और भी, सृष्टि के आदि से यही भगवान् का विधान रहा है कि मनुष्य मनुष्य से ही सीखता चला आ रहा है । यदि भगवान् को उसे कुछ सिखाना हो तो उसके कल्याण के लिये, उन्हें नर रूप में ही अवतरित होना पड़ता है । अल्पज्ञता के साथ यह मनुष्य का अहंकार है जो उसमें श्रद्धा और प्रेम को पल्लवित नहीं होने देता । फलतः वह भ्रमित हो यथार्थ दृष्टि से वंचित रह जाता है और निरर्थक शंकाएँ करने लगता है । इस यथार्थ दृष्टि के अभाव में बाबा सभी लोगों के लिये रहस्य बने रहे ।

बाबा कहते थे, **"वे सब विचार जो मन और मस्तिष्क में आते हैं और इन्द्रियों से जो जानकारी प्राप्त होती है, सत्य नहीं हैं ।"** उनकी यह वार्ता सत्य के वास्तविक स्वरूप को झलकाती है और यह भी दर्शाती है कि जिसे लौकिक दृष्टि से सत्य माना जाता है, वह सब भ्रामक है । बाबा की बात व्यावहारिक दृष्टि से स्वीकार न हो, पर

इसकी वास्तविकता पर सन्देह नहीं किया जा सकता । रक्त–मांस का बना हमारा मस्तिष्क एक जटिल प्रक्रिया द्वारा विचार पैदा करता है और उसे विश्वसनीय रूप में प्रस्तुत करता है । यथार्थ को न जानते हुए हम अपने मस्तिष्क की उपज को सत्य समझ लेते हैं, क्योंकि इसके अतिरिक्त हमारे पास विचार करने का अन्य साधन नहीं है । न्यायिक दृष्टि से मस्तिष्क शरीर का और इस प्रकार जगत और प्रकृति का भी एक अंग है । अंग के रूप में वह अंगी की वास्तविकता का बोध तभी करा सकता है जब उसका अंगी से कोई सम्बन्ध न रहे । पर हमारा मस्तिष्क इन सम्बन्धों को बनाये हुए इनके विषय में निर्णयात्मक विचार प्रस्तुत करता है जो असत्य ही नहीं भ्रान्तिमूलक भी हैं । बाबा की विशेषता यह थी कि वे शरीर धारण किये हुए भी शरीरस्थ नहीं थे । उनका शरीर सत् चित् और आनन्द का एक दृश्यमान रूप था जो प्रकृति से नियन्त्रित न होकर उसका नियन्त्रक था ।

अव्यक्त प्रकृति ने अपने तीन गुणों – सत, रज और तम – के न्यूनाधिक भेद द्वारा व्यक्ति को रूप, रूचि, विचार आदि सम्बन्धी विभिन्न विशेषताएं दी हैं जिससे वह अपने समुदाय में पहचाना जाता है । परन्तु जो असाधारण व्यक्ति स्वयं ही प्रकृति का नियन्त्रक हो, उसकी विशेषता की क्या कल्पना हो सकती है ? अष्ट सिद्धि, नव निधि के स्वामी हनुमानजी गोस्वामी तुलसीदास को एक वृद्ध गलित कुष्ठ रोगी के रूप में दिखायी दिए, उस रूप में उन्हें पहचान पाना सम्भव नहीं था । राम जी को वे ब्राह्मण के रूप में मिले, पर भगवान् की दृष्टि से यथार्थ छिप नहीं सकता था । वे केवल वानर रूप में ही पहचाने जा सकते थे । वे इच्छानुसार अपनी काया को घटा और बढ़ा भी सकते थे – 'मसक समान रूप कपि धरी', 'तुरत भयउ पर्वताकारा, 'तासु दून कपि रूप दिखावा' आदि । बाबा महाराज भी अपने को अनेक रूपों में प्रकट करते रहे[3] । इन विभिन्न रूपों में इन्हें जाना भी नहीं जा सकता था । केवल प्रासंगिक निष्कर्ष और परिस्थितियों के साक्ष्य से घटना के बाद ही, उनके अस्तित्व का बोध हो पाता था या वे तब जाने जाते थे जब उनमें लोगों को अपने इष्टदेव के दर्शन होते । हनुमानजी की भांति उनकी काया कभी विशाल और कभी क्षीण दिखायी देती । कभी वे इतने सूक्ष्म हो जाते[69] कि बन्द कमरे में भी प्रवेश कर जाते और उससे बाहर भी निकल आते । कभी उनके एक हाथ का भार भी सहन नहीं हो पाता था[70] तो कभी उनकी वृहत् काया पुष्प की भाँति हल्की हो जाती[71] ।

उनकी देह सदा कोमल प्रतीत होती, पर कभी बज्रवत् कठोर भी जान पड़ती । सारांश यह है कि वे अपने शरीर में सब प्रकार के परिवर्तन करने में समर्थ रहे ।

बाबा की रहस्यमय लीलाएँ एक नवीन और व्यावहारिक दृष्टि प्रदान करती हैं । वैज्ञानिक लोग पदार्थों की प्रकृति की खोज करते हैं और उनके समस्त कार्य इन अनुभवों पर आश्रित होते हैं । ये अनुभव बदलते भी रहे हैं । प्रकृति के वास्तविक स्वरूप का बोध उन्हें हो नहीं पाता । सत्य और आत्मा में भेद नहीं है । बिना अपने को मिटाये उसके स्वरूप का बोध हो नहीं सकता । सच्चा अनुभव वैज्ञानिकों को नहीं, सिद्ध महात्माओं को ही हो पाता है, जिनका सीधा सम्बन्ध सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लयकर्त्ता से होता है । जिस अनन्त शक्ति से यह स्थूल जगत भासित है, वह ही इसमें सब प्रकार के परिवर्तन करने में समर्थ है । बाबा महाराज के कार्य इस तथ्य को प्रमाणित करते हैं । यह सोचा भी नहीं जा सकता कि वे क्या नहीं कर सकते थे । प्रकृति पर पूर्ण नियन्त्रण होने के कारण पन्चतत्व सदा उनकी इच्छा का अनुसरण करते रहे[1] । वस्तु की उत्पत्ति, उसमें मौलिक परिवर्तन करने और उसे अपनी इच्छानुसार घटाने–बढ़ाने में वे समर्थ थे । वे स्वेच्छा से मौसम बदल सकते थे, जल और वायु उनके इस कार्य में सहायक होते । अग्नि अपने स्वभाव के विरुद्ध भी कार्य करने लगती । आकाश तत्व निरन्तर उनकी सेवा में रहता । वे स्वयं अन्तर्धान हो जाते और अपने परिकरों को भी जनदृष्टि से ओझल कर देते[72] । स्वप्न में उनके दर्शन प्रत्यक्ष की भाँति सच्चे होते और जागने पर स्पष्ट प्रमाणों से उसकी पुष्टि होती[73] । वे परोक्ष रूप से वायु मार्ग से ही सदा आया–जाया करते[4], लौकिक आवागमनों की उपयोगिता उन्हें अपने को सामान्य दर्शाने के लिये हुआ करती थी । जिन वैज्ञानिक आविष्कारों को चमत्कार समझा जाता है बाबा उन्हें बिना उपकरणों के दर्शाते रहे[74] । दूर–भाष, दूर–दर्शन, आकाशवाणी उनकी अलौकिक थी । सन्तानहीनों को सन्तति सुख[10] प्रदान करना और मृत में प्राणों का संचार कर शोक निवारण करना[11], उनका कार्य था । वे मनुष्य के अव्यक्त विचारों तक को जानते[66] थे, फिर विश्व की किसी भी भाषा में अभिव्यक्त विचारों और भावों को जान लेना उनके लिये कठिन न था ।

बाबा संकटमोचन रहे[14] । लोगों को कष्टों से मुक्त करने का उनका ढंग निराला था। उनके कार्यों में कोई तर्क पूर्ण युक्ति दिखायी नहीं देती । वे किसी की बीमारी को, वह चाहे कहीं पर भी पीड़ित हो, बिना उसे ज़ाहिर किये अपने ऊपर ले लेते[40] और स्वयं झेलकर उस व्यक्ति को रोग से मुक्त कर देते । ऐसी घटनाएं प्रायः ही हुआ करती थीं, जब बाबा को भाँति-भाँति की बीमारियां आ घेरती और वे बिना उपचार के स्वस्थ भी हो जाते थे । भक्तजन अपनी ओर से उनका उपचार करते पर कोई दवा उन पर कार्य नहीं करती थी क्योंकि यह रोग उनका नहीं पराया होता । यह भी जानना सम्भव नहीं हो पाता था कि कहाँ और किस पर यह कृपा हुई । कभी वे डाक्टर, वैद्य, हकीम को निमित्त बना कर रोगी को उनके पास भेज देते और स्वयं अपनी कृपा से उसे सुखी बना देते[12] । यह उनकी दिव्यता थी कि उनकी दृष्टि, वाणी और स्पर्श से लोगों के दैहिक, दैविक और भौतिक सन्ताप दूर होते रहे[12,13,14] । अकाल मृत्यु किसी भी कारण से हो, बाबा उस व्यक्ति को जीवन दान देने में विलक्षण थे[11] । वे ईश्वरीय विधान को भी बनाये[41] रखते और व्यक्ति से उसके प्रारब्ध का भोग कराते और अप्रत्यक्ष रूप से उसका आत्मबल बनाये रखते ।

बाबा अपने लीलाकाल में हनुमान के अवतार माने गये और इसी रूप में पूजे गये । बाबा के पूजन में बहुधा हनुमान चालीसा या सुन्दरकाण्ड का पाठ किया जाता था । हनुमान अमर कहे जाते हैं । बाबा का महाप्रयाण अपने को जनदृष्टि से ओझल करने की अनोखी लीला है[29] । वे अब भी लोगों को प्रत्यक्ष में, उसी रूप में, या अन्य किसी रूप में या स्वप्न में पूर्ववत् दर्शन देते आ रहे हैं और लोगों के योग और क्षेम के वहन में उनके कार्यों की झलक यथावत् दिखायी देती है । भक्तों का पूर्ण विश्वास है कि वे अब भी हैं, केवल उनका प्रत्यक्ष सामीप्य सुलभ नहीं है । तर्क से भी यह धारणा पुष्ट होती है । वे एक ही समय में अनेक स्थानों में कार्य करते दिखायी देते रहे और यह उनके लिये दुष्कर नहीं था कि वे अपने किसी एक रूप को समाप्त दर्शा दें । इस लीला का एक मात्र प्रयोजन यही जान पड़ता है कि बाबा किसी सदुद्देश्य से अपने को कुछ काल के लिये भक्त समुदाय से अलग रखना चाहते हों । संयोगावस्था में भले ही सब कुछ प्रत्यक्ष हो, पर प्रिय की वास्तविक महत्ता का बोध नहीं हो पाता । यह वियोगावस्था की ही विशेषता है जो अपने को और प्रिय को समझने का अवसर प्रदान करती है । भक्त जन जो बाबा की उपस्थिति में उनके दर्शन मात्र से भ्रमित रहे, अब उनके अदृश्य हो जाने पर उनकी महत्ता और अपनी अज्ञानता को समझ पा रहे हैं ।

बाबा की लीलात्मक देह फोटो–विधा के लिये भी एक आश्चर्य बनी रही । जब कभी कोई व्यक्ति कैमरा लेकर उनके सम्मुख उपस्थित हो जाता तो वे अपने बाल्य–स्वभाव से उसकी नादानी पर मुस्कराने लगते और वह समझने लगता कि बाबा ने उसे अच्छा अवसर दिया है । भलीभाँति फोटो लेने पर जब वह देखता कि बाबा के अक्ष ने फिल्म को प्रभावित नहीं किया तो वह हैरान हो जाता । वह यह समझ नहीं पाता था कि बाबा उसके लिये दृश्य थे पर उसकी फिल्म के लिये अदृश्य रहे । सर्वसमर्थ बाबा दृश्य और अदृश्य दोनों एक साथ हो सकते थे । इस सम्बन्ध में लीलामृत प्रसंग संख्या 187 और 188 का अवलोकन करें ।

जब बाबा ध्यानमग्न हो बैठते तो कभी ध्येय की पूर्ण या आँशिक अभिव्यक्ति उनमें हो जाती थी जिसे छाया–चित्रों में भी लिया जा सकता था । लीलामृत प्रसंग संख्या 199, 200 और 201 ध्येय की पूर्ण अभिव्यक्ति के उदाहरण हैं । पृष्ठ 130 पर छाया चित्र में बाबा के वक्षस्थल पर बाम पाद का चिन्ह उस आंशिक अभिव्यक्ति का द्योतक है जब कि भृगु ने विष्णु भगवान् के वक्षस्थल पर पद प्रहार किया था और इसी प्रकार सर्वशक्तिमत्ता के प्रकरण में दिया गया छाया–चित्र, "हाथ का रूपान्तर एक खिलवाड़" दर्शाता है कि बाबा हनुमान के ध्यान में खोये हुए हैं ।

बाबा बहुधा कहते, **"जो हमारी फोटो के सामने आ जाता है, वह हमें दिखायी दे जाता है ।"** इस उक्ति का यही आशय हो सकता है कि सर्वदृष्टा बाबा अपने छाया–चित्रों में तत्वतः विद्यमान रहते हैं । बाबा की कतिपय लीलाओं में उनके छाया–चित्रों के चिन्मय होने के प्रमाण भी मिलते हैं । भक्तजन इस कारण से उनके छाया–चित्र अथवा विग्रह के सम्मुख ही प्रार्थना करते हैं ।

बाबा के छाया–चित्रों की ही भाँति, इच्छा विरुद्ध उनकी वाणी भी 'टेप–रिकार्ड' नहीं की जा सकती थी, इसके लिये उनकी अनुमति आवश्यक होती ।

बाबा की प्रेरणा–शक्ति भी अद्भुत थी[22] और सदा अप्रत्यक्ष रूप से कार्य करती रही । 'सबहिं नचावत राम गोसाईं, बाबा लोगों के हृदय में विराजमान हो जाते और जिससे जो करवाना चाहते वह वहीं करने लगता । अपनी प्रेरणा शक्ति से वे लोगों की रुचि भी बदल देते और इस प्रकार उनके स्वभाव में श्रेयस्कर परिवर्तन दिखायी देने लगते । भारतीय साधु समाज से घृणा करने वाले अंग्रेज कर्नल मकन्ना क्षणिक दर्शन मात्र से आपके परम भक्त हो गये और उनके विचारों में मौलिक परिवर्तन आ गये[77] । एक बार ऐसे प्रसंग में बाबा बोल उठे, **"सब की कुंजी हमारे हाथ में है ।"**

जिस पर महाराज की कृपा बरसती उस पर दुनियाँ मेहरबान हो उठती, ऐसी परिस्थितियां वे अपनी प्रेरणा–शक्ति से पैदा करते थे ।

बाबा महाराज भीतर से जितने शान्त और गम्भीर थे बाह्य रूप में वे उतने ही अस्थिर और चलायमान दिखायी देते । वे कहीं भी अधिक नहीं ठहरते थे । अपने आश्रमों में उनका आना–जाना बराबर लगा ही रहता था । जहाँ कहीं भी वे रहते वहाँ विभिन्न स्थानों पर जा बैठते । साधारणतः वे आसन बद्ध नहीं रह पाते थे । अपने दरबारों में भी वे कभी–कभी अपनी हथेली के सहारे लेटे हुए वार्ता करते रहते थे और अपने पैरों को क्रम से आगे–पीछे करते रहते । ऐसा जान पड़ता है कि बाबा की इस अस्थिरता का सम्बन्ध सर्वत्र परोक्ष में होने वाले उनके अनेकानेक लोक कल्याण के कार्यों से रहता था । फलतः उनकी भावपूर्ण मुद्राएं निरन्तर बदलती रहतीं । कभी ऐसे भी अवसर आते जब वे शान्त और स्थिर हो बैठते, उनकी आँखे आधी खुली होतीं और वे किसी गम्भीर चिन्तन में डूबे दिखायी देते या भाव विभोर हो उनकी आँखों से अश्रुपात होता रहता ।

बाबा त्रिकालदर्शी रहे । उनकी वाणी की दिव्यता ऐसी थी कि उनकी वार्ता सुनने में साधारण लगती पर उसकी असाधारणता का बोध केवल उसी को होता जिससे वह कही गयी । अन्य उपस्थित व्यक्ति उसके महत्व का अनुमान नहीं लगा सकते थे । कभी जन समुदाय के बीच बाबा कुछ विशेष प्रयोजन से किसी से कुछ कहते तो उनके शब्द केवल वही व्यक्ति सुन पाता और पास में बैठे अन्य व्यक्ति केवल इतना ही जान पाते कि अमुक से कुछ कहा जा रहा है, पर क्या कहा गया यह नहीं । कभी किसी निर्दोष व्यक्ति को निमित्त बना कर वे जन समुदाय के बीच उसे दोषी ठहरा देते और वह उस दोष से अपरिचित होने के कारण चकित रह जाता, पर वहीं पर उपस्थित दोषी व्यक्ति यह अनुभव करने लगता कि बाबा की दृष्टि से यथार्थ छिपा नहीं है और उसे अपने कृत्य पर ग्लानि होने लगती । यदि कोई व्यक्ति उनके आश्रित हो कर उनसे कुछ पूछता तो बाबा उसे आज्ञा के रूप में राय देते । इसके विपरीत जो व्यक्ति करना तो अपने मन की चाहता हो और केवल उनकी कृपा का लाभ उठाने के लिये उनसे अपनी समस्या का हल पूछता हो, बाबा सुझाव के रूप में उचित परामर्श देते, भले ही वह उसके मनोनुकूल न हो । यदि वह स्वार्थवश वही करता जो स्वयं चाहता हो तो परिणाम तब तक हितकर न हो पाता जब तक वह उनके बताये विधान के अनुसार कार्य न करता । ऐसा भी देखा गया कि बहुत भटकने के बाद अन्त में किसी को स्वतः वही करना पड़ा जो उन्होंने आरम्भ में सुझाया था । कभी बातें करते–करते वे भविष्य की ऐसी

बात कह देते, वह भी इतने साधारण ढंग से, जैसे उन्होंने औपचारिकता का निर्वाह किया हो, पर कुछ समय बाद उनकी वाणी अक्षरशः सत्य घटित होती दिखायी देती[75] ।

बाबा स्वभावतः बड़े दयालु थे । वे प्रत्येक व्यक्ति पर अप्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से कृपा करते ही रहते थे । प्रचार और प्रदर्शन वे नहीं चाहते थे । इन कारणों से जिन लोगों को उनके सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ उन्हें उनकी विलक्षण कथनी और करनी दुरूह हो सकती है । यह इसलिए कि उनके आश्चर्यजनक कार्यों में कोई लौकिक कारण लक्षित नहीं होता, इससे ये बुद्धिग्राह्य न होकर कल्पनातीत प्रतीत होते हैं । पर क्या लोक–गम्य कार्यों का कोई अलोक–गम्य कारण नहीं हो सकता ? इसमें सन्देह नहीं कि ये सूक्ष्मतम अदृश्य कारण हैं जिनकी जानकारी संसार को नहीं है और इनका उपयोग बाबा सरीखे सिद्ध–सन्त ही कर सकते हैं, जिनमें अतिमानवीय गुण विद्यमान रहते हैं ।

पूर्णपुरुष बाबा ने राजा–रंक सभी को कुछ न कुछ दिया और किसी से कुछ लिया नहीं । वे सदा अमानी रहे और छिपे तौर से एक सामान्य व्यक्ति की भाँति कार्य करते रहे। उनके कार्यों को जादूगरी समझ कर उन्हें चमत्कारी कहना भूल है । उनके समस्त कार्य वास्तविक थे और मानव कल्याण की भावना उसमें निहित थी । अपनी शक्ति के प्रदर्शन से लोगों को अपनी ओर आकृष्ट करने की प्रवृत्ति का उनमें नितान्त अभाव रहा । उनके कल्पनातीत कार्यों में उनकी अलौकिकता के ही दर्शन होते हैं । इन्हें चमत्कारी कहना ऐसी महान् और अद्भुत विभूति के महत्व को अज्ञानतावश या जानबूझ कर गिराना है ।

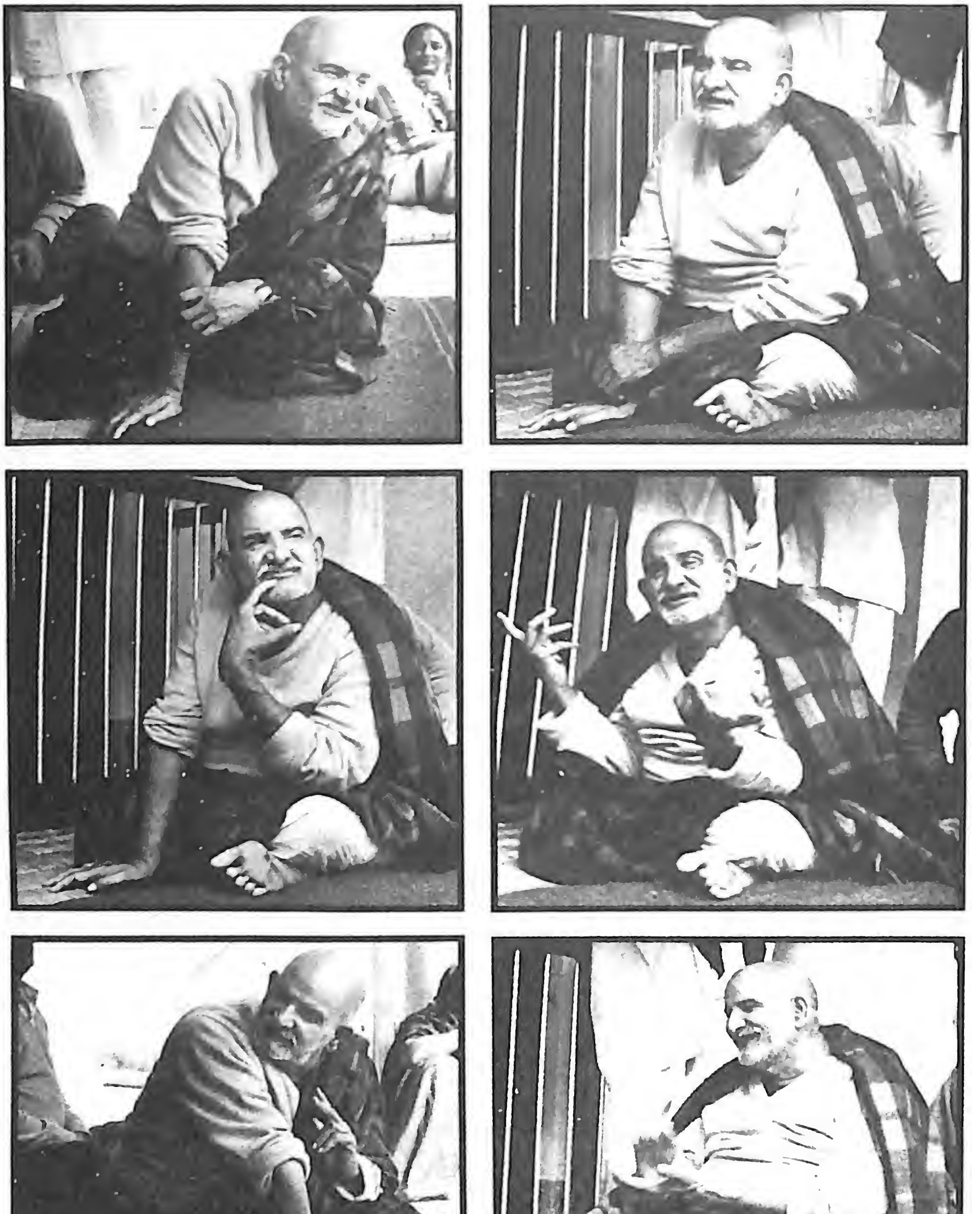

अपने दरबार में बाबा की विभिन्न मुद्राएँ

बाबा का दरबार

बाबा की मान्यता अनेक राष्ट्रों में रही । सभी धर्म और वर्ग के लोग उन्हें दिल से चाहते थे । वे महाराज शब्द से सम्बोधित किये गये । इसमें सन्देह नहीं कि वे आध्यात्मिक जगत के सम्राट रहे । आदि से ही सम्राटों के दरबार लगने की प्रथा चली आ रही है, फिर विश्व सम्राट बाबा का दरबार न हो, यह कैसे सम्भव हो सकता ? बाबा और दरबार ! बात कुछ अजीबो–गरीब सी लगती है, पर है सही । बाबा का दरबार उनके अनुरूप ही रहा । लौकिक सम्राटों का दरबार इसकी समता नहीं कर सकता था ।

इस अनोखे दरबार में न किसी का कोई ओहदा ही होता और न किसी के लिये कोई स्थान ही निर्धारित होता । दरबार के कोई कायदे–कानून भी न थे और न इसके जुटने का स्थान, समय या अवधि ही निश्चित हुआ करती । इस दरबार में आकर कोई भी कहीं स्थान ग्रहण कर सकता । यह दरबार कभी आश्रम में ही लग जाता, कभी किसी सड़क के किनारे, जंगल में किसी पेड़ के तले या किसी गृहस्थ के घर पर ही । लेकिन इसमें निरन्तरता रहती । इस कारण व्यक्ति स्वेच्छा और अपनी सुविधा से आता और दरबार का आनन्द लेता । दरबार सब के लिये सदा खुला रहता । इस प्रकार सभी धर्मावलम्बियों का इसमें समान अधिकार था । प्रतिबन्ध नाम की इसमें कोई चीज ही न थी । यह भी आवश्यक न था कि आगन्तुक महाराज को नमन करे ।

दरबार की यह महिमा रही कि वह बनता और उखड़ता रहता, पर फिर भी उसकी निरन्तरता बनी रहती । कभी बाबा एक–एक कर सभी उपस्थित व्यक्तियों को विदा कर एक अच्छी जमी सभा का विसर्जन कर देते या स्वयं उठ कर अन्यत्र चले जाते । इस प्रकार उस दरबार का अन्त

हो जाता, पर तुरन्त ही बाबा का दूसरा दरबार चलने लगता । बात असल में यह थी कि बाबा को लोगों से प्यार था और लोग भी उनके सान्निध्य को नहीं छोड़ पाते थे । इस प्रकार दरबार में आने–जाने का क्रम बना रहता ।

वार्ताओं के विषय भी इस दरबार में पूर्व निर्धारित नहीं हुआ करते । ये सदा स्वतः पैदा होते रहते । बाबा सभी नवागन्तुकों से केवल औपचारिकता की पूर्ति हेतु तीन प्रश्न करते, **"क्या नाम ?" "कहाँ से आया है ?" और "क्या करता है ?"** इस प्रकार प्रश्न करने पर दरबार में कोई न कोई बात निकल आती । एक बार एक नवागन्तुक से आप तीसरे प्रश्न को इस प्रकार कह बैठे, **"तू वकील क्या करता है ?"** इस पर सभी लोग खिलखिला उठे कि महाराज अपनी सर्वज्ञता को छिपा नहीं पाये । महाराज भी मुस्कराने लगे । बाबा के दरबार में वार्ता से यह तात्पर्य नहीं था कि वह किसी महत्वपूर्ण अथवा धार्मिक विषय से सम्बन्धित हो । साधारणतः बाबा ने प्रवचन और उपदेश में रुचि नहीं दिखायी, भले ही प्रसंगवश कोई आध्यात्मिक चर्चा उन्होंने चलाई हो । वार्ता के विषय अधिकतर लौकिक और सामान्य हुआ करते पर उनका आशय गूढ़ अवश्य होता । बाबा गम्भीर बातें बहुत कम किया करते थे, क्योंकि उनकी सामान्य बातों में निहित प्रयोजन को समझ पाना ही कठिन होता था । व्यक्तियों द्वारा पूछे गये प्रश्नों में बाबा बहुत रुचि रखते और उनका उत्तर वे तुरन्त दिया करते । वे बड़ी तबीयत से लोगों की समस्याओं को सुनते और तुरन्त उनका समाधान भी कर देते । इस प्रकार उनके दरबार में सदा सब लोगों की सभी प्रकार की समस्याओं का समाधान होता रहता । किसी को नौकरी चाहिये, किसी को पदोन्नति, तो किसी को बदली । कोई अपनी लड़की का विवाह न कर पाने से चिन्तित है तो कोई विवाह तय करने में असमर्थ । कोई अपने पारिवारिक क्लेश से दुःखी है तो कोई अपने स्वास्थ्य का रोना रो रहा है । कोई किरायेदार से दुःखी है तो कोई मालिक मकान से । कोई व्यापारी अपने घाटे से परेशान है तो कोई सट्टे में लाभ के लिये परामर्श चाहता है । कोई सम्पत्ति के अभाव से दुःखी है तो कोई सन्तति के लिये चिन्तित । कोई अपनी परीक्षा के सम्भावित परिणामों से उद्विग्न है तो कोई राजनैतिक दल का नेता चुनाव जीतने की अभिलाषा लिये उपस्थित है । कोई सम्पत्ति के विभाजन का समाधान चाहता है तो कोई भगवान् के

दर्शन का विधान आदि आदि । सारांश यह कि लौकिक एवं आध्यात्मिक सभी प्रकार की समस्याएँ इस दरबार में सुनने को मिलतीं और बाबा के मुखारविन्द से उनका व्यावहारिक, उचित एवं सफल समाधान भी । इन सभी वार्ताओं में हास्य के अनेक पुट आते रहते जिससे दरबार ध्वनित होता रहता । बाबा मुस्कराते और दर्शकगण हँसने लगते ।

यद्यपि दरबार में व्यक्ति अपनी इच्छा से आता, पर यहाँ से उठकर जाने की उसकी इच्छा न करती । बाबा के दर्शन की विशेषता अभिव्यक्त कर पाना वाणी की सामर्थ्य के बाहर है । उनके पास घन्टों बिताने पर भी लगता ऐसा था जैसे चन्द मिनट बीते हों[83] । दरबार में उपस्थित सभी व्यक्तियों के आवश्यक कार्यों को बाबा जानते होते और उचित समय पर **"फिर आना"** कह कर वे उन्हें विदा कर देते । बिना आज्ञा प्राप्त किए कोई भी व्यक्ति उनके पास से उठना नहीं चाहता था । इस प्रकार आज्ञा पाकर जब कोई व्यक्ति लौटता तो उसे विशेष सुविधाएँ प्राप्त होतीं[64] और कभी-कभी तत्काल होने वाला कार्य भी सिद्ध हो जाता । बाबा लोगों के इस स्वार्थ को समझते और उनके आन्तरिक द्वन्द्वों में भी रस लेते रहते । कभी कोई व्यक्ति आवश्यक कार्य छोड़ कर दरबार में आया होता और मन ही मन यही कामना करने लगता कि बाबा उससे जाने को कह देते[82], पर वे उससे कुछ न कह कर दूसरे व्यक्ति से **"तू जा"** कह देते, जो वहीं बैठे रहने की इच्छा कर रहा हो । परिणाम यह होता कि जिसको भी जब जाने की अनुमति होती उसके लिये वही समय उपयुक्त होता ।

इन दरबारों में बाबा की अनेक लीलाएँ देखने में आतीं । कभी कोई व्यक्ति बाबा की दृष्टि से समाधिस्थ हो जाता और वहाँ पर उपस्थित नव आगन्तुक डाक्टर उसकी जाँच-पड़ताल कर हैरान हो जाता । हृदय गति शून्य व्यक्ति की इस स्थिति को वह समझ नहीं पाता । ऐसी अचल समाधि उनकी कृपा से बहुतों को सुलभ हुई ।

शाही दरबारों का एक अंग मदिरा पान और नृत्य भी हुआ करता है। बाबा का दरबार सदा इन से बढ़ कर रहा । बाबा हर समय प्रेम रस में पगे रहते थे । उनके भक्तगण उनके समीप में उन्मत्त बैठे रहते । कभी कोई व्यक्ति उनके आनन्द स्वरूप के दर्शन कर भाव विभोर हो भजन गाने लगता । कभी कोई महिला उनके चरणों का स्पर्श पाकर दरबार में सिसक-सिसक कर रोने लगती । कभी बाबा का स्वयं भावातिरेक से

अश्रुपात होने लगता और दर्शकगण स्तब्ध हो बैठते । कभी कोई बाबा का पूजन कर आरती उतारने लगता तो कभी कुछ लोग अपनी सुधबुध खोकर सामूहिक रूप से कीर्तन और नृत्य करने लगते । कैसी मस्ती रहती थी, उस वातावरण में ! कैसा नशा था वह !

नित्य आनन्द से परिपूर्ण बाबा का यह दरबार अनुपम था ।

भाग – दो

लीलामृत

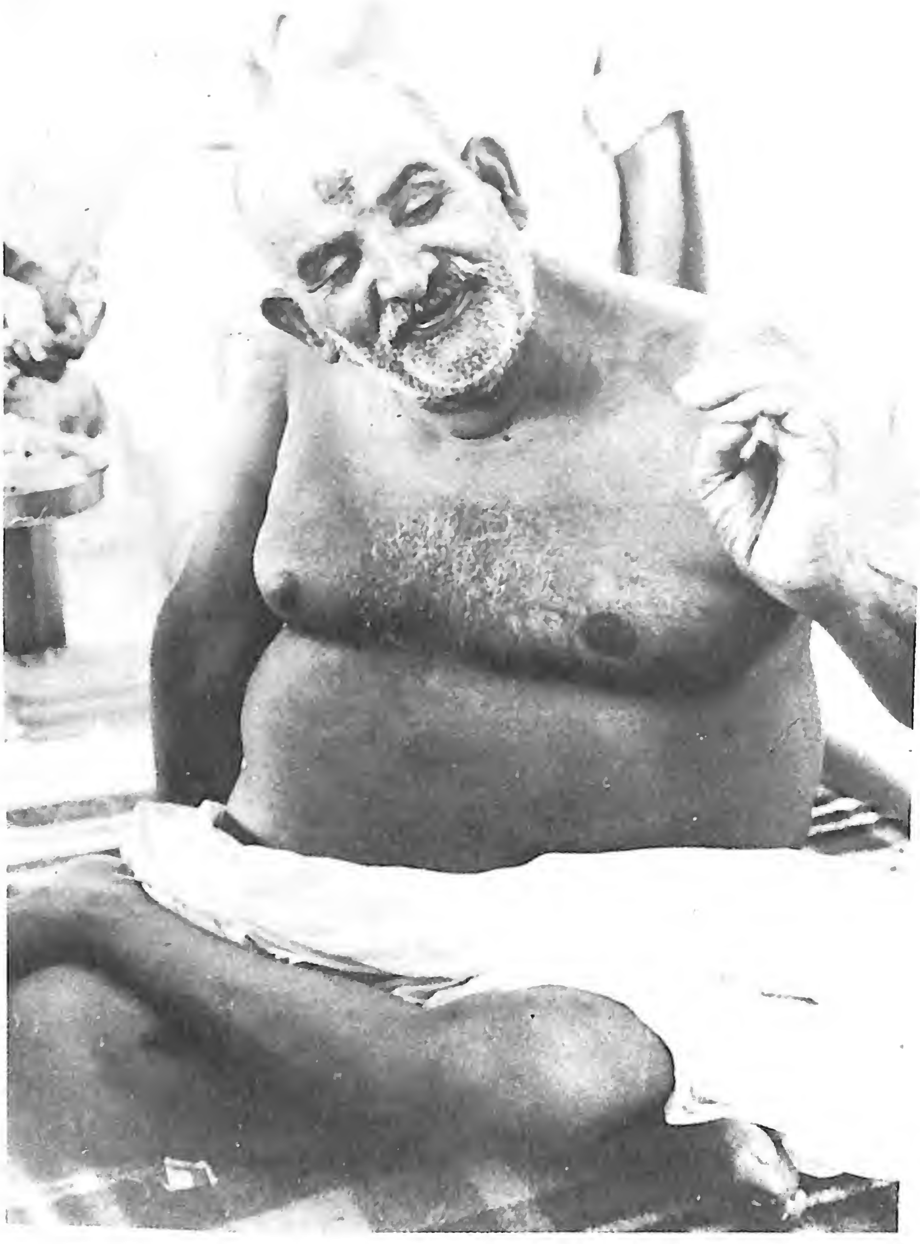

किसी विशिष्ट चिन्तन मुद्रा में

सर्वज्ञता

महाराज में बाल सुलभ भोलापन था, उनके दर्शन से यह प्रतीत नहीं होता था कि वे सब कुछ जानते हैं । उनकी लीलाएँ ही इस बात का बोध कराती हैं कि वे सर्वज्ञ थे । वे सब से सुपरिचित जान पड़ते और उनकी आत्मीयता देखते ही बनती थी । सभी व्यक्तियों के मन और मस्तिष्क में उनकी पूर्ण दृष्टि रहती और वे उनके विचारों और भावों को जानते थे । उनकी वाणी सार्थक होती रही । जो भी वे कहते वह सत्य घटित होते देखा गया । वे अव्यक्त इच्छाओं को पूरा करने में और लोगों को चिन्ताओं से मुक्त करने में सफल रहे । उनके आदेश सप्रयोजन एवं सरल होते हुए भी गूढ़ थे, जिनकी यथार्थता घटना के बाद ही जानी जाती थी । उन्हें सदा सर्वत्र सभी स्थितियों एवं परिस्थितियों और व्यक्तियों के भूत, भविष्य और वर्तमान का पूर्ण बोध रहता और उनका समस्त व्यवहार तदनुसार ही परिचालित होता । किसी भी रूप में अपनी परीक्षा उन्हें रुचिकर न थी. फिर भी ऐसी अनाधिकार चेष्टा करने वाले व्यक्ति के मतिभ्रम को वे अपनी लीलाओं से अवश्य दूर करते रहे । उनकी सर्वज्ञता से सम्बन्धित लोगों से प्राप्त कुछ अनुभवों की तदनुरूप प्रस्तुति यहाँ की जा रही है ।

(1) श्री सिद्धि माँ

एक चाँदनी रात में, पाषाण देवी, नैनीताल झील के निकट एक चट्टान पर महाराज अपने भक्त श्री पूरन चन्द्र जोशी के साथ बैठे थे । सामने झील के दूसरी ओर इन्डिया होटल (श्री माँ के निवास स्थान) की ओर इंगित करते हुए, न मालूम किस मौज में वे कह बैठे, **"वह कात्यायनी देवी का घर है, जिसके लिये हनुमान को यहां आना पड़ा ।"** इस प्रकार एक लहर में वे श्री माँ का और अपना परिचय दे गये । महाराज का कार्य वस्तुतः धर्म का प्रचार और प्रसार करना था । उनकी इस बृहत् लीला में योग देने की क्षमता केवल माँ में ही थी जिनको उन्हें अपने कार्य से संयोजित करना था ।

श्री माँ को बाबा के दर्शन सर्वप्रथम नैनीताल में, श्री राम साहजी के घर पर हुए । वहाँ महाराज का दरबार लगा था । अपने विवाह के कुछ ही महीनों बाद आप पड़ौस की महिलाओं के साथ वहाँ गयी थीं । आपको देखते ही महाराज ने दरबार में आपकी दिनचर्या का बखान करते हुए बताया कि आप किस प्रकार गृहस्थ के समस्त कार्यों को सुचारु रूप से करते हुए निरन्तर भगवत् भजन किया करती हैं । उन्होंने उसी समय कहा कि **"वृन्दावन आश्रम में माँ के लिये कुटिया बनेगी ।"** गृहस्थ में पदार्पण किये श्री माँ को थोड़ा ही समय हुआ था और उस समय उनके लिये आश्रम और कुटिया का कोई महत्व भी न था । वृन्दावन आश्रम तब स्वप्न में भी न था । कालान्तर में जब उसका निर्माण हुआ तो सर्वप्रथम उसमें माँ की ही कुटिया बनी जो बाद में उनके लिये उपयोगी सिद्ध हुई ।

महाप्रयाण के पूर्व बाबा ने अपनी राम नाम की डायरी माँ को देते हुए कहा कि इसे आगे तू भरेगी । इस प्रकार सांकेतिक रूप में उन्होंने अपना कार्य भार माँ को सौंप दिया । श्री माँ भी अपने सब प्रकार से सम्पन्न एवं वैभवपूर्ण गृहस्थ की माया–ममता का त्याग कर, हर प्रकार के कष्टों की परवाह न करते हुए जिस प्रेम और निष्ठा से महाराज के सिद्धान्त और नीति के अनुसार अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर रही हैं, वह राम की अनुपस्थिति में भरत के आचरण की याद दिलाता है । माँ की रहनी ऐसी स्वाभाविक है जैसे उनका जीवन इसी हेतु हुआ हो । महाराज यह सब जानते थे ।

(2) सब से सुपरिचित

एकबार महाराज चर्च–लेन इलाहाबाद में विराजमान थे और अकेला लेखक ही उनके पास बैठा था । इतने में एक दम्पति ने उस कमरे में प्रवेश किया । आदमी कुछ मोटा था और उसने चुस्त पैंट पहन रखी थी । एक नज़र बाबा को देखने के बाद वह कुर्सी की खोज में इधर–उधर देखने लगा । उसे कमरे में कोई कुर्सी नहीं दिखायी दी । वह कठिनाई से जमीन पर ही बैठ गया । बाबा को नमन करना तो वह भूल ही गया । उसकी पत्नी बड़ी श्रद्धा से बाबा के चरणों का स्पर्श कर रही थी । बाबा उस व्यक्ति से पूछने लगे, "क्या नाम ?" वह कुछ क्षण सोचता रहा फिर बोला, "बाबा ! आप मुझे नाम से नहीं जान पायेंगे – – ।" वह अपनी बात पूरी भी न कर पाया था, बाबा एकाएक कहने लगे, **"पार्क रोड (इलाहाबाद) में तेरी बुआ की तबियत कैसी है ?"** बाबा की बात सुनकर वह अवाक् हो उनकी ओर देखता ही रह गया ।

(3) "क्या नाम ?"

पिथौरागढ़ निवासी एक अट्ठाइस वर्ष का युवा ट्रक–चालक जब प्रथम बार सन् 1966 में कैंची में बाबा के दरबार में आकर उनके चरणों में नत–मस्तक हुआ तो बाबा बोले, **"क्या नाम ?"** उसने तुरन्त उत्तर दिया "ललित मोहन ।" बाबा कहने लगे, **"झूठ । लक्ष्मण सिंह ।"** बाबा के मुँह से अपना असली नाम सुन कर वह चकित हो गया । फिर सफाई देते हुए बोला, "बाबा ! आप सही कह रहे हैं । मेरा नाम लक्ष्मण सिंह ही है और मेरे घर के लोग इसी नाम से मुझे पुकारते भी हैं, पर बचपन में जब मेरा नाम प्रथम बार स्कूल में लिखाया गया तो घरवालों की इच्छा हुई कि कोई अच्छा नाम लिखाया जाय और उन्हें "ललित मोहन" ही सूझा ।"

इस घटना से वह इतना अधिक प्रभावित हुआ कि हमेशा के लिए बाबा का सेवक बन गया और बाद में उनके जीप का चालक भी रहा ।

(4) "झूठ"

100 **शाहजादी** मंडी, आगरा छावनी के श्री कर्णवीर सिंह को बाबा की अनेक आश्चर्योत्पादक लीलाओं को देखने का सौभाग्य हुआ है । आप कहते हैं कि पहली बार आपका ध्यान इस ओर तब गया जब कि एक

दिन कालेज से आप घर आये ही थे, बाबा आपसे बोले, "**इतनी देर लगा दी, हम कब से तेरा इन्तजार कर रहे हैं ।**" आपने कहा "अब छुट्टी हुई है तो आया हूं ।" बाबा तुरन्त बोले, "**झूठ, बाबा को ठगता है । तेरी छुट्टी तो एक बजे हो गयी थी और अब चार बजे हैं । यह क्यों नहीं कहता कि दोस्तों के साथ घूम रहा था ।**" बाबा ने आपके सब दोस्तों के नाम भी गिना दिये जिनके साथ आप थे । बाबा की इन सच्ची बातों को सुन कर आप हतप्रभ रह गये । बाबा आपको देख कर जोर से हँसे और कहने लगे, "**तू अपने बाप को खूब बेवकूफ बनाता है । वह तो सीधा आदमी है, पर तू बाबा को बेवकूफ नहीं बना सकता ।**"

(5) "हम बाबा नीब करौरी हैं"

श्री महावीर सिंह, जो सन् 1943–44 में आगरा छावनी में जी.आर.पी. के अध्यक्ष थे, साधु सन्तों की सेवा तथा सत्संग के बड़े प्रेमी थे । वे उन दिनों कुछ समय से जिगर के दर्द से पीड़ित थे । एक दिन आप आगरा कैन्ट स्टेशन पर वर्दी पहने घूम रहे थे, एकाएक लगभग पैंतालीस वर्ष के एक स्थूल शरीर वाले व्यक्ति ने, जो आधी धोती पहने और आधी ओढ़े था, बड़ी आत्मीयता से कहा, "**महावीर सिंह ! अब कैसी तबीयत है ?**" आपने उत्तर दिया, "अब काफी फर्क है ।" उसने फिर पूछा, "**जिगर का दर्द कैसा है ?**" आप बोले, "अभी थोड़ा–थोड़ा है ।" "**वह भी ठीक हो जायेगा,**" उस पुरूष ने कहा । दोनों साथ–साथ चलते जा रहे थे इतने में महावीर सिंह बोले, "मैंने आपको पहचाना नहीं ।" उस व्यक्ति ने बड़े प्रेम से आपके कन्धे में हाथ रखते हुए कहा, "**हम बाबा नीब करौरी हैं ।**" आप ने बाबा का नाम सुन रखा था और उनके कुछ चमत्कार भी सुने थे, पर इस समय आप उनकी आत्मीयता से हतप्रभ हो गये । उनका इतना निकट सम्पर्क पाकर वे कुछ समझ न सके कि बाबा से क्या कहें । बाबा स्वयं बोले, "**चलो तुम्हारे घर चलते हैं ।**" दोनों घर आये और इसके बाद से उनकी प्रत्यक्ष कृपा आप पर बनी रही । लगभग छः वर्ष तक हर महीने बाबा इन्हें दर्शन देते रहे । इन्होंने बाबा को बड़ा मस्त जीव पाया । आप कहते हैं कि आपके बंगले के बाहरी तख्त में ही बाबा का आसन लगता था । वे एक कम्बल बिछाते और तकिया रखवाते और कभी आधे लेटे और कभी आगे के हाथों के सहारे बैठे, हँस–हँस कर घंटों इधर–उधर की बातें करते रहते थे । कभी दिन में सोते नहीं थे । कभी

प्रवचन या भाषण जैसी बात भी नहीं करते थे । नहाने के बाद उन्हें कभी शरीर पोंछते नहीं देखा । धोती बदलते ही उनका शरीर सूख जाता था ।

(6) "परीक्षा ले रहा है ?"

श्री राधेश्याम, सर्राफ, फिरोजाबाद को महाराज का बहुत प्यार मिला । बाबा कभी-कभी उनके घर में ठहरते और भोजन भी करते थे । एक दिन उनके परिवार के मध्य वे विराजमान थे । उस बन्द कमरे में बाहर से किसीने दस्तक दी । उस समय राधेश्याम जी बाबा की आनन्दपूर्ण वार्ता में किसी प्रकार का विक्षेप नहीं चाहते थे । अतः दरवाजा खोलने के पूर्व, यह जानते हुए भी कि बाबा सब कुछ जानते हैं, वे उनसे पूछ बैठे, "बाबा ! यह व्यक्ति कौन होगा ?" वे मुस्कराते हुए कहने लगे, **"परीक्षा ले रहा है ?"** और बोले, **"बादशाह वकील का भाई है । सोलन में नौकरी करता है । इसकी स्त्री को टी.बी. है । यह रात को उसके सिरहाने बैठ कर रोता है ।"** दरवाजा खोलने पर जो व्यक्ति भीतर आया उसने अपना वही परिचय बाबा को दिया और अपनी पत्नी के उस कष्ट के लिये उनसे कृपा की याचना करने लगा ।

(7) जेब में फोटो

श्रीमती दमयन्ती तिवारी, महानगर लखनऊ, सन् 1964 की एक घटना का वर्णन करती हैं । आप कहती हैं कि आपके पति की महाराज पर अत्यधिक श्रद्धा रही । अपने 'पर्स' में वे सदा महाराज की फोटो रखा करते थे । आप लोग दर्शनार्थ कैंची गये हुए थे । आपने बाबा के चरणों में प्रणाम किया और बच्चों से भी करवाया । अपने पति से भी आपने इशारे से बाबा के चरण छूने को कहा । महाराज ने आपको देख लिया और बोले, **"उसने हमें सबसे पहले प्रणाम किया । वह दिखावा नहीं चाहता, कर्मठ है ।"** थोड़ी देर बाद वे आपकी ओर देखते हुए बोले, **"क्या यह जेब में मेरी फोटो रखता है ?"** फिर बड़े प्यार से मुस्करा दिये । वह मुस्कराहट ऐसी थी कि जिस भक्त ने उसे देखा कृतार्थ हुआ ।

(8) घर में शान्ति

श्री राम नारायण सिन्हा तब मथुरा में सब–इन्सपेक्टर पुलिस थे । सिन्हा जी के माता–पिता नहीं थे, वे अपने दो सौतेले भाइयों को पुत्रवत् रखते, पर वे दोनों मन ही मन उनसे द्वेष करते थे । घर में बिजली के होते हुए भी एक दिन वे मिट्टी–तेल के एक लैम्प को लेकर अपनी भाभी से लड़ पड़े और कहने लगे कि यह हमारे पिता की सम्पत्ति है और इसमें हमारा पूरा अधिकार है । यह लैम्प सिन्हा जी के पिता को बहुत प्रिय था और आप उनकी स्मृति में इसे बहुत सहेज कर रखते थे । इसी समय आप 'ड्यूटी' से घर आये ही थे, अपने प्रिय भाइयों के ये कटु शब्द उनके कान में पड़े और वे बहुत दुःखी हुए । उन्होंने वह लैम्प उन्हीं को दे दिया । इसके तुरन्त बाद ही बाबा का उनके घर में प्रवेश हुआ । आप बाबा को जानते भी नहीं थे और न इसके पूर्व आपने कभी उन्हें देखा था । आप उनके दर्शन के प्रताप से ही उनके आगे झुक गये । बाबा ने दोनों बालकों को अपने पास बुलाया और बहुत फटकारा । उनसे अपने बड़े भाई के चरणों में सिर रखवाया और उनके मुँह से कहलवाया कि वह बड़ा भाई नहीं पिता है । इस प्रकार घर में शान्ति स्थापित कर बाबा बाहर चले गये, जहाँ भक्त समुदाय उनकी प्रतीक्षा में खड़ा था । सिन्हा जी भी उनके साथ ही चले आये और भक्तों से ही उन्हें बाबा का परिचय प्राप्त हुआ । तब से आप उनके परम भक्त हो गये ।

(9) "काम बन जायेगा"

बाराबंकी सुगर मिल की व्यवस्था गिरने के कारण उ. प्र. की तत्कालीन चन्द्रभान गुप्ता जी की सरकार उसका अधिग्रहण करना चाहती थी । कानपुर के श्री देवकामता दीक्षित उसके संचालकों में थे । 'केन–ग्रोअर्स' की इच्छा के कारण सरकार को अपनी इच्छा का त्याग कर दीक्षितजी को ही उस मिल का 'रिसीवर' बनाना पड़ा । दीक्षितजी को इस कार्य के लिये बड़ी धन–राशि जुटानी थी । सैन्ट्रल बैंक बाराबंकी ने उनकी आवश्यकता पूर्ति करने में अपनी असमर्थता व्यक्त की और उन्हें चेयरमैन की अनुमति प्राप्त करने का सुझाव दिया । अतः उन्होंने सैन्ट्रल बैंक के चेयरमैन से बम्बई जाकर मिलने का निश्चय किया । समय बहुत कम था, दो दिन बाद चेयरमैन साहब विदेश जा रहे थे । आपने कानपुर से दिल्ली जा कर विमान

द्वारा बम्बई पहुँचने का निर्णय किया और इस कार्य की सफलता हेतु रास्ते में वृन्दावन आश्रम जाकर बाबा का आशीर्वाद लेना चाहा । जब आप वृन्दावन पहुँचे तो चौकीदार से आपको ज्ञात हुआ कि आपके वहाँ पहुँचने के दो घन्टे पूर्व ही बाबा आश्रम छोड़ कर अन्यत्र चले गये थे । बाबा के दर्शन न होने से आपके दिल को धक्का पहुँचा । आप सोचने लगे कि अब काम नहीं बनेगा । आप को हताश देखकर चौकीदार बोला, "आप कानपुर से आ रहे हैं ?" इस प्रश्न से आपको आश्चर्य हुआ और आपके हामी भरने पर वह बोला, "बाबा जाते समय कह गये थे कि **हमारा एक भक्त कानपुर से आ रहा है, उससे कह देना कि उसका काम बन जायेगा । वह वृन्दावन के देवता बिहारी जी का प्रसाद लेता जाये ।**" बिहारी जी का मन्दिर दिन में बन्द रहता है, आपको तुरन्त दिल्ली जाना था । उस समय प्रसाद मिलने की कोई सम्भावना भी न थी । आपने बिहारी जी के द्वार पर माथा टेककर बाजार से ही प्रसाद खरीदने का निश्चय किया । जब आपने मन्दिर की देहरी पर माथा टेका तो एक व्यक्ति उस द्वार को थोड़ा खोलकर बाहर आने लगा । आपने तुरन्त उसे कुछ रुपये बिहारी जी की भेंट हेतु दिये और प्रसाद की याचना की । वह व्यक्ति भीतर गया और एक बड़ी टोकरी में प्रसाद लाकर आपको दे गया । आप प्रसन्नचित्त बम्बई चले गये । जब आप चेयरमैन से मिलने उसके घर मलाबार हिल्स पहुँचे तो वे वहाँ नहीं मिले । उनकी विदेश यात्रा के प्रस्थान का समय मालूम न होने से आपको बहुत चिन्ता हो गयी । आपने अज्ञात प्रेरणा से वह प्रसाद की टोकरी यह कह कर कि वह बिहारी जी का प्रसाद है, भीतर भिजवादी । प्रसाद पाते ही चेयरमैन साहब की पत्नी स्वयं इनसे मिलने बाहर आ गयीं । यह एक गुजराती परिवार था । कुछ दिनों पूर्व से ही यह महिला बिहारी जी के दर्शन करने की योजना बना रही थी, पर चेयरमैन साहब की विदेश यात्रा के कारण लाचार हो रही थी । अपने घर में ही बिहारीजी का प्रसाद पाकर वह उनकी इस कृपा से द्रवीभूत हो गयी । उसने आप से दूसरे दिन प्रातःकाल आने का आग्रह किया । दूसरे दिन जब आप चेयरमैन साहब से मिले तो उन्होंने तुरन्त आदेश जारी कर दिये कि आपको यथेष्ट धन–राशि सुलभ की जाय । आपने बीस लाख रूपये का ऋण लेकर कार्य आरम्भ किया और मिल की विषम परिस्थिति को अपने अनुकूल बना लिया ।

(10) "सब खेल–तमाशा है"

श्री किशनलाल साह रामगढ़, नैनीताल में अध्यापक हैं । वे बहुधा बाबा के दर्शन करने कैंची आश्रम आया करते थे । इनमें बाबा की भक्ति ऐसी रही कि आप उन्हें मनुष्य नहीं भगवान् मानते थे । आपकी अभिरुचि सदा आध्यात्मिकता की ओर ही रही । आप अपने चारों ओर के वातावरण में ऊंच–नीच के भेद–भाव से और कभी आध्यात्मिक जगत में अपनी विशेष प्रगति न देख कर, नैराश्य की भावना में गोते लगाने लगते और यह सोचते कि अब की बार बाबा से इसी विषय में वार्ता करुंगा । साधक की ऐसी स्थिति होती रहती है कि कभी वह अपने को भगवान् के करीब और कभी दूर पाता है । जब आप कैंची आये तो आपने नदी के ऊपर लकड़ी के पुल के एक सिरे पर बाबा को बैठे देखा । आपने वहाँ जाकर उन्हें प्रणाम किया ही था कि वे आपके कुछ पूछने के पूर्व ही कहने लगे, **"दूसरों को माया में फंसा देखता है । माया में नारद, जड़भरत आदि सभी फंसे, औरों की तो बात ही क्या !"** बाबा की एकाएक इस वार्ता से आप निरुत्तर हो गये और कुछ भी न पूछ सके ।

फिर एक बार आपके मन में विचार आया कि बाबा क्या नहीं कर सकते ? सब की चाबियां उनके पास हैं, पर वे अपनाते और छोड़ते रहते हैं । जिसने आत्मसमर्पण भी कर दिया, उसके प्रति भी उदासीन दिखायी देते हैं । अब की बार उनसे अन्तिम वार्ता करके आउंगा । जब आप बाबा के पास पहुँचे तो आपकी स्थिति शराबियों की सी हो गयी । बाबा बोले, **"कुछ पूछना है ?"** आप कहने लगे, "नहीं, आनन्द हो रहा है ।" फिर विचार आया कि मैं तो कुछ पूछने के इरादे से ही आया था और सोचने लगे कहीं मेरे प्रश्न बेवकूफी के न हो जायं । एकाएक हिम्मत कर कह बैठे, "बाबा, हम तो ऐसे ही मर जायेंगे" (अर्थात् बिना भगवत् प्राप्ति के) । बाबा बोले, **"तुमने कौन नयी बात कही ? सभी मर जायेंगे, यह संसार अनित्य है ।"** सन्त की वाणी का अपना प्रभाव होता है । यद्यपि आप इस तथ्य को पहले से ही जानते थे, इसका वास्तविक बोध आपको बाबा के मुखारविन्द से निकले शब्दों से ही हुआ । आप दर्शन कर चले गये ।

इसी प्रकार आप एक दिन फिर आये । इस बार आपके मन में असंख्य आध्यात्मिक प्रश्नों का गुबार भरा था । बाबा अपनी कुटिया में लेटे थे । आप उन्हें प्रणाम करने के बाद सोचने लगे बात कहाँ से आरम्भ की जाय । आप सोचते ही रह गये कुछ कह नहीं पाये । बाबा ने आपके

अव्यक्त प्रश्नों से असली प्रश्न छाँट निकाला और बिना पूछे उसका उत्तर देने लगे । वे बोले, **"यह मन्दिर आदि सब कुछ जो भी तुझे दिखायी देता है, सब खेल–तमाशा है । तेरे हाथ में कुछ है तो बता ?"** बाबा की इस वार्ता से इनके भीतर प्रतिक्रिया होने लगी । प्रश्न आपके मन में उठते जा रहे थे और वे उनका उत्तर बिना पूछे देते रहे । **"मोह से सब सच लगता है"**, बाबा बोले । आप सोचने लगे इसका उपचार भी कुछ होना चाहिये ? बाबा कहने लगे, **"उसी की कृपा से मोह छूटता है ।"** आपके मन में भाव आया कि उसकी कृपा कैसे हो ? बाबा बोले, **"भाव कुभाव अलख आलस हूँ, नाम जपत मंगल दिसि दसहूं । बोध होने पर शंका के लिये स्थान नहीं रहता ।"** इस प्रकार बाबा ने साधक के महत्वपूर्ण अव्यक्त प्रश्नों की गुत्थी को सुलझाकर उसे सरलतम उत्तर दे सन्तुष्ट किया । वास्तव में भगवत् प्राप्ति के लिये इससे सरल उपाय हो भी क्या सकता है । "राम सच्चिदानन्द दिनेसा, नहि तंह मोह निसा लस लेसा ।"

(11) "हमें समाधि से उठा दिया"

श्रीमती सावित्री जी बेगमपुल, मेरठ से नैनीताल आयी हुई थीं । आप बाबा के दर्शन करने कैंची आयीं । आप कहती हैं कि तब नदी के ऊपर पक्का पुल नहीं था । एक लकड़ी का संकीर्ण पुल था जिसके एक सिरे पर बाबा बैठे थे । पानी बहुत तेज़ी से बरस रहा था । भक्तगण वहीं जाकर उनके चरण स्पर्श कर रहे थे । मैं मन्दिर में ही खड़ी रह गयी उनके पास जाने का साहस न कर सकी । मैं भगवान् से प्रार्थना करने लगी, "प्रभु ! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं बाबा को उस पुल से उठाकर आश्रम में ला सकूं ।" जब सब लोग दर्शन कर आये तो मैं भी हिम्मत कर उनके पास गयी । मेरे पहुँचते ही महाराज उठ खड़े हुए और बोले, **"तू कौन है ? हमें समाधि से उठा दिया ।"** ऐसा कहते हुए वे मेरे साथ ही कुटिया में आ गये ।

(12) बिना कहे प्रश्नों का उत्तर

श्री एस. डी. गन्डा, सन् 1944 में स्टेट बैंक के कानपुर हेड–आफिस में थे । इसी वर्ष 14 नवम्बर के दिन आपको प्रथम बार बाबा के दर्शन अपने सह कार्यकर्ता दीक्षित जी के घर पर हुए । आप कहते हैं कि उस

समय बाबा मुझसे बोले, **"तेरे घर आऊंगा"** और उठ कर चल दिये । मैं एकाएक बात समझ नहीं पाया, पर इस क्षणिक दर्शन का मुझ पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि मैं अपनी कार में उनके पीछे चल दिया । महाराज की कार तेज़ी से निकल गयी और मैं पीछा करता हुआ भी उन्हें नहीं पकड़ सका । इसके बाद से मेरे मन में उनके दर्शन की लालसा बराबर बनी रही ।

मुझे कुछ समय बाद ज्ञात हुआ कि वे लखनऊ आये हुए हैं । मैं तुरन्त अपनी पत्नी को साथ लेकर उनकी भाभी के घर लखनऊ पहुँचा और महाराज के बारे में वहाँ पूछ–ताछ की । टेलीफोन द्वारा श्री सूरज नारायण मेहरोत्रा से सम्पर्क हुआ । उन्होने अपने घर आने को कहा । दूसरे दिन सबेरे मैं, मेरी पत्नी और उनकी भाभी मेहरोत्रा जी के घर पहुँचे । बाबा ऊपर के कमरे में विराजमान थे और दर्शकों की भीड़ लगी थी । हम लोग कमरे के बाहर ही खड़े थे, बाबा ने एक–एक कर सब को विदा कर दिया और हम लोगों को अन्दर बुला लिया । सर्वप्रथम बाबा ने मुझ से कहा, **"तू जो चाहता है, माँगले ।"** मैंने केवल उनके आशीर्वाद की कामना की, फलतः उनकी कृपा सदा मेरे ऊपर बनी रही । वे फिर भाभी से बोले, **"तू अपने पति के बारे में व्यर्थ चिन्ता किया करती है । चिन्ता छोड़ दे सब ठीक हो जायेगा ।"** अन्त में वे मेरी पत्नी से बोले, **"तू पहले से ही सोच कर आयी है । पूछ, क्या पूछना है ?"** वे चुप रहीं । बाबा ने फिर पूछा, ये इस पर भी चुप रहीं । बाबा ने एक बार और पूछा, जब ये इस बार भी नहीं बोलीं तो वे कहने लगे, **"अच्छा तेरे घर आकर मिलेंगे, तब बताना ।"** इन्होंने मन में यह निश्चय कर रखा था कि ये वाणी से अपने प्रश्नों को व्यक्त नहीं करेंगी और बाबा का उत्तर एकान्त में सुनना चाहेंगी ।

कुछ दिनों बाद डा. दीक्षित जी के घर कानपुर में बाबा का आगमन हुआ । मैं उन्हें अपने घर लिवा लाया । महाराज के स्वागत की हमने बाहरी कमरे में तैयारी कर रखी थी, पर वे इस कमरे की ओर मुड़े भी नहीं और बोले, **"तेरे छोटे कमरे (पूजा गृह) में बैठेंगे ।"** ऐसा कह कर वे मेरे घर में आगे–आगे एक सुपरिचित की भाँति जाते रहे और मैं उनके पीछे–पीछे चलता रहा । वे उस कोठरी में जा बैठे और मुझ से पत्नी को बुलाने के लिये कहा । महाराज उनसे बोले, **"क्या पूछना चाहती है ?"** वे अब भी चुप्पी साधे रहीं । बाबा ने बोलना आरम्भ किया और वे दस मिनट तक बोलते रहे और उनके समस्त प्रश्नों का सविस्तार उत्तर देते चले गये । अन्त में वे बोले, **"यदि कुछ और रह गया हो तो बताओ ?"** वे स्वभावतः फिर भी चुप रहीं, पर इस बार उनके मुख मण्डल

में सन्तोष–पूर्ण प्रसन्नता व्याप्त थी । महाराज बोले, **"किसी साधु को आगे ऐसे परेशान मत करना ।"** बाबा के चले जाने के बाद मेरे पूछने पर इन्होंने बताया कि बाबा ने इनके सभी प्रश्नों का पूरा उत्तर दिया । इस घटना के बाद से हमारा सारा परिवार उनका अनन्य भक्त हो गया ।

(13) वाणी की सार्थकता

सूबेदारमेजर जगदेव सिंह वोहरा, रायबरेली को महाराज के दर्शन सन् 1930 में सूबेदारमेजर रामसिंह के माध्यम से किलाघाट फतेहगढ़ में हुए । आप क्वेटा छावनी से 'ट्रेनिंग' के लिये राजपूत ट्रेनिंग सेन्टर फतेहगढ़ भेजे गये थे और वहां रामसिंह जी के साथ ही रहे । एक दिन वे आप को बाबा के दर्शन कराने ले गये । आप को देखते ही बाबा अपने पुराने भक्त राम सिंह से बोले, **"यह क्वेटा से आया है । शंकर की पूजा करता है । तू इसे अपनी जगह दे दे और पेन्शन चला जा ।"**

जगदेव सिंह जी अपनी 'ट्रेनिंग' पूरी कर क्वेटा वापस चले गये और आगे बाबा की सभी बातें उसी प्रकार घटित होती देखी गयीं । यद्यपि अनेक सूबेदार आप से 'सीनियर' थे, परन्तु बाबा के आशीर्वाद से आप सूबेदारमेजर बना दिये गये और 9 अगस्त 1931 को आप सूबेदारमेजर के पद पर फतेहगढ़ सेन्टर भेज दिये गये जहाँ उन्होंने सूबेदार मेजर राम सिंह से कार्य भार ग्रहण किया । इस घटना के बाद से आप जीवन पर्यन्त बाबा के भक्त बने रहे ।

इस घटना का उल्लेख 'स्मृति–सुधा' सम्वत् 2034 के पृष्ट 30 में हुआ है ।

(14) डी. एम. नहीं, एम.डी.

डा. अनूप कुमार सक्सेना, एम. डी. बरेली, सुपुत्र श्री कैलाश चन्द्र सक्सेना, कीच्छा फार्म जिला नैनीताल तब सातवीं कक्षा में पढ़ते थे, जब महाराज एक दिन आपके घर आये और आप से पूछने लगे, **"तू क्या बनना चाहता है ?"** आपने उत्तर दिया, "डी.एम" (जिलाधीश) क्योंकि आपके दादा आइ.सी.एस. थे । बाबा बोले, **"डी. एम. बन जायेगा बम्बई, कलकत्ता का, माँ–बाप का तार पहुँचेगा और अन्त समय में हाजिर भी नहीं हो पायेगा । डाक्टर बनेगा, डाक्टर बनने को पैदा हुआ है । नामी डाक्टर होगा, घर में माँ–बाप**

की सेवा करेगा, बाहर लोगों की । मेरठ में तुझे पढ़ायेंगे ।" घर के लोगों को इस पेशे से कोई रुचि भी न थी । आप अपनी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होते गये और कालान्तर में ऐसा संयोग बना कि आपको मेरठ मेडिकल कालेज में दाखिला लेना पड़ा और जैसी आपके परिवार और आपकी बचपन की चाह थी आप डी. एम. तो नहीं बन पाये, पर बाबा के आशीर्वाद से एम.डी. अवश्य हो गये । आपका बरेली में निजी दवाखाना है । आप घर में माँ–बाप की सेवा करते हैं और बाहर जनता की ।

उपरोक्त विवरण डा. अनूप कुमार सक्सेना के पिता जी से प्राप्त हुआ ।

(15) "पहाड़ जायेगा"

फ्रान्स के प्रसिद्ध चिकित्सक डा. ए.जे. वीनट्रोब स्वतः विरक्त हो चले और उनकी रुचि अपने व्यवसाय से हट गयी । सन् 1950 में आप लंका होते हुए भारत आये । काशी में गुरु दीक्षा लेकर आपने सन्यास ले लिया और स्वामी विजयानन्द नाम से जाने गये । आपने अपनी पुस्तक 'इन दि स्टेप्स आफ योगीज' में, जो भारतीय विद्याभवन, बम्बई से प्रकाशित हुई है, महाराज की अनेक आश्चर्यजनक लीलाओं का वर्णन किया है और अपना अनुभव भी लिखा है । आप कहते हैं कि आप एक दिन अपने आश्रम के बगीचे में पानी दे रहे थे, आपने बाबा को एक व्यक्ति के साथ आश्रम में प्रवेश करते देखा । वे उससे कहते जा रहे थे, यह अँग्रेज है । अँग्रेज कहने का तात्पर्य विदेशी से था जैसा साधारण बोलचाल की भाषा में बहुधा कहा जाता है । आपने बाबा को पहले कभी देखा न था इस कारण पहचान नहीं पाये, यद्यपि आश्रम में उनकी बहुत चर्चाएँ भी सुनी थीं । बाबा का आश्रम में स्वागत हुआ और उपस्थित सभी महात्माओं को उनके दर्शन के लिये बुलाया गया । इस प्रकार अन्नपूर्णा के मन्दिर में सब को उनके दर्शन हुए । आप को देखकर बाबा बोले, **"सन्त है । यहाँ इसकी तबीयत लगी है, पर पहाड़ जायेगा ।"** उन्होंने फिर दोहराया **"पहाड़ जायेगा"** । उस समय आप के मस्तिष्क में पहाड़ जाने का कोई विचार ही न था । आप आश्रम में ही रह कर अपनी साधना पूर्ण करना चाहते थे । इस घटना के दो वर्ष बाद सन् 1959 में आपके मन में अल्मोड़ा के पर्वतों में भ्रमण की इच्छा पैदा हो गयी । आप कई महीने भ्रमण कर आश्रम लौट आये, पर पर्वतों के शुद्ध वातावरण ने आपका मन मोह लिया । अगले वर्ष के आरम्भ से ही आप फिर इन पर्वतों में चले आये और यहीं वास करने

लगे । प्रथम दर्शन में बाबा की वाणी से अनायास निकले शब्दों की सार्थकता पर आपको महान् आश्चर्य है ।

(16) "दुबारा आयेगी"

सन् 1971 के जाड़ों में महाराज के साथ यात्रा में कुछ भक्तजन जयपुर गये हुए थे । उनमें श्री जीवन्ती माँ ने वहाँ मूर्ति निर्माण की कला–विधि देखने की अपनी इच्छा व्यक्त की । बाबा ने यह कह कर उनका आग्रह टाल दिया कि उन्हें इस कार्य के लिये दुबारा आना होगा । उनके इस उत्तर से आपको सन्तोष नहीं हुआ । बाद में उचित अवसर देख कर आपने पुनः निवेदन किया । बाबा ने इस बार भी आपको वही उत्तर दिया । बात वहीं समाप्त हो गयी ।

बाबा के महाप्रयाण के बाद जब कैंची आश्रम में उनके विग्रह के स्थापना की योजना बनी तो ऐसा संयोग घटित हुआ कि बाबा की मूर्ति बनवाने के लिये सन् 1975 में जीवन्ती माँ को ही जयपुर जाना पड़ा और वे इस कार्य के लिये वहाँ एक सप्ताह रहीं । बाबा के शब्दों का रहस्य तब जाना गया ।

(17) "सुधर जायेगा"

श्री कर्णवीर सिंह के पिता ठाकुर महावीर सिंह, अधीक्षक जी.आर.पी. आगरा छावनी, ने एक दिन महाराज से कहा कि आप कर्णवीर को इतना चाहते हैं और वह आपको पागल बाबा कहता है । उनकी बात सुन कर बाबा बहुत हँसे और बोले, **"ताही सों वह हमें अच्छा लगता है । लोग हमसे मिलते हैं अपने स्वार्थ के लिये । सच्चे प्यार से यही मिलता है ।"** ठाकुर साहब बोले, "जब यह अच्छा लगता है तो इसे सुधारते क्यों नहीं ? देखिये, इसका बड़ा भाई, न पान खाता, न सिगरेट पीता और सदा परोपकार में लगा रहता है । इसे दुनियाँ के सब बेहूदा शौक हैं और स्वास्थ्य भी इसका खराब रहता है । आप इसे समझाते क्यों नहीं ?" बाबा एकाएक बहुत गम्भीर हो गये और बोले, **"महावीर, तू अपने बड़े लड़के से कोई उम्मीद मत रख, समय के साथ यह सुधर जायेगा और तेरी सारी इच्छाएँ पूरी करेगा ।"**

उस समय महावीर जी ने बाबा की बात को गम्भीरता से नहीं लिया । दो वर्ष बाद एक दिन एकाएक बड़े लड़के का शरीर शान्त हो गया ।

ठाकुर साहब की अत्यन्त दयनीय दशा को देखकर कर्णवीर का दिल पसीज उठा और उसने निश्चय किया कि वह अब से कोई ऐसा काम नहीं करेगा जिससे उसके पिता का मन दुःखी हो । बाबा की वाणी सत्य उतरी, उसने यथाशक्ति अपने पिता की सभी इच्छाएँ पूरी कीं ।

(18) "वारा न्यारा"

श्री दुर्गा प्रसाद तिवारी, अवकाश प्राप्त उप–पुलिस अधीक्षक आगरा, सुनाते हैं कि अलीगढ़ में डी.आई.जी. महोदय निरीक्षण के लिये आये थे । वहाँ तार काटने वाले चोरों के न पकड़े जा सकने के कारण उन्होंने असन्तोष व्यक्त किया और उनकी ज़ल्द गिरफ्तारी पर जोर दिया । डी.आई.जी. महोदय बाबा के भक्त थे और संयोगवश उसी दिन बाबा भी अलीगढ़ आ पहुँचे । उन्होंने आप को जीप में बाबा को लिवा लाने के लिये भेजा । आप बाबा को जीप में ला रहे थे और स्वयं मन ही मन चिन्तित थे, तार काटने वालों की गिरफ्तारी के लिये । एकाएक बाबा बोल उठे, **"गिरफ्तार करने को कहा, चिन्ता हो गयी ।"** वे बाबा की बात कुछ समझे नहीं, पर जब उन्होंने अपनी बात स्वतः दोहराई तो आप समझे कि उनकी बात का सम्बन्ध आप से ही है । इस पर आपने उत्तर दिया, "महाराज ! नौकरी जो कर रहा हूं, चिन्ता तो होगी ही ।" बाबा बोले, **"चिन्ता मत कर तीन दिन में वारा न्यारा"** । फिर दोहराने लगे, **"तीन दिन में वारा न्यारा ।"** दूसरे ही दिन हेड–कान्स्टेबल और दो सिपाहियों ने आप को जगाया । उनके साथ तीन तार काटने वाले चोर थे और डेढ़ मन तार उनके पास से बरामद हुआ । इससे अन्य तार काटने वालों का पता चला और तीसरे दिन चोरी का तार खरीदने वाला भी पकड़ा गया । इस प्रकार तीन दिन में वारा न्यारा हो गया ।

इस प्रसंग का उल्लेख सम्वत् 2036 की स्मृति–सुधा के पृष्ठ 8 में भी हुआ है ।

(19) सब की चिन्ता बाबा को

घटना 1973 की है । श्री रवि कुमार, फौजी ठेकेदार, इलाहाबाद बाबा के दर्शनार्थ कैंची आये हुए थे और इलाहाबाद वापस जा रहे थे । वे आश्रम को अनेक आवश्यक वस्तुएँ भेंट करना चाहते थे, पर उनके पास यथेष्ट धनराशि नहीं थी । आप इस हेतु हल्द्वानी के शुद्ध घी के व्यापारी

नन्द लाल जी से मिले और उन्हें अपनी स्थिति से अवगत कर उनसे इस कार्य के लिए सहायता माँगी । आपने वायदा किया कि इलाहाबाद जा कर वे उनके खर्चे का भुगतान कर देंगे । नन्द लाल जी उन्हें जानते नहीं थे और उन्होंने उनका पता भी नहीं पूछा, पर उन्हें विश्वास दिलाया कि वे समस्त वस्तुओं को शीघ्र खरीद कर कैंची आश्रम में पहुँचा देंगे । इन वस्तुओं के खरीदने में नन्द लाल जी को अच्छी पूंजी लगानी पड़ी ।

बाबा ने एकाएक नन्द लाल जी को हल्द्वानी से बुलवाया और उनसे पूछने लगे कि ये समस्त वस्तुएँ उन्होंने कैसे भेजीं ? उन्होंने सब बातें कह सुनायीं । बाबा बोले, "**तू उस आदमी को जानता है ?**" आपके नहीं कहने पर वे कहने लगे, "**अब ये पैसे कैसे वसूल होंगे ?**" आपने कहा, "मैंने उस भले आदमी के कहने से यह सब सामान भेज दिया, यदि वह पैसे नहीं भेजता तो इससे मुझे क्या घटी आनी है ?" बाबा आपकी बात सुन कर प्रसन्न हुए और कहने लगे, "**तूने अच्छा ही किया । वह आदमी बहुत भला है । यदि इससे दस गुनी लागत का माल भी उसने भिजवाया होता तो वह तेरे पूरे पैसे चुकाता ।**" बाबा की बात से नन्दलाल जी को पूरा भरोसा हो गया । लगभग पांच महीने बीते, बाबा के महाप्रयाण के एक महीने बाद, एक दिन उस व्यक्ति का बैंक ड्राफ्ट मिला, जिससे उसने पूरी जमा चुका दी ।

(20) "दो बच्चे और"

कैंची निवासी श्री पूर्णानन्द तिवारी, महाराज के परम सेवक और भक्त रहे और बाबा की आप पर कृपा भी विशेष रही । सन् 1971 में आपकी पत्नी का स्वास्थ्य गिरता चला गया और स्थिति एक दिन गम्भीर हो गयी । तिवारी जी कहते हैं कि मैं चिन्तातुर हो आश्रम में बाबा से अपनी व्यथा व्यक्त करने के अभिप्राय से पहुँचा । महाराज अपनी कुटिया में खिड़की की ओर मुँह किये अकेले बैठे थे । सूर्यास्त हो रहा था । मैं, खिड़की के बाहर से ही प्रणाम कर, भीतर गया और उनकी पीठ के पीछे तख्त के पास ही जमीन पर बैठ गया । कुछ क्षण मौन में व्यतीत हुए फिर एकाएक बाबा ने गर्दन घुमायी और अपनी दो अंगुलियों को उठा कर मुझे दिखाते हुए बोले, "**अभी दो बच्चे और होने हैं,**" फिर खिड़की की ओर मुँह किये शान्त बैठे रहे । उस समय की अपनी मानसिक स्थिति में, मैं उनकी बात समझ नहीं पाया । औरत मरने को तैयार है और बाबा कह रहे हैं दो बच्चे और होने की बात ! मैं मन ही मन विचार करने लगा, यदि दो

बच्चे और होने हैं तो इस समय घरवाली ने मरना नहीं है, वह अवश्य बच जायेगी । इस से मुझे कुछ शान्ति मिली । मैं बाबा को नमन कर घर वापस आ गया । फिर सोचने लगा कि अब पत्नी बूढ़ी हो चली है और यदि बच्चे हुए तो यह उस कष्ट को बरदाश्त नहीं कर पायेगी । एकाएक फिर विचार आया कि बच्चे होना तो खुशी की बात है, बाबा अपनी बात कह कर गम्भीर और मौन क्यों हो गये ? इसका उत्तर मैं नहीं सोच सका । मैंने समझा अवश्य कोई रहस्य है । धीरे-धीरे पत्नी अच्छी हो गयी । सितम्बर 1973 में बाबा ने महासमाधि ले ली और उसी वर्ष जाड़ों में मेरे दो जुड़वां बच्चे हुए । दोनों दर्शनीय, पर मरे हुए । बाबा के मौन हो जाने का रहस्य तब मेरी समझ में आया ।

(21) अदालत का फैसला

बाबा की कृपा पर आभार प्रकट करते हुए श्री हरीशचन्द्र ढौंडियाल, एडवोकेट, नैनीताल बताते हैं कि राजनैतिक आन्दोलन के कारण सन् 1958 से 68 तक मेरे और मेरे पाँच साथियों के ऊपर अदालत में मुकदमे चलते रहे । महाराज ने मुझे बता दिया था कि अन्त में सब ठीक हो जायेगा इस कारण मुझे कभी भी इस विषय में चिन्ता नहीं हुई । आरम्भ में अदालत ने हम लोगों को मुक्त कर दिया था, पर सरकार इस मामले को उच्च न्यायालय में ले गयी और वहाँ केस दुबारा 'रिमांड' हो गया । 'रिमांड' के बाद सहायक सैशन अदालत से हम लोगों को दो-दो साल की सजा हो गयी । हम लोगों ने अपील की । इस बीच मेरे कुछ रिश्तेदार कैंची बाबा के दर्शन करने आये और उन्होंने मेरे बारे में उनसे पूछा । बाबा ने बताया कि अमुक जज के आने पर मामला ठीक हो जायेगा । उस समय जो जज थे उनकी बदली हो गयी और उनके स्थान पर जो दूसरे जज आये, उनकी अदालत में हमारी अपील की सुनवायी हुई । पूरे दिन बहस हुई और शेष दूसरे दिन के लिये छोड़ दी गयी । मेरे मन में भय हुआ कि ये जज महोदय तो कोई और हैं, बाबा के बताये हुए नहीं और इन्हीं के इजलास में हमारी अपील की सुनवायी हो रही है । अस्तु, दूसरे दिन कुछ ऐसा बानक बना कि अपील अनिश्चित काल के लिये मुल्तवी कर दी गयी और फिर तब ही लगी जब बाबा द्वारा बताये जज साहब का आगमन हुआ । इन्होंने फैसला हमारे हक में दिया ।

(22) "शरीर खत्म हो चला"

ढौंढियाल साहब अपना एक अनुभव और प्रस्तुत करते हैं । आपने एक बार अपने तीन सम्बन्धियों के स्वास्थ्य के बारे में बाबा से पूछा । आप कहते हैं कि मेरा प्रथम प्रश्न अपने गुरु (कानूनी शिक्षक) के बारे में था जिनको दूसरी बार दिल का दौरा पड़ चुका था । दूसरा अपनी माँ के बारे में और तीसरा अपने बहनोई के विषय में था जो कुछ दिनों से बीमार चल रहे थे । प्रथम दो के बारे में बाबा ने बताया अभी कोई चिन्ता की बात नहीं है । उन्होंने मुझ से कहा कि अपने गुरु से कह दे कि इधर–उधर खूब आवे–जावे, बरेली के बाहर भी वकालत करने उसे जाना चाहिये । मेरे बहनोई के बारे में वे बोले, **"अब उसका शरीर खत्म हो चला है ।"** उनके ऐसा कहने के तेरहवें दिन मेरे बहनोई इस संसार से विदा हो गये ।

(23) छः महीने की अवधि

श्री राधेश्याम, जिनका फिरोजाबाद में सोने–चांदी का कारोबार है, एक दिन सन् 1955 में बिड़ला मन्दिर दिल्ली में, जहाँ महाराज ठहरे थे, उनकी सेवा में लगे रहे । आप दिन भर द्वार पर खड़े रह कर दर्शनार्थियों को बाबा के कमरे में भेजते रहे । एक दर्शनार्थी जिसकी साधु और मन्दिरों में आस्था नहीं थी, पास में कुछ दूर पर अकेला बैठा था । राधेश्याम जी ने जब देखा कि रात हो चली, तो वे उसके पास जाकर पूछने लगे कि वह किसकी प्रतीक्षा कर रहा है ? उसने उत्तर दिया कि बिड़ला जी ने उसे बाबा से मिलने को कहा है और वह उनसे एकान्त में मिलना चाहता है । आपने उससे दूसरे दिन प्रातः काल आने को कहा, पर वह घर लौटने को तैयार नहीं हुआ । जब आप ने बाबा से सब बातें कहीं तो वे बोले, **"उसे अपने कमरे में सुला ले, कल सवेरे बातें होंगी ।"** दूसरे दिन प्रातःकाल ही बाबा ने उसे दर्शन दिये । वह बोला, "मैं, मेरी पत्नी और एक पुत्र, इन तीन प्राणियों का हमारा परिवार है । मेरा लड़का सन् 1947 से ग़ायब है । मैं यह जानना चाहता हूँ कि वह जीवित भी है या नहीं ? और क्या अब भी मैं उससे मिलने की आशा करूँ ?" महाराज ने उसे यह कह कर विदा किया, **"जा, वह छः महीने में मिल जायेगा ।"**

इसके चार महीने बाद से ही वह व्यक्ति राधेश्याम जी को उनके फिरोजाबाद के पते पर बराबर नैराश्यपूर्ण पत्र भेजता रहा । आपने उसे

सूचित किया कि बाबा पहाड़ गये हैं और उनके आने पर ही उसके पत्रों का उत्तर दिया जा सकता है, साथ में अनुरोध किया कि वह व्यर्थ पत्र भेजने का कष्ट न करे, क्योंकि अभी बाबा की बतायी अवधि भी पूरी नहीं हुई है । छः महीने बीतते ही राधेश्याम जी को उसका सन्तोषपूर्ण पत्र मिला कि उसको उसका लड़का बाबा की कृपा से मिल गया, वह चन्डीगढ़ में अध्यापक है । उसने बाबा का पता भी पूछा ताकि वह उनके पास जाकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर सके ।

(24) लापता का पता

सूबेदार मेजर जगदेव सिंह, ग्राम बहेटा, जिला राय बरेली सन् 1932 में अपने एक सहायक सिख अफसर को अपने साथ महाराज के दर्शन कराने ले गये । आपने उन्हें बाबा की महत्ता से अवगत कराते हुए बताया कि यदि वे उनसे कुछ न पूछें तो भी वे उनके प्रश्न का सही उत्तर दे देंगे । सिख अफसर को अपने एक मित्र श्री गैंडा सिंह के सम्बन्ध में कुछ विशेष बात पूछनी थी, पर वे महाराज के पास जाकर इस विषय में कुछ बोले नहीं । बाबा इनकी ओर देखते हुए स्वतः कहने लगे, **"गैंडा सिंह के लड़के के बारे में पूछना चाहता है, जो घर से भाग गया है। वह अमृतसर गुरुद्वारे में ग्रन्थी से शिष्य बनाने की प्रार्थना कर रहा है। उसकी स्त्री मर गयी, पर माँ जीवित है । माँ की आज्ञा बिना ग्रन्थी उसे शिष्य बनाने को तैयार नहीं है ।"** गैंडा सिंह उस समय फर्रुखाबाद में जेलर थे । पत्नी के वियोग से दुःखी हो, उनका लड़का लापता हो गया था ।

सिख अफसर ने जब यह सूचना अपने मित्र को दी तो वे अमृतसर जाकर उसे घर वापस ले आये । इस घटना के बाद से गैंडा सिंह बाबा के भक्त हो गये ।

इस घटना का उल्लेख 'स्मृति सुधा' सम्वत् 2040 के पृष्ट 36 में हुआ है ।

(25) "पुलिस कप्तान बनेगा"

श्री राम नारायण सिन्हा, सब–इन्स्पेक्टर पुलिस, महाराज के भक्त हो चले थे । उनको उत्तर प्रदेश सरकार की पुलिस सेवा में कार्य करते कुछ ही वर्ष हुए थे, एक दिन जब उन्हें बाबा के दर्शन हुए तो बाबा ने उनसे एक

कागज और पेन माँगा । उनके कागज और पेन देने पर बाबा उसमें "राम राम ......" लिखते गये, फिर उसके नीचे लिखने लगे, **"तू पुलिस कप्तान बनेगा"** उसके नीचे आपने अपने अँगूठे की छाप लगा दी और उसके नीचे लिखा – "बाबा नीब करौरी ।" बाबा का यह हस्तलेख सिन्हा जी के पास अब भी सुरक्षित है । उस समय अँग्रेजी शासन था, इनका इस छोटे पद से आइ.पी.एस. अफसर होना किसी प्रकार भी सम्भव न था । इन्हें बाबा के लेख पर विश्वास तो नहीं हुआ, पर इन्होंने उस कागज को रख लिया । कालान्तर में जब सन् 1947 में भारत स्वतन्त्र हुआ, अँग्रेज अफसर इंग्लैण्ड और मुसलमान पुलिस अफसर पाकिस्तान चले गये तब उत्तर प्रदेश में पुलिस अफसरों की बहुत कमी हो गयी । ऐसे समय में सिन्हा जी को कप्तान बनने का सौभाग्य प्राप्त हो गया । आप इस पद में पाँच वर्षों से अधिक कार्य कर चुके थे जब सरकार ने एक योजना बनायी कि इस प्रकार तरक्की पाये अफसरों की पदावनति कर रिक्त पदों को नयी भर्ती के ट्रेनिंग प्राप्त आइ.पी.एस अफसरों को दिया जाय । सिन्हा जी कहते हैं कि वे इस योजना से अत्यन्त दुःखी हो गये । एक रात वे अपनी पत्नी से कह रहे थे कि वे अब अवकाश ग्रहण कर लेंगे और यदि आवश्यकता हुई तो त्याग पत्र भी दे देंगे, पर लज्जित होकर आगे कार्य नहीं करेंगे । इतने में आपके अर्दली ने सूचित किया कि बाहर सड़क पर, एक बाबा आपको याद कर रहा है । आपने वहाँ जाकर देखा, ये थे बाबा नीब करौरी जी महाराज ! आपको देखते ही बाबा स्वतः कहने लगे, **"नौकरी नहीं छोड़ेगा । हमने कह दी तुझे कोई नहीं हटा सकता ।"** इसके बाद जो लिखित आदेश आप को सरकार से प्राप्त हुए उसमें आपकी विशेष सेवाओं को ध्यान में रखते हुए, आपको पक्का आइ.पी.एस अफसर बना दिया गया । सिन्हा जी अब बहुत वृद्ध हो गये हैं, बाबा सम्बन्धी अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करते वे भाव विभोर हो जाते हैं ।

(26) "आइ.जी. बनेगा"

एक बार उत्तर प्रदेश सरकार में आइ.जी. पुलिस की नियुक्ति के प्रश्न पर विचार हो रहा था । सम्भवतः उस समय श्री गोविन्दवल्लभ पन्त मुख्य मन्त्री और डा. सम्पूर्णानन्द गृह मन्त्री थे । श्री हरिशंकर माथुर, महाराज के भक्त, उस समय डी. आई. जी. पुलिस थे । आप से लगभग छः या सात डी.आई.जी सीनियर थे । एक दिन बाबा ने स्वतः श्री माथुर से पूछा, **"तूने आइ.जी. का चार्ज क्यों नहीं लिया ?"** उन्होंने बाबा को अपने जूनियर होने का हवाला दिया । बाबा बोले, **"नहीं, तू आइ.जी. बनेगा,**

जा चार्ज ले ।" उसी रात उन्हें प्रशासन के आदेश प्राप्त हुए और श्री माथुर बाबा की कृपा से आइ.जी. बन गये ।

यह विवरण श्री एस.एस. पवार, आइ.पी.एस (अवकाश प्राप्त), सहारनपुर से प्राप्त हुआ ।

(27) साधारण कष्ट की भी जानकारी

घटना सितम्बर 17, 1971 कैंची आश्रम की है । बाबा की एक अमरीकी भक्त महिला, जिनको उन्होंने भारतीय नाम राधा दिया था, उनके दर्शनार्थ कैंची आयी हुई थीं । आप लिखती हैं कि एक दिन मेरा सिर बहुत खुजला रहा था, इस कारण मैं परेशान थी । मुझे जूं का सन्देह हुआ यद्यपि मेरे सिर में जूं होती नहीं । फिर भी मैंने पास में खड़े द्वारकानाथ जी से अपना सिर देखने को कहा । उन्हें कोई जूं नहीं दिखायी दी । उसी समय महाराज जी ने मुझे बुलवाया । मैं उन्हें नमन कर उनके तख़्त के पास भूमि पर बैठ गयी । वे बिना कुछ बोले मेरा सिर थपथपाने लगे और इसके बाद कुछ क्षणों तक उसे खुजलाते रहे । इससे मुझे बहुत आराम मिला । हम दोनों मौन रहे, कोई एक शब्द भी नहीं बोला । मैं समझती हूं कि महाराज के अनेक तरीकों में यह एक था यह जताने का कि उनको मेरे साधारण कष्ट की भी जानकारी रहती है ।

(28) "बीस साल बाद"

कैंची निवासी श्री पूर्णानन्द तिवारी अपने भाई के साथ जमीन के मुकदमे के कागज़ात लेकर नैनीताल कचहरी गये हुए थे । इन्हें एक और कागज़ लेने फिर कैंची आना था, पर इनका भाई बीमार पड़ गया जिसकी देखरेख में व्यस्त होने के कारण शाम हो गयी । इन्हें उस समय नैनीताल से कैंची आने वाली कोई बस नहीं मिली, इसलिए ये भाई को वहीं छोड़कर गेठिया को पैदल चल पड़े । इन्हें आशा थी कि गेठिया में इन्हें काठगोदाम से कैंची की ओर जाने वाली कोई बस मिल ही जायेगी, पर यहां आकर इन्हें निराश होना पड़ा । रात हो चली थी और रास्ता कई मीलों का था । गेठिया में केवल एक दुकान थी जिसका मालिक चौधरी कहलाता था । इन्होंने चौधरी से रात उसकी दुकान में ठहरने की अनुमति माँगी, पर उसने मना कर दिया और कहा, "कोई ट्रक आयेगी तो उससे निहोरा कर दुंगा कि वह तुम्हें रास्ते से बिठा ले ।" इनके पास एक छोटा टार्च था जिसके सहारे ये लम्बा रास्ता अंधेरे में पैदल नापने लगे ।

रास्ते में इन्हें वह भयावह नाला मिला जिसे 'खुफिया डांठ' कहते हैं । यहाँ एक पेड़ में लोहे की जंजीर लटकी रहती थी और यह कहावत थी कि एक बाबा ने भूत को यहाँ बाँध रखा है । तिवारी जी जवान थे, लगभग इक्कीस वर्ष की इनकी आयु होगी । भूत का भय इनके मन में था ही । जब ये आगे बढ़े तो टार्च के मन्द प्रकाश में इन्हें एक स्थूल व्यक्ति उस निर्जन स्थान में पैरापेट (दीवार) पर बैठा दिखायी दिया । वह व्यक्ति ज़ोर से बोला, "**कौन है ? क्या नाम ? कहाँ रहता है ?**" ये सहम गये और उसके पास गये, क्योंकि भूत के आगे भागना व्यर्थ था । ये थे बाबा नीब करौरी जिनकी ख्याति इन्होंने बहुत सुनी थी और उसी दिन नैनीताल में एक ओवरसियर के घर इन्हें देखा भी था, पर वहाँ संकोचवश आगे बढ़ कर चरण स्पर्श न कर सके । इसकी अभिलाषा इनके मन में बनी रही । यहाँ एकान्त में बाबा ने यह अवसर इन्हें दिया । इन्होंने अपना नाम और कैंची स्थान बताया । बाबा बोले, "**तेरा भाई बीमार हो गया, चिन्ता मत कर ठीक हो जायेगा ।**" ये हाथ जोड़े उनकी बात से चकित हो गये । "**अब जा, रास्ते में तुझे गाड़ी मिल जायेगी,**" इतना कह कर फिर वे बोले, "**मुकदमा चल रहा है ? घबरा मत किसी भी अदालत से हारेगा नहीं, पर भुगतान है । मामला लम्बा चलेगा ।**" इनके पूछने पर कि बाबा आप यहां कैसे ? वे बोले, "**हम भूतों से बचने के लिये यहाँ आ बैठे हैं । नैनीताल में भूत (स्वार्थी लोग) बहुत हैं ।**" अन्त में तिवारी जी ने पूछा, "बाबा, अब दर्शन कब देंगे ?" वे बोल उठे, "**बीस साल बाद । अब जा, तुझे गाड़ी मिल जायेगी ।**" वे नमन कर अपनी राह चल दिये, मन में सोचने लगे कि बाबा को आगे दर्शन देने की इच्छा नहीं थी इसलिए कह दिया "बीस साल बाद ।" ये लगभग पाँच सौ गज चले होंगे, पीछे से आने वाली एक ट्रक के चालक ने इन्हें बुलाकर गाड़ी में बैठा लिया । यह घटना बैसाख 1942 की है ।

25 मई 1962 के दिन महाराज कुछ लोगों के साथ रानीखेत से आ रहे थे, वे कैंची में उतर गये और अन्य लोगों को उस कार में नैनीताल भेज दिया । पूर्णानन्द जी उस दोपहरी में सो रहे थे । बाबा ने एक मज़दूर को, जो वहां पर खड़ा था, भेज कर इन्हें घर से बुलवाया । उसने इन्हें बताया कि एक बनिया आया है और आप से मिलना चाहता है । इन्होंने आकर देखा बाबा नीब करौरी प्रतीक्षा कर रहे हैं । बाबा बोले, "**तू हमें झूठा समझता है ?**" ये कुछ समझे नहीं । बीस वर्ष पूर्व बाबा की वार्ता की प्रतिक्रिया के रूप में उठे अपने विचारों का उस समय इन्हें विस्मरण हो गया था । इस प्रकार बाबा ने अपना वायदा पूरा किया ।

(29) "बदली नहीं होगी"

सन 1965 में, पाकिस्तानी सिपाहियों को कैद में रखने के लिये केन्द्रीय जेल, आगरा खाली किया जा रहा था । उस समय उस जेल के सुपरिन्टैन्डेंट' थे श्री भूषण चन्द्र जोशी । आप कहते हैं कि जेलों के आइ.जी. साहब, जो उस समय वहाँ उपस्थित थे मुझसे बोले कि आप अपना सामान बाँध लें, अब आप को बदली में दूसरी जगह जाना है । आप ने तत्काल कैदियों की सहायता से अपना सामान बँधवा लिया । इसके बाद आपको सूचना मिली कि बाबा आगरा में किसी के घर आये हैं । ये दर्शन के लिये उनके पास गये । आप को देखते ही बाबा बोल उठे, **"आइ.जी. कोई भगवान् है, जिसके कहने से तूने सामान बँधवा लिया । हम कहते हैं जा सामान खोल दे, अभी तेरी बदली नहीं होगी ।"** आप बाबा के भक्त थे, आपने घर लौटने पर उनकी आज्ञा का पालन किया । इसके बाद भूषण जी को जो लिखित आदेश प्राप्त हुए उसके अनुसार उन्हें इस जेल की देख–रेख का भार सौंपा गया और इस कारण उन्हें 1968 तक यहीं रहना पड़ा ।

(30) भूषण जी की पदोन्नति

श्री भूषण चन्द्र जोशी की पदोन्नति हुई और ये उत्तर प्रदेश जेलों के डी.आइ.जी. बनाये गये । इस पदोन्नति से आप को कुछ भी प्रसन्नता नहीं हुई, अपितु आप घबरा उठे और सोचने लगे कि इसे स्वीकार किया जाय या नहीं । कारण यह था कि आपको दिल की बीमारी थी, इसलिए दौरा करने में भय था । आप बड़े पशोपेश में रहे और कुछ भी निर्णय नहीं कर पाये । अतः आप बाबा की आज्ञा प्राप्त करने के लिये कैंची आश्रम पहुँचे । आप आश्रम के प्रवेश द्वार पर ही थे, बाबा अपनी कुटिया में उपस्थित लोगों से कहने लगे, **"जोशी आ रहा है, समझता है दौरा करने से मर जायेगा ।"** लोगों की समझ में कुछ बात आयी नहीं । थोड़ी देर में ही भूषण जी ने कुटिया में प्रवेश किया । इन्हें देखते ही महाराज फिर कहने लगे, **"डरता है ? दौरे करने से मर जायेगा ? जा, तरक्की में जा । अभी तूने आइ.जी. भी बनना है ।"** यद्यपि उस समय आइ.जी. के पद को प्राप्त करने की कोई सम्भावना नहीं दिखायी दे रही थी, पर समय आने पर आप अतिरिक्त आइ.जी. हुए और इसी पद से आपने अवकाश प्राप्त किया ।

(31) 'परसों मान जायेंगे'

श्री जगन प्रसाद रावत भू. पू. मन्त्री उत्तर प्रदेश सरकार, कमला नगर, आगरा को महाराज के पहली बार दर्शन श्री भगवान सहाय आइ.सी.एस. के घर लखनऊ में सन् 1946 में हुए । आप कहते हैं कि ज्योंही मैंने बाबा का चरण स्पर्श किया वे मुस्कराते हुए बोले, **"कहाँ था ? क्या क्या बातें हुईं लाल बहादुर और पन्त से ? तेरी बात नहीं मानी उन्होंने ? परसों मान जाएँगे ।"** मुझे विस्मय हुआ कि शासन की गोपनीय बातें वे कैसे जान गये, पर मैंने जान–बूझ कर इस विषय में कोई चर्चा नहीं की । अगली बैठक में गोविन्द बल्लभ पन्त और लाल बहादुर शास्त्री ने मेरी बात ज्यों की त्यों मान ली ।

(32) "तीन लड़के होंगे"

श्री जगन्नाथ आनन्द, आनन्द ट्रान्सपोर्ट एजेंट, हल्द्वानी, जिला नैनीताल की लड़की राजिन्दर सन् 1968 में अपनी माँ के साथ बाबा के दर्शन के लिये कैंची आश्रम में आयी । प्रथम दर्शन में ही महाराज ने आपकी माता से कहा, **"इस लड़की की शादी कर दे"** और राजिन्दर को दो रुपये देकर विदा किया । आश्रम से बाहर आते ही इन्हें हल्द्वानी के लिये बस मिल गयी और ये दोनों उस में बैठ गयीं । रास्ते में जब कण्डक्टर ने इनका टिकट बनाया तो भाड़ा चुकाने में इनके पैसों में दो रुपये की कमी पड़ गयी जिसकी पूर्ति बाबा के दिये रुपयों से हुई । इन्होंने बाबा के रुपये अपनी इच्छा विरुद्ध स्वीकार किये थे, पर तब इनकी समझ में आया कि उनका उद्देश्य इन्हें इस अपमानजनक स्थिति से बचाना था ।

घर आने पर यह परिवार बाबा की आज्ञा पालन करने के लिये सचेष्ट हो गया । लड़की की शादी की बात चलाते ही सब काम अपने आप बनते चले गये । अगले ही वर्ष लड़की का विवाह भी हो गया । विवाह के बाद जब लड़की अपने पति के साथ बाबा के दर्शन करने के लिये उपस्थित हुई तो उन्होंने उसे अपनी तीन उंगलियां दिखाते हुए कहा, **"तीन लड़के होंगे ।"** इन्होंने तीन ही बच्चों को जन्म दिया और तीनों लड़के हैं ।

(33) "फेल–पास"

नैनीताल में श्रीमती दुर्गा माई का लड़का बी. ए. की परीक्षा दे चुका था । उसे अपनी असफलता का भय था इस कारण वह बहुत उदास रहा करता था । माई ने कैंची आश्रम में आकर महाराज को स्थिति से अवगत कराते हुए पूछा कि उनका लड़का पास होगा या नहीं ? बाबा तुरन्त बोल उठे, **"फेल–पास"** । ऐसा कहकर वे मुस्कराए और उपस्थित सभी भक्तजन हंस पड़े । वे फिर बोले, **"पास हो जायेगा और बैंक में नौकरी करेगा ।"** लड़के का नाम पूरक परीक्षा में प्रकाशित हुआ और बिना वर्ष गंवाये वह उसी साल की पूरक परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ और आगे चल कर उसे एक बैंक में ही नौकरी मिली ।

(34) "शादी नहीं करेगी"

कुमारी गोदावरी तिवारी जब पढ़–लिख कर बड़ी हुईं तो आपकी नियुक्ति उत्तर प्रदेश के योजना विभाग में हुई । एक दिन आप बाबा के दर्शन करने हनुमान गढ़, नैनीताल गयी थीं । आपको देखते ही वे बोल उठे, **"यह शादी नहीं करेगी ।"** आप कहती हैं कि बाबा की वाणी मेरी जिन्दगी में सच्ची उतरी । मैं अपनी परिस्थितियों से लाचार रही । मेरे ऊपर ही अपने भाई–बहनों को पढ़ाने और उनके विवाह आदि का उत्तरदायित्व रहा । ऐसी स्थिति में मुझे अपने विवाह का विचार ही छोड़ देना पड़ा ।

(35) "बी.डी.ओ. आ गयी"

गोदावरी जी बताती हैं कि एक बार मैं महाराज के दर्शन करने भूमियाधार पहुँची । तब वे बोले, **"हमारी बी.डी.ओ. लड़की आ गयी ।"** मैं बी.डी.ओ. थी नहीं इस कारण उनकी बात मेरी समझ में नहीं आयी । बाबा फिर बोले, **"अमरीका मत जाना । यहीं देश में रह कर सेवा करना । वहाँ जा कर अँग्रेज बन जायेगी ।"** यह बात भी उनकी मुझे बे–सिर–पैर की मालूम दी । इस वार्ता के एक वर्ष बाद गरमपानी ब्लाक, नैनीताल में मेरी नियुक्ति बी.डी.ओ. के पद पर हो गयी और इसके कुछ समय बाद, इसी सिलसिले में मुझे संयुक्त राज्य अमरीका जाने का अवसर भी प्राप्त हुआ, पर बाबा की बात का स्मरण कर मैंने इसे स्वीकार नहीं किया ।

(36) "होना कहीं और है"

श्री देशराज पब्बी, पी 3, मायाजाल रुद्रपुर की लड़की के लिये दिल्ली और बरेली, दो स्थानों से रिश्ते आये थे । बरेली वाला रिश्ता आपको पसन्द था और दिल्ली वाला आपकी पत्नी को । इस मतभेद के कारण आप किसी रिश्ते को स्वीकार न कर सके । इस प्रकार बहुत समय व्यर्थ हो जाने से देशराज जी को चिन्ता होने लगी । अन्त में दोनों इस बात में सहमत हो गये कि महाराज को जो भी सम्बन्ध पसन्द हो वही इन लोगों को मान्य होगा । देशराज जी ने कैंची आकर बाबा के दर्शन किये और अपनी समस्या उन्हें बतायी । बाबा यह कहते हुए उठ खड़े हुए, **"होना तो कहीं और है"** और राधा कुटी में शौच स्नान आदि के लिये चले गये । बाबा की बात आपके कुछ समझ में नहीं आयी । आप दिल्ली के रिश्ते को पक्का करने वहाँ गये, पर इतने विलम्ब के कारण वह रिश्ता आपके हाथ से निकल गया । इसके बाद आप बरेली पहुँचे वहाँ भी आप को निराशा हुई, उस लड़के की सगाई हो चुकी थी । कुछ समय बाद इनके पास एक रिश्ता अमृतसर से आया और वहीं उस लड़की का विवाह हुआ ।

(37) "काम नहीं बनेगा"

श्री देशराज जी के परिचित महिन्दर सिंह नाम के एक लड़के ने पन्त नगर विश्वविद्यालय में नियुक्ति के लिये 'इन्टरव्यू' दिया और उसे पूरा विश्वास था कि यहाँ उसका काम बन जायेगा, परन्तु बहुत प्रतीक्षा के बाद भी वहाँ से कोई आदेश प्राप्त न होने पर वह चिन्तित हो उठा । देशराज जी ने उसे बाबा के दर्शन करने के लिये कैंची भेजा । महाराज लड़के को देखते ही बोले, **"नौकरी के लिये आया है । ठाकुर ने गड़बड़ी कर दी, अब काम नहीं बनेगा ।"** वास्तव में उसे इस ओर से निराश ही होना पड़ा ।

(38) सोने का सट्टा

कैंची में एक दिन महाराज के दरबार में एक सेठ जी भी उपस्थित थे जो सोने का सट्टा किया करते थे । उस दिन बाबा ने वार्ता में सोने का प्रसंग चला दिया और उस सिलसिले में बोले, **"सोने का भाव**

आगे चल कर गिर जायेगा ।" इस पर सेठ जी बोल उठे, "नहीं, बाबा अभी ऐसी सम्भावना नहीं है ।" बाबा ने कुछ उचित कारण बताये और कहा, **"इसका भाव जरूर गिर जायेगा ।"** सेठ जी के बात समझ में आयी, उन्होंने थोड़े ही लाभ में सब सोना बेच दिया । आगे उन्होंने देखा कि सोने का भाव गिरा और वे बहुत बड़ी क्षति से बच गये । दूसरी बार जब वे बाबा के दर्शन को आये तो उन्होंने बाबा को दो हज़ार रूपयों की भेंट चढ़ायी और अपनी कृतज्ञता व्यक्त की । सेठ जी के बहुत अनुनय विनय करने पर भी बाबा ने उनकी भेंट स्वीकार नहीं की । सेठ जी के चले जाने के बाद एक भक्त ने, यह कहते हुए कि सेठ जी का रुपया मन्दिर और आश्रम के काम में लगाया जा सकता था, बाबा से उसे अस्वीकार करने का कारण जानना चाहा । बाबा बोले, **"वह उन रुपयों से हमें खरीदने आया था ।"**

दरबार की इस घटना से सम्बन्धित सेठ जी का नाम एवं पता उपलब्ध नहीं है ।

(39) पढ़ाई की इतिश्री

बरेली के महेन्द्र कुमार जी बताते हैं कि सन् 1965 में वे अपने पिता जी के साथ कैंची आश्रम आये थे । रास्ते में, जब उनकी बस पर्वतीय भू-भाग में चल रही थी, आपने अपने पिता जी से कहा कि यदि यह सफर मोटर साइकिल से किया जाता तो बड़ा आनन्द आता । बात वहीं खत्म हो गयी । उनके पिता जी का उन्हें यहाँ लाने का अभिप्राय महाराज का आशीर्वाद प्राप्त कराना था जिससे वे अपनी परीक्षा में सफल हो सकें । बात असल में यह थी कि वे गत दो वर्षों से अपनी परीक्षा में असफल हो रहे थे । दर्शन के बाद ही आपके पिताजी ने आपकी परीक्षा के सम्बन्ध में बात चला दी । बाबा तुरन्त बोले, **"यह पढ़ेगा नहीं, यह मोटर साइकिल चलायेगा ।"** बाबा का वाक्य सुनते ही आप अवाक् रह गये । आप को अभी रास्ते में कही अपनी बात याद आ गयी । आपके पिता जी के बहुत अनुनय विनय करने पर बाबा बोले, **"हम झूठ नहीं कहेंगे । हमें जरा हनुमान जी से पूछ लेने दो ।"** इसके तुरन्त बाद ही कहने लगे, **"इस समय की परीक्षा में यह पास हो जायेगा, पर आगे की परीक्षाओं के बारे में हम नहीं कहते ।"** आप कहते हैं कि यह मैं अच्छी तरह जानता था कि मैंने परीक्षा में क्या किया, पर मैं उत्तीर्ण

घोषित किया गया । यह परीक्षा मेरी अन्तिम परीक्षा होकर रह गयी । उन्होंने जितना कह दिया था उतना ही हुआ ।

(40) वाणी में जादू

श्रीमती कमला जी, पत्नी श्री आर.सी. सोनी, आई.जी.वन, के पेट का दूसरे दिन आपरेशन होना निश्चित था । आप को बहुत घबराहट हो रही थी और सभी लोग बहुत चिन्तित थे । घर का सारा वातावरण इस कारण उदासीन हो गया था । एकाएक टेलिफोन की घंटी बजी । यह बाबा का अलौकिक टेलिफोन था । वे सोनी साहब से कहने लगे, **"कोई बात सुनाओ ।"** उन्होंने कमला जी के आपरेशन की बात आरम्भ की । महाराज बोल उठे, **"आपरेशन तो हो गया और कोई बात कहो ।"** श्रीमती कमला जी कहती हैं कि बाबा की वाणी में क्या जादू था कि घर का वातावरण ही बदल गया । सब लोग निश्चिन्त हो गये और स्वयं मेरी घबराहट विलीन हो गयी । आप दूसरे दिन आपरेशन के लिये ऐसी प्रसन्नचित्त होकर गयीं जैसे कहीं निमन्त्रण में जा रही हों । आपरेशन सफल हुआ और आप आसानी से उस कष्ट का सामना कर सकीं ।

(41) अव्यक्त इच्छा की पूर्ति

यद्यपि नैनीताल में घर–घर बाबा की ख्याति फैल चुकी थी, पर श्रीमती दुर्गा साह अपने गृह कार्यों को छोड़ कर उनके दर्शन करने हनुमान गढ़ न जा सकीं । एक बार जब कैंची आश्रम में गुरु–पूर्णिमा मनायी जा रही थी आप संयोगवश कुछ महिलाओं के साथ वहाँ आ गयीं । उस समय महाराज का पूजन हो रहा था । इस प्रथम दर्शन में बाबा की इन पर ऐसी कृपा हुई कि इनके अन्तरमन में एक आनन्द की लहर दौड़ उठी और ये आँखे बन्द किये बैठी रह गयीं । इन्हें अपनी बन्द आँखों से बाबा में साक्षात् हनुमान के दर्शन होते रहे । इस घटना से आपकी आस्था उन पर दृढ़ हो गयी ।

इसके कुछ महीने बाद अनेक भक्तजन बाबा के दर्शन हेतु नैनीताल से वृन्दावन जा रहे थे । इनमें भी उनके साथ जाने की तीव्र इच्छा जाग उठी, पर आप अपने घर की परिस्थितियों से लाचार थीं । सभी परिचित लोगों के चले जाने के बाद इनका मन उदास हो गया । एकाएक एक

महिला ने, जो उस समय नहीं जा पायी थी, आपके पतिदेव से टेलिफोन द्वारा आग्रह किया कि इन्हें उनके साथ वृन्दावन भेजने की कृपा करें । उसी समय इन्हें पति की सहयोगपूर्ण अनुमति प्राप्त हो गयी । ये गृह कार्यों को अस्त–व्यस्त छोड़ कर उस महिला के साथ वृन्दावन चली गयीं । वहाँ आश्रम में पहुँच कर ज्योही इन्होंने बाबा को नमन किया, वे बोल उठे, **"हमने तुझे मन्त्र फूंक कर बुला लिया ।"** ये बाबा की आत्मीयता से विभोर हो गयीं ।

(42) रोग एक निदान अनेक

एक दिन प्रातःकाल महाराज शौच से निवृत्त हो कर मोटर मार्ग की दीवार पर बैठे थे । इतने में 'बालक' नाम के एक बाबा ने आकर उन्हें प्रणाम किया । बाबा बोले, **"क्या तकलीफ है ?"** बालक ने बताया कि कल रात से वे पेट–दर्द से पीड़ित हैं । बाबा ने अपने शौच के लोटे से बचा हुआ जल उन्हें पीने को दिया और इधर–उधर दौड़ाया । थोड़ी देर में उनका दर्द जाता रहा ।

उसी दिन महाराज के साथ आये हुए पण्डित मामा के पेट में भी दर्द हो गया । बाबा ने तुरन्त उन्हें रैमसे अस्पताल, नैनीताल में भरती करवा दिया और दिन भर दर्शनार्थियों को उनकी कुशल पूछने अस्पताल भी भेजते रहे । एक भक्त ने उनसे पण्डित मामा के उपचार में भेद पूर्ण व्यवहार का कारण पूछा ? बाबा, बालक बाबा के सम्बन्ध में बोले, **"जिसको देखने वाला कोई नहीं होता, उसकी देख–भाल भगवान् करता है । पण्डित सम्पन्न आदमी है । वह अच्छा इलाज चाहता है और लोगों की सहानुभूति की इच्छा रखता है ।"**

(43) याद करते ही उपस्थित

एक बार मकर संक्रान्ति की पूर्व सन्ध्या में महाराज देव कामता दीक्षित जी के घर कानपुर पहुँचे और दूसरे दिन उन्हें साथ लेकर प्रयाग में मकर संक्रान्ति के लिये रवाना हुए । ये लोग लगभग चार बजे प्रातःकाल कार से चले, उस समय बाहर ऐसा घना कुहरा छाया हुआ था कि कार से कुछ आगे दिखायी नहीं दे रहा था । दीक्षित जी ने सुझाव के तौर पर बाबा से निवेदन किया कि अभी चार भी नहीं बजा है, अच्छा होता यदि कुछ समय कानपुर में ही बिता दिया जाता । बाबा चुप्पी साधे रहे और गाड़ी दो

कि.मी. आगे निकल गयी । रास्ते में चकेरी के पास बाबा ने एकाएक गाड़ी को एक बंगले में ले जाने का आदेश दिया । जैसे ही गाड़ी फाटक के भीतर पहुँची, श्री हीरालाल साह (हब्बा) जी बाहर आकर उनका स्वागत करने लगे । हब्बा जी प्रेम और आनन्द से विभोर हो कहने लगे, "बाबा ! मैं उठ कर अभी आपको ही याद कर रहा था । मन में यही इच्छा हो रही थी कि इस समय मुझे आपके दर्शन हो जाते ।"

(44) हलुए की चाह

श्री इफ्तिख़ार हुसैन आइ.ए.एस, रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज़, उत्तर प्रदेश एक बार नैनीताल से बाबा के दर्शन के लिये कैंची आश्रम जाने के लिये तैयार हुए । उन्होंने बाबा को अर्पित करने के लिये कुछ आम खरीदे, जिनमें एक आम कुछ भिन्न आकार का था जो उन्हें बहुत पसन्द आया । इस आम को देख कर इनके मन में विचार आया कि यदि बाबा यही आम उनको प्रसाद रूप में दे दें तो वे पहुँचे हुए फकीर माने जा सकते हैं । वे गाड़ी में बैठकर आश्रम को रवाना हुए । यह बात उनकी जानकारी में थी कि बाबा सभी को पूरी सब्जी का प्रसाद खिलाते हैं, इस कारण उनके मन में एक और विचार आया कि यदि वे गरम-गरम हलुआ खिला दें तो बात पक्की हो जायेगी । आपके आश्रम पहुँचने के पूर्व बाबा हलुआ बनाने का आदेश दे चुके थे । जब इफ्तिखार साहब कैंची पहुँचे तो बाबा उस समय अपनी कुटिया में बन्द थे । थोड़ी देर बाद जब दरवाज़ा खुला तो सभी लोगों ने कुटिया में प्रवेश किया । इफ्तिख़ार साहब ने ज्योंही सब आम बाबा के चरणों में रखे, वे मुस्कराये और तुरन्त उनकी पसन्द का आम उनके हाथों में रख दिया । यह देखकर वे चकरा गये और बोल उठे, "हुज़ूर ! मुझ से बड़ी गलती हुई ।" महाराज ने तुरन्त गरम-गरम हलुआ मंगाकर उन्हें खाने को दिया । अब तो कहना ही क्या था, इफ्तिखार साहब की आँखों से आँसू बह निकले और वे विनीत भाव से अपनी गलतियों की माफ़ी माँगने लगे ।

इस घटना का उल्लेख सम्वत् 2035 की स्मृति सुधा के पृष्ठ 41 में हुआ है ।

(45) "बड़े-छोटे का भेद नहीं"

कादम्बिनी नवम्बर 1984 तंत्र विशेषांक में डाक्टर आर.के करौली, महाराज के सम्बन्ध में, अपना अनुभव व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि एक

दिन दिल्ली में अस्पताल जाने के पूर्व वे उस कोठी में गये जहाँ बाबा ठहरे हुए थे । रास्ते में उन्होंने बाबा के लिये कुछ केले लेने की सोची पर ले नहीं पाये । वहाँ पहुँचने पर उन्हें दर्शनार्थियों की भीड़ में खड़ा होना पड़ा । इतने में एक उद्योगपति अपनी कार से उतर कर बाबा से मिलने सीधे भीतर चले गये । यह देखकर उनके मन में क्षोभ हुआ कि महात्माओं के पास भी धनी–मानी व्यक्तियों की पहुँच पहले हो जाती है । इस कारण उन्होंने अपने समय का सदुपयोग करने के लिये अस्पताल चले जाने का इरादा किया । वे वापस जाने को उद्यत हो ही रहे थे, इतने में आपसे एक आदमी ने आकर पूछा, "क्या आप ही डाक्टर करौली हैं ?" इनके स्वीकार करने पर उसने बताया कि महाराज ने आप को बुलाया है ।

आप जब महाराज के पास उपस्थित हुए तो वे बोले, **"तू केले नहीं लाया ? ले केले का प्रसाद ले"** और फिर कहने लगे, **"तू वापस जाने वाला था ? सुन, हमारे पास बड़े–छोटे के भेद का कोई सवाल नहीं है ।"**

(46) प्यास भर पानी

मैं (लेखक) जब प्रथम बार कैंची आश्रम आया, मुझे आश्रम के तौर–तरीकों का ज्ञान भी न था और न लोगों से मेरा विशेष परिचय ही रहा । मैंने एक दिन अपने एक सम्बन्धी को महाराज के कमरे से एक टुकड़ा रोटी का ले जाते हुए देखा । इससे मेरा कौतूहल जाग उठा और उससे पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह महाप्रसाद था । मेरी समझ में बात आयी, पर मेरी लालसा एक टुकड़े तक ही सीमित नहीं रही । मैं मन में सोचने लगा कि यदि बाबा के भोग के उपरान्त उनकी सम्पूर्ण थाली, बिना किसी से माँगे, मुझे प्राप्त हो सकती तो मैं इस महाप्रसाद को अपना सौभाग्य मानता । दूसरे ही दिन प्रातःकाल महाराज के भोग के उपरान्त नैनीताल निवासी श्रीमती शकुन्तला साह, जिनसे तब मेरा विशेष परिचय भी न था, बाबा के आदेश से, उस थाली को लेकर आश्रम परिसर में मेरे कमरे में गयीं, पर मैं उस समय मन्दिर में था । वे मुझे बुलाकर मेरे कमरे में ले गयीं और बोलीं, "मैं तुम्हारे लिये महाराज के प्रसाद की थाली लायी हूं" जिसे तब तक उन्होंने कपड़े से छिपा रखा था । मुझे यह देख महान् आश्चर्य हुआ । मैं बाबा की इस कृपा पर मोहित हो गया और अपने को धन्य समझने लगा ।

बाबा की उपस्थिति में, कैंची में यह सदा का मेरा अनुभव रहा कि जो भी उलटी–सीधी इच्छाएँ मेरे मन में पैदा हो उठतीं, वे मुझे तुरन्त पूरी होती दिखायी देती रहीं । फलतः मैं सोचने लगा कि मैं व्यर्थ इच्छा कर बाबा को बहुत कष्ट देता हूं । मुझे इस प्रकार इच्छा नहीं करनी चाहिये, पर परिस्थिति आने पर मैं अपने को विवश पाता और अपने संकल्प का मुझे ध्यान ही न रहता था ।

(47) कृपा का अनोखा रूप

एक बार चर्चलेन इलाहाबाद में श्री सुधीर मुकर्जी ने बाबा को लखनऊ से प्रकाशित एक कैलेन्डर दिखाया जिसमें हनुमान जी भगवान् राम के ध्यान में आनन्द–मग्न थे । उसे देखकर महाराज बोले, **"हनुमान जी मगन हैं और हम भी मगन हैं,"** और फिर कहने लगे, **"कल इस को मढ़वा कर पास की अलमारी में रख देना ।"** मैंने (लेखक) बाबा को दूसरे दिन सुन्दर काण्ड और हनुमान चालीसा के पाठ से उस छवि की वहाँ स्थापना का सुझाव दिया । उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली और यह कार्य मेरे ऊपर छोड़ते हुए आदेश दिया कि मैं इस कार्य की सूचना किसी को न दूं । आपने स्वयं उस दिन बृहत् भण्डारे का आयोजन कर दिया । यद्यपि इसका प्रचार नहीं किया गया पर यह समझ में नहीं आया कि कहाँ से इतने लोग इस शुभ कार्य में एकत्रित हो गये । भण्डारा अर्धरात्रि तक चलता ही रहा । अवश्य यह लीला उनकी प्रेरणा शक्ति की रही होगी ।

इस भण्डारे के बाद मेरे मन में अभिलाषा हुई कि अपनी उपासना हेतु मुझे भी वैसा ही कैलेन्डर प्राप्त करना चाहिये । मैंने इसके लिये इलाहाबाद में बहुत कोशिश की और एक बार जब मैं लखनऊ अपने घर गया हुआ था वहाँ भी इसके लिये प्रयत्नशील रहा, पर कहीं भी सफलता न मिली । मेरे भतीजे को एक दिन वह कैलेन्डर डी.ए.वी. (डिग्री) कालेज, लखनऊ के एक प्रवक्ता डा. हर नारायण सिंह के घर टंगा दिखायी दिया । उसने उनसे मेरे लिये उस कैलेन्डर की याचना की । डा. सिंह बोले, "मैं स्वयं हनुमान जी का भक्त हूँ । मैं अपने इष्ट देव की छवि का त्याग नहीं कर सकता।" मेरे भतीजे ने यह वृत्तान्त घर आकर मुझे सुनाया । उस रात जब डा. सिंह निद्रा के वशीभूत हुए तो उनके स्वप्न में हनुमान जी प्रकट हो गये और उन्होंने आदेश दिया कि उनकी छवि को वे प्रातःकाल ही मुझे सौंप दें और साथ में यह भी कहा कि मेरे द्वारा पूजा का जो फल होगा वह उन्हें प्राप्त

होगा । दूसरे दिन सबेरे मैं बाहरी कमरे में समाचार पत्र पढ़ रहा था, सिंह साहब ने आकर स्वतः अपना परिचय देते हुए अपने रात्रि के स्वप्न से मुझे अवगत किया और वह कैलेन्डर मेरे हाथ में दे दिया । मैं समझ गया कि मेरी बेचैनी महाराज से छिपी नहीं रही और सिंह साहब को हनुमान के रूप में दर्शन देने वाले स्वयं वे ही थे । सिंह साहब को सहर्ष धन्यवाद देते हुए मैं बाबा की इस कृपा पर द्रवीभूत हो गया । थे तो वे हनुमान ही । हनुमान जी का यह चित्र अब भी मेरे पास सुरक्षित है ।

(48) अभिलाषा की पूर्ति

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पास ही डाक्टर ब्रह्मस्वरूप सक्सेना का मकान था और वहीं वे सेवाभाव से होमियोपैथिक चिकित्सा भी किया करते थे । आपने बताया कि मेरे पास कभी-कभी असाध्य रोग के मरीज़ आते और कहते हमें बाबा नीब करौरी ने आपके पास भेजा है । मैं उनका इलाज करता और वे शीघ्र स्वस्थ हो जाते । मुझे अपनी सफलता पर आश्चर्य होता कि मेरी दवा बाबा के भेजे मरीजों पर जितना अच्छा कार्य करती है, उतना अन्य मरीजों पर नहीं । मैं बाबा को जानता नहीं था और न कभी मैंने उन्हें देखा था । इस कारण मुझ में उनके दर्शनों की अभिलाषा जाग उठी, पर अपने धन्धे को छोड़ कर उन्हें खोजना मेरे लिये सम्भव नहीं था ।

एक दिन, अपने नम्बर से, एक बड़े डील-डौल का व्यक्ति कम्बल ओढ़े, धोती पहने पर नगे पैर अपने एक आदमी के साथ मेरे कमरे में प्रविष्ट हुआ । बिना किसी दुआ सलाम के वह मेरे सामने खड़ा हो गया । पूछने पर उसने बताया कि वह हथेली में कुछ गर्मी महसूस करता है । मैंने निदान के लिये, इस सम्बन्ध में, कुछ प्रश्न पूछे, पर उसने किसी का भी कोई खास उत्तर नहीं दिया और बोला, **"जो दवा तेरी समझ में आवे दे दे ।"** मैं उसके इस व्यवहार से कुछ विचलित तो हुआ ही, पर मैंने आजमाइश के तौर पर एक दवा तीन दिन के लिये बना दी और चौथे दिन आकर हाल बताने को कहा । वह बोला, **"इतनी थोड़ी दवा से क्या होगा ? बहुत तायदाद में बना दे, अब हम जा रहे हैं फिर नहीं आयेंगे ।"** अपने साथ के आदमी से उसने मुझे बीस रुपये देने को कहा । मैंने उसकी वेश-भूषा और बोलने के ढंग से अनुमान लगाया कि वह अवश्य कोई बाबा है, पर उस समय कार्य की व्यस्तता के कारण यह ध्यान में नहीं

आया कि वे बाबा नीब करौरी भी हो सकते हैं । मैंने एक बड़ी शीशी में वह दवा भर कर दे दी । उस आदमी ने दस रुपये के दो नोट मेरी मेज में रख दिये । मेरे मना करने पर भी कि मैं साधुओं से दवा के पैसे नहीं लेता, वह नहीं माना । दवा लेकर वे दोनों चले गये । मैंने उसी समय उन नोटों को दान पेटी में डाल दिया ।

इसके बाद जब दूसरा मरीज़ मेरे कमरे में आया तो वह साधारण शिष्टाचार के बाद स्वतः बोला, "आप जानते हैं जो अभी आपके कमरे से बाहर गये, वे कौन थे ?" मेरी अनभिज्ञता पर उसने बताया कि वे बाबा नीब करौरी थे । भारत की यह महान् विभूति आपके द्वार पर दो घन्टे अपने नम्बर की प्रतीक्षा में बैठी रही । मैं यह सुनकर स्तब्ध रह गया । मुझे अत्यधिक ग्लानि हुई कि मैं अज्ञानतावश उनका यथोचित सम्मान भी न कर सका । बाहर खोजने पर भी वे नहीं मिले ।

(49) मौसमी फल

बनारस के श्री शंकर प्रसाद व्यास कैंची आश्रम में अपने कमरे में बैठे थे और वहाँ फलों की चर्चा हो रही थी । वे इस सम्बन्ध में योंही कह बैठे कि बाबा की कृपा से सभी कुछ खाने को मिला, पर मौसमी फल आम के दर्शन नहीं हुए । इसके कुछ समय बाद ही वे मन्दिर परिसर में आये जहाँ बाबा अपनी कुटिया में विराजमान थे । इन्हें देखते ही बाबा बोल उठे, **"आम खाने को नहीं मिला ?"** आप बाबा की बात सुन कर लज्जित हुए और चुपचाप उनके पास बैठ गये । थोड़ी ही देर में एक भक्त एक टोकरी आम लेकर बाबा के सामने उपस्थित हुआ और उसने वह टोकरी बाबा को अर्पित की । उन्होंने पास में खड़े एक परिकर से उस टोकरी को व्यास जी के कमरे में पहुँचाने को कहा । व्यास जी हाथ जोड़े विनम्र भाव से निवेदन करने लगे, "बाबा, मैं अपने कमरे में आम की बात बिना मतलब कर रहा था । अब इतने आमों का मैं क्या करूंगा ?" ऐसा कह कर उन्होंने थोड़े आम उस टोकरी से निकाल कर अपने हाथों में ले लिये । बाबा उन्हें देख मुस्कराते रहे ।

(50) सेवा का अवसर

जब कभी बाबा एक स्थान से दूसरे को जाते तो भक्तजन अपनी-अपनी ओर से सेवा में उद्यत् हो जाते । कोई उनकी गाड़ी में पैट्रोल

भरवाता या कोई उनके और उनके साथ के लोगों के लिये रेल गाड़ी के प्रथम श्रेणी के टिकट खरीद लाता । एक बार इलाहाबाद में एक भक्त के मन में ऐसी ही चाह पैदा हुई । जब महाराज इलाहाबाद से चलने के लिये उद्यत् हुए तो आप टिकटों के लिये रुपये जेब में रख कर उनके साथ गये । प्रयाग स्टेशन पहुँचने पर आप उनके पीछे-पीछे चलते ही रहे और संकोचवश पूछ नहीं पा रहे थे कि टिकट मैं ले आऊं । बाबा आपकी ओर मुड़ कर बोले, **"जेब में नोट लिये फिर रहा है, टिकट क्यों नहीं लाता ?"**

(51) भाव के भूखे

श्री भुवन चन्द्र तिवारी सम्प्रति अधीक्षक, रोडवेज स्टेशन, नैनीताल महाराज के पुराने भक्त हैं । आप जब भी उनके दर्शन करने जाते कुछ न कुछ खाद्य पदार्थ बाबा के भोग के लिये अवश्य ले जाते थे । एक दिन आपको भवाली में फलों की दुकान में छोटी नाशपातियां दिखायी दीं । आपने एक सेर नाशपातियां चुन-चुन कर थैले में इस भाव से रखीं कि जो भी नाशपाती बाबा खालें वह अच्छी हो । इन फलों को धो और पोंछ कर आप इन्हें एक थैले में लेकर भूमियाधार आश्रम पहुँचे । महाराज वहाँ मन्दिर से कुछ दूर पर सड़क की दीवार पर बैठे थे और वहीं उनका दरबार लगा था अनेक भक्त गण वहाँ मिष्ठान्न और मेवे भेंट कर रहे थे । आपने भी अपना थैला उनके आगे रख दिया । बाबा ने लोगों से वार्ता करते-करते आपके थैले से एक-एक कर सभी फल खा लिये और मुस्कराते हुए खाली थैला आपकी ओर बढ़ा दिया । अन्य सब प्रसाद उन्होंने उपस्थित लोगों में बंटवा दिया । आप बाबा की कृपा पर गद्‌गद् हो गये और सोचने लगे कि बाबा भोज्य पदार्थ में भी लाने वाले व्यक्ति के भाव को देखते हैं ।

(52) कुभाव का स्वागत

एक उद्देश्यहीन, बेरोजगार युवक महाराज के दर्शन करने आया । उसके सार हीन जीवन पर बाबा को दया आ गयी । उन्होंने उपस्थित अधिकारियों से कह कर उसे अच्छी नौकरी दिलवा दी और उसके घर वालों से कह कर अच्छे घर में उसका विवाह भी करवा दिया । इस प्रकार एक गृहस्थ के रूप में उसे सुख-पूर्ण जीवन व्यतीत करने का सुअवसर दिया । नौकरी पाकर उस

व्यक्ति ने अपनी आदतें बिगाड़ लीं और अपने खर्चे इस प्रकार बढ़ा लिये कि वह परेशान हो गया । उसे अपना गृहस्थ भार मालूम देने लगा । उसका विवेक नष्ट हो चला । वह बाबा को अपने विवाह के लिये दोषी मानने लगा और उनकी जान का ग्राहक हो गया । एक दिन वह श्री सूरज नारायण के घर लखनऊ में दर्शन करने के बहाने उस कमरे में प्रविष्ट हुआ जहाँ बाबा विराजमान थे । बाबा ने उसे देखते ही अपना कम्बल अलग रख दिया और अपना सीना उसे दिखाते हुए बोले, **"मारना चाहता है ? ले मार ।"** वह उनकी मुद्रा और उनमें अपने इरादों की जानकारी देख, पराये घर में हक्का–बक्का हो गया । एक महाशय तुरन्त उसका हाथ पकड़ कर बाहर ले गये और उससे पूछने लगे, "क्या बात है ?" उस व्यक्ति का साहस जवाब दे गया और उसके मुँह से सच्ची बात निकल आयी । वह अपना सिर नीचा कर वहाँ से चला गया ।

(53) चिन्ता से छुटकारा

वन विभाग, उत्तर प्रदेश, नैनीताल कार्यालय के श्री पूरन चन्द्र जोशी एक बार भूमियाधार आश्रम में बाबा की सेवा में लगातार पन्द्रह दिन लगे रहे । इस दौरान आपने न अपने घर की चिन्ता की और न कार्यालय की । आपकी पत्नी इनकी इस लम्बी अनुपस्थिति से परेशान रहीं । कुछ लोगों ने उन्हें सुझाया कि जोशी जी का विचार सम्भवतः साधु बनने का है, इसलिए उन्हें समय पर घरवालों को खबर करनी चाहिये ताकि वे आकर उनको समझावें । आपकी पत्नी को विश्वास नहीं हुआ कि उनके पतिदेव साधु बन सकते हैं और घरवालों को वे अकारण परेशान नहीं करना चाहती थीं । इतने पर भी उनके मन में चिन्ता घर कर गयी । दूसरे ही दिन महाराज भूमियाधार से इनके घर आ गये और कहने लगे, **"तू सोच रही थी कि तेरा पति साधु बन जायेगा । तू क्यों परेशान होती है, अगर वह साधु बन सकता तो हम तुझे आनन्दमयी बना देते ।"**

(54) अधीर मन को शान्ति

श्री रमेश चन्द्र पाण्डे, दिगम्बर जैन डिग्री कालेज, बड़ौत, जिला मेरठ कहते हैं कि हमारे विवाह की लड़की वालों के घर तैयारी हो रही थी और लड़की की चाची, जिन्हें यह कार्य करना था, धन के अभाव में मन ही मन बहुत चिन्तित थीं और सोच नहीं पा रही थीं कि कैसे यह कार्य होगा ।

'पर हित द्रवहिं सन्त सुपुनीता', महाराज अपने भक्त के घर पहुँच गये और कुछ इधर–उधर की बातें करने के बाद, वे जानेको उद्यत् हो गये । चलते समय वे चाची से बोले, **"तू रुपयों की चिन्ता क्यों करती है ? अपने उस बक्से में देख, तूने उसमें रुपये रखे हैं ।"** बाबा के जाने के बाद चाची सोचने लगीं कि बाबा को कैसे पता हुआ कि मैं उस बक्से में रुपये रखती हूँ ? वे अपनी धनराशि जानती थीं, इस कारण बक्सा खोल कर देखने की उत्सुकता उनमें नहीं रही । एक बार जब उन्होंने किसी काम से उस बक्से को खोला तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा । बक्सा नोटों से भरा था । वे बाबा की इस महिमा से द्रवित हो गयीं । अब क्या था, विवाह कार्य बड़ी सरलता से सम्पन्न हो गया ।

(55) गरीब का एक रुपया

महाराज के भक्त श्री प्रेम लाल लखनऊ में टीटागढ़ पेपर मिल के मैनेजर थे । बाबा कभी आपके घर आकर दर्शन दे दिया करते थे । एक दिन वे कुछ भक्तों के साथ आये हुए थे । प्रेम लाल जी के घर एक नौकर बर्तन साफ़ करने आया करता था । उसने उस घर में बाबा की कुछ चर्चाएँ सुनी थीं और वह उनके दर्शनों का इच्छुक था । अपना काम करने के बाद, वह नगे बदन उस कमरे की देहरी में श्रद्धा से सिर झुकाये बैठ गया जहाँ बाबा विराजमान थे । बाबा ने उससे पूछा – **"तू जब अपने गुरू के पास जाता था, उसे एक रुपया देता था ?"** उसने अपने झुके सिर को हिलाते हुए स्वीकार किया । बाबा फिर बोले, **"अपनी कमर में खोंस कर मेरे लिये भी एक रुपया लाया है ?"** उसने फिर उसी प्रकार स्वीकार किया। वे कहने लगे, **"ला फिर देता क्यों नहीं ?"** उसने रुपया निकाल कर बाबा के हाथ में रख दिया । महाराज ने, जो लाखों की भेंट ठुकरा देते थे, आज इस गरीब के एक रूपये को बड़े प्रेम से अपने पास रख लिया और उसे विदाकर वे अपने भक्त जनों से कहने लगे, **"इस गरीब का एक रुपया तुम लोगों के बीस हजार रुपयों से भी अधिक मूल्य रखता है ।"**

(56) आदेश की सार्थकता

महाराज चर्चलेन इलाहाबाद में आये हुए थे । एक महिला, जगाती निवास कर्नलगंज इलाहाबाद से, बाबा के दर्शन करने आयी । उसे देख कर

महाराज बोले, **"तबीयत तो ठीक है ?"** महिला देखने में स्वस्थ थी उसने उत्तर दिया, "बाबा, ठीक हूँ ।" वे तुरन्त बोले, **"लेडी डाक्टर बरार को दिखा और वह जो इलाज कहे, उसे पूरा करना । रुपयों की चिन्ता मत करना । रुपये हम दे देंगे । वह सोलह रुपये फीस लेती है ।"** इस महिला ने पुनः निवेदन किया, "मैं स्वस्थ हूँ, मुझे किसी प्रकार के इलाज की ज़रूरत नहीं है ।" बाबा ने उसकी बात नहीं मानी और कहने लगे, **"हमारी आज्ञा है, नहीं मानती ? पैर पड़ जायेंगे तो घरवाले भी नहीं पूछेंगे ।"** उनकी वाणी सुनकर वह महिला मन ही मन भयभीत हो गयी । जब वह स्वयं स्वस्थ अनुभव कर रही थी तो घरवालों से कह ही क्या सकती थी । बाबा की आज्ञा का पालन करना ज़रूरी था, वह घरवालों को बिना जाहिर किये डा. बरार के पास गयी । उसने पूरी जांच-पड़ताल करने के बाद बताया कि आप समय पर आ गयीं ठीक हो जायेंगी । उसने एक लम्बा इलाज बताया और इन्हें रोज इन्जेक्शन लगवाने पड़े । इस प्रकार महाराज ने इन्हें आने वाली घोर व्यथा से बचाया ।

(57) "इस बस से नहीं"

कैंची आश्रम में कुछ समय निवास करने के बाद पं. शंकर प्रसाद व्यास जी अपने घर बनारस लौटने की तैयारी करने लगे । उन्होंने रेलवे स्टेशन काठगोदाम पहुँचने के लिये एक सुविधाजनक बस भी निश्चित कर ली और बाबा के पास उनका आशीर्वाद लेने उपस्थित हुए । महाराज बोले, **"तू इस बस से नहीं जायेगा ।"** पर उसी दिन उन्होंने आप को दूसरी बस से विदा कर दिया । आप कहते हैं कि जिस बस से मैं जाना चाहता था, वह रास्ते में मुझे एक दुर्घटना से क्षतिग्रस्त दिखायी पड़ी । महाराज के शब्दों की यथार्थता तब मैं समझ पाया।

(58) चाचा का सामीप्य

कानपुर में श्री देवकामता दीक्षित बाबा के अनन्य भक्त हैं । सन् 1946 में आपको महाराज के दर्शन अपने चाचा दुर्गा शंकर दीक्षित जी के साथ नैनीताल में हुए । इस दर्शन में बाबा ने इन्हें आदेश दिया था कि **वे अपने चाचा का सामीप्य बनाये रहें और वैद्य-डाक्टरों के चक्कर में न पड़ें । आपको बाबा ने खूब घूमने और फल खाने की राय दी ।** बिना किसी प्रसंग के अपनी बीमारी के सम्बन्ध में

बाबा की वार्ता सुन कर इन्हें आश्चर्य हुआ । बाबा की महानता से परिचित न होने के कारण आप उनके आदेशों को महत्त्व न दे सके, पर किसी अज्ञात प्रेरणा से आप निष्प्रयोजन स्वतः वही करते रहे जो बाबा ने आप से करने को कहा था । यथार्थ में वैद्यों ने आपको गम्भीर रोग से ग्रस्त समझा था, जब कि वैसा कुछ था नहीं । बाबा के आशीर्वाद से आप स्वस्थ हो गये और चाचा से सामीप्य बनाये रखने से उन्होने अपनी बुढ़वल सुगर मिल की देख–भाल का कार्य आप पर ही छोड़ दिया, यद्यपि इसकी आकांक्षा आपने की नहीं थी ।

(59) "भाग यहाँ से"

श्री जगन प्रसाद रावत, मन्त्री, उत्तर प्रदेश सरकार, रानीखेत में पब्लिक एकाउन्ट्स कमेटी की मीटिंग के बाद अनेक लोगों के साथ भूमियाधार बाबा के दर्शन करने गये । महाराज ने सब को बहुत प्रसाद खिलाया । आप कुछ देर और उनके पास रहना चाहते थे पर वे एकाएक बोले, **"भाग जा, तू भाग अभी यहाँ से ।"** आप उनकी आज्ञा मानकर नैनीताल चले आये । आप कमरे में आकर बैठे ही थे, भूकम्प आ गया । यदि आज्ञा पालन में आप थोड़ा विलम्ब कर बैठते तो पहाड़ी रास्ते में कोई भी दुर्घटना हो सकती थी ।

इस घटना का उल्लेख स्मृति–सुधा सम्बत् 2038 के पृष्ठ 27 में भी हुआ है ।

(60) आदेश की अवहेलना

एक बार हनुमान गढ़, नैनीताल में महाराज ने अपने एक भक्त श्री भगवती प्रसाद से, जिन्होंने बाद में इन्सपैक्टर आफ स्कूल्स, उत्तर प्रदेश के पद से अवकाश प्राप्त किया, कहा, **"तू जा हनुमान जी के आगे हनुमान चालीसा का पाठ कर और कहीं मत जाना ।"** उनका प्रयोजन अवश्य आपके आगामी अनिष्ट का निवारण रहा होगा । इतने में काशीपुर राजा साहब की कार बाबा को लेने आ गयी और वे उसमें बैठ कर चले गये । बाबा के जाते ही अन्य भक्तगण भी अपने–अपने घरों को जाने लगे । भगवती प्रसाद जी का वहाँ अकेले मन नहीं लगा, वे भी अन्य लोगों के साथ ही चल दिये । आपने बाबा के आदेश के पालन की आवश्यकता नहीं समझी । मार्ग में एक बड़ा पत्थर पहाड़ के ऊपरी भाग से लुढ़कता हुआ नीचे सड़क में आ गिरा जिससे केवल आप को आघात पहुँचा और

साथ के अन्य लोगों को कोई क्षति नहीं आयी । आपको उसी समय रैमसे अस्पताल में भरती करना पड़ा ।

(61) चेतावनी

हाजी नामक एक मुसलमान सिपाही, जो कैंची आश्रम के प्रवेश द्वार पर पहरा दिया करता था, अन्य दिनों की भांति ड्यूटी में जाने के पहले एक दिन बाबा के दर्शन करने आया । महाराज हँसते हुए बोले, **"हाजी ! आज का दिन खराब है, अपनी ड्यूटी छोड़ कर कहीं मत जाना ।"** हाजी नमन कर अपने काम में चला गया । दिन में वह बाबा का आदेश भूल गया और प्रवेश द्वार को छोड़ बस स्टैन्ड की ओर चल पड़ा । रास्ते में एक केले के छिलके पर उसका पैर फिसला और वह गिर गया । उसके हाथ की हड्डी टूट गयी और उसे उसी समय अस्पताल भेजना पड़ा । उसे बहुत अफ़सोस रहा कि उसने बाबा की ताकीद पर पूरी तरह अमल नहीं किया ।

(62) विशेष साधना की मनाही

श्री गंगा प्रसाद शास्त्री बाबा के प्रिय भक्त रहे । एक दिन आपने बाबा से प्रश्न किया कि मेरी साधना पूर्ण होगी या नहीं ? इस पर बाबा ने उत्तर दिया, **"पंडित, तुम पर हनुमान जी की पूर्ण कृपा है, पर अब विशेष साधना मत करना, तकलीफ हो जायेगी ।"** शास्त्री जी ने अनुमान लगाया कि बाबा मेरी वृद्धावस्था को देख कर ही ऐसा कह रहे हैं । उन्होंने अपने में सामर्थ्य देखी और एक दिन हनुमान जी का अनुष्ठान आरम्भ कर दिया । एक साधारण दुर्घटना में आपके कूल्हे की हड्डी टूट गयी और वे चलने फिरने से लाचार हो गये । इसी असहाय दशा में आपकी मृत्यु भी हो गयी । जब-जब आपको बाबा की याद आती, आप यही कहते थे, "बाबा ने सच्ची बात कही थी, पर मैं समझा नहीं । यदि मैं उनकी बात मान लेता तो यह भुगतान न होता ।"

यह अनुभव स्मृति-सुधा 2034 के पृष्ठ 23 से लिया गया है ।

(63) विवाह की मनाही

श्री रमेश चन्द्र पाण्डे, दिगम्बर जैन डिग्री कालेज, बड़ौत, मेरठ कहते हैं कि आपके घर में एक लड़की का विवाह कहीं हो नहीं पा रहा था, इससे

घर के लोग चिन्तित रहा करते । ज्योतिषियों ने जन्म पत्री देख कर बताया कि विवाह का योग बत्तीसवें वर्ष में है । इस वर्ष विवाह तय भी हो गया और उसके लिये तैयारियां की जा रही थीं । एकाएक एक दिन घर में बाबा का आगमन हुआ । सभी लोगों ने उन्हें प्रणाम किया, पर जब वह लड़की नमन करने लगी तो महाराज बोल उठे, **"तू अपना विवाह मत करना"** । उनके चले जाने के बाद उनकी बात को साधारण रूप में लिया गया क्योंकि उसका महत्व कोई समझ नहीं पाया । समय आने पर विवाह हुआ, पर विवाह के पाँचवे महीने वह विधवा हो गयी ।

(64) 'फिर खाना बनाओ'

एक दिन लगभग दस बजे गाड़ी से उतर कर महाराज कुछ भक्तों के साथ डाक्टर ए.डी. भण्डारी के निवास स्थान बरेली पधारे । भण्डारी जी ने सब को भोजन कराया । कुछ समय बाद बाबा बोले, **"खाने की मेज साफ़ करो और सात आदमियों के लिये फिर खाना बनाओ ।"** उनकी आज्ञा का पालन कर अतिथियों के आगमन की प्रतीक्षा हो रही थी । शाम होने से पहले ही लखनऊ से श्री प्रेम लाल सपरिवार वहाँ पहुँचे । प्रेम लाल जी ने यहाँ आने के सम्बन्ध में बाबा से कुछ नहीं कहा था और न भण्डारी जी को ही इसकी सूचना भेजी थी । उन्हें बाबा को वहाँ देख कर आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता हुई । यह जान कर कि उनके लिये वह भोजन बाबा के ही आदेश से तैयार किया गया था सारा परिवार उनके इस अपनत्व से द्रवित हो गया ।

(65) बच्चों की तृप्ति

अक्टूबर का महीना था । पहाड़ में सर्दी बढ़ने लगी थी, इस कारण कैंची आश्रम में दर्शनार्थियों की भीड़ भी कम हो गयी । एक दिन दो बजे श्री कुन्दन लाल साह, इन्जीनियर, रानीखेत से अपने निवास स्थान बरेली जा रहे थे । आश्रम के पास गाड़ी रोक कर महाराज के दर्शन हेतु आप भीतर चले आये । बाबा के पास उस समय चार व्यक्ति बैठे थे । थोड़ी देर में उनकी प्रेरणा से कई माइयाँ नैनीताल से दर्शनार्थ आ पहुँची । बाबा ने सब माइयों को भण्डारगृह में पूरी बनाने का आदेश दिया । साह जी कहते हैं कि मैं मन ही मन सोचने लगा कि हम लोग केवल पाँच आदमी यहाँ उपस्थित हैं और आश्रम के सभी लोग प्रसाद पा चुके हैं, इतनी माइयाँ कितनी पूरियाँ बनायेंगी ! फिर मन में विचार आया कि इतनी पूरी सब्जी

बनाने का अवश्य कोई अन्य प्रयोजन होगा । शाम के सात बजे एकाएक बिना किसी पूर्व सूचना के राजस्थान के स्काउटों की दो बसें पर्वतीय स्थानों का भ्रमण कर द्वाराहाट, रानीखेत होते हुए कैंची आश्रम के प्रवेश द्वार पर आ लगीं । बाबा बच्चों को देखकर बहुत प्रसन्न हो गये । उन्होंने सब को भर पेट भोजन करा कर तृप्त कर दिया ।

(66) कल्पनातीत सुख–सुविधायें

एक दिन महाराज ने रात भर पूरी सब्जी बनाने का आदेश दिया । कई मन पूरियाँ उतारी गयीं । आश्रम में कोई उत्सव था नहीं । बाबा के इस आदेश का प्रयोजन किसी की समझ में नहीं आया । दूसरे दिन अन्य दिनों की भाँति जितना प्रसाद वितरण होना था हुआ और अत्यधिक मात्रा में तैयार सामान बचा रह गया । इतना सामान व्यर्थ हो जायेगा ऐसी शंका कार्यकर्ताओं के मन को विचलित कर रही थी । इतने में शाम के समय आश्रम के सामने की सड़क में एक बस में मशीन सम्बन्धी कुछ खराबी आ जाने से वह चालक के नियन्त्रण के बाहर हो गयी और सड़क की दीवार से टकरायी । उसके आगे के दो पहिये सड़क के बाहर खड्ड में चले गये और गाड़ी सड़क के आर–पार इस प्रकार खड़ी हो गयी कि उसके दोनों ओर लगभग डेढ़ सौ बसों का जमघट हो गया । उस समय कैंची में एक चाय की दुकान के अलावा और कोई दुकान नहीं थी । धीरे–धीरे कैंची की घाटी में अंधेरा हो चला और इस विषम परिस्थिति का किसी के पास उपचार भी न था । बस में बैठे लोगों को भूखे रह कर रात भर सर्दी खानी थी । बाबा ने सब लोगों को आश्रम में बुलाकर गरम–गरम चाय पिलायी और भर पेट खाना खिलाया । महिलाओं और बच्चों को बिस्तर दे कर आश्रम में सुलवाया और मर्दों को कम्बल दिये ताकि वे बस में रात गुज़ार सकें और अपने सामान की देख–भाल भी कर सकें । यात्रियों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा । जो सुख–सुविधायें उन्हें प्राप्त हुयीं उसकी उस समय उस निर्जन स्थान में वे कल्पना भी नहीं कर सकते थे । आश्रम के कार्यकर्ताओं की तो आँखे खुल गयीं, उनके हर्ष का पारावार न रहा ।

(67) भूखे को भोजन

श्री भुवन चन्द्र तिवारी तब रोडवेज स्टेशन भवाली में लिपिक थे जब कि आपको एक दिन किसी की एवज़ी में काम करने ब्रिवरी स्टेशन भेजा गया । आप उस दिन घर से बिना खाये ही काम पर चले गये थे और

वहाँ अवकाश न मिल पाने के कारण भूखे ही काम करते रहे । महाराज तब भूमियाधार में थे, वे अपने भक्त को भूखा न देख सके । तिवारी जी बताते हैं कि बाबा ने दिन के एक बजे एक बड़े टोकरे में पूरी सब्जी आदि बंधवाकर ब्रिवरी स्टेशन को जाती हुई एक बस के कण्डक्टर के द्वारा उनके पास भिजवा दिया । बाबा की इस कृपा से वे आनन्द विभोर हो उठे । उन्होंने वह प्रसाद वहाँ उपस्थित सभी व्यक्तियों को दिया और स्वयं भी प्रेम से इसे ग्रहण किया ।

(68) डा. भोंसले की क्षुधा पूर्ति

घटना भारत के स्वतन्त्र होने के कुछ दिन पूर्व की है । मालिश के द्वारा असाध्य रोगों का उपचार करने वाले बम्बई के डाक्टर भोंसले राजनैतिक आन्दोलन में फरार थे । पुलिस उनका पीछा कर रही थी । आप ऋृषिकेश की एक धर्मशाला में छिपे थे और कई दिनों से आपको भर–पेट भोजन भी प्राप्त नहीं हो पा रहा था । अचानक इनके कमरे में बाबा ने प्रवेश किया और वे एक सुपरिचित की भाँति आप से बोले, **"अरे, तुझे तो बड़ी भूख लगी है । कई दिनों से तुझे खाना भी नहीं मिला है ।"** इतना कहकर वे अपने साथ ही आपको दूसरे कमरे में ले गये, जहाँ पहले से ही आपके लिये खाने की थाली लगी थी । जब आप भोजन कर चुके, तब बाबा आपसे कहने लगे, **"यहाँ से अब भाग जा, पुलिस तेरा पीछा करते हुए आ रही है ।"** और पूछने लगे, **"कहाँ जायेगा ?"** बिना आपके कुछ कहे स्वयं सुझाव देने लगे, **"हिमालय होते हुए सीधे तिब्बत चले जाना ।"** आप बाबा के आदेश को मानकर तिब्बत चले गये और वहाँ कई वर्ष स्वतन्त्रता पूर्वक रहे । बाद में राजनैतिक परिस्थिति के बदलने पर आप भारत लौटे ।

उस समय आप कानपुर में श्री शिव नारायण टण्डन, भूतपूर्व संसद सदस्य के घर उनके भतीजे के इलाज के लिये आये थे । उनके घर में बाबा के चित्रों को देख आप उनके सम्बन्ध में वार्ता करने लगे । टण्डन जी के यह बताने पर कि बाबा इन दिनों लखनऊ में श्री सूरज नारायण मेहरोत्रा के घर में विराजमान हैं, आप तुरन्त कार द्वारा लखनऊ को चल दिये और आठ बजे रात मेहरोत्रा जी के घर में आकर आपने बाबा के दर्शन किये । आप बाबा के चरणों को अपने हाथ में लेकर बहुत देर तक मलते रहे और तभी आपने यह बीस वर्ष पुरानी घटना सुनायी ।

इस घटना का उल्लेख सम्वत् 2040 की स्मृति सुधा के पृष्ठ 87 में हुआ है ।

(69) शुभ कार्य की इच्छा

एक बार श्री माँ अन्य कई माइयों के साथ महाराज जी के दर्शन करने शाम को बहुत देर से कैंची पहुँचीं । बाबा वहाँ नहीं थे । वे भूमियाधार चले गये थे । उस समय नैनीताल वापस जाने के लिये कोई बस नहीं थी । यद्यपि कैंची में रहने की सब सुविधायें थीं और उस रात्रि में बारह किलोमीटर दूर भूमियाधार पैदल जाने का साहस भी जुटाना कठिन था, फिर भी वे बिना कुछ खाये भूमियाधार को चल पड़ीं । उस अंधेरे में कहीं से एक काला कुत्ता आ गया और उनकी सुरक्षा हेतु बराबर रास्ते भर उनके साथ रहा । अर्ध रात्रि में जब माँ भूमियाधार पहुँचीं तो उनकी इच्छा हुई कि उस कुत्ते को खाना खिला दें, पर वह ऐसा ओझल हुआ कि फिर दिखायी नहीं दिया ।

अस्तु, महाराज भूमियाधार से ही सब कुछ देख रहे थे । उन्होंने ब्रह्मचारी जी को माइयों के लिये भोजन तैयार करने का आदेश दे दिया था । ब्रह्मचारी जी आप लोगों की प्रतीक्षा में बाहर बैठे थे । वहाँ पहुँचते ही उन्होंने आप लोगों को गरमा-गरम भोजन करवाया । इसके बाद जब महाराज के दर्शन हुए तो वे आप लोगों के साहस की सराहना करते हुए कहने लगे, **"शुभ कार्य की इच्छा को भयवश दबाना नहीं चाहिये ।"**

(70) महाराज की परीक्षा

हल्द्वानी निवासी डाक्टर राम लाल शाह कहते हैं कि घटना कैंची आश्रम निर्माण से पूर्व अर्थात् सन् 1962 के पहले की है । एक दिन महाराज भूमियाधार आये थे । इसकी सूचना हमें उस समय मिली जब हम इन्द्रा फार्मेसी, नैनीताल में एक दाँत के डाक्टर के साथ चाय पी रहे थे । यह डाक्टर बाद में साधु हो गया और अब उसका शरीर भी शान्त हो चुका है । उस डाक्टर ने प्रस्ताव रखा कि चलकर महाराज की परीक्षा ली जाय और इसके लिये उसने तुरीयावस्था से सम्बन्धित एक प्रश्न भी तैयार कर लिया । हम दोनों एक बस में बैठ कर भूमियाधार पहुँचे ।

बाबा प्रायः परीक्षा का भाव रखने वाले की उपेक्षा करते थे । हमारा स्वागत भी वहां तदनुसार ही हुआ । बाबा का कमरा भक्त और दर्शनार्थियों से भरा था और देहरी पर सब के जूते बिखरे पड़े थे । हम लोगों को

बैठने के लिये भीतर कहीं स्थान नहीं दिखायी दिया । दरवाज़े से ही नमन कर हम लोग जूतों के ऊपर बैठकर उनके दर्शन करते रहे । बाबा ने एक नज़र हम लोगों पर डाली और बिना हमसे कुछ पूछे, उन्होंने अपने एक भक्त से योग वाशिष्ठ उठाकर सुनाने को कहा । उस व्यक्ति ने अपनी तबीयत से उस ग्रन्थ को खोला और जो भी पृष्ठ उसके सामने आया उसे सुनाने लगा । जो कुछ भी उसने सुनाया वह मेरे मित्र के अव्यक्त प्रश्न का पूर्ण उत्तर था । हम लोगों में उनकी महानता पर श्रद्धा जाग उठी और हम उन्हें प्रणाम कर चले आये ।

(71) शंका और समाधान

घटना ब्लण्ट स्क्वायर, लखनऊ मई 1944 की है, जब मुझे (लेखक को) प्रथम बार महाराज के दर्शन हुए । मैं सायंकाल कार्यालय से वापस आया ही था । घर के सभी लोग पड़ोस में बाबा के दर्शन करने के लिये उद्यत् हो रहे थे और मुझे भी साथ ले जाना चाहते थे । मैं बाबा को जानता नहीं था । यद्यपि साधु महात्माओं के वेष को मैं मन ही मन नमन किया करता था, पर साधु असाधु में भेद न जान सकने के कारण प्रत्यक्ष में, मैं अपने को सदा दूर ही रखता था । पड़ोस के घर में दर्शनार्थ जाकर भी प्रत्यक्ष रूप से नमन न करना अनुचित था, एतदर्थ मुझे घरवालों का प्रस्ताव स्वीकार नहीं हुआ । मुझे मन में इस बात की ग्लानि रही कि बिना औचित्य जाने, मैंने उनकी बात नहीं मानी । अतः सब लोगों के चले जाने के बाद मैंने अकेले बैठ कर ध्यान में बाबा को अपना मानसिक द्वन्द्व बताते हुए निवेदन किया कि यदि वे वास्तव में सन्त हैं तो मुझे अपने पास बुला लें या मेरे घर आकर मुझे कृतार्थ करें । उसी समय पड़ोस के घर में बाबा मेरी बहिन से पूछने लगे, **"तेरा भाई कहाँ है ? यहाँ क्यों नहीं आया ?"** उसने उत्तर दिया कि अभी कार्यालय से लौट कर आये हैं, घर पर ही हैं । बाबा ने उसे आदेश दिया, **"जा उसे बुला ला ।"**

जब बहिन ने आकर मुझे इन वार्ताओं से अवगत किया तो मैं चकित हो गया । ये वार्तायें मेरी शंका के उत्तर में थीं । मैं तुरन्त वहाँ गया और विनम्र भाव से उनके चरणों में नत मस्तक हुआ । उन्होंने मेरी ओर से आँखे फेर लीं । वे मुझ से कुछ नहीं बोले और तुरन्त उठकर दूसरे पड़ोसी श्री गार्गीदत्त मिश्रा के साथ उनके घर को चल दिये । उपस्थित सभी लोग उनके पीछे–पीछे वहीं पहुँच गये । मैं अकेला घर लौट आया । इस दर्शन से मुझे सन्तोष नहीं हुआ । अपने मन की शान्ति के लिये मैंने पुनः उनका

ध्यान किया और अपनी मनःस्थिति दर्शाते हुए 'घर पर आकर कृतार्थ करने' की प्रार्थना दोहरायी । थोड़ी देर में मैंने देखा कि उन सब लोगों के साथ बाबा हमारे घर आ गये । महाराज ने मेरी शर्त की पूर्ति हेतु मेरी बहिन को उन्हें घर ले आने की प्रेरणा दी । बाबा का घर में स्वागत हुआ । वे तख्त पर लेट गये और मैं उनके चरण दबाता रहा । वे उपस्थित सभी व्यक्तियों से बातें करते रहे, पर उन्होंने एक बार भी मेरी ओर दृष्टि नहीं डाली, जब कि मैं बहुत उत्सुक था । इसके बाद वे कार में बैठ कर चले गये ।

बाबा ने भले ही मेरी सब शर्तें पूरी करदीं पर इस से मेरे मन को विश्राम नहीं मिला । मिलता भी क्योंकर, यह सिद्धात्मा की परीक्षा लेने का दुष्परिणाम था । इस घटना के आठ वर्ष बाद टैगोर टाउन, इलाहाबाद में मुझे उनके पुनः दर्शन हुए । सम्भवतः यह अवधि प्रायश्चित की रही हो । इस बार वे मेरा हाथ पकड़ कर अपने साथ मुझे बाहर ले चले और एकान्त में गुनगुनाने लगे, **"रामहिं केवल प्रेम पियारा"** । वास्तव में बाबा तर्क से नहीं प्रेम से ही पाये जा सकते हैं । बाबा का हाथ पकड़ना भी विशेष महत्व रखता था, वे इस प्रकार उस व्यक्ति को सदा के लिये अपना लेते थे । तब से बराबर पूज्यपाद का सान्निध्य प्राप्त होता रहा, कभी वे घर में पधार कर कृतार्थ करते तो कभी बाहर उनके दर्शन हो जाते थे ।

(72) रणजीत सिंह को दर्शन

सरदार रणजीत सिंह, चालक, उत्तर प्रदेश परिवहन, जिन्होंने 30 जून 1983 से अवकाश प्राप्त कर लिया है, बरेली और गनई के बीच बस चलाया करते थे । आप कहते हैं कि मेरी गाड़ी सदा कैंची से होकर जाया करती थी । कैंची के आश्रम और मन्दिर मेरे सामने ही बने । यहाँ दर्शनार्थियों की भीड़ लगी रहती थी और मैं अपनी बस से यह सब देखता चला जाता था । कभी बस छोड़कर बाबा के दर्शन करने नहीं गया । भूमियाधार आश्रम इससे पहले बन चुका था और वह भी मेरे रास्ते में ही पड़ता था । एक दिन जब मैं भूमियाधार से आगे गनई को गाड़ी ले जा रहा था, मैंने वहाँ लोगों की बड़ी भीड़ देखी । पूछने पर मालूम हुआ कि वहाँ बाबा नीब करौरी आये हैं, जिन्हें कैंची आश्रम में लोग घेरे रहते हैं । यात्रियों की असुविधा के विचार से यहाँ भी मैंने अपने को लाचार पाया । मैं स्वयं को समझाने लगा कि सिद्ध महात्मा भगवान् के ही रूप होते हैं और यदि बाबा सिद्ध हैं, तो वे मेरे मन की बात जानकर कभी न कभी स्वतः दर्शन देंगे ।

दूसरे दिन प्रातः काल ही, जब मेरी गाड़ी उस आश्रम के पास से बरेली वापस जा रही थी बाबा वहीं एक मोड़ पर अकेले ऐसे खड़े थे जैसे मेरी प्रतीक्षा कर रहे हों । मैंने तुरन्त गाड़ी से उतर कर उन्हें प्रणाम किया । वे बोले, **"कहाँ जा रहा है ?"** और बिना मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये, कहने लगे, **"साधु लोगों को परेशान नहीं किया जाता, समझे ?"** मैंने अपनी भूल के लिये माफ़ी माँगी ।

(73) बालक की चतुराई

मेरे (लेखक के) चचेरे भाई ने उत्तर प्रदेश शिक्षा बोर्ड की हाई–स्कूल की परीक्षा नैनीताल से दी थी । यह बालक अनेक बार महाराज के दर्शन कर चुका था और घर में वह नित्य उनके मनुष्येतर कार्यों की चर्चा भी सुना करता था । एक दिन उसके मन में यह बात आयी कि क्यों न चल कर बाबा से अभी अपना परीक्षा फल जान लूं । वह कैंची आश्रम आया और सुअवसर पाकर उसने उनसे अपनी चिन्ता व्यक्त की । बाबा तुरन्त बालकों की भाँति बोल उठे, **"फेल हो जायेगा ।"** उनके बोलने के ढंग को देखकर उसका मन उनके कथन को सत्य मानने के लिये तैयार नहीं हुआ, फिर भी यह महापुरुष की वाणी है समझकर, वह चिन्ताग्रस्त हो गया । कई दिनों तक इस विषय में सोचता रहा और अन्त में एक दिन यह विचार कर कि बाबा को अपनी कही बात का विस्मरण हो गया होगा, वह वही प्रश्न पूछने फिर कैंची आया । उसने नये सिरे से बात चलायी और उनका उत्तर जानना चाहा । बाबा के आगे बालक की चतुराई क्या चलती ? अबकी बार वे सहज भाव से बोले, **"पास हो जायेगा ।"** उसे इस उत्तर से प्रसन्नता हुई, पर फिर यह सोचकर कि बाबा ने एक बार फेल और दूसरी बार पास कहा, वह दुविधा में पड़ गया । कई दिन बिताने के बाद वह एक दिन फिर कैंची गया और अवसर पाकर उसने वही प्रश्न किया । इस बार फिर उन्होंने **'फेल'** कह दिया । दो बार फेल सुन कर वह दुःखी हो गया । बाबा बोले, **"कैसे कैसे हमारा अन्दाज नहीं लगा सकते, यह बालक हमारा अन्दाज लेने आया है ?"** वह लड़का फेल हुआ और पूरक परीक्षा में उसका नाम प्रकाशित हुआ, जिसमें बाद को वह उत्तीर्ण घोषित हुआ ।

(74) गुरु मन्त्र का जाप

सन् 1966, जब घोड़ाखाल (जिला नैनीताल) में सैनिक स्कूल की स्थापना हुई तभी से खोचन ग्राम, अयोध्या के निवासी श्री आर.सी. श्रीवास्तव

वहाँ अध्यापक हैं । आपको प्रथम बार बाबा के दर्शन मार्च 1966 में कैंची में हुए । आप कहते हैं कि जैसे ही मैंने महाराज की कुटिया में प्रवेश किया वे कहने लगे, "आओ श्रीवास्तव, आओ," और उपस्थित लोगों से बोले, **"यह अयोध्या का रहने वाला है और इसका पिता जलकल विभाग में काम करता है ।"** उनकी इस वार्ता से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ क्योंकि मैंने इसके पूर्व उन्हें कभी देखा न था । मैं घोड़ाखाल में उनकी ख्याति सुनकर ही उनके दर्शन के लिये कैंची आश्रम में आया था । इसके बाद मैंने कई बार बाबा के दर्शन किये और हर बार उनका प्रभाव मुझ पर बढ़ता ही गया ।

मैंने अपने गुरु से नानक शाही मन्त्र ले रखा था, जिसका मैं नित्य जाप किया करता था । एक बार जब बाबा के दर्शन की इच्छा से मैं कैंची आया तो कुछ सोचकर उपस्थित दर्शनार्थियों के पीछे बैठ गया और अपने गुरुमन्त्र का मन ही मन जाप करते हुए उनके दर्शन करता रहा । बाबा मुझे बार–बार अपने पास बुलाते और फल देते जाते और मैं प्रसाद लेकर अपने स्थान पर जा बैठता और मन्त्र का जाप करने लगता । अन्त में मैंने बाबा से कहा कि आप सब फल मुझको ही दिये दे रहे हैं । इस पर बाबा मुस्कराते हुए धीरे से कहने लगे, **"तू हमारी परीक्षा जो ले रहा है । अच्छा, अब जा ।"** निःसन्देह बाबा की दृष्टि मेरी मनः स्थिति पर थी । मैं उनके सान्निध्य को छोड़ नही पा रहा था और अपने ऊपर उनके प्रभाव को कम करना चाहता था ताकि मेरी गुरुनिष्ठा सुरक्षित रह सके ।

(75) "जा हो गयी परीक्षा"

कु. गोदावरी बी.डी.ओ. गरमपानी कहती हैं कि एक दिन जब वे बाबा के दर्शन हेतु कैंची आश्रम आयीं तो उन्होंने उनको आम बिखेरते देखा । उन आमों के साथ एक लौंग की भी छोटी पुड़िया थी । सब आमों के बंट चुकने के बाद यह पुड़िया बाबा के हाथ में आ गयी । जो दर्शनार्थी इन आमों को लेकर आया था बाबा उससे कहने लगे, "तुम मियाँ–बीबी बहुत लड़ते हो । पत्नी को पति की सेवा करनी चाहिये और पति को भी बेकार क्रोध नहीं करना चाहिये । फिर लौंग की पुड़िया उसे देते हुए बोले, "कल तू घर में मेरी परीक्षा की बात कर रहा था, जा हो गयी परीक्षा ।" वास्तव में यह लौंग की छोटी पुड़िया बाबा की परीक्षा हेतु सप्रयोजन रखी गई थी ।

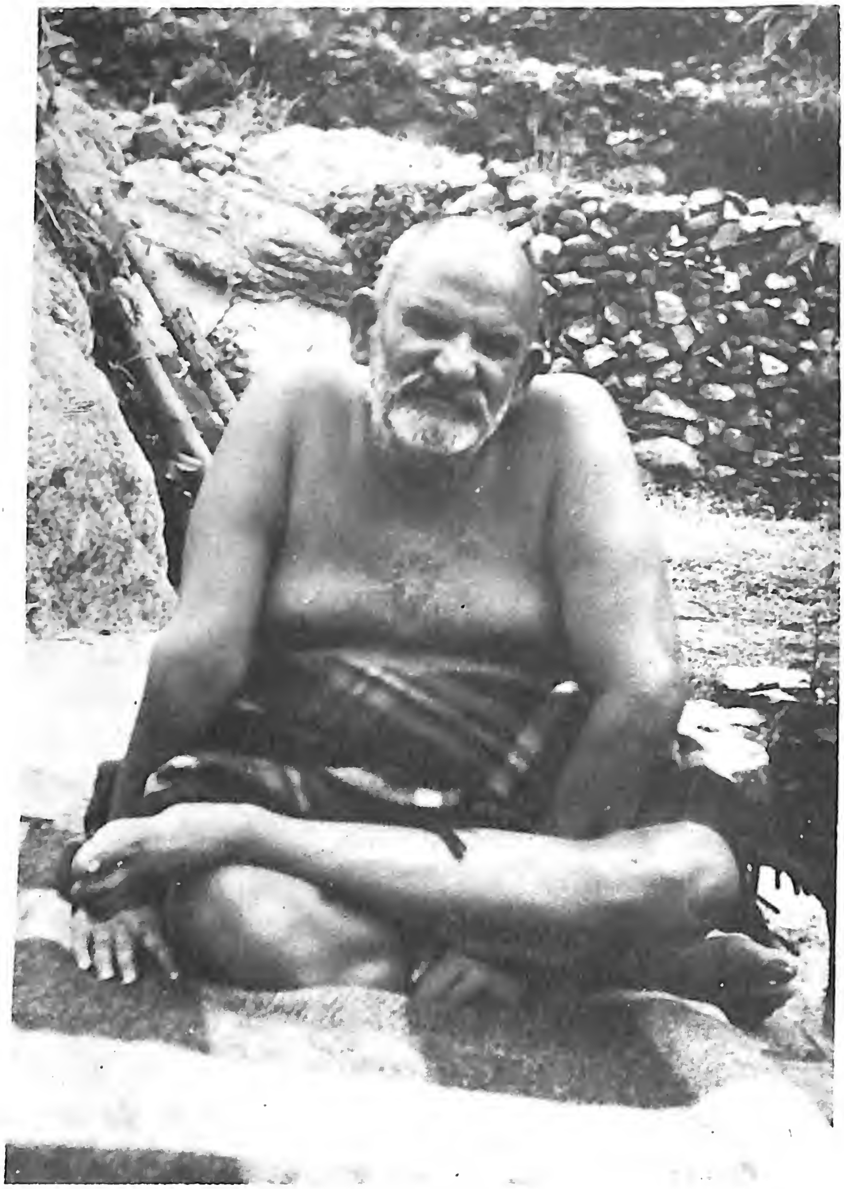

वक्षस्थल में भृगुपाद की झलक

सर्वव्यापकता

महाराज की मानवी देह अत्यन्त भ्रामक थी । वह देश और काल की सीमाओं से सदा बाहर रही । वे सर्व व्याप्त थे, कहीं दृश्यमान् हो जाते और कहीं अदृश्य । वे सर्वत्र अप्रत्यक्ष रूप से लोगों को देखते रहते और उनकी वार्तायें सुनते रहते और इस प्रकार जो भी समयोचित और श्रेयस्कर होता उसे करते थे । वस्तु उनके मार्ग में व्यंवधान नहीं थी । वे क्षणमात्र में कहीं भी उपस्थित हो सकते थे । बन्द कमरे में प्रवेश कर जाना या उससे बाहर आ जाना उनकी क्रीड़ा ही कही जा सकती है । उनकी लीलायें चरितार्थ करती हैं कि आकाश तत्व पर उनका पूर्ण अधिकार था । पूर्ण सर्वज्ञता सर्वव्यापकता पर निर्भर करती है । इस प्रकार पूर्व प्रकरण में वर्णित कुछ लीलाओं का साम्य सर्वव्यापकता के अन्तर्गत दी गयी लीलाओं से होना स्वाभाविक है, पर प्रस्तुत प्रकरण में उन्हीं लीलाओं को स्थान दिया गया है जो अधिकतर उनकी सर्वव्यापकता का बोध कराती हैं ।

(76) 'मार–मार कर भगा दिया'

बनारस के शंकर प्रसाद व्यास जी (रामायणी) कैंची में वास कर रहे थे । आपने नैनीताल देखा नहीं था, इसलिए एक दिन आपने बाबा से वहाँ घूम आने की अपनी इच्छा व्यक्त की । बाबा ने आश्रम की जीप के चालक रामानन्द को इन्हें नैनीताल घुमा लाने का आदेश दिया । वहाँ पहुँचने पर आप जीप से उतर कर चल दिये । नैनीताल की चित्ताकर्षक प्राकृतिक छटा ने इन्हें मुग्ध कर दिया था और आप उत्सुकता पूर्ण दृष्टि से आगे–आगे जाते ही रहे । आप चलते–चलते मल्लीताल पहुँच गये और वहाँ बड़ी देर तक इधर–उधर घूमते ही रह गये । एकाएक इन्हें विचार आया कि कैंची वापस जाने के बारे में आप रामानन्द से कुछ भी नहीं कह आये । अपनी भूल पर आपको दुःख हुआ और लौटने के विषय में चिन्ता होने लगी । इधर रामानन्द बहुत देकर तक इनकी प्रतीक्षा करता रहा और अन्त में खाली गाड़ी लेकर कैंची वापस चला गया ।

जब आप घूम–घाम कर उस स्थान में पहुँचे जहाँ आपने जीप छोड़ी थी, आपने वहाँ एक फ़ौजी अफसर को कार में बैठे देखा । यह अफसर महाराज का भक्त था और कई बार व्यास जी ने इसे कैंची में बाबा के पास देखा था । व्यास जी के पूछने पर उसने बताया कि वह कैंची जा रहा है । व्यास जी ने उससे साथ ले चलने की विनम्र प्रार्थना की । उसे कुछ हिचकिचाहट हुई और उसने मना कर दिया । उसके इस व्यवहार से व्यास जी का दिल टूट गया और वे मन ही मन क्रुद्ध हो कहने लगे, "बाबा ने कैसे भक्त पाल रखे हैं । यदि मैं बाबा होता तो ऐसे भक्तों को मार–मार कर भगा देता ।"

यह फ़ौजी अफसर कैंची पहुँचा और बाबा की कुटिया के दरवाज़े पर खड़ा हो गया जहाँ अलीगढ़ के विश्वम्भर जी पूजा सामग्री का थाल लिये खड़े थे और भीतर जाने की प्रतीक्षा कर रहे थे । बाबा की कुटिया महिलाओं से भरी थी और सब महाराज का पूजन कर रही थीं । बाबा ने माइयों को जाने की आज्ञा दी ताकि उनके भक्त विश्वम्भर को पूजा करने के लिये स्थान मिल सके । जब महिलाएँ बाहर आने लगीं तो वह फ़ौजी अफसर एक, दो, तीन आदि कहते हुए उन महिलाओं की गिनती करने लगा । उनके बाहर आ जाने पर विश्वम्भर, फ़ौजी अफसर और अन्य लोगों ने कुटिया में प्रवेश किया । बाबा एकाएक रुद्र रूप हो गये और उन्होंने फ़ौजी अफसर पर मुष्टि प्रहार करना आरम्भ कर दिया । विश्वम्भर जी की पूजा सामग्री सब जमीन में बिखर गयी । बाबा गेंद की तरह उसे

उछालते–गिराते और मारते हुए प्रांगण में ले आये और फिर इसी प्रकार आश्रम के प्रवेश द्वार तक ले गये । अन्त में उस अफसर से बोले कि तू **अब यहाँ मत आना ।** वह अफसर बाबा के समाधिस्थ होने के बाद तक भी यदा कदा आता रहा, पर बाहर सड़क से प्रणाम कर चला जाता था । उस समय वहाँ उपस्थित सब लोगों की यही धारणा थी कि उसने माइयों की गिनती की और इस अनुचित कार्य के लिये उसे वह दण्ड मिला । आश्रम के सभी लोग इस दृश्य से घबरा उठे और रामानन्द को विशेष रूप से भय होने लगा, यह सोचकर कि वह व्यास जी को नैनीताल में छोड़ कर चला आया ।

व्यास जी एक बस से कैंची आ गये । उनको बस से उतरते ही रामानन्द दिखायी दिया । उसने आप से प्रार्थना की कि आप पूछे जाने पर बाबा से कह दें कि आपने ही जीप लौटा दी थी । जब व्यास जी ने बाबा के दर्शन किये वे बहुत शान्त और प्रसन्न मुद्रा में दिखायी दिये और आपसे बोले, **"तुझे अमुक फ़ौजी अफसर अपनी गाड़ी में नहीं लाया ? तूने क्या कही ? बताता क्यों नहीं ?"** व्यास जी चुप रहे । बाबा स्वयं कहने लगे, **"तू कह रहा था, बाबा ने कैसे भक्त पाल रखे हैं ! यदि मैं बाबा होता तो ऐसे भक्तों को मार–मार कर भगा देता । कह रहा था कि नहीं ? बता !"** व्यास जी ने स्वीकार किया । **महाराज बोले, "इसलिए हमने उसे मार–मार कर भगा दिया । अब वह यहाँ नहीं आयेगा ।"** इसके बाद फिर वे बोले, **"रामानन्द कहाँ चला गया था ? तू उसकी कार में क्यों आना चाहता था ?"** व्यास जी को बहुत संकोच के साथ कहना पड़ा, "मैंने जीप लौटा दी थी ।" बाबा व्यास जी के मुँह की ओर देखकर मुस्कराने लगे ।

(77) "कद की ठीक है"

घटना जून 1973 की है । मैं (लेखक) 15 जून 1973 को कैंची मन्दिरों के प्रतिष्ठा दिवस समारोह में सम्मिलित होने इलाहाबाद से आया था । उस समय मेरे ज्येष्ठ पुत्र के विवाह के लिये कई घरों से सम्बन्ध आये हुए थे । हम लोग बाबा की आज्ञानुसार ही विवाह निश्चित करना चाहते थे । मेरी पत्नी की एक मात्र इच्छा यही थी कि लड़के का कद बड़ा होने से लड़की भी बड़े कद की होनी चाहिये । आश्रम में आकर मैं इस अवसर की खोज में था कि बाबा मुझे एकान्त में मिल जाते और मैं अपनी इच्छा उनसे व्यक्त करता, पर कई दिन बीतने पर भी ऐसा संयोग नहीं

बन पाया । एक दिन सायंकालीन दर्शन में वृहत् जन समुदाय के बीच बाबा स्वयं मुझ से कहने लगे, **"अब तू अपने लड़के का विवाह कर दे ।"** मैंने पूछा, "कहाँ करूं ?" वे बोले, **"कहाँ–कहाँ से सम्बन्ध आये हैं ?"** मैंने सभी सम्बन्धों के बारे में, जो भी बातें मेरी जानकारी में थीं, उन्हें बता दीं । उन्होंने किसी भी सम्बन्ध को स्वीकार नहीं किया और अन्त में इलाहाबाद में ही श्री अम्बादत्त तिवारी जी की सुपुत्री से विवाह करने को कहा । तिवारी जी और उनके परिवार के लोगों को कभी बाबा के दर्शन नहीं हुए थे और उनका आग्रह भी मुझे पिछले दिन कैंची के पते से प्राप्त हुआ था । मैं बाबा से वार्ता में इस सम्बन्ध की चर्चा करना भी भूल गया था । सम्भवतः बाबा तिवारी जी का आग्रह मेरे पास पहुँचाना चाहते थे, इसी कारण उन्होंने अब तक मुझे वार्ता का अवसर नहीं दिया । अस्तु, एक शिष्ट परिवार की शालीन एवं विदुषी लड़की बाबा के चयन में आयी । उन्होंने दो बार इस लड़की के लिये अपनी सम्मति दी और तीसरी और अन्तिम बार महाराज ने स्पष्ट शब्दों में कहा, **"यह मेरी आज्ञा है ।"** मैने दोनों की जन्म पत्रियां जो मेरी जेब में थीं तत्काल श्री चरणों में समर्पित करदीं और बाबा ने उन्हें उठा कर अपनी काँख में दबा लिया । अन्त में बाबा अपने दाहिने हाथ की अंगुली खड़ी कर धीरे से मुझ से कहने लगे, **"लड़की कद की ठीक है ।"** यह इलाहाबाद में मेरी पत्नी की वार्ता का उत्तर था । मैं यह देख कर चकित हो गया कि कैंची में दिन रात लोगों से घिरे रहने पर भी बाबा इलाहाबाद में घर के भीतर की वार्ता भी सुनते रहते हैं ।

(78) गुप्त चिन्ता का निवारण

वगरका गाँव ज़िला उन्नाव, में लड़कों का एक स्कूल सन् 1951 से चल रहा था, उसी में लड़कियाँ भी पढ़ती थीं । गाँव के लोगों ने श्री देव कामता दीक्षित से आग्रह किया कि लड़कियों के लिये एक अलग स्कूल होना चाहिये । आपने उनकी बात मानली और 3 दिसम्बर 1960 के दिन लड़कियों के स्कूल का उद्घाटन कराने का विचार किया । दीक्षित जी ने महाराज से निवेदन किया कि वे इस कार्य को अपने कर कमलों से कर सब को कृतार्थ करें । बाबा ने स्वयं न कर इस कार्य को अपने परम भक्त श्री केहर सिंह द्वारा, जो उस समय उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग के सचिव थे, करवाना चाहा । उन्होंने सिंह साहब को इसके लिये लखनऊ से फोन द्वारा बुलाया । कुछ राजकीय विशेष कार्यवश सिंह साहब अपनी उपस्थिति उस दिन

लखनऊ में आवश्यक समझ रहे थे, पर वे बाबा का आदेश टाल भी नहीं सकते थे । आप कार द्वारा उन्नाव को चल दिये । उधर दीक्षित जी के साथ बाबा ने भी कानपुर से उन्नाव को प्रस्थान किया । उन्नाव में रेल के क्रासिंग के पास बाबा ने अपनी गाड़ी रुकवा दी और बाहर बैठ कर वहीं सिंह जी की प्रतीक्षा करने लगे । थोड़े ही समय में सिंह साहब भी वहाँ आ पहुँचे और बाबा के चरणों में नत मस्तक हुए ।

यहाँ से सब लोग वगरका आये । इस अवसर पर यहाँ उपस्थित सभी गाँव के लोग बाबा के दर्शन से प्रसन्न हुए । बाबा के आदेश से सिंह साहब ने लड़कियों के स्कूल का उद्घाटन किया । तदुपरान्त भोजन और 'ग्रुप–फोटोग्राफ' का आयोजन किया गया । सिंह साहब इस फोटोग्राफ में उपस्थित होना नहीं चाहते थे क्योंकि यह लखनऊ से उनकी अनुपस्थिति का प्रमाण हो सकता था, पर बाबा का आदेश हुआ और उन्हें मानना ही पड़ा । स्वयं बाबा उनकी गुप्त चिन्ता को समझ रहे थे । दूसरे दिन जब कानपुर से फोटो बन कर आयी तो सभी को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि मध्य में बैठे सिंह साहब की आकृति इस प्रकार धुंधली थी कि उनकी पहचान नहीं हो सकती थी जब कि अन्य सभी लोगों की छवियाँ स्पष्ट थीं । यह बाबा की महिमा थी कि उन्होंने अपने आज्ञाकारी भक्त की सारी चिन्ता निर्मूल कर दी ।

(79) शेर–बाघ सन्त–दर्शन करते

श्री जगदीश चन्द्र पाण्डे, बिड़ला विद्यामन्दिर, नैनीताल, महाराज के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहते हैं कि उनकी कृपा मुझपर सदा बनी रही । प्रयाग विश्वविद्यालय से दीक्षान्त होने के बाद मैं बेरोज़गार था । बाबा ने मुझे श्री केहर सिंह के फार्म, रुद्रपुर (जिला नैनीताल) का मैनेजर बना दिया । एक दिन मैं कुछ काम से रामपुर गया और वहाँ से लौटकर घास के मैदान से फार्म को आ रहा था । मैंने सामने से एक शेर, शेरनी और उनके एक बच्चे को आते देखा । मैं हक्का–बक्का खड़ा रह गया । अपने बचाव के लिये मेरे पास कोई हथियार भी नहीं था । भागने की चेष्टा भी मैं नहीं कर सका । मैंने देखा मेरे पास आकर शेर एक ओर और शेरनी दूसरी ओर को मुड़ गयी, पर उनका बच्चा मेरे पास आकर मुझे सूंघने लगा । उस समय भय से मेरे प्राण निकले जा रहे थे । इतने में शेरनी कुछ गुर्रायी और अपने बच्चे को दाँतों से पकड़कर घसीट ले गयी । इन दिनों बाबा इलाहाबाद में कर्नल गंज थाने के पास श्री जमुना दत्त पन्त के मकान में विराजमान थे । मेरा एक मित्र जो वहाँ विश्वविद्यालय के छात्रावास में था, उनके दर्शन करने उपस्थित हुआ था । उसने बातों के सिलसिले में

उनसे मेरी कुशल पूछी । बाबा ने उसी समय उससे मुझे पत्र लिखवाया, **"शेर बाघ से मत डरो । ये सन्तों के दर्शन करने आते हैं ।"** निश्चय यह सर्व दृष्टा की अलौकिक शक्ति रही जिसने उस संकटापन्न स्थिति में मेरी रक्षा की या अपने भक्त को निर्भय बनाने की उनकी यह कोई सृजनात्मक लीला रही हो ।

(80) पल–पल की देखते रहते

श्री भुवन चन्द्र तिवारी, सम्प्रति इन्चार्ज, रोडवेज स्टेशन, नैनीताल बताते हैं कि घटना उस समय की है जब नदी पार कर कैंची आश्रम में आने के लिये बल्लियों का एक कच्चा पुल था । हम कई लोग महाराज के पास बैठे थे । वे एकाएक बोल उठे, **"वह हनुमान गढ़ चला गया ।"** वह कौन ? किसी की कुछ समझ में नहीं आया । फिर थोड़ी देर बाद कहने लगे, **"अभी यहीं आयेगा । भूखा है, उसके लिये ताजी पूरी और सब्जी बनाओ ।"** मुझे उन्होंने आदेश दिया, **"गैस का लैम्प लेकर पुल पार खड़े हो जा और बूढ़े का हाथ पकड़ कर अच्छी तरह पुल पार कराना । उसके लड़के उसका ध्यान नहीं रखेंगे ।"** रात का अँधेरा छा गया था । एक कार से एक बूढ़ा और उसके दो लड़के उतरे । बूढ़े ने गैस–लैम्प लिये वहाँ मुझे खड़ा देख कर पूछा, "क्या बाबा ने तुम्हें हमको लेने भेजा है ?" मेरे हामी भरने पर उसके नेत्र सजल हो उठे । दोनों लड़के इस बीच पुल पार कर गये, उन्हें अपने पिता को सहारा देने का ध्यान भी नहीं रहा । मैंने संभालते हुए बूढ़े को पुल पार कराया और बाबा के पास ले आया ।

ये वृद्ध महाशय बाबा के चरणों में गिर गये । उनकी आँखों से आँसू बह चले । कण्ठ रुंध गया और उनकी देह पुलकित हो उठी । बाबा ने उन्हें गरमा–गरम भोजन करवाया और अन्त में प्रेम से विदा किया ।

आप थे राम नारायण सिन्हा जी, अवकाश प्राप्त पुलिस अधीक्षक, जो उसी दिन अपने पुत्र के पास राजभवन, नैनीताल आये थे । आपने घर में इच्छा व्यक्त की थी कि आप महाराज के दर्शन के बाद ही भोजन करेंगे, इस कारण उनके लड़के उन्हें हनुमान गढ़ ले गये और वहाँ से जानकारी प्राप्त कर वे उन्हें कैंची आश्रम ले आये थे ।

(81) अप्रत्याशित, पर सार्थक

महाराज के आदेश से कानपुर के श्री देव कामता दीक्षित ने प्रेमलाल जी की पेपर मिल का निर्देशक बनना स्वीकार किया था । इसके एक

निर्देशक महाराजा विजयानगरम् भी थे जिनसे आपका घनिष्ठ परिचय हो गया था । कुछ समय बाद महाराजा का निधन हो गया । दीक्षित जी का उनके घर के लोगों से परिचय नहीं था, इस कारण इच्छा होते हुए भी आप संकोचवश उनके परिवार को सान्त्वना देने बनारस नहीं जा सके । इसके कुछ ही दिन बाद बाबा आपके घर आये और इस सम्बन्ध में पूछने लगे, **"तू बनारस गया नहीं ?"** दीक्षित जी ने अपनी कठिनाई बतायी । बाबा बोले, **"चल, हम चलते हैं। तुझे शंकर जी के भी दर्शन करायेंगे ।"** दोनों कानपुर से कार में चले और बनारस में महाराजा की कोठी के पास पहुँचते ही बाबा बोले, **"गाड़ी को फाटक के भीतर मत ले जाओ, हम संकट मोचन हनुमान मन्दिर जायेंगे ।"** दीक्षित जी चौंक पड़े । महाराज यहाँ इन्हीं के घर के लिये आये थे, पर अब विश्वनाथ मन्दिर भी न जा कर संकटमोचन जा रहे थे । वहाँ पहुँचने पर दीक्षित जी ने देखा कि महाराजा विजयानगरम् का सारा परिवार वहीं उपस्थित था । उन सब लोगों ने बाबा का स्वागत किया और बड़े प्रेम और आदर से वे उन्हें अपने महल में ले आये ।

(82) "मिठाई क्यों बंटवायी ?"

यह उस समय की घटना है जब गोरखपुर के डा. सुरेश चन्द्र मेहरोत्रा आगरा में रहते थे । एक दिन आपके मित्र डा. लक्ष्मी चन्द्र जोशी आगरा में ही आपको महाराज के दर्शन कराने ले गये । आप खाली हाथ वहाँ पहुँचे । बाबा आप को देख कर बोले, **"मिठाई खिला, हम मिठाई खायेंगे ।"** आप उसी समय बाज़ार गये और एक सेर मिठाई लेकर बाबा के पास आये । बाबा ने एक छोटा टुकड़ा मिठाई का लिया और सब मिठाई उपस्थित लोगों में बंटवा दी । इसके बाद मेहरोत्रा जी ने उनसे पूछा, "आपने किस लिये हमसे मिठाई मँगवाकर लोगों में बँटवायी ?" वे बोले, **"तेरे लड़का जो हुआ है ।"** आपकी पत्नी गर्भिणी थी और उन दिनों अपने मायके दिल्ली में थी, पर आपको बच्चे के पैदा होने की कोई सूचना नहीं थी । आप बाबा की बात सुन कर मौन रह गये । आपको इस बात पर आश्चर्य तब हुआ जब घर लौटने पर आपको दिल्ली से इसी आशय का तार मिला ।

(83) खाने में खर्च की बचत

एक बार कु. गोदावरी तिवारी, बी.डी.ओ, गरमपानी, महाराज के दर्शन करने कैंची आ रही थीं, उनके एक परिचित, पन्त जी उनके साथ चलने को

राज़ी हो गये । गोदावरी जी विना भोजन किये दर्शन करना चाहती थीं, पर पन्त जी से आपने भोजन कर आने को कहा । वे बोले, "बाबा के यहाँ खाना मिलता ही है, चलो एक दिन के खाने के खर्च की बचत होगी ।" जब ये दोनों बाबा के पास पहुँचे, वहाँ एक महिला उन्हें ताजे मावे की कलाकन्द का भोग लगा रही थी । बाबा ने कुछ कलाकन्द उठाकर गोदावरी जी को देते हुए कहा, **"प्रसाद पाले ।"** पन्त जी से वे बोले, **"तू जा भण्डारे में प्रसाद पा, एक दिन के खाने का खर्च बचेगा ।"**

(84) "आओ, खाओ और जाओ"

श्री नन्द लाल हल्द्वानी में शुद्ध घी के बड़े व्यापारी हैं । कैंची आश्रम में आपकी ही दुकान से घी आता है । आपको महाराज के दर्शन हल्द्वानी में ही पहले हो चुके थे और उन पर आप की आस्था भी थी, पर कैंची आने का अवसर आप को कभी नहीं मिल पाया था । बाबा के एक भक्त ने जो आपके मित्र भी हैं, हल्द्वानी में एक ट्रक खरीदी और उसमें वे बाबा के दर्शन के लिये कैंची आ रहे थे । उन्होंने नन्दलाल जी के पास जाकर उनसे भी चलने का आग्रह किया । वे तैयार हो गये और बोले, "हमने कैंची का सत्संग कभी देखा नहीं, चलिये आज देख आयेंगे ।" उन्होंने आश्रम का खाता देखा, उन्हें तेरह सौ रुपये लेने भी थे । आप लोग ग्यारह बजे रात आश्रम पहुँचे । उस समय बाबा धर्मशाला की छत पर एक तख़्त के ऊपर विराजमान थे और कुछ भक्तजन उनके पास बैठे थे । इनके वहाँ पहुँचते ही बाबा ने सब लोगों को प्रसाद पाने भेज दिया और अकेले नन्दलाल जी ही उनके साथ रहे । बाबा ने कम्बल के बाहर अपने कन्धे पर हाथ रखा और एक गड्डी नोटों की आपको दी और उसे गिनने को कहा । ग्यारह सौ रुपये थे । इसके बाद उन्होंने आप को भी प्रसाद पाने भेज दिया । प्रसाद पाने पर आश्रम के एक कार्यकर्ता ने आप को एक कमरा इंगित किया जहाँ आपने रात में सोना था । आप मन ही मन चिन्तित हुए कि बिस्तर तो लाये नहीं अब काम कैसे चलेगा । कमरे में आकर आपने देखा वहाँ दो नये बिस्तर बिछे हैं, एक आपके लिये और दूसरा आपके मित्र के लिये । उन सुन्दर बिस्तरों को देखकर आपको प्रसन्नता हुई । इतने में बाबा ने आपको अपनी कुटिया में बुलाया और सौ रुपये के दो नोट और देकर हिसाब पूरा कर दिया । इसके बाद वे बोले, **"सत्संग कैसा चल रहा है ?"** आपने उत्तर दिया 'कुछ विशेष नहीं' । बाबा बोले, **"अपने गुरु के स्थान पर नहीं जाते ?"** और आपके

उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना वे आपके गुरु के आकार, डील–डौल और वेशभूषा का वर्णन करने लगे और अन्त में बोले, **"वह उच्च कोटि का सन्त था ।"** कैंची के बारे में स्वयं कहने लगे, **"यहाँ का सत्संग तो केवल आओ, खाओ और जाओ है ।"**

(85) इन्द्रयानीजी का अनुभव

सन् 1960 की घटना है । महाराज का दरबार जिलाधीश, नैनीताल की कोठी में लगा था । उन्होंने एकाएक जिलाधीश को आदेश दिया कि किसी को इन्द्रा फार्मेसी भेजकर वहाँ से इन्द्रयानी नाम की महिला को यहाँ बुलाओ । जिलाधीश ने उसी समय एक पुलिस के सिपाही को भेजकर उनकी आज्ञा का पालन किया ।

श्रीमती इन्द्रयानी एक सम्पन्न घराने की विदुषी एवं साधु प्रकृति की महिला हैं । सन् 1947 में आपको पाकिस्तान में अपनी सम्पदा का मोह त्याग कर अपने परिवार सहित भारत आना पड़ा । आपका उस समय भी खेरी पालिया में फार्म था और वे वहीं जाकर रहने लगीं । गर्मियों में आप नैनीताल आया करती थीं । इस समय आप जिलाधीश की कोठी के पास एक मकान में निवास कर रही थीं । पालिया से आपका खर्चा इन्द्रा फार्मेसी के पते से आया करता था । इस बार इनके पास खर्चा नहीं पहुँचा । आप कर्ज़ा ले कर किसी प्रकार दिन व्यतीत कर रही थीं । पर समय की बलिहारी, कर्ज़ की अदायगी भी नहीं हो पायी, घर में खाने को भी नहीं रहा । इस कारण आप अत्यन्त उदास और दुःखी थीं और इन्द्रा फार्मेसी गयी थीं, गुज़ारे के लिये आगे कर्ज़ा लेने को ।

इन्द्रा फार्मेसी पहुँचने के कुछ ही समय बाद एक पुलिस का सिपाही आप के पास आ खड़ा हुआ । उसने आपका नाम पूछा । आप कहती हैं कि सिपाही के इस प्रश्न से मैं चौंक पड़ी, पर अपना नाम बताते हुए मैंने उससे उसके प्रश्न का कारण पूछा । सिपाही बोला, "आपको जिलाधीश की कोठी में याद किया जा रहा है ।" मैं इस उत्तर से घबरा उठी । सिपाही कहने लगा, "घबराने की कोई बात नहीं है । वहाँ बाबा नीब करौरी बैठे हैं, उन्होंने आपको बुलवाने के लिये जिलाधीश से कहा था और मैं उस हुक्म की तामील के लिये आपके पास आया हूँ ।" मैंने पहले कभी बाबा के दर्शन किये नहीं थे, मुझे महान् आश्चर्य हुआ कि नाम बताते हुए उन्होंने कैसे मुझे कोठी में बुलवाया ! अस्तु, मैं सिपाही के साथ जिलाधीश की कोठी में गयी । मुझे देखते ही बाबा प्रसन्नता से चिल्ला उठे, **"हमारी इन्द्रयानी**

आ गयी ।" यह उनके दर्शन का प्रभाव था कि जैसे चार वर्ष का बालक अपनी माँ के आगे रोता है, उसी प्रकार मैं भी अपने दुःख के कारण उनके सामने रोने लगी । बाबा ने अपने दोनों हाथ मेरे सिर के ऊपर रख दिये और बोले, **"घबरा मत, सब ठीक हो जायेगा ।"** उसी दिन मेरे ड्राफ्ट भी आ गये और मैं सब चिन्ताओं से मुक्त हो गयी ।

(86) सुविधा का ध्यान

श्री रामदत्त पाण्डे जिनकी तल्लीताल, नैनीताल में दुकान है, हर मंगलवार के दिन व्रत रखते, कैंची आश्रम आकर हनुमान मन्दिर में सुन्दर काण्ड का पाठ करते और यदि बाबा वहाँ हुए तो उनकी चरण रज ले, प्रसाद ग्रहण कर पाँच बजे की अन्तिम बस से वापस लौट जाया करते थे । एक मंगलवार के दिन कैंची में अत्यधिक भीड़ हो जाने से बाबा ने सब लोगों को अपनी कुटिया की खिड़की से ही दर्शन दिये जहाँ काँग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष डा. शंकर दयाल शर्मा जी उपस्थित थे । पाँच बजने के पूर्व ही बाबा ने सब लोगों को जाने की आज्ञा दे दी और उसी समय प्रवेश द्वार पर नियमानुसार ताला पड़ गया । पाण्डे जी को बाबा के दर्शन तो हो गये थे, पर उनके चरण स्पर्श करने का अवसर उन्हें नहीं मिल पाया था, इस कारण वे मन ही मन बेचैन रहे और इसी सोच में वे नैनीताल की अन्तिम बस भी खो बैठे । बाबा ने शर्मा जी को जाने की आज्ञा दी और कहा बाहर रामदत्त मिलेगा, उसे अपनी गाड़ी में नैनीताल पहुँचा देना । आप पाण्डे जी को पहचानते भी नहीं थे और न बाबा ने उनका हुलिया ही आपको बताया, पर उनकी प्रेरणा से आप आश्रम के बाहर आकर सीधे राम दत्त जी से मिले और थोड़ी पूछ-ताछ के बाद प्रेम और आदर से उन्हें अपने साथ ही नैनीताल ले गये । पाण्डे जी बाबा की इस कृपा से भाव विभोर हो गये ।

(87) व्यास जी को ग्लानि

पं. शंकर प्रसाद व्यास जी, ग्राम बरड़ीहा, पो. आ. डिग्घी सन् 1969 में इलाहाबाद संगम पर एक बृहत् पंडाल में, जहाँ बड़ा जन समुदाय एकत्रित था, हनुमान चरित्र का बखान कर रहे थे । महाराज उस भीड़ में सब से पीछे खड़े होकर व्यास जी का प्रवचन सुनने लगे । उनके भाषण के समाप्त होने पर बाबा ने अपने एक भक्त को उन्हें बुलाकर लाने के लिये दूर मंच

पर भेजा । उस भक्त ने जब व्यास जी के पास बाबा का सन्देश पहुँचाया तो वे कहने लगे, "कौन बाबा नीब करौरी ? हमारे पास समय नहीं है ।" बाबा के प्रति ऐसे रूखे व्यवहार की वह व्यक्ति कल्पना भी नहीं कर सकता था इस कारण चकित दृष्टि से उन्हें देखता रह गया । वहाँ मंच पर उपस्थित दुधारी बाबा ने व्यास ज़ी को कुछ समझाया जिससे वे उस व्यक्ति के साथ ही बाबा के पास चले आये । बाबा बोले, **"तू इतना बड़ा आदमी हो गया कि तेरे पास समय नहीं है ?"** व्यास जी उनके शब्द सुन कर अवाक् रह गये और समझ नहीं पाये कि उस बृहत् जन समुदाय के शोर-गुल में दूर मंच पर हुई उनकी वार्ता, बाबा सुन कैसे पाये । उसी समय बाबा ने थोड़ा मुड़कर पीछे देखा और बोले, **"गाड़ी लेकर प्रभुदत्त आ रहा है, तू उससे कह देना हम नहीं चलेंगे ।"** व्यास जी ने पीछे सड़क पर इधर-उधर बहुत दूर तक देखा, उन्हें कोई कार आती नहीं दिखायी दी । इसके बाद दो मिनट में वहाँ एक कार आकर रुकी जिससे प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी उतरे और बाबा को देखते ही वे उनके चरणों में लिपट गये । व्यास जी का ब्रह्मचारीजी के प्रति पूज्य भाव था । वे इस दृश्य से अत्यधिक प्रभावित हुए और बाबा के प्रति की गयी अशिष्टता की उन्हें ग्लानि हुई । इस घटना से वे बाबा के भक्त हो गये । बाबा ने गर्मियों में उनसे कैंची आने को कहा ।

(88) अन्तिम इच्छा की पूर्ति

एक रात भूमियाधार आश्रम में जब सब लोग महाराज का भोग लगा कर और प्रसाद पाकर सो गये, बाबा ने अर्ध-रात्रि में श्री माँ, ब्रह्मचारी बाबा आदि सबको जगाया और फिर अपने पसन्द का भोग तैयार करने को कहा । लोगों ने उनसे निवेदन किया कि आप भोग ग्रहण कर चुके हैं और अब अर्ध-रात्रि में भोजन करना उचित न होगा । बाबा नाराज हो गये और बोले, **"यदि तुम खाना नहीं बनाना चाहते तो मैं अभी खुद जाकर भण्डार गृह में खाना बनाउंगा ।"** उनके आदेश का तत्काल पालन किया गया और लगभग दो बजे रात में बाबा ने बड़े चाव से भोजन किया । सब लोगों ने भी उनका प्रसाद पाया और इसके बाद सभी सो गये । दूसरे दिन बाबा के पास एक सूचना आयी कि उनका अमुक भक्त गत रात्रि में दो बजे इस संसार से विदा हो गया । बाबा बोले, **"मरते समय उसकी इच्छा विशेष प्रकार के भोजन में चली गयी थी । उसे इस कारण फिर जन्म न लेना पड़े, हमने कल रात वही भोजन कर उसे तृप्त कर दिया था ।"**

(89) महर्षि रमण का देहान्त

महाराज, हल्द्वानी फर्नीचर मार्ट, हल्द्वानी में विराजमान थे । उनके पास उस समय बैठे थे उनके भक्त श्री पूरन चन्द्र जोशी । आप बताते हैं कि बाबा बातें करते–करते गम्भीर चिन्तन में निमग्न हो गये और कुछ देर इसी मुद्रा में मौन बैठे रहे । एकाएक वे मन्द स्वर में बोले, **"पूरन ! एक चम्मच पानी पिला दे उसे बहुत तकलीफ हो रही है ।"** बाबा की बात उनकी समझ में आयी नहीं, फिर भी उन्होंने दो चम्मच पानी उनके मुँह में डाल दिया । इसके कुछ समय बाद बाबा की आँखों से आँसू की दो बूंदें टपकीं और वे उनकी ओर देखते हुए बोले, **"रमण चला गया । भारत एक महान सन्त से रिक्त हो गया ।"** यह उसी समय की बात है जब कि रमण महर्षि ने अरुणाचल में अपना शरीर त्यागा ।

(90) झूठी अफवाह पर फटकार

घटना चर्च लेन, इलाहाबाद की है । दिन के दो बजे थे, महाराज का दरबार लगा था । लेखक उस समय वहाँ उपस्थित था । भारत सरकार के गृह मन्त्री श्री गोविन्द बल्लभ पन्त उन दिनों दिल्ली में अचेतावस्था में पड़े थे । एक आगन्तुक ने दरबार में आकर बाबा को सूचित किया कि पन्त जी गुज़र गये । बाबा ने उसकी बात सुनते ही अपने को सिर से पैर तक कम्बल से ढक लिया और मौन हो बैठे रहे । थोड़ी देर बाद उन्होंने कम्बल हटाया और उस व्यक्ति को फटकारने लगे कि तू लोगों में झूठी अफवाह फैला रहा है । उसने अपनी सफाई देते हुए कहा कि मैंने अभी यह खबर बाज़ार में सुनी । बाबा बोले, **"ऐसी बात बिना सच्चाई जाने मुँह से नहीं निकालनी चाहिये ।"** इसके दो दिन बाद ही पन्त जी का निधन हुआ ।

(91) एक भ्रामक विचार

उत्तर प्रदेश सरकार के सचिव श्री केहर सिंह ने जब नयी कार खरीदी तो उन के मन में एक भ्रामक विचार आया कि वही बाबा के साथ अधिक घूम सकता है जिसके पास अपनी कार हो । लखनऊ में जब बाबा का आगमन हुआ तो आप यह आशा करते हुए कि आज बाबा के साथ घूमने का पूरा मौका मिलेगा, अपनी गाड़ी लेकर उनकी खोज में निकले ।

आप जहाँ भी जाते वहीं आप को यही ज्ञात होता कि बाबा अभी–अभी गये । हर जगह एक ही बात सुनने को मिली और वे तमाम दिन उनको खोजते फिरे । अन्त में निराश हो आप अपने घर वापस आ गये । घर पहुँचते ही आपको उनका फोन मिला । वे बोले, **"चौधरी ! आज कहाँ घूमता रहा ? मैं अमुक के घर में हूँ, आजा ।"**

(92) "भैंस लग नहीं रही ?"

एक बार लखनऊ में केहर सिंह जी ने किसी जानकार के द्वारा एक भैंस खरीदी । उन्हें धोखा हुआ, देखने में वह हृष्ट–पुष्ट थी पर थी वह बूढ़ी । आपकी पत्नी भैंस पालना नहीं चाहती थीं, ऐसी भैंस पाकर उनका मन खिन्न हो गया। एक दिन उसको दुहने वाला आदमी भी नहीं आया । भैंस लग नहीं रही थी । वह दुःखी हो ग्यारह बजे रात तक इस प्रयास में लगी थीं । सिंह साहब पास ही कुर्सी में बैठे अनुभव कर रहे थे कि इन समस्त परेशानियों का कारण स्वयं वे ही हैं । इस कारण वे पत्नी से कुछ कह भी नहीं पा रहे थे । इतने में टेलिफोन की घंटी बजने लगी । यह महाराज का अलौकिक टेलिफोन था जिसे वे कर्नलगंज, इलाहाबाद स्थित श्री जमुना दत्त पन्त के घर से कर रहे थे । वस्तुतः उनके घर कभी टेलिफोन रहा ही नहीं । बाबा बोले, **"केहर सिंह, क्या कर रहा है ? भैंस लग नहीं रही ? जाने दे । अब बहुत देर हो गयी है, सोजा । कल सुबह दूध दे देगी ।"** आप बताते हैं कि यह बाबा की कृपा थी कि दूसरे दिन से वह बराबर दूध देने लगी ।

(93) "ओम् लिख कर आयी"

श्री पूरन चन्द्र जोशी नैनीताल में बाबा के पुराने भक्तों में से हैं । आपकी पत्नी श्रीमती कमला जी को बाबा के दर्शन करने की इच्छा बहुत समय से थी, पर गृह कार्यों के कारण ऐसा संयोग कभी बन नहीं पाया । एक दिन आपने अपने पतिदेव से अपनी लालसा व्यक्त की । भाग्यवश उस दिन बाबा मल्लीताल में आपके घर के पास ही डाक्टर भट्ट के निवास स्थान पर आये हुए थे । जोशी जी ने आपको युक्ति बतायी कि दूसरे दिन तड़के सबेरे आप डाक्टर के घर में दर्शन कर सकती हैं । आप उस दिन ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त हो भगवान् का पूजन करने लगीं । पूजा के स्थान में रखी बाबा की छवि (छाया–चित्र) पर जब आप

चन्दन से ओम् अंकित कर रही थीं, एकाएक आपके मन में विचार उठा कि यदि बाबा सिद्ध होंगे तो उनका इस प्रकार ओंकार लिखना जान गये होंगे । पूजा समाप्त कर आप डाक्टर के घर पहुँची और वहाँ आपको बाबा के प्रथम बार दर्शन हुए । जैसे ही आपने उनको नमन किया वे बोल उठे, **"फोटो में ओम् लिखकर आयी है ।"** बाबा के शब्द सुनकर आप चकित रह गयीं । आपके मन में उनकी परीक्षा का भाव था नहीं, यह विचार स्वतः पैदा हुआ था ।

(94) "जलन्धर हुआ है ।"

इलाहाबाद में एक महिला अपने बहनोई की गम्भीर बीमारी की सूचना से अत्यधिक चिन्तित हो गयी । वह चर्चलेन में महाराज के दर्शन करने आयी । लेखक उस समय वहाँ उपस्थित था । उस महिला ने बाबा को नमन किया और उनके चरण पकड़ कर रोती हुई बोली, "बाबा ! मेरे बहनोई की सात लड़कियाँ हैं । वे अपने गाँव में बीमार पड़े हैं और उनकी हालत बहुत खराब है ।" बाबा बोले, **"उसे जलन्धर हुआ है ।"** उस नवागन्तुक महिला ने बाबा की बात का समर्थन करते हुए अपने बहनोई के जीवित रहने के लिये उनका आशीर्वाद माँगा । बाबा की आँखों में पानी भर आया, वे बोले, **"हमसे झूठ मत कहलाओ हम उसके लिये केवल प्रार्थना कर सकते हैं ।"** सर्वसमर्थ बाबा के इस उत्तर से ऐसा प्रतीत हुआ कि महामृत्यु में वे विधि के विधान में हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझते थे ।

(95) डूबते को सहारा

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री ओंकार सिंह पर महाराज की बड़ी कृपा रही । आपको बाबा की अलौकिक शक्तियों पर केवल विश्वास ही नहीं अपितु पूरा भरोसा था । जब कभी किसी मामले में स्थिति आपके काबू के बाहर हो जाती आप तुरन्त उन्हें पुकारने लगते । बाबा कहीं भी हों उनकी कृपा आप पर बरस पड़ती और आप मुसीबतों से छुटकारा पा जाते ।

घटना सन् 1948 की है जब कानपुर में गंगा जी में भीषण बाढ़ आयी हुई थी । एक नाव में सवार होकर उस समय क्षतिग्रस्त भू–भागों का निरीक्षण कर रहे थे वहाँ के कलक्टर श्री किशन चन्द, जो बाद में दिल्ली के उप–राज्यपाल भी हुए। वहाँ के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री ओंकार सिंह,

ज़िला कॉंग्रेस प्रेसिडेंण्ट, तहसीलदार, चपरासी आदि भी उसी नाव में सवार थे । एकाएक नाव के भीतर किसी सुराख से बाढ़ के जल ने रास्ता बना लिया । उस नाव में बैठे सब लोगों की जान खतरे में थी और दूसरे बचाव का वहाँ कोई उपचार भी न था । ऐसी निराशा पूर्ण स्थिति में ओंकार सिंह जी बड़े जोरों से, बाबा को याद करते हुए, बारबार चिल्लाने लगे, 'मर गये, बचाओ ।' घबराए हुए तो वहाँ सभी लोग थे, पर आपकी इस चीत्कार को सुनकर सब यही समझने लगे कि भय से आप पागल हो गये हैं । बाबा की शक्ति सक्रिय हो उठी । तुरन्त एक जड़ से उखड़ा हुआ बड़ा वृक्ष आपकी नाव से आ लगा । उसको देखते ही आप ने नाव छोड़ दी, अन्य लोगों ने भी आपका अनुसरण किया और सभी उस वृक्ष में सवार हो गये । आप लोगों के देखते-देखते वह नाव जल मग्न हो गयी ।

गंगा, उन्नाव और कानपुर की सीमा पर बहती है । यह पेड़ बहता हुआ उन्नाव को भी जा सकता था और बाढ़ के पानी के वेग में पलट भी सकता था, पर नहीं, वह बाबा की शक्ति से कानपुर के किनारे आ लगा । इस प्रकार सभी लोगों की जान में जान आ गयी ।

महाराज की ऐसी कृपा का परिचय उनके समाधिस्थ होने के बाद भी मिलता है जब उन्होंने नैनीताल की झील में नावों में डूबते हुए एक परिवार के सभी प्राणियों की जानें बचाईं । इसका पूरा विवरण प्रसंग संख्या 404 में है ।

(96) "तू गया नहीं ?"

एक दिन शाम को श्री दया नारायण खत्री अपने घर बरेली से कैंची आश्रम पहुँचे । दूसरे ही दिन प्रातःकाल आरती के बाद ही बाबा ने खत्री जी को घर लौट जाने का आदेश दिया । खत्री जी की ओर से श्री सर्वदमन सिंह रघुवंशी बोल उठे, "बाबा ! कल शाम ही तो ये आये हैं और आप आज ही इन्हें भगा दे रहे हैं ।" बाबा ने उनकी इच्छा रखते हुए दूसरे दिन जाने को कहा । दूसरे दिन आरती के बाद ही बाबा ने खत्री जी से पूछा, "तू गया नहीं ?" उन्होंने उत्तर दिया कि आपने आज के लिये कहा था । "अच्छा, अब जा" कह कर उन्होंने तुरन्त उन्हें विदा कर दिया । खत्री जी बरेली चले आये । घर पहुँचते ही आपको विदित हुआ कि पिछली रात आपकी पत्नी का स्वास्थ्य एकाएक बहुत गिर गया था और चिन्ताजनक स्थिति हो गयी थी । रात भर डाक्टर उनकी देखभाल करते रहे । आप के आने के कुछ पूर्व ही स्थिति में सुधार आना आरम्भ

हुआ था । आपकी धारणा है कि जब बाबा ने आपको आश्रम में एक दिन और रहने की अनुमति दी तो उस रात आपकी पत्नी की सुरक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया ।

(97) कार खरीदने की मनाही

श्री एस.डी. गंडा, भारतीय स्टेट बैंक कानुपर में परसोनेल मैनेजर थे । सन् 1967 में वे जर्मनी ट्रेनिंग के लिये भेजे गये । इसके लिये आप बाबा की अनुमति प्राप्त कर चुके थे। आपका परिवार कानपुर में ही रहता था । एक दिन बाबा कानपुर आप के घर गये और आपकी पत्नी से बोले, **"गंडा को तुरन्त पत्र लिख दे । वह जर्मनी में जो कार खरीद रहा है, उसे न खरीदे, यह हमारी आज्ञा है। उससे दुर्घटना हो जायेगी।"** ऐसा कह कर वे उसी समय चले गये । उसी दिन चार घंटे बाद बाबा फिर आकर पूछने लगे, **"पत्र लिखा या नहीं ?"** पत्नी ने कहा, "अभी तक नहीं लिख पायी अब लिख देती हूँ ।" **"तुरन्त लिख कर भेज दे"**, ऐसा कह कर बाबा फिर चले गये । उन्होंने उसी समय पत्र लिख कर जर्मनी के पते से भेज दिया । गंडा साहब वहाँ एक पुरानी कार के सौदे में लगे थे । बाबा का पत्र उन्हें शनिवार की शाम को मिला, जब कि शनिवार के दिन वहां डाक का वितरण होता ही नहीं था । पत्र को समय पर पहुँचाने की जिम्मेदारी बाबा की ही थी । कार का सौदा रविवार के दिन होना था । गंडा जी ने बाबा की आज्ञा मानकर अपना सौदा रद्द कर दिया ।

(98) गोमती में डूबने का संकल्प

एक बार श्री उमादत्त शुक्ला जी अपनी दुकान हजरत गंज, लखनऊ, से ताँगे में बाबा को अपने घर ले जा रहे थे । रास्ते में जब गोमती के ऊपर लकड़ी का पुल आया तो महाराज बोले, **"शुक्ला एक दिन तू इसी पुल से गोमती में डूबने जा रहा था ? क्यों ? बता ।"** आप को इन प्रश्नों का उत्तर देने में लज्जा आ रही थी, इसलिए चुप रहे । बाबा ने यही प्रश्न तीन बार किया । इन्हें विवश हो बात बतानी पड़ी । आप कहते है, "बात बहुत पुरानी थी । मैं उस समय सोलह वर्ष का था और तब बाबा को जानता भी न था । मैंने गोमती में डूब कर आत्महत्या करने का निश्चय कर लिया था और इसी उद्देश्य से मैं रात्रि के अन्धकार में इस पुल

पर उस स्थान में आकर खड़ा हुआ जहाँ गोमती बहुत गहरी थी । मैं कूदने जा ही रहा था कि एकाएक बड़े जोर की हवा चल पड़ी और उस अँधेरे में तेज़ प्रकाश छा गया । मैं इस अलौकिक घटना से चकरा गया । मेरे शरीर में ऐसी कँपकपी छा गयी कि मैं नदी में कूदने का साहस खो बैठा और घर वापस चला आया ।" आपका इस कार्य का प्रयोजन जो भी रहा हो वह आपने बाबा को ही बताया होगा । आपका उत्तर सुन कर महाराज बोले, "**चले मरुत उनचास । वह प्रकाश भगवान् का था ।**" बाबा का प्रश्न और शुक्ला जी के उत्तर पर उनका विवेचन विचारणीय है । चौबीस वर्ष पूर्व से ही बाबा जानते थे कि शुक्लाजी ने उनकी शरण में आना है । उन्होंने अपनी अलौकिक शक्तियों से शुक्ला जी की जान बचायी ।

(99) दो प्राणों की रक्षा

श्री रमेश चन्द्र साह, पूसा संस्थान दिल्ली में वैज्ञानिक हैं । आप सपरिवार बाबा के भक्त हैं । मुक्तेश्वर, नैनीताल, में आपके सेव के बगीचे भी हैं । सन् 1962 के जाड़ों के दिन थे, आपकी पत्नी और लड़की मुक्तेश्वर के मकान में रात्रि में सो रहे थे । उनके कमरे में अंगीठी जल रही थी और किवाड़ बन्द थे । कोयले की जहरीली गैस से उन दोनों में बेहोशी पैदा हो रही थी। ऐसी स्थिति में उन्हें स्वप्न में बाबा के दर्शन हो रहे थे। बाबा उस समय वृन्दावन आश्रम में थे । उन्होंने तुरन्त अपने कमरे में एक अंगीठी जलवा कर रखा ली और सब खिड़की दरवाजे बन्द कर अकेले लेट गये । भक्तजनों को बाबा के इस कार्य से आश्चर्य हुआ । कुछ समय बाद जब उन्होंने दरवाजा खोल कर देखा तो बाबा की हालत खराब देखी। उन्होंने सभी दरवाजों और खिड़कियों को खोल कर अंगीठी बाहर की । कुछ ही देर में बाबा स्वस्थ हो गये और इधर मुक्तेश्वर में इन दोनों को भी चेतना आयी । उपर्युक्त भक्त परिवार को जब बाबा की इस लीला का बोध हुआ तो उनकी इस अव्यक्त कृपा से वे अपने को धन्य समझने लगे ।

(100) आधा घण्टा लेट

श्री भानु प्रताप सिंह, जिनका लखीमपुर खीरी में फार्म है, एक बार अपने मामा श्री लखपत सिंह रघुवंशी, कमिश्नर, के घर बरेली आये हुए थे । आपके मामा जी ने आपको और अपने एक पुत्र को महाराज को लिवा

लाने के लिये स्टेशन भेजा । गाड़ी निश्चित समय से आयी और इन लोगों ने सारी गाड़ी और स्टेशन छान मारा पर बाबा नहीं दिखायी दिये । जब ये लोग लौटकर घर आये तो इन्होंने बाबा को कमिश्नर साहब से बातें करते देखा । आप कहते हैं कि यह मुझे बाबा के प्रथम दर्शन थे, मैं उनकी लीलात्मक विलक्षणताओं से परिचित न था । मैंने यही समझा कि भूल हमारी है, हम उन्हें देख नहीं पाये ।

दूसरे ही दिन बाबा ने जाना था । समय पर गाड़ी के टिकट भी मंगा लिये गये थे । उन्हें एक बजे दिन में गाड़ी में सवार होना था । बाबा को गाड़ी में बिठाने का काम मामा जी मुझ पर छोड़ गये थे, पर महाराज योंही विलम्ब किये जा रहे थे । गाड़ी आने में केवल पाँच मिनट रह गये थे, बाबा मुझसे बोले, "हम पड़ोस में डा. भण्डारी के घर हो आते हैं ।" मैं घबराया हुआ तो था ही, मैंने कहा, "फिर आप गाड़ी नहीं पकड़ सकते । समय तो हो चुका है ।" बाबा यह कहकर कि गाड़ी आधा घन्टा लेट है, भण्डारी जी के घर को चले गये । मैंने फोन पर स्टेशन से गाड़ी के बारे में पूछताछ की । मुझे ज्ञात हुआ कि वास्तव में वह गाड़ी आधा घन्टा लेट थी । मैं आश्चर्य चकित हो उनकी महत्ता पर मुग्ध हो गया ।

(101) आपरेशन हो चुका

एक बार महाराज सरसय्या घाट, कानपुर में आये हुए थे । वे श्री भगवती सेवक बाजपेई और अन्य भक्तों को लेकर श्री सन्तोष कुमार चौधरी, आइ.ए.एस. के घर गये । चौधरी जी को उन दिनों उत्तर प्रदेश सरकार ने अथाल्टन वेस्ट काटन मिल का नियन्त्रक बना दिया था । घर में चौधरी साहब मिले नहीं, उनकी पत्नी ने बाबा और उनके साथ आये हुए लोगों का स्वागत किया । उन्होंने चौधरी जी के आफिस में बाबा के आगमन की सूचना टेलिफोन द्वारा भेजी और साथ ही उन्हें घर लिवा लाने के लिये कार भी । श्री ट्यूनिस वेस्ट उस मिल के मालिक थे और चौधरी साहब उस समय उनसे मिल के सम्बन्ध में गम्भीर वार्ता कर रहे थे । फोन पाते ही उन्होंने तुरन्त वार्ता स्थगित कर दी और वे घर जाने को उद्यत् हो गये । वेस्ट साहब को उनका यह आचरण बुरा मालूम दिया और उन्होंने कारण पूछा । अपने घर में गुरु के आगमन की बात बताते हुए, चौधरी साहब ने उनसे भी साथ चलने को कहा । यद्यपि वेस्ट साहब को इसमें कुछ भी रुचि न थी, पर वे कुछ न कहकर उनके साथ चले आये ।

बाबा ने जब ट्यूनिस साहब को देखा तो वे चौधरी जी से बोले, "तू इसे क्यों ले आया ? यह आना नहीं चाहता था ।" जब चौधरी जी ने ट्यूनिस साहब से बाबा के प्रश्न की यथार्थता पूछी तो वे बोले, "उस समय मेरा दिमाग़ खराब हो रहा था ।" बाबा फिर कहने लगे, "इस से कह दे कि इसकी पत्नी इंग्लैण्ड पहुँच गयी है । उसका आपरेशन हो चुका, चिन्ता की बात नहीं है । ठीक हो जायेगी ।" इस पर ट्यूनिस साहब बोले, "वह बिलकुल स्वस्थ थी और आपरेशन का कोई प्रश्न ही न था ।" इसके बाद उन्होंने तुरन्त इंग्लैण्ड से सम्पर्क किया और उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ कि आपरेशन पिछली रात हुआ । ट्यूनिस वेस्ट बाबा की वार्ता से अत्यधिक प्रभावित हुए और चौधरी जी से पूछने लगे कि बाबा इतनी जल्दी सब जान कैसे गये ?

(102) महाराज का न्याय

बहुत इधर–उधर भ्रमण के उपरान्त, एक बार बहुत दिनों बाद बाबा भूमियाधार आश्रम आये । यह सूचना जब नैनीताल पहुँची तो उनके भक्त श्रीपूरन चन्द्र जोशी और उनके घनिष्ठ मित्र भूमियाधार जाने को उद्यत् हुए। आपके मित्र गण एक बस में बैठकर चले गये और उन्होंने आप से चलने को भी नहीं कहा । अपने मित्रों के ऐसे आचरण से जोशी जी का चित्त खिन्न हो गया ।

ऐसी मानसिक स्थिति में जब आप घर आये तो आपको अकारण अपने पुत्र और पत्नी पर क्रोध आने लगा और आपका व्यवहार उनके प्रति कटु हो चला । आप दुःखी हो अकेले भूमियाधार को चल पड़े । आपको वहाँ जाने के लिये कोई बस भी नहीं मिली । पानी बरस रहा था, आप रास्ते में एक मज़दूर से बातें करते हुए पैदल भूमियाधार पहुँचे । बाबा इन्हें वहाँ मिले नहीं, वे गेठिया चले गये थे । उस मज़दूर के मन में भी बाबा के दर्शन करने की इच्छा पैदा हो गयी थी और वह आपके साथ गेठिया जाने को तैयार था । वहाँ जाने के लिये कोई साधन न मिल पाने के कारण आप लोग लाचार हो रहे थे । इतने में एक ट्रक में पहाड़ की कुछ माइयाँ बाबा के दर्शनार्थ गेठिया जाती दिखायी दीं, उन्होंने आप लोगों को भी ट्रक में ले लिया ।

जब आपने गेठिया जाकर बाबा के दर्शन किये तो वे आपकी ओर उदासीन से रहे, पर उस नवागन्तुक मज़दूर को उन्होंने बहुत प्यार दिया ।

उसे भोजन करवाया और बहुत प्रसाद दे कर घर को विदा किया । थोड़ी देर मौन रहने के बाद उन्होंने पास में पड़ी 'कल्याण' की एक मासिक पत्रिका को जोशी जी से पढ़कर सुनाने को कहा । जब उन्होंने उस पत्रिका को खोला तो जो लेख सामने आया उसका शीर्षक था 'क्रोध !' आपने बाबा को उसे सुनाया । उन्होंने इस लेख को पाँच बार पढ़ने को कहा । जब आप पाँचवीं बार उसे पढ़ रहे थे तो आपको स्वतः बोध होने लगा कि आप घर से क्रुद्ध होकर चले थे और इस लेख को बार–बार पढ़वाने का तात्पर्य केवल आपको आपकी कमजोरी दर्शानी थी । इसके बाद ही बाबा का व्यवहार आपके प्रति सामान्य हो गया ।

आपके मित्रगण जो नैनीताल में आपको छोड़ कर चले आये थे, बाबा के दर्शन नहीं कर पाये । बाबा ने उन्हें यह अवसर आपके बाद ही दिया ।

(103) युद्ध से छुटकारा

घटना द्वितीय महायुद्ध की है । उत्तर प्रदेश सरकार ने एक विशेष आदेश द्वारा प्रादेशिक चिकित्सा सेवा का उपयोग विश्व युद्ध में किया जाना अनिवार्य घोषित कर दिया था । डा. एम.यू. खाँ युद्ध में जाना नहीं चाहते थे, पर इसका कोई उपचार न देख वे चिन्तित थे । कहते हैं कि आप के किसी शुभ–चिन्तक ने उन्हें बाबा नीब करौरी से आशीर्वाद प्राप्त करने की सलाह दी, पर बाबा को खोज पाना उनके लिये सम्भव न था । सब के मन की जानने वाले, बाबा लखनऊ में प्रकट हो गये और उन पर कृपा कर उन्हें दर्शन लाभ कराया । जब डाक्टर साहबने अपनी चिन्ता व्यक्त की तो वे बोले, **"हनुमान जी को लड्डू चढ़ा दे सब ठीक हो जायेगा ।"** आपने शीघ्र ही अमीनाबाद के हनुमान मन्दिर में यह काम करवाया । फलतः कुछ ही दिनों में सरकार ने एक नये आदेश से इस अनिवार्यता को हटा दिया और इस युद्ध में अपनी सेवा अर्पित करना व्यक्ति की स्वेच्छा पर छोड़ दिया ।

(104) प्रसाद खिला

एक बार डा. एम.यू. खाँ की बेगम बीमार हो गयीं और अनेक उपचारों से भी उनका ज्वर शान्त न हो सका । वे इस कारण दुःखी थे । कहते हैं इस निराशा में उन्होंने बाबा को याद किया और वे एक दिन

उनके घर स्वतः आ गये । जब उन्होंने अपनी परेशानी बाबा के आगे रखी तो वे बोले, **"हनुमान जी को लड्डू का भोग लगाकर इसे प्रसाद खिला – ठीक हो जायेगी ।"** डाक्टर साहब ने ऐसा ही किया, पर इस उपचार से वे मन ही मन बहुत घबराये हुए थे । जब आप की पत्नी लड्डू खा रही थीं तो आप उनसे कहने लगे "बाबा ने तुम्हारे लिये ज़हर भेजा है, पता नहीं अब क्या होगा ।" पत्नी में विश्वास था वह जैसे-जैसे लड्डू खा रही थी, उस की रुचि भी बढ़ती जा रही थी । उसने दो-चार लड्डू खाये और उसके बाद उसे गहरी निद्रा आ गयी । उसी निद्रा में धीरे धीरे उसका ज्वर शान्त हो गया ।

(105) मूक होहिं वाचाल

महाराज अपने गाँव अकबरपुर में अपनी डाक बंगलिया में विराजमान थे और उनके सम्बन्धी श्री श्याम सुन्दर शर्मा उनसे मिलने आये हुए थे । बाबा एकाएक उनसे कहने लगे, **"तू बगिया चले जा, वहाँ कोई बाबा नीब करौरी को खोजने आ रहा है । उसके साथ उसका गूंगा लड़का भी होगा । उससे कह देना यहां बाबा-वाबा कोई नहीं है । तू कुछ भी कह देना उसका लड़का ठीक हो जायेगा ।"** श्याम सुन्दर जी बताते हैं कि जैसे ही मैं बगिया में पहुँचा वहाँ एक कार आकर रुकी जिससे डा. बेग, सी.एम.ओ, फिरोजाबाद, अपने लड़के के साथ उतरे । उन्होंने मुझ से पूछा, "यहाँ बाबा नीब करौरी कहाँ मिलेंगे ? हम उनकी तलाश में हैं । यह मेरा लड़का जन्म से गूंगा है । हम अनेक उपचार कर चुके हैं, पर कोई लाभ नहीं हो रहा है । किसी ने हमें बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करने की सलाह दी और यहाँ का पता भी बताया ।" मैंने बाबा के वही शब्द दोहरा दिए और यह उनकी प्रेरणा ही रही होगी कि मैं उस लड़के से उसका नाम पूछ बैठा । उस गूंगे ने अस्पष्ट शब्दों में अपना सही नाम बता दिया । मैंने बेग साहब से कहा, "आप का लड़का तो बोलता है । आप इससे बोला करें, यह ठीक हो जायेगा ।" वे अपने लड़के के उत्तर से चकित हो गये थे, मेरी बात सुन कर वापस चले गये ।

(106) पवन नाम दिया

श्याम सुन्दर जी अपना एक और अनुभव प्रस्तुत करते हैं । आप कहते हैं कि एक दिन मैं अकबरपुर में बाबा की डाक बंगलिया में उनके

पास बैठा था । वे एकाएक मेरी ओर देख कर मुस्कराते हुए बोले, **"देख तेरी चाची के लड़का हुआ है । कह देना उसका नाम पवन रखें, वह जीवित रहेगा ।"** बाबा की बात सही उतरी । लड़के का नाम घरवालों ने पवन ही रखा । मेरी चाची का कभी भी कोई बच्चा जीवित नहीं रह पाया था । पवन अब बड़ा हो चुका है और स्वस्थ है ।

(107) क्षण–मात्र में अदृश्य

एक बार हनुमान गढ़, नैनीताल में महाराज एक पेड़ के नीचे बैठे थे । वहाँ उनके पास अनेक भक्तजन उपस्थित थे जिनमें श्री जगदीश चन्द्र पाण्डे और श्री हीरालाल साह (हब्बा जी) भी थे । हब्बा जी ने आदि हैड़ाखान बाबा की चर्चा करते हुए कहा कि वे देखते–देखते ग़ायब हो जाते थे । इसी दौरान बाबा उठ खड़े हुए और जगदीश जी से बोले, **"अपना कोट उठा, चलते हैं ।"** वे मुड़ कर ज़मीन से अपना कोट उठाने लगे और बाबा ने ऐसी माया रची कि उपस्थित सब लोगों का ध्यान पाण्डे जी की ओर आकर्षित हो गया । इतने में बाबा अन्तर्धान हो गये । आधे घण्टे तक हनुमान गढ़ में उनकी खोज होती रही । चप्पा–चप्पा लोगों ने खोज मारा पर वे नहीं दिखायी दिये । बाद में बहुत दूर उसी पर्वत के एक शिखर पर उनके दर्शन हुए । जब लोग वहाँ पहुँचे तो बाबा उन्हें देखकर मुस्कराने लगे ।

(108) वस्तु व्यवधान नहीं

नैनीताल से आये श्री तुलाराम साह, वकील, श्री माँ, नन्दन माई, गिरीश आदि अनेक भक्तगण बाबा के दर्शनार्थ 4 चर्च लेन में निवास कर रहे थे । वकील साहब बाबा के समक्ष यदा–कदा गुनगुनाया करते थे, 'मसक समान रूप कपि धरी ।' उनका संकेत यही था कि बाबा आप स्वयं हनुमान हो । एक दिन प्रातः प्रसाद वितरण के बाद बाबा अपने कमरे से होकर बगल के छोटे कमरे में गये । उन्होंने वहाँ जमीन पर अपना बिछौना लगवाया और बोले हमारी तबीयत ठीक नहीं है, हम एकान्त में आराम करेंगे । कोई उनसे मिलने न आये इसलिए उन्होंने उस कमरे को सब ओर से भली–भाँति बन्द करवा कर बाहर से ताला लगवा दिया जिसकी चाबी वकील साहब को दिलवा दी ताकि कमरा आसानी से खोला न जा सके ।

मध्यान्ह का समय था । संयोगवश "बाथ रूम" से बाहर आते श्री माँ की दृष्टि खिड़की से बाहर महाराज पर पड़ी जो पड़ोस में एलनगंज की ओर जा रहे थे । माँ ने यह आश्चर्यजनक जानकारी उसी क्षण सब को दी । यथार्थ जानने के लिये वकील साहब को ताला खोलने के लिये मजबूर किया गया । बाबा वहाँ थे नहीं ।

बाबा का पीछा करते हुए वकील साहब और गिरीश जी ने एलनगंज में लेखक के बहनोई श्री प्रकाश चन्द्र जोशी के घर की सीढ़ियाँ चढ़ते बाबा को पकड़ लिया । उधर जोशी जी भी बाहर आये आपने सब का स्वागत किया । बाबा के पूजन के बाद उनका भोग लगाया जा रहा था, तभी चर्च लेन से अन्य भक्तगण एवं माइयाँ वहाँ आ गयीं । बाबा की अलौकिकता छिप नहीं पायी थी । वे मुस्करा रहे थे और वकील साहब की ओर देख कर गुनगुना रहे थे, '**मसक समान रूप कपि धरी ।**'

(109) बन्द कमरे से गायब

इसी प्रकार की एक घटना नैनीताल में भी देखी गयी । श्री रामरूप सिंह, कमिश्नर के घर भी आकर बाबा दर्शन दे दिया करते थे । जब कभी ऐसा अवसर आता, कमिश्नर साहब बाबा की सेवा में लगे रहते और उनके सान्निध्य को छोड़ नहीं पाते थे । बाबा रात्रि में भी दिन की भाँति विचरण किया करते थे । एक बार रात्रि में भोजन कराने के बाद कमिश्नर साहब ने उनसे शयन करने का आग्रह किया । बाबा ने उनकी बात मान ली और वे सोने का नाटक करने लगे । आपको विश्वास हो गया कि बाबा सो गये । अगले दिन प्रातःकाल भी उनके दर्शन हो सकें इसलिये आपने उनका कमरा बाहर से बन्द कर दिया । जब आपने सबेरे कमरा खोला तो बाबा नहीं दिखायी दिये, वे रात्रि में ही गायब हो गये थे ।

(110) भूत-प्रेत

श्री नासिर अली महाराज के पुराने भक्त रहे । ये अवकाश प्राप्त पुलिस इन्सपैक्टर थे । सन् 1963 में आप लखनऊ में श्री सूरज नारायण मेहरोत्रा के निवास स्थान पर बाबा के दर्शन के लिये आये थे । उस समय आपकी आयु चौरासी वर्ष थी । आप बाबा के दरबार में अपने जीवन की महत्वपूर्ण घटना सुनाना चाहते थे, पर बाबा अपने होठों पर अंगुली रख कर आपको चुप रहने का संकेत कर रहे थे । आप भाव विभोर थे, हँस-हँस कर सुनाने लगे :-

बरसों पहले की बात है, जब मैं जवान था एक देहात के थाने का थानेदार था । एक दिन मैं थाने से बहुत दूर तहक़ीक़ात के लिये गया था और लौट कर रात में ग्यारह बजे वापस आया । दीवान से ख़ैरियत पूछने पर उसने बताया कि एक आदमी दफा 109 में पकड़ कर हवालात में डाल रखा है । मैंने झाँक कर भीतर देखा तो एक लम्बा–चौड़ा और मोटा आदमी था । मैं घर चला गया और खा पी कर सो गया । तड़के सबेरे कुछ सिपाही, जो रात ड्यूटी पर थे, सहमे हुए मेरे दरवाज़े पर आ खड़े हुए और इस्तीफा देने को तैयार थे । वज़ह पूछने पर उन्होंने रात का वाकया सुनाया । उन्होंने बताया कि दफा 109 वाला कोई भूत–प्रेत है । वह रातभर हवालात के बाहर भीतर आता जाता रहा । जब वह बाहर आता तो मय ताले के दरवाज़ा खुल जाता था और जब भीतर जाता तो दरवाजा और ताले दोनों बन्द हो जाते । मैं उजाले में वहाँ गया, मुझे वही आदमी दिखायी दिया जिसे मैंने रात देखा था । मैंने सोचा कि यह भूत–प्रेत तो हो नहीं सकता, ज़रूर कोई महात्मा है । मैंने उनसे अपनी ग़लती क़बूल की और उनकी तौहीनी के लिये माफ़ी माँगी । वे बोले, **"न तुझसे कोई ग़लती हुई है और न हमारी किसी तरह की तौहीनी, फिर माफ़ी का कोई सवाल ही नहीं ।"** इस पर मैंने अर्ज़ किया कि आप मेरे घर खाना खालें तो मैं समझूंगा कि आप मुझसे किसी तरह नाराज़ नहीं हैं । वे राज़ी हो गये । उन्होंने मेरे यहाँ खाना खाया, दिन भर आराम किया और शाम को दिशा जाने के लिये तैयार हो गये । मैंने अपने दो लड़कों को उनकी ख़िदमत में भेजा । उन्होंने रास्ते भर अपने कम्बल से निकाल–निकाल कर लड़कों को सेब खिलाए और उनसे घर लौट जाने को कहते रहे, पर वे उन्हें छोड़कर जाने को तैयार नहीं हुए । तब वे एक छोटे से टीले की ओट में दिशा के लिये तैयार हो गये और वहाँ से ऐसे ग़ायब हुए कि दूर तक मैदान में कहीं दिखायी नहीं दिये । बाबा की ओर संकेत करते हुए नासिर अली बोले, "ये थे हमारे सरकार !"

इसके बाद आपकी मेहरबानी हम पर बनी रही । आप हर साल एक या दो बार मेरे गरीबखाने में तशरीफ़ लाते रहे और मुझे हर तक़लीफ और मुसीबतों से बचाते रहे । जब कभी मुझे कोई मुसीबत आ घेरती, मैं दिन भर फ़ाक़ा करता और शाम को नहा कर अपने कमरे को बन्द कर लेता और फर्श में बैठ कर अंधेरे में इन्हें याद करता तो सरकार मेरे पास आ बैठते । मैं अपनी मुसीबत का बयान करता तो आप उसका हल बता देते और खुद मेरी मदद कर मुझे मुसीबत से बाहर ले आते रहे ।

(111) "मिलना नहीं चाहते"

ठाकुर महावीर सिंह जी के सुपुत्र श्री कर्णवीर सिंह 100 शहज़ादी मंडी, आगरा बताते हैं कि एक दिन बाबा उनके घर में बैठे बातें कर रहे थे । एकाएक वे उठ खड़े हुए और बोले, **"हम जाते हैं ।"** कहाँ जा रहे हैं ?" पूछने पर वे बोले, **"कुछ लोग आ रहे हैं, हम उनसे मिलना नहीं चाहते ।"** ऐसा कहते हुए वे बाहर चले गये । कर्णवीर सिंह जब तक अपनी कुर्सी से उठकर छोटे बाग में पहुँचे, बाबा का कहीं पता न था । वे हवा में विलीन हो गये । आपको उनके इस प्रकार अदृश्य होने पर आश्चर्य तो हुआ, पर युवा–स्वभाव होने के कारण आपने इस घटना पर अधिक ध्यान नहीं दिया । कुछ ही देर में पाँच व्यक्ति घर में उपस्थित हुए और बाबा के बारे में पूछने लगे । यह जान कर कि बाबा अभी–अभी चले गये, वे निराश होकर लौट गये । आप कहते हैं कि इस प्रकार की अनेकों घटनाएँ आपको देखने को मिलती थीं, पर चमत्कार के रूप में आपका कभी इस ओर ध्यान नहीं गया ।

(112) स्वागत से बचाव

बहुत पहले की बात है जब कि बद्रीनाथ यात्रा के लिये मोटर द्वारा पीपल कोटी तक ही जाया जा सकता था, अनेक भक्तगण, जिनमें तुलाराम साह जी, हब्बा जी सपरिवार, गिरीश जी, उमादत्त शुक्ला आदि थे, बाबा के साथ बद्रीनाथ यात्रा पर जा रहे थे । काली कमली धर्मशाला के मैनेजर श्री नौटियाल साहब को इस सम्बन्ध में सूचना पहले से ही भेजी जा चुकी थी । उन्होंने अपनी ओर से देवदर्शन नामक स्थान में बाबा के भव्य स्वागत की तैयारी कर रखी थी और सब लोग इस प्रयोजन से वहाँ समय पर एकत्रित भी हो गये थे । बाबा डाँडी में सवार थे और सब भक्तजन उनके पीछे–पीछे चले जा रहे थे । उस छोटे से स्थान देवदर्शन में लोग स्वागतार्थ खड़े ही रह गये, उन्हें न बाबा दिखायी दिये, न डाँडी और न उसके पीछे चलता हुआ भक्त समुदाय ही । बद्रीनाथ पहुँचने पर बाबा ने भक्त समुदाय से धर्मशाला में ठहरने के लिये कहा और स्वयं बद्रीवन में एक गोशाला में विश्राम करने लगे । जब नौटियाल साहब को पता चला कि बाबा गोशाला में विराजमान हैं, तब वे वहीं उनके दर्शन करने गये और समझ नहीं पाये कि कैसे देवदर्शन जैसे छोटे स्थान में दर्शन की लालसा से उपस्थित लोगों में किसी को भी बाबा और उनके साथ चलता हुआ भक्तगणों का दल दिखायी

नहीं दिया । उन्हें आश्चर्य हुआ कि यह सम्भव हो कैसे पाया । बाबा मुस्कराते हुए उनकी ओर देख रहे थे, अपना स्वागत वे चाहते नहीं थे ।

(113) गंगा ने छिपा लिया

कानपुर के श्री भगवती सेवक बाजपेई बताते हैं कि एक दिन सरसय्या घाट, कानपुर में महाराज लगभग दो सौ भक्तजनों से घिरे थे । इतने में पवार साहब, डी. एस. पी. (सिटी) और श्री गोविन्द चन्द्रा, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक वहाँ आये और बाबा से बोले कि श्री गुलजारी लाल नन्दा और श्री लाल बहादुर शास्त्री आपके दर्शन करना चाहते हैं । बाबा के ऐसा कहने पर भी कि इस समय दर्शन नहीं होंगे, पुलिस के अधिकारी दोनों को वहाँ ले आये । इन लोगों के वहाँ आगमन के कुछ ही पूर्व बाबा ऐसे ग़ायब हुए कि कोई भी यह देख नहीं पाया कि बाबा कब और कहाँ गये । चारों ओर बाबा की खोज हुई, पर कुछ पता नहीं चला । उसी दिन शाम को बाजपेई जी ने बाबा को स्टेशन पर देखा । आपके यह पूछने पर कि आपने अपने परम भक्त नन्दा जी को दर्शन देना क्यों नहीं चाहा, वे बोले, **"वह सीधे हमारे पास न आकर पुलिस के साथ आना चाहता था।"** दुबारा पूछने पर कि आप कहाँ छिप गये थे, वे कहने लगे, **"गंगा मइया ने हमें छिपा लिया था ।"** गंगा मइया की इस कृपा पर उन्होंने सरसय्या घाट में एक भण्डारा करने को कहा । बिना किसी सूचना और प्रबन्ध के, केवल बाबा की प्रेरणा से लोग अपनी-अपनी ओर से खाद्य सामग्री लेकर उपस्थित हुए और वहाँ एक बृहत् भण्डारा अनायास सम्पन्न हुआ ।

(114) 'अपने गुरु से पूछ'

एक महाशय भवाली पर्वतीय भाग में रहते थे और यहाँ के एक प्रतिष्ठित सन्त के शिष्य थे । आप बहुधा कैंची में महाराज के दर्शन करने आया करते । आप के गुरु भी कभी-कभी बाबा के पास आते थे । महाराज की मान्यता से प्रभावित हो धीरे-धीरे आपकी आस्था उन पर बढ़ती जा रही थी, पर आप उनकी महानता की खोज में लगे रहते थे । बाबा का व्यवहार सन्त की परीक्षा करने वाले व्यक्ति के प्रति सदा उदासीन ही रहा । बाबा से कभी वार्ता करने का अवसर न मिल पाने के कारण आप खिन्न रहते पर उनके सान्निध्य की लालसा को दबा भी नहीं पाते थे । एक

दिन कैंची आने के लिये आप आठ किलोमीटर दूर भवाली में बड़ी देर से बस की प्रतीक्षा में खड़े थे । एकाएक आपके मन का असन्तोष जाग उठा और आपने कैंची न जाने का निर्णय ले लिया । आप मन ही मन कहने लगे कि बाबा सिद्ध होंगे तो स्वयं दर्शन देंगे । आप इसी प्रकार संकल्प कर ही रहे थे, बाबा आपके सामने आकर खड़े हो गये । हतप्रभ हो आपने उन्हें प्रणाम किया । बाबा बोले, **"हम तुझे क्या बता सकते हैं ? तू जो चाहता है अपने गुरु से पूछ ।"**

(115) 'बहुत थक गयी'

घटना सन् 1958 की है । श्रीमती दमयन्ती तिवारी, 73 बी, सेक्टर सी, महानगर लखनऊ, अपने पति के साथ ब्रुकहिल नैनीताल से हनुमान गढ़ महाराज के दर्शनार्थ जा रही थीं । प्रातःकाल का समय था । आप लोग तल्लीताल पहुँचते ही थक गये और बड़ी कठिनाई से किशनपुर तक पहुँच पाये । आप बताती हैं कि मैं अपने पति से कहने लगी कि अब चला नहीं जाता । क्या ही अच्छा होता यदि महाराज के दर्शन यहीं हो जाते । उस अन्तर्यामी ने शायद मेरे दिल की पुकार सुन ली । हम लोग शनैः शनैः बढ़ते जा रहे थे । मैंने एक आदमी को एक पुराने मोटर शेड में एक चारपाई पर चित्त लेटा देखा । उसने अपना मुँह ढक रखा था और बेखबर पड़ा था । जब हम उसके समीप पहुँचे तो उसने कम्बल से अपना मुँह बाहर निकाला । हम कृतार्थ हुए, ये थे हमारे महाराज । मुझे स्वयं अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ । हम लोग उनकी चारपाई के पास उनके पैरों की ओर जा बैठे । महाराज कहने लगे, **"बहुत थक गई ?"** मैं उनकी बात सुन कर स्तब्ध रह गयी ।

(116) बाबा का बृहत् परिवार

एक दिन लखनऊ में श्री सूरज नारायण मेहरोत्रा का लड़का अपने मकान की ऊपर की मंजिल से नीचे गिर पड़ा और उसे गहरी अन्दरूनी चोट आ गयी । डाक्टर लोग यथाशक्ति उपचार कर रहे थे, पर हालत गिरती जा रही थी । श्रीमती मेहरोत्रा घबरा उठीं । उन्होंने बाबा को याद किया । वे उस समय चर्च लेन इलाहाबाद में थे, वहाँ उनके लिए भोजन की व्यवस्था की जा रही थी । बाबा एकाएक उठ खड़े हुए और जाने के लिये उद्यत् हो गये । घर वालों के बहुत कहने पर भी वे भोजन करने को

तैयार नहीं हुए और बोले, **"हमारे लड़के की हालत खराब है, हम खाना नहीं खायेंगे ।"** वे अकेले बाहर निकल गये और उसी क्षण लखनऊ में मेहरोत्रा जी के निवास स्थान में पहुँच गये और लड़के को अपनी गोद में लेकर बैठ गये । उन्होंने दूध माँगा, कुछ दूध पीकर शेष लड़के को पिला दिया । लड़के की दशा में परिवर्तन आने लगा और वह शीघ्र स्वस्थ हो गया ।

(117) 'उस दवा को पिला दे'

मेरी (लेखक की) छोटी बहिन के पति श्री दिवाकर पन्त, उत्तर प्रदेश परिवहन में स्टेशन इन्चार्ज थे । एक बार अपने घर अल्मोड़ा में वे बहुत बीमार हो गये । एक दिन अर्द्ध-रात्रि में उनकी दशा शोचनीय हो गयी । पहाड़ में उस समय किसी डाक्टर को बुलाना भी सम्भव नहीं था । घर के सब लोग उन्हें घेरे हुए थे और सबेरा होने की प्रतीक्षा कर रहे थे । वे क्षीण होते चले जा रहे थे । बहिन अधीर हो चुकी थी और उसका मस्तिष्क कुछ काम नहीं कर पा रहा था । इतने में भीतर से बन्द उस मकान में उसने अनुभव किया बाबा अपने एक हाथ से उसके कन्धे को झंकोरते हुए दूसरे हाथ की अंगुली से एक दवा को इंगित करते हुए कह रहे हैं, **"उस दवा को पिला दे ठीक हो जायेगा ।"** उस मानसिक स्थिति में उसे बाबा के अकस्मात् आगमन पर न तो आश्चर्य हुआ और न उन्हें नमन करने का बोध ही रहा । बाबा की उपस्थिति की अनुभूति केवल बहिन को हुई, घर के अन्य लोगों को वे दिखायी नहीं दिये । उसने तत्काल यन्त्रवत् उस दवा की एक अनिश्चित मात्रा अपने पति को पिला दी । इस बीच बाबा अन्तर्धान हो गये । उसके पति की दशा में विचित्र परिवर्तन आ गया । वे बहुत उग्र हो उठे । उनकी उत्तेजना से लगता था उनका दिमाग़ खराब हो गया है । घर के सब लोग भयभीत हो गये और बहिन की ना समझी पर अपनी-अपनी ओर से खेद प्रकट करने लगे । वह दवा का नाम भी नहीं जानती थी और उसको बोध भी न था कि वह किस काम आती है और उसकी कितनी मात्रा दी जाती है । सबेरा होते ही डा. खजान चन्द बुलाये गये । उन्होंने आदि से अन्त तक बीमार की सब बातें शान्ति से सुनी और उस दवा की शीशी का निरीक्षण भी किया । यह दवा थी 'कोरोमिन' । उन्होंने बहिन को अपने पास बुलाया और आश्चर्य से पूछा, "बेटी तूने यह दवा कैसे दे दी ?" बहिन बहुत लज्जित और दुःखी थी उससे कुछ उत्तर देते नहीं बना । वह केवल सिसक-सिसक कर रोने लगी ।

डाक्टर ने उस की पीठ को थपथपाते हुए घरवालों से कहा । इसने अपने पति को स्वयं बचा लिया । यही एक दवा उस समय देने की थी अन्यथा बीमार का बचना सम्भव न था । अब ये ठीक हो जायेंगे चिन्ता की बात नहीं है ।"

बाबा कहते थे, "**सन्त और भगवान् से कुछ माँगने की ज़रूरत नहीं होती, जो उचित होता है उसे वह स्वतः देते हैं ।**" यहाँ स्वयं प्रगट होकर आपने अपने भक्त पर अयाचित कृपा की ।

(118) लखनऊ से बरेली

श्री प्यारेलाल बरेली के व्यापारी हैं । आप कहते हैं कि सन् 1959 में मैं अपनी पत्नी के साथ नैनीताल गया और वहाँ इण्डिया होटल में ठहरा था । एक दिन होटल के मैनेजर, चौधरी ने मुझ से कहा कि महाराज भूमियाधार आए हैं, आप उनके दर्शन कर आइये । महाराज शब्द सुन कर मैं चौंक गया । मैंने पूछा, "कौन महाराज ?" उसने बताया कि वे बाबा हैं, आप को नाम लेकर बुलायेंगे । मैं पत्नी के साथ तुरन्त वहाँ चला गया । मैंने वहाँ बाहरी कमरे में एक स्थूल व्यक्ति को बैठा देखा, पर उसका वेश बाबा लोगों का सा नहीं था । मैंने आश्रमवासियों से बाबा के बारे में पूछा । उन्होंने उस व्यक्ति की ओर इशारा करते हुए अपना आश्चर्य व्यक्त किया कि बाबा अभी-अभी तो आये ही हैं, इतनी जल्दी नैनीताल कैसे खबर पहुँच गयी । अस्तु, मुझे महाराज के दर्शन हुए । उन्होंने मुझे यह कह कर विदा किया कि कल बरेली में डाक्टर भण्डारी के घर पर मिलना । मैं दूसरे दिन सबेरे ही बरेली को रवाना हुआ और वहाँ पहुँचते ही डाक्टर के घर गया । मुझे देख कर आश्चर्य हुआ कि वे मुझ से पहले ही वहाँ पहुँच गये थे । बाबा बोले, "**हम कुछ दिनों के लिये बाहर जा रहे हैं, तू हमें पाँच दिन बाद मिलना ।**" मैंने उन्हें बताया कि मुझे भी कुछ काम से बाहर जाना है, मुझे आपके दर्शन नहीं हो पायेंगे । वे बोले, "**हम तेरा इन्तजार करेंगे !**" मैं गौंडा गया और वहाँ से इलाहाबाद पहुँचा । मुझे बनारस भी जाना था, पर बाबा का ख्याल आ गया । मैं रात की गाड़ी से इलाहाबाद से बरेली को रवाना हुआ । गाड़ी सबेरे लखनऊ पहुँची । जब वहाँ से गाड़ी आगे चली तो रास्ते भर बरेली तक मुझे बाबा बाहर ट्रेन के साथ बराबर दौड़ते दिखायी दिये । मैं हैरान हो गया । बीच बीच में जब गाड़ी स्टेशनों में रुकती वे अदृश्य हो जाते थे । बरेली पहुँचते ही मैं अपने घर से सीधे डाक्टर भण्डारी के घर गया । यहाँ मुझे उनके दर्शन हुए । मैंने सुना वे भी लगभग उसी समय मुझसे पहले वहाँ पहुँचे थे । मुझे बड़ा

आश्चर्य हुआ उन्हें वहाँ देख कर, पर मैं उनसे इस सम्बन्ध में कुछ पूछ न सका । बाबा उसी समय मेरे साथ मेरे घर आये और उन्होंने दाल रोटी खाना पसन्द किया । थोड़ी देर में डाक्टर के घर से श्री किशन चन्द्र तिवारी और श्री तुलाराम साह भी वहाँ आ गये । बाबा ने उन्हें भी प्रसाद खिलवाया ।

(119) भगवान् के रूप सिद्ध–महात्मा

सरदार रणजीत सिंह, बसचालक, उत्तर प्रदेश परिवहन, सिद्ध महात्मा को भगवान् का ही रूप मानते, पर इस तथ्य में आपके विश्वास की दृढ़ता नहीं थी । आप को महाराज के दर्शन किस प्रकार हुए इसका उल्लेख पूर्व प्रकरण में किया जा चुका है+ । इस दर्शन के बाद ही आपको एक विचित्र अनुभव हुआ । आप कहते हैं कि बाबा के दर्शन के उपरान्त जब मैंने बस आगे बढ़ायी तो कुछ दूर जाने के बाद मुझे बाबा बस से आगे जाते दिखायी दिये । मैं हैरान हो गया और सोचने लगा कि मुझे कुछ भ्रम हो रहा है । बस से तेज आदमी पैदल जा नहीं सकता । फिर बहुत दूर जाने पर मेरी दृष्टि उन पर गयी । इस बार वे पहाड़ के ऊपर चढ़ते दिखायी दिये । अब आगे सन्देह का कोई मौका नहीं रहा । इसके बाद चलती बस से वे लगातार कई स्थानों पर बराबर दिखायी दिये, जिससे मैं चकरा गया और मेरा मन यह स्वीकार करने लगा कि महाराज वास्तव में भगवान् ही हैं । इस प्रकार उनकी अलौकिकता से प्रभावित होकर मैं हमेशा के लिये उनका दास हो गया । तब से लगभग बीस वर्ष से ऊपर हो चुके हैं मैं इनके आश्रम और भक्तों की सेवा बराबर करता आ रहा हूँ ।

(120) बाबा की इच्छा पर ही व्यक्ति बोल पाता

लेखक की चाची श्रीमती नन्दन माई नैनीताल से बाबा के दर्शनार्थ भूमियाधार जा रही थीं । आप नैनीताल–भवाली सड़क से पगडण्डी के द्वारा नीचे भूमियाधार आश्रम पहुँचना चाहती थीं । आपने ऊपर से देखा कि नीचे मन्दिर की सड़क पर कुछ दूर एक मोड़ के पास बाबा का दरबार लगा था । अपनी थकान के कारण आप सोच रही थीं कि यदि बाबा के दर्शन मन्दिर में ही हो सकते तो आप परेशानी से बच जातीं । इसके बाद ही आप जैसे जैसे मन्दिर के निकट पहुँचती जा रही थीं, आपको बाबा

+ देखिये प्रसंग संख्या 72

अधिकाधिक स्पष्ट रूप से मन्दिर के चबूतरे में विराजमान दिखायी दे रहे थे । इससे आपका चित्त प्रसन्न हो उठा, पर मन्दिर के आते ही वे अदृश्य हो गये । आपने भीतर जाकर सर्वत्र उनकी खोज की और अन्त में ब्रह्मचारी बाबा से पूछा । उन्होंने उस सड़क के मोड़ की ओर संकेत करते हुए बाबा को वहाँ बैठे दिखाया । आप अपनी आँख पर अविश्वास कर नहीं सकती थीं इस कारण बाबा की इस लीला से आप चकित रह गयीं । अब आप उनके दर्शन हेतु उस मोड़ की ओर गयीं और रास्ते में मन ही मन यही विचारते रहीं कि वहाँ उस जन समुदाय के बीच आप बाबा से कहेंगी कि 'इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा,. मतिभ्रम मोर कि आन बिसेखा ।' इसके आशय से बाबा प्रसन्न होंगे और वहाँ उपस्थित अन्य लोग कुछ भी न समझ पायेंगे । पर जैसे ही आप बाबा के पास पहुँची, वे बड़े जोरों से हँसने लगे । आप जो कुछ भी इरादा कर वहाँ गयी थीं उनकी उस हँसी में उसे बिलकुल भूल ही गयीं । यह बाबा की दूसरी लीला थी – उनकी इच्छा विरुद्ध कोई भी उनके दरबार में चाहते हुए भी नहीं बोल पाता था ।

(121) नर्मदा से बरेली

एक रात स्व. लखपत सिंह रघुवंशी, कमिश्नर बरेली, अपनी कोठी में पड़े थे । अगले दिन उनके प्रोस्ट्रेट–ग्लैण्ड का आपरेशन होना था । उन्हें इस कारण बहुत घबराहट हो रही थी और इस चिन्ता में सो नहीं पा रहे थे । वे मन ही मन आर्त भाव से बाबा को याद कर रहे थे । इतने में बाहर किसी ने दरवाज़े को जोर का धमाका दिया । घर के सभी लोग घबरा गये । उन्हें डकैतों का सन्देह हुआ । वे किवाड़ तोड़ कर भी आ सकते हैं ऐसा विचार कर उन्होंने दरवाज़ा खोलने का निर्णय लिया । द्वार खोलते ही बाबा के दर्शन हुए । वे सीधे लखपत सिंह जी के कमरे में गये और बोले, **"तूने हमें याद किया था, हमें नर्मदा के तट से यहाँ आना पड़ा ।"** बाबा ने उन्हें निर्भय हो कर आपरेशन करवाने का आदेश दिया । उनकी कृपा से उन्हें शान्ति मिली, आपरेशन सफल हुआ और वे अपनी व्यथा से मुक्त हुए ।

(122) आगरा से झांसी

एक दिन महाराज को कुछ सेठ लोग आगरा से झांसी ले जा रहे थे। गाड़ी में अत्यधिक भीड़ थी । डा. महावीर सिंह इन्चार्ज, जी. आर. पी.

आगरा, ने अपने सिपाहियों की सहायता से बाबा और उनके साथ के लोगों को ट्रेन में बैठा दिया, पर जगह सब को अलग-अलग डिब्बों में मिल पायी । ठाकुर साहब ने एक खिड़की के पास की सीट पर बाबा को बैठा दिया और ट्रेन के साथ जाने वाले सिपाही से उनकी सुविधा का ध्यान रखने को कह दिया । आप प्लेटफार्म में खड़े-खड़े उनसे बातें करते रहे । गाड़ी छूटने को थी, इतने में एक बूढ़ा वहाँ आकर ठाकुर साहब से निहोरा करने लगा कि वे उसे खिड़की से भीतर चढ़ा दें, क्योंकि भीड़ के कारण वह दरवाज़े के रास्ते भीतर जा नहीं पा रहा था । काम उसका ज़रूरी था और उसे इसी गाड़ी से जाना था । बाबा तुरन्त खिड़की से बाहर कूद आये और उन्होंने स्वयं उस बूढ़े को अपने हाथों से उठाकर अपनी जगह पर बैठा दिया । महावीर सिंह जी यह देखकर चिन्तित हो गये कि बड़ी कठिनाई से बाबा को वहाँ बिठाया गया था और अब कुछ कर पाना सम्भव भी नहीं था । बाबा बोले, **"चलो, घर चलते हैं । हमें कर्णवीर से मिलना है ।"** ठाकुर साहब ने कहा, "आप रोज़ ही उससे मिलते रहते हैं, आज क्या खास बात है ?" इतने में गाड़ी चल दी और वे दोनों घर आ गये । घर में वे कर्णवीर को बातों में उलझाने का आनन्द लेते रहे और उसे उकसाते रहे । उन्होंने उस रात लगभग आठ बजे खाना खाया और कर्णवीर से पूछने लगे कि वह गाड़ी कब झांसी पहुँचेगी ? जब उन्हें बताया गया कि अब थोड़े ही समय में पहुँचने वाली है, वे एकाएक उठ खड़े हुए और यह कहते हुए, **'हम अब जा रहे हैं'** चल दिये और बाहर अंधेरे में अन्तर्धान हो गये । दूसरे दिन उस ट्रेन-गार्ड सिपाही ने झांसी से लौट कर ठाकुर साहब को बताया कि यद्यपि रास्ते भर बाबा ट्रेन में दिखायी नहीं दिये, पर झांसी स्टेशन पर उनके दर्शन हुए । उस दिन की घटना से उस परिवार को अत्यन्त आश्चर्य हुआ और बाबा के प्रति आप लोगों की भय मिश्रित श्रद्धा अगाध हो गयी ।

(123) लन्दन में बाबा के दर्शन

घटना मई 1972 की है । सम्भवतः इसी का अति संक्षिप्त उल्लेख 'मिरेकिल आफ लव' के पृष्ठ 10 पर हुआ है । बहुत खोज के उपरान्त ज्ञात हुआ कि इस घटना का सम्बन्ध अमरीकी महिला श्रीमती हीथर थौम्पसन से है जिनको बाबा ने भारतीय नाम सीता दिया था । उस समय आप लन्दन के एक विश्वविद्यालय में अध्ययन करती थीं । आपने महाराज को देखा भी

न था, केवल उनका सुयश अपने मित्रों से सुना था । यह घटना बोध कराती है कि कैंची (भारत) में रहते हुए बाबा ने उक्त महिला को लन्दन की बस में दर्शन दिये और उस चलती बस में ही वे अन्तर्धान भी हो गये । बाबा ने आपको भारत आने की प्रेरणा दी और आपकी विषम परिस्थितियों में भी अपनी अनोखी कृपा से यथोचित साधन भी सुलभ कराया ।

आप इस घटना के वर्णन में लिखती हैं, "एक दिन मैं लन्दन की बस में सफर कर रही थी । उस दिन एक डबल-डेकर बस के प्रवेश द्वार के पास की ही सीट पर बैठी थी । मेरी बगल की सीट पर कोई न था । बस लगभग खाली थी और कण्डक्टर ऊपर के कक्ष में था ।"

"एकाएक बस रुकी । एक बूढ़ा भिखारी चढ़ कर ऊपर आया । उसने फटे कपड़ों की कई परत पहन रखी थीं और वह अपनी भुजाओं में एक लाल-नीला कम्बल+ दबाये था । वह मेरे सामने खड़ा हो गया और अति आकर्षक मुस्कान से मेरी ओर देखने लगा, जैसे कह रहा हो, थोड़ा आगे सरको मैं तुम्हारी बगल में बैठना चाहता हूँ । मैं आगे खिसक गयी और वह वहीं बैठ गया ।"

"मुझे किसी को घूर कर देखना अच्छा नहीं लगता, इसलिए मैं कुछ मुड़ गयी और खिड़की से बाहर देखने लगी । उस समय मैं मन में विचारने लगी "कितनी प्यारी है इसकी मुसकान ! कितना अच्छा है यह वृद्ध !" जैसे मन ही मन मैं उसे वृद्ध कह रही थी, मेरा ध्यान एकाएक कल्पना में महाराज की ओर गया । मैंने सदा यही सुना था कि वे कम्बलधारी वृद्ध कहलाते हैं । इस कारण मैंने मुड़ कर पुनः उन्हें देखना चाहा । मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मेरी बगल की सीट खाली है । यह सारा खेल चन्द मिनटों का था । वे कहाँ ग़ायब हो गये ? मैंने बाहर भी देखा । वे उतरते भी तो कैसे ? बस कहीं रुकी ही न थी । सड़क सुनसान थी और वह भिखारी कहीं दिखायी नहीं दे रहा था ।"

"मैं समझ नहीं पायी कि यह सब क्या हुआ । यह कोई कल्पना थी नहीं । दूसरे दिन मेरे कुछ मित्र मेरे पास आये और कहने लगे कि पिछली सबेरे (जब मैं बस में थी) उनके मन में तीव्र भावना जागृत हुई कि वे धन से

\+ यह कम्बल एक महीने पूर्व एक पर्वतीय महिला ने बाबा को कैंची में समर्पित किया था । बाबा तब से कैंची में ही रहे, बाहर गये ही नहीं ।

मेरी सहायता करें जिससे मैं महाराज जी के दर्शन हेतु भारत के लिये टिकट खरीद सकूं ।"

"यह अद्‌भुत बात थी, पर मेरी एक समस्या और हल होनी थी । यद्यपि इस धन से मार्ग व्यय की पूर्ति हो रही थी पर मुझ जैसी गरीब छात्रा के पास भारत में निर्वाह के लिये और धन नहीं था । इसके हल के लिये महाराज को एक चमत्कार और करना पड़ा । इंग्लैण्ड में प्रत्येक सत्र के उपरान्त हर विद्यार्थी अपने घर आने जाने के खर्च का भुगतान युनिवर्सिटी से करवा लेता है । मैंने भी इसके लिये आवेदन पत्र दिया था । मुझे आश्चर्य हुआ कि शिक्षा अधिकारियों ने जितनी मेरी माँग थी उसकी दुगुनी धन राशि का चेक मुझे दे दिया । मैंने दूरभाष द्वारा यह ग़लती उन्हें दर्शायी । उन्होंने अपना खाता देख कर मुझे सूचित किया कि जो धन राशि मुझे दी गयी है, वह सही है । इससे मैंने यही समझा कि महाराज चाहते हैं कि मैं आकर उनके दर्शन करूं ।"

"एक महीने में ही मैं वायु मार्ग से दिल्ली आ गयी और महाराज के दर्शन करने के लिये सीधे कैंची पहुँची । आश्रम में प्रवेश करते ही मैंने निश्चय किया कि मैं उनसे पूछूंगी कि क्या आप वही वृद्ध हैं जिन्होंने मुझे लन्दन की बस में दर्शन दिये थे ? पर जब मैं उनके पास पहुँची तो मैंनें उन्हें वही कम्बल ओढ़े देखा जो वह वृद्ध बस में हाथ में लिये था और वे वही बस की सी सर्वज्ञता पूर्ण सुन्दर मुस्कान से मेरी ओर देखने लगे । इसके बाद मुझे कुछ पूछना शेष रहा नहीं, मैं जान गयी कि वे वही वृद्ध हैं जो मुझे बस में मिले थे ।"

"उनकी क्या कृपा दृष्टि थी ! उन्होंने हमेशा के लिये मेरे हृदय और आत्मा को आनन्दित कर दिया ।"

(124) एक विचित्र अनुभव

घटना नवम्बर 4, 1971 की है । महाराज की एक अमरीकी भक्त महिला जिसे वे राधा कहा करते थे, वृन्दावन में आनन्दमई माँ के आश्रम से अपनी अमरीकी सहेली अन्जनी (भारतीय नाम) के साथ एक रिक्शा में आ रही थी । रिक्शा का चालक बहुत तेज़ी से रिक्शा भगा रहा था । राधा जी ने एकाएक भयवश अपनी आँखे बन्द कर ली थीं । तुरन्त उन बन्द

आँखों में आपको महाराज जी के मुख का दर्शन हुआ । ऐसा अनुभव इससे पूर्व आपको कभी नहीं हुआ । आप कहती हैं कि इस दर्शन में महाराज़ मुझ से कह रहे थे, **"दुर्घटना होने जा रही है, कूद पड़ ।"** मैंने तुरन्त उनकी आज्ञा का पालन किया । मैंने जानते बूझते यह कार्य किया – बड़ी शान्ति और बिना किसी अन्तर्द्वन्द्व के । इस कार्य में न मुझे कुछ भय था और न मेरे दिल की कोई धड़कन ही रुकी । यह सब इतनी जल्दी हुआ कि मैं अंजनी से कुछ कह भी नहीं पायी । मेरे कूदने का कोई कारण प्रत्यक्ष न था, कोई भी दर्शक मुझे पागल कह सकता । उसी क्षण वहाँ चौराहे में एक दूसरा रिक्शा हमारे रिक्शा से टकरा गया । अंजनी को थोड़ी चोट आयी । वह मेरे उपचार से ही स्वस्थ हो गयी । टक्कर होने के एक क्षण पूर्व मेरी आँख खुली थी और दुर्घटना के पूर्व ही मैं कूद गयी थी । महाराज़ मेरे साथ थे । यह उनकी अनन्त और अपार कृपा का फल है । मैं उनसे अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहती थी, पर उन्होंने मुझे धन्यवाद देने का अवसर ही नहीं दिया । हर बार जब भी उनके दर्शन होते वे वार्ता का विषय बदल देते, मेरी बात पर ध्यान न देते या इस दुर्घटना को स्वीकार नहीं करते थे ।

(125) वरद हस्त के दर्शन

श्री भूषण चन्द्र जोशी, आई. जी. जेल, उत्तर–प्रदेश, को एक बार दिल्ली में दिल का दौरा पड़ा । उन्हें उसी समय मैडिकल इन्सटिट्यूट में भरती किया गया । उनकी हालत डाक्टरों को बहुत नाज़ुक दिखायी दी । उनकी नाक में तुरन्त आक्सीजन की नली लगायी गयी और स्ट्रैचर पर लिटा कर आपको वार्ड में ले जाया जा रहा था । आप कहते हैं कि आपको उस समय बाबा का वरद हस्त अपने ऊपर दिखायी देने लगा और ऐसी अनुभूति होने लगी कि आपको आक्सीजन की आवश्यकता है ही नहीं । आपने नली हटा दी और डाक्टरों के बहुत समझाने पर भी आपने उसका उपयोग नहीं किया । आप शीघ्र स्वस्थ हो अस्पताल से घर वापस चले आये ।

(126) खीर का भोग

एक बार चर्च लेन इलाहाबाद में श्री सुधीर मुकर्जी ने महाराज के छाया चित्र को खीर का भोग लगाया । वे खीर के कटोरे को वहीं छोड़ कर किसी काम से दूसरे कमरे में चले गये । लौटकर उस कमरे में जाने पर आप को उस छाया चित्र के ऊपर से खीर टपकती हुई दिखायी पड़ी । उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ और उन्होने घर में सभी लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया । महाराज उन दिनों इलाहाबाद में थे नहीं । संयोगवश मैं (लेखक) उनके घर में था । मैंने अपनी आँखों से खीर को उस छाया चित्र से टपकते देखा और माँग कर उस प्रसाद का पान किया ।

(127) पत्रिका में बाबा का हस्त–लेख

श्री सर्वदमन सिंह रघुवंशी जिन्हें बाबा इन्दर नाम से सम्बोधित किया करते थे, कैंची आश्रम ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं । सम्भवतः 1984 की आश्विन की नवरात्रियाँ थीं । आप आश्रम की यज्ञशाला में नौ दिन शत चण्डी यज्ञ का अनुष्ठान कर रहे थे । अपने समय का सदुपयोग करने के लिये आपने 'कल्याण' की कुछ मासिक पत्रिकाएँ रखी थीं, जिन्हें आप अवकाश में पढ़ते थे । एक दिन आप जिस पत्रिका को पढ़ रहे थे उसमें एकाएक आप को बाबा के हस्त–लेख में "राम राम ––" लिखा दिखायी दिया । आप यह देख कर चकित हो गये और आपने तुरन्त सब लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया । लेखक ने भी इसका निरीक्षण किया । इसमें सन्देह नहीं वह बाबा का ही हस्त–लेख था ।

बाबा अपने लीला काल में भक्तों के घरों में अप्रत्यक्ष रूप से प्रवेश कर अपने हस्त–लेख में "राम राम –––" लिखा करते थे, पर उनका यह लेख समाधि के बाद भी आश्रम में उनकी उपस्थिति का स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है ।

(128) "बी हेयर नाव"

श्री रिचार्ड एल्पर्ट (रामदास) ने महाराज की अनुमति प्राप्त कर सन् 1971 में 'बी हेयर नाव' पुस्तक संयुक्त राज्य अमरीका से प्रकाशित की । इस

पुस्तक की सात लाख पिछत्तर हज़ार से भी अधिक प्रतियाँ छप चुकी हैं । आपने इस पुस्तक में धर्म सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किये हैं और बाबा के बारे में भी कुछ लिखते हुए यह दर्शाया कि किस प्रकार एल्पर्ट रिचार्ड की परिणति रामदास में हुई । आप इस पुस्तक की 'प्रूफ कापी' लेकर भारत आये और प्रकाशक को उसके छापने का आदेश दे आये थे । आपने यह 'प्रूफ कापी' महाराज को अर्पित कर दी । यह पुस्तक अँग्रेजी में लिखी है और यह सर्वविदित है कि बाबा अंग्रेजी पढ़े नहीं थे । कई महीने बाद एक दिन रामदास से इस विषय में बात करते हुए बाबा ने उस पुस्तक के दो गद्यांशों में व्यक्त कुछ झूठे तथ्यों की ओर उनका ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि **पुस्तक में झूठी बातें नहीं आनी चाहिये इससे तुम्हें दुःख होगा** और आदेश दिया कि वे उन गद्यांशों को पुस्तक से हटा दें ।

रामदास जी मन ही मन घबरा उठे क्योंकि बहुत समय बीत चुका था और उन्हें भय था कि पुस्तक प्रकाशित हो गयी होगी । आप का अनुमान था कि तीस हजार प्रतियाँ छप चुकी होंगी । आपने स्टीव डर्की से सम्पर्क स्थापित किया, उनसे आप को ज्ञात हुआ कि अगली तीस हजार प्रतियाँ छपने जा रही हैं । आपने बाबा को स्थिति समझाते हुए बताया कि यह परिवर्तन अगले संस्करण में हो पायेंगे । तीस हज़ार पुस्तकों के रद्द करने में दस हजार डालर की क्षति थी । महाराज बोले, **"धन और सत्य का कोई सम्बन्ध नहीं है । जानते हुए झूठ को प्रकाशित करने से तुम्हें दुःख होगा । तुम्हें अभी उसे सुधारना चाहिये ।"**

आपने स्टीव महोदय को तुरन्त 'केबल' किया । एक सप्ताह बाद उनका जो उत्तर आया उसमें उन्होंने एक अद्भुत घटना का उल्लेख किया । बाबा का छाया चित्र जो पूर्ण पृष्ठ में प्रकाशित होना था उसके गुम हो जाने से पुस्तक का प्रकाशन नहीं हो पाया । इस प्रकार केवल स्टीव साहब के 'फोन' से ही काम बन गया । यह बाबा का अमरीका में अप्रत्यक्ष रूप से किया गया कार्य था ।

इस घटना का उल्लेख 'मिरेकिल आफ लव' के पृष्ठ 200 पर हुआ है ।

(129) सन्यासियों का मतिभ्रम

इसे महाराज की मौज ही समझिये कि वे अपने को कहीं भी प्रकट कर देते । वे इस कार्य को ऐसे कौशल से करते कि यह एक सामान्य आश्चर्य की बात बनकर रह जाती । साधारण लोग इससे भ्रमित होते ही थे, साधु–सन्यासियों को भी मतिभ्रम हो जाता था । स्वामी विजयानन्द नाम से जाने गये डा. ए. जे. वेनट्रोब अपनी पुस्तक 'इन द स्टेप्स आफ योगीज़' में ऐसी ही एक घटना का उल्लेख करते हैं ।

प्रयाग में कुम्भ का मेला चल रहा था । वहाँ किसी आश्रम के सन्यासी गंगा के किनारे एक रात विभिन्न विषयों पर वार्ता कर रहे थे । इस प्रकार बाबा नीब करौरी पर भी वार्तायें होने लगीं । एक साधु ने कहा कि बाबा की गति सर्वत्र है, उनमें ऐसी शक्ति है कि वे कहीं भी हों बुलाते ही प्रकट हो जाते हैं । इसमें बड़ा वाद–विवाद खड़ा हो गया । लोग इस सत्य को मानने के लिये तैयार न थे, उनका कहना था कि जिसने भी शरीर धारण कर रखा है उसे एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँचने के लिये समय चाहिये । इस विवाद को व्यर्थ बताते हुए एक साधु ने कहा कि यदि बाबा पुकार पर उपस्थित हो जाते हैं तो बात सत्य है, अन्यथा झूठ । इस पर एक साधु ने बाहर खड़े होकर जोर से उन्हें पुकारा । जब वह कई बार आवाज़ लगा चुका तो उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि बाबा उसके पास ही किसी व्यक्ति से बातें कर रहे थे ।

(130) बुलाने की एक युक्ति

महाराज को भी हनुमान जी की भाँति रामायण का पाठ और राम नाम कीर्तन अत्यधिक प्रिय था । जब कभी भक्तजन ऐसा आयोजन करते तो वे किसी रूप में या अप्रत्यक्ष रूप से वहाँ उपस्थित रहते और कभी दर्शन दे उन्हें कृतार्थ करते थे । कभी किसी भक्त को यदि बहुत समय तक उनके दर्शन न हो पाते तो वह उन्हें घर में बुलाने के लिये ऐसा ही आयोजन करता था । बरेली में बहुत अरसे से महाराज का आगमन नहीं हुआ था, इस कारण उनके दर्शन की इच्छा से प्रेरित हो वहाँ के व्यापारी श्री प्यारे लाल महाजन ने अखण्ड राम नाम कीर्तन का विचार किया । संयोगवश

आपके गुरुदेव श्री स्वामी विद्यानन्द जी उनके घर पधारे थे । इस अवसर पर आपने उनके आगे इस कीर्तन का प्रस्ताव रखा । गुरु जी ने 'हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे' कीर्तन आरम्भ कर दिया ।

रात बहुत देर तक आप और आपकी पत्नी कीर्तन का आनन्द लेते रहे । इसके बाद पत्नी ऊपर की मंजिल में अपने कमरे में सो गयी और आप वहाँ न जाकर बगल के कमरे में लेट गये । आप गहरी नींद में थे, जब बाबा ने आपके बन्द किवाड़ों पर दस्तक दी । जब आप न जागे तो उन्होंने ऊपर की मंजिल में जाकर उस कमरे के किवाड़ को खटखटाया जहाँ आपकी पत्नी सो रही थीं । उनकी नींद तो खुल गयी, पर रात के समय उन्हें किवाड़ खोलने में भय हुआ । बाबा लौट गये और डाक्टर भण्डारी के घर चले गये । वहाँ से उन्होंने प्यारे लाल जी को टेलिफोन से बुलाया । प्यारे लाल जी अपने पिता जी को लेकर डाक्टर साहब के घर गये और बाबा को अपने घर लिवा लाये । घर में जब प्यारे लाल जी ने अपनी पत्नी से गत रात्रि में दरवाज़े पर दस्तक की बात पूछी तो उन्होंने उस घटना का समर्थन करते हुए कहा कि वे भयवश किवाड़ न खोल सकीं ।

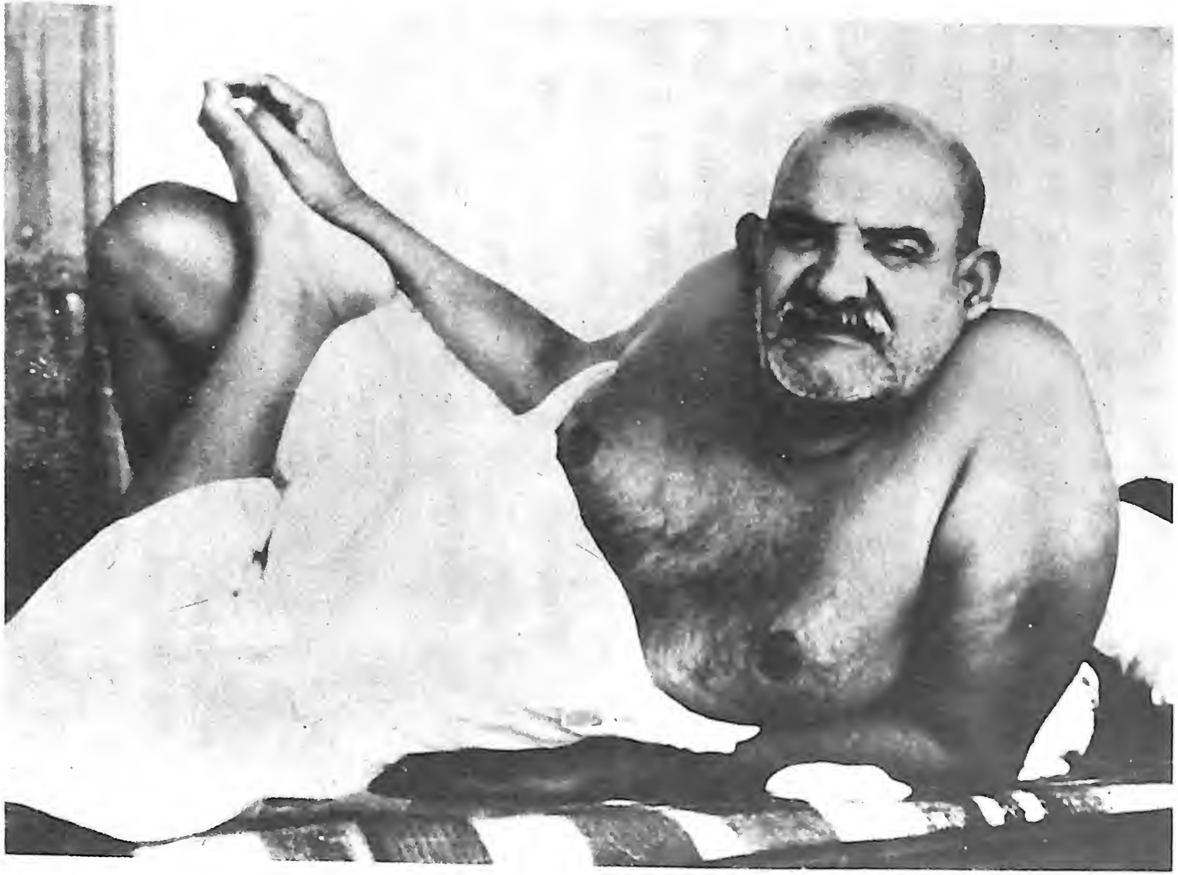

हाथ का रूपान्तर एक खिलवाड़

सर्वशक्तिमत्ता

महाराज में दृढ़ इच्छा शक्ति थी और प्रकृति पर उनका पूर्ण नियन्त्रण था । इन कारणों से वे सर्वशक्तिमान थे । वे जो चाहते वह होकर रहता । कुछ भी उनके लिए असम्भव न था । जीव और जड़ सदा उनकी क्रीड़ा की सामग्री बने रहे । प्रकृति पर नियन्त्रण होने से पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश तत्व उनकी इच्छा का अनुसरण करते । वे स्वयं पृथ्वी के गुण और दोष से अप्रभावित रहे । वस्तु का उत्पादन, उसमें वृद्धि, उसका रूपान्तरण और रूपान्तर किये बिना उसके स्वरूप में परिवर्तन कर देना उनकी इच्छा के आधीन था । यह उनकी इच्छा शक्ति का ही खेल था कि वे अपने को किसी भी रूप में दर्शा सकते थे । प्रत्यक्ष में भी वे अपने को और अपने साथ के लोगों को जनदृष्टि से ओझल कर सकते और विभिन्न स्थानों में एक ही समय में उपस्थित हो कार्य कर सकते । उनके कल्पनातीत कार्यों से बुद्धि चकित रह जाती थी । वे सन्तान-हीनों को अपनी इच्छामात्र से सन्तति सुख प्रदान करते और मृत में प्राणों का संचार भी कर देते थे । उनके कार्य वैज्ञानिकों के लिए चमत्कार और चिकित्सा शास्त्रियों के लिये आश्चर्य हैं । वे अपनी प्रेरणा शक्ति से जिसे जैसा चाहते नचाते और व्यक्तियों के स्वभावों में मौलिक परिवर्तन, जो एक दुष्कर कार्य है, अनायास ले आते । "असि सब भाँति अलौकिक करनी, महिमा जासु जाइ नाहिं बरनी"

इस प्रकरण में वर्णित लीलाओं में सर्वज्ञता और सर्वव्यापकता की छाप मिलनी स्वाभाविक है । सर्वशक्तिमत्ता का इन गुणों से घनिष्ठ सम्बन्ध है, उसे इनसे अलग कर दर्शाना सम्भव नहीं है ।

प्रकृति-नियन्त्रण, जड़ और जीव

(131) कच्चा पर्वत पक्का हो गया

पाठक 'चरितामृत' में 'निर्माण कार्य' प्रकरण के अन्तर्गत हनुमान गढ़ के वर्णन में पढ़ चुके हैं कि महाराज ने किस प्रकार अपनी शक्ति से मनोरा के कच्चे पर्वत को, जिसमें आदिकाल से कभी भी निर्माण कार्य सम्भव नहीं हो पाया था, पक्का कर आश्रम और अनेक मन्दिरों की स्थापना की। इस प्रकार उस पर्वत के प्रति उपेक्षा-भाव जाता रहा और वह नैनीताल का दर्शनीय स्थल बन गया। फलतः इसके बाद सरकारने यहाँ वेधशाला का भी निर्माण किया।

(132) सूखा वृक्ष हरा-भरा हो गया

कैंची मन्दिर परिसर की सीमा से लगा आश्रम का द्वार है। उसके सामने लगभग पच्चीस मीटर दूर एक शिला है, जिस पर बाबा बहुधा बैठा करते और भक्त एवं दर्शकगणों से घिरे रहते। इस शिला से लगा हुआ एक वृक्ष है जिसको यहाँ के निवासी 'उत्तीस' का वृक्ष कहते हैं। पहाड़ के अन्य वृक्षों की तुलना में इस वृक्ष की आयु कम होती है। यह अपनी आयु पूरी कर चुका था, इस कारण सूख गया था। यह कुछ झुक भी गया, इससे कभी आँधी में इसके गिर जाने की आशंका भी हो सकती थी। एक दिन जब बाबा उस शिला पर विराजमान थे और उनका दरबार चल रहा था तो एक भक्त ने अपने भय को व्यक्त करते हुए निवेदन किया कि यदि उनकी आज्ञा हो तो उस वृक्ष को कटवा दिया जाय अन्यथा उसके गिर जाने से किसी को क्षति पहुँच सकती हैं। बाबा सहज भाव से बोले, **"इसकी जड़ में गंगाजल डाल दे, यह फिर हरा-भरा हो जायेगा"**। उस समय उनके दरबार में पूजनीया माँ और पूर्णानन्द तिवारी उपस्थित थे। गंगाजल का संग्रह पूजा हेतु आश्रम में रहता ही था। माँ ने एक कनस्तर गंगाजल लाकर पूर्णानन्द को दिया और उन्होंने पेड़ के चारों ओर जड़ में गंगा जल डाल दिया। इस घटना के कुछ दिनों बाद यह पेड़ पूर्ववत् हरा-भरा हो गया और बहुत कुछ सीधा भी हो गया। अपना आश्चर्यपूर्ण इतिहास सुनाने के लिये यह वृक्ष आज इतने वर्षों बाद भी यथावत् खड़ा है।

(133) क्षण मात्र में अंकुरित

घटना बाबा के गाँव अकबरपुर की है । वहाँ के निवासी श्री श्याम सुन्दर एक दिन सबेरे खेत में सरसों बोने के लिये जा रहे थे । रास्ते में उन्हें लक्ष्मी नारायण जी (बाबा नीब करौरी) मिल गये । वे उस समय लोटा लिये दिशा जा रहे थे । बाबा उनसे बोले, **"क्या लिये जा रहा है"**, उन्होंने सरसों के दाने निकाल कर दिखाते हुए कहा, "बोने जा रहा हूं ।" बाबा ने उन दानों को तुरन्त अपने मुँह में डाल लिया और एक आध मिनट में बाहर निकाला तो उनमें अंकुर प्रस्फुटित हो गये थे । वे बोले, **"देख, उग आये हैं । बीज अच्छा है, फसल अच्छी होगी ।"** आप कहते हैं कि उस वर्ष की सी सरसों की फसल न कभी पहले हुई न बाद में ।

(134) अचल-समाधि

बाबा की परमहंसावस्था रही । वे सदा चल समाधि में रहते थे । अपनी अलौकिक शक्ति से वे किसी को भी थोड़े समय के लिए अचल समाधि में प्रवेश करा देते थे । बिड़ला विद्यालय नैनीताल के श्री किशन चन्द्र तिवारी, सहकारी विभाग उत्तर प्रदेश के श्री नन्दाबल्लभ जोशी, उत्तर रेलवे कानपुर के श्री गुरुदत्त शर्मा आदि अनेकानेक भक्तों को उनकी कृपा से समाधि लगा करती थी ।

अचल समाधि एक अलौकिक आनन्दावस्था है । इसमें व्यक्ति अपने को बड़ा हल्का पाता है । उसकी बाह्य चेतना शून्य हो जाती है । शरीर जड़वत् हो निश्चल हो जाता है । हृदय की गति बहुत मन्द हो जाती है । आन्तरिक चेतना केवल एक बिन्दु पर स्थित रहती है । यद्यपि यह स्थिति व्यक्ति में बाबा की दृष्टि या स्पर्श मात्र से पैदा होती दिखायी देती थी, पर मूल में यह उनकी इच्छा शक्ति का ही खेल था । अपने दरबार में वे किसी की भी समाधि लगा कर लोगों का मनोरंजन करते रहते थे ।

4 चर्च लेन इलाहाबाद में एक बार बाबा ने अपने दरबार में गुरुदत्त शर्मा जी को समाधिस्थ कर दिया और वहाँ पर उपस्थित एक नवागन्तुक डाक्टर से कहने लगे, **"देख इसे क्या हो गया ?"** डाक्टर की बुद्धि चकरा गयी । वह कुछ घबरा सा गया और इसका कुछ कारण समझ नहीं पाया । बाबा का आदेश पाकर कुछ लोगों ने उस जड़ एवं निश्चल व्यक्ति को दरबार से उठाकर दूसरे कमरे में रख दिया । कुछ समय बाद बाबा ने वहाँ जाकर अपने स्पर्श से उन्हें, चैतन्य कर दिया ।

शर्मा जी बताते हैं कि एक बार मेजर रिखी के निवास स्थान दिल्ली में बाबा ने इसी प्रकार उन्हें समाधिस्थ कर दिया था । आप कहते हैं कि हो सकता है, वहाँ पर उपस्थित किसी व्यक्ति को आपकी चेतना शून्य स्थिति में सन्देह हुआ और सम्भवतः वास्तविकता जानने के लिये ही उसने आपके पैर में ब्लेड मार दिया हो । फलतः आपके पैर से फर्श पर रक्त प्रवाहित होने लगा । आपको इसका भान भी नहीं हुआ । रिखी साहब का ध्यान जब इस ओर गया तो उन्होंने चिकित्सा करवाई । चैतन्य होने पर जब आपने अपने पैर में पट्टी बँधी देखी तो आपको आश्चर्य हुआ ।

(135) गायें आदेश पालन करतीं

पचास वर्ष से भी पहले की घटना है, जब महाराज गंगा के किनारे किलाघाट फतेहगढ़ में रहते थे । आपने वहाँ कुछ गायें पाल रखी थीं और प्रत्येक को वे अलग-अलग नाम से सम्बोधित करते थे । विनोद – प्रिय बाबा किसी न किसी गाय को पुकारते रहते और वह चुपचाप उनके आगे आकर खड़ी हो जाती और तब वहाँ से जाती जब वे उसे जाने का आदेश देते । इस से दर्शकों का बड़ा मनोरंजन होता था ।

इस प्रसंग का उल्लेख सम्वत् 2034 की स्मृति सुधा के पृष्ठ 31 में हुआ है ।

(136) कुत्ता भार वहन करता

नीब करौरी ग्राम में एक कुत्ता था, जिसे वहाँ के लोग गेंडुआ कह कर पुकारते थे । जब महाराज उस ग्राम में रहते थे तो कभी-कभी इस कुत्ते की पीठ पर बैठ कर इधर-उधर जाया करते थे । कुत्ता मनुष्य का बोझ वहन नहीं कर सकता, पर वह बाबा के भारी-भरकम शरीर को अपने ऊपर लिए सरलता से घूमता-फिरता था । बाबा अपने भार को स्वेच्छा से घटा या बढ़ा सकते थे ।

(137) मात्रा-भार के नियम का अपवाद

एक बार राजभवन नैनीताल में श्री प्रेम बल्लभ पाण्डे, सहायक सचिव के निवास स्थान में महाराज का दरबार लगा था । बाबा को नीचे तल्लीताल पहुँचाने के लिये डाँडी का प्रबन्ध किया गया था । जब उतार में

मज़दूर बाबा की डाँडी लिये आ रहे थे । बाबा एकाएक अपने भक्तों से बोले, **"कौन मेरी डाँडी में कन्धा लगायेगा ।"** आपके डील–डौल से भार का अनुमान कर कोई भी उतार में कन्धा लगाने का साहस न कर सका ।+ श्री केहर सिंह बहुत इच्छुक होते हुए भी आगे न बढ़ सके । इसका आपको खेद रहा । एक दिन जब आपने अपनी इस लाचारी का भक्तजनों में बखान किया तो उन्होंने आप को बताया कि बाबा की डाँडी ढोनी बहुत आसान है । बाबा सम्भवतः कभी किसी को कष्ट नहीं देते । डाँडी में वे फूल की तरह हल्के हो जाते हैं । जब वे खुद कह रहे थे तो फिर कुछ सोचना था नहीं । हरिदास बाबा जो आपसे भी अधिक दुबले और रुग्ण थे उन्हें बाबा की डाँडी में कन्धा लगाने का सौभाग्य हुआ। वे कहते थे कि जब वे डाँडी को कन्धे पर रख कर चल रहे थे, उन्हें ऐसा प्रतीत हो रहा था कि खाली डाँडी लिये जा रहे हैं ।

(138) हनुमान के अवतार

कैंची में निवास करते एक दिन पं. शंकर प्रसाद जी व्यास (बनारस) को शाम के समय बाबा के साथ टहलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । आश्रम के सामने की सड़क पर बाबा व्यास जी के कन्धे पर हाथ रख कर चल रहे थे । वे अपने विचारों में मग्न दिखायी दिये, इस कारण व्यास जी भी मौन रहे । एकाएक व्यास जी के मन में एक विचार आया कि लोग बाबा को हनुमान का अवतार बताते हैं, पर इस बात पर विश्वास कैसे किया जाय ? ऐसा सोचते ही अपने कन्धे पर रखा हुआ बाबा का हाथ उन्हें कुछ भारी प्रतीत होने लगा और धीरे–धीरे उसका भार बढ़ता ही चला गया, यहाँ तक कि उनका कन्धा जवाब देने लगा । हाथ सहज रूप से आपके कन्धे पर पड़ा था और उसका आकार यथावत् था । व्यास जी भीतर ही भीतर बहुत परेशान हो गये । प्रेम से रखे गये इस महान् विभूति के हाथ को हटाने में भी आपको संकोच हो रहा था । अपनी ऐसी विवशता में आप मन ही मन बाबा (हनुमान जी) से प्रार्थना करने लगे कि मुझे मेरी धृष्टता के लिए क्षमा करें । ऐसा कहते ही स्थिति पूर्ववत् हो गयी । इस प्रकार आपकी धारणा पक्की हो गयी कि बाबा निश्चय ही हनुमान के अवतार हैं ।

+इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या 325 का भी अवलोकन करें ।

(139) कनक भूधराकार शरीरा

एक दिन पं. शंकर प्रसाद व्यास जी ने बाबा से कहा कि मैं हनुमान जी की कथा बहुत सुना चुका हूँ, पर मुझे अभी तक हनुमान जी के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हो पाये । वे बोले, **"उनके दर्शन बर्दाश्त कर पायेगा ?"** इतना कह कर महाराज मौन हो गये और आप भी आगे कुछ नहीं बोले । उसी रात को एकाएक आपकी नींद खुली । अर्ध–रात्रि का समय होगा, आप लघुशंका हेतु कमरे का दरवाज़ा खोल कर बाहर आ ही रहे थे, आपकी आँखों के आगे एक तेजोमय कनक–भूधराकार शरीर की आकृति उपस्थित हो गयी । आप उस दृश्य को देखकर भयभीत हो गये । आपने तुरन्त दरवाज़ा बन्द कर दिया और अपने बिस्तर में जा गिरे । इसके बाद आपके कमरे में बाबा का प्रवेश हुआ । उन्होंने आपके ऊपर हाथ फेरते हुए पूछा, **"तबीयत ठीक है ?"** आप स्वस्थ हो गये और बाबा को नमन करने लगे ।

(140) घोड़ी बेकार हो गयी

जब महाराज नीब करौरी गाँव में रहते थे, एक दरोगा अपनी घोड़ी पर बैठकर उनके दर्शन को आया करता था । उसकी घोड़ी बहुत खतरनाक थी । दरोगा ने बड़ी कठिनाई से उसे काबू में किया था । वह जब भी बाबा के पास आता घोड़ी की जीन–लगाम खोल कर उसे खाने और आराम के लिये छोड़ देता था । एक रोज़ महाराज अपने बाल स्वभाव से प्रेरित होकर दरोगा से कहने लगे कि हम तेरी घोड़ी पर बैठेंगे । दरोगा के मना करने पर भी वे बिना जीन–लगाम के उस खतरनाक घोड़ी पर सवार हो गये और उसे बेतहाशा दौड़ा दिया । घोड़ी ने भी बाबा को खूब हिलाया । वे घोड़ी के कभी बाईं और कभी दाईं ओर लटके दिखायी देते । कभी बिलकुल नीचे लटक जाते और फिर ऊपर हो जाते । अन्त में घोड़ी बुरी तरह थक गयी । उन्होंने उसे छोड़ दिया, पर वह उनके पीछे पीछे चलने लगी । दरोगा को वह भूल चुकी थी । दरोगा दुःखी था कि उसकी घोड़ी बेकार हो गयी, उसके प्रति अब उसमें अपनत्व का भाव न रहा ।

(141) मूर्ति से सम्बन्धित लीलाएँ

इसमें सन्देह नहीं कि महाराज स्वयं हनुमान ही थे । वे कभी–कभी अपने से खिलवाड़ करने में आनन्द लेते थे । अपनी इन नरलीलाओं में वे हनुमान मूर्ति को माध्यम बनाया करते थे ।

जब महाराज नीब करौरी ग्राम में रहते थे तो एक बार उन्होंने हनुमान मूर्ति में डन्डे से प्रहार कर भाँति–भाँति के व्यंजन एकत्रित करवा दिये । इस घटना का वर्णन 'चरितामृत' के अन्तर्गत 'परिचय' में किया गया है ।

कैंची में हनुमान विग्रह की प्रतिष्ठा पर बाबा ने अपने हाथों से एक भरी बाल्टी दूध मूर्ति को पिलाया । इसका उल्लेख 'निर्माण कार्य' प्रकरण के अन्तर्गत 'कैंची आश्रम एवं मन्दिर' के प्रसंग में किया गया है ।

वृन्दावन आश्रम में स्थापना हेतु जयपुर से लाई गयी हनुमान जी की मूर्ति खण्डित पायी गयी । बिना किसी उपचार के महाराज ने उसका सुधार कर दिया । इस घटना का वर्णन प्रसंग संख्या 349 में हुआ है ।

(142) मूर्ति से वार्ता

बद्रीनाथ के बाबा श्री राम, जिनकी आयु इस समय लगभग छियासी वर्ष है, अपने भक्तजनों सहित मानसरोवर और कैलाश की परिक्रमा कर अक्टूबर 1985 में कैंची आश्रम आये थे । आपका महाराज से विशेष सम्पर्क रहा । आप कहते हैं, "मैंने संकटमोचन बनारस में उनको हनुमान–विग्रह से इस तरह वार्ता करते देखा जैसे हम और आप वार्ता कर रहे हैं ।"

(143) मूर्ति का नीचे आ गिरना

महाराज प्रयाग में संगम पर स्थित हनुमान मन्दिर में तो जाया ही करते थे और यदा–कदा रामबाग के हनुमान मन्दिर भी हो आते थे, इन्हें आप 'कन्ट्रोलर जनरल' कहा करते थे । रामबाग में हनुमान जी का मन्दिर ऊपर की मंज़िल में था । एक दिन इस मन्दिर में महाराज के साथ श्री माँ भी थीं । माँ ने एक बूढ़ी माई को बड़े कष्ट के साथ दर्शन हेतु सीढ़ियों से ऊपर चढ़ते देखा, आपको उस पर दया आ गयी । आपने बाबा का ध्यान इस ओर आकर्षित किया । मन्दिर के व्यवस्थापक और पुजारी बाबा को जानते थे । बाबा ने उन प्रबन्धकों से जो उस समय उनके पास ही खड़े थे कहा, **"हनुमान जी नीचे क्यों नहीं आ जाते, माइयों को ऊपर जाने में कठिनाई होती है ।"** उत्तर में उन लोगों ने निवेदन किया कि आदि में विग्रह की स्थापना ऊपर ही की गयी अब इसका कुछ उपचार नहीं हो सकता । बाबा उनकी बात सुन कर चल दिये, उन्होंने

केवल अपनी इच्छा व्यक्त की थी । भगवत् इच्छा प्रबल होती है, उसने साकार होना ही था । यह घटना मई अन्त या जून आरम्भ की थी । इसके कुछ ही समय बाद भीषण वर्षा हुई और इस पुराने मन्दिर का केवल वह पिछला भाग ही जहाँ मूर्ति स्थापित थी नीचे गिर गया और शेष मन्दिर यथावत् खड़ा रहा । उसके साथ ही वह मूर्ति भी नीचे भूमि पर इस प्रकार खड़ी–खड़ी आ गिरी, जैसे किसी ने सहेज कर उसे वहाँ पर रखा हो । उसे किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुँची । मूर्ति को वहीं भूमि पर रहने दिया गया और सारे मन्दिर का नये ढंग से निर्माण किया गया । बाबा की रहस्यमय वाणी का बोध न होने से प्रबन्धकों के लिये यह महान् घटना सामान्य बन कर रह गयी ।

(144) मूर्ति से अश्रुपात

यह बहुचर्चित पुरानी घटना वृन्दावन की है । एक बार बाबा का एक भक्त अपने नास्तिक मित्र को लेकर बाबा के दर्शन को आया । उसके मित्र को उनके दर्शन की इच्छा भी न थी, वह केवल उसका साथ देने वहाँ आया था । महाराज ने अपने भक्त को पास बिठा लिया और दूसरे से हनुमान मन्दिर के चबूतरे पर बैठने को कहा । वह बहुत देर तक वहाँ उसके आने की प्रतीक्षा में बैठा रहा और ऊब गया । फिर ज्योंही उसने मुड़ कर पीछे देखा तो उसकी दृष्टि हनुमान जी के विग्रह पर पड़ी । उसे उस मूर्ति की आँखों से आँसू टपकते दिखायी दिये । ये आँसुओं की बूंदें टपक–टपक कर हनुमान जी के वक्षस्थल पर गिर रही थीं । इस दृश्य से उसकी बुद्धि चकरा गयी और उसके विचारों और भावों में मौलिक परिवर्तन होने लगे । जिसे अब तक वह पत्थर की मूर्ति समझे था, उसमें उसे हनुमान जी का आभास मिला ।

(145) रामनगर पुल का निर्माण

सन् 1971 में इस पुल का शिलान्यास बनारस में स्व. इन्दिरा गांधी द्वारा हुआ था । इसके निर्माण में सब से बड़ी कठिनाई यह हुई कि इस पुल का पहला स्तम्भ जितनी बार बनाया गया वह मिट्टी में धंसता चला गया। बड़े–बड़े अभियन्ता इसका कोई उपचार खोज न पाये । लोगों ने बनारस के प्रख्यात बिजलिया बाबा से इस विषय में परामर्श लिया । उन्होंने श्री नीब करौरी महाराज को लिवा लाने को कहा और बताया कि यह कार्य केवल

उनकी कृपा से ही पूर्ण हो सकता है । श्री कमलापति त्रिपाठी स्वयं महाराज को बुलाने गये । महाराज ने वहाँ आकर त्रिपाठी जी से कहा, **"पण्डित ! एक छोटा मन्दिर हनुमान जी का यहाँ बना दे, सब काम हो जायेगा।"** तुरन्त मन्दिर की व्यवस्था की गयी और महाराज जी के कर कमलों से ही हनुमान जी की एक छोटी मूर्ति स्थापित की गयी । इसके बाद से पुल का निर्माण कार्य आसान हो गया । यह हनुमान मन्दिर आज भी पुल के समीप उपस्थित है और बाबा की महिमा का प्रमाण देता है ।

इस घटना का उल्लेख 2038 सम्वत् की स्मृति–सुधा के पृ.स. 37 में हुआ है ।

(146) पृथ्वी के गुण दोष से अप्रभावित

सन् 1970 अप्रैल का महीना था । वृन्दावन आश्रम में लोग हनुमत् जयन्ती के उपलक्ष्य में एकत्रित हो रहे थे । बाबा के अलीगढ़ के एक भक्त श्री होतृदत्त शर्मा जी को श्री चरणों के दर्शन से फिरोजाबाद के श्री राधेश्याम सर्राफ़ की बात याद आ गयी कि बाबा के चरणों को पृथ्वी के गुण और दोष किंचित मात्र भी प्रभावित नहीं करते । आप इस विषय में जितना विचार करने लगे उतनी ही आपकी शंकायें बढ़ती गयीं । आप समझ नहीं पा रहे थे कि यह कैसे सम्भव हो सकता है ? महाराज कमरे से बाहर चल दिये और उन्होंने आप से भी साथ चलने को कहा । आप बाबा के आसन के लिये एक कम्बल अपने बॅंये हाथ में लेकर उनके पास पहुँचे । उन्होंने आपका दाहिना हाथ अपने हाथ से पकड़ लिया और वे हाथी वाले बाबा के आश्रम की ओर बढ़े । आगे चलकर वे आश्रम के उत्तरी भाग से पीछे की ओर खेतों में चलने लगे । शर्मा जी कहते हैं कि अरहर के ठूठों और झाड़–झंखाड़ से भरी इस बीहड़ कंटक पूर्ण भूमि को देखकर मेरा मन घबरा उठा । बाबा इनकी परवाह किये बिना एक निरपेक्ष पथिक की भाँति, अपना मुँह ऊपर उठाये, सहज गति से करील और गोखरू से भरे उस खेत में चलते रहे । मेरे दोनों हाथ तो घिरे थे और पैर गोखरू से बिंधकर लहू–लुहान हो गये । जब पैर उठाना भी मेरे लिए कठिन हो गया तो वे मेरे हाथ को झटका देते हुए बोले, **"चलता नहीं, क्या हो गया ?"** मैंने अपना कष्ट बताया तो वे कहने लगे, **"ऐसा क्यों हुआ, तुम्हारे कांटे क्यों लगे ? हमारे क्यों नहीं लगे ? हमारे चलने के लिये भी तो यही भूमि है ।"** मुझे निरुत्तर देख उन्होंने कांटे निकालने

का आदेश दिया । कांटों के निकलने पर जलन शान्त हुई । बाबा ने फिर मेरा हाथ पकड़ लिया और अब की बार आप और भी अधिक कांटों वाली भूमि की ओर चल दिये । मेरे दोनों पैर गोखरू से भर गये और मेरा चलना असम्भव हो गया । बाबा मुझे डाँटते हुए बोले, **"अब क्या हो गया ? तुम्हारे पैर में बहुत कांटे लगते हैं, हमारे पैर में कांटों का स्पर्श भी नहीं हुआ !"** इस पर मैंने अपने मन की कमज़ोरी स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हुए कहा, "बाबा, यह मेरी भूल थी कि मैं श्री चरणों की अलौकिकता पर विश्वास नहीं कर पाया था ।"

इस प्रसंग में एक साधु की बात उल्लेखनीय है । वह बाबा की महिमा बताते हुए कहता था कि आप पृथ्वी से चार अंगुल ऊपर चलते हैं । उसकी बात पर विश्वास किया नहीं जा सकता था, पर उपरोक्त घटना उसकी धारणा को पुष्ट करती है । बाबा सभी मौसमों में दिन रात नंगे पैर विचरण करते थे, पर उनके पैर के तलुवे सदा कोमल और स्वच्छ बने रहे । वे किसी के भी साफ़ बिछौने में बिना पैर धोये बैठ जाते, पर इससे उसकी स्वच्छता में कोई अन्तर नहीं आता था ।

(147) वस्तु का उत्पादन

बाबा ने ग्यारह सौ रुपये अपने कम्बल से पैदा कर शुद्ध घी के व्यापारी नन्दलाल जी को दिये । इस घटना का उल्लेख 'सर्वव्यापकता' के प्रकरण 'आओ, खाओ और जाओ' के प्रसंग (संख्या 84) में किया गया है । इसी प्रकरण में डा. भौसले की क्षुधा पूर्ति के प्रसंग (संख्या 68) से यह स्पष्ट होता है कि बाबा ने उनके लिए धर्मशाला में भोजन की थाली प्रकट कर दी थी ।

महाराज ने अपने कम्बल से कलाकन्द निकाल कर केहर सिंह जी को खिलाया और उनके ज्वर को शान्त कर उनको स्वस्थ कर दिया, इसका वर्णन **प्रसंग संख्या** 267 में किया गया है । परहितार्थ हुई उनकी कुछ लीलाओं का उल्लेख नीचे किये जा रहा है ।

(148) कम्बल से पूरी की उत्पत्ति

मेरा (लेखक का) बड़ा लड़का बी.ए. द्वितीय खण्ड की परीक्षा में गणित के प्राप्तांकों में कुछ कमी के कारण पूरक परीक्षा की तैयारी में संलग्न था। एक दिन एलनगंज, इलाहाबाद में मेरी बहिन के घर बाबा का आगमन हुआ

और उसने हमें सूचना भिजवायी । मैंने अपने लड़के से बाबा के दर्शन कर आने को कहा । उसने निवेदन किया कि वह उस समय परीक्षा में उत्तीर्ण होने की गरज़ से उनके दर्शन करना उचित नहीं समझता और परीक्षाफल के प्रकाशित होने के बाद ही दर्शन करना उसके लिये रुचिकर होगा । मैंने उसकी बात मान ली और स्वयं दर्शन करने चला गया । बहिन के घर जाकर मैं महाराज को नमन कर ही रहा था, कि मैंने बहिन को इस लड़के के लिये कृपा याचना करते सुना । इस प्रसंग में मैंने उनको लड़के से हुई अपनी सम्पूर्ण वार्ता यथावत् सुना दी । इस साधारण बात पर बाबा भावावेश में आ गये । उनकी आँखे सजल हो उठीं, उनका कण्ठ रुंध गया और अपने सिर को इधर–उधर घुमाते हुए वे बोले, **"तुम समझते नहीं हो, वह शर्मीला है ।"** इतनी–सी बात का बाबा पर इतना बड़ा प्रभाव देख, हम सब लोग स्तब्ध रह गये । मुझे उनकी बात याद आ गयी। उन्होंने एक बार श्री सुधीर मुकर्जी से कहा था, **"हमारे पास हमारे लिये कौन आता है ?"** इस लड़के की निस्वार्थता देख कर ही सम्भवतः बाबा का उदार हृदय पिघल गया हो । जब वे बहिन के घर से चलने लगे तो मैं उनके साथ बाहर गया । बाबा ने अपने कम्बल से एक पूरी का टुकड़ा निकाल कर मुझे दिया और बोले, **"लड़के को दे देना ।"** फलतः लड़का बी.ए और एम.ए. की परीक्षाओं में उत्तीर्ण तो हुआ ही, एम.ए. की परीक्षाफल के प्रकाशित होने के पूर्व ही उसकी नियुक्ति स्टेट बैंक में हो गयी । जब इस नियुक्ति की सूचना मेरे छोटे लड़के ने बाबा को कैंची में दी तो वे बोले, **"हमने उसे एजेंट बना दिया ।"**

(149) करकमलों से पूरियों की उत्पत्ति

मैं (लेखक) तब थौर्नहिल रोड, इलाहाबाद में रहता था । शाम हो चुकी थी । मैं सपत्नीक महाराज के दर्शनार्थ चर्च लेन पहुँचा । वहाँ सब लोग भीतर प्रसाद पा रहे थे । हम लोग घर से खाकर चले थे, इसलिए भीतर न जाकर बाहरी कमरे में चले गये । वहाँ महाराज तख़्त पर अकेले बैठे थे, मैं उनके चरणों को अपने हाथ में लेकर दबाने लगा । बाबा मौन बैठे थे । थोड़ी देर वे अपने हाथों को आपस में मलते रहे, तदनन्तर उन्होंने दो गरम और नरम पूरियाँ मेरे हाथ में रख दीं । मुझे आश्चर्य तो बहुत हुआ पर उससे भी अधिक हुई प्रसन्नता कि उनके करकमलों से मुझे यह अनुपम प्रसाद प्राप्त हुआ । मैंने उन पूरियों को एक कागज में लपेट लिया और घर आकर परिवार के सभी लोगों में उस प्रसाद का वितरण किया । उन्होंने क्या सोचकर मुझ पर ऐसी कृपा की, मैं कुछ समझ नहीं पाया ।

(150) भूमि से नोटों की उत्पत्ति

टैगोर टाउन, इलाहाबाद में स्व. गोपाल दत्त पन्त, शास्त्री जी का मकान है । वे वहाँ राजकीय इन्टर कालेज में संस्कृत के अध्यापक थे । जब शास्त्री जी का देहान्त हुआ, उनके बच्चे छोटी कक्षाओं में पढ़ते थे । शास्त्री जी बाबा के बड़े भक्त थे, इस कारण बाबा उनके घर जाया करते थे । उनकी मृत्यु के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति गिर गयी, केवल मकान के किराये के सहारे निर्वाह हो रहा था । भक्त और उसके परिवार के योग और क्षेम का वहन करना बाबा का कार्य था । अतः भक्त के न रहने पर भी, प्रतिवर्ष बाबा जब भी प्रयाग जाते, इस परिवार को दर्शन देना नहीं भूलते थे । शास्त्री जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री सुरेश चन्द्र पन्त सम्प्रति, एकाउन्टेन्ट जनरल के कार्यालय में काम करते हैं । एक बार जब आप दसवीं कक्षा के छात्र थे आपने बाबा को दूर से आते देखा और आगे बढ़ कर उन्हें नमन किया । बाबा बोले, **"चल, तुझे विन्ध्याचल घुमा लाता हूं ।"** आप बालक ही थे, बड़े प्रसन्न हो गये क्योंकि यह घर से बाहर जाने का पहला अवसर प्राप्त हो रहा था, पर आप सोचने लगे कि माँ के पास पैसे देने को हैं नहीं और बिना पैसों के आप अपना और बाबा का खर्चा उठा नहीं सकते । इतने में बाबा बोल उठे, **"देख, सड़क में उस पत्थर के नीचे क्या है ?"** कोई दस पग दूरी पर उसी सड़क में एक पत्थर के नीचे फैला कर रखे हुए आपको एक सौ पचास रुपयों के नये नोट मिले । आप चकित हुए कि इस तरह सहेजकर कौन इन नोटों को रखेगा ! यदि ये नोट किसी के गिरे होते तो पत्थर के नीचे कैसे दब जाते ? अस्तु, आपने इन नोटों को उठाकर बाबा को दिखाया । उन्होंने यह सारी पूंजी आपको ही दे दी । उस समय एक सौ पचास रुपयों का बहुत मूल्य था, आप इन्हें पाकर बहुत प्रसन्न हो गये । इसके बाद उतावली दिखाते हुए आपने अपनी माँ को सम्पूर्ण स्थिति से अवगत किया और शाम तक घर लौट आने का आश्वासन देकर आप तुरन्त महाराज के साथ चल दिये ।

विन्ध्याचल में भक्तों द्वारा बाबा का भव्य स्वागत हुआ । आप दिन भर उनके साथ कार में घूमे और अच्छे-अच्छे स्वादिष्ट पदार्थ खाने को मिलते रहे । शाम को बाबा आपको आपके घर पर छोड़ गये ।

(151) बच्चे की तुष्टि

श्री हरिराम जोशी, डिप्टी रजिस्ट्रार, कोआपरेटिव सोसाइटीज़, के घर लखनऊ में एक लड़का मिठाई खाने की ज़िद पकड़े हुए था और खाना

खा ही नहीं रहा था । इसी समय इनके घर महाराज का पदार्पण हुआ । बाबा ने बच्चे के रोने का कारण पूछा । घर के लोगों ने कहा कि यह लड़का बहुत ज़िद्दी हो गया है और कहना नहीं मानता । सब लोगों के प्रणाम करने पर जब वह बच्चा भी नमन करने आया तो बाबा ने उससे उस कमरे के एक कोने में पड़ी सिगरेट की एक खाली डिबिया को उठा कर खोलने को कहा । जैसे ही उस बालक ने उस पैकेट को खोला उसमें उसे पाँच रुपये का एक नोट मिला । बाबा ने उससे मिठाई लाने को कहा । वह बहुत प्रसन्न हुआ । पाँच रुपये की तब बहुत मिठाई आती थी । उसने बाबा को खिलाना चाहा पर वे इसके लिये तैयार नहीं हुए । बालक भर पेट मिठाई खाकर तृप्त हो गया ।

(152) खाली पर्स में हज़ार रुपये

श्रीमती सावित्री, बेगम पुल मेरठ से नैनीताल आयी हुई थीं । एक दिन बाबा के दर्शनार्थ आप कैंची गयीं । आप अपने पर्स में कुछ रुपये लेकर चली थीं जिससे आपने कुछ फल और मिठाई खरीदी और बस का भाड़ा देने के बाद जब आप कैंची पहुँची तो आपके पास एक पाँच रुपये का नोट बचा । आप कहती हैं कि मुझे बड़ी चिन्ता हो गयी कि यदि वापसी में इससे अधिक का खर्चा हुआ तो परेशानी हो जायेगी । जब मैं बाबा के सम्मुख पहुँची और उन्हें नमन करने लगी तो वे बोले, **"तेरे पर्स में पैसे नहीं हैं ?"** मैंने योंही कह दिया, "बाबा, काफ़ी हैं ।" वे फिर बोले, **"ज़ुरुरत है तो माँग ले ।"** ज़रूरत तो मुझे थी, पर बाबा को तो पैसा देना चाहिए न कि उनसे माँगना चाहिये, इस कारण मैं चुप रही । मैंने लौटती बार उस पाँच के नोट से टिकट लिया और घर पहुँच गयी । घर आकर जब मैंने पर्स खोला तो उसके दूसरे खाने में मुझे सौ सौ रूपए के दस नोट मिले । मैं उदार बाबा की अलौकिक शक्ति के इस खेल से चकित रह गयी ।

(153) साधु की क्षति की पूर्ति

वृन्दावन परिक्रमा मार्ग पर महाराज के आश्रम के पास ही श्री स्वामी मोहानन्द जी रहते हैं । यह घटना उस समय की है जब स्वामी जी अपना आश्रम बना रहे थे । उनके मज़दूर काम पर लगे थे । एक दिन इस कार्य के लिये जो भी धन उनके पास था चोरी चला गया । उनके पास मज़दूरी

चुकाने और अपने भोजन के लिये भी रुपये नहीं रहे । वे चिन्तित और उदास थे और भूखे ही बैठे थे । करुणामूर्ति बाबा उनके पास पहुँच गये । स्वामी जी के इस विषय में कुछ कहने के पूर्व ही, बाबा ने अपने कम्बल से पूरी और सब्जी निकाली और उन्हें भोजन कराया । इसके बाद वे बोले, **"तेरे रुपये नहीं खोये हैं, अपनी तकिया उठाकर देख"** । इनके कहने पर जब मोहानन्द जी ने अपनी तकिया पुनः उठायी तो चकित हो उन्होंने देखा कि उनके खोये रुपयों से कहीं अधिक रुपये वहाँ थे ।

(154) उत्सुकता का समाधान

एक बार लालपुर के चौ. मिहीलाल वृन्दावन आश्रम में बाबा के पैर दबा रहे थे । बाबा अकेले थे और मौन पड़े थे । चौधरी जी के मन में विचार आया कि आप इतने बड़े आश्रम का खर्चा कैसे चलाते होंगे ? बाबा तुरन्त बोल उठे, **"तू जा सामने की चौकी से कम्बल उठा ला ।"** जब इन्होंने उस तख़्त पर बिछा हुआ कम्बल उठाया तो इन्हें इस कम्बल के नीचे अनगिनत नोट दिखायी दिये । आप उन नोटों को उस कम्बल से उसी प्रकार ढककर चुपचाप लौट आये । आप को देखकर बाबा हँसने लगे और बोले, **"तू सोच रहा था हम आश्रम का खर्चा कैसे चलाते हैं ? देख लिया ?"** चौधरी जी बाबा के चरण पकड़ कर क्षमा माँगने लगे ।

इस घटना का उल्लेख सम्वत् 2038 की 'स्मृति-सुधा' के पृष्ठ 36 में हुआ है ।

•

(155) वस्तु में वृद्धि

पौड़ी, गढ़वाल में श्री बसन्त लाल साह के एक छोटे परिवार की माहवारी रसद से कैसे अनेकानेक भक्तों का महीने भर सत्कार हुआ और बाद में बाबा के आने पर एक भण्डारा भी किया गया, इसका उल्लेख प्रसंग संख्या 323 में किया गया है ।

पनकी, कानपुर में हनुमान जी की प्रतिष्ठा समारोह पर खाद्य सामग्री इतनी बढ़ी कि जितना प्रबन्ध था उससे आठ सौ गुना व्यक्तियों ने प्रसाद पाया, फिर भी साठ प्रतिशत सामान बचा रहा और बड़े प्रयत्न से तीन दिनों में समाप्त हो पाया । इसका वर्णन 'चरितामृत' के अन्तर्गत 'निर्माण कार्य' के प्रकरण में 'पनकी हनुमान मन्दिर, कानपुर' के प्रसंग में हुआ है ।

इस सम्बन्ध में कुछ लीलाओं का वर्णन यहाँ किया जा रहा है ।

(156) खाद्य सामग्री बढ़ती गयी

श्री केहर सिंह, आइ.ए.एस. ने एक बार महाराज को अपने घर इलाहाबाद में भोजन के लिये आमन्त्रित किया । यह घटना सन् 1956 की है । बाबा ने उनका आग्रह स्वीकार करते हुए कहा, **"कल शाम तेरे घर खायेंगे ।"** घर आकर पत्नी को सूचना देते हुए आपने दूसरे दिन शाम को दो आदमियों के लिये भोजन तैयार करने को कहा, यह सोच कर कि बाबा के साथ कोई परिकर भी आ सकता है । पत्नी ने समय से पूर्व थोड़ी–थोड़ी मात्रा में दो सब्जियाँ बना दीं और गरम–गरम पूरियाँ खिलाने के लिये आटा तैयार कर दिया । सिंह साहब ने बाज़ार से थोड़ी मिठाई भी मँगवा दी और आप बाबा को लिवा लाने कर्नलगंज में श्री सुधीर मुकर्जी के घर गये । बाबा के साथ दो कारों में दस लोग आपके घर पधारे ।

बाबा ने घर में आते ही खाना माँगा । सिंह साहब ने एक थाल में दो गरम पूरी, सब्जी और मिठाई ले जाकर बाबा के आगे रखी । वे बोले, **"सब को भोजन करा ।"** आप चिन्तित हो गये । आपने नौ थालियाँ और कटोरे पत्नी के पास रख कर उन्हें बाबा का आदेश सुनाया । वे खिन्न हो गयीं, उनके सामने घर की लाज का सवाल था । सिंह साहब ने दो आदमियों के लिये ही खाना बनवाया था, अब समय था नहीं कि इतनी जल्दी सब्जी और पूरी का आटा तैयार किया जा सके । स्थिति को अपने काबू से बाहर देख उन्हें अत्यधिक घबराहट हो गयी और वे रसोई घर से बाहर चली आयीं। आपने लाचार हो यह काम अपने चपरासी से करवाया । वह भी क्या कर सकता, कुछ करने को समय था नहीं । वह केवल उस तैयार आटे से पूरियाँ उतारने लगा । सिंह साहब बाहर कमरे में भाग–भाग कर सबको खिलाते रहे । खाद्य सामग्री स्वतः इस ख़ूबसूरती से बढ़ती गयी कि सब लोगों ने भर पेट प्रसाद पाया और उनके जाने के बाद उसी सामग्री से नौ–दस प्राणियों के लिये पर्याप्त भोजन बचा रहा । वास्तव में गृहस्थ की लाज बाबा ही रखते थे ।

(157) दो का भोजन पन्द्रह को पर्याप्त

ऐसा ही एक अनुभव श्री उमादत्त शुक्ला, जिनकी हजरतगज, लखनऊ में दुकान थी, प्रस्तुत करते हैं । आप एक दिन महाराज और उनके साथ

आये एक व्यक्ति को अपनी दुकान से घर ले आये । आपकी सास ने इन दो व्यक्तियों के लिये आटा तैयार कर पूरियाँ उतारीं, कुछ सब्जियाँ बनायीं और बाजार से थोड़ी मिठाई मँगा कर बाबा के लिये भोग तैयार किया । बाहर के कमरे में शुक्ला जी, बाबा और उनके साथ के व्यक्ति को भोजन करा रहे थे, इतने में श्री आर.के. त्रिवेदी, आइ.ए.एस. सपरिवार अपने पिता जी को साथ लेकर इनसे मिलने आ गये । त्रिवेदी जी आपके ममेरे भाई हैं । त्रिवेदी जी के पिता बाबा के परम भक्त रहे । बाबा ने सभी आगन्तुकों को भोजन करवाने का आदेश शुक्ला जी को दिया । जब सब लोग भोजन कर चले गये तो आपकी सास ने आप से कहा कि इस अवसर पर आपको त्रिवेदी परिवार को भी खाना खिलाना चाहिये था । जब शुक्ला जी ने उन्हें बताया कि सब लोगों को भर पेट खिला कर विदा किया गया है तो वे आश्चर्यचकित हो उठीं और समझ नहीं पायीं कि किस प्रकार दो व्यक्तियों के लिये बनी भोजन सामग्री से बारह लोग भोजन कर गये और तिस पर घर के तीन प्राणियों के लिये पर्याप्त भोजन पड़ा रह गया । इस घटना से बाबा की महिमा पर आपकी सास और पत्नी का विश्वास दृढ़ हो गया । यथार्थ में बाबा ही सब को खिलाते थे ।

(158) फलों में अभिवृद्धि

सन् 1973 की एक शाम को शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश के अध्यक्ष श्री स्वामी चिदानन्द जी कुछ लोगों के साथ उत्तराखण्ड के पर्वतों का भ्रमण करते हुए बाबा के दर्शनार्थ कैंची पहुँचे । बाबा अपनी कुटिया में तख़्त पर विराजमान थे । आप लोग उन्हें नमन कर नीचे चटाई में बैठ गये । स्वामी जी के साथ आये श्री योगेश चन्द्र बहुगुणा बाबा को अर्पण करने के लिये अपने साथ आठ सन्तरे लाये थे जिन्हें उन्होंने बाबा के पास पड़ी एक खाली टोकरी में रख दिया । कुछ वार्तालाप के बाद बाबा ने उन फलों को प्रसाद रूप में बाँटना आरम्भ किया । इन लोगों को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि बाबा ने वहाँ उपस्थित अठारह लोगों को एक–एक फल दिया । बाबा से विदा होने के बाद स्वामी जी ने अपने लोगों की उत्सुकंता यह कह कर शान्त की कि बाबा के पास हनुमान–सिद्धि है, वे सब कुछ करने में समर्थ हैं ।

उपरोक्त वर्णन दि डिवाइन लाइफ सोसाइटी, पो.आ. शिवानन्द नगर ऋषिकेश द्वारा सन् 1976 में प्रकाशित श्री स्वामी चिदानन्द जी के "बाबा नीब करौली" शीर्षक लेख (पृष्ठ 4, 5, 6) से सम्बन्धित है ।

(159) पैट्रोल में वृद्धि

एक बार महाराज राजा भद्री की कार से कानपुर गये हुए थे और चालक रामांनन्द उनकी सेवा में था । कुछ दिन कानपुर में अपने भक्तों के पास रह कर, एक दिन कार में बैठते ही वे रामानन्द से बोले, "गाड़ी इलाहाबाद ले चलो ।" गाड़ी में कुल इतना पैट्रोल था कि वह दस–बारह किलोमीटर ही जा सकती थी । चालक ने बाबा को स्थिति बताते हुए गाड़ी में पैट्रोल भरवाने की बात कही, पर बाबा ने उसकी बात सुनी–अनसुनी करदी और पुनः उससे गाड़ी चलाने को कहने लगे । चालक रास्ते भर चिन्तित रहा कि न मालूम गाड़ी कहाँ पर धोखा दे दे और किस मुसीबत का सामना करना पड़े । पर ऐसी स्थिति आयी नहीं । पैट्रोल में स्वतः वृद्धि होती रही और गाड़ी चर्च लेन इलाहाबाद आ गयी । रामानन्द आश्चर्यचकित था, उसने यह अपना अनुभव वहाँ उस समय उपस्थित हम सब लोगों को सुनाया ।

(160) वस्तु में समूल परिवर्तन

हनुमानगढ़ नैनीताल में हनुमान जी की प्रतिष्ठा के समारोह में घी की कमी पड़ने के पूर्व ही बाबा ने कई रिक्त कनिस्तर जल से भरवाकर भण्डार गृह में रखवा दिये थे और समय आने पर वे सभी टिन देसी घी से भरे मिले । इस घटना का वर्णन 'चरितामृत' के अन्तर्गत निर्माण कार्य के प्रकरण में "हनुमानगढ़, नैनीताल"के प्रसंग में किया जा चुका है ।

पनकी, कानपुर में हनुमान जी की प्रतिष्ठा में भी इसी प्रकार की घटना हुई । वहाँ भण्डारे के लिये जितना भी वनस्पति घी संग्रह किया गया था, उस सब की परिणति शुद्ध घी में हो गयी थी । इसका उल्लेख निर्माण कार्य के प्रकरण में "पनकी हनुमान मन्दिर, कानपुर" के प्रसंग में हुआ है ।

(161) "चाय पियेगा ?"

प्रयाग के सन् 1966 के कुम्भ मेले में महाराज का कैम्प संगम पर गंगा की दूसरी तरफ झूंसी की ओर लगा था । रात्रि अधिक हो चली थी, बाबा का दरबार चल रहा था । उस समय ब्रह्मचारी बाबा एक भक्त के कान में धीरे से कह रहे थे कि इस समय सब को चाय पिलायी जा सकती तो बहुत अच्छा होता । सर्दी काफ़ी थी । भण्डारे में चीनी चाय सभी कुछ था, पर

कमी थी तो दूध की । उसी समय बाबा बोल उठे, **"चाय पियेगा ? जा, बाल्टी लेजा, गंगा से दूध भर कर ले आ । कह देना "मइया, दूध लिये जा रहा हूँ, कल लौटा दूंगा ।"** ब्रह्मचारी बाबा ने तुरन्त उनकी आज्ञा का पालन किया । जैसे ही वे गंगा–जल से भरी बाल्टी लेकर कैम्प में आये बाबा ने उसे ढक कर रख देने को कहा । कुछ समय बाद वे उन्हें याद दिलाते हुए बोले, **"अब चाय क्यों नहीं बनाता ?"** वे तुरन्त पानी आग में रख कर आये और चिन्तित थे कि दूध के बिना काम कैसे चलेगा । पानी के उबल जाने पर, जब उन्होंने उस बाल्टी का ढक्कन उठाया तो उन्हें वह बाल्टी पूरी दूध से भरी दिखायी दी । सब लोगों ने माघ की उस ठण्डी रात में गरम–गरम चाय का आनन्द लिया और सभी इस लीला से चकित रहे । दूसरे दिन प्रातःकाल जब कैम्प में दूध आया तो बाबा ने एक बाल्टी दूध गंगा जी में डलवा दिया ।

(162) गंगा की महिमा

इसी कुम्भ मेले में एक दिन सायंकाल बाबा कुछ भक्तों के साथ नाव में सैर कर रहे थे । गंगा की महिमा बताते हुए आपने बताया कि **गंगा में जल नहीं दूध प्रवाहित होता है** । सभी लोग बाबा की बात सुन कर मौन रहे क्योंकि उनका अनुभव भिन्न था । महाराज जब कभी कहीं जाते तो कोई न कोई भक्त उनकी सेवा में एक लोटा और एक तौलिया लेकर चलता था । बाबा ने श्री उमादत्त शुक्ला से उस लोटे को गंगा जल से भर लेने को कहा । इसके बाद उन्होंने उसे ढक कर रखवा दिया । बाबा के साथ वार्ता में काफ़ी समय बीत गया और अँधेरा होने लगा । उन्होंने नाव को कैम्प की ओर ले जाने का आदेश दिया और शुक्ला जी से बोले, **"सब को गंगा जल पिला दे ।"** लोटा पूरा दूध से भरा था । सब लोग यह देख कर चकित हो गये । सभी ने थोड़ा–थोड़ा उस अमृतमय स्वादिष्ट दूध का आस्वादन किया ।

(163) गिरीश जी की तृप्ति

एक बार सरसय्या घाट कानपुर में महाराज जी के पास थे श्री भगवती सेवक बाजपेयी, गिरीश चन्द्र जोशी और एक वरिष्ठ अधिकारी का चपरासी । बाबा ने गंगा के बीच एक शुष्क टापू में जाने के लिय नाव मँगायी । चपरासी ने बाबा से निवेदन किया कि उस टापू में जाना उचित नहीं है क्योंकि बदमाश लोग उस टापू में शराब का कारोबार करते हैं ।

बाबा ने उसकी बात नहीं मानी । जब आप लोग नाव में सवार होकर उस ओर चले तो बदमाशों ने अपनी बन्दूकें निकाल लीं और तीव्र स्वर में पूछने लगे कि कौन आ रहा है ? महाराज ने गरजती आवाज़ में उत्तर दिया, "बाबा ।" वहाँ पहुँचने पर सब बदमाश शान्त हो गये । बाबा वहाँ शौच गये । चपरासी ने उनका लोटा साफ़ किया । कुछ देर वहाँ विश्राम करने के बाद वे बोले, **"आज गिरीश का उपवास है । यह भूखा है । जा, गंगा मइया से एक लोटा दूध माँग ला, इसे पिला दे"** । चपरासी गंगा से लोटा भर कर जल ले आया वह स्वादिष्ट दूध में बदल गया, जिसे पीकर गिरीश जी तृप्त हो गये ।

(164) पानी की पैट्रोल में परिणति

घटना कैंची आश्रम की है । एक बार बाबा की गाड़ी के चालक श्री हबीबुल्ला खाँ ने महाराज से कहा कि गाड़ी में पैट्रोल नहीं है । यदि आप को इस बीच कहीं जाना हो तो आज्ञा दें उसमें पैट्रोल भरवा लायें । बाबा बोले, **"कहीं नहीं जाना है ।"** दूसरे ही दिन रात में बाबा गाड़ी में बैठ गये और उससे गाड़ी चलाने को कहने लगे । सर्दी बहुत थी । बाबा दो कम्बल ओढ़े थे । हबीबुल्ला के पास एक कम्बल था, उसे एक ओर रख कर वह गाड़ी चलाने लगा । उसने बाबा से कहा, "पैट्रोल तो आपने भरवाया नहीं, अब गाड़ी कैसे चलेगी ? आपको कहाँ जाना है ?" बाबा बोले, **"अल्मोड़ा जाना है, गाड़ी चला ।"** गाड़ी चली पर पाँच किलोमीटर दूर रातीघाट के ढाल को पार करने के बाद रुक गयी । पैट्रोल खत्म हो चुका था । अब निर्जन जंगल में रात बितानी थी और कोई उपचार न था । चालक मन ही मन बहुत दुःखी हुआ और अपना कम्बल निकाल कर कार के एक कोने में बैठ गया । बाबा बोले, **"पास के स्रोत से पानी लेकर पैट्रोल की टंकी में डाल दे ।"** यह शराबियों की सी बातें सुनकर उसने उत्तर दिया, "महाराज, गाड़ी चौपट हो जायेगी । आप जैसा कहें मैं वैसा करने को तैयार हूँ, पर कल सबेरा होते ही मैं आपकी नौकरी छोड़ दूंगा । अब मैं आपके साथ नहीं रहूंगा ।" बाबा नम्रता से बोले, **"बहुत नहीं, तीन कैन पानी डाल दे ।"** उसने वैसा ही किया। बाबा बोले, **"गाड़ी चला ।"** वह बोला, "अब तो गाड़ी काम से गयी, अब क्या चलेगी !" अब महाराज और भी विनम्र भाव से गाड़ी चलाने को कहने लगे । हबीबुल्ला के स्टार्ट करते ही गाड़ी चल पड़ी । वह रात भर बाबा को घुमाकर सबेरे गाड़ी आश्रम में ले आया । इससे उसकी आस्था बाबा पर बहुत बढ़ गयी और उसने नौकरी छोड़ने की जो धमकी बाबा को दी थी उसके लिये उसे बड़ी शर्मिन्दगी हुई ।

यह विवरण श्री हबीबुल्ला खाँ ने 16 जून 1985 के दिन कैंची आश्रम में दिया । आप आजकल अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, खाद्य और कृषि विभाग, दिल्ली में कार्य करते हैं ।

(165) चने का आटा

श्री नन्द किशोर जोशी, मुख्य अधिकारी, डेरी विभाग, लखनऊ के घर बाबा एक बार खाने के समय आये और उनकी पत्नी से बोले, **"हमें खाना खिला । हम चने की रोटी खायेंगे ।"** बाबा ने आकर स्वतः सेवा का यह अवसर उन्हें दिया इससे उनका चित्त प्रसन्न हो गया, पर घर में चने का आटा न होने से आपको दुःख होने लगा कि आप उनकी इच्छा के अनुसार रोटियाँ नहीं बना पायेंगी । आप बाबा के स्वभाव से परिचित थीं और भलीभाँति जानती थीं कि थोड़ा भी विलम्ब होने पर वे बिना भोजन किये भी जा सकते हैं । इस कारण आप ने बाज़ार से चने का आटा मँगवाना उचित नहीं समझा और निश्चय किया कि वे बेसन में गेहूँ का आटा मिलाकर ही रोटी तैयार करेंगी । जैसे ही आपने गेहूँ के आटे के लिए कनिस्तर खोला आप यह देख कर चकित रह गयीं कि उसमें का सारा आटा चने का हो गया था ।

(166) दृष्टि-भेद

एक बार बाबा ने अपने भण्डार गृह की जाँच पड़ताल करने के लिये आश्रम के तीन व्यक्तियों में से एक को चुनना चाहा जिसमें एक अलीगढ़ के होतृदत्त शर्मा जी भी थे । आपने तीनों को एक-एक कर गोदाम में भेजा और यह देख कर आने को कहा कि वहाँ पाँच बड़े-बड़े पीपों में क्या रखा है । तीनों ने आकर तीन तरह के बयान दिये । एक ने कहा पाँचों पीपों में चीनी भरी है, दूसरे को सब में चावल भरे दिखायी दिये और तीसरे को दो पीपों में चीनी और तीन में चावल दिखायी दिये । बाबा हँसते रहे, सभी इस परीक्षा में असफल रहे ।

वस्तु के मौलिक गुण में परिवर्तन

महाराज का दिव्य स्पर्श पाकर कभी वस्तु अपने मौलिक गुण से भी वंचित हो जाती थी । इसमें सन्देह नहीं कि इसमें उनकी इच्छा शक्ति कार्य

करती थी । ऐसे अवसर देखने में आते जब कि बाबा मादक और विषैले पदार्थ बड़ी मात्रा में खा जाते और उन पर उनका कोई असर होते नहीं दिखायी देता था ।

(167) एल.एस.डी. का प्रभावहीन होना

एक बार महाराज ने अपने अमरीकी भक्त रामदास से एल.एस.डी. के सम्बन्ध में वार्ता करते हुए तीन सौ माइक्रोग्राम की तीन विशुद्ध गोलियाँ उनसे लेकर अपने मुँह में डाल लीं । जब कि तीन सौ माइक्रोग्राम एक वयस्क के लिये अधिक होती हैं, बाबा का इस प्रकार नौ सौ माइक्रोग्राम खा जाना और फिर उनमें किसी प्रकार की प्रतिक्रिया का न होना एक महान् आश्चर्य की बात बन गयी । रामदास जी इस विषय में बहुत सोचते रहे और अन्त में उन्हें अपनी दृष्टि पर सन्देह होने लगा और वे विचारने लगे कि बाबा ने अवश्य वे गोलियाँ खायी नहीं होंगी अन्यथा उनकी स्थिति सामान्य नहीं रह सकती थी ।

इस घटना के तीन वर्ष बाद जब वे बाबा से पुनः मिले तो इस बार उन्होंने स्वतः उनसे तीन सौ माइक्रोग्राम की विशुद्ध एल.एस.डी. की चार गोलियाँ लेकर एक-एक कर, उनके सामने, अपने मुँह में डाल लीं और ऊपर से पानी पी लिया । सम्भवतः बाबा का अभिप्राय उनका सन्देह दूर करने का रहा हो । इस बार बारह सौ माइक्रोग्राम खा कर वे रामदास जी से पूछने लगे, **"क्या हम पागल हो जायेंगे ?"** रामदास जी मन में घबराये हुए तो थे ही, उन्होंने उत्तर दिया "हो सकता है ।" एकाएक बाबा ने अपना चेहरा पागलों का सा बना लिया और वैसा ही नाटक करने लगे । रामदास जी सोचने लगे कि उन्होंने बाबा की सिद्धियों के बारे में गलत अनुमान लगाया । इतने में बाबा ने अपनी मुखाकृति सामान्य कर दी और कहने लगे कि **क्या इससे भी अधिक नशेदार कोई दवा होती है ?**

इस घटना का उल्लेख 'मिरेकिल आफ लव' के पृ.सं. 229-230 में हुआ है ।

(168) आर्सनिक पाउडर का असर नहीं

संयुक्त राज्य अमरीका में हिमालयन अन्तर्राष्ट्रीय योग, विज्ञान और दर्शन संस्थान के अध्यक्ष, भारतीय सन्त श्री स्वामी राम अपनी पुस्तक "लिविंग

विद हिमालयन मास्टर्स" में इस विषय पर महाराज जी के सम्बन्ध में अपना एक अनुभव व्यक्त करते हुए लिखते हैं कि एक अँग्रेजी दवाइयों का दुकानदार नैनीताल में तल्लीताल से मल्लीताल आर्सनिक पाउडर पहुँचाने जा रहा था । रास्ते में उसे बाबा दिखायी दिये और वह उन्हें नमन करने उनके सम्मुख आया । स्वामी राम उस समय बाबा के साथ थे । आप कहते हैं कि बाबा उस व्यक्ति से बोले, **"हमें भूख लगी है । तू क्या लिये जा रहा है ?"** उसने उत्तर दिया, "यह आर्सनिक पाउडर है । मैं आपके लिये भोजन लाता हूँ ।" इतने में बाबा ने एक झटके में वह पाउडर छीन लिया और एक मुट्ठी भर आर्सनिक पाउडर खा गये । आपने पानी माँगा और उसे ऊपर से पी गये । वह दुकानदार घबरा उठा । वह सोचने लगा कि अब बाबा का जीवित रहना सम्भव नहीं है, पर बाबा की स्थिति बराबर सामान्य देख उसकी जान में जान आ गयी ।

(169) संखिया बेकार हो गयी

कैंची आश्रम में एक दिन एक साधु अपने वस्त्रों में संखिया छिपाये महाराज के दर्शन करने आया था । बाबा ने उसे अपने पास बुलाया और बड़े कौशल से छिपाये हुए उस संखिया को बाहर निकाल लिया । आप बड़ी मात्रा में उसे खाकर पानी पी गये । वह साधु बाबा के इस कार्य से घबरा उठा और बोला, "इतनी मात्रा में संखिया खा कर कोई भी जिन्दा नहीं रह सकता", पर बाबा में इसका कुछ भी असर नहीं हुआ । आप मुस्कराते हुए साधु से बोले, **"ईश्वर प्रेम के आगे सब नशे फीके हैं ।"**

(170) जल और वायु तत्व

हनुमान गढ़ नैनीताल में हनुमान जी की प्रतिष्ठा के दिन महाराज ने अपना कम्बल एकाएक फेंक कर 'पवन तनय बल पवन समाना' कहते हुए वर्षा के भीषण प्रकोप को शान्त कर दिया था जिससे प्रतिष्ठा कार्य पूर्ण समारोह से सम्पन्न हो सका । इस घटना का वर्णन चरितामृत के अन्तर्गत 'निर्माण कार्य' के प्रकरण में "हनुमान गढ़, नैनीताल" के प्रसंग में किया जा चुका है ।

(171) गर्मी की रात में ठण्डी हवा

मई सन् 1958 में एक रात अपने निवास स्थान लखनऊ में महाराज के भक्त श्री केहर सिंह निद्रा के लिये बड़ा प्रयास कर रहे थे । गर्मी बहुत थी, आप करवटें बदलते रहे, पर नींद आ नहीं रही थी । बिजली के बिना पंखा बेकार हो रहा था । एकाएक मौसम बदल गया। शिमला, मसूरी की भाँति ठण्डी हवा के झोंके आने लगे । आकाश में न बादल थे और न कोई कारण ही इस परिवर्तन के लक्षित हो रहे थे । एक करवट में ही आप को गहरी नींद आ गयी । दूसरे दिन आप स्वस्थ हो कर उठे और अपने नित्य कर्म से निबट कर, मेहरोत्रा जी के घर गये जहाँ बाबा दो दिन से विराजमान थे । जैसे ही आपने महाराज के चरणों में अपना सिर झुकाया तो वे बोले, **"कल रात नींद नहीं आ रही थी । करवट पर करवट बदल रहा था ?"** आपने उत्तर दिया, "आती कैसे नहीं, आपने ठण्डी हवा जो चला दी थी ।" इस पर वे ज़ोर से हँस पड़े । उनकी गुप्त कृपा का राज़ पकड़ा गया था ।

(172) हम मौसम बदल देंगे

बाबा महाराज अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष के सहज संयोग थे और भक्तों के लिये अनवरत् न जाने क्या-क्या करते रहते थे । 18 जून 1973 के दिन अलीगढ़ निवासी बाबा के एक भक्त श्री होतृदत्त शर्मा की कन्या का पाणिग्रहण संस्कार था । वे 15 जून को कैंची आश्रम में बाबा का आशीर्वाद लेने आये और उन्होंने उनको इस पुनीत अवसर पर सम्मिलित होने का निमन्त्रण पत्र दिया । बाबा अत्यन्त सहज भाव से साधारण मानव की भाँति बोले, **"पण्डित ! हमारे लिये कोई काम बताओ ।"** आपने हाथ जोड़ कर निवेदन किया, "महाराज, सभी काम आप ही कर रहे हैं ।" बाबा बोले, **"जो काम कोई नहीं करेगा, उसे हम करेंगे"** । क्षण मात्र में होतृदत्त जी विचार मग्न हो गये, इतने में बाबा ने स्वयं स्पष्ट कर दिया, **"तुम्हारे गाँव में बिजली नहीं है । बाराती गर्मी से तिलमिला जायेंगे, इसलिए हम मौसम को बदल देंगे । बारात के लिये भली-भाँति कपड़ों का प्रबन्ध कर देना क्योंकि 18 और 19 जून को बहुत ठण्ड होगी ।"** निश्चित समय आया । बारात आयी । दिन में थोड़े से छींटे पड़े और पुरवाई चलने लगी । रात होने तक इतनी ठण्ड हो गयी जैसे नवम्बर-दिसम्बर का महीना हो । होतृदत्त जी ने स्वभाववश बाबा की यह

बात सभी से कह दी थी । अतः उत्सव में सम्मिलित होने वाले सभी महाराज की इस लीला से स्तब्ध थे । जैसे ही बारात 19 जून के अपरान्ह में विदा हुई, मौसम अपने मूल रूप में आने लगा । गरमी अपने चरम रूप में होने लगी ।

(173) हवा की दिशा बदल दी

श्री केहर सिंह आइ.ए.एस. ने रुद्रपुर, ज़िला नैनीताल में एक बृहत् भूमि लेकर फार्म बनाया था । श्री जगदीश चन्द्र पाण्डे जो अब बिड़ला विद्यालय नैनीताल में कार्य करते हैं तब महाराज जी की कृपा से उस फार्म के 'मैनेजर' थे । वे फार्म में रह कर खेती की देख-भाल करते थे । आपके और आपके पड़ोसी के फार्म में गन्ने की फसल खड़ी थी । दोनों फार्मों के बीच एक पतली मुंडेर का फासला था । एक दिन पड़ोसी के खेत में आग लग गयी । उस आग से सिंह साहब की फसल को बचाना पाण्डे जी के लिये सम्भव न था । वे किंकर्तव्य विमूढ़ हो रहे थे । एकाएक अज्ञात प्रेरणा से उन्होंने कुछ मिट्टी भूमि से उठाकर, महाराज का स्मरण करते हुए पड़ोसी के फार्म की ओर इस विश्वास से फेंकी कि वे उस विनाशकारी आग से उनकी खेती की सुरक्षा में सहायक होंगे । तुरन्त हवा का रुख ऐसा बदला कि पड़ोसी के फार्म में आग की लपटें विपरीत दिशा को जाने लगीं । इस प्रकार उनकी खेती सुरक्षित रह सकी ।

(174) "लेजा, सब लेजा"

नेपाल की तलहटी में स्थित नानपारा ग्राम, जिला बहराइच में श्री ओंकार सिंह, डी.आइ.जी. पुलिस, का वृहत् फार्म है । एक बार मक्के की फसल कट कर खलिहान में पड़ी थी, एकाएक घोर घटा छा गयीं । ज्योंही थोड़ी बूंदाबादी आरम्भ हुई ओंकार सिंह जी की बेचैनी बहुत बढ़ गयी । उस बड़ी फसल के बचाव का उनके पास कोई साधन नहीं था । उन्हें हज़ारों रुपयों की फसल की पूरी बरबादी दिखायी देने लगी । जब कभी कोई ऐसी संकटापन्न स्थिति उनके जीवन में पैदा हो जाती, जो उनकी सामर्थ्य के बाहर होती, तो वे बाबा को याद करने लगते और यह उनका सदा का अनुभव रहा कि भले ही वे कहीं हों उनकी अलौकिक शक्ति आपको संकटों से बचाती रही । अब जब बूंदाबादी में तेजी आने लगी तो आप उस

घबराहट में बाबा को याद करने लगे, पर स्थिति में कुछ सुधार आता न देख आपका धैर्य जाता रहा । आप हतोत्साह हो गये और बाबा के प्रति अपनी उदासीनता का प्रदर्शन करते हुए रोष में कहने लगे, "लेजा, सब लेजा।" तुरन्त आपके खलिहान और उसके आस पास पानी का बरसना बन्द हो गया, पर शेष गाँव में सर्वत्र घोर वर्षा हुई ।

इस घटना के बहुत समय बाद जब एक दिन आपके मित्र श्री केहर सिंह ने श्री सूरज नारायण मेहरोत्रा के घर पर बाबा का ध्यान इस घटना की ओर आकर्षित करते हुए कहा, **"आपने ओंकार सिंह की फसल नष्ट होने से बचा दी,"** तो बाबा एक बालक की भाँति बड़े दैन्य भाव से बोले, **"हम क्या करते ? वह गुस्से में बौखला गया था और चिल्लाने लगा – लेजा सब लेजा"** ।

महाराज की इस अलौकिक शक्ति का परिचय उनके महाप्रयाण के बाद भी मिलता है जब कि आपने वर्षा से सुरक्षा कर गर्जिला हनुमान मन्दिर के निर्माण कार्य को सफल बनाया । इस सम्बन्ध में 'चरितामृत' के अन्तर्गत 'निर्माण कार्य' के प्रकरण में 'गर्जिला (कोटमन्या) हनुमान मन्दिर' के प्रसंग का अवलोकन करें ।

अग्नि तत्व

(175) साधु का बैंक अग्नि

अक्टूबर का महीना था । एक दिन कैंची आश्रम में बहुत ठण्ड मालूम दे रही थी । भक्तों ने बाबा की सेवा में उनके आगे एक अँगीठी जला कर रख दी । बाबा तख्त पर विराजमान थे और भक्तजन उनके सामने रखी अँगीठी को घेरे बैठे थे । इतने में एक साधु कहीं से घूमता–घामता अपने जीवन में प्रथम बार कैंची आश्रम आया । मन्दिर और आश्रम की रमणीयता से उसका चित्त प्रसन्न हो उठा, पर पूछने पर जब उसे ज्ञात हुआ कि यह बाबा नीब करौरी का आश्रम है, तो उसके अन्दर विरोधी विचार उठने लगे । वास्तव में वह यहाँ के वैभव का बाबा शब्द की यथार्थता से साम्य घटित नहीं कर पाया था । उसके विचार से बाबा को नदी के किनारे एक झोपड़ी में निवास करना चाहिये था । उसके मन में क्रोध उत्पन्न हो गया और वह पूछताछ करता हुआ बाबा के पास आ गया । उसने अपने दाहिने हाथ को उनकी ओर फैलाते हुए रूखे स्वर में, उन्हें लज्जित करने के अभिप्राय से कहा, "बाबा और यह सम्पदा !"

बाबा ने बड़ी शान्त मुद्रा में, मुस्कराते हुए उस साधु को अपने पास बुलाया । वह मन्त्र मुग्ध सा उनके निकट आ खड़ा हुआ । बाबा ने उसकी कमर से कुछ रुपयों के मैले और मुड़े नोट निकाल लिये । साधु देखता ही रह गया और कुछ कह नहीं पाया । बाबा बोले, **"तू ये रुपये अपने साथ क्यों ले जा रहा है ? साधु का बैंक तो अग्नि है ।"** ऐसा कहते हुए उन्होंने उन नोटों को सिगड़ी में डाल दिया । अग्नि में लपट उठते ही साधु की क्रोधाग्नि प्रज्वलित हो उठी और वह बड़बड़ाने लगा । बाबा हँसते हुए बोले, **"तू बद्रीनाथ जा रहा है, वहाँ अग्नि से माँग लेना । वह तेरे नोट लौटा देगी ।"** बाबा की इस बात से वह और भी दुःखी हो गया । बाबा ने चिमटा उठाया और तुरन्त उसके सामने रिजर्व बैंक के नये नोट अग्नि से बाहर निकालते गये और उसकी पूरी धनराशि उसे लौटा दी । बाबा ने साधु को भोजन करवाया और विदा करते समय एक नया कम्बल भी दिया । साधु बहुत लज्जित था और उनके आगे नतमस्तक हो सच्चे हृदय से क्षमा माँगने लगा ।

वास्तव में साधु के लिये इससे अच्छी शिक्षा क्या हो सकती थी ?

(176) स्पर्श मात्र से बत्तियां जल उठीं

भूमियाधार में कुछ माइयाँ बाबा का पूजन करने आया करती थीं । एक दिन उन्हें वे आश्रम में नहीं मिले । बाबा कुछ ही दूर पर मोटर सड़क की दीवार पर बैठे थे । माइयों ने कुछ देर उनकी प्रतीक्षा की और तदुपरान्त सड़क पर ही पूजा करने के विचार से उनकी ओर जाने लगीं । बाबा ने हाथ हिलाते हुए उन्हें लौट जाने का संकेत किया । उस समय उनकी सेवा में वहाँ खड़े थे कानपुर के श्री गुरूदत्त शर्मा । माइयों को निराश देख शर्माजी ने अपनी ओर से उनके लिये बाबा से प्रार्थना की । उन्होंने अनुमति तो दे दी पर जल्दी पूजा कर चले जाने को कहा । माइयों ने यथाशीघ्र यह कार्य किया, पर आरती जलाने के लिये वे दियासलाई लाना भूल गयी थीं । उन्होंने अपनी कठिनाई शर्मा जी से व्यक्त की पर वे उनकी सहायता करने में असमर्थ रहे । उन्होंने उनकी समस्या का निवेदन बाबा से किया । महाराज ने झुंझलाहट दिखाते हुए घी से सनी रूई की बत्तियों को हाथ में ले लिया और **"ठुलिमां++ ठुलिमां"** कहते हुए हाथ घुमाया, एकाएक बत्तियां जल उठीं । माइयाँ आनन्द-पूर्वक आरती कर वापस चली गयीं ।

++ कुमाउनी भाषा में 'बड़ी माँ' के लिये प्रयुक्त शब्द ।

बाबा की कृपा से एक बार बुझा दीप भी जल उठा । इस घटना का वर्णन प्रसंग संख्या 398 में हुआ है ।

(177) जल से अग्नि प्रज्वलित

घटना उस समय की है जब नैनीताल में हनुमानगढ़ का निर्माण हो रहा था । एक दिन महाराज किशनपुर नैनीताल में श्री शिव दत्त जोशी के पूजा गृह में बैठे थे । आपके पास ही एक दीया जल रहा था और सामने जल भरा पंचपात्र और आचमनी भी रखी थी । यहाँ भी कई भक्तगण इनके पास बैठे थे । हवन के सम्बन्ध में बातें हो रही थीं । एक भक्त विस्तारपूर्वक वर्णन कर रहा था कि किस प्रकार आदि हैड़ाखान बाबा जल से हवन किया करते थे । महाराज बड़े चाव से बातें सुन रहे थे । शिवदत्त जी की पुत्री कु. मुन्नी देवी जो बिड़ला बालिका विद्यालय नैनीताल में कार्य करती हैं, सुनाती हैं कि बाबा आचमनी से दीप शिखा पर जल छोड़ते जा रहे थे । जैसे जैसे वे दीप शिखा पर जल छोड़ते जाते उसकी लौ और भी अधिक होती जा रही थी । लोग हवन के दास्तान को इतनी तन्मयता से सुन रहे थे कि उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि बाबा दीये को बुझाने की चेष्टा क्यों कर रहे हैं ।

आकाश तत्व

महाराज की यह अलौकिकता ही रही कि वे सशरीर विभिन्न स्थानों में एक ही समय में लोगों से मिलते, वार्ता करते और अन्य कार्य भी करते रहते । लोग ऐसी घटनाओं का कोई एक पक्ष ही देख पाते इस कारण उनकी महत्ता छिपी रह जाती । कभी बाद में दोनों पक्षों के लोगों के विचार जब आपस में टकरा उठते अथवा घटना के परिणाम से बात बाहर निकल आती तो यह रहस्य खुलता । फिर बाबा का अपना व्यक्तित्व था जिसके आगे महानतम आश्चर्य भी एक साधारण बात बन कर रह जाती थी ।

(178) नीब करौरी और वृन्दावन में

घटना लगभग 1920 की है, जब महाराज नीब करौरी ग्राम में पुरानी गुफा में रहते थे । उन दिनों वे लोगों से अधिक सम्पर्क नहीं रखते थे ।

एक बार उस गाँव के कई लोग एक साथ वृन्दावन की यात्रा के लिये उद्यत् हुए । उन्होंने बाबा से भी चलने का आग्रह किया । लौकिक दृष्टि से बाबा पहले कभी वृन्दावन गये नहीं थे, पर उन्होंने उन लोगों को बाद में आने का आश्वासन दे कर विदा किया । आपका भक्त गोपाल नामक बहेलिया नित्य गुफा के द्वार पर आपके आदेशानुसार भोजन की थाली रख जाता था । भोजन करने के बाद बाबा खाली थाली गुफा के बाहर कर दिया करते । गुफा में प्रवेश की अनुमति उसे नहीं थी । जब वृन्दावन यात्रा से लोग लौट कर आये तो उनसे गोपाल को ज्ञात हुआ कि वृन्दावन में बाबा उन लोगों के साथ ही रहे उन्होंने उन लोगों को वहाँ के समस्त मन्दिरों के दर्शन कराये । ये सब लोग बाबा के साथ की गयी यात्रा से प्रसन्न एवं सन्तुष्ट थे । गोपाल इन बातों को सुनकर चकित रह गया । उसने बाबा से आकर सब बातें कहीं । उन्होंने यह कह कर गोपाल को समझाया कि उसे उन लोगों की बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिये ।

(179) कानपुर और काठमाण्डू नेपाल में

एक बार महाराज श्री देव कामता दीक्षित के घर कानपुर में लगातार तीन दिन रहे और चौथे दिन वे उनको अपने साथ लेकर लखनऊ में श्री हरिराम जोशी, डिप्टी रजिस्ट्रार कोआपरेटिव सोसाइटीज़, उ. प्र. के घर नज़रबाग पहुँचे । जोशी जी ज्वर के कारण बिस्तर पर पड़े थे । बाबा को घर में आया देख आप उठ खड़े हुए और उन्हें नमन करने लगे । बाबा उनके बिस्तर पर लेट गये और उसी क्षण उन्हें ज्वर से मुक्त कर दिया । वे हाथ जोड़े बाबा से कहने लगे, "मैं कल ही आप को याद कर रहा था। मैंने काठमाण्डू, नेपाल का रेडियो प्रसारण सुना था । समाचार में कहा गया था कि कल भारत के महान् सन्त बाबा नीब करौरी जी का आगमन हुआ और आज नेपाल नरेश ने उनके दर्शन किये । इससे मुझे आशा हुई कि आप वापसी में लखनऊ आकर मुझे अवश्य दर्शन देंगे ।"

बाबा दीक्षित जी की ओर मुँह किये मुस्करा रहे थे और अपनी आँखों के संकेतों से उनका ध्यान नेपाल रेडियो के समाचार की ओर ले जा रहे थे ।

(180) आगरा और वृन्दावन में

श्री हबीबुल्ला खाँ अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, खाद्य और कृषि विभाग, दिल्ली में काम करते हैं । घटना उस समय की है जब आप वृन्दावन आश्रम में

बाबा की गाड़ी के चालक थे । एक बार बाबा ने रात में इन्हें जगाया और इनसे आगरा होकर लौट आने की अपनी इच्छा व्यक्त की । बाबा बोले, **"पाँच मिनट का काम है और दिन निकलते ही यहाँ पहुँच जायेंगे ।"** आप लोग अँधेरे में ही आगरा पहुँच गये । बाबा ने सब्जी मण्डी में गाड़ी खड़ी करवा कर इनसे साथ चलने को कहा । हबीबुल्ला के पेट में दर्द हो रहा था उसने यह कह कर कि गाड़ी छोड़ कर जाना ठीक नहीं है, उनके साथ जाने से इन्कार किया और पूछा कि आप कितना समय लेंगे । बाबा बोले, **"आधा घंटा"** । इस पर हबीबुल्ला ने कहा कि आप वृन्दावन में पाँच मिनट बता रहे थे और यहाँ आधा घंटा कह रहे हैं । बाबा बोले, **"अच्छा, तू पन्द्रह मिनट हमारा इन्तज़ार करना और हम न आयें तो अकेले वृन्दावन लौट जाना ।"**

हबीबुल्ला के पेट में दर्द बढ़ता गया । उसने पच्चीस मिनट तक बाबा के आने की प्रतीक्षा की अन्त में दुःखी हो वह गाड़ी वृन्दावन लौटा लाया । आश्रम में गाड़ी खड़ी कर जब वह भीतर गया तो उसने बाबा को तख़्त पर बैठे लोगों से बातें करते देखा । वह वेग से गाड़ी चलाता हुआ सीधा आगरा से चला आ रहा था इस कारण उसे आश्चर्य तो हुआ ही, पर वह अपने पेट के दर्द और यात्रा कष्ट से परेशान था । वह बिना उनसे मिले अपने कमरे में चला गया । बाबा उसकी नाराज़गी को समझ रहे थे । आपने एक आदमी भेज कर उसे बुलाया । हबीबुल्ला ने उस व्यक्ति से पूछा, "बाबा आगरा से कब आये ?" उसने आश्चर्य के साथ कहा, "बाबा गये कहाँ थे ? वे सबेरे उठकर जब अपने कमरे से बाहर आये तभी से तख़्त पर बैठे हैं और लोगों को दर्शन दे रहे हैं ।" उसका उत्तर सुनकर हबीबुल्ला चकित रह गया ।

(181) इलाहाबाद और कानपुर में

श्री एस.के. शुक्ला अपनी पदोन्नति के लिये बहुत इच्छुक थे । महाराज ने उन्हें आशीर्वाद दिया और वे उत्तर प्रदेश सरकार में डिप्टी डाइरेक्टर इन्डस्ट्रीज हो गये । आपने कानपुर में नया मकान बनाया जिसके ऊपरी भाग में एक कमरा बाबा के लिये बनायां । एक दिन आपके मित्र श्री भगवती सेवक बाजपेयी इलाहाबाद चर्च लेन में बाबा के दर्शन करने आये और रात वहीं बाबा के साथ रहे । रात्रि में वार्ता करते हुए बाबा ने उनसे हनुमान सेतु के पास स्थित संकटमोचन हनुमान मन्दिर, लखनऊ के सम्बन्ध में शुक्ला जी के प्रति अपनी नाराज़गी दिखायी । दूसरे दिन तड़के ही

बाजपेयी जी बाबा से विदाई लेकर कुछ घंटों में अपने घर कानपुर आ गये । घर पहुँचते ही आपने शुक्ला जी को टेलिफोन में बाबा की नाराज़गी का कारण बताया । शुक्ला जी ने उसी समय उनको अपने नये मकान पर बुलाया और बोले, "तुम कल रात की बात कह रहे थे, कल रात बाबा मेरे घर पर थे । उन्होंने तब कोई ऐसी बात मुझ से नहीं कही ।" प्रमाण स्वरूप उन्होंने फर्श में बाबा के स्थाई पद चिन्ह दिखाये । शुक्ला जी ने पिछले दिन बाबा के लिये बनाये गये कमरे के सामने फर्श में सीमेंट करवाया था । बाबा ने उस कच्चे फर्श में पैर रखते हुए अपने कमरे में प्रवेश किया था इस कारण उसमें उनके पद चिन्ह स्थाई रूप से अंकित हो गये । बाबा की इस लीला से शुक्ला जी और बाजपेयी जी दोनों चकित रह गये ।

(182) इलाहाबाद, कानपुर और बरेली में

पनकी, कानपुर में महाराज ने श्री देव कामता दीक्षित द्वारा हनुमान जी का मन्दिर बनवाया था और विग्रह की स्थापना 21 जनवरी 1964 को होनी थी । इसके कुछ दिन पूर्व से ही बाबा चर्च लेन, इलाहाबाद आ गये थे । इस विराट प्रतिष्ठा दिवस के प्रातःकाल छः बजे बाबा को चर्च लेन में देख कर मुझे (लेखक) बड़ा आश्चर्य हुआ और मैं समझ नहीं पाया कि उन्होंने इस विशेष अवसर पर, जब कि पनकी में एक बृहत् जन समुदाय उनके दर्शन की प्रतीक्षा कर रहा होगा, वहाँ जाना क्यों उचित नहीं समझा । वे शौच आदि से निवृत्त हो चुके थे और लोगों को प्रसाद देकर लगभग साढे छः बजे अपने कक्ष में चले गये जहाँ उस समय श्री माँ और जीवन्ती माँ भी उपस्थित थीं । उस समय उन्होंने श्री सुधीर मुकर्जी को आदेश दिया कि वे उनके कमरे में बाहर से ताला लगा दें और प्रत्येक दर्शनार्थी से, जो भी वहाँ आवे, कह दें कि बाबा बाहर गये हैं । वे भीतर तख़्त पर इस प्रकार अचेत लेट गये कि माइयों ने उन्हें समाधि में लीन पाया । मैं इस आशा से कि कभी भी वे बाहर आ सकते हैं, बाहरी कमरे में ही बैठा रह गया । मुकर्जी दादा सभी आगन्तुकों को बाबा का आदेश सुना कर विदा कर दे रहे थे । इतने में इलाहाबाद के प्रसिद्ध केटरर जगाती बाबू वहाँ आये और मुझे बाहरी कमरे में बैठा देख, वे सीधे मेरे पास आ गये । उनके पूछने पर मैंने सही स्थिति से उन्हें अवगत करा दिया । लगभग साढ़े ग्यारह बजे बाबा ने भीतर से आवाज़ देकर अपने कमरे का ताला खुलवाया और उनके बाहर आने पर मुझे पुनः उनके दर्शन हुए ।

इसके दो दिन बाद सायंकाल के समय बाबा का दरबार लगा था । मैं और जगाती बाबू वहाँ उपस्थित थे । एकाएक एक कार बाहर

आकर रुकी, जिसमें बाबा के एक भक्त इन्जीनियर, दर्शनार्थ कानपुर से आये थे । हम लोगों ने उनका स्वागत किया । जगाती जी ने उनसे पूछा कि बाबा की अनुपस्थिति में पनकी की स्थापना कैसी रही ? प्रश्न को सुनते ही वे चौंक उठे और बोले, "बाबा की अनुपस्थिति में !" फिर कहने लगे, "प्रतिष्ठा के दिन साढ़े छः बजे मैंने ही उनका स्वागत किया और मैं लगभग साढ़े ग्यारह बजे तक उनके साथ रहा । प्राण–प्रतिष्ठा समारोह आनन्दमय रहा और भण्डारे की क्या कहें वह तो अद्‌भुत था ।" जगाती जी को इन्जीनियर की बातें मान्य नहीं हुईं, वे भली–भाँति जानते थे कि प्राण–प्रतिष्ठा के समय बाबा चर्च लेन में ताले में बन्द थे । थोड़े वाद–विवाद के बाद, दोनों इस मामले को दरबार में ले जाने के लिये तैयार हो गये । जब जगाती जी ने यह विवाद दरबार में प्रस्तुत किया तो बाबा ने अपनी अलौकिकता छिपाने के लिये इन्जीनियर को झूठा बता दिया । वह उनकी बात सुनकर अवाक् रह गया फिर ज्योंही वह कुछ कहने को उद्यत् हुआ, बाबा ने अपनी अंगुली होठों से लगाते हुए उसे चुप हो जाने का संकेत दिया । एक ही समय में इलाहाबाद और कानपुर में बाबा की उपस्थिति का यह स्पष्ट प्रमाण था । इस विषय में पूछ–ताछ करने पर ज्ञात हुआ कि उस समारोह में कई लोगों को बाबा के दर्शन हुए और अनेक को वहाँ के आनन्दमय वातावरण से उनकी उपस्थिति का आभास हुआ ।

उसी दिन प्रातःकाल बाबा बरेली में भी देखे गये । सिविल सर्जन डा. ए.डी. भण्डारी जी की पत्नी अपने बगीचे में टहल रही थीं, उन्होंने सामने से एक रिक्शा में बाबा को अकेले अपने घर की ओर आते देखा । आप तुरन्त उनके लिये कमरा ठीक करने भीतर गयीं और जब उनके स्वागतार्थ बाहर आयीं तो आपको न बाबा दिखायी दिये और न उनका रिक्शा ही । बाबा के इस प्रकार घर तक आकर चले जाने का उन्हें दुःख हुआ । डाक्टर साहब के घर आने पर आपने उन्हें सब कह सुनाया । उन्होंने इधर–उधर पूछ–ताछ भी करवायी पर कुछ पता नहीं चला । इस घटना के कुछ दिनों बाद जब उन्हें श्री माँ के दर्शन हुए तो उन्होंने 21 जनवरी 64 की तारीख बताते हुए उन्हें यह बात सुनाई । माँ के यह कहने पर कि बाबा उस दिन चर्च लेन इलाहाबाद में थे, उन्हें आश्चर्य हुआ पर विश्वास नहीं ।

(183) खैरना के पुल पर आम का प्रसाद

कुमाऊं रेजिमेंट के मेजर सुनन्दा और उनके परिवार पर महाराज की बड़ी कृपा रही । आप अक्टूबर 85 में सपत्नीक कैंची में मन्दिरों के दर्शन

करने आये थे और महाराज के विग्रह के आगे खड़े होकर स्वतः सुनाने लगे कि एक दिन वे कैंची में बाबा के दर्शन कर अपनी कार में सीधे रानीखेत जा रहे थे, रास्ते में उन्हें खैरना के पुल पर बाबा बैठे दिखायी दिये । अभी थोड़ी देर पहले आप उन्हें कैंची में छोड़ आये थे और यहाँ उन्हें पुनः देख कर आप चकित हो गये । गाड़ी रुकवा कर आपने उन्हें नमन करते हुए पूछा, "आप यहाँ कैसे ?" बाबा बोले, **"तू कैंची से बिना प्रसाद लिये ही चला आया, इसलिए हमें यहाँ आना पड़ा ।"** बाबा ने अपने कम्बल से आम निकाल कर आपको प्रसाद रूप में दिये । वह आम का मौसम न था, यह सुनन्दा जी के लिये दूसरा आश्चर्य था ।

(184) "मैं तो हूँ"

श्री राम रतन वर्मा मैनपुरी में वकालत करते थे । सन् 1956 में उनका देहान्त हो गया । वर्मा जी बाबा के भक्त रहे और बाबा का भी इस परिवार से बड़ा प्रेम था । श्रीमती शान्ता जी ही उनकी एकमात्र सन्तति हैं । इनका विवाह हो चुका था । अपने पिता के निधन से आप अत्यन्त दुःखी हो गयीं । बाबा इन्हें सांत्वना देने इनके घर में प्रकट हुए । आप उनके आगे बहुत रोयीं और कहने लगीं, "मेरा कोई भाई नहीं है, अब मेरा मायका खत्म हो गया ।" करुणा के सागर बाबा किसी के आँसू देख नहीं पाते थे, तुरन्त बोल उठे, **"मैं तो हूँ ।"** तब से बाबा आपके भाई बन गये और इस सम्बन्ध को उन्होंने अपनी महासमाधि तक निभाया । इस बीच सत्रह वर्ष तक रक्षाबन्धन के अवसर पर बाबा आपके घर प्रकट होते रहे । राखी शान्ता जी से बँधवाते और उन्हें रुपये देते थे । एक बार इस अवसर पर आप मेरठ में थीं, बाबा वहीं पहुँच गए और उन्होंने राखी बँधवाई । इन सत्रह वर्षों में ग्यारह वर्ष रक्षाबन्धन पर बाबा कैंची में ही रहे । सन् 1973 में रक्षाबन्धन अगस्त में हुआ था और सितम्बर ग्यारह को बाबा ने अपनी नर लीला समाप्त की । वे केवल 9 सितम्बर को अपनी अन्तिम यात्रा के लिये कैंची आश्रम से बाहर आये । इसके पूर्व वे बराबर आश्रम में ही रहे पर शान्ता जी कहती हैं कि बाबा ने अगस्त 1973 की रक्षाबन्धन को भी घर आकर राखी बँधवायी ।

(185) "ले बच गया"

हनुमानगढ़ नैनीताल में बाबा की कुटिया का निर्माण हो चुका था । बाबा भक्तगणों के मध्य एक तख़्त में विराजमान थे । अचानक वे उठ खड़े

हुए और अपने दोनों हाथ उठाकर गोद में लेने की मुद्रा बनाते हुए दरवाज़े से बाहर आ गये और बोले, **"ले बच गया ।"** उनके इस खिलवाड़ का कोई कारण न देख कुछ भक्तगण अज्ञानतावश हँस पड़े । श्री पूरन चन्द्र जोशी जी कहते हैं कि इस घटना के तीसरे दिन बाबा इसी प्रकार बैठे थे, एक महिला उन्हें प्रणाम कर बड़ी कृतज्ञता से तीन दिन पूर्व कानपुर में हुई एक दुर्घटना का हाल सुनाने लगी । वह बोली, "मेरा पाँच वर्ष का बच्चा छत से नीचे गिर पड़ा था । मैं घबरा गयी और आप को याद करने लगी। सड़क में जाते एक व्यक्ति ने हाथ फैला कर उस बच्चे को अपनी गोद में रोक लिया । बच्चे को कोई क्षति नहीं पहुँची । वह 'ले बच गया' कहते हुए बच्चा मुझे दे कर चला गया । कौन था वह, मैं पूछ भी नहीं पायी ।" बाबा मुस्कराते हुए उसकी बातें सुनते रहे और भक्तगण उनकी तीन दिन पूर्व की मुद्रा का स्मरण कर चकित रह गये ।

(186) "तूने याद किसे किया था ?"

नैनीताल निवासी श्रीमती शकुन्तला साह को एक बार महाराज के साथ मिर्जापुर यात्रा का सौभाग्य प्राप्त हुआ था । उस समय आप विन्ध्यवासिनी देवी के दर्शन से बहुत प्रभावित हुई थीं । इसके कुछ वर्ष बाद आप को इलाहाबाद जाना पड़ा और वहाँ संयोगवश आपको आपके पिता जी भी मिल गये । आप उन्हें विन्ध्यवासिनी माँ के दर्शन कराने ले गयीं । वहाँ गंगा में स्नान करते समय आपके पिता जी को तैरने की इच्छा हुई । युवावस्था में उनको तैरने का अभ्यास था, पर वृद्धावस्था की कमज़ोरी से शरीर में वह क्षमता नहीं रही । आपके मना करने पर भी वे अपनी इच्छा न रोक पाये । फलतः वे जलमग्न हो गये । बड़े प्रयास से वे एक बार अपने को ऊपर उठा पाये थे, उस समय उनके चेहरे की घबराहट को देख कर शकुन्तला जी स्तब्ध रह गयीं । पर आपके देखते-देखते जब वे फिर डूब गये तो उस लाचारी में आप बाबा की याद में "महाराज ! महाराज !" कहते चीख उठीं । इतने में पास में खड़ा एक व्यक्ति बिना कपड़े उतारे गंगा में कूद गया और आपके पिताजी को बाहर निकाल ले आया । थोड़े उपचार से ही वे तुरन्त स्वस्थ हो गये । आप लोग इस महान् उपकार के लिये उस व्यक्ति को कृतज्ञतापूर्वक कुछ भेंट देना चाहते थे, पर वह गीले कपड़ों में ही ऐसा गायब हुआ कि बहुत पूछ-ताछ और खोज करने पर भी नहीं मिल पाया । आप लौटकर नैनीताल आ गयीं और यहाँ आपने यह वृत्तान्त बाबा को सुना कर उनसे पूछा कि वह व्यक्ति कौन था ? बाबा बड़े

उदासीन भाव से बोले, "चुप रह । तेरा काम बन गया ! तूने याद किसे किया था ?"

(187) दृश्य और अदृश्य रूप

कटरा, इलाहाबाद में महाराज के एक अनन्य भक्त श्री कन्हैया लाल श्रीवास्तव रहते हैं । जब कभी बाबा प्रयाग आते आप स्वभाववश उनके दर्शनों का लाभ अधिकाधिक लोगों को कराते । अपनी इस प्रवृत्ति के लिये उन्हें कई बार बाबा की फटकार भी सुननी पड़ती, पर फिर ऐसे अवसर आने पर वे अपने को रोक नहीं पाते थे । एक बार इसी हेतु आप तीन संभ्रांत व्यक्तियों को लेकर चर्च लेन पहुँचे जहाँ बाबा ठहरे हुए थे । इनके वहाँ पहुँचने के पूर्व बाबा श्री सुधीर मुकर्जी के साथ इलाहाबाद स्टेशन चले गये थे । आप भी उन लोगों को साथ लेकर स्टेशन गये और वहाँ प्लेटफार्म में उन्हें एक स्थान में छोड़ कर अकेले बाबा को खोजने लगे । आपने बाबा और मुकर्जी दादा को प्लेटफार्म के एक सिरे पर बैठे देखा । आप उनके पास जाकर विनीत भाव से उन व्यक्तियों को दर्शन देने का आग्रह करने लगे । बाबा ने आपकी बात नहीं मानी । आप बाबा की प्रशंसा कर लोगों को प्रेरित करते और उनमें प्रतिक्रिया के रूप में परीक्षा के भाव जाग उठते । बाबा प्रशंसा चाहते नहीं थे और जिसमें भी परीक्षा के भाव हों उसके प्रति उदासीन रहते । आप निराश होकर लौट आये और उन लोगों के साथ बिना कुछ कहे मौन खड़े हो गये । आप मन में सोचने लगे कि बाबा ने इसी रास्ते लौटना है, थोड़ी प्रतीक्षा के बाद दर्शन स्वतः हो जायेंगे। थोड़ी देर में बाबा उठे और मुकर्जी दादा का हाथ पकड़ कर प्लेटफार्म में इधर-उधर टहलने लगे । प्लेटफार्म खाली था और उस समय उसमें कोई गाड़ी आ भी नहीं रही थी । महाराज दो बार उन चारों व्यक्तियों के सामने से आये और गये पर उनमें से किसी को भी वे दिखायी नहीं दिये । मुकर्जी दादा उन लोगों का रुख अपनी ओर देखते हुए समझ नहीं पा रहे थे कि वे लोग ऐसे सुअवसर का लाभ क्यों नहीं उठा रहे हैं । वे यह कल्पना भी नहीं कर पाये कि बाबा के सम्पर्क के कारण स्वयं वे भी जन दृष्टि से ओझल हो रहे थे । महाराज पर चतुराई काम नहीं करती थी, उनके दर्शन केवल उनकी कृपा से ही होते थे ।

(188) कार सहित अदृश्य

कैंची आश्रम के प्रवेश द्वार पर अकेली एक कार खड़ी थी, जिसमें महाराज और मुकर्जी दादा बैठने को उद्यत् थे । अनेक आश्रमवासी उनकी विदाई में वहाँ खड़े थे । कार भवाली की दिशा को जाने को थी और उसी मार्ग में सामने पास के एक मोड़ पर बाबा की प्रतीक्षा में सपरिवार खड़े थे श्री अम्बादत्त पाण्डे, सचिव, केन्द्रीय सरकार । इन लोगों को भय था कि इनके प्रवेश द्वार तक पहुँचने के पूर्व ही कार चल चुकेगी और ये बाबा के दर्शन से वंचित रह जायेंगे । इसलिए इन्होंने पहाड़ के इस मोड़ पर कार रुकवाना अधिक सुविधाजनक समझा । इधर दादा ने भी कार में चढ़ने के पूर्व बाबा का ध्यान इस परिवार की ओर आकर्षित करते हुए कहा कि वे लोग दर्शन की अभिलाषा से मोड़ पर ही रुक गये हैं । बाबा बोले, **"इस समय दर्शन नहीं होंगे ।"** इस पर दादा ने कहा कि वे गाड़ी के आगे खड़े हो जायेंगे । बाबा ने उनसे कहा, **"तू पीछे की सीट पर ऐसे झुक कर बैठ जा कि चेहरा बाहर न दिखायी दे ।"** उन्होंने आज्ञा का पालन किया और कार उसी दिशा को चल दी । उधर उस परिवार के सभी व्यक्ति इस दृश्य को एकटक दृष्टि से देख रहे थे । मोड़ पार हो जाने पर बाबा ने दादा से आराम से बैठ जाने को कहा । इधर ये लोग परेशान थे कि गाड़ी देखते-देखते किधर ग़ायब हो गयी । प्रवेश द्वार पर उपस्थित लोग गाड़ी को उसी मोड़ की ओर जाते देख रहे थे । जब इस परिवार के लोगों ने प्रवेश द्वार पर आकर वहाँ पर खड़े हुए लोगों से इस सम्बन्ध में बातें कीं तो बाबा की इस लीला से आगन्तुक और उपस्थित दोनों चकित रह गये । केवल बाबा ही नहीं सम्पूर्ण कार आप लोगों की आँखों के आगे से ओझल हो गयी ।

(189) अनुपस्थिति में उपस्थिति

एक दिन मैं (लेखक) अपने घर एलेनगंज, इलाहाबाद से अपने कार्यालय जा रहा था । रास्ते में मुझे महाराज श्री सुधीर मुकर्जी के घर पर बाहरी बरामदे में बैठे दिखायी दिये । मेरी इच्छा हुई कि दर्शन करता चलूं । कार्यालय को देर हो रही थी पर मेरा विश्वास था कि बाबा इस समय मुझे रोकेंगे नहीं और तुरन्त कार्यालय जाने का आदेश देंगे, पर ऐसा हुआ नहीं । आपने दिन के एक बजे तक मुझसे जाने को नहीं कहा । मैं भी यह सोचकर निश्चिंत हो गया कि आज के अवकाश के लिये कार्यालय को लिख दूंगा । जिस समय मेरे मन में यह विचार चल रहा था बाबा ज़ोर से बोले,

"जाओ, काम पर जाओ, यहाँ बेकार बैठे हो ।" मैं उनको नमन कर बाहर चला आया और सोचने लगा कि अब मुझे अपने घर ही चला जाना चाहिये, क्योंकि कार्यालय जाने का समय रहा नहीं । एकाएक स्मरण हुआ कि बाबा ने काम पर जाने की आज्ञा दी है, घर जाने को नहीं कहा । मैं कुछ देर पशोपेश में रहा, फिर काम पर चला गया । वहाँ जाकर मैंने उस दिन के अवकाश के लिये एक आवेदन–पत्र लिखा और उसे कार्य से सम्बन्धित व्यक्ति को देने गया । उसने दैनिक–रिपोर्ट में एक नज़र डाली और बोला, "किस दिन का अवकाश चाहते हैं ? आज तो आप उपस्थित हैं ।" मैंने उसके पास रखे हुए हाज़िरी के रजिस्टर को देखा, उसमें उस दिन समय पर अपनी उपस्थिति के हस्ताक्षर देख मैं चकरा गया । मैंने बात आगे नहीं बढ़ायी और लौट आया । मैं समझ नहीं पाया कि यह कैसे हुआ ? किसने किया ? उस समय मेरा ध्यान बाबा की ओर गया ही नहीं । मुझे यह देखकर भी आश्चर्य होने लगा कि मेरे पास बैठने वाले लोगों ने भी मुझसे इतनी देर में आने का कारण नहीं पूछा ।

जब उस दिन शाम को मैं बाबा के दर्शन करने गया तो उन्हें देखते ही मेरे मन में ऐसा विचार चमक उठा कि यह आपकी ही लीला थी । यह समझते हुए कि कार्यालय में मेरी अनुपस्थिति की पूर्ति आपने सशरीर की, मैं द्रवित हो गया ।

इच्छा शक्ति के अनोखे खेल

(190) गोलियाँ कम्बल में समा गयीं

प्रयाग में सन् 1966 के कुम्भ मेले की तैयारी हो रही थी । झूंसी की ओर गंगातट पर महाराज भी अपना कैम्प लगवा रहे थे जिसमें भक्तगण ठहर सकें और अन्न–क्षेत्र के विचार से नित्य भण्डारा हो सके । जनवरी का महीना था, बाबा चर्च लेन में ठहरे थे । वे दिन में नित्य किसी भी समय संगम चले जाते, पर उनके लौट कर आने का कोई निश्चित समय नहीं होता । दर्शनार्थी शाम से ही चर्चलेन में उनकी प्रतीक्षा करने लगते । एक दिन वहाँ कार में कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति आये जिनमें उत्तर प्रदेश सरकार के एक उच्च पदाधिकारी भी थे । इन लोगों ने रात साढ़े आठ बजे तक बाबा की प्रतीक्षा की, अन्त में निराश होकर वापस जाने की सोचने लगे । जब उन्होंने मुझ (लेखक) से पूछा कि कब तक और प्रतीक्षा की जाय ? मैंने उत्तर दिया कि समय तो उनके आने का निश्चित है नहीं, बाबा की मौज

है, जब दर्शन दें। आप घन्टे के आधे में न जाकर इसे पूरा कर दें तो सम्भव है काम बन जाय। वे नौ बजे तक रुकने को तैयार हो गये। सम्भवतः मेरे इस उत्तर में बाबा की ही प्रेरणा रही हो। मैंने समय बिताने के लिये उनसे पूछा कि आपको बाबा के दर्शन पहले कब और कैसे हुए ? इस पर उन्होंने अनेक वर्ष पूर्व, जब वे झांसी में जिला अधिकारी थे, तब का एक रोचक वर्णन सुनाया जो इस प्रकार है –

बाबा के एक परम भक्त झांसी में सिविल सर्जन थे। एक दिन बातों के सिलसिले में उन्होंने हम से कहा कि बाबा नीब करौरी एक दर्शनीय उच्च कोटि के सिद्ध हैं और कभी–कभी हमारे घर आते हैं। इस सम्बन्ध में उन्होंने बाबा की एक लीला सुनायी जिस से हमारी उत्सुकता बढ़ गयी और उनके निमन्त्रण पर ही एक बार हमने बाबा के दर्शन किये थे।

जब द्वितीय महायुद्ध चल रहा था, बाबा एक दिन सिविल सर्जन के घर पधारे। उन्होंने उनका स्वागत किया। रात्रि में बाबा को तख़्त में सुला कर वे स्वयं भूमि में सो गये, इसलिए कि आवश्यकता पड़ने पर उनकी सेवा कर सकें। रात्रि के ग्यारह बजे दोनों सो गये और एक बजे भूमि में किसी की छटपटाहट से सर्जन साहब की नींद खुल गयी। उन्होंने बिजली जलाकर देखा तो वे बाबा ही थे। कारण पूछने पर उन्होंने अपना कम्बल उतार कर उन्हें देते हुए कहा, **"तू इसे कहीं जलाशय में बहा कर आ।"** उन्होंने दूसरे दिन प्रातःकाल इस कार्य को करने की अनुमति माँगी, परन्तु वे नहीं माने और उसी समय इस कार्य को करने के लिये कहने लगे। अंधेरी रात थी और कार के जाने का रास्ता भी नहीं था। उन्होंने अपने सेवकों को जगाया और बाबा के आदेश को पूरा कर सूरज निकलने के पहले ही घर आ गये। उन्होंने बाबा को बड़ी प्रसन्न मुद्रा में बैठे देखा। जब उन्होंने उनसे कम्बल को व्यर्थ बहाने का कारण पूछा तो बाबा कहने लगे, **"तेरा लड़का जो फ़ौज में अफसर है, जर्मनों के हमले का सामना न कर सका। उसकी टुकड़ी में भगदड़ मच गयी और वह भी भागा, पर जर्मन सिपाहियों ने उसका पीछा किया। वह एक पहाड़ की चोटी से नीचे कूद गया और वहाँ दलदल में फंस गया। ऊपर से सिपाहियों ने उस पर गोलियों की बौछार कर दी और उसे मरा जान वे लौट गये। वे सब गोलियाँ हमारे कम्बल में आ गयी थीं जिनकी गर्मी से हम व्याकुल हो गये। जब तूने कम्बल बहाया तभी हमें शान्ति मिली।"** कम्बल नया था उसमें कहीं एक छिद्र भी न था। सर्जन साहब बाबा की इन बातों पर अपना विश्वास स्थापित न कर सके, केवल लड़का सुरक्षित है यह जान कर

उनकी शान्ति बनी रही । बाबा दूसरे ही दिन चले गये । आपके जाने के कई दिनों बाद उनके लड़के का पत्र अपनी पत्नी को आया । उसने यही विवरण देते हुए आश्चर्य व्यक्त किया था कि किस अज्ञात शक्ति ने इन गोलियों की बौछारों से उसकी रक्षा की ! ऐसी स्थिति में जान बचने की कोई सम्भावना ही नहीं हो सकती थी । पुत्र के इस लेख से उन्हें बाबा की महानता का बोध हुआ और दुःख हुआ कि वे उनकी बात पर उस समय ईमान न ला सके ।

पदाधिकारी महोदय के इतना वृत्तान्त सुनाने में नौ बज गये और उसी समय बाबा का आगमन भी हुआ ।

ऐसे न मालुम कितने कार्य बाबा को युद्ध क्षेत्र में करने पड़ते होंगे इसका कोई अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता ।

बाबा के अनेक रूप

'अनेक रूप रूपाय विष्णवे प्रभविष्णवे' । बाबा का पंच तत्वों पर पूर्ण अधिकार था । वे अपनी इच्छाशक्ति से क्षण मात्र में अपने को किसी रूप और वेश में व्यक्त कर सकते थे । जब अपने सामान्य रूप में ही उनकी वास्तविकता नहीं जानी जा सकी, तो इन विभिन्न रूपों में उन्हें कौन पहचान सकता ? केवल प्रासंगिक निष्कर्ष से या विशेष परिस्थितियों में जब बात आगे आ जाती तो वे जाने जाते या तब जब उनमें लोगों को अपने-अपने इष्ट देव के दर्शन होते । वे सभी प्रकार की सृष्टि और परिस्थितियों के सृजन में समर्थ थे ।

(191) एक दुबले साधु के रूप में

श्रीमती विद्यासाह नैनीताल से कैंची महाराज के दर्शन के लिये आती थीं । एक दिन महाराज के पास बैठे उन में एक लालसा पैदा हुई कि बाबा नैनीताल में लोगों के घरों में जाते ही हैं कभी उनके घर में भी पदार्पण कर देते, पर संकोचवश कुछ कह नहीं पायीं । आपका घर बाज़ार में था और संकरी सीढ़ियों से ऊपर जाना होता था । बाबा के डील-डौल को देख कर आप सोच रही थीं कि उन सीढ़ियों से बाबा का ऊपर जाना सम्भव हो नहीं सकता । बाबा स्वतः बोल उठे, **"हम तेरे घर आयेंगे, तू हवन करवा ।"** आपने एक मन्दिर के पुजारी से हवन का अनुष्ठान करवाया । जिस दिन पूर्णाहुति हुई आप वहाँ से प्रसाद लेकर घर आ रही

थीं । रास्ते भर एक दुबला साधु आपके पीछे–पीछे ही चलता रहा । इससे आप को कुछ मानसिक परेशानी हुई पर उस साधु से कह भी क्या सकती थीं । घर आने पर आप पीछे के रास्ते, जो कि एक पंजाबी परिवार के घर से होकर जाता था, ऊपर कोठे पर चली गयीं । वह साधु भी इनके पीछे ही चला आया, पर उस पंजाबी परिवार ने उसे डाँट कर भगा दिया । आपकी समझ में नहीं आया कि वह इस तरह आपका पीछा क्यों कर रहा था ।

इस घटना के कई महीने बाद बाबा के पास बैठे आपके मन में विचार आया कि बाबा ने एक बार आपके घर आने की बात कही थी और आपने उनके कहने के अनुसार यज्ञ भी करवाया पर ये आये नहीं । बाबा तुरन्त बोल उठे, **"हम तो आये थे, पर तेरे यहाँ पंजाबिन ने हमें भगा दिया ।"** बिलकुल दूसरी ही शक्ल के और दुबले–पतले साधु से बाबा का कोई मेल न देख कर आपको बाबा की बात पर आश्चर्य हुआ पर अविश्वास नहीं । आपको ग्लानि हुई कि अज्ञानतावश आप उनका स्वागत न कर सकीं ।

(192) पाषाण देवी के पुजारी के रूप में

उस दिन एकादशी थी । श्रीमती गुरुप्रिया नैनीताल में अपने घर से मन्दिर दर्शनहेतु जा रही थीं । रास्ते में उन्हें पाषाण देवी के पुजारी जी दिखाई दिये । एकाएक आपके मन में विचार आया कि एकादशी का सीधा उन्हीं को दे दिया जाय । इस कारण आप उन्हें घर लिवा लायीं । पण्डित जी ने सीधा न लेकर बना भोजन पाने की इच्छा व्यक्त की । आपने उन्हें बैठने को आसन दिया और रसोई घर से एक थाल में भोजन लगा कर लायीं और उनसे प्रसाद पाने का आग्रह किया । खाते–खाते पण्डित जी की दृष्टि सामने टंगी महाराज की एक फोटो पर गयी और वे बोल उठे, "यह आपने किस पाखण्डी की फोटो टाँग रखी है ?" पण्डित जी की इस बात से गुरुप्रिया जी के दिल को बड़ी चोट पहुँची और वे मन ही मन उन से नाराज़ हो गयीं । उन्होंने निश्चय किया था कि भोजन के बाद आप पण्डित जी को दस रुपये दक्षिणा में देंगी, पर इस आघात के कारण आपने अपना विचार बदल दिया । अब आपने केवल एक रुपया देने का निश्चय किया । आपके बक्से में उस समय एक दस रूपये का नोट था और दूसरा था एक रुपये का । जब पण्डित जी भोजन कर चुके तो आपने उन्हें एक रूपये का नोट देकर विदा किया ।

इसके बाद आप लीला माई के घर गयीं, जहाँ बाबा ठहरे हुए थे । बाबा उस दिन सबेरे से ही अपने को कमरे में बन्द किये अकेले बैठे थे । उनके भोग की घर में तैयारी हो रही थी । भोग के समय गुरुप्रिया जी भी वहाँ उपस्थित हो गयीं । बाबा ने थोड़ा सा भोजन किया और सब छोड़ दिया । लीला माई के बहुत आग्रह करने पर भी वे नहीं माने और बोले, **"आज गुरुप्रिया ने हमें बहुत खिला दिया है और हम इससे दस रुपये भी ठग लाये हैं ।"** गुरु प्रिया जी बाबा की बात समझ नहीं पायीं । उन्होंने पण्डित जी को भोजन कराया था, बाबा को नहीं और उन्हें एक रुपया दक्षिणा दी थी, न कि दस रुपये । उन्होंने अनुमान लगाया कि बाबा की बात का तात्पर्य केवल ब्राह्मण को दी दक्षिणा से है । वे बोलीं, "दस रुपये नहीं महाराज, एक रुपया ।" बाबा ने तुरन्त अपने कम्बल से वही नया दस रुपये का नोट निकाल कर उन्हें दिखाया । गुरुप्रिया जी को विश्वास नहीं हुआ । लौटकर घर आने पर आपने अपना बक्सा खोल कर देखा । वहाँ केवल एक रुपये का नोट पड़ा था, दस का नहीं । बाबा को पाखण्डी कहने वाले पण्डित जी कौन थे ?

(193) 'ना जानूं किस वेश में नारायण मिल जायें'

यद्यपि महाराज भक्तों द्वारा दिए गये विवाह आदि के निमन्त्रणों को स्वीकार कर लिया करते थे, पर इन अवसरों पर वे अपने सामान्य रूप में सम्मिलित होते नहीं देखे गये । बाबा को निमन्त्रण देने का एक लाभ प्रत्यक्ष में यह हुआ करता था कि कार्य बिना किसी विघ्न–बाधा के सम्पन्न हो जाता था ।

एक बार एक भक्त महाशय ने बाबा से अपने लड़के के विवाह में सम्मिलित होने का बहुत आग्रह किया और उनसे आने का वादा भी करवा लिया । वे उस अवसर पर उनकी प्रतीक्षा करते रहे । उन्होंने सब लोगों से बाबा के आने की बात कह रखी थी और उनके स्वागत के लिये विशेष प्रबन्ध भी कर रखा था । विवाह की भीड़ में एक दुर्बल फटे–हाल भिखारी उस समारोह में भीतर ऐसे घुसते चला आया जैसे वह उसी का घर हो । यह देख भक्त महाशय को क्रोध आया और उन्होंने उसे फटकारते हुए हाथ पकड़ कर बाहर निकाल दिया । कार्य के समाप्त होने तक भी वे बाबा को न देख मन ही मन दुःखी हुए । विवाह के बाद जब वे बाबा के दर्शन करने गये तो उनकी शिकायत उन्हीं से करने लगे । बाबा मुस्कराते हुए बोले **"हम तो आये थे, तूने ही हमें हाथ पकड़ कर निकाल दिया ।"**

यह जानकर कि भिखारी के वेश में घर में घुस आने वाले बाबा ही थे उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ और अपनी करनी पर लज्जा आयी ।

यह बाबा के दरबार की बहुचर्चित घटना है, इसमें उनके भक्त महोदय के नाम और पते की जानकारी किसी को नहीं है ।

(194) एक अपरिचित के रूप में

एक बार देवकामता दीक्षित जी ने चित्रकूट में भण्डारा करने का अपने चाचा जी का विचार महाराज के आगे रखा । बाबा ने इस शुभ कार्य में अपनी सहमति देते हुए सपरिवार चित्रकूट जाकर इसे करने का आदेश दिया । इस शुभ अवसर पर उपस्थित होने के लिये आप ने बाबा से निवेदन भी किया । उन्होंने आप की बात मान ली और बोले, **"भण्डारे के अन्त में तीन सन्त प्रसाद पाने आयेंगे उन्हें अच्छी तरह भोजन करा देना ।"** इस कार्य की कोई तिथि उस समय निश्चित नहीं की गयी क्योंकि बाबा के आदेश की पूर्ति हेतु सारे परिवार की सुविधा का ध्यान रखना था । बच्चों के स्कूल की छुट्टियों को देखते हुए बाद में नवरात्रियों में ही इस कार्य को करने का विचार किया गया, पर बाबा का पता ज्ञात न होने से उन्हें सूचित कर पाना सम्भव न हो सका । फिर भी आप अपने भाई डा. दीक्षित जी को घर में इस उद्देश्य से छोड़ गये कि यदि नवरात्रियों में अन्तर्यामी बाबा का आगमन हो जाय तो वे उन्हें अपने साथ चित्रकूट ले आवें ।

जब से आप चित्रकूट आये तभी से एक अपरिचित साधु, जिसके दर्शन आपको प्रथम बार धर्मशाला के प्रबन्धक के पास हुए थे, आप लोगों की बड़ी सहायता कर रहा था । वह इस भण्डारे की तैयारी में आप का हाथ बंटा रहा था, आपको अच्छे अनुभवपूर्ण सुझाव देता और अनेक प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध करा रहा था ।

बाबा विजयादशमी के बाद एकादशी को कानपुर पहुँचे और डा. दीक्षित जी से पूछने लगे, **"भण्डारा हो गया ?"** जब वे उनके प्रश्न का कोई निश्चयात्मक उत्तर न दे सके तो स्वयं कहने लगे, **"अभी नहीं हुआ। कल होगा ।"** द्वादशी के दिन भण्डारा किया गया था । बाबा डा. दीक्षित के साथ वहाँ समय पर पहुँच गये और प्रसाद पाकर चले गये । चार बजे सायंकाल तक भण्डारा चलता रहा । हज़ारों सन्तों ने भण्डारे में प्रसाद पाया । पाँच बजे कथित तीन सन्तों का आगमन हुआ । उन्हें विशेष सत्कार से भोजन कराया गया । इनमें प्रत्येक ने कई सन्तों के बराबर प्रसाद पाया ।

जब भण्डारा समाप्त हो गया तो उस साधु की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए चाचा जी के मन में यह इच्छा हुई कि आगामी जाड़ों की ठण्ड से बचाने के लिये एक ऊनी स्वेटर उसे प्रदान किया जाय । देव कामता जी उसी समय एक गरम स्वेटर खरीद लाये, पर वह साधु ऐसा ग़ायब हुआ कि फिर दिखायी नहीं दिया । प्रबन्धक भी उसे जानता न था । उपकार कर चुपचाप चले जाने वाला यह साधु कौन था ?

(195) नियति के रूप में

9 नवम्बर 1962 की शाम थी, अँधेरा हो चला था । भूमियाधार, नैनीताल में ठण्ड बढ़ गयी थी । ब्रह्मचारी बाबा मन्दिर के बाहर सड़क के किनारे अंगीठी सेक रहे थे । महाराज अपनी कुटिया में भीतर अकेले ध्यान मग्न बैठें थे । उस समय एक दुबला–पतला आदमी- जिसके हाथ–पैर दोनों टेढ़े थे सिर में लम्बी जटाएँ थीं और चिथड़े पहने हुए था, चुपके से ब्रह्मचारी जी के बगल में आ बैठा । आप इस नवागन्तुक को गौर से देख ही रहे थे इतने में महाराज **"आ गये हो, आ गये हो"** चिल्लाते हुए भीतर से दौड़ते आये और उस अंगीठी के पास बैठ गये । ब्रह्मचारी जी उनकी सेवा में थे, इस कारण उठ कर पास में खड़े हो गये । बाबा आगन्तुक से बोले, **"कहाँ से आया और कहाँ जा रहा है ?"** उसने उत्तर दिया, "पीलीभीत से आया हूँ, मेरठ जा रहा हूँ ।" ब्रह्मचारी मन ही मन सोचने लगे पीलीभीत से मेरठ सीधे न जाकर यह भूमियाधार क्यों आया ? इतने में बाबा ने उससे पूछा , **"क्या काम ? "** उसने कहा, "लाल बहादुर शास्त्री को प्रधानमन्त्री बनाना है ।" यह सुन कर ब्रह्मचारी जी चौंक उठे और सोचने लगे कि जवाहरलाल के जीवित रहते शास्त्री को प्रधानमन्त्री बनाने का सवाल ही पैदा नहीं होता ! तदनन्तर बाबा ने एक–एक कर उससे अपने भक्तों के बारे में पूछना आरम्भ किया । पहला प्रश्न उन्होंने ब्रह्मचारी जी के बारे में ही किया जो पास में खड़े थे । वह बोला, "ब्रह्मचारी सन्यासियों का गुरु है ।" इसी प्रकार अनेक प्रश्नों के बाद बाबा ने तुलाराम साह जी के बारे में यह कहते हुए पूछा कि **वह रैमसे अस्पताल में बीमार है, उसका क्या होगा ?** वह खिन्न होकर कहने लगा, "तुम सब को बचाते रहते हो, यह ठीक नहीं है । वह आज से सातवें दिन अवश्य चल बसेगा ।" बाबा तुरन्त उठ कर अपनी कुटिया में चले गये और उसने अपनी राह पकड़ी और देखते–देखते अदृश्य हो गया । इस घटना के ठीक सातवें दिन 16 नवम्बर 1962 के दिन ही तुलाराम जी का

शरीर शान्त हुआ । शास्त्री जी के सम्बन्ध में अवधि बताई नहीं गयी थी, पर वह बात भी डेढ़ वर्ष बाद सत्य घटित हुई ।

ब्रह्मचारी जी कहते हैं कि उन्हें चकित करने के लिये किया गया बाबा का यह एक तमाशा था, अपने को ही नवागन्तुक के रूप में व्यक्त कर उन्होंने यह खेल दिखाया ।

(196) मार्ग-दर्शक के रूप में

श्री हरि किशन टण्डन, आइ.ए.एस. का लड़का सन् 1956 में पी.सी बनर्जी छात्रावास में रह कर प्रयाग विश्वविद्यालय की बी.एस.सी. की परीक्षा की तैयारी कर रहा था । श्री केहर सिंह तब आबकारी के कमिश्नर थे और ड्रूमण्ड रोड, इलाहाबाद में रहते थे । एक दिन बाबा आप के घर आए हुए थे और भोजन करने के बाद बातें कर रहे थे । इतने में आपके दूसरे कमरे में टेलिफोन की घंटी बजी । सिंह साहब ने फोन उठाया । यह टण्डन साहब के लड़के का फोन था, वह बोला, "अंकल, बाबा के दर्शन मुझे बहुत समय से नहीं हो पाये । क्या आप बता सकते हैं कि वे कहाँ मिल पायेंगे ?" आपने उससे तुरन्त अपने घर पर आने को कहा और ड्रूमण्ड रोड का पता भी दिया । लड़का ड्रूमण्ड रोड जानता नहीं था इसलिए आपने उसे समझाया कि वह हिन्दू होस्टल से सीधे ए. जी. आफिस को आ जाये और उसके बाद जो चौराहा आगे मिले उससे दाहिनी ओर एक फर्लांग चला आये । ऐसा कह कर सिंह साहब बाबा के पास चले आये । महाराज ने पूछा, **"किसका फोन था और क्या कह रहा था ?"** आपने सब बातें उन्हें बता दीं ।

लगभग बीस मिनट में आपके अहाते के भीतर एक रिक्शा के रुकने की आवाज़ सुनायी दी । आप बाहर गये । वह लड़का रिक्शा वाले को पैसे दे रहा था । आपने पूछा, "मकान खोजने में परेशानी तो नहीं हुई ?" वह बोला, "परेशानी काहे की, आपने एक आदमी जो ए.जी. आफिस के पास खड़ा कर रखा था । उसने मेरा रिक्शा रुकवा कर पूछा कि आपको केहर सिंह जी के घर जाना है ? मेरे हामी भरने पर वह आगे-आगे चलता हुआ मुझे यहाँ ले आया ।" आपने कहा, "मैंने किसी को भी खड़ा नहीं कर रखा था" और पूछा, "वह आदमी कहाँ है ?" लड़के ने कहा, "अब तक मेरे साथ था, अभी-अभी ग़ायब हो गया । मैं उसे धन्यवाद भी नहीं दे पाया ।"

यह आदमी कौन था ? सिंह साहब का विश्वास है कि महाराज अपने भक्त के लड़के को दर्शन देना चाहते थे । उन्होंने उसे प्रेरित किया और वे ही स्वयं उसका मार्ग दर्शन कर रहे थे । अपनी धारणा की पुष्टि में उन्होंने एक घटना और सुनायी जिसका वर्णन नीचे किया जा रहा है ।

(197) सेवक के रूप में

श्री प्रेमलाल लखनऊ में टीटागढ़ पेपर कम्पनी के मैनेजर थे और उनके इस कार्य में सहायक थे श्री एम. बी. लाल, जिन्हें बाबा रमेश नाम से सम्बोधित किया करते थे । एक बार बाबा कानपुर आये और छः दिन वहाँ रहे । बाबा के कानपुर आगमन की सूचना पाते ही एम.बी. लाल जी उनके दर्शनार्थ कानपुर चले गये और कुछ दिन उन्हीं के साथ रहे । आपकी लड़की डौली लोरेटो कौन्वेन्ट में दसवीं कक्षा में पढ़ती थी और इन्हीं दिनों उसकी परीक्षा की फीस भी जमा होनी थी । आप कानपुर में बाबा के साथ घूमते-फिरते रहे पर मन ही मन लड़की की फीस की चिन्ता उन्हें सताये हुए थी । फीस के जमा करने की तारीख भी निकल चुकी थी और वे सोच भी नहीं पा रहे थे कि अब उसकी परीक्षा का क्या होगा ? इधर बाबा उनके मन का बराबर एक्स-रे कर रहे थे । जब बाबा कानपुर से चले गये तो लाल साहब लखनऊ अपने घर आये और तुरन्त लड़की के स्कूल में उसकी फीस जमा करने चले गये । वहाँ की प्रधानाचार्या से आपका पूर्व परिचय था । उन्होंने आपके आगमन का कारण पूछा । विलम्ब के लिये क्षमा माँगते हुए आपने बताया कि डौली की फीस लाया हूँ । उन्होंने बताया कि लड़की की फीस तो चार दिन पहले ही समय पर जमा हो चुकी है । एक मोटा और बूढ़ा आदमी फीस जमा कर गया था । उससे रसीद ले जाने को कहा था पर वह रुका नहीं और बोला, **"हमको इसकी ज़रूरत नहीं है ।"** यह सुनकर और बाबा की याद कर लाल साहब की आँखें सजल हो गयीं ।

(198) हनुमान के रूप में

एक बार कैंची आश्रम परिसर में बाबा का दरबार लगा था । उपस्थित भक्तों में उमू ग्राम के श्री शिव गोपाल तिवारी भी थे । आप उन्नाव के जमींदार और उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य भी थे । बाबा ने तिवारी जी से रामायण सुनाने को कहा । तिवारी जी ने पूछा, "कहाँ से पाठ

आरम्भ किया जाय ?" बाबा भाव में थे कह बैठे, "**कहाँ से सुनाओ जहाँ से हमने विभीषण से कही थी ।**" इस प्रकार बाबा अपना परिचय दे बैठे । तिवारी जी ने जैसे ही 'सुनहु विभीषण प्रभु की रीती, करें सदा सेवक पर प्रीती' से पाठ आरम्भ किया बाबा भावावेष में आने लगे । वे अपनी असलियत लोगों से छिपाना चाहते थे, इसलिए श्री सुधीर मुकर्जी, प्राध्यापक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, का हाथ अपने हाथ में ले वहाँ से उठ कर चल दिये । उनके एक ही हाथ का भार इतना बढ़ गया कि मुकर्जी दादा उसे सहन नहीं कर पाये और उन्हें भय होने लगा कि वे स्वयं गिर पड़ेंगे और साथ में बाबा को भी गिरा बैठेंगे । इस लाचारी में वे किसी तरह अपने को साधे रहे । शिव मन्दिर के द्वार पर पहुँचने पर बाबा अपने दोनों हाथों को आगे भूमि पर टेकते हुए घुटनों और पैर के पंजों के बल बैठ गये, पर मुकर्जी दादा का हाथ उन्होंने छोड़ा नहीं । उनके हाथ में रक्त का संचार होना भी कठिन हो गया । धीरे–धीरे बाबा की आकृति बदलने लगी । उनका मुँह लाल होने लगा और सम्पूर्ण देह में भूरे–भूरे बाल खड़े होने लगे । मुकर्जी दादा अत्यधिक भयभीत हो चले और बड़े प्रयत्न से आप अपना हाथ छुड़ा कर जंगल की ओर भाग गये । वे कुछ घन्टे वहाँ अचेत पड़े रहे । बाबा श्री हनुमान के रूप में आ चुके थे, वे भी कैंची से भाग गये । कैंची में सर्वत्र उनकी खोज होती रही, पर कहीं भी उनका पता नहीं चला । जब मुकर्जी दादा लौट कर आश्रम आये तो लोगों ने उनसे कुछ प्रश्न किये, पर उनके पास उनका कोई उत्तर न था । इसके कुछ समय पूर्व ही आश्रम के बाहर मोटर सड़क की दीवार पर सब को बाबा के दर्शन होने लगे । लोग बाबा को आश्रम में ले आये ।

(199) बाल गोपाल के रूप में

कैंची आश्रम के प्रवेश द्वार पर पुलिस विभाग का एक मुसलमान सिपाही पहरा दिया करता था । इसको लोग हाजी कहा करते थे । यह आश्रम में ही रहता और वहीं प्रसाद पाता था । गुरु पूर्णिमा का अवसर था, बाबा वृन्दावन गये हुए थे । उप–राष्ट्रपति स्व. गोपाल स्वरूप पाठक नैनीताल आये हुए थे और बाबा के दर्शनार्थ कैंची आना चाहते थे । बाबा की अनुपस्थिति में उन्होंने मन्दिरों के ही दर्शनों का विचार किया था । निश्चित तिथि के प्रातःकाल मैं (लेखक) उनके स्वागतार्थ प्रवेश द्वार पर उनकी प्रतीक्षा कर रहा था और वहीं हाजी भी अपनी ड्यूटी में तैनात था । कुछ समय तक हम दोनों मौन खड़े रहे । एकाएक वह मुझ से बोला, "पण्डित जी !

देवता इन मन्दिरों में नहीं, बाबा में हैं और हम तो उनके ही गुलाम हैं ।" मैं मन ही मन बाबा पर उसकी इस प्रगाढ़ आस्था की सराहना करता रहा और चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा । वह बोला पिछले साल गुरु पूर्णिमा में जब हमने बाबा को देखा तो हम हैरत में पड़ गये । इतने बड़े डील-डौल वाले बाबा हमें बाल गोपाल दिखायी दिये । हमने कई बार अपनी आँखों को मल-मल कर देखा, पर हर बार वही छोटे बालक का रूप सामने था। मेरी बगल में खड़े एक साहब उन्हें एकटक दृष्टि से देख रहे थे । मैंने उन्हें हिलाया और पूछा, "आप क्या देख रहे हैं ?" उन्होंने बिना मेरी ओर देखे एक छोटा सा जवाब दिया, "जो तुमको दिखायी दे रहा है, वही ।" मैंने फिर पूछा, "बाल गोपाल ?" उन्होंने अपना सिर हिला कर कबूल किया। एक वर्ष पुरानी बाल गोपाल की यह सुखद स्मृति मुसलमान होते हुए भी हाजी के मन को तब भी प्रफुल्लित किये हुए थी । जिस जोश से वह इस अनुभव को सुना रहा था, वह देखते ही बना ।

(200) श्री राम रूप में

श्री देवीदत्त जोशी, प्रधानाचार्य, राजकीय नार्मल स्कूल भीमताल नैनीताल, बाबा के दर्शनार्थ हनुमान गढ़ जाया करते थे । एक दिन प्रातः काल जब आप हनुमान गढ़ में सीढ़ियों से ऊपर जा रहे थे उसी समय बाबा उन सीढ़ियों से नीचे आ रहे थे । आपकी दृष्टि ज्योंही बाबा पर पड़ी आप चकरा गये । आपको बाबा नहीं, साक्षात् धनुर्धारी राम दिखायी दिये । कुछ ही क्षणों में यह दृश्य बदल गया और आपको मुस्कराते हुए बाबा के दर्शन हुए । इस घटना से आप अत्यधिक प्रभावित हो उठे और चिल्ला-चिल्ला कर बाबा से कहने लगे, "मुझे अब असलियत का पता हो गया । आप वास्तव में राम हैं । अब मैं यह रहस्य सब को बताउंगा ।" बाबा अपनी अंगुली होठों पर लगा कर आपको चुप रहने का संकेत करते रहे, पर आप माने नहीं और चिल्लाते रहे । इस घटना के बाद से आपकी सांसारिक जकड़न छूट गयी । आप में ऐसी विरक्ति और मस्ती छा गयी कि लोक दृष्टि में आप विक्षिप्त समझे गये और इस कारण आपको मानसिक रोगों के अस्पताल में भी भेजा गया । आप अच्छे संगीतज्ञ थे, बाबा को सुन्दर भजन सुनाते रहते थे । ऐसी मानसिक स्थिति में भी राग और ताल की बन्दिश का पूर्ण निर्वाह करते हुए आप स्वतन्त्रता से गाया करते थे । इस अलौकिक दर्शन से आपकी आन्तरिक स्थिति अन्त तक आनन्द पूर्ण रही ।

(201) राम दरबार की झांकी

एक बार हनुमान गढ़ नैनीताल में रामचरित मानस का पाठ हो रहा था । महाराज वहाँ विराजमान थे और भाव मग्न हो रहे थे । अनेक महिलाएँ वहाँ उपस्थित थीं और उस पावन वातावरण में सभी आँखें बन्द किये रामायण के सरस पाठ को तन्मय होकर सुन रही थीं । एक पंच वर्षीय कन्या बाबा के सामने बैठी उनको एकटक देख रही थी । उत्तर काण्ड का प्रकरण चल रहा था । उस लड़की को राम राज्याभिषेक की सारी छवि जो पाठ में सुनायी जा रही थी, बाबा के वक्षस्थल पर सिनेमा की भाँति दिखायी दे रही थी । वह दत्तचित्त हो इस दृश्य को देखती रही । जब पाठ में आया "प्रथम तिलक वशिष्ट मुनि कीन्हा, पुनि सब विप्रन आयसु दीन्हा"। उस अलौकिक दृश्य में वशिष्ट मुनि के आगमन से और विप्रों के आशीर्वाद देने के लिये एक साथ उठ खड़े होने से जो रामजी की छवि में विक्षेप पड़ा उसे वह सहन नहीं कर पायी और जोर से चीख उठी। एकाएक सब लोगों का ध्यान भग्न हो गया । बाबा ने तुरन्त उस लड़की को उठा लिया और अपनी गोद में बिठाकर उसे चुप कराने लगे । बाद में जब महिलाएँ अपने घरों को लौटीं तो उन्होंने उस लड़की से उसके चीखने का कारण पूछा । वह लड़की मानस के पाठ को तो समझती थी नहीं, परन्तु उसने जो कुछ बाबा के वक्षस्थल में उस समय देखा था उसका पूर्ण वर्णन कह सुनाया । उसने बताया कि एक बूढ़े जटाधारी और दाढ़ी वाले बाबा और अनेक लोगों के बीच में आजाने से उसे राम जी की प्यारी छवि नहीं दिखायी दी, इस कारण वह रोने लगी ।

(202) माँ के रूप में

कैंची आश्रम में एक महीने के गायत्री महायज्ञ का समापन हो रहा था । मैंने (लेखक ने) कैंची निवासी श्री मनोहर पन्त को विष्णु कुटी के ऊपर के कमरे में महाराज के चरणों के पास घुटने टेके विह्वल हो माँ–माँ चिल्लाते देखा । मैं समझ नहीं पाया कि आप महाराज को माँ शब्द से क्यों सम्बोधित कर रहे हैं । पास में जाकर देखा तो पन्त जी की आँखों से अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी । बाबा उनके सामने कम्बल ओढ़े, अपनी कमर में हाथ रखे मूर्तिवत् खड़े थे और उनके नेत्रों से भी अश्रुपात हो रहा था । लगभग दस मिनट यह स्थिति बनी रही और इसके बाद पन्त जी श्री

चरणों में गिर गये और कुछ क्षणों के लिये अचेत हो गये । बाद में एक दिन मैंने उनसे इस विषय में बातें कीं । वे बोले कि बाबा की करुणामयी शक्ति ने उन्हें विह्वल कर दिया था ।

(203) कुत्तों के रूप में

इस घटना का वर्णन सम्वत् 2040 की स्मृति सुधा के पृष्ठ 83 में हुआ है । एक बार जब नैनीताल में हनुमानगढ़ का निर्माण हो रहा था, बिजनौर सुगर मिल के मालिक सेठ कुन्दन लाल जी, मथुरा के त्रिलोकी नाथ ब्रजबाल जी के साथ बाबा के दर्शन को आये । बाबा ध्यान मग्न थे और उनके चारों ओर भक्त कीर्तन कर रहे थे । जब बाबा नवागन्तुकों से वार्ता करने लगे तो सेठ जी ने उनसे घर में आकर प्रसाद पाने को कहा । बाबा ने उनकी बात मान ली । सेठ जी ने पूछा, "क्या खाओगे ?" बाबा ने मिस्सी रोटी और दाल बतायी । सेठ जी को बाबा की इच्छा पसन्द नहीं आयी वे बोले, "मालपुए और खीर बनवाउँगा, कल ज़रूर आना ।" बाबा बोले, **"ठीक है, मालपुए और खीर ही बना, कुत्तों का पेट भरेगा। अब जा, बहुत देर हो गयी।"**

दूसरे दिन सेठ जी ने बहुत मात्रा में मालपुए और खीर बनवायी और इस अवसर में अनेक लोगों को निमन्त्रित किया । उस दिन मूसलाधार पानी बरसता चला गया । जो कार उन्होंने बाबा को लिवा लाने के लिये भेजी थी, वह रास्ते में ही खराब हो गयी और जो व्यक्ति उन्हें लेने हनुमानगढ़ पहुँचा उसे वे वहाँ दिखायी नहीं दिये । यहाँ घर पर सब लोग प्रतीक्षा में बाहर बैठे रह गये । इतने में न मालूम कैसे रसोई घर में दो कुत्ते घुस आये, किसी ने उन्हें आते नही देखा । वे मालपुए और खीर खाते रहे, घोर वर्षा के कारण किसी का ध्यान रसोई घर की ओर गया ही न था ।

(204) भक्त की रक्षा

नरसिंह नामक बस का चालक एक दिन बाबा के दर्शन करने शाम को नैनीताल से कैंची आया और उनके पास बैठा ही रह गया । रात के ग्यारह बज चुके थे जब बाबा ने उसे जाने की आज्ञा दी । प्रवेश द्वार से बाहर आने पर उसने 19 कि.मी. दूर नैनीताल मोटर सड़क से जाना पसन्द नहीं किया । वह 8 कि.मी. जंगल के रास्ते से जाने के लिये उद्यत् हो गया, पर उस रात्रि में अकेले जंगल से होकर जाने में उसके मन में भय हो

गया । वह जल्दी–जल्दी लम्बे–लम्बे डग रखते चल ही दिया । कुछ दूर चलने पर उसे पीछे से एक काला कुत्ता आता दिखायी दिया । उसे भय होने लगा कि कहीं वह पीछे से आकर उसे काट न ले । वह आगे–आगे चलता जा रहा था और बारबार पीछे भी देख रहा था । वह अपने समस्त काल्पनिक भयों को भूल गया और उसका ध्यान केवल कुत्ते में ही लगा रहा । वह कुत्ता बराबर उससे कुछ फासला बनाये पीछे–पीछे आता रहा । नैनीताल पहुँचने पर उसने उस कुत्ते को गौर से देखना चाहा पर वह अदृश्य हो गया । दूसरे दिन जब वह बाबा के दर्शन करने कैंची आया तो उसे देखते ही वे स्वतः कहने लगे, **"वह कुत्ता था, तू बेकार डर रहा था। कुत्ता तो भैरव का वाहन होता है, वह तेरी रक्षा के लिये आया था ।"** वह कुत्ता कौन हो सकता है, जिसका बखान बाबा स्वतः कर रहे हैं ?

इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या 69 का अवलोकन करें । उस घटना में भी काले कुत्ते के रूप में प्रकट होकर बाबा ने माइयों की रक्षा की ।

(205) दो बैलों के रूप में

हनुमान गढ़, नैनीताल में निर्माण कार्य आरम्भ करने के पूर्व बाबा ने वहाँ लघु हनुमान विग्रह की स्थापना का आदेश दिया था । एक दिन रात्रि में कीर्तन, भजन और पाठ के साथ हनुमान जी की एक छोटी मूर्ति मनोरा के कच्चे पर्वत पर जमायी जा रही थी, पर स्थापना के सभी प्रयत्न उस बजरीली भूमि में विफल होते जा रहे थे । लोग उस कच्चे निर्जन पर्वत को खोदते जा रहे थे पर कहीं भी वे उस मूर्ति को स्थापित नहीं कर पाये । श्री पूरन चन्द्र जोशी जो वहाँ उस समय उपस्थित थे कहते हैं कि भूत का भय उस समय सभी पर छाया था और एक व्यक्ति इस कारण बेहोश भी हो गया था । एकाएक उस अँधेरी रात में लालटेन के मन्द प्रकाश में दो बैल दिखायी दिये जिनमें एक का वर्ण श्वेत था और दूसरे का कृष्ण । दोनों बैलों ने आकर हनुमान विग्रह के आगे अपनी सींगें झुकायीं । उपस्थित सभी लोग रात्रि के उस वातावरण में भयभीत हो गये । बाबा उस समय वहाँ नहीं थे । थोड़ी देर में वे दोनों बैल अंतर्धान हो गये । इसके बाद स्थापना का कार्य सरलता से पूर्ण हो गया । दूसरे दिन जब बाबा वहाँ पहुँचे तो भक्तों ने गत रात्रि का अनुभव उन्हें सुनाया । बाबा सहज भाव से बोले, **"तुम्हें उनकी आरती करनी चाहिये थी । वे सिद्ध थे और**

दर्शनार्थ आये थे ।" भक्तों की धारणा यही रही कि बाबा ने बैलों के रूप में दर्शन देकर उस दुष्कर कार्य को सरल बना दिया ।

बाबा ने अपनी सृजनात्मक शक्ति से ऐसी ही लीला काकड़ी घाट में भी दर्शायी । जब वहाँ हनुमान जी की मूर्ति ले जायी जा रही थी, अनेक बन्दरों ने उनका स्वागत किया । इस घटना का उल्लेख निर्माण कार्य के प्रकरण में 'काकड़ी घाट हनुमान मन्दिर' के प्रसंग में किया गया है ।

(206) वेश परिवर्तन

एक बार महाराज अपने पुराने भक्त हल्द्वानी, जिला नैनीताल निवासी जीवन चन्द्र जी को अपने गाँव अकबरपुर ले गये । आप कहते हैं कि जब हम दोनों उस गाँव में प्रवेश करने लगे तो मैंने देखा कि चलते-चलते बाबा की वेशभूषा ही बदल गयी । वे धोती, कुर्ता, कोट, साफा और जूतों में दिखायी देने लगे । यह दृश्य देख कर मैं अवाक् रह गया । वे वहाँ लोगों से मिल कर जब गाँव के बाहर आये तो उनकी वेशभूषा पूर्ववत् धोती-कम्बल वाली हो गयी । बाबा खुल कर चमत्कार का प्रदर्शन करते नहीं थे, इसलिए मैंने इसे अपने ऊपर उनकी विशेष कृपा का प्रमाण समझा और उनकी रुचि को ध्यान में रखते हुए मैं लोगों से यह अनुभव छिपाये रहा ।

(207) रेल गाड़ियों की गतिविधि पर नियन्त्रण

रेल गाड़ियों की गतिविधि पर भी बाबा की इच्छा शक्ति कार्य करती थी । गाड़ी के छूटने का समय हो जाने के बाद जब वे स्टेशन पहुँचते तो उन्हें वह गाड़ी वहाँ खड़ी मिलती और वह तब तक चल नहीं पाती थी जब तक वे उस पर सवार न हो जाते । अँग्रेजी शासन काल में रेलगाड़ी को दो-तीन घन्टे रोक देने के कारण बाबा नीब करौरी के नाम से प्रख्यात हुए । इस घटना का उल्लेख 'चरितामृत' में जीवन परिचय के आरम्भ में हुआ है ।

बाबा सदैव प्रथम श्रेणी में ही सफर किया करते थे और यह भक्तों का अनुभव रहा कि जिस डिब्बे में आपने बैठना हो वह प्लेटफार्म में आपके सामने ही आ लगता था और उसमें निश्चित रूप से आपके लिये स्थान खाली भी रहता । अनुभवी कुली दूसरे स्थान में खड़े हो कर प्रतीक्षा करने का सुझाव देते, पर बाबा उनकी बात पर ध्यान नहीं देते थे ।

कभी आप जानते-बूझते विलम्ब कर देते और गाड़ी आने के निश्चित समय के बहुत देर बाद स्टेशन पहुँचते । इससे उनके साथ के लोगों को घबराहट होने लगती, पर स्टेशन आने पर ज्ञात होता कि गाड़ी अभी लेट है । इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या 100 का अवलोकन करें ।

(208) भक्त के लिये गाड़ी रोक दी

एक बार मेरे (लेखक के) छोटे चाचा जी अपने बड़े भाई के साथ काठगोदाम से लखनऊ जाने वाली रात की गाड़ी से यात्रा कर रहे थे । उनके अगले डिब्बे में बाबा विराजमान थे । भोजीपुरा जंक्शन स्टेशन में वे बाबा के पास गये और उनसे बातें करने लगे । गाड़ी छूटने का समय हो चुका था । इंजन कई सीटियाँ दे चुका था और गार्ड भी हरी रोशनी दिखाता जा रहा था, पर गाड़ी आगे नहीं बढ़ रही थी । उन्होंने ये सब बातें बाबा को बतायीं और गाड़ी के न चलने का कारण पूछा । बाबा बोले, **"हमने अपने एक भक्त से यहाँ पर मिलने को कहा है, वह भागा चला आ रहा है ।"** लगभग पाँच मिनट बाद एक व्यक्ति उनको खोजता हुआ उनके सम्मुख उपस्थित हो गया । उसने बाबा का चरण स्पर्श किया और उन्होंने धीरे से उससे कुछ कहा और तत्काल आशीर्वाद दे विदा किया । गाड़ी चल पड़ी ।

(209) कार और जीप की गतिविधि पर नियन्त्रण

मोटर कार और जीप में महाराज सदा आगे चालक की बगल में बैठा करते थे, वे साधारणतः कभी पीछे की सीट पर नहीं बैठे । उनका आगे बैठना मायने रखता था । देखने में यही आता कि गाड़ी चालक ही चला रहा है, पर उसके संचालन में बाबा की शक्ति कार्य करती थी जो गाड़ी को दुर्घटनाओं से बचाती, मशीन को सक्रिय रखती और अवसर पड़ने पर पैट्रोल की कमी की पूर्ति भी कर देती थी । श्री हबीबुल्ला खाँ, जो आजकल अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, खाद्य और कृषि विभाग, दिल्ली में कार्य करते हैं, बहुत समय तक बाबा की कार और जीप के चालक रहे । आप बताते हैं कि बाबा सदा गाड़ी को तेज़ रफ्तार में ले जाना पसन्द करते थे । आपकी गाड़ी 90/100 कि.मी. प्रति घंटा या इससे भी अधिक रफ्तार में ले जानी पड़ती थी । आपने हिन्दुस्तान में सर्वत्र बाबा को गाड़ी में घुमाया, पर कभी न गाड़ी में कोई खराबी आयी और न कभी पैट्रोल की दिक्कत ही हुई । लम्बी-लम्बी यात्राओं में कभी उनकी गाड़ी में एक पंचर भी नहीं हुआ ।

जीप और कारों में भी बाबा की अनेक अद्भुत लीलाएँ देखने में आयीं । इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या 159, 164, 180 और 188 का अवलोकन करें ।

(210) विषम परिस्थिति का अनायास उपचार

बरेली के स्व. हृदय नारायण गोयल बाबा के अनन्य भक्त थे, उनके पुत्र श्री योगेन्द्र प्रकाश गोयल, 165 सिविल लाइन्स, स्टेशन रोड बरेली एक बार सन 1977 में सपत्नीक कैंची दर्शनार्थ आये । आप कहते हैं कि महाराज के कैंची रहते मुझे एक बार कार्यवश हल्द्वानी आना पड़ा । काम हो जाने पर मैं बरेली जाने को उद्यत् था, एकाएक मेरे मन में कैंची जाकर बाबा के दर्शन करने की इच्छा जाग उठी । घड़ी देखी, शाम के साढ़े चार बज चुके थे । मैंने सोचा अभी दर्शन कर लौटा जा सकता है । मैंने अपनी कार में पैट्रोल की स्थिति देखी । पैट्रोल इतना था कि दर्शन कर हल्द्वानी लौटा जा सकता था । मैंने पैट्रोल भरवाने में समय व्यर्थ करना उचित नहीं समझा और सीधा कैंची चला आया । दर्शन कर मैंने जाने की अनुमति माँगी पर बाबा ने और बैठने को कहा ।

रात के ग्यारह बज चुके थे । प्रसाद मैं आश्रम में पा चुका था । मैंने बरेली वापस जाने का विचार दूसरे दिन प्रातःकाल के लिये स्थगित कर दिया । एकाएक बाबा बोले, "चलो उठो, चलते हैं ।" हम दोनों आश्रम के बाहर आये । वे मेरी कार में बैठ गये और गाड़ी चलाने को कहने लगे । हमारे काठगोदाम पहुँचने तक वहाँ पैट्रोल पम्प बन्द हो चुका था, इस कारण मैं मन ही मन बहुत घबरा उठा । कोई और उपाय था नहीं, मैं बाबा के आदेशानुसार जिधर वे कहते गाड़ी चलाता रहा । गाड़ी बिना पैट्रोल के दौड़ती रही और जब उस रात वह बहुत दूर बुलन्दशहर के ग्रामीण भाग से होकर जा रही थी, बाबा ने एक निर्जन स्थान पर उसे रुकवाया और वे उतर गये । उस अँधेरे में न मालूम वे कहाँ पैदल जा रहे थे, मुझसे उन्होंने बरेली लौट जाने को कहा । मैं बहुत चिन्तित हो गया । अब तक गाड़ी उनकी शक्ति से चल रही थी आगे बिना पैट्रोल के मेरा बरेली पहुँचना सम्भव न था । मैं करता क्या ? बाबा चले गये थे । मैंने गाड़ी लौटायी और बरेली की ओर चल दिया । गाड़ी बराबर चलती रही और बहुत रास्ता तय करने पर एक पैट्रोल पम्प के पास स्वतः रुक गयी । उम्मीद न होने पर भी मुझे वहाँ पैट्रोल प्राप्त हो गया और मैं बिना किसी परेशानी के उनकी कृपा से बरेली पहुँच गया ।

(211) दुर्घटनाओं से कार की सुरक्षा

अपने एक और अनुभव के बारे में गोयल जी कहने लगे कि एक दिन मैं अपने कार्य में अत्यधिक व्यस्त रहा और बुरी तरह थक गया। रात्रि के आठ बजे घर पहुँचने पर मैं जूता खोल कर सीधा बिस्तर में जा लेटा। भोजन करने की भी मुझ में इच्छा नहीं थी। इतने में नौकर ने आकर सूचित किया कि घर में बाबा जी पधारे हैं। मैं बिस्तर छोड़ कर उनके स्वागत और सेवा में लग गया। रात्रि के दस बजे मैंने बाबा को भोजन करवा कर तख़्त पर सुला दिया और स्वयं उनके पास ही भूमि पर सो गया। लगभग आधा घन्टा बीता होगा, गहरी निद्रा का एक झोंका मुझे आया ही था, उन्होंने मुझे जगा दिया और गैराज से गाड़ी निकाल लाने को कहा। उस समय मस्तिष्क के साथ शरीर भी इतना शिथिल हो गया था कि मेरे नियन्त्रण में नहीं था। मैंने उस तन्द्रा में उनसे पूछा, "कहाँ चलना है ?" उन्होंने कैंची जाने की इच्छा व्यक्त की। इस पर मैंने प्रातःकाल चलने का सुझाव दिया, पर वे माने नहीं। मैं बड़ी कठिनाई से गाड़ी गैराज से बाहर निकाल पाया। मुझे अपने ऊपर बिलकुल भी भरोसा नहीं था और भीषण दुर्घटना होने की सम्भावना दिखायी दे रही थी। मैं नगे पैर ही गाड़ी चलाने लगा क्योंकि मैं उनके साथ जूता पहन कर नहीं बैठता था। रास्ते में जितने वेग से नींद के झोंके मुझे आते रहे, मैं उतनी ही अधिक सतर्कता से पल–पल में होने वाली दुर्घटनाओं से गाड़ी को बचाता रहा। इस प्रकार गाड़ी हलद्वानी पार हो गयी और पहाड़ की यात्रा आरम्भ हुई। मेरा साहस भी अब समाप्त हो चला। प्रतिक्षण आने वाले मोड़ों में उस रात अनेक बार दुर्घटना होने से बची। भूमियाधार पहुँचने पर मेरी इच्छा हुई कि बाबा से निवेदन करुं कि कुछ घन्टे वहाँ उनके आश्रम में विश्राम कर लें, पर प्रयत्न करने पर भी मेरे मुँह से एक शब्द नहीं निकल पाया। भूमियाधार के बाद निद्रा और थकान नें मुझे परवश कर दिया और चलती गाड़ी के स्टियरिंग में मेरा सिर विश्राम करने लगा और मैं घोर निद्रा में निमग्न हो गया। भूमियाधार से कैंची लगभग 12 कि.मी से अधिक है और मार्ग में अनेक मोड़ और पुल हैं। भवाली कब पार हुआ मुझे पता नहीं हुआ। कैंची आश्रम के प्रवेश द्वार पर बाबा ने मुझे झकझोरते हुए जगाया और बोले, **"सो रहे हो !"** मेरी नींद खुली, मैंने स्टियरिंग से अपना सिर उठाया और एकाएक भयभीत हो ब्रेक का प्रयोग किया। आश्रम का प्रवेश द्वार देख कर मैं चकरा गया। वास्तव में गाड़ी बराबर बाबा ही चला रहे थे, यह कार्य मेरे लिये किसी प्रकार भी सम्भव न था।

(212) पानी की सतह पर जीप का चलना

कानपुर के श्री देव कामता दीक्षित की गाड़ी के चालक श्री रामानन्द की दोनों आँखों में मोतियाबिन्द था और वही अधिकतर बाबा की जीप चलाया करता था ।

एक बार महाराज को वृन्दावन से दिल्ली जाने की इच्छा हुई । कई दिनों से लगातार पानी बरस रहा था । रामानन्द कहता है कि मैं महाराज को जीप में लिये जा रहा था । मथुरा रोड में एक स्थान पर सड़क की ढाल पर इतना पानी भर गया था कि उसने नदी का रूप धारण कर रखा था । दिल्ली से आने वाली गाड़ियाँ उसी ओर वापस दिल्ली को लौट जा रही थीं । मैंने महाराज से वृन्दावन लौट चलने का अनुरोध किया, पर वे नहीं माने और बोले **"ले चल इस नदी में ।"** मैं घबरा गया और मैंने कहा इंजन और जीप में पानी भर जायेगा और हम लोग बीच में ही फंस जायेंगे । बाबा ने कहा, **"तू आँख बन्द कर और चला ।"** मुझे उनकी आज्ञा का पालन करना ही पड़ा । गाड़ी पार हो गयी, वह पानी की सतह पर चलती गयी । मैं यह सब देख चकित रह गया ।+

(213) पर्वत की नष्ट हुई सड़क पर कार का आना जाना

एक बार सायंकाल श्री प्रकाश किशन, कमिश्नर, नैनीताल, कैंची में बाबा के दर्शन कर जब वापस जाने लगे, बाबा ने दूसरे दिन नैनीताल जाने के लिये उनसे गाड़ी भेजने को कहा । दूसरे दिन सबेरे आठ बजे उन्होंने अपने चालक द्वारा कार भेज दी । जब वे दस बजे अपने कार्यालय में पहुँचे, उन्हें सूचना मिली कि पिछली रात भीषण वर्षा से नैनीताल–भवाली मार्ग टूट गया और उस पर गाड़ियों का आना–जाना बन्द कर दिया गया है । अपनी गाड़ी को वापस आया न देखकर वे उसके लिये चिन्तित हो गये और अपनी कार की खोज में उस क्षतिग्रस्त सड़क को देखने गये । सड़क काफ़ी दूर तक इस तरह टूटी थी कि गाड़ी के बाईं ओर के दो पहिये जा सकते थे पर दाहिनी ओर के पहियों के लिये ज़मीन नहीं थी । आपको अपनी गाड़ी खड्ड में भी गिरी नहीं दिखायी दी । आप अपने कार्यालय लौट आये

+ इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या (188) का अवलोकन करें ।

और दिन भर अपनी गाड़ी के लिये बेचैन रहे । इनका चालक, बाबा की महिमा से, उसी रास्ते गाड़ी कैंची ले गया और बाबा को लेकर उसी रास्ते नैनीताल आया । बाबा यहाँ कुछ लोगों के घरों में गये और फिर उसी रास्ते कैंची वापस चले गये । शाम के चार बजे उन्होंने चालक से गाड़ी वापस ले जाने को कहा । वह फिर उसी रास्ते घर पहुँचा । उसको देखकर कमिश्नर साहब ने पूछा, "तुम किस रास्ते गाड़ी ले गये, भवाली–नैनीताल की सड़क तो पिछली रात से ही टूटी पड़ी है ?" चालक को उनकी बात सुन कर आश्चर्य हुआ । उसने निवेदन किया कि दिन में चार बार वह उस सड़क से आया और गया, पर उसे कहीं भी वह सड़क टूटी नहीं दिखायी दी ।

(214) सरकार की पराजय

श्री होतृदत्त शर्मा, अलीगढ़ ने हाईकोर्ट इलाहाबाद में अपने विद्यालय के सम्बन्ध में रिट दायर कर दी थी । वे बहुत अशान्त और दुःखी थे और अपने मन की तपन की शान्ति हेतु सितम्बर 1968 में बाबा के पास कैंची आश्रम में आये हुए थे ।

आप बताते हैं कि शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश के उच्च अधिकारी गण कुछ स्वार्थी तत्वों के बहकावे में आकर विद्यालय के विपरीत आदेश दे चुके थे । विद्यालय की परिस्थिति इससे छिन्न–भिन्न सी हो गयी थी और 8 जुलाई से यह केस उच्च न्यायालय में चल रहा था । मुझे अपनी लघुता के कारण यह स्थिति गम्भीर और असह्य हो रही थी । मेरा धैर्य और विवेक नष्टप्राय हो गया था । बाबा के सान्निध्य में रहते हुए भी मैं अपना दुःख उनसे व्यक्त नहीं कर पा रहा था । भक्त वत्सल बाबा ने एक दिन सूर्यास्त के बाद अकेले में मुझे सुअवसर दिया और वे सहज वाणी में मुझ से पूछने लगे, "**कोई बात ?**" मैंने गद्‌गद् कण्ठ से निवेदन किया कि उत्तर प्रदेश शिक्षा विभाग के विरुद्ध हाईकोर्ट इलाहाबाद में रिट याचिका दायर की है। इतनी शक्तिशाली सरकार के विरोध में गरीब विद्यालय की रिट खारिज होनी है । अब आपका ही सहारा है और आप जानें ।

मेरी सच्ची पुकार सुनकर वे कुछ क्षण मौन रहे फिर बोले, "**सरकार की पराजय होगी और विद्यालय विजयी होगा ।**" मुझे उस मानसिक स्थिति में विश्वास नहीं हो पाया । मैंने पुनः निवेदन किया कि आप मेरे मन को रखने के लिये ही ऐसा तो नहीं कह रहे हैं । मेरी इस बात पर बाबा गम्भीर हो गये और कड़ी और दृढ़ वाणी में बोले, "**हमने कह दिया,**

लाखों में कह दिया ।" तुलसी की चौपाई 'मेटत कठिन कुअंक भाल के' को दोहराते हुए फिर आवेश में बोले, **"हम भाग्य को पलटने की सामर्थ्य रखते हैं । संसार में किसी की शक्ति नहीं जो इसके विपरीत कुछ कर सके । तख़्तनशीनों को हम मिट्टी में मिलाते हैं और मिट्टी में पड़े हुए को तख़्त पर बिठाने की सामर्थ्य रखते हैं ।"**

बाबा के इन आशीष वचनों को सुन कर मुझे शान्ति मिली और विश्वास हुआ कि अब अन्यथा नहीं हो सकता । 29 सितम्बर 1969 को इलाहाबाद हाईकोर्ट का निर्णय बाबा के वचनों के अनुसार अक्षरशः सत्य हुआ ।

(215) खुरजा नहीं बनारस

एक बार कानपुर में श्री भगवती सेवक बाजपेयी, महाराज और उनके साथ आये विद्याराम जी को स्टेशन पहुँचाने गये । बाबा ने उनसे खुरजा के लिये दो टिकट लाने को कहा । आप बाबा के लिये प्रथम श्रेणी का और विद्याराम जी के लिये द्वितीय श्रेणी का टिकट लेकर बाबा के पास आये । बाबा बोले, **"कहाँ का टिकट लाया ?"** बाजपेयी जी ने कहा, "खुरजा के" । बाबा बोले, **"हमने बनारस के लिये कही थी, तू खुरजा के ले आया । अच्छा, देदे इन्हें विद्याराम को ।"** इतने में राज्यपाल श्री विष्णु सहाय, जो दिल्ली की यात्रा पर थे और पिछले दिन अपने भाई श्री रघुनाथ सहाय के घर कानपुर में रुक गये थे, स्टेशन पहुँचे । बाबा को वहाँ देख वे बहुत हर्षित हुए और उनसे प्रेमपूर्ण आग्रह करने लगे कि वे उनके साथ उनकी सैलून में दिल्ली चलें । बाबा बोले, **"नहीं, हमें ज़रूरी काम से बनारस जाना है"** और विद्याराम जी से कहने लगे, **"दिखादे टिकट इसे ।"** विद्याराम जी और बाजपेयी जी खुरजा के टिकट दिखाने में घबरा उठे पर लाचार थे उन्हें बाबा की आज्ञा का पालन करना ही पड़ा । जब विद्याराम जी ने दोनों टिकट विष्णु सहाय जी के हाथ में रखे तो दोनों टिकट प्रथम श्रेणी के और बनारस से भी एक स्टेशन आगे मुगलसराय के हो गये ।

(216) आप फंसाते और आप ही बचाते

पिठौरागढ़ निवासी, ट्रक का चालक ललित मोहन प्रथम दर्शन में ही

महाराज से इतना प्रभावित हुआ कि हमेशा के लिये उनका सेवक बन गया था । वह बाबा के भूमियाधार आश्रम में रहने लगा और वहाँ से नित्य उनकी सेवा में कैंची आया करता था । एक दिन भवाली का दरोगा महाराज के दर्शन करने आया । बाबा उससे बोले, **"तू दरोगा बेकार है । तेरे थाने के चार कि.मी. दूर हमारे भूमियाधार आश्रम में एक आदमी बिना लाइसेन्स रिवाल्वर रखे है और तू उसे आज तक नहीं पकड़ सका ।"** वह बोला, "बाबा, अब आप से पता चला, मैं कल ही उसे पकड़ लूंगा ।" दूसरे दिन सबेरे ललित मोहन ने एक मिठाई के डिब्बे में अपनी रिवाल्वर रख उसे एक थैले में रखा और ऊपर से बहुत फूल और मालाएँ रखकर नित्य की भाँति कैंची जाने को उद्यत् हुआ । इतने में वह दरोगा कुछ सिपाहियों के साथ वहाँ आ गया । उसने ललित से पूछा, "कहाँ जा रहा है ?" उसने उत्तर दिया, "महाराज के दर्शन करने कैंची आश्रम ।" दरोगा ने एक झटके से उसके हाथ का थैला ले लिया और देखने लगा । उसे फूलों का ढेर और मिठाई का डिब्बा दिखायी दिया । उसने वह सब सामान ललित को वापस कर दिया और उसे जाने दिया । जब ललित बाबा के पास पहुँचा तो वे बोले, **"आज तुझे बचा दिया, अब यह रिवाल्वर तुरन्त जमा कर दे, नहीं तो कठिनाई में पड़ जायेगा ।"** उसने महाराज की आज्ञा पालन करते हुए अड़तीस बोर की विदेशी रिवाल्वर जमा कर दी ।

सन्तानहीन को सन्तति सुख

महाराज का करुणामय हृदय अपने पास आये व्यक्ति को दुःखी नहीं देख सकता था । निःसन्तान व्यक्तियों की नैराश्यपूर्ण स्थिति उन्हें सहन नहीं हो पाती थी । यह कहना अत्युक्ति नहीं हो सकती कि उनके दरबार में बच्चे बँटते थे । लोग पुत्र प्राप्ति की कामना से उनके दर्शन को आते और बाबा उन्हें आश्वासन दे विदा करते । बाबा के आशीर्वाद से असम्भव कार्य भी सम्भव होते देखे गये । इस प्रकार वे पुत्रेष्णा को तृप्त कर सन्तोष प्रदान करते रहे ।

(217) बद्रीविशाल का जन्म और पुनर्जन्म

श्री बद्रीविशाल, प्रवक्ता, भौतिक विज्ञान, शिकोहाबाद के पिता जी के भाग्य में सन्तति सुख नहीं था, इस कारण वे दुःखी थे । एक दिन जब

उनको महाराज के दर्शन अपने बहनोई श्री राम रतन वर्मा, वकील, की कोठी में हुए तो उन्होंने अपनी व्यथा उनसे व्यक्त की । बाबा बोले , **"आज से ठीक एक वर्ष बाद तू अपनी पत्नी के साथ बद्रीनाथ के दर्शन को जाना ।"** बाबा के आशीर्वाद से पत्नी गर्भवती हुई और गर्भावस्था में ही उनकी आज्ञा–पालन हेतु दोनों बद्रीनाथ यात्रा में चले । बद्रीनाथ के दर्शन कर लौटते समय जोशी मठ में बद्रीविशाल का जन्म हुआ । जन्म के तीसरे दिन सर्दी लग जाने से रात्रि के प्रथम पहर में आपके प्राण पखेरू उड़ गये । आपकी माँ का दृढ़ विश्वास था कि बाबा इस बच्चे की अवश्य रक्षा करेंगे । माता–पिता अत्यन्त शोकातुर हो उन्हें याद करते ही रहे । इसी स्थिति में उन्हें निद्रा आ गयी और सुबह के समय उन्हें स्वप्न में बाबा के दर्शन हुए और वे बोले, **"चिन्ता मत कर श्री राम तेरी रक्षा करेंगे ।"** जागने पर जब बच्चे के निष्प्राण शरीर को श्वेत वस्त्र में लपेट कर गंगा में प्रवाहित करने आपके पिता जी चलने लगे तब उन्होंने कोठरी के दरवाज़े के बाहर एक लाल वस्त्र पहने जटाधारी बाबा को बैठा देखा । वह स्वतः बोला, **"मैं तेरा दुःख समझता हूँ । इस बच्चे को अन्दर ले जा, यह जीवित है ।"** उसने अपने कमण्डल से जब कुछ जल उस मृत शरीर पर छिड़का तो उसकी श्वास चलने लगी । आप बच्चे को भीतर ले आये और फिर जब उन्हें धन्यवाद देने बाहर गये तो वह बाबा दिखायी नहीं दिया । बच्चे को जीवन दान देने के लिये बाहर तत्पर बैठा यह बाबा कौन हो सकता था ?

(218) पाण्डे जी का जन्म

श्री जगदीश चन्द्र पाण्डे, बिड़ला विद्यालय, नैनीताल के जन्म से सम्बन्धित यह घटना 1932 की है । आपके पिता सन्तान के अभाव से दुःखी थे । कुछ संयोगवश वे अपने मित्र के घर फतेहगढ़ गये हुए थे । बातों के सिलसिले में वे अपना दुःख उनसे व्यक्त कर बैठे । आपके मित्र ने उन्हें बाबा नीब करौरी की महानता का परिचय देते हुए उनके दर्शन करने की सलाह दी और विश्वास दिलाया कि उनके आशीर्वाद से उनकी कामना पूरी हो सकती है । उन दिनों बाबा नीब करौरी ग्राम में रहते थे और हर पौर्णमासी को फतेहगढ़ गंगा स्नान के लिये आया करते थे । अगली पौर्णमासी को आप अपने मित्र के साथ गंगा गये और उनका संकेत पाकर गंगा में उतर कर वहाँ पहुँचे जहाँ बाबा खड़े थे । आपने पहले उनका चरणोदक पान किया और फिर उनके चरण पकड़ कर अपना दुःख कह सुनाया ।

बाबा ने तुरन्त आपको आश्वासन दे विदा किया जिसके फलस्वरूप सन 1934 में जगदीश जी का जन्म हुआ ।

(219) सेव से पुत्र की प्राप्ति

स्व. जगाती बाबू इलाहाबाद के प्रख्यात कैटरर रहे । युनिवर्सिटी रोड में आपकी चाय–पानी की दुकान अब भी है । आप महाराज के अनन्य भक्त रहे । एक दिन बाबा अपने कई भक्तों के साथ दो कारों में आपके निवास स्थान कर्नलगंज पहुँचे । आपने फल, मिष्ठान चाय, आदि से बाबा और उनके साथ आये भक्तों का सत्कार किया । बाबा ने अर्पित किए गये फलों में से एक सेव उठा कर जगाती बाबू को प्रसाद रूप में देते हुए कहा, **"यह अपनी घरवाली को खिला देना । तेरे सन्तान नहीं है, तुझे पुत्र प्राप्त हो जायेगा ।"** बाबा की मौज थी, बिना माँगे उन्होंने जगाती जी को उत्तम फल दे दिया । थोड़े समय बाद बाबा और भक्तगण चले गये । जगाती जी उस फल को हाथ में लिये सोचने लगे कि वे लगभग साठ वर्ष के हो चुके हैं और पत्नी भी लगभग 54 वर्ष की बूढ़ी हो चुकी हैं । अपने भाई के बच्चों को प्यार भरा अपनत्व देकर वे सदा अपनी सन्तति के अभाव को भुलाये रहे । अपने बुढ़ापे को देख वे साहस न कर सके कि वे अपने पुत्र का पालन–पोषण, शिक्षा–दीक्षा आदि कर सकेंगे । वे यह सब सोच ही रहे थे, इतने में उनके एक पड़ोसी मित्र आ गये जो लगभग सत्तर वर्ष के निःसन्तान थे और उनकी पत्नी को जो साठ वर्ष से ऊपर की थी सन्तान न हुए का दुःख था । जगाती जी ने उनसे उस सेव से सम्बन्धित सब बातें कह सुनायीं और अन्त में बोले, "यदि आप को पुत्र की इच्छा हो तो आप इस सेव को लेजाकर अपनी बुढ़िया को खिला सकते हैं ।" वे इसके लिये तैयार हो गये । जगाती जी ने वह फल उन्हें दे दिया ।

इस फल को खाकर वह बुढ़िया गर्भवती हो गयी और उचित समय में उसने एक पुत्र को जन्म दिया । वे बड़े लाड़–प्यार से बुढ़ापे की इस सन्तान का पालन–पोषण करते रहे, पर दो वर्ष बाद वह जाता रहा । पुत्र वियोग से वृद्ध दम्पति अत्यंत दुखी हो गये, इससे जगाती जी को भी दुःख हुआ । इन्हीं दिनों जगाती जी को प्रयाग में बाबा के दर्शन हुए । उन्होंने उस सेव की करामात सुना कर बाबा से पूछा कि वह बच्चा क्यों जाता रहा ? बाबा तुरन्त बोले, **"वह सेव हमने तेरी घरवाली के लिये दिया था, तूने उसे बासठ बरस की बुढ़िया को खिला दिया । वह लड़का जाता नहीं तो क्या रहता ?"**

(220) "रो मत, लड़का हो जायेगा"

कैंची निवासी श्री पूर्णानन्द तिवारी कहते हैं कि एक दिन महाराज मेरा हाथ पकड़े हुए आश्रम से बाहर आये । हम दोनों आश्रम की जीप में बैठे । बाबा ने रामानन्द नामक चालक से गाड़ी भूमियाधार ले जाने को कहा । भूमियाधार आश्रम की देख-भाल ब्रह्मचारी बाबा करते थे, पर वे उस समय वहाँ नहीं थे । आश्रम में ताला पड़ा था । बाबा ने मुझ से ताला तोड़ने को कहा । मैंने बाहर का ताला तोड़ दिया । बाबा बोले, **"अन्दर कमरों के सभी ताले तोड़ दे ।"** मुझे भीतर चाबियों का गुच्छा मिल गया, मैंने उससे सभी ताले खोल दिये । फिर उन्होंने मुझ से सड़क के किनारे बरामदे में आसन बिछाने को कहा और वहीं बैठ गये । थोड़ी देर बाद वे मुझ से बोले, **"भीतर सब सामान होगा, तिवारी चाय बनाओ ।"** मुझे उनकी बात पर आश्चर्य हुआ क्योंकि उनको चाय का शौक नहीं था । मैंने समझा कोई न कोई भक्त आ रहा है जिसे आप यहाँ दर्शन देना चाहते हैं । मैंने चाय के लिये पानी आग में रख दिया । इतने में एक पंजाबी दम्पति जो कार में आ रहे थे, बाबा को देख कर वहीं उतर गये । उनके चरणों में नतमस्तक हो, वे दोनों आँसू बहाने लगे । दोनों के सिरों के बाल कुछ-कुछ सफेद हो चुके थे, इससे उनकी उम्र का अनुमान पचास, पचपन का था । बाबा बोले, **"चुप हो । रो मत, हमने कह दी लड़का हो जायेगा ।"** मैं चाय तैयार कर ले आया । बाबा ने उन्हें चाय पिला कर शान्त किया । मेरे मन में भाव आया कि बाबा को क्या पागलपन सूझा कि बूढ़ों को सन्तति का वरदान दे रहे हैं । फिर सोचने लगा कि ऐसा कह कर सम्भवतः आप इन्हें टाल रहे हैं । उनके जाने के बाद बाबा तीव्र स्वर में मुझ से बोले, **"क्या हम झूठे हैं ?"** इस प्रश्न को आपने बार बार दोहराया, इससे मुझे अपने भाव पर ग्लानि होने लगी और मैंने अपने कान पकड़ कर क्षमा माँगते हुए कहा, "सरकार ! आप कदापि झूठे नहीं हो सकते ।" इतने में ब्रह्मचारी बाबा आ गये । बाबा ने उन्हें बहुत फटकारा और आप कैंची वापस चले आये ।

इस घटना के पन्द्रह महीने बाद एक दिन महाराज इसी प्रकार आश्रम की जीप में मुझे लेकर भूमियाधार आश्रम पहुँचे । इस बार ब्रह्मचारी बाबा आश्रम में ही थे । महाराज ने वहीं सड़क के पास अपना आसन लगवाया और बैठ गये । थोड़ी देर में वही दम्पति आ पहुँचे । इस बार वे

एक डिब्बा घी और कुछ रुपये लेकर आये और औरत की गोद में एक नन्हा–सा बालक था । मुझे पिछले साल की सारी घटना याद आ गयी और मैं यह दृश्य देख कर चकित रह गया ।

(221) जीवन दान

महाराज की इच्छा शक्ति मृत में प्राणों का संचार भी कर देती थी । कुमाऊँ के सन्त श्री ब्रह्मचारी जी महाराज और मुरादाबाद–चन्दौसी के मौनी बाबा आप में प्राणों की सिद्धि बताते थे । अल्प मृत्यु किसी भी कारण से हो बाबा उसे जीवन दान दे दिया करते थे, पर महामृत्यु में वे व्यक्ति की अन्तिम स्थिति आनन्दमय बना देते जिससे उसकी मुक्ति में सन्देह नहीं रह जाता । हर प्रकार से बाबा शोक के निवारण में समर्थ रहे ।

इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या 272 का अवलोकन करें कि किस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से आपने श्री केहर सिंह की पत्नी के मृत शरीर में प्राणों का संचार किया ।

(222) मरी मक्खी जी उठी

कैंची आश्रम में एक दिन बाबा अपनी कुटिया में विराजमान थे । श्री सुधीर मुकर्जी उनके तख़्त के पास उनकी सेवा में खड़े थे । बाबा ने अपने कम्बल में एक मरी मक्खी देखी । उन्होंने उसे एक कागज के टुकड़े में उठाया और मुकर्जी दादा से उसे बाहर फेंकने को कहा । ज्योंही वे उस कागज को बाबा के हाथ से लेने लगे, मक्खी जी उठी और स्वयं उड़ गयी ।

(223) मरी चिड़िया उड़ गयी

स्व. देवीदत्त जोशी, प्रधानाचार्य, राजकीय नार्मल स्कूल, भीमताल, नैनीताल को जब हनुमानगढ़ में महाराज के दर्शन साक्षात् धनुर्धारी राम के रूप में हुए तो तद्जन्य भावातिरेक से वे हमेशा के लिये कुछ विक्षिप्त से हो गये ।+ एक दिन उन्हें कहीं एक चिड़िया मरी मिली । आपने उसे अपने रुमाल में लपेट कर जेब में रख लिया । दूसरे दिन जब आप बाबा के

+ इसका पूरा विवरण प्रसंग संख्या 200 में दिया गया है ।

दर्शन के लिये किशनपुर गये, तब भी वह मरी चिड़िया उनकी जेब में थी। बाबा आपको देख कर बोले, **"जेब में क्या है ?"** आपने अपना रुमाल निकाल कर दिखाया और बोले, "गिरफ्तार कर रखा है ।" बाबा ने कहा, **"रिहा करदे ।"** बाबा के ऐसा कहने पर जब आपने अपना रुमाल छिटकाया तो वह चिड़िया उड़ गयी ।

(224) युधिष्ठिर का पुनर्जन्म

स्व. ओंकार सिंह, भू.पू. डी. आई. जी. उत्तर प्रदेश, के सुपुत्र युधिष्ठिर जी एक दिन बरेली से अपनी कार में महाराज को भूमियाधार आश्रम लाये। यहाँ आने पर आप आश्रम से बहुत दूर दिशा के लिये जंगल में गये । वहाँ एक काले सर्प ने उन्हें डस लिया जिसका विष आपके सम्पूर्ण शरीर में व्याप गया । आप बहुत कठिनाई से आश्रम की ओर आ रहे थे पर कुछ दूर ही गिर कर अचेत हो गये । उनका शरीर काला पड़ गया था और जब लोगों की दृष्टि उन पर पड़ी तब उनके प्राण पखेरू उड़ चुके थे । सभी लोग दुखी थे और किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे थे । इतने में बाबा वहाँ स्वयं आ गये । उन्होंने अपना कम्बल उतारकर युधिष्ठिर जी के ऊपर डाल दिया और कुछ समय बाद उन्हें हाथ पकड़कर खड़ा कर दिया । वे झूम रहे थे, बाबा ने उन्हें डाँटते हुए कार चलाने को कहा और स्वयं उनकी बगल में जा बैठे । बाबा बराबर आपको डाँटते रहे और गाड़ी अधिकाधिक तेज रफ्तार में चलवाते रहे । बाबा आप को साठ कि.मी. दूर रानीखेत ले गये और वहाँ उन्होंने आप को खाना खिलाया । इसके बाद वापसी में भूमियाधार तक उनसे गाड़ी चलवायी । इतनी दूर पर्वतीय भाग में गाड़ी ले जाने और लाने से आप पूर्णरूप से चैतन्य हो गये । इस प्रकार प्रत्यक्ष कृपा कर बाबा ने अपने भक्त के पुत्र को नया जीवन प्रदान किया ।

इस घटना के बाद कुछ दिनों तक महाराज किसी से नहीं मिले । उनके शिष्य ब्रह्मचारी बाबा बताते हैं कि वे आश्रम के एक कमरे में अकेले पड़े रहते थे और उनके सारे शरीर का रंग इन दिनों काला हो गया था । आप का ऐसा अनुमान है कि बाबा ने सर्प का विष अपने ऊपर लेकर झेल लिया ।

बाबा ने अपनी अप्रत्यक्ष कृपा से श्री बद्रीविशाल को भी जीवनदान दिया था । इस घटना का उल्लेख प्रसंग संख्या 217 में किया गया है ।

(225) विधवा के पुत्र को जीवन दान

एक बार बाबा अपने कुछ भक्तों के साथ कहीं से हनुमानगढ़, नैनीताल को कार में जा रहे थे । हल्द्वानी पहुँचने के पूर्व से ही वे चालक रामानन्द से गाड़ी की रफ्तार अधिकाधिक बढ़वाते जा रहे थे । काठगोदाम और ज्योलीकोट के बीच एक निर्जन स्थान में उन्होंने गाड़ी रुकवा दी और उतर कर बाहर आ गये। पास के जंगल में एक ग्रामीण औरत अपने बच्चे के लिए रो रही थी जो साँप के काटने से कभी का मरा पड़ा था । बाबा ने सब जानते हुए भी उससे कारण पूछा । फिर कहने लगे, **"यह तेरा अकेला लड़का था ?"** उसने स्वीकार किया । बाबा बोले, **"तेरा पति भी अब नहीं रहा ?"** वह रोने लगी । वे कहने लगे **"तेरा लड़का मरा नहीं है, क्यों रो रही है ? चुप हो, चुप हो ।"** बाबा ने लड़के के बदन में हाथ फेरा, उसमें चेतना का संचार होने लगा, थोड़े समय में वह चैतन्य हो गया । बाबा ने उस औरत को अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का मौका नहीं दिया, तुरन्त अपनी कार में बैठकर चल दिये ।

(226) राष्ट्रपति की पत्नी को प्राणदान

भू. पू. राष्ट्रपति स्व. वी. वी. गिरि की आस्था महाराज पर उस समय से थी जब वे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल थे । वे बहुधा उनके दर्शन करने जाया करते और अपने परिकरों के समक्ष उन्हें साष्टांग प्रणाम करते । कभी वे स्वयं जाकर बाबा को अपनी कार में राजभवन ले आते और वहाँ उनका स्वागत करते । गिरि जी के सभी मनोरथ उनकी कृपा से पूरे होते रहे । जब आपने राष्ट्रपति का चुनाव लड़ा तो महाराज का आर्शीवाद प्राप्त करने की कामना से आप कैंची आश्रम, नैनीताल में आकर उनके चरणों में गिर गये । बाबा उनके ऊपर अपना वरद् हस्त रखते हुए स्वतः बोले, **"चुनाव जीतना चाहता है । चिन्ता मत कर तू राष्ट्रपति बनेगा ।"** इस प्रकार गिरि जी अपनी विषम परिस्थितियों में बाबा से सम्पर्क बनाये रहे और उनकी कृपा से सदा लाभान्वित होते रहे ।

कादम्बिनी नवम्बर 1984 (तंत्र विशेषांक) में डाक्टर आर. के. करौली जी ने अपना एक अनुभव व्यक्त किया है । आप कहते हैं कि जिगर के काम न करने से श्री गिरि जी की पत्नी मूर्च्छित दशा में विलिंगटन नर्सिंग होम में पड़ी थीं और आपका इलाज चल रहा था । सब प्रकार की

चिकित्सा सुविधाओं और चेष्टाओं के बाद भी उनकी दशा गम्भीर होती जा रही थी । एक रात उनकी नाड़ी बन्द हो गयी, रक्तचाप शून्य था और साँस रुकने लगी । आपने गिरि जी को स्थिति से अवगत करते हुए बताया कि ये अब जा रही हैं । गिरि जी ने अनुरोध किया कि किसी प्रकार रात्रि के दो बजे तक उन्हें जीवित रखने का प्रयत्न किया जाय । सभी प्रकार की उत्तेजक औषधियाँ ग्लूकोज में मिलाकर उनके शरीर में पहुँचायी गयी । साँस दिलाने वाले पम्प का प्रयोग किया गया और पेसमेकर द्वारा ह्रदय गति देने का प्रयास भी किया गया । रात के पौने दो बजे सभी प्रयत्न विफल हो गये । गिरि जी बराबर उस कक्ष में घड़ी को ही देखते जा रहे थे । दो बजे श्रीमती गिरि ने एक साँस ली और फिर उनकी साँस सामान्य रूप से चलने लगी । सुबह तक वे होश में आ गयीं और बाद में पूरी तरह स्वस्थ हो गयीं ।

जब डा. करौली जी ने उनसे रात्रि के दो बजे का रहस्य जानना चाहा तो गिरि जी ने व्यक्ति का नाम न बताकर केवल इतना कहा कि एक महात्मा ने उन्हें ऐसा आश्वासन दिया था । निश्चित रूप से ये महात्मा उनके आराध्य बाबा नीब करौरी ही थे जो मृत में प्राणों का संचार करने की क्षमता रखते थे ।

(227) मृत्यु और जीवन एक खिलवाड़

यह घटना द्वितीय महायुद्ध के समय की है । श्री चन्द्रशेखर पाण्डे एस. डी. ओ., एम. ई. एस., झांसी की पत्नी बहुत समय से ज्वर से बड़ी क्षीण हो गयी थी । उनका शरीर शान्त होने जा रहा था, पाण्डे जी ने अपने श्वसुर श्री मोती राम को अनूपशहर के पते से तार द्वारा सूचना भेजी। वृद्ध मोतीराम जी इस सूचना से अत्यधिक दुःखी हो गये । वे अपने गुरू मौनी बाबा से, जो उस समय के एक सिद्ध सन्त थे विनीत निवेदन करने लगे, "प्रभु, मैं आज एक भीख चाहता हूँ । जैसे भी हो मेरी पुत्री को जीवन दान दें या मेरा जीवन भी समाप्त कर दें ।" मौनी बाबा कुछ क्षण सोच मुद्रा में रहे फिर बोले, "प्राण दान देने की सामर्थ्य केवल बाबा नीब करौरी में है । तुम उनसे प्रार्थना करो वे तुम्हारी इच्छा पूरी करेंगे ।" इधर मोतीराम जी बाबा का ध्यान कर उनसे प्रार्थना कर रहे थे, उधर झांसी में बाबा चन्द्रशेखर जी के घर पहुँच गये और उनसे पूछने लगे, **"तेरी घरवाली की तबीयत कैसी है ?"** पाण्डे जी उन्हें जानते नहीं थे, उन्होंने उनसे पूछा, "आप कौन हैं ?" वे बोले, **"बाबा नीब करौरी ।"**

"वह भीतर मरी पड़ी है ।"

"उसे हमें दिखायेगा ?"

आप बाबा को भीतर ले गये । उन्होंने उस मृत शरीर में अपनी कृपा दृष्टि डाली और बोले, **"अभी मरी नहीं है । तेरे घर में अंगूर हैं, थोड़े अंगूर उठा ला और एक कटोरा और एक चम्मच भी ।"** बाबा ने अपने हाथों से कुछ रस निकाल कर उस मृत महिला के मुँह में डाल दिया । उसकी नब्ज़ चलने लगी और कुछ ही क्षणों में उसने आँख खोल दी । बाबा बोले, **"अंगूर का रस और दूध पिलाना ठीक हो जायेगी ।"** इतना कह कर वे चल दिये । धीरे-धीरे वह महिला बिना किसी उपचार के स्वस्थ हो गयी । अंगूर और दूध का सेवन वह पहले भी कर रही थी, यह उसके लिये औषधि हो नहीं सकती थी ।

बात असल में यह थी कि जब वह छः वर्ष की बालिका थी, मोतीराम जी अपने गुरु भाई खत्री जी के घर से बाबा नीब करौरी जी को अपने घर लिवा लाये थे । उस समय बाबा ने बड़े प्यार से उस बालिका से कहा था, **"माँग ले जो तू चाहती है ।"** उन्हीं दिनों पड़ोस में एक गमी हुई थी, जिससे उस बालिका के सुकुमार मन को धक्का पहुँचा था । वह दृश्य उसने प्रथम बार देखा था इस कारण वह मन ही मन भाँति-भाँति की कल्पना किया करती थी । इसी फितूर में वह बोल उठी, "बाबा, मैं मर कर जिन्दा होना चाहती हूँ ।" बाबा वचनबद्ध थे, उसकी बात सुनकर मौन रह गये । उनका यह सारा खेल अपने वचनों के निर्वाह में था ।

चन्द्रशेखर पाण्डे जी और उनकी पत्नी इस संसार से विदा हो चुके हैं । अपने माता-पिता से सुना यह वर्णन उनके पुत्र श्री हरीशचन्द्र पाण्डे ने कुछ वर्ष पूर्व 105 एलेनगंज इलाहाबाद में श्री रघुनन्दन पन्त जी के निवास स्थान पर एक प्रसंग के सिलसिले में लेखक को सुनाया था । उस समय इन लीलाओं के संकलन का कोई विचार न था ।

वैज्ञानिकों के लिये चमत्कार

(228) वाणी से बिजली का संचालन

हनुमानगढ़, नैनीताल का निर्माण कार्य चल रहा था । पास में मोटर सड़क के किनारे किशनपुर में महाराज के भक्त शिवदत्त जोशी जी रहते थे। बहुधा नैनीताल आते-जाते बाबा आपके घर भी आ जाते थे । एक बार कई दिनों के बाद शाम को वे कुछ भक्तों के साथ आपके यहाँ आये

और एक बिछौने में लेट गये । आपकी पुत्री रजनी जोशी, जो अब मोहन लाल साह बालिका विद्यालय, नैनीताल में कार्य करती हैं, उस समय छोटी बालिका थीं और मुन्नी नाम से सम्बोधित की जाती थीं । आप कहती हैं कि बाबा के आगमन से मैं बहुत खुश थी, पर उन्होंने मेरी ओर पीठ कर दी और वे सोने का नाटक करने लगे । इस पर मैं बोली, "बाबा आज आप बहुत दिनों बाद आये हैं और बिना कुछ बोले सोने जा रहे हैं । हमें यह अच्छा नहीं लग रहा है ।" वे बोले, **"बिजली बुझा दो हमें नींद आ रही है।"** एक भक्त ने तुरन्त आज्ञा का पालन कर दिया । कमरे में अंधेरा छा गया और इस अंधेरे से मैं दुःखी हो गयी । मैंने अनुरोध किया, "बाबा, बिजली जलवा दीजिये ।" वे बोले, **"बिजली जल जा"** और उनके ऐसा कहते ही बल्ब प्रकाशित हो उठा । कमरे में सभी लोग आश्चर्यचकित हो खिलखिला कर हँसते हुए अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहे थे । इतने में बाबा ने फिर कह दिया, **"बिजली बुझ जा,"** तुरन्त कमरे में अंधेरा हो गया और उस अंधेरे में वह प्रसन्नता भी विलीन हो गयी । मैंने पुनः बिजली जलवाने की प्रार्थना की । बाबा ने फिर बिजली को जलने का आदेश दिया और कमरे में पूर्ववत् प्रकाश छा गया और साथ में प्रसन्नता भी । इस खिलवाड़ का क्रम थोड़ी देर चलता रहा । अन्त में बाबा बोले, **"जड़ पदार्थ भी हमारा कहना मानते हैं, पर तुम लोग नहीं ।"**

दूरभाष

महाराज की टेलिफोन प्रणाली निराली थी । वे बिना भौतिक उपकरणों के भक्तों को रात दिन टेलिफोन किया करते थे । मन ही मन कही उनकी बातों से भक्तों के घर में टेलिफोन की घन्टियाँ बज उठतीं और भक्तजन तब तक उनसे बातें कर सकते जब तक उनका अलौकिक टेलिफोन चालू रहता । वे कभी लौकिक टेलिफोन का भी उपयोग करते पर तकनीकी दृष्टि से उसे प्रभावित किए बिना जितनी देर तक वे चाहते बातें करते रहते थे । कभी भी किसी को उनकी लम्बी वार्ताओं का भुगतान टेलिफोन विभाग को नहीं देना पड़ा ।

(229) ज्ञान प्रकाश जी को अन्तिम आदेश

अपनी अन्तिम यात्रा के कुछ दिन पूर्व महाराज ने बिना लौकिक दूर भाष के कैंची आश्रम से श्री ज्ञान प्रकाश, प्रमुख सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ को टेलिफोन किया था । कैंची की घाटी में तब टेलिफोन की सुविधा नहीं थी और बाबा भी इस बीच कैंची आश्रम से बाहर नहीं गये ।

एक दिन श्री आर.सी. सोनी, डाइरेक्टर जनरल वन, सपरिवार बाबा की कुटिया में बैठे थे और ज्ञान प्रकाश जी के सम्बन्ध में बातें चल रही थीं । यहाँ बातें हो रही थीं और वहाँ लखनऊ में ज्ञान प्रकाश जी के निवास स्थान में टेलिफोन की घन्टी बजने लगी । बाबा ने जो भी अन्तिम आदेश उन्हें देना था मन ही मन दे दिया और अपना अलौकिक टेलिफोन बन्द कर दिया । ज्ञान प्रकाश जी उनसे और भी कुछ पूछना चाहते थे पर सम्बन्ध विच्छेद हो जाने से वे पूछ नहीं पाये । उन्हें पता नहीं हो पाया कि यह टेलिफोन कहाँ से किया गया था । कुछ दिनों बाद जब सोनी साहब लखनऊ में उनसे मिले तो उन्होंने अमुक दिन और अमुक समय पर प्राप्त हुए बाबा के टेलिफोन की चर्चा की । सोनी साहब ने उन्हें बताया कि उस दिन उस समय मैं स्वयं बाबा की कुटिया में उपस्थित था और आप के ही सम्बन्ध में बातें हो रही थीं ।

इस प्रकार की एक घटना का उल्लेख "सर्वव्यापकता, के प्रकरण में किया गया है । श्री जमुना दत्त पन्त जी के घर कर्नलगंज, इलाहाबाद से महाराज ने रात्रि के ग्यारह बजे ऐसा ही टेलिफोन श्री केहर सिंह आइ.ए.एस. के घर लखनऊ को किया था । इस सम्बन्ध में "भैंस लग नहीं रही ?," प्रसंग संख्या 92 का अवलोकन करें ।

(230) राजा भद्री की समस्या का हल

श्रीमती रानी भद्री बताती हैं कि 1 जनवरी 1955 से 1963 तक राजा साहब प्रधानमन्त्री के आग्रह पर हिमांचल प्रदेश के उप–राज्यपाल रहे । आरम्भ में एक बार केन्द्रीय सरकार ने किसी विषय पर उनसे जवाब चाहा। वे उसका उत्तर देना नहीं चाहते थे । इस उत्तर से आपके मित्र जवाहरलाल जी के मन को ठेस पहुँचना अनिवार्य था और बिना उत्तर दिये छुटकारा भी न था । इस विषय में केन्द्रीय सरकार के कई पत्र आ चुके थे । एक दिन इस कार्य के लिये राजा साहब ने अपने मातहत अधिकारियों को राजभवन में बुलाया भी, पर इस दुविधा का समाधान न होने से, वे कुछ न कर सके । रात के नौ बज चुके थे । एक ओर मेज पर भोजन लगा था और बाहर अधिकारी वर्ग उनकी बाट जोह रहा था । आप अकेले विचारमग्न बैठे थे । एकाएक उन्हें महाराज की याद आयी और वे मुझ से कहने लगे कि यदि इस समय किसी प्रकार बाबा नीब करौरी जी से सम्पर्क हो सकता तो वे उचित परामर्श दे मेरी समस्या हल कर देते । भ्रमणशील बाबा का पता मिलना भी कठिन था । इसे जानने के लिये वे लखनऊ में

अपने परिचित किसी आइ.ए.एस. अधिकारी की सहायता लेना चाहते थे । आपने अपने मातहत अधिकारियों से उस आइ.ए.एस. अधिकारी के घर का टेलिफोन नम्बर खोजने को कहा और मेरे अनुरोध पर आप भोजन करने को तैयार हो गये ।

बाहर टेलिफोन नम्बर खोजा जा रहा था और भीतर राजा साहब भोजन कर रहे थे, एकाएक टेलिफोन की घन्टी बजने लगी । यह सर्वज्ञ बाबा का अलौकिक टेलिफोन था । चपरासी ने टेलिफोन लिया और यह कहते हुए कि आगरा से बाबा नीब करौरी का है उसका चोंगा राजा साहब को खाने की मेज पर ही पकड़ा दिया । राजा साहब एक क्षण को आनन्द विभोर हो उठे और सादर बाबा का अभिवादन करते हुए कहने लगे, "बाबा मैं आप को ही खोज रहा था ।" बाबा तुरन्त बोले, **"क्या परेशानी है?"** राजा साहब ने जल्दी जल्दी सारी स्थिति से उन्हें अवगत कर दिया । बाबा कहने लगे, **"हमारी कही मान । किसी भी चिट्ठी का जवाब मत दे । सब चिट्ठियों को अपने पास रख ले ।"** इतना कहते ही उन्होंने अपना अलौकिक टेलिफोन बन्द कर दिया । राजा साहब कुछ और भी पूछना चाहते थे । उन्होंने तुरन्त उनके आगरा के टेलिफोन नम्बर की पूछताछ करवायी पर उन्हें वह प्राप्त न हो सका । राजा साहब बाहर गये, उन्होंने सब पत्रों को एक लिफाफे में बन्द करवा कर अपने पास रख लिया और सब लोगों से घर जाने को कहा । इसके बाद उनके दीर्घ कार्यावधि में यह प्रश्न फिर कभी नहीं उठा ।

(231) भुगतान रहित टेलिफोन

बहुधा ऐसा देखने में आता कि जब बाबा किसी ऐसे व्यक्ति के घर पहुँच जाते जिसके घर में टेलिफोन लगा होता तो वहाँ दरबार में बातें करते हुए वे टेलिफोन का चोंगा हाथ में लिये रहते और किसी न किसी से टेलिफोन से बातें भी करते जाते थे । उनकी ऐसी लम्बी वार्ताओं का कभी किसी भक्त को भुगतान नहीं करना पड़ा ।

श्री हीरा लाल खन्ना, 715, रूपा मिस्त्री स्ट्रीट, लुधियाना कहते हैं कि एक बार महाराज अपने कुछ भक्तों के साथ, जिनमें श्री माँ भी थीं, मेरे मौसेरे भाई ज्ञान चन्द कपूर जी के घर अमृतसर आये और दो दिन वहीं रहे । दोनों दिन बाबा टेलिफोन द्वारा विभिन्न स्थानों में अनेक विशिष्ट व्यक्तियों से वार्ता करते रहे । जब बाबा उनके घर से विदा हुए तो जाते समय उनसे बोले, **"घबराना मत, हमारे किये टेलिफोन का 'बिल' नहीं आयेगा ।"** वास्तव में कपूर जी को उनकी लम्बी वार्ताओं का भुगतान नहीं चुकाना पड़ा ।

(232) दैवी दूरभाष

ऐसा भी प्रायः देखा गया कि जिस भक्त के पास टेलिफोन की सुविधा नहीं थी, महाराज अपना सन्देश उसके पास बिना भौतिक उपकरणों के पहुँचा देते थे । इस प्रकार का अनुभव अलीगढ़ में संस्कृत के अध्यापक पं. होतृदत्त शर्मा जी को हुआ करता था । आप कहते हैं कि जब कभी बाबा वृन्दावन आश्रम में आ जाते और मुझे बुलाते तो उनके शब्द अलीगढ़ में मेरे कान में गूंजने लगते । मैं तत्काल सब काम छोड़कर वृन्दावन पहुँचता और वहाँ मुझे उनके दर्शन निश्चित रूप से होते रहे ।

इसके अतिरिक्त बाबा अधिकतर अपनी प्रेरणा शक्ति से भी काम लिया करते थे ।

आकाशवाणी

महाराज की आकाशवाणी भी अलौकिक रही । वह बिना 'ट्रान्समीटर' और 'रिसीवर' के कार्य करती थी । वे सर्वत्र लोगों की बातें सुनते रहते थे और सुदूर में उच्चरित शब्द अपने भक्तों को भी सुनवा सकते थे ।

(233) अखण्ड मानस पाठ

इलाहाबाद में प्रयाग स्टेशन के पास रेलवे के एक अधिकारी श्री हेमचन्द्र जोशी के घर पर रामचरित मानस का अखण्ड पाठ हो रहा था जिसमें बाबा के अनेक स्थानीय भक्त सामूहिक रूप से गा–बजाकर भाग ले रहे थे । उत्तरकाण्ड पूर्ण होने के बाद आरती हुई और तदुपरान्त प्रसाद वितरण हो रहा था, इतने में श्री सुधीर मुकर्जी के भान्जे ने वहाँ आकर उन्हें सूचित किया कि घर पर बाबा पधारे हैं । सभी भक्तगण प्रसाद लेकर दर्शनार्थ सीधे उनके घर पहुँचे । बाबा अपने कुछ भक्तों के साथ जिनमें श्री माँ भी थीं, दक्षिण यात्रा से लौटकर आये थे ।

बाबा के साथ आये हुए लोग अंपने एक नये अनुभव से चकित थे जिसे वे वहाँ उपस्थित लोगों को सुनाने लगे । इलाहाबाद स्टेशन से जब उनकी गाड़ी दो सौ मील से भी अधिक दूरी पर थी, बाबा ने खिड़की खोलने का आदेश दिया । खिड़की के खुलते ही बाजे के स्वर में बहुत लोगों के एक साथ मिलकर रामायण पाठ की सरस ध्वनि सुनायी दी । सब

का अनुमान यही था कि पास के किसी गाँव में यह आयोजन किया गया होगा । कई मिनटों तक आप लोग उत्तरकाण्ड का पाठ सुनते रहे । इस बीच मेल गाड़ी मीलों दूर निकल चुकी थी । पर पाठ की ध्वनि में कोई अन्तर नहीं आ रहा था । यह देख सभी आश्चर्य चकित हो रहे थे । बाबा ने खिड़की बन्द करवा दी, इस से उस ध्वनि का आना भी बन्द हो गया । कुछ समय व्यतीत हो जाने के बाद बाबा ने पुनः खिड़की खुलवायी फिर उसी स्वर लहरी में उत्तरकाण्ड का पाठ सुनायी देने लगा । बाबा की यह क्रीड़ा इलाहाबाद पहुँचने तक होती रही, सब लोग पाठ का आनन्द लेते रहे । बाबा से पूछे जाने पर कि यह रामायण कहाँ हो रही होगी, उन्होंने इसका कोई उत्तर नहीं दिया पर चर्च लेन इलाहाबाद आने पर बाबा के साथ आये भक्तों को और भी अधिक आश्चर्य हुआ यह जान कर कि यह रामायण इलाहाबाद में उनके भक्त के घर पर हो रही थी ।

दूर–दर्शन

महाराज का दूर–दर्शन भी अलौकिक था । वह बिना वाह्य उपकरणों के कार्य करता था । वे सर्वत्र सब को देखते तो रहते ही थे, अवसर पड़ने पर सुदूर के दृश्य पृष्ठ–भूमि सहित अपने भक्तों को भी दिखाने में समर्थ थे । इस सम्बन्ध में स्वामी शिवानन्द जी के शिष्य स्वामी निर्मलानन्द जी का अनुभव प्रस्तुत किया जाता है ।

(234) स्वामी शिवानन्द और उनके आश्रम का दृश्य

स्वामी निर्मलानन्द जी कहते हैं कि एक बार मैं परिव्राजक यात्रा में शिवानन्द आश्रम ऋषिकेश से पर्वतीय मार्ग द्वारा कैंची आश्रम पहुँचा । वहाँ मैंने बाबा नीब करौरी के दर्शन किये । वे मुझे देखकर बोले, **"तू ऋषिकेश से आ रहा है क्या ?"** मेरे स्वीकार करने पर वे कहने लगे, **"तू गुरु को क्या समझता है ?"** उस समय मेरे मुख से स्वतः निकल गया 'गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः, गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।' इस पर बाबा बोले, **"इस श्लोक के केवल कहने से कोई प्रयोजन नहीं है, तू अभी सीधा वापस चला जा ।"** मैं उनके आदेश का गुप्त अर्थ (रहस्य) तब नहीं समझ पाया । बाबा की दृष्टि उस समय उनके गुरु स्वामी शिवानन्द पर केन्द्रित थी जिनकी दशा शोचनीय होती जा रही थी ।

निर्मलानन्द जी स्वयं कहते हैं कि यह वही समय था जब गुरुदेव को पैरालिसिस हुआ और इक्कीस दिन बाद उनकी महासमाधि हो गयी ।

उन दिनों कैंची में हनुमान मन्दिर का निर्माण हो रहा था । बाबा ने अपने एक सेवक को आदेश दिया कि वह मन्दिर के पास मुझे बिठाकर प्रसाद खिलावे । वह एक थाली में बहुत पूरी और सब्जी ले आया था । मैंने कुछ प्रसाद खाया और शेष अपने भिक्षा पात्र में रख लिया । इसके बाद जब मैं थाली वापस देने गया तो मुझे बाबा के पुनः दर्शन हुए । वे कहने लगे, **'तूने रास्ते का भोजन भी रख लिया है ?"** उनकी बात से मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि उन्होंने मुझे भोजन करते देखा न था । एक भक्त ने शुद्ध घी के एक किलो बेसन के लड्डू लाकर बाबा को अर्पण किये थे उन्होंने उन्हें भी रास्ते के लिये मेरे हाथ मे दे दिया ।

उस समय बाबा को मेडिकल कालेज की छात्राओं ने घेर रखा था । उन्होंने एक पेड़ के नीचे शिला पर मुझ से बैठने को कहा । छः महीने परिव्राजक यात्रा में व्यतीत हो चुके थे, पर मैं कभी अपने गुरु महाराज को याद भी न कर पाया था । वहाँ बैठते ही एकाएक हिमालय पर्वत, गंगाजी, अपने आश्रम का दृश्य मेरी आँखों में उभर आया और मैंने गुरुदेव को दो आदमियों के कन्धों पर हाथ रख कर अपनी ओर आते देखा, ये थे स्वयं बाबा नीब करौरी जी महाराज । वास्तव में यह दृश्य बाबा स्वयं देख रहे थे जिसे उन्होंने स्वामी जी को दिखाया । स्वामी जी कहते हैं कि बाबा मेरे पास आकर पूछने लगे, **"तुम्हारा शिवानन्द ऐसे ही आता है ?"** उसी समय सारा दृश्य कैंची आश्रम में परिवर्तित हो गया ।

इसके बाद उस स्थान में कुछ सत्संग हुआ । बाबा के साथ आये लोगों में एक फौजी अफसर था, उसने मुझ से तुकाराम के बारे में कुछ बताने को कहा । मैंने अपनी असमर्थता व्यक्त की और कहा, "मैं हिन्दी ठीक तरह नहीं बोल पाता हूँ ।" पर बाबा ने मुझ से प्रवचन करने को कहा । यह उनकी ही शक्ति थी कि मैं बहुत अच्छा बोल गया ।

बाबा ने मुझसे पूछा **"कैंची आश्रम की तरह तुमने और कोई जगह देखी है ?"** मैंने श्री लंका में कैन्डी का नाम लिया और कहा माणिक गंगा की तरह है । बाबा बोले, **"वहाँ सुपारी और नारियल के पेड़ हैं और हाथी आकर नहाते हैं ।"** मुझे उनकी बात सुनकर महान् आश्चर्य हुआ, वास्तव में मैंने ऐसा ही देखा था ।

इस सत्संग में दक्षिण भारत का एक ईसाई भी था । बाबा ने अपने सामने बैठे एक भक्त की जेब से एक-एक रुपये के बीस नोट निकाले और आधे नोट ईसाई को दिये और आधे मुझे देने लगे । मैंने कहा "मेरे पास पैसे हैं ।" बाबा बोले, **"हमें मालूम है, पर तू रख ले ।"** ये रुपये प्रसाद रूप में अभी तक मेरे 'पर्स' में हैं । उस दिन से मेरा पर्स कभी खाली

न रहा । इसके बाद उन्होंने फौजी अफसर को आदेश दिया कि वह अपनी कार में मुझे हल्द्वानी ले जाकर गाड़ी में बैठा दे । बाबा स्वयं साथ बाहर आये और बोले **"चलो गाड़ी में बैठो, अब सीधे चले जाना ।"** मैं कुछ दिन कैंची रहना चाहता था पर बाबा ने नहीं माना ।

हल्द्वानी स्टेशन में फौजी अफसर ने पूछा, "आपको कहाँ का टिकट लेना है ?" मैंने कहा मैं यहीं रुकुंगा । उसने मुझे तीस रुपये दिये और बोला, "बाबा जी ने मुझ से आपका टिकट लेने को कहा था ।" मैं इस बीच सात दिन हल्द्वानी, बरेली और इज्जतनगर रहा । इज्जतनगर में स्वामी शिवानन्द जी के एक भक्त के घर गया जहाँ मेरा सूटकेस पड़ा था, जिसमें मेरे रुपये भी थे । वह गृहस्वामिनी माता जी मुझे बहुत दुःखी दिखायी दीं । मेरे कारण पूछने पर वे बोलीं, "स्वामी जी, क्या आप गुरुदेव के बारे में नहीं जानते ?" वह आगे कुछ नहीं बोल पायीं । उन्होंने उस दिन का समाचार पत्र लाकर मुझे दिया जिसमें स्वामी शिवानन्द जी के स्वास्थ्य की शोचनीय सूचना थी । उसी समय मुझे बाबा नीब करौरी याद आ गये । उन्होंने मुझसे सब कुछ कह दिया था पर मैं समझा नहीं, इस कारण रोने लगा । मैंने माता जी से कहा कि कैंची में बाबा ने धक्का देकर मुझे गुरु महाराज के पास जाने को कहा और गुरु महाराज के दर्शन भी कराये तब भी मैंने एक सप्ताह व्यर्थ गंवा दिया । उसी दिन रात की गाड़ी से मैं ऋषिकेश को रवाना हुआ और पहली जुलाई को आश्रम पहुँच गया । दो सप्ताह बाद गुरु महाराज ने समाधि ले ली । बाबा, निर्मलानन्द जी को उनके गुरु के पास बोलते–चालते की स्थिति में पहुँचाना चाहते थे ।

चिकित्सा विज्ञान के लिए आश्चर्य

असाध्य रोगों एवं कष्टों के निवारण में महाराज के कार्यों में कोई तर्कपूर्ण युक्ति नहीं दिखायी देती थी, पर लोगों को दुःख से छुटकारा अवश्य मिलता था । जहाँ भी चिकित्सा विज्ञान असमर्थ हो जाता बाबा की कृपा कारगर होती । ऐसा प्रतीत होता है कि बाबा के कार्य निमित्त रूप होते, लाभ उनकी इच्छाशक्ति ही पहुँचाती थी ।

(235) आँख के असाध्य कष्ट से निवृत्ति

घटना 2 जनवरी 1958 की है । श्री केहर सिंह, सचिव, उत्तर प्रदेश सरकार, का लड़का लखनऊ में घर पर ही अपने भाई के साथ अखरोट से टेनिस खेल रहा था । तीव्र वेग से आता हुआ अखरोट उसकी ऐनक से

टकराया और शीशे को तोड़ते हुए उसने उसकी आँख को भीषण आघात पहुँचाया । शीशे के अनेक छोटे–बड़े कण उसकी आँख में घुस गये और खून बहने लगा । लड़के को तुरन्त मेडिकल कालेज लखनऊ ले गये । वहाँ डाक्टर मेहरा ने जो भी चिकित्सा उचित समझी की और यह कह कर विदा किया कि आपरेशन करने में आँख को ख़तरा है । आपने सीतापुर अस्पताल के डाक्टर को भी दिखाया पर उसकी भी यही राय थी । शीशे के कण उसकी आँख में ही रहे ।

लड़के की एक आँख जन्म से ही बेकार थी जिसे वह इधर–उधर घुमा भी नहीं पाता था और पाँच फुट से दूर की वस्तु को वह उस आँख से स्पष्ट देख भी नहीं सकता था । इस आघात से उसकी दूसरी आँख भी बेकार हो गयी । वह अपने भविष्य की चिन्ता से उदास रहने लगा । एक दिन वह अपनी बहिन से पूछने लगा कि क्या वह उसको जीवन पर्यन्त अपने साथ रख सकेगी ? उसकी बात सिंह साहब के मर्म को स्पर्श कर गयी । वे उस रात अपने बिछौने पर पड़े–पड़े चुपचाप रोते रहे और भगवान् से कहने लगे, "हे प्रभु ! इस बालक ने तो कोई पाप किया नहीं । मेरे पापों की सजा इसे क्यों दे रहे हो ।" पिता के पाप का भागी पुत्र होता है आपकी ऐसी धारणा बाइबिल के अध्ययन से बनी थी । एकाएक उस जाड़े की अर्ध रात्रि में आपके टेलिफोन की घंटी बजने लगी । आप उस समय फोन सुनना भी नहीं चाहते थे और आप ने बाबा को अब तक याद भी नहीं किया था, पर आपकी पुकार बाबा–भगवान् ने सुन ली । यह फोन उन्हीं का था जिसे वे भारतीय स्टेट बैंक के मैनेजर मेहरोत्रा के घर बरेली से कर रहे थे, जहाँ उनके भक्त श्री पूरन चन्द्र जोशी भी उपस्थित थे । जोशी जी बताते हैं कि बाबा कम्बल से अपने को ढके हुए कुछ देर गम्भीर और मौन बैठे रहे फिर एकाएक वे चिल्लाने लगे, "**केहर सिंह रो रहा है, फूट गयी फूट गयी उसके लड़के की आँख**" और तुरन्त टेलिफोन उठा कर सिंह साहब से बोले, "**केहर सिंह क्या कर रहा है ?**" आपने उत्तर दिया "कुछ नहीं, महाराज ।" बाबा कहने लगे, "**झूठ बोल रहा है । तू तो रो रहा है । तेरे लड़के की आँख फूट गयी । उसे सीतापुर मत भेजना । उसे अलीगढ़ डा. मोहन लाल के अस्पताल में भेजना।**"

आपको ख्याल आया कि डा. मोहन लाल, श्री विनोद चन्द्र शर्मा, सचिव, चिकित्सा विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार, के मित्र हैं । आपने उस अस्पताल में एक कमरे के आरक्षण के लिये उनसे फोन करवाया । डा. मोहन लाल बोले, "केहर सिंह कैसा आदमी है ! कमरा तीन दिन से

आरक्षित है और खाली पड़ा है । मरीज को भेज नहीं रहा है ।" आपके यह बतानें पर कि इसके पूर्व आपने कमरे के आरक्षण के लिये कभी कोई प्रयास नहीं किया, डाक्टर ने उत्तर दिया कि आपकी ओर से एक आदमी उसे आरक्षित करा गया । वह आदमी कौन था ? सिंह साहब का विश्वास है कि बाबा ने स्वयं यह कार्य किया ।

उस दिन, रात की गाड़ी से आपने अपनी पत्नी और लड़के को भतीजे के साथ अलीगढ़ भेज दिया जिनका स्वागत स्टेशन पर डाक्टर ने स्वयं किया । डाक्टर ने इस लड़के के सम्बन्ध में सात विशेषज्ञों की एक मीटिंग बुलायी और प्रत्येक से पूरी जाँच पड़ताल के बाद अलग-अलग रिपोर्ट माँगी । छः डाक्टरों ने आपरेशन के विरोध में राय दी । केवल डाक्टर शुक्ला ने आपरेशन करने का साहस दर्शाया, पर वे किसी प्रकार का आश्वासन नहीं दे पाये । आपकी पत्नी आपरेशन के लिये अपनी अनुमति देने में असमर्थ रहीं, इस कारण डाक्टर मोहन लाल ने आपसे फोन पर वार्ता की । आँख लड़के की बेकार हो ही चुकी थी, बाबा की इच्छा समझ कर आपने आपरेशन की अनुमति दे दी । आपरेशन द्वारा जितने भी कण निकाले जा सकते थे निकाले गये फिर भी बीस-बाइस कण आँख में फंसे रह गये जिन्हें अब भी उसकी आँख में देखा जा सकता है ।

अस्पताल से छुट्टी पाकर लखनऊ आने के आठ-दस दिन में उसकी आँख की पट्टी हटा दी गयी । आँख के भीतर इन शीशे के कणों के कारण उस लड़के को कमरे में बीस-बाइस बल्ब और आकाश में उतने ही चाँद दिखायी देते रहे । वह तीन फुट के फासले पर आदमी भी नहीं पहचान पाता था, इस कारण वह बहुत परेशान रहता था । सिंह साहब ने उसे मेडिकल कालेज के डाक्टर मेहरा के पास भेजा । उन्होंने बताया कि ऐसा होना स्वाभाविक है । यह कठिनाई बनी रहेगी और इसका कोई उपचार नहीं है । इसके बाद फरवरी 1958 में एक दिन कानपुर से बाबा का फोन आ गया । सिंह साहब उस समय सचिवालय जाने की तैयारी में थे, बाबा बोले, **"तू कानपुर देव कामता दीक्षित के घर चला आ।"** उन्होंने आपको उनका पता भी बता दिया । आप अपनी कार में कानपुर के लिये रवाना हुए और कुछ अज्ञात प्रेरणा से आपने उस लड़के को भी साथ में ले लिया । वहाँ पहुँच कर बाबा के चरणों को नमन करने के लिये आप अपना सिर झुका ही रहे थे, बाबा ने पास में खड़े उस लड़के का हाथ पकड़ कर अपने करीब ले लिया और अपने दाहिने हाथ की अंगुली से उसकी हथेली को दबाते हुए बोले, **"हमने तेरे ही लिये केहर सिंह**

को यहाँ बुलाया ।" सिंह साहब नमन कर उठे ही थे बाबा ने उन्हें काम पर जाने का आदेश दे तुरन्त विदा कर दिया ।

इस घटना के सातवें दिन वह लड़का प्रसन्नचित्त हो अपने पिता के पास आकर कहने लगा कि बिना ऐनक के उसे अब सब स्पष्ट दिखायी दे रहा है । सिंह साहब ने उससे किताब पढ़वायी और वह पढ़ने लगा । उसकी आँख में न किसी प्रकार की विकृति थी न भद्दापन, आपरेशन के निशान भी नहीं दिखायी दे रहे थे । 2 जनवरी 1958 के दिन चोट लगने से पूर्व जैसी उसकी आँख की शक्ल सूरत और शक्ति थी, बाबा उसकी आँख को उसी स्थिति में ले आये । आपने उस लड़के को फिर डाक्टर मेहरा को दिखाया । वे उसकी आँख देखकर आश्चर्यचकित हो गये । उन्होंने अपने छात्रों को भी उसकी आँख दिखायी और उनको उसके इतिहास से अवगत किया । यह सब भारतीय सन्त–कृपा का फल है जानकर उन्होंने उसकी आँख की फोटो भी लीं, इस उद्देश्य से कि वे अपने लेख में इस घटना को प्रकाशित कर सकें । इस बीच डा. मोहन लाल ने अपने मित्र विनोद चन्द्र शर्मा जी से फोन में इस लड़के की कुशल पूछी । जब उन्हें बताया गया कि उसे अब सब कुछ स्पष्ट दिखायी दे रहा है, उन्हें विश्वास नहीं हुआ । उन्होंने फोन में ही सिंह साहब से स्पष्टीकरण कराया और स्वयं लड़के को देखने लखनऊ आये । आप कहने लगे कि शीशे के कणों के रहते ऐसा सम्भव हो ही नहीं सकता । सिंह साहब ने उन्हें समझाया कि यह बाबा नीब करौरी के दिव्य स्पर्श का फल है जिससे शीशे के कण आँख में सुव्यवस्थित पारदर्शक लैन्स का काम करने लगे । डाक्टर मोहन लाल ने इसे नेत्र चिकित्सा के इतिहास की एक अद्‌भुत घटना कही ।

इस लड़के ने बाद में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की और आइ.ए.एस. की परीक्षा भी दी । अठाइस वर्ष बीत चुके हैं बाबा की कृपा से ये शीशे के कण उसकी आँख में कभी खटकते भी नहीं, न कभी आँख खुजलाती है और न उसमें दर्द ही होता है । आँख लाल होते भी कभी नहीं देखी गयी ।

मई 1958 में एक दिन लखनऊ में केहर सिंह जी को बाबा के दर्शन का सौभाग्य हुआ । बाबा उनसे कहने लगे, "उस रात तू कह रहा था **भगवान् मेरे पापों का दण्ड लड़के को क्यों दे रहे हो । ऐसा कभी नहीं कहना चाहिये । भगवान् कुछ नहीं करता, व्यक्ति अपने कर्मों का फल स्वयं भोगता है ।"** बाबा ने लड़के के बारे में कुछ भी नहीं पूछा ।

(236) आँखों में रोशनी लौट आयी

श्री देव कामता दीक्षित, कानपुर, कहते हैं कि उनके चाचा की आँखों का ऑपरेशन हुआ था, पर असफल रहा । आँखों का घाव भर नहीं पाया और उसमें से खून भी निकल आता था । डा. शुक्ला का इलाज चल रहा था । डाक्टर को दो दिनों के लिये एक सम्मेलन में भाग लेने बाहर जाना था, उन्होंने औषधियाँ लिख दीं और बोले, "सब कुछ ठीक हो जायेगा, पर आँखें बेकार हो गयी हैं । ये कभी देख नहीं पायेंगे ।" उनकी बात पर आप बोल उठे, "यदि हमारे बाबा यही बात कह देंगे तो फिर हम हमेशा के लिये आशा छोड़ देंगे ।" डाक्टर साहब को आप की बात कुछ अरुचिकर लगी, वे बोले, "हमने आप से सच्ची बात कह दी । यदि कोई इनकी आँख सुधार कर इसमें रोशनी ले आये तो हम उसकी टाँगों के नीचे से निकल जायेंगे ।"

डाक्टर साहब के चले जाने के कुछ ही समय बाद अकस्मात् बाबा का आगमन हुआ । जब आपने उन्हें डाक्टर की कही बात सुनायी तो वे बोले, **"इसे कन्धारी अनार का रस पिला, आँख ठीक हो जायेंगी।"** उसी समय बाबा की उपस्थिति में अनार का रस पिलाना आरम्भ किया गया। आपके घर में उस दिन वाल्मीकि रामायण के सुन्दर काण्ड का पाठ हो रहा था और लंकापुरी में सीता–हनुमान संवाद का प्रसंग चल रहा था । बाबा उठकर रामायण सुनने चले गये । वहाँ वे भावावेश में आने लगे, इस कारण उन्होंने अपना कम्बल सिर से ओढ़ लिया । थोड़ी देर बाद जब उन्होंने अपना कम्बल हटाया तो उनकी आँखों से रक्त के आँसू बहते देखे गये । इसके बाद वे आपके घर से चले गये । उनके जाते ही आपके चाचा जी की आँखों में आशातीत सुधार आ गया । उन्हें सब कुछ दिखायी देने लगा और वे बहुत प्रसन्न हो गये ।

बाबा यहाँ से आपके भाई डाक्टर दीक्षित के घर चले गये और दो दिन वहीं रहे । दो दिन बाद जब डा. शुक्ला वापस आये तो वे चाचा जी की आँखों को देख चकित हो गये । उन्होंने बाबा के दर्शन की अभिलाषा व्यक्त की । भाई के घर पूछताछ कराने पर ज्ञात हुआ कि बाबा स्टेशन चले गये । आप डा. शुक्ला को लेकर सीधे स्टेशन पहुँचे । बाबा की गाड़ी छूटने जा रही थी । आप लोगों ने खिड़की से ही उनके दर्शन किये । बाबा डाक्टर की सराहना करने लगे, **"यह कुशल डाक्टर है, इसने तेरे चाचा की आँख सुधार दी ।"** डाक्टर साहब उनके चरण छूने को उद्यत् हुए, पर स्पर्श कर नहीं पाये । गाड़ी छूट चुकी थी ।

(237) मिठाई द्वारा मधुमेह का उपचार

घटना 1968 की है । श्री केहर सिंह को शारीरिक कमज़ोरी बहुत परेशान किये हुए थी । आप सब कुछ खाते पर पैरों में बल नहीं मालूम होता था । इस बीच महाराज लखनऊ में लगातार कई दिन रहे । सिंह साहब उनकी सेवा में रहे, जहाँ भी बाबा जाते वे उनके साथ ही जाया करते । बाबा को सर्वत्र मिठाई का भोग लगता था और वे आपको बहुत मिठाई खिलाया करते । आपको मिठाई में रुचि भी अधिक थी और बाबा के हाथ से दिये प्रसाद को आप तुरन्त पा लिया करते थे । एक दिन संकट–मोचन हनुमान मन्दिर के पास भूमि में बैठे, बाबा भक्तों द्वारा लायी गयी मिठाई को बाँटते हुए सिंह साहब से बोले, **"तुझे डाइबिटीज़ है । इतनी मिठाई खाता है, अब तू मर जायेगा ।"** बाबा के लखनऊ से चले जाने के बाद अपनी बढ़ती कमज़ोरी देखकर और बाबा के शब्दों का स्मरण कर सिंह साहब चिन्तित रहने लगे ।

जनवरी 1969 में राय बरेली से आपको बाबा के किसी भक्त का कार्ड मिला । उसने लिखा था कि बाबा हमारे घर आये थे और मुझे आदेश दे गये कि मैं आपको सूचित करूं कि **आप की डाइबिटीज़ खत्म हो चुकी है, आप इस विषय में चिन्ता न करें** । आप का यह कष्ट स्वतः जाता रहा और तब से फिर कभी आपको ऐसी शिकायत नहीं हुई । आपने इस हेतु न कोई परहेज़ किया और न किसी औषधि का सेवन ही । आपकी यह धारणा है कि बाबा ने यह रोग अपने में ले लिया और स्वयं इस कष्ट को भुगतने लगे । प्रमाण रूप में आप बताते हैं कि तब से जीवन पर्यन्त बाबा चने की रोटी खाते रहे और मीठी वस्तु से वे बराबर परहेज़ करते देखे गये ।

(238) रक्तचाप के असह्य कष्ट से त्राण

एक बार महाराज लखनऊ में अपने भक्त श्री आर.सी. सोनी, डाइरेक्टर जनरल, वन विभाग के घर आये हुए थे । उस समय श्री सूरज नारायण मेहरोत्रा के घर में उनकी पत्नी के रक्तचाप के अत्यधिक बढ़ जाने से बुरा हाल हो रहा था । यह जान कर कि बाबा सोनी साहब के घर में विराजमान हैं, मेहरोत्रा जी ने कई बार टेलिफोन द्वारा उनसे घर आने की प्रार्थना की और उन्हें लिवा लाने के लिए लोगों को भेजा, पर बाबा ने

उनकी गम्भीर बात को कुछ भी महत्व नहीं दिया । आप बहुत समय तक सोनी साहब के घर में बैठे बातें करते रहे और तदुपरान्त आपने भोजन भी किया । मेहरोत्रा जी की पत्नी की गम्भीर दशा पर श्रीमती सोनी मन ही मन घबराई हुई थीं उन्होने बहुत संकोच से बाबा से निवेदन किया कि वे किसी प्रकार उन्हें अपने दर्शन दे कृतार्थ कर दें । बाबा ने आपकी बात मान ली और वे मेहरोत्रा जी के घर चले गये । वहाँ कई डाक्टर उपचार में लगे थे पर बीमार की दशा में अन्तर नहीं ला पा रहे थे । बाबा ने अपनी अंगुलियों से श्रीमती जी की भृकुटियों को दबाया और देखते-देखते ही वे स्वस्थ हो चलीं । उपस्थित सभी डाक्टर उनके आगे नतमस्तक हो गये ।

(239) गले की गांठ विलुप्त

श्री मदन लाल साह, भवाली, की लड़की तीन महीने की थी उसके गले में एक गाँठ पैदा हो गयी । इस बीच आपके भाई को लकवा पड़ गया इस कारण आपने डाक्टर मित्तल और एक और डाक्टर को उन्हें देखने के लिये बुलाया । इस अवसर पर पत्नी के आग्रह से आपने लड़की के गले की गाँठ भी डाक्टरों को दिखायी । उन्होने दो वर्ष बाद उस गाँठ के ऑपरेशन की सलाह दी । इसके कुछ समय बाद यह परिवार महाराज के दर्शन के लिये कैंची आया । साह जी ने लड़की की गाँठ बाबा को दिखाते हुए डाक्टरों की राय भी सुनायी । बाबा ने अपनी अंगुलियों से उस गाँठ को चारों ओर से दबाया तो वह विलुप्त हो गयी । मदन लाल जी ने जब उन स्थानीय डाक्टरों को वह लड़की पुनः दिखायी और सब विवरण उन्हें सुनाये तो उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि बिना किसी औषधि और ऑपरेशन के यह कैसे सम्भव हुआ । बाबा के स्पर्श की फलकारिता के रहस्य को वे समझ नहीं पाये ।

(240) छत्र-छाया

श्री आर.पी. वैश्य, जनरल मैनेजर, उत्तर प्रदेश परिवहन, बाबा के बड़े भक्त रहे । सन् 1967 में जब आपकी बदली दिल्ली को हुई तो आप बाबा के दर्शन करने कैंची आये । आपने उन्हें बताया कि दिल्ली में कार्यभार संभालने के पूर्व वे काश्मीर भ्रमण के लिये जाना चाहते हैं । विदा करते समय बाबा ने आपको आश्रम का एक छाता दिया और कहा, "इसे

रखले वहाँ पानी बहुत बरसता है ।" आपको उस छाते को लेने में बड़ा संकोच हुआ । आपने निवेदन किया, "मेरे पास घर में अपना छाता है, यहाँ आश्रम में यह कई लोगों के काम आयेगा ।" बाबा ने आपकी बात नहीं मानी और पुनः उसे रख लेने को कहा । आप जब तक काश्मीर में रहे उनका दिया हुआ छाता लिये वे इधर-उधर घूमते रहें और दिल्ली वापस आने पर आप उसे लौटाने के अभिप्राय से बाबा के दर्शन करने पुनः कैंची गये । आपको देखते ही बाबा बोल उठे, **"छाता लौटाने आया है ?"** बाबा के शब्दों की यथार्थता से आप अवाक् रह गये । बाबा फिर बोले, **"रख ले, इससे तेरी छत्र-छाया होगी ।"** आपकी समझ में कुछ बात आयी नहीं और आप उस छाते को लिये दिल्ली लौट आये ।

दिल्ली से कुछ समय बाद आपकी बदली पुनः उत्तर प्रदेश रोडवेज, लखनऊ को हो गयी । लखनऊ आने के पूर्व आपने अपना फालतू सामान अपने दिल्ली के मकान में बन्द कर दिया और वहीं इस छाते को भी रख आये । यहाँ आकर आपका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता चला गया । हृदय रोग के साथ जिगर-तिल्ली भी बढ़ गयी थी । बलरामपुर अस्पताल में जाँच कराने पर वह तेरह से.मी. बढ़ी पायी गयी । हृदय रोग के कारण तिल्ली का ऑपरेशन भी सम्भव न था । अन्य कोई उपचार न होने से आपको अपनी पत्नी के साथ अखिल भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान में इलाज के लिये जाना पड़ा । इस कारण आप दिल्ली में अपने घर पर ठहरे । इसके पाँच वर्ष पूर्व ही बाबा अपनी नर लीला समाप्त कर चुके थे । जब आप वहाँ भरती होने के लिये अपने घर में तैयारी कर रहे थे, एकाएक आपकी पत्नी की दृष्टि महाराज की दी हुई उस छतरी पर पड़ी जो उस घर में बन्द थी । इससे आपकी पत्नी के मन में विचार आया कि बाबा की दी हुई छतरी पास में न होने से उसके द्वारा होने वाली 'छत्र-छाया' अर्थात् सुरक्षा से उनके पतिदेव वंचित रह गये । अब जून 1978 की गर्मी में कार में उस छतरी को लिये आपकी पत्नी आपके साथ अस्पताल गयीं, उन्होंने उसे आपके बिस्तर में तकिये के नीचे छिपाकर रख दिया ।

यहाँ आपकी बीमारी की नये सिरे से जाँच हुई और जिगर-तिल्ली तेरह से.मी. ही बढ़ी पायी गयी । वैश्य जी को डाक्टर ने बताया कि वे छः महीने अस्पताल में रहने का पूरा इन्तजाम कर लें क्योंकि तिल्ली का ऑपरेशन उस स्थिति में समीचीन नहीं हो सकता और औषधियों के द्वारा ही आपको स्वास्थ्य-लाभ कराना होगा । आपको यह भी बताया गया कि औषधियों में एक विशेष गोली आपको महीने में एक बार ही दी जायेगी जिसकी प्रतिक्रिया से तीस दिन में आपकी तिल्ली ढाई से.मी. घट पायेगी ।

पहले दिन यह गोली आपको पहली बार दी गयी । दूसरे दिन प्रातःकाल आपने अपने को पूरी तरह स्वस्थ पाया, आपको ऐसा मालूम हुआ कि तिल्ली जैसे बढ़ी ही न हो । आपने अपना अनुभव डाक्टर को बताते हुए तिल्ली की फिर नाप करवाने का निवेदन किया । उसने आपका उत्साह बढ़ाया और कहा कि यह कार्य छह महीने बाद होगा, रोज़–रोज़ नहीं । इससे वैश्य जी को सन्तोष नहीं हुआ । आपने अपनी पत्नी को प्रमुख चिकित्सा अध्यक्ष के पास भेज कर विशेष रूप से प्रार्थना करवायी और उनके आदेश से तिल्ली को पुनः नपवाया गया । तिल्ली वास्तव में एक ही दिन में तेरह से.मी. घट गयी । उस दवा की गोली में यह क्षमता थी ही नहीं । सभी डाक्टर हैरान हो गये, यह कैसे हो गया । इस पर वैश्य जी ने अपने तकिये के नीचे से बाबा की दी हुई छतरी निकाल कर दिखाते हुए कहा, "इसके प्रभाव से ।" कहाँ छाता, कहाँ तिल्ली और क्या संगति !

(241) चिन्तागस्त स्थिति से छुटकारा

श्री रमेश चन्द्र पाण्डे, दिगम्बर जैन डिग्री कालेज, बड़ौत, मेरठ, की पत्नी का स्वास्थ्य विशेष रूप से खराब चल रहा था । आप गर्भिणी थीं और डाक्टरों ने स्थिति असन्तोषजनक बता रखी थी । इस परिवार की ऐसी चिन्ताग्रस्त स्थिति में एक दिन महाराज स्वतः आपके घर आ गये और इस सम्बन्ध में बिना किसी बात के आपकी पत्नी से बोले, **"घबरा मत सब ठीक हो जायेगा । नित्य प्रातःकाल अपने पति और सास के पैर छूना और सुन्दरकाण्ड का पाठ करना । यदि स्नान न कर पाये तो भी पाठ अवश्य करना ।"** इस नैराश्यपूर्ण स्थिति से बचने का कोई उपचार भी न था, आपने बाबा के आदेशों का पालन किया । समय आने पर प्रसव स्वाभाविक रूप से हुआ और किसी भी प्रकार की विपत्ति का सामना नहीं करना पड़ा । डाक्टरों की समस्त धारणायें भ्रामक सिद्ध हुईं ।

(242) फूल से 'मम्स' का उपचार

घटना इलाहाबाद की है । मैं (लेखक) अपने दो लड़कों के साथ, जो वहाँ विश्वविद्यालय में पढ़ते थे, एलेनगंज में रहता था । एक दिन मेरे बड़े लड़के को ज्वर हो आया । अकस्मात् मेरी चाची प्रयाग में मकर स्नान करने उसी दिन घर आ गयीं । उन दिनों बाबा चर्च लेन में आये हुए थे । जब शाम को मैं चाची को लेकर उनके दर्शन करने गया तो बाबा ने दूसरे ही दिन उन्हें नैनीताल वापस जाने का आदेश दे दिया । मेरी कठिनाइयों को देखते हुए चाची को एकाएक लौट जाना अच्छा मालूम नहीं

दिया । चार दिन बाद मकर संक्रान्ति का पर्व था, उनका उद्देश्य भी पूरा नहीं हो पाया था । परिस्थिति को समझते हुए मैंने बाबा से निवेदन किया कि लड़के को ज्वर में अकेला छोड़ कर मैं चाची को लखनऊ तक भी पहुँचाने में असमर्थ हूँ । यदि आप कुछ दिन इन्हें मेरे ही पास रहने का अवसर दे दें तो बड़ी कृपा होगी । बाबा नहीं माने, उन्होंने श्री कन्हैया लाल श्रीवास्तव को दूसरे दिन दस बजे सबेरे की गाड़ी से उन्हें हमारे घर लखनऊ पहुँचाने को कहा । अपने पास में पड़े हुए फूलों में से एक फूल उठाकर चाची को देते हुए बाबा बोले, **"इसे चलते समय लड़के के माथे पर रख देना और तू चली जाना ।"** उन्होंने वैसा ही किया । उनके जाते समय लड़के का तापक्रम 105.5 था । उस फूल के स्पर्श से उसका तापमान एक डिग्री प्रति घन्टा गिरता गया और बिना किसी औषधि के वह उसी दिन शाम तक ज्वर से छुटकारा पा गया । ज्वर मुक्त होने पर उसे जब मैंने डाक्टर को दिखाया तो उसने उसे 'मम्स' की बीमारी बतायी जो इतनी आसानी से जाती रही ।

(243) कम्पाउंड फ्रैक्चर का उपचार

श्री रमेश चन्द्र साह की बहिन गुरुप्रिया जी बाबा की अनन्य भक्त हैं । एक बार नैनीताल अपने घर के स्नानागार में पैर के फिसलने से आपके घुटने में कम्पाउंड फ्रैक्चर हो गया । उन्हें अस्पताल में भरती करना पड़ा और डाक्टरों ने बताया कि उनके स्वस्थ होने में लगभग एक महीना लगेगा । महाराज उन दिनों कैंची आश्रम में निवास कर रहे थे । नैनीताल से आये हुए दर्शनार्थियों ने उन्हें गुरुप्रिया जी के कष्ट की सूचना दी । उसी दिन से बाबा ने अपने घुटनों में वैसा ही दर्द पैदा कर लिया । तीन दिन दोनों कष्ट सहते रहे और चौथे दिन दोनों स्वस्थ हो गये ।

प्रेरणा शक्ति के कार्य

'सबहिं नचावत राम गोसाईं । महाराज की प्रेरणा शक्ति अद्भुत थी, वे जिसे जैसा नचाना चाहते वह वैसे ही नाचने लगता ।

(244) 'देख बुला लिया'

श्री कर्णवीर का व्यवहार बाबा से ऐसा ही था जैसे घर के वयोवृद्ध से बच्चों का होता है । आप बाबा से बेलिहाज बातें करते थे और वे आपको बहुत चाहते भी थे । सन् 1945 में जब आपके पिता जी की बदली

आगरा से लखनऊ हो गयी और आप लोग लखनऊ–कानपुर मार्ग में पुलिस क्वार्टर में रहने लगे तो एक दिन महाराज आप के घर पधारे और आप से बोले, "**तू जा गोविन्द बल्लभ पन्त, मुख्यमन्त्री, को बुला ला । कहना, बाबा ने बुलाया है ।**" आपने कहा, "अब वे पहले वाले पन्त जी नहीं रहे, उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री हैं ! उनसे मिलना आसान काम है क्या ?" बाबा बोले, "**तू उसके घर में घुसते चले जाना और कह देना बाबा बुला रहे हैं ।**" आपने उत्तर दिया, "कहूँगा तो तब जब कोई कोठी में घुसने देगा । पकड़ कर बन्द कर दिया जाउंगा और कोई जमानत भी नहीं होगी ।" बाबा ने आपको समझाया, "**तू चला जा तुझे कोई नहीं रोकेगा ।**" आप सदा उनसे उलझते रहते थे और इस समय भी अपनी बात पर अड़े रहे और जाने को तैयार नहीं हुए । बाबा ने फिर पूछा, "**नहीं जायेगा ?**" आप ने कोई उत्तर नहीं दिया । बाबा बोले, "**मत जा, हम उसे यहीं बुला लेंगे ।**" बात आयी और गयी । बाबा इधर–उधर की बातें करते रहे और आधा घन्टे के बाद बोले, "**चल, सड़क पर टहलेंगे ।**" दोनों सड़क पर आ गये । लगभग दो–चार ही मिनट बीते होंगे, सामने से पन्त जी की कार आती दिखायी पड़ी । पन्त जी बाबा को प्रणाम करने के लिये गाड़ी से उतरने लगे, परन्तु बाबा ने उन्हें उतरने नहीं दिया । थोड़ी बातचीत के बाद बाबा पन्त जी की गाड़ी में बैठ गये । आप पास में खड़े थे, आपकी ओर देख कर वे हँसते हुए बोले, "**देख, बुला लिया, अब जाते हैं ।**"

(245) अनपढ़ के मुँह से गीता

बाल्यकाल से ही ठाकुर भगवान सिंह के माता–पिता चल बसे थे । कुछ विवशताओं के कारण उसे अपना घर भी छोड़ना पड़ा । वह अपने को अनाथ पाता था और इस कारण बहुत दुःखी था । महाराज ने उसका हाथ पकड़ा और उसे अपनी सेवा में ले लिया । उन्होंने अपने हाथों से उसे जनेऊ पहनायी और जब वृन्दावन आश्रम में हनुमान मन्दिर बना तो इसे उसका पुजारी बना दिया । यह विशेष पढ़ा–लिखा था नहीं और ब्राह्मण भी नहीं था । इस कारण लोग उससे असंतुष्ट थे और उसे वृन्दावन से भगाना चाहते थे । एकाएक इसकी रक्षा के लिये बाबा आश्रम में आ गये । कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस उत्तम कार्य को किसी सुपठित एवं कुलीन ब्राह्मण के हाथ में देने का उनसे आग्रह किया । बाबा ने भगवान सिंह को पण्डित बताया और उसके संस्कृत के ज्ञान की वे सराहना करने लगे । उपस्थित

लोगों को बाबा की बात जँची नहीं । उनमें से एक व्यक्ति बोल उठा, "क्या भगवान सिंह गीता का ग्यारहवाँ अध्याय पढ़ कर सुना सकता है ?" बाबा ने तुरन्त हामी भर दी और भगवान सिंह को बुलाकर उससे गीता का ग्यारहवाँ अध्याय सुनाने को कहा । उनका आदेश पाकर उसने बिना पुस्तक के बड़ी सुन्दरता के साथ शुद्ध उच्चारण से, सम्पूर्ण अध्याय सुना दिया । सब लोग उसके इस असाधारण पांडित्य पर चकित हो गये और सन्तुष्ट हो वापस चले गये । अब यह व्यक्ति हनुमान सेतु लखनऊ में स्थित बाबा के संकटमोचन हनुमान मन्दिर का पुजारी है । भगवान सिंह बताते हैं कि बाबा ने उसे अपने तख़्त के पास बिठा रखा था । उनके कम्बल का एक छोर उसके सिर को ढके था और उनके पैर का अंगूठा उसके माथे को स्पर्श कर रहा था ।

(246) विनय चालीसा की रचना

श्री प्रभुदयाल शर्मा को महाराज का दर्शन प्रथम बार सन् 1967 या 68 में हुआ । तब वृन्दावन में बाढ़ आयी हुई थी । आप उस समय आइ.टी.आइ. वृन्दावन के कार्यालय में कार्य करते थे । बाढ़ के कारण दो दिन छुट्टी रही और इसी बीच आपको लटूरे हनुमान मन्दिर के पास शाम के समय मथुरा खजाने के हेड क्लर्क मिल गये जिन्होंने आप को बाबा नीब करौरी के दर्शन के लिये प्रेरित किया । उस समय परिक्रमा मार्ग में बाबा के आश्रम का निर्माण कार्य चल रहा था । बाबा की कुटिया बन चुकी थी और लघु हनुमान की स्थापना भी हो चुकी थी । बाबा आश्रम में विराजमान थे । प्रभुदयाल जी उन्हें जानते नहीं थे, इस कारण वे बिना श्रद्धा और विश्वास के दर्शन करने गये । बाबा ने आप से पूछा, **"क्या नाम ? कहाँ काम करता है ?"** आपके उत्तर देते ही उन्होंने आप को जाने की आज्ञा दे दी । आप इस प्रयत्न में थे कुछ देर और वहाँ बैठ जाँय, पर बाबा बोल उठे, **"अब आज्ञा हो गयी है, जाओ ।"** अधिक से अधिक आपको एक मिनट बाबा के दर्शन हो पाये ।

आप लौट कर अपने घर आये । आपका एक पैर घर की देहरी के बाहर और दूसरा भीतर आँगन में था, आपको एक ऐसे विलक्षण आनन्द की अनुभूति हुई जिसका वर्णन आप कर नहीं पाते । आप बताते हैं कि सारी देह में एक प्रकार की विद्युत् धारा प्रवाहित हो उठी और आपके मुँह से उस समय अनायास यही शब्द निकले, 'बाबा महापुरुष हैं, साधारण व्यक्ति नहीं ।" इस घटना के बाद से आपकी निद्रा एक महीने तक ग़ायब रही

और आपकी एक प्रकार की विक्षिप्तावस्था हो गयी । इसके लिये आपको मानसिक अस्पताल में इलाज भी कराना पड़ा । ऐसी स्थिति में आपने अज्ञात प्रेरणा से बाबा की स्तुति में 'विनय चालीसा' की रचना की जो इतनी सटीक उतरी कि सभी भक्तजनों की स्तुति का आधार बन गयी । आश्चर्य की बात यह है कि एक क्षणिक दर्शन से आप बाबा की महानतम और गूढ़तम बातों की अभिव्यक्ति पद्य के रूप में करने में समर्थ हुए । आप न कभी कवि रहे और न लेखक ही । विक्षिप्तावस्था आपकी थी और बाबा की जानकारी आपको थी नहीं । आप इस सुन्दर रचना को लेकर बाबा के पास जाने का साहस भी नहीं कर पाये । आप ने वृन्दावन में रहते हुए इसे डाक द्वारा वृन्दावन आश्रम को भेजा ।

जब आपकी यह रचना बाबा को मिली तो उन्होंने इसे मोड़-माड़ कर फेंक दिया । दूसरे दिन कूड़े में यह रचना स्व. काली नाथ कपूर जी के हाथ आयी और उन्होंने कानपुर ले जा कर इसे छपवा दिया ।

(247) बाबा की मौज

महाराज को लोगों की अव्यक्त इच्छाओं की जानकारी रहती थी और वे अपनी प्रेरणा शक्ति से लोगों को ज़ाहिर किए बिना उनके कार्य करवा दिया करते थे । वे कभी इस सम्बन्ध में पहले कुछ विश्वास पैदा कर देते फिर तटस्थ हो कर लोगों के अन्तर्मन में उठने वाले द्वन्द्वों में रस लेते थे ।

भारत के विभाजन के पूर्व रावलपिण्डी के श्री गंगाराम गुजराल दिल्ली में आकर बस गये । आपकी चाँदनी चौक और करौलबाग में बम्बई सिल्क स्टोर्स की दो दुकानें हैं और आपके पास दिल्ली में वृहत् स्थूल सम्पत्ति भी है । एक बार आप अपनी कार से अपने पुत्र और मोतीराम वैद्यजी के साथ हल्द्वानी में अपने सम्बन्धी मालिक राम जी के घर आये थे । उन्होंने आपको बाबा के दर्शन के लिये प्रेरित किया । आप कैंची आश्रम के पास स्थित डाक बंगले में ठहरे और बाबा के दर्शनार्थ उनकी कुटिया में गये । बाबा आपको देखते ही कहने लगे, **"अपनी कार में आया है ?"** आपके हामी भरने पर वे बोले, **"तेरी जायदाद का झगड़ा झा के पास फँसा है, हम दिल्ली जाकर उससे कहेंगे ।"** वास्तव में आपकी जायदाद के सम्बन्ध में दिल्ली के उपराज्यपाल झा साहब के आदेश होने थे और उसके छिन्न-भिन्न होने की सम्भावना थी । इस कारण आप चिन्तित थे । पहली भेंट में ही अपनी अव्यक्त चिन्ता की जानकारी उनमें देखकर आपको उनकी बात का भरोसा हुआ और आप उनसे साथ चलने के लिये

प्रार्थना करने लगे । जब बाबा ने बाद में आने का वायदा किया तो आप अपना दिल्ली का पता नोट कराने के लिये बार-बार उनसे आग्रह करते रहे । बाबा ने पता लेने की आवश्यकता नहीं समझी । इससे आपके मन में द्वन्द्व होने लगा और आपको उनकी सहायता में सन्देह भी होने लगा ।

इसके कई महीने बाद एक दिन अकस्मात् बाबा कार से आपके निवास स्थान दिल्ली में आ गये । क्षणिक दर्शन में किये गये अपने वायदे को बाबा ने बिना आपसे पता लिये पूरा किया, इस कारण आपको उनके आगमन पर आश्चर्य और हर्ष हुआ । बाबा आपसे तुरन्त झा साहब के पास चलने को कहने लगे । गुजराल जी और उनके पुत्र बाबा के साथ उनकी कोठी में गये । वहाँ एक मीटिंग हो रही थी । झा साहब उसे छोड़ कर बाबा के पास आये और उनसे अपने ड्राइंग-रूम में बैठने की प्रार्थना कर मीटिंग को बरखास्त करने लौट गये । बाबा गुजराल जी से बोले, "हम रुकेंगे नहीं ।" ऐसा कह कर उन्होंने चालक से गाड़ी बाहर ले चलने को कहा । गुजराल जी बार-बार उनसे निवेदन करते ही रह गये कि झा साहब आते ही होंगे थोड़ी और प्रतीक्षा कर ली जाय, पर बाबा माने नहीं । उनका बना-बनाया काम व्यर्थ हुआ और वे निराश हो कर घर आ गये ।

इसके कुछ ही दिनों बाद आपको जो लिखित आदेश प्राप्त हुए उससे आपका चित्त प्रसन्न हो उठा । वे समझ नहीं पाये कि कैसे उनकी सम्पत्ति का समाधान उसी प्रकार हुआ जैसा वे चाहते थे । यह सब बाबा की प्रेरणा शक्ति का खेल था ।

(248) फूल देकर रक्तचाप सामान्य कराया

श्री जीवन चन्द्र, बाल विद्यालय, हल्द्वानी सन् 1972 में बाबा के दर्शन कर वृन्दावन से वापस जाने को उद्यत् थे । चलते समय महाराज ने दो गुलाब के फूल आपको दिये, जिनका प्रयोजन आप उस समय नहीं समझे । आपने उन फूलों को संभाल कर रख लिया । आप हल्द्वानी का टिकट लिये रेलगाड़ी से आ रहे थे, पर अकारण आपका विचार बदला और आप बरेली स्टेशन में अपने सम्बन्धी डा. ए. डी. भण्डारी से मिलने के लिये उतर गये । उनके घर पहुँचने पर आपको डाक्टर साहब से ज्ञात हुआ कि श्री सर्वदमन रघुवंशी की माँ अत्यधिक रक्तचाप से चिन्ताजनक स्थिति को प्राप्त हो चुकी हैं । उन्हें चक्कर आ रहे हैं और उनका शरीर कम्पायमान हो रहा है । बाबा के भक्त परिवार की संकटापन्न स्थिति का यह हाल जानकर

आप उन्हें देखने गये और अज्ञात प्रेरणा से उन दोनों गुलाब के फूलों को साथ ले गये । वहाँ जाकर आपने उन्हें माता जी के हाथों में यह कर कर रख दिया कि ये बाबा जी ने दिये हैं । उन्होंने उन फूलों को बड़े श्रद्धा और प्रेम से अपने माथे, गर्दन और सीने से लगाकर अपने पास ही रख लिया । देखते–देखते ही उनका रक्तचाप घटकर आधा रह गया और वे सामान्य स्थिति में आ गयीं । इस घटना के दो वर्ष बाद उनका शरीर शान्त हुआ, पर इस दौरान आपको कभी रक्तचाप का कष्ट नहीं हुआ । वे दोनों गुलाब के फूल उसी समय उनके बिस्तर से गायब हो गये थे और बाद में बहुत खोजने पर भी नहीं मिल पाये ।

(249) महाराज का बुलावा

श्री हेमचन्द्र जोशी, अवकाशप्राप्त रेलवे कमर्शियल इन्सपैक्टर, महाराज की प्रेरणा शक्ति का एक सुन्दर अनुभव प्रस्तुत करते हैं । आप कहते हैं कि अपर इन्डिया इक्सप्रेस गाड़ी के लेट हो जाने से मैं देर से ग्यारह बजे रात प्रयाग स्टेशन पहुँचा । पास में घर था और मैं वहाँ के लिये रिक्शा ले रहा था, एकाएक विचार आया कि चर्चलेन जाकर बाबा के दर्शन कर लेने चाहिये । मैं घर न जाकर इतनी देर रात में रिक्शा से उधर चला गया । रास्ते में यह सोच कर कि अब वहाँ सब लोग सो गये होंगे, मुझे अपने निर्णय पर खेद होने लगा पर मेरा रिक्शा उस ओर जाता रहा । उस घर में रोशनी देख कर मेरी खिन्नता दूर हुई । मैं भीतर गया और मैंने श्री सुधीर मुकर्जी को बाबा से बातें करते देखा । मुझ को देखते ही बाबा ने अपने तख़्त के नीचे से एक बड़ा कुल्हड़ खीर का उठा कर मुझे दिया और बोले, **"अभी खाले।"** यह सब मुझे ऐसा लगा जैसे वे मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे । मेरी इच्छा उस प्रसाद को घर ले जाने की हुई, पर मैं उनकी आज्ञा की अवहेलना नहीं कर सकता था । मैं भूखा भी था, वह प्रसाद मैंने वहीं पा लिया । बाबा मुकर्जी दादा से बोले, **"देख, रसोई घर में एक कुल्हड़ खीर और बची होगी, उसे इसे दे दे । यह घर ले जायेगा ।"**

(250) व्यास जी का अनुभव

बनारस के श्री शंकर प्रसाद व्यास, कैंची आश्रम में आये हुए थे । एक दिन महाराज उनसे बोले, **"इन पर्वतों में सिद्ध आत्माएँ वास करती हैं, तू इन्हें रोज दिन में हनुमान जी की कथा सुनाया**

कर ।" कृष्ण–बलराम कुटी में इसके लिये व्यवस्था भी कर दी गयी । कैंची के निर्जन स्थान में उन दिनों श्रोतागणों की संख्या बहुत कम थी, कुछ ग्रामीण महिलाएँ ही उनकी कथा सुनने आती थीं । व्यास जी का विद्वतापूर्ण प्रवचन बृहत् जनसमुदाय में हुआ करता था, इस परिपेक्ष्य में उन्हें यह कार्य नीरस प्रतीत होने लगा । किसी प्रकार वे तीन दिन तक यह कार्य करते रहे, तदनन्तर आपने बाबा से निवेदन किया कि कथा तो वे बराबर सुना रहे हैं, पर उनकी कथा को सुनने वाले यहाँ नहीं हैं । बाबा बोले, **"तूने लोगों से क्या लेना, हमने तुझसे सिद्ध आत्माओं को कथा सुनाने के लिये कही थी ।"** वे फिर बोले, **"देख, कल एक बुढ़िया भी कथा सुनने आयेगी । उसकी भद्दी शक्ल देख कर उससे घृणा मत करना, नहीं तो वह श्राप दे जायेगी ।"**

दूसरे दिन जब वे इस अरुचिकर कार्य को करने लगे तो उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि 'कृष्ण–बलराम' कुटी का कमरा प्रतिष्ठित व्यक्तियों से भरा था । उपस्थित लोगों में थे श्री कमलापति त्रिपाठी, मुख्यमन्त्री उत्तर प्रदेश, श्री वाइ. वी. चह्वाण, गृहमन्त्री केन्द्र, श्री श्यामा चरण शुक्ला, मुख्यमन्त्री, मध्य प्रदेश और अनेक राजनैतिक दल के नेतागण । इन सब के आगे वह बुढ़िया भी बैठी थी जिसका वर्णन बाबा कर चुके थे । प्रवचन के समाप्त होने पर वह बुढ़िया सब से पहले कमरे से बाहर चली गयी और ऐसी ग़ायब हुई कि फिर नहीं दिखायी दी । यह सब खेल बाबा की प्रेरणा शक्ति का था । कथा सुनने का निमन्त्रण किसी को दिया नहीं गया था और न इसके इश्तहार ही बाँटे गये थे ।

स्वभाव परिवर्तन

महाराज का बाह्य जगत पर जितना अधिकार था उतना ही अन्तर जगत पर भी । वे शिक्षा, उपदेश आदि की उपयोगिता को नहीं मानते थे और स्वयं व्यक्ति के स्वभाव में परिवर्तन लाने में समर्थ थे । 'मिटहिं न कठिन स्वभाव अभंगू ।' हृदय परिवर्तन वास्तव में दुष्कर कार्य है, पर बाबा के दर्शन और स्पर्श से सभी लोगों की मानसिक प्रवृत्तियों में परिवर्तन के सुन्दर परिणाम देखे गये और जिन पर कृपा विशेष हुई उनका तो जीवन ही बदल गया ।

(251) राम दास

हार्वर्ड विश्वविद्यालय, अमरीका के मनोविज्ञान के अध्यक्ष प्रो. रिचार्ड एल्पर्ट सन् 1967 में भारत आये और संयोगवश महाराज के एक अमरीकी भक्त के साथ उनके दर्शन हेतु भूमियाधार आश्रम (नैनीताल) पहुँचे । आप मनोवैज्ञानिक और सांसारिक थे, आध्यात्मिक प्रवृत्ति का आप में अभाव था । फलतः आप ने बाबा को जिस दृष्टि से देखा उससे वे आपके लिये दुरूहतर होते गये । बाबा ने आपकी लैण्डरोवर कार की सराहना की, यद्यपि उन्होंने उसे देखा नहीं था और बिना किसी परिचय के वे आपसे उस गाड़ी की याचना भी करने लगे । आपमें भीतर ही भीतर उनके प्रति कभी क्रोध और कभी घृणा के भाव उत्पन्न होने लगे जो बाबा की सप्रयोजन वाक् क्रीड़ा की प्रतिक्रिया के रूप में थे । बाबा ने इन दोनों व्यक्तियों को आश्रम में प्रसाद पाने के लिये भेज दिया और वहाँ से तृप्त होकर जब आप बाबा के पास उपस्थित हुए, बाबा ने आप पर अपनी कृपापूर्ण दृष्टि डालते हुए पूछा, **"कल रात तू खुले आकाश के नीचे खड़ा रहा, तेरी माँ ने तुझ से क्या कहा ? तेरी माँ पिछले साल मर गयी थी ? स्प्लीन के कष्ट से मरी ?"** बाबा के इन सरल प्रश्नों से एल्पर्ट साहब चकरा गये । पहली घटना गत रात्रि में भूमियाधार से कई सौ कि.मी दूर की थी । आप लघुशंका के लिए बाहर आये हुए थे और रात्रि के शान्त और नीरव वातावरण से मोहित हो, तारों के मन्द प्रकाश में कुछ क्षण खड़े ही रह गये । बाह्य प्रकृति की स्तब्धता से आपका आन्तरिक तादात्म्य हो गया । आपको एकाएक अपनी माँ का स्मरण हो आया और आप रोने लगे । आपको अपनी माँ की वाणी स्पष्ट सुनायी देने लगी जो आपको सान्त्वना दे रही थी । आपकी माँ गत वर्ष नौ महीने पूर्व अमरीका में स्प्लीन के कष्ट से ही इस संसार से विदा हुई थीं । गत रात्रि की यह घटना एल्पर्ट साहब ने किसी से व्यक्त भी नहीं की थी । बाबा के इन प्रश्नों ने आपके भीतर विचारों की क्रान्ति पैदा कर दी, जिससे आपमें असह्य आन्तरिक बेचैनी हो गयी । फलतः आपकी धारणा ने ऐसा पलटा खाया जिससे आपके जीवन की गतिविधि ही बदल गयी । आप अनुभव करने लगे कि आपकी यात्रा पूरी हो गयी और आप सही ठिकाने से आ लगे हैं ।

आप बाबा के अनन्य भक्त हो गये । आपको बाबा में अगाध प्रेम, दया, ज्ञान, हास्य एवं शक्ति के दर्शन होने लगे । आपने अपनी आजीविका के धन्धों को तिलाँजलि दे जन-सेवा में अपना जीवन लगाने का संकल्प ले

लिया । आप वास्तव में बिना किसी औपचारिकता के साधु हो गये । बाबा ने आपको 'रामदास' नाम दिया और उसी नाम से आप विश्व में विख्यात हुए । आपने अपनी विद्वता का उपयोग इस महान् विभूति की लीलाओं के प्रकाशन में किया और इस प्रकार भारत एवं विश्व को इस अलौकिक चरित्र के दर्शन कराये । आप ने बाबा के अनेक भक्तों से सम्पर्क स्थापित कर लगभग दो हजार लीलाओं का संकलन किया और घोर परिश्रम से सन् 1979 में, बाबा के समाधिस्थ होने के छः वर्ष बाद, 'मिरेकिल आफ लव' नाम की पुस्तक प्रकाशित की । इस पुस्तक के अध्ययन से विदेशों में बाबा के अनेकानेक नये भक्त बनते जा रहे हैं और उनमें से कई उनके धाम के दर्शन की लालसा से कैंची आश्रम आते हैं ।

(252) कर्नल जे.सी. मकन्ना

राजपूत रेजिमेंट सेन्टर, फतेहगढ़ के कर्नल जे.सी. मकन्ना स्वभाव से कड़े अनुशासक थे । आपने किले में साधुओं का आगमन तथा उनसे किसी प्रकार का सम्पर्क निषेध कर रखा था और सिपाहियों को इसके लिए कड़ी मनाही भी कर रखी थी । पास में गंगा के किनारे किलाघाट में महाराज ने अपना डेरा डाल दिया । फौजी लोग यहाँ छिप कर बाबा के दर्शन करने आते और कर्नल के भय से तुरन्त चले जाते । बाबा ने कर्नल का सुधार करने की ठान रखी थी । एक दिन उसकी अनुपस्थिति में वे उसके घर में प्रवेश कर गये और उसके बिछौने पर लेट गये । ड्यूटी में खड़े पंखा–कुली या अर्दली ने विनम्र भाव से मना किया, पर उन्होंने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया । कर्नल का आगमन हुआ । अर्दली ने भयभीत हो अपनी सफाई देते हुए उसे सारी स्थिति से अवगत कर दिया । मकन्ना क्रोधित हो अपने कमरे में गया और स्वभाववश उसने बाबा को बहुत फटकारा । अपने दुर्व्यवहार का उनमें कुछ भी असर न देख कर वह चकरा गया । बाबा बराबर उसकी ओर देख रहे थे और सहज भाव से मुस्करा रहे थे । यह उनकी दृष्टि और मुस्कान का अलौकिक प्रभाव था कि कर्नल का हृदय पलट गया और वह क्षमा माँगने लगा । उसने कुछ सन्तरे उन्हें समर्पित किये। इस प्रकार बाबा का अलौकिक स्पर्श पाकर वह उनका भक्त हो गया और इसके बाद उसने साधुओं के सम्बन्ध में लगाये अपने समस्त प्रतिबन्ध हटा दिये। बाबा की कृपा से उसकी प्रगति होती गयी और उसने जनरल के पद से अवकाश ग्रहण किया । यह बाबा का पहला अँग्रेज भक्त था ।

इस घटना का उल्लेख 'स्मृति–सुधा' सम्वत् 2040 के पृष्ठ 78 में हुआ है ।

(253) हरपाल सिंह

श्री ओंकार सिंह, कानपुर के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, अपने मित्र श्री हरपाल सिंह, डिप्टी कमिश्नर, लखनऊ को महाराज के दर्शन कराना चाहते थे, पर उनका झुकाव इस ओर न होने से आप कभी भी उन्हें बाबा के पास नहीं ला पाये । संयोगवश एक दिन आपको उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री, श्री गोविन्द बल्लभ पन्त, से मिलने लखनऊ आना पड़ा और उस समय बाबा भी लखनऊ में श्री सूरज नारायण मेहरोत्रा के घर पर विराजमान थे । पुलिस की वर्दी पहने आप सरकारी गाड़ी में लखनऊ आये और पहले बाबा के दर्शन करने गये । वहाँ आपने बाबा से हरपाल सिंह जी की कोठी में चलने का आग्रह किया । उस समय वहाँ श्री उमादत्त शुक्ला उपस्थित थे । बाबा ने आपकी बात मान ली । आप दोनों को अपनी गाड़ी में बिठाकर हरपाल जी के घर ले गये । बाहरी कमरे में बाबा और शुक्ला जी को बैठाकर आप भीतर गये और उन्हें लेकर बाबा के पास आये । बिना किसी शिष्टाचार के जब बाबा ने स्वभाववश उन्हें 'तू' कह कर सम्बोधित किया तो उन्हें यह अपमान प्रतीत हुआ और वे क्रोध में ओंकार सिंह जी से कहने लगे, "ले जा इस बद्तमीज को । कहाँ से ले आया इस बबाल को ।" बाबा के प्रति ऐसे अपशब्द सुन कर वे उत्तेजित हो उठे और उन्होंने अपना हाथ अपने रिवाल्वर की ओर बढ़ाया । बाबा ने तुरन्त उनका हाथ पकड़ लिया और उन्हें फटकारते हुए वे बाहर कार की ओर चल दिये । अपने अपमानकर्ता की प्रशंसा में वे कहते जा रहे थे, **"यह योगी है । तू समझता नहीं, यह योगी है ।"** इस घटना के बाद दिन प्रतिदिन हरपाल जी के स्वभाव में परिवर्तन आता गया । कुछ ही महीनों बाद जब उड़िया बाबा के शिष्य स्वामी कार्तिकेय जी लखनऊ में गोमती के किनारे चातुर्मास्य बिताने लगे तो हरपाल जी उनके शिष्य हो गये और नित्य प्रातःकाल गुरु की कुटिया में जाकर उनकी सेवा करने लगे ।

हरपाल सिंह जी लखनऊ में ही कमिश्नर भी बन गये और सेवा निवृत्ति होने पर आपकी पुनर्नियुक्ति इलाहाबाद में आफिसर्स ट्रेनिंग स्कूल में हुई, जहाँ दिल की बीमारी से आपका देहान्त हुआ । जब आपको दिल के भीषण दौरे पड़ते थे, तब भी आप खुशमिज़ाज दिखायी देते रहे । इस बात पर नर्स, डाक्टर और मित्रगणों को आश्चर्य था । डाक्टर और बीमार

दोनों भलीभाँति जानते थे कि मृत्यु निश्चित है, इस पर भी हरपाल जी सब को आत्मा सम्बन्धी गीता के श्लोक सुनाते थे । मोहत्याग का आपने ऐसा सुन्दर परिचय दिया कि अन्त समय तक आपने अपने परिवार के लोगों को अपने कमरे में आने की अनुमति नहीं दी ।

आपके निधन के समय बाबा नैनीताल में थे । वे अपने एक भक्त से सजल नेत्रों से प्रेमाश्रु बहाते हुए बोले, **"हरपाल चल दिया । वह आज हम में समा गया ।"** उन्हें योगी कह कर वास्तव में योगी बना देना बाबा की ही कृपा का फल था ।

(254) अमरीकी नागरिक का अनुभव

एक अमरीकी महिला ने जब अपने देशवासियों के साथ आकर प्रथम बार महाराज के दर्शन किये तो वह उनसे इतनी प्रभावित हुई कि उसे दुःख हुआ कि वह क्यों नहीं अपने पति को साथ ले आयी । वह इसी प्रयोजन से अमरीका वापस गयी और उसे लेकर कैंची में बाबा के दर्शन करने पुनः उपस्थित हुई । आश्रम में आकर उसके पति का मन खिन्न हो गया, यह देखकर कि विदेशी लोग बाबा के पीछे ऐसे पागल हो रहे हैं कि उनके चरणों में सिर रखने में उन्हें कुछ भी संकोच नहीं होता । स्वयं अपनी पत्नी की ऐसी प्रवृत्ति से उसका मन फट गया । सभी विदेशी नैनीताल में होटलों में ठहरते और नित्य सबेरे कैंची दर्शन को आते और शाम को वापस चले जाते थे । ये महाशय भी दिन भर कैंची में समय बिताकर अपनी पत्नी के साथ शाम को लौट जाते थे । यह क्रम सात दिनों तक लगातार चलता ही रहा और अन्त में वे इस स्थिति से ऊब गये । बाबा को कुछ लीला करनी थी । सम्भवतः इस कारण उन्होंने जान-बूझ कर उससे सम्पर्क नहीं रखा । उस व्यक्ति का क्षोभ इतना बढ़ गया कि वह अपनी पत्नी को छोड़ कर अमरीका वापस जाने की सोचने लगा ।

अगले दिन उसने पत्नी के साथ कैंची जाना स्वीकार नहीं किया और दिन भर नैनीताल में झील के किनारे दुःखद चिन्तन में अकेला बैठा रहा । यद्यपि उसमें आस्तिकता थी नहीं पर आज वह ईश्वर को याद करने लगा और अपने से पूछने लगा, "मैं यहाँ क्या कर रहा हूं ? यह व्यक्ति (महाराज) कौन है ? क्यों सब लोग उसके पीछे पागल हैं ?" एकाएक उसका मन स्वतः बोल उठा, "यदि तुझ में आस्था होती तो तुझे चमत्कार की आवश्यकता न होती ।" इन उलझनों में वह ईश्वर से निवेदन करने लगा, "भले ही मेरे अन्दर आस्था नहीं है, पर मैं चमत्कार देखना चाहूँगा ।"

दूसरे दिन उसने स्वदेश जानेका निश्चय कर लिया, पर पत्नी के आग्रह से वे दोनों उस दिन बाबा से अन्तिम विदाई लेने पहुँचे । उसने इस अवसर पर अपने मन का गुबार निकालने की ठानी । आप दोनों उस दिन सबेरे ही, अन्य विदेशियों से पहले, कैंची आ गये और वहाँ बरामदे में बाबा के तख़्त के आगे बैठ गये । बाबा उस समय राधाकुटी के भीतर थे । तख़्त में कुछ सेव रखे थे । बाबा की महिमा से, उनमें से एक सेव स्वतः लुढ़क कर तख़्त के नीचे चला गया । आपने जैसे ही झुक कर तख़्त के नीचे से उस सेव को उठाने का प्रयास किया, बाबा बिजली की भाँति बड़ी फुर्ती से वाहर आये और उस तख़्त पर ऐसे बैठे कि उनके पैरों से आपका हाथ दब गया और अपने हाथों से बावा ने आपके झुके सिर को ऐसे दबाया कि आपकी स्थिति ऐसी हो गयी कि आपने अपने को दण्डवत् प्रणाम करता सा पाया, जिस कार्य से आपको घृणा थी ।

बाबा ने आपकी ओर देखते हुए कई प्रश्न किये जिनमें कुछ सार्थक थे अन्य व्यर्थ, केवल अपनी महत्ता छिपाने के लिये किये गये थे । **"तू लेक (झील) पर क्या कर रहा था ? घुड़सवारी कर रहा था ? नाव में सैर कर रहा था ? तैरने गया था ?"** अन्त में **"ईश्वर को याद कर रहा था ?"** बाबा के सारगर्भित प्रश्नों से वह चकरा गया और उनके उत्तर देने में वह बच्चों की भाँति रोने लगा । बाबा ने उसे अपनी ओर खींचा और उसकी दाढ़ी में हाथ फेरते हुए बार–बार पूछने लगे, **"बता तूने क्या माँगा था, ईश्वर से ?"** बाबा की वाणी और स्पर्श से उसका हृदय पलट गया । उसके मन में उनके प्रति श्रद्धा और प्रेम उमड़ गया । वह समझने लगा कि किसी न किसी समय प्रत्येक व्यक्ति को ऐसी ही अनुभूति हुई होगी जिससे लोग इन्हें नहीं छोड़ पाते । बाबा के इन साधारण प्रश्नों ने उसे अनुभव करा दिया कि वे सर्वद्रष्टा हैं सर्वश्रोता हैं, इस प्रकार सर्वज्ञ हैं ।

इस घटना का उल्लेख रामदास जी ने 'मिरेकिल आफ लव' के पृ.सं. 8–10 में किया है ।

(255) क्षण मात्र में वैराग्य

सन 1949 में महाराज नौ भक्तों के साथ काशीपुर (जिला नैनीताल) गये और वहाँ श्री किशन चौबे के घर पर ठहरे । इस यात्रा का वर्णन 'विविध लीला' के प्रकरण में किया गया है । वहाँ से लौटते समय न मालूम

किस मौज में वे कस्बे के बाहर एक धूलि–धूसरित मार्ग पर चल पड़े । उसी मार्ग में सामने दूसरी ओर से गधों पर मिट्टी के बरतन लादे हुए कुम्हारों की एक टोली आ रही थी । उन में एक युवा कुम्हार था जो हाथ में हुक्का लिए धुआँ उड़ाता हुआ बाबा के पास से जा रहा था । बाबा उससे कुछ तेज़ स्वर में बोले, **"तू कौन है ?"** उसने भी आपसे उसी लहजे में वही प्रश्न किया । बाबा ने फिर अपना प्रश्न और तेजी से दोहराया और उसने भी क्रोधावेश में वही प्रत्युत्तर दिया । अब बाबा ने अपना प्रश्न बदल दिया और वे झिड़क कर कहने लगे, **"तू कौन जात है ?"** उसने भी उसी प्रकार आपके प्रश्न को दोहराया । बाबा तुरन्त बोले, **"हम भंगी हैं । तू कौन है ?"** इस बार वह गर्व के साथ बोला, "हम कुम्हार हैं ।" उन्होंने उसे मान्यता दी और वे विनम्र भाव से कहने लगे, **"हमें हुक्का पिलायेगा ?"** उसने चिलम आपकी ओर बढ़ा दी । बाबा ने दो–तीन कश लेकर अपना वरद् हस्त उसके सिर पर रख दिया । उसे उसी समय वास्तविक वैराग्य हो गया । वह अपने गधों को अपने साथियों के सुपुर्द कर बाबा के साथ चल दिया । वे पास में श्री राधे श्याम जी के बग़ीचे में गये । वहाँ बाबा के आदेश से उसने कुएँ के जल से स्नान किया । बाबा ने उसे साधुओं के से वस्त्र दिलवाये और एक माला और जाप देकर साधु बना दिया । उसी बग़ीचे में कुछ समय के लिये उसके खाने और रहने का प्रबन्ध कर और उसे बाद में बद्रीनाथ जाने का आदेश दे कर बाबा वहाँ से चल दिये ।

(256) स्थाई दृष्टिकोण की उपलब्धि

बनारस के शंकर प्रसाद व्यासजी ने जब से कैंची आश्रम में यह सुना कि महाराज ने एक व्यक्ति को पाँच रुपये दिलवा कर उससे अपनी पत्नी के नाम लाटरी का टिकट खरीदने को कहा और इससे उसे पाँच लाख रूपयों की प्राप्ति हुई (प्रसंग संख्या 315) तब से बार–बार आपके मन में यही इच्छा होती रही कि जैसे भी हो बाबा की ऐसी कृपा उन्हें भी प्राप्त करनी चाहिये । आप सोचते रहे कि इधर–उधर कथा सुनाने के लिये आपको बहुत भागना पड़ता है और यदि अच्छी धन–राशि योंही प्राप्त हो जाय तो इन परेशानियों से छुटकारा मिल सकता है । एक बार अवसर पाकर आपने उन

से लाटरी का निवेदन कर ही दिया । बाबा आपकी बात सुन कर चुप रहे और उन्होंने कुछ उत्तर नहीं दिया । उस रात जब व्यास जी सोये तो स्वप्न में आपको हनुमान जी दिखायी दिये । उन्होंने आपकी पीठ में मुष्टि प्रहार किया जिससे आपको बड़ी वेदना हुई । आप चीख उठे और आपकी नींद खुल गयी । जागने पर भी आप उस पीड़ा का अनुभव करते रहे । उसी समय बाबा ने आपके कमरे में प्रवेश किया और अपने हाथों से वे आपकी पीठ मलने लगे । बाबा के स्पर्श से आप तत्काल स्वस्थ हो गये और इन्हें सोने के लिये कह कर वे चले गये ।

दूसरे दिन प्रातःकाल के दर्शन में बाबा आपसे बोले, **"तू पाँच लाख रुपये चाहता है या हनुमान जी की भक्ति ? रुपयों से भक्ति नहीं होती कष्ट ज़रूर होता है । कल रात हनुमान जी ने तुझे यही सीख दी ।"** इस प्रकार बाबा की कृपा से आपकी रुपयों की लालसा सदा के लिये जाती रही और आप जीवन में एक स्थाई दृष्टिकोण प्राप्त कर सके ।

(257) अनायास दुर्व्यसन से छुटकारा

एक अमरीकी महिला भारत में गुरु की खोज में आयी थी । यहाँ कुछ साधुओं के चक्कर में पड़ कर उसने अपना सब धन गँवा दिया और उनकी संगति के प्रभाव से उसे चरस की बुरी लत पड़ गयी । इस प्रकार दर-दर भटकती हुई वह एक दिन वृन्दावन में बाबा के आगे परिक्रमा मार्ग से जा रही थी, बाबा को उस पर तरस आ गया । उन्होंने उसके लिये रहने, खाने आदि की व्यवस्था आश्रम में ही कर दी । इसके अलावा वे कभी-कभी उसके लिये अपने हाथों से चरस पैदा कर देते जिससे वह अपनी तलब मिटाती थी । कुछ समय बाद बाबा ने उसको अमरीका भेजने की व्यवस्था भी कर दी और जाते समय वे उस से बोले, **"अब तू चरस नहीं लेगी ।"** उसने बाबा की आज्ञा मान ली । यह महिला दूसरी बार सन् 1984 में अपने पुत्र को लेकर भारत आयी और कैंची आश्रम में कई दिन रही । उसने आश्रमवासियों को सुनाया कि उसने चरस छोड़ी नहीं, यह बाबा की प्रेरणा शक्ति का प्रभाव था कि उस दिन से कभी उसे चरस लेने की इच्छा ही नहीं हुई और यह दुर्व्यसन उससे अनायास छूट गया ।

वह इस बार, बाबा की महिमा से प्रेरित होकर, अपने पुत्र को उनके विग्रह के दर्शन कराने इस उद्देश्य से लायी कि उसका सार–हीन जीवन सुधर जाय । वह अमरीका में नशीली गोलियों का शिकार हो गया था और किसी काम का नहीं रह गया था ।

सन् 1985 में वह महिला पुनः अकेली आयी और सुनाने लगी कि महाराज के विग्रह के दर्शन मात्र से उसके लड़के के जीवन में आशातीत परिवर्तन आ गया । उसे नशीली गोलियों से अरुचि हो गयी और वह अपनी आजीविका के धन्धों में लग गया ।

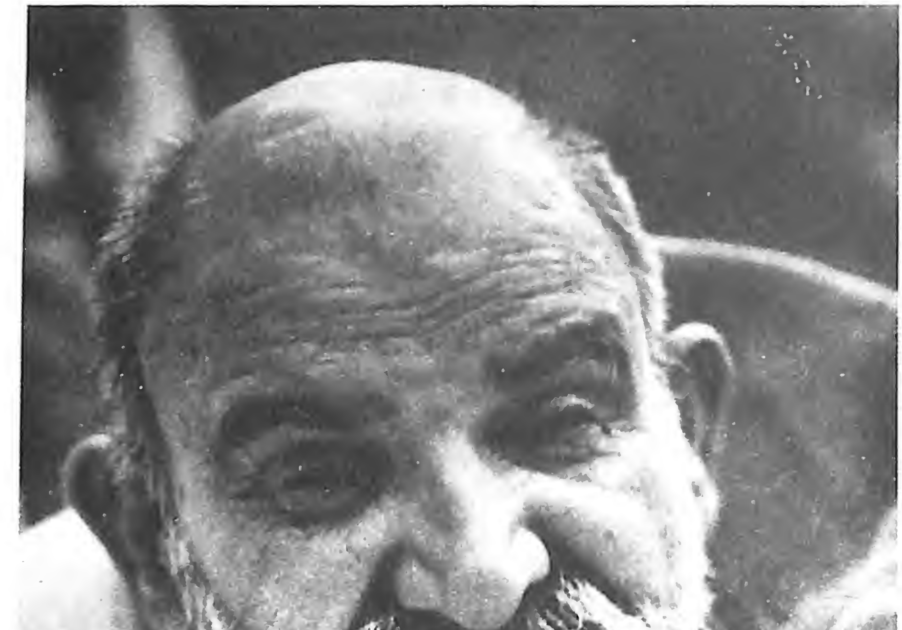

पर-दुःख द्रवित

करुणा के सागर और कृपा की मूर्ति

महाराज का हृदय अत्यन्त कोमल था । वे जिस पर भी हो कृपा ही करते थे । आपकी समस्त लीलाओं में आपके करुणामय स्वभाव के ही दर्शन होते हैं । वे सदा सर्वत्र परोपकार ही करते रहे । आपकी न अपनी कोई इच्छा थी और न अपना कोई कार्य ही । आप दूसरों के लिये जिये और अपनी महानता पर परदा डाले रहे । पग–पग पर होने वाले इन छोटे–बड़े समस्त उपकारों का संकलन एवं वर्णन सम्भव नहीं है ।

आपकी कृपा सदा अभेदपूर्ण रही, पर भक्त और उसके परिवार पर आपका विशेष झुकाव देखा गया । आप अधिकतर अयाचित ही कृपा करते, याचना करने पर तो वे अपने को रोक ही नहीं पाते थे । आपकी कृपा सदा अप्रत्यक्ष रूप से होती रही, पर यदि प्रत्यक्ष कृपा करनी पड़ती तो आप पात्र को धन्यवाद देने का अवसर भी नहीं देते थे । भक्त की साधारण एवं असाधारण स्थितियों में आप सहायक होकर उसके योग और क्षेम का निर्वाह करते रहे । आपके कृपा–सूर्य का प्रकाश जितना प्रत्यक्ष में दिखायी दिया उससे कहीं अधिक उसकी अनुभूति परोक्ष में होती रही । आपका सा स्वभाव न कभी सुना गया, न देखा गया और न उससे किसी की समता ही की जा सकती है ।

उदार हृदय बाबा बहुत क्षमाशील रहे । मानवीय दुर्बलताजन्य अपराधों पर वे ध्यान देते नहीं देखे गये । जघन्य अपराध करने वाले व्यक्ति को भी आपने घृणा से नहीं देखा अपितु उस पर दया ही की । यही तो भगवत् स्वरूप है । "जन अवगुन प्रभु मान न काऊ, दीन बन्धु अति मृदुल सुभाऊ" ।

श्री जीवन्ती माँ

(258) श्री जीवन्ती माँ

श्री जीवन्ती माँ को बाबा के दर्शन श्री माँ से पूर्व हनुमानगढ़ नैनीताल में हुए । आप अपनी एक सहेली के साथ दर्शनार्थ वहाँ गयी थीं । जैसे ही आपने बाबा को नमन किया वे हाथ हिला–हिला कर कहने लगे, "बड़ी सन्त है ! बड़ी सन्त है ! हमें रोटी खिलायेगी ।" कालान्तर में जब इस पर्वतीय क्षेत्र में बाबा के आश्रमों का निर्माण हुआ तो ऐसा संयोग घटित हुआ कि बाबा के लिये नित्य भोग तैयार करने का सौभाग्य आपको ही प्राप्त होता रहा । करुणा सागर ने आपकी एकाकी जीवन की समस्याओं से छुटकारा दिलाने के लिये आपको आदेश दिया कि आप अपना अध्यापन कार्य छोड़ दें, जो कि आपके जीवनयापन का एक मात्र सहारा था । बाबा की आज्ञा मानकर आपने सब कुछ त्याग दिया और आश्रमों की सेवा में श्री माँ की सहयोगी बन कर एक–निष्ठ भाव से संलग्न हो गयीं । इस प्रकार बाबा की कृपा से एक चिन्ताजनक एवं नैराश्यपूर्ण जीवन की परिणति, जन सेवा तथा भगवत् भजन द्वारा उत्साह पूर्ण और आनन्दमय जीवन में हो गयी।

लेखक और उसका परिवार

मुझे बाबा के दर्शन प्रथम बार सन् 1944 में हुए और सन् 1952 से आपने मुझे अपनी शरण में ले लिया । मैं केवल उनका नाम ही जानता था और उनकी अलौकिक लीलाओं के श्रवण का सौभाग्य मुझे नहीं हो पाया था । मेरी स्थिति सदैव "नहिं विद्या, नहिं बाहुबल और नहिं खर्चन को दाम' की रही, इस कारण मैं बाबा के किसी काम का न रहा और न मुझ से उनकी कुछ सेवा ही बन पायी । पर बिना सेवा के द्रवित होने वाले बाबा मेरी स्थिति को भलीभाँति जानते थे और निरन्तर मुझ पर अपनी अहैतुकी कृपा की अक्षय वर्षा करते रहे । केवल मैं ही उनका ऋणी नहीं हूँ, उनकी कृपा सामूहिक रूप से मेरे परिवार पर हुई और व्यक्तिगत रूप से मेरी पत्नी, माँ और दोनों पुत्रों पर अलग–अलग होती देखी गयी ।

(259) चिन्ताओं से मुक्ति

आर्थिक दशा मेरी सदा शोचनीय रही । पत्नी का जीवन हमेशा अनेकानेक भीषण रोगों से संघर्ष करते बीता और माँ भी सदा बीमार ही रही । दो लड़कों का पालन–पोषण और शिक्षा–दीक्षा भी थी । एक दिन 150 एलेनगंज, इलाहाबाद में दास के घर बाबा पधारे । पूजन, भोग के उपरान्त भी वे कुछ देर मौन ही बैठे रहे, सम्भवतः मेरी दयनीय स्थिति पर

ही विचार कर रहे हों । फिर एकाएक वे मुझसे कहने लगे, **"तू चिन्ता मत कर ।"** मैंने निवेदन किया कि मैं चिन्ता नहीं करता अपितु चिन्ता ही मुझे घेरे रहती है और छुड़ाने पर भी नहीं छोड़ती । बाबा पुनः ज़ोर देते हुए बोले, **"हमने कह दी चिन्ता मत कर ।"** मुझे विवश हो उनकी बात मान लेनी पड़ी, क्योंकि आगे तर्क करने से कोई लाभ न था । इस घटना के वर्षों बाद मैं बाबा की इस बात की यथार्थता समझ पाया । आपके कहने का तात्पर्य था, "सखा सोच त्यागहु बल मोरे, सब विधि घटब काज मैं तोरे ।" आपने धीरे–धीरे मेरी चिन्ताओं का अपहरण कर लिया । परिस्थितियाँ स्वतः बदलती गयीं और मेरे चिन्ताग्रस्त स्वभावमें तदनुसार परिवर्तन आता गया । इतने वर्षों में मेरी परिस्थितियाँ समूल बदल गयीं और मुझे चिन्ता की निस्सारता की अनुभूति हो गयी । अब भी मैं यदि भूल से अपने पूर्व स्वभाववश कभी किसी बात की चिन्ता कर बैठता हूँ तो वह कार्य मुझे स्वतः सुचारु रूप से पूर्ण होता दिखायी देता है । मुझे बाबा की बात का स्मरण हो उठता है और अपने कृत्य पर ग्लानि होने लगती है । बाबा की यह कृपा उनकी महासमाधि के बाद भी यथावत् बनी है ।

(260) "कर्ता कौन है ?"

घटना सन् 1960 की है । तब मैं थौर्नहिल रोड, इलाहाबाद में रहता था । बाबा अपने परिकरों के साथ रामेश्वर यात्रा के लिये अनेक रिक्शों में बैठकर चर्च लेन से स्टेशन जा रहे थे । जब इन्डियन प्रेस के पास सब रिक्शे थौर्नहिल रोड को मुड़ गये तो बाबा बिना किसी को कुछ सूचित किये अपने अन्तिम रिक्शा को विपरीत दिशा की ओर ले चले और मेरे घर पधारे केवल एक आदेश देने के लिये कि बच्चों को पढ़ाने में, मैं उन्हें फटकारा न करूं । बाबा का हृदय कितना कोमल था कि वे अन्यत्र होते हुए भी, बच्चों के प्रति पिता की प्रेमपूर्ण कटुता भी सहन नहीं कर सके। बाबा ने इस छोटी सी बात को इतना महत्व दिया यह जान कर मैं उनके अपनत्व से द्रवित हो गया । बाबा मुझ से कहने लगे, **"सब बने बनाये आते हैं ।"** उन्होंने कितने लोगों के दृष्टान्त दिये जिन्हें मैं जानता भी नहीं था और पूछने लगे कि वे बड़े पदों को कैसे प्राप्त हो गये? मेरी अल्पबुद्धि की तुष्टि हेतु आपने एक प्रश्न किया **"कर्ता कौन है ?"** बात मेरी समझ में आ गयी और यह प्रश्न मेरे जीवन का मार्गदर्शक बन गया। बच्चों की शिक्षा सहज रूप से उनके निजी परिश्रम से पूर्ण हुई और

बाबा की कृपा से उन्हें बिना प्रतीक्षा और संघर्ष किये अच्छे पद प्राप्त हो गये ।

(261) लड़कों की दीक्षा

मुझे चिन्ताओं से मुक्त करने के लिये बाबा ने मेरे समस्त उत्तरदायित्वों का भार अपने ऊपर ले लिया । ज्येष्ठ पुत्र की दीक्षा उनके आदेश से श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी के झूंसी आश्रम, प्रयाग में हुई जिसका समापन घर में उनके भावपूर्ण आशीर्वाद से हुआ । लड़के का सिर बाबा की गोद में था और वे अपना हाथ उसके सर पर रखे बहुत देर तक पूजागृह में समाधिस्थ बैठे रहे । उस दृश्य की अनुपम शोभा अवर्णनीय है । छोटे लड़के की दीक्षा बाबा ने स्वयं कैंची आश्रम में की । तब मैं इलाहाबाद में था और मुझे इसकी सूचना भी न थी ।

(262) लड़कों की नियुक्ति

बहुत विलम्ब से सूचना प्राप्त होने से मेरा बड़ा लड़का, दिवस्पति, स्टेट बैंक में नियुक्ति के लिये समय पर आवेदन पत्र न भेज सका । अपना आवेदन पत्र तैयार कर उसने बाबा को अर्पित किया और अन्तिम तिथि के डेढ़ महीने बाद वह उसे भेज पाया । यह बाबा की महिमा रही कि आशा न होते हुए भी उसे परीक्षा में बैठने की अनुमति प्राप्त हो गयी । लिखित परीक्षा सन्तोषप्रद रही । उसे साक्षात्कार-परीक्षा में जाना था, इसलिए उसने मुझ से परामर्श लिया । जो भी प्रश्न मैंने इस सम्बन्ध में उसे बताये, बाबा की प्रेरणा ऐसी रही कि वही प्रश्न अक्षरशः दूसरे दिन उससे पूछे गये । जब उसकी नियुक्ति की सूचना बाबा को दी गयी तो वे बोल उठे, **"हमने उसे एजेंट बना दी ।"**

इसके एक वर्ष बाद मेरे छोटे लड़के, दिवाकर को मेरठ विश्वविद्यालय में प्रवक्ता के पद पर नियुक्ति हेतु साक्षात्कार–परीक्षा देनी पड़ी । उपरोक्त घटना से प्रभावित हो उसने भी इस सम्बन्ध में मुझ से परामर्श लिया । यद्यपि मुझे इसका कुछ भी अनुभव नहीं था पर उसका मन रखने के लिये मैंने कुछ प्रश्न उससे पूछ ही लिये । यह सब बाबा की प्रेरणा शक्ति का खेल रहा कि इन्हीं प्रश्नों का महत्वपूर्ण उत्तर उसकी सफलता का कारण बना और तेरह सुयोग्य उम्मीदवारों में उसी की इस पद पर नियुक्ति हुई ।

(263) लड़कों का विवाह

दोनों लड़कों के विवाह का निश्चय भी बाबा ने कैंची आश्रम में एक ही दिन किया । लड़कों के अनुरूप सुयोग्य लड़कियों का चयन भी उन्हीं के द्वारा हुआ । मुझे केवल कार्य करने का आदेश मिला जिसका पालन कर पाना भी मेरे लिये सम्भव न था । बड़े लड़के के विवाह के पूर्व मेरी परिस्थिति भयानक रूप से खराब थी । पत्नी की पित्त की थैली का आपरेशन मेडिकल कालेज अस्पताल, इलाहाबाद में और माँ की आँखों का आपरेशन सीतापुर अस्पताल, इलाहाबाद में होना अत्यन्त आवश्यक हो गया था । विवाह जैसे बड़े कार्य के लिये सभी आवश्यक वस्तुओं और सुविधाओं का मेरे पास अभाव था । घर की देख-भाल के लिये भी अपना कोई न था । इस विषम परिस्थिति में मैं बाबा की कृपा का चमत्कार देखता ही रह गया । मेरे परिचित लोगों ने इस कार्य को अपना कार्य समझ कर पूरा किया । सभी आवश्यक वस्तुएँ और सुविधाएँ जिनका अभाव मुझे खटक रहा था स्वतः सुलभ होने लगीं । अपनी सीमित स्थिति का मुझे भान ही नहीं रहा । सम्पूर्ण कार्य बड़े पैमाने में सुख और सन्तोष से सम्पन्न हुआ । कमी किसी चीज की नहीं रही । यहाँ तक कि मेरी बीमार पत्नी और माँ भी उठ कर इस शुभ कार्य में भाग लेने लगीं और बिना किसी आपरेशन के स्वतः स्वस्थ हो चलीं ।

यद्यपि पिछले वर्ष ही बाबा ने समाधि ले ली थी, पर आप श्री माँ को इस विवाह में उपस्थित होने का आदेश दे गये थे । श्री माँ के आगमन से इस लौकिक कार्य में अलौकिकता छा गयी ।

(264) प्रारब्ध भोग और सुरक्षा

पत्नी को प्रारब्धजन्य रोगों का सदा सामना करते ही रहना पड़ा । एक-एक कर अनेक भीषण रोगों ने आपको आक्रान्त किया और कई बार आप की स्थिति चिन्ताजनक भी हो उठी । पर बाबा की कृपा सदा आपकी सुरक्षा करती रही । बाबा यदा-कदा आकर दर्शन देते और कहते, **"हिम्मत मत हारो, हिम्मते मरदां मददे खुदा"**। बाबा के दर्शन से आपकी सहनशक्ति बढ़ जाती और उनकी वाणी से मनोबल । मेरी स्थिति इस प्रकार गिरी थी कि उससे यथोचित उपचार सम्भव न था । मुझे आश्चर्य है कि इस लम्बे संघर्षमय जीवन में मुझे उनकी कृपा से सर्वत्र सब सुविधाएँ प्राप्त होती रहीं । बाबा की कृपा की प्रत्यक्ष झलक मुझे पत्नी के उपचार में

दिखायी दी । उन्हें सभी स्थितियों में सर्वत्र सब लोगों से सहानुभूति एवं सहयोग मिला ।

(265) भगवत् दर्शन

एकबार महाराज प्रसन्न मुद्रा में चर्च लेन, इलाहाबाद में विराजमान थे। उनके तख़्त के पास केवल मैं, मेरी माँ और पत्नी बैठे थे । ऐसे वातावरण में माँ ने बाबा से विनम्र याचना की, "बाबा ! मुझे भगवान् के दर्शन करा दो ।" तुरन्त एक ही साँस में बाबा तीन बार कह उठे, **"हो जायेंगे——।"** उनके कहने के ढंग से ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वे बात को टाल रहे हैं या इस विषय पर वार्ता को प्रोत्साहित नहीं करना चाहते । पर तीन बार आपके मुखार्विन्द से निकला वरदान व्यर्थ हो नहीं सकता था ।

मेरी माँ बहुत समय तक बीमार रहीं और उन्हें बहुत कष्ट सहना पड़ा । जब उनका अन्त समय समीप आया तो उनमें कुछ अद्‌भुत बातें दिखायी दीं । उनके समस्त कष्ट लुप्त हो गये और उनके मुख पर बड़ी शान्ति दिखायी देने लगी और एक प्रकार की आकर्षक कान्ति भी उन पर छाई हुई थी । उनकी इस आनन्दमय स्थिति में न मालूम किस प्रेरणा से मैं पूजागृह से राम–दरबार की उस छवि को उठा लाया, जिसकी वे नित्य उपासना किया करती थीं, और उसे लाकर मैंने उनकी आँखों के आगे रख दिया । इसको देखते ही माँ को अपना भान ही न रहा, उनकी आँखे तुरन्त उस छवि में स्थिर हो गयीं और वह अपने पूर्ण विकसित नेत्रों से उसे बराबर निहारती रहीं और अन्त में जब धीरे–धीरे उनकी आँखें बन्द हुईं तो उनका शरीर भी शान्त हो गया । माँ के आनन्दमय मुख मण्डल और आँखों की आभा से यह भासित हो रहा था कि उन्हें उस छवि में साक्षात् भगवान् के दर्शन हो रहे हैं । हम सब लोग उस समय वियोग–जन्य दुःख को भूल कर भाव विभोर हो राम नाम कीर्तन करते रहे । यह घटना महाराज की समाधि के बाद की है ।

(266) बदली से छुटकारा

घटना सन् 1968 इलाहाबाद की है । मैं तब पचास वर्ष की आयु पार कर चुका था । बाबा ने एक दिन घर पर आकर दर्शन दिये । मैं उनका पूजन कर ही पाया था कि वे कहने लगे, **"घबरा मत तेरी बदली**

नहीं होगी ।" मैं बाबा के शब्दों को सुनकर अवाक् रह गया क्योंकि मेरे मस्तिष्क में उस क्षण बदली का कोई विचार भी न था । यह बात अवश्य थी कि मैं अखिल भारतीय सेवा में था । मुझे इलाहाबाद में कार्य करते सोलह वर्ष हो चुके थे और किसी भी दिन मेरी बदली होने की आशंका हो रही थी । मैं गत कई दिनों से इसी चिन्ता में था । बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, पत्नी और माँ बीमार थीं, आर्थिक स्थिति ने और भी अधिक गिरना था और देश के सुदूर भाग में बदली हो जाने से घर की देख–भाल भी सम्भव न थी । हो सकता है बाबा का इस समय आगमन मुझे इस चिन्ता से मुक्त करने हेतु ही हुआ हो । मैंने प्रत्युत्तर में कहा, "बाबा ! अब मैं निश्चिंत हो गया हूँ, श्रीमुख से निकले शब्द व्यर्थ नहीं जा सकते ।" बाबा ने अपने को छिपाने का प्रयत्न किया और बोले, "हम विभागीय केन्द्रीय मन्त्री से कह कर तेरी बदली रुकवा देंगे ।" मैंने निवेदन किया कि महाराज की शक्ति के आगे मन्त्री की क्या हस्ती ! बाबा ने विषयान्तर कर दिया । उनके जाने के एक महीने के भीतर मेरे कार्यालय को निर्देश प्राप्त हुआ कि जिनकी आयु पचास वर्ष हो चुकी हो उनकी बदली उनकी स्वेच्छा से ही होनी चाहिये । इस प्रकार बदली के भय से मुक्त हो मैं आगामी आठ वर्ष इलाहाबाद में ही रह कर कार्य करता रहा ।

बाबा जिस पर भी कृपा करते उसकी पग–पग पर होने वाली सभी परिस्थितियों को स्वतः नियन्त्रित कर देते थे । "सुर, नर, मुनि प्रसन्न ता ऊपर' ऐसी स्थिति का निर्माण कर देना उनकी कृपा की विशेषता है । किसी के जीवन में आनेवाली समस्त परिस्थितियों के चिन्ताजनक अस्तित्व को मिटा सकना और इस प्रकार उसके योग और क्षेम का निर्वाह कर देना, क्या यह मानवीय कार्य हो सकता है ? मैं बाबा की कृपा का पात्र बना इसमें मेरी कोई महत्ता नहीं है । यह उनकी अभेदपूर्ण, अहैतुकी एवं अयाचित कृपा का स्वरूप है । ऐसी कृपा क्षणमात्र के दर्शन से सर्वत्र सभी लोगों को प्राप्त होती रही । वे असंख्य उपकार लोगों पर नित्य किया करते थे – वे कृपा की मूर्ति थे ।

श्री सिंह परिवार

श्री केहर सिंह, आइ.ए.एस., अवकाशप्राप्त सचिव उत्तर प्रदेश सरकार, ज़िला बुलन्दशहर के निवासी हैं । आप बाबा के अनन्य भक्त हैं और आप को बाबा का निकटतम सम्पर्क प्राप्त रहा । अपनी साधु–प्रकृति के कारण आप बाबा को पुत्रवत् प्रिय हुए और उन्होंने सदा 'कमठ अण्ड की नाईं' आपके योग और क्षेम का निर्वाह किया । आपके जीवन की साधारण और असाधारण घटनाओं में बाबा की कृपा के जो दर्शन होते हैं वह उनकी

कृंपा–शैली का उदाहरण है । ऐसी कृपा बाबा अपने सभी भक्तों पर किया करते थे । आप से सम्बन्धित कुछ घटनाओं का उल्लेख इस पुस्तक में अन्यत्र भी हुआ है और कुछ का इस प्रकरण में किया जा रहा है । आप को भी इस बात का खेद है कि आपसे बाबा की यथेष्ट सेवा नहीं हो पायी ।

(267) ज्वर का शमन

एक बार सिंह साहब लखनऊ से अपनी कार में कैंची गये और वहाँ आश्रम के पास ही डाक बंगले में ठहरे । वहाँ पहुँचते ही आप को ज्वर हो गया । आप उसी बेचैनी में बाबा के दर्शन के लिये चल दिये । बाबा मोटर सड़क पर ही आपको कंकड़ों के ऊपर बैठे मिल गये । ज्योंहि आप श्री चरणों को नमन और स्पर्श करने झुक ही रहे थे, बाबा ने कम्बल से हाथ बाहर निकाल कर आप की ओर बढ़ाया । आपने देखा बाबा उन्हें कलाकन्द का टुकड़ा दे रहे थे । आप नमन करने की जल्दी में थे आपने उसे तुरन्त अपने मुँह में डाल लिया और अपने सिर को उनके चरणों पर रख दिया । सिर उठाते ही आप अनुभव करने लगे कि आपको ज्वर ने छोड़ दिया और आप स्वस्थ हो उनसे बातें करते रहे ।

इसी प्रकार का एक अनुभव आपको इस घटना के बहुत समय बाद भी हुआ । 25 दिसम्बर 1965 का दिन था, आपको सूचना मिली कि बाबा लखनऊ आये हुए हैं । आप उनकी खोज में अनेक भक्तों के घर गये । बाबा के दर्शन आपको कहीं नहीं हो पाये । आप अन्त में उनको खोजते हुए चौक में एक भक्त के घर पहुँचे । इस बार आपको और भी तेज़ ज्वर था । यहाँ आपको बाबा मिल गये । आप जैसे ही उन्हें नमन करने झुक रहे थे बाबा ने अपनी अंगुली आगे बढ़ा कर आपके पेट में छुआ दी । तत्काल आपका ज्वर शान्त हो गया और आप उनके सत्संग का आनन्द लेते रहे ।

(268) वास्तविक हित

यह घटना सन् 1955 के सितम्बर की है । श्री सिंह इलाहाबाद में आबकारी कमिश्नर थे । आप हृदय रोग से पीड़ित रहे तदुपरान्त आपका 'नर्वस ब्रेक डाउन' भी हो गया । आप चार महीने की छुट्टी लेकर बरेली अपने मित्र–वैद्य के घर चले गये और वहीं रह कर उनसे इलाज करा रहे

थे । एक दिन शाम को उत्तर प्रदेश सरकार का लखनऊ से अर्धशासकीय पत्र आपको डाक द्वारा प्राप्त हुआ । उसे पढ़ कर आपकी तबीयत खिन्न हो गयी । पत्र आबकारी विभाग के सचिव का था । उसने लिखा था कि मन्त्री महोदय ने 22 सितम्बर के दिन 11 बजे मसूरी में एक मीटिंग बुलायी है और आपको आदेश है कि आप उस मीटिंग में उपस्थित रहें । आप 'नर्वस ब्रेक डाउन' के मरीज़ थे और आप को भय था कि पहाड़ जाने पर दुबारा दिल का दौरा पड़ सकता है । आपने इसका ज़िक्र न वैद्य जी से किया और न किसी अन्य से, पर महाराज जहाँ कहीं भी होंगे आपकी परेशानी भाँप गये और उससे द्रवित हो गये । इस पत्र के आने के पन्द्रह घन्टे के बाद दूसरे दिन प्रातःकाल वैद्य जी ने जब रोज़ की भाँति नाश्ता किया और अपने घर पर ही औषधालय में मरीज़ों को देखने गये तो वे पाँच ही मिनट में लपकते हुए केहर सिंह जी के पास आये और बोले, "नीचे चलो, तुमसे कोई मिलने आया है । एक मोटा आदमी है, अपना नाम बाबा नीब करौरी बताता है ।" आप जल्दी से नीचे गये । आपने उन्हें मरीज़ों की बैंच में सबके बीच में बैठा देखा । महाराज आपसे बोले, **"अरे ! तू तो ऊपर रहता है, चल वहीं चल ।"** अब बाबा आगे-आगे और आप पीछे-पीछे चलते रहे । बाबा उस मकान में ऐसे जा रहे थे जैसे बरसों से उस में रह रहे हों । जवानों की सी तेज़ रफ़्तार में वे सीढ़ियों से चढ़ कर सिंह साहब के कमरे में उनकी चारपाई पर बैठ गये । आप प्रणाम कर ही पाये थे कि बाबा आप से कहने लगे –

"कल तेरे पास कुलदीप नारायण सिंह का खत आया ?"

"हाँ ।"

"मन्त्री ने मसूरी में मीटिंग बुलायी है ?"

"हाँ ।"

"तुझे मीटिंग में बुलाया है ?"

"हाँ"

"तो तू जाने से क्यों डर रहा है ? मीटिंग में जा, तेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा ।" यह कह कर वे चारपाई से उठे और नीचे को चल दिये । आपने थोड़ी देर और बैठने को कहा पर वे माने नहीं । आपने सिंह साहब को अपने साथ भी नहीं आने दिया । उन्हें घर के बाहर ही छोड़ दिया । इस घटना में मुश्किल से पाँच मिनट लगे होंगे, न जाने वे कहाँ चले गये । उनका आगमन जैसा रहस्यपूर्ण था वैसा ही जाना भी । वे न पहले बरेली में थे और न बाद को । अब कुछ सोचना था नहीं । सिंह साहब मीटिंग में गये और उनका कुछ भी नहीं बिगड़ा ।

(269) रोग का अपहरण

घटना अप्रैल 1972 की है । श्री केहर सिंह मार्च के अन्तिम सप्ताह में 'फ्लू' के ज्वर से आक्रान्त रहे तदुपरान्त अप्रैल के आरम्भ से आपको 'डाइरिया' हो गया, जिससे दिन प्रतिदिन आपकी शक्ति क्षीण होती गयी । आप एक घूँट पानी पचाने में भी असमर्थ हो गये । अनेक उपचार हो गये पर स्थिति गिरती ही गयी । डाक्टर ग्लूकोज और खून चढ़ाने की बात सोचने लगे । एक दिन आपकी स्थिति ऐसी हो गयी कि आप शौच जाने में भी असमर्थ हो गये । उस रात आप अपने आप से दुःखी होकर कहने लगे, "अब मेरी दुर्दशा हो जायेगी । अब मेरे लिये नरक हो जायेगा ।" उस बेबसी में आपको महाराज याद आये । आप उनसे प्रार्थना करने लगे कि मुझे इस दुनियाँ से हटा दो या जीने लायक बना दो । उस रात जब सारा संसार सो रहा था, बाबा ने पौने तीन सौ मील दूर से मन ही मन की गयी सिंह साहब की पुकार वृन्दावन आश्रम में सुन ली और उनके रोग को उसी समय अपने ऊपर ले लिया । उन्हें भीषण दस्त होने लगे । उनके कपड़े गन्दे होते चले गये, जिन्हें आश्रम में माइयों ने बारबार साफ़ किये । उसी समय एक नया 'बैड-पैन' मँगाया गया जो उस आश्रम में सुरक्षित है और आज भी इस घटना की याद दिलाता है । अनेक उपचार किये गये, पर कोई भी कारगर नहीं हुआ । ऐसा लगने लगा कि अब बाबा का शरीर जवाब दे जायेगा । सभी लोग वहाँ चिन्तित थे । ग्लूकोज भी चढ़ाया गया था । इधर सिंह साहब को उस रात गहरी नींद आयी । फिर तीन दिन तक उन्हें पाखाना नहीं हुआ । बिना किसी दवा के वे स्वस्थ हो गये । उन्हें अपनी प्रार्थना की फलकारिता पर आश्चर्य मिश्रित प्रसन्नता थी । दूसरे दिन सायंकाल साढ़े पाँच बजे वृन्दावन आश्रम में बाबा उठ बैठे । उन्होंने स्नान किया फिर स्वस्थ एवं प्रसन्नचित्त हो लोगों से पूर्ववत् वार्ता करने लगे । श्री माँ उस समय वहीं थीं, उनका यह हमेशा का अनुभव रहा कि बाबा किसी न किसी की मुसीबत स्वयं झेल कर उसे स्वस्थ कर देते हैं, पर यह कृपा किस पर हुई यह कोई नहीं जान सका ।

बाबा के लखनऊ के एक भक्त ने जो उस समय वृन्दावन आश्रम में उपस्थित थे, लखनऊ लौट आने पर केहर सिंह जी को सूचित किया कि अमुक तारीख की रात से बाबा का दस्तों से बुरा हाल हो गया था । यह तारीख वही थी जिस दिन सिंह साहब ने अपने दस्तों से छुटकारा पाने के लिये बाबा से प्रार्थना की थी । आप को बहुत ग्लानि हुई यह जानकर कि आप के कष्ट का भुगतान बाबा को करना पड़ा ।

(270) 'मेटहिं कठिन कुअंक भाल के'

सन् 1948 में एक दिन श्री केहर सिंह को अपने मित्र के साथ एक भृगु संहिता वाले के घर जाना पड़ा । वहाँ आपने भी अपने बारे में उससे लिखित विवरण पाने की इच्छा व्यक्त की । आपकी जन्म-पत्री बनी ही नहीं थी फिर भी उसने आपसे कुछ प्रश्न किये और उसके आधार पर अपनी संहिता से आपकी जन्म-पत्री खोज निकाली और आप को एक लम्बा विवरण लिखकर दिया । उसमें लिखित सभी बातें आपके विगत जीवन की घटनाओं में सत्य होती देखी गयीं, इस कारण वह आपको विश्वसनीय प्रतीत हुई । उसमें भविष्य की एक बात अशुभ थी । उसके अनुसार 54 वर्ष की आयु में किसी भयानक रोग से आपकी मृत्यु होनी थी । इससे आपको मानसिक परेशानी हो गयी । आप अपने बच्चों के लिये कुछ भी न कर पाये थे और इन जिम्मेदारियों का अब पूरा होना भी सम्भव न था । इसके बहुत समय बाद एक दिन एक ज्योतिषाचार्य किसी काम से आपसे मिलने आये हुए थे, आपने इस सम्बन्ध में उनसे बातें कीं । उन्होंने आपकी जन्म-पत्री का फिर से निर्माण किया और आपके हाथ की रेखाओं का निरीक्षण भी किया । उन्होंने इस भविष्यवाणी का समर्थन करते हुए आपको दिखाया कि आपकी जीवन रेखा इसी उम्र में खण्डित भी है । अब आगे सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं रही ।

सन् 1963 में जब आपने 54वें वर्ष में प्रवेश किया तो आपकी जीभ के नीचे के भाग में एक मांस का लोथड़ा उभर आया । डाक्टर ने इसे 'कैन्सरस ग्रोथ' बताया । अब आप अत्यधिक चिन्तित रहने लगे । आप संकुचित थे और निर्णय भी नहीं कर पाये थे कि इस मुसीबत का बखान बाबा से किया जाय या नहीं । अकस्मात् महाराज का लखनऊ में आगमन हो गया । आप सारे दिन उनके साथ घूमते रहे, श्री सूरज नारायण मेहरोत्रा और प्रेमलाल भी आपके साथ थे । शाम को बाबा ने हनुमान सेतु के पास प्रेमलाल जी के गुरु शाहन्शाह की कुटिया के सामने गाड़ी रुकवायी और वहीं गोमती के किनारे जमीन में बैठ गये । बाबा ने मेहरोत्रा और प्रेमलाल जी को कुछ काम बताकर इधर-उधर भेज दिया और आपके कान के पास अपना मुँह लाकर कहने लगे, "अब कह ।" इस प्रकार बाबा ने आपको अपनी मुसीबत बताने का पूरा मौका दिया । आप बाबा के इस प्रेमपूर्ण व्यवहार से अपने को रोक न सके और बोल उठे, "महाराज ! मेरी जीभ में कैन्सर हो गया है ।" बाबा ने अपने बाएँ हाथ से आपको अपने पास खींच

कर अपनी छाती से चिपका लिया और दाहिने हाथ से आपके सिर को जोरों से रगड़ने लगे । इसके बाद बाबा ने आपको छोड़ दिया और कुछ बोले नहीं । आप रोज शीशे में जीभ के इस लोथड़े को देखते रहते थे और यह दिन प्रति दिन कम होता जा रहा था । एक हफ्ते में आपकी जीभ ही साफ नहीं हुई अपितु हाथ में आपकी जीवन-रेखा भी जुड़ कर अखण्ड दिखायी देने लगी ।

(271) अनेक रोगों से छुटकारा

मई प्रथम सप्ताह 1961 की बात है । श्री केहर सिंह को कार्यालय सम्बन्धी अनेक परेशानियाँ रहीं जिससे आप चिन्तित और निरुत्साहित हो गये। आपको पेट की शिकायत भी हो गयी और आप दिन प्रतिदिन कमजोर होते गये । एक दिन बाबा का लखनऊ में आगमन हो ही गया, आपकी कमजोर दशा को देख कर बाबा ने आपसे सचिवालय से छुट्टी लेकर डाक्टर एस. पी. गुप्ता रीडर, मेडिकल कालेज, लखनऊ से इलाज करवाने को कहा । आपने समझा था कि डाक्टर बाबा से सुपरिचित होगा, इसलिए उनका नाम लेते हुए आपने डाक्टर को बताया कि बाबा ने ही आपसे इलाज करवाने उन्हें भेजा है । डाक्टर बाबा को जानता न था और उसने उनका नाम तक नहीं सुना था । अस्तु, रोग बताने पर उसने पन्द्रह दिन के लिये एक दवा पेचिश की और दूसरी समय से पूर्व बुढापे के आगमन को रोकने की लिख दी । इन दवाइयों के सेवन से आपके स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक परिवर्तन आ गये । जिससे आपको इसके आगे सेवन का लोभ हो गया ।

आप पन्द्रह दिन बाद डाक्टर के पास जाकर इन दवाइयों को पुनः लिखा लाये । इस बार इनका उलटा असर हुआ । इससे लीवर, किडनी, सभी खराब हो गये । हाथ, पैर और मुँह में सूजन आ गयी । पलकें इतनी भारी हो गयीं कि आँखें छोटी दिखायी देने लगीं । वजन बहुत गिर गया और दिल की धड़कन बढ़ गयी । इसी बीच आपको ट्रान्स्पोर्ट कमिश्नर का कार्य भार भी ग्रहण करना पड़ा । आपने लाचार हो कर एक होमियोपैथ का इलाज आरम्भ कर दिया पर उससे कुछ लाभ नहीं हुआ । ऐसी विवशता में आपको लखनऊ में बाबा के आने की खबर मिली । आप उनकी खोज में प्रेम लाल जी के घर पहुँचे जहाँ सीढ़ियों से ऊपर जाने में आपके पैर जवाब दे गये । आप बाबा को नमन करने ही जा रहे थे कि वे बोले, "पैर उठा । अपना पैर उठा ।" आपने अपना पैर उठा कर उन्हें

दिखाया । उन्होंने सूजन का अंदाज़ा लेने के बहाने आपके पैर को अपनी अंगुली से दबाया और कुछ बोले नहीं । उनका इतना स्पर्श पर्याप्त था । अब वही होमियोपैथ की दवा काम करने लगी और आप शीघ्र स्वस्थ हो गये ।

(272) मरी पत्नी जी उठी

सन् 1968 में सिंह साहब की पत्नी को दस्तों की शिकायत हुई, उसने धीरे–धीरे संग्रहणी का रूप ले लिया । इस रोग के कई महीनों के भुगतान से. आपका शरीर केवल अस्थियों का ढांचा रह गया । आपका वजन एक बच्चे के वजन के बराबर हो चला । जो इलाज चल रहा था उससे कुछ लाभ न देख कर घरवालों की राय से सिंह साहब ने इलाज बदल दिया । अब डाक्टर ए. सी. दास, का इलाज आरम्भ हुआ । वे एंटीबायोटिक औषधियों से स्थिति को कुछ नियन्त्रण में ला सके और आपको कुछ हल्का शक्तिवर्धक तरल भोजन भी दिया जाने लगा । एक दिन सबेरे साढ़े दस बजे जब आपको पलंग में बिठाकर भोजन कराया जा रहा था, एकाएक आपके होंठ और हाथ काँपने लगे, भोजन की प्लेट आपके हाथ से गिर गयी और आप स्वयं लुढ़क कर बिस्तर में ही गिर पड़ीं । देखते–देखते उनकी आँखें पथरा गयीं और उनके मुँह में एक चम्मच दवा भी न जा सकी । सारा परिवार शोकमग्न हो ग्या और आगे क्या करना है कोई सोच भी न सका ।

इधर जब आपका जीवन समाप्त हो रहा था, सामने खिड़की के पास रखी हुई महाराज की फोटो चार फीट की ऊँचाई से, जैसे किसी आँधी के झोंके से हो, जमीन पर धड़ाम से गिर पड़ी, जबकि बाहर हवा चल नहीं रही थी । उसका इस प्रकार गिरना पत्नी की मृत्यु का द्योतक था । सिंह साहब ने समझा कि फोटो का शीशा चूर–चूर हो गया होगा, पर उसमें दरार तक नहीं आयी थी । लगभग चालीस मिनट तक घर में शोक छाया रहा । एकाएक लाश ने आँखें खोल दीं और आपकी पत्नी चकित दृष्टि से इधर–उधर देखकर 'ऐं' बोल उठी ।

उस समय महाराज कैंची आश्रम में श्री आर.सी. सोनी, डाइरेक्टर जनरल वन (केन्द्रीय सरकार) की पत्नी से वार्ता कर रहे थे । वे एकाएक बोले, **"केहर सिंह की घरवाली मर गयी । वह हमारा भक्त है, हम उसे मरने नहीं देंगे ।"** श्रीमती सोनी इन विरोधी बातों से मर गयी मरने नहीं देंगे – कोई आशय नहीं निकाल सकीं । वह यह नहीं सोच पायीं

कि बाबा में लाश को जिला देने की शक्ति भी है । इसी दिन कैंची में रहते हुए भी बाबा शाम के साढ़े चार बजे लखनऊ में सिंह साहब को दर्शन देने की इच्छा से श्री सन्तोष कुमार चौधरी, आइ.ए.एस. के घर प्रकट हो गये । उन्होंने सिंह साहब को वहाँ टेलिफोन द्वारा बुलवाया । बाबा वहाँ केवल आधा घंटे हँसते-मुस्कराते बातें करते रहे । उन्होंने आपसे आपकी पत्नी के बारे में कुछ नहीं पूछा और आपने भी इस विषय में कोई बात नहीं चलायी ।

डाक्टर दास ने जब आकर फिर आपकी पत्नी को देखा तो वे चकित रह गये । सिंह साहब जब उन्हें धन्यवाद देने लगे तो वे बोले, "मैंने आपकी पत्नी के लिये कुछ किया ही नहीं, धन्यवाद किस बात का ! मेरी एन्टीबायोटिक दवाइयों से इनके दस्तों ने रुकना था, पर बचना इन्होंने था नहीं । मृत्यु इनकी स्वाभाविक थी । यह जो कुछ हुआ इसे मैं भगवत् कृपा ही कह सकता हूँ । आप भगवान् को ही धन्यवाद दें ।" इसके बाद उनके स्वास्थ्य में सुधार बड़ी तेजी से आया और वे थोड़े ही दिनों में एक स्वस्थ युवती की भाँति दिखायी देने लगीं । इस घटना के बाद वे साढ़े छः वर्ष और जीवित रहीं ।

सन् 1982 में एक दिन कैंची आश्रम में बाबा की चर्चाएँ चल रही थीं । इस दौरान श्रीमती सोनी ने श्री केहर सिंह को बाबा की वह बात जो उन्होंने आपकी पत्नी के सम्बन्ध में कही थी कि 'मर गयी पर हम उसे मरने नहीं देंगे' सुनायी । इससे सिंह साहब का विश्वास दृढ़ हुआ कि आपकी पत्नी को जिन्दा करने का अद्भुत चमत्कार बाबा का ही था । वे कहने लगे कि फोटो का उस समय वेग से गिर पड़ना और दरार भी न आना निश्चित रूप से वायु के रूप में बाबा के आगमन का सूचक था । आपका हृदय और भी द्रवीभूत हो गया यह सोच कर कि उस दिन जब बाबा ने सन्तोष कुमार चौधरी जी के घर पर उन्हें दर्शन दिये तो उन्होंने जानबूझ कर इस बारे में कोई चर्चा नहीं की । वे अपनी महत्ता छिपाये रखना चाहते थे और आपकी कृतज्ञता के इच्छुक नहीं थे । उनका उद्देश्य केवल आपका ढाढ़स बढ़ाना था ।

(273) बच्चों पर कृपा

सिंह साहब का एक लड़का जब सात वर्ष का हुआ तो उसके पैर में हड्डी का टी.बी. बताया गया । लखनऊ में उस समय सिविल सर्जन डा. गौरी शंकर भार्गव थे, उन्होंने इस बालक को बलरामपुर अस्पताल में भरती कर

लिया और उसके पैर में प्लास्टर चढ़ा दिया । लड़के की माँ उसकी देखभाल के लिये अस्पताल में ही रहती थीं । इस बीच भार्गव साहब की बदली हो गयी । उनके स्थान पर उस अस्पताल में जो डाक्टर महोदय आये उनका व्यवहार उस बच्चे के प्रति उदासीन रहा, इस कारण आपकी पत्नी चिन्तित और खिन्न थीं । अन्य कोई उपचार न होने से वे लाचार थीं । एक दिन बाबा लखनऊ में श्री हरिराम जोशी के घर में आकर ठहरे और थोड़ी देर बाद बोले, **"केहर सिंह का लड़का बीमार है, हम उसे अस्पताल में देखने जा रहे हैं ।"** ऐसा कहकर वे सीधे अस्पताल पहुँचे और लड़के पर अपनी कृपा दृष्टि डालते हुए उसकी माँ से बोले, **"इलाज ग़लत हो रहा है । इसके पैर में टी.बी. नहीं है । इसे घर ले जाओ यह ठीक हो जायेगा ।"** बाबा के शब्द, सिंह साहब के लिये ब्रह्मवाक्य हुआ करते थे, वे उसे तुरन्त घर ले आये और फिर कोई इलाज नहीं किया । एक दिन आपने डा. एस.एन. माथुर को उसे दिखाया और उनकी राय ली । उन्होंने लड़के के पैर के मोटापे को देखते हुए कहा कि यह निश्चित रूप से टी.बी. नहीं है और उन्होंने प्लास्टर हटा दिया । लड़का बिना किसी औषधि के धीरे-धीरे स्वास्थ्य लाभ कर गया ।

सिंह साहब का दूसरा लड़का जो एक आघात से अपनी आँख खो बैठा था, बाबा ने उसे आँख देकर सुखपूर्वक जीने योग्य बना दिया । इस लड़के की आँख में अब भी शीशे के कण बहुत संख्या में मौजूद हैं जिससे उसे कोई कष्ट एवं असुविधा नहीं है । यह नेत्र चिकित्सा के इतिहास में एक अनहोनी बात है । इस घटना का उल्लेख प्रसंग संख्या 235 में हुआ है ।

बाबा के आशीर्वाद से आपकी सुयोग्य लड़की को उसके अनुरूप पति प्राप्त हुआ और वह अपने पतिगृह में सुखी एवं सन्तुष्ट है ।

(274) एक अद्‌भुत घटना

एक बार सिंह साहब का एक लड़का देहरादून से तेज रफ्तार में कार चलाता हुआ मेरठ को आ रहा था । रात्रि का समय था और सड़क खाली थी । एक आदमी उसी सड़क में तेजी से मोटर साइकिल चलाता हुआ विपरीत दिशा से आ रहा था । रुड़की और मुजफ्फरनगर के बीच एक मोड़ पर एकाएक दोनों का आमना-सामना हुआ । आपका लड़का कहता है कि उस समय की घबराहट में वह ब्रेक का भी उपयोग करना भूल गया । यदि ब्रेक का उपयोग होता तो भी उस स्थिति में टक्कर

हुए बिना नहीं रहती । पर एक ऐसी अद्‌भुत घटना देखने में आयी कि दोनों गाड़ियाँ अपने स्थानों में स्वतः ऐसी घूम गयीं कि उनका मुँह उन्हीं दिशाओं को हो गया जिस ओर से वे आ रही थीं । दोनों चालकों को इस घटना पर आश्चर्य तो बहुत हुआ, पर इससे भी अधिक हुई प्रसन्नता अपनी जान बचने की । यद्यपि इस घटना में बाबा का अस्तित्व प्रत्यक्ष नहीं होता, पर सिंह साहब की और अन्य सभी भक्तों की यह धारणा है कि ऐसे आश्चर्यजनक कार्य अपने भक्तों की प्रसन्नता बनाये रखने के लिये बाबा ही किया करते थे ।

(275) भक्त की लाज की रक्षा

एक बार श्री केहर सिंह, आबकारी कमिश्नर, सरकारी काम से लखनऊ आये हुए थे और रात की गाड़ी से इलाहाबाद वापस जा रहे थे । कई अधिकारी उन्हें स्टेशन में विदा करने आये थे । आप गाड़ी में सवार हो गये और उस आदमी की प्रतीक्षा करते रहे जिससे आपने पहले से ही टिकट मँगवा रखा था । वह व्यक्ति न तो टिकट खरीद पाया और न आपको सूचित करने स्वयं स्टेशन आ सका । गाड़ी चल दी, आप बहुत चिन्तित हो गये । बिना टिकट सफर करना आपके लिये बेकायदे और लज्जास्पद बात थी । इससे आप बहुत दुःखी हुए और उस रात तीन बजे तक सो नहीं पाये । आप बराबर महाराज से प्रार्थना करते रहे कि वे आप की लाज बचावें । एकाएक आपको नींद आ गयी और जब सबेरे सात बजे प्रयाग स्टेशन में आपकी नींद खुली तो फिर भय आप पर सवार हो गया ।

इसके बाद जब अगले स्टेशन इलाहाबाद में गाड़ी रुकी तो आपने देखा कि चौदह मातहत आप की अगवानी में खड़े थे । अन्य अवसरों पर उनका आना अच्छा लगता था, पर आज वे यमदूत से प्रतीत होने लगे । आप सोचने लगे कि आज मेरी फजीहत होनी है । ये लोग बिना टिकट पकड़े जाने पर यही कहेंगे कि बड़ा ईमानदार बना फिरता था, आज पकड़ा गया । वे इस खबर को सर्वत्र फैलायेंगे भी । आप आगे-आगे सिविल लाइन्स के गेट की ओर जाते रहे और मातहत पीछे-पीछे चल रहे थे । आपका दिल धक-धक कर रहा था, महाराज ने अपनी अप्रत्यक्ष कृपा बरसा दी । "अरे, यह क्या ! यहाँ न टिकट कलक्टर है और न रेल का कोई कर्मचारी ही । टिकट कौन माँगता और कौन देता ?" आप अपनी कार में बैठ कर घर चले आये ।

(276) बाबा की देन

श्री केहर सिंह को पूजा, पाठ, जाप आदि में रुचि नहीं थी । बाबा ने आपको हनुमान चालीसा देकर पाठ करने को कहा और जाप के लिए मन्त्र भी दिया । उस समय आपने इन्हें महत्व नहीं दिया पर समय आने पर अपनी वृद्धावस्था की मानसिक स्थिति में ये आपके लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुयीं । बाबा ने आपको आशीर्वाद दिया, **"जा तू मौज करेगा और तेरे सभी बच्चे मौज करेंगे ।"** उनका आशीर्वाद सफल हुआ । आपके तीनों लड़के सम्पन्न हैं, अच्छे कारोबार में लगे हैं और सुख–शान्तिपूर्वक गृहस्थ जीवन व्यतीत कर रहे हैं । लड़की भी अपने गृहस्थ में सन्तुष्ट है । सिंह साहब स्वयं अपने समस्त उत्तरदायित्वों से निवृत्त हो कर संसार से निर्लिप्त हो निश्चिन्तता पूर्वक वृन्दावन और कैंची आश्रमों में भगवत् भजन करते हुए अपना जीवन सफल कर रहे हैं ।

मेहरोत्रा परिवार

स्व. श्री सूरज नारायण मेहरोत्रा, डाइरेक्टर जेल इन्डस्ट्रीज उत्तर प्रदेश, महाराज के पुराने भक्तों में रहे । आपके घर लाटूश रोड, लखनऊ में बाबा बहुधा आते–जाते रहते थे । आप और आपके परिवार के ऊपर भी उनकी कृपा दृष्टि बराबर होती रही ।

(277) बवासीर से छुटकारा

मेहरोत्रा जी को बवासीर थी । एक बार आपका यह रोग बहुत कष्टप्रद हो गया और जान का बचना भी कठिन जान पड़ने लगा । आपने अपने आधीनस्थ जेल अधीक्षक, आगरा को फोन किया कि वे वृन्दावन जाकर महाराज को आपके गिरे हुए स्वास्थ्य की स्थिति से अवगत करें और उसके सुधार के लिये प्रार्थना करें । जेल अधीक्षक ने वृन्दावन आश्रम में आकर महाराज से सब कुछ निवेदन किया । उस समय किसी दर्शनार्थी ने बाबा को मिठाई का भोग लगाया था । बाबा ने उसमें से कुछ पेड़े उठाकर जेल अधीक्षक के हाथ में देते हुए कहा कि सूरज को दे देना । मेहरोत्रा जी ने उस प्रसाद के चार या पाँच पेड़े खाये होंगे कि उन्हें अपने कष्ट से मुक्ति मिल गयी ।

(278) हाथ काम करने लगा

एक बार मेहरोत्रा जी चारबाग रेलवे स्टेशन, लखनऊ में किसी व्यक्ति को विदा करने गये थे । वहाँ एक आम के छिलके के ऊपर पैर पड़ने से

वे फिसल गये जिससे उनके कन्धे की हड्डी अलग हो गयी । उन्होंने लखनऊ के विशेषज्ञ डा. सिन्हा का इलाज कराया पर पूर्ण लाभ न हो पाया । इसके बाद आपने दूसरे विशेषज्ञ डा. सिंह का इलाज कराया पर स्थिति में कोई विशेष अन्तर नहीं आया । मेहरोत्रा जी निराश हो चले । इतने इलाज के बाद भी वे उस हाथ से लिख नहीं पाते थे और बहुत प्रयत्न करने पर भी मेज पर रखी सुई को उस हाथ से उठाने में असमर्थ रहे । एक दिन जब आपके घर बाबा का आगमन हुआ तब आपने अपना कष्ट उन्हें सुनाया । बाबा ने अपने हाथों से आपके कन्धे को थोड़ा मला, उनके स्पर्श मात्र से ही हाथ अच्छी तरह काम करने लगा और फिर आपको जीवनपर्यन्त इस कारण कोई कष्ट नहीं हुआ ।

(279) पत्नी के संकटों का निवारण

मेहरोत्राजी की पत्नी एक बार दिल की बीमारी 'एन्जिना पैक्टोरिस' से आक्रान्त पड़ी थीं । हृदय में रक्त का संचार कम होने से उन्हें भीषण कष्ट का सामना करना पड़ रहा था । डाक्टर भरसक प्रयत्न कर रहे थे पर उनकी दशा गिरती जा रही थी । महाराज उस समय कानपुर में थे । वहाँ वे भक्तों से श्रीमती मेहरोत्रा की दशा का वर्णन करते हुए बोले, **"यदि उसको कुछ हो गया तो हमें खाना कौन खिलायेगा ?"** उन लोगों को छोड़ कर वे तुरन्त मेहरोत्रा जी के घर लखनऊ पहुँच गये । उस समय वे बेहोश पड़ी थीं । बाबा ने अपने पैर के अंगूठे को उनके माथे में रख दिया । लगभग रात के बारह बजे श्रीमती जी ने आँखें खोलीं । बाबा ने उन्हें अपना प्रसाद खाने को दिया जिससे आपमें सुधार आता चला गया । इस अवसर में प्रथम बार बाबा मेहरोत्रा जी के घर नौ दिन तक रहे । जब आप पूर्ण स्वस्थ हो गयीं तो आपके हाथ का भोजन पाकर बाबा चले गये ।

एक बार आपके रक्तचाप के अत्यधिक बढ़ जाने से बड़ी चिन्ताजनक स्थिति हो गयी थी और डाक्टरों के भरसक प्रयत्न से भी रक्तचाप नियन्त्रित नहीं हो पाया । बाबा ने आकर कैसे इन्हें स्वस्थ किया इसका उल्लेख प्रसंग संख्या 238 में किया गया है ।

(280) लड़कों पर कृपा

श्री सूरज नारायण मेहरोत्रा का लड़का गोपाल, आयु आठ वर्ष, अपने चाचा दया नारायण मेहरोत्रा जी के साथ बनारस गया हुआ था । साथ में

लाला नामक एक बालक नौकर भी था । आप लोग विजयानगरम् की कोठी में ठहरे । बनारस में उस समय साम्प्रदायिक दंगों के कारण 'कर्फ्यू' लगा था । उसी रात दोनों बालकों को भीषण ज्वर हो गया । कोई उपचार न हो पाने से दया नारायण जी अत्यधिक चिन्तातुर हो उठे । बाबा जहाँ भी हों, यह सब देख रहे थे । यह उनकी कृपा थी कि दूसरे ही दिन विजयानगरम् के पते से चाचा के नाम से डाक द्वारा भेजा गया एक पार्सल मिला । इसमें केवल एक फूल रखा था । पार्सल के बाहर भेजने वाले का नाम बाबा नीब करौरी लिखा था । चाचा जी ने अज्ञात प्रेरणा से उस फूल की कुछ पंखुड़ियाँ लाला के माथे पर और शेष फूल गोपाल के सीने पर रख दिया । इस से दोनों लड़कों का ज्वर शान्त हो गया । चाचा जी बाबा की इस लीला से चकित रह गये । वे समझ नहीं पाये कि बाबा को विजयानगरम् का पता कैसे ज्ञात हुआ और कैसे इतनी जल्दी डाक द्वारा पार्सल का आना सम्भव हुआ ।

लखनऊ में अपने मकान की ऊपर की मंजिल से मेहरोत्रा जी के पुत्र अमर मेहरोत्रा के नीचे गिर जाने से उसे जो गहरी अन्दरूनी चोट आई उससे उसकी जान को खतरा हो गया था । बाबा उस समय इलाहाबाद में थे, तुरन्त लखनऊ पहुँच गये । उन्होंने कैसे इस बालक की रक्षा की इसका वर्णन 'प्रसंग संख्या 116 में किया गया है ।

(281) लड़की पर कृपा

मेहरोत्रा जी की पुत्री श्रीमती ज्ञानू जी के विवाह के लिये वर महाराज ने ही बताया और उनकी कृपा से ही यह कार्य सम्पन्न हुआ । ज्ञानू जी का लड़का एक बार किसी गम्भीर रोग से शिमला के एक अस्पताल में भरती था । ज्ञानू जी बहुत बेचैन थीं और बाबा से उसकी सुरक्षा की प्रार्थना करना चाहती थीं, पर भ्रमणशील बाबा का पता न जान पाने के कारण अशान्त थीं । महाराज उस समय श्री केहर सिंह और श्री जवाहर लाल बर्मन के साथ कार में वृन्दावन से दिल्ली जा रहे थे । रास्ते में वे केहर सिंह जी से बोले, **"ज्ञानू मेरी बड़ी भक्त है । यदि उसका लड़का न रहा तो हम मुँह दिखाने लायक नहीं रहेंगे।"** दिल्ली पहुँचते ही बाबा ने बर्मन साहब के घर से ज्ञानू जी को फोन किया। उनके पतिदेव बोले, "ज्ञानू रो रही है । लड़का अस्पताल में है, उसकी जिन्दगी खराब हो गयी है ।" बाबा ने ज्ञानू को फोन देने को कहा और बोले, **"लड़के का इलाज गलत हो रहा है । वह ठीक है, उसे घर ले आओ । घर में स्वस्थ हो जायेगा ।"** बाबा के

आदेश से लड़का घर ले आया गया और उसके स्वास्थ्य में दिन प्रतिदिन सुधार आता गया । वह बिना उपचार के पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर गया ।

(282) तिवारी परिवार की गरीबी जाती रही

कैंची निवासी श्री पूर्णानन्द तिवारी के कई बच्चे थे । ये सब अब बड़े हो गये हैं । आरम्भ में आपकी आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी । एक ओर आपका वृहत् परिवार और दूसरी ओर आजीविका का कोई साधन न था । थोड़ी खेती-बाड़ी थी पर वह आपके परिवार के लिये पर्याप्त नहीं थी । तिवारी जी अपने जीवन से बहुत दुःखी और निराश हो गये थे । उन्होंने अपनी जमीन को बेचने का निर्णय भी कर लिया था और एक पंजाबी महोदय से इस विषय में बातें भी कर ली थीं । सन् 1962 में, ऐसी गिरी स्थिति में बाबा आपके घर स्वतः आये और उन्होंने आपका ढाढ़स बंधाया । वे बोले, **"मुसीबत से घबरा मत । हाथी जाता रहता है और कुत्तों के भौंकने की परवाह नहीं करता ।"** यह उनकी वाणी का प्रभाव था कि आपने अपना इरादा बदल दिया ।

महाराज आपकी गरीबी से पिघल उठे । आश्रम निर्माण के साथ बाबा ने एक पक्की इमारत आपके घर के पास ही बनवादी, जिसमें डाकखाना खुलवाया और आपके लिए एक दुकान बनवा दी । पास में, बाबा ने अधिकारियों से कह कर, रोडवेज का बस स्टेशन भी खुलवा दिया जिसकी चौकीदारी का काम तिवारी जी को दिलवा दिया । इस प्रकार अपनी खेती-बाड़ी की देखभाल करते हुए आप चौकीदारी भी करते रहे और दुकान भी चलाते रहे । आश्रम, बस-स्टैण्ड और डाकखाने के पास यह अकेली दुकान बहुत अच्छी चल पड़ी । धीरे-धीरे इस भू-भाग से फल और सब्जी बाहर भेजने के लिये मोटर सड़क के किनारे की आपकी दुकान प्रमुख केन्द्र हो गयी । बाबा की कृपा से सभी बच्चे सुशिक्षित और सुयोग्य हो गये और आप का कारोबार दिन-दिन प्रगति करता गया । वे कष्ट के दिन बीत गये और पूर्णानन्द जी का एक स्वस्थ एवं सुव्यवस्थित परिवार हो गया।

(283) पत्नी का विषम परिस्थिति से छुटकारा

इन गरीबी के दिनों में एक बार तिवारी जी की पत्नी ज्वर और श्वास से बहुत कष्ट पा रही थीं । श्वास के लिये जो दवा आप भवाली के डाक्टर से हाल बताकर लाये थे, उसका सेवन आपकी पत्नी नहीं कर रही

थीं क्योंकि इसके सेवन से उनका कष्ट असह्य होता जा रहा था । गरीबी में आपके पास अन्य कोई उपचार भी न था । इस कारण तिवारी जी परेशान थे । उन दिनों हरिदास बाबा नित्य कैंची आश्रम के निर्माण कार्य की देखभाल के लिये हनुमानगढ़, नैनीताल से आया करते थे। एक दिन वापसी के लिये बस की प्रतीक्षा में वे तिवारी जी की दुकान में बैठे थे । उन्होंने उनसे अपनी परेशानी का बखान किया, पर हरिदास बाबा उनकी बात सुनते ही रहे और बस आने पर नित्य की भाँति हनुमानगढ़ चले गये । महाराज लखनऊ से ही यह सारा दृश्य देख रहे थे । उन्होंने नैनीताल अपने एक भक्त के पास फोन द्वारा हरिदास बाबा को आदेश भिजवाया कि वे तुरन्त नैनीताल से डाक्टर प्रेम लाल को लेजाकर कैंची में पूर्णानन्द की पत्नी को दिखायें, वह बहुत कष्ट पा रही है । हरिदास बाबा उसी रात एक टैक्सी में उस डाक्टर को लेकर तीन बजे तिवारी जी के घर पहुँचे । डाक्टर ने उनको मियादी ज्वर बताया और दवा लिख दी । जो गलत दवा अब तक दी जा रही थी उसे आगे देने की मनाही कर दी । नई दवा के सेवन से उन्हें लाभ हुआ और वे कुछ ही दिनों में स्वस्थ हो गयीं ।

(284) तिवारी जी के भविष्य की चिन्ता

महाराज ने अपनी नर लीला समाप्त करने के दो महीने पूर्व जुलाई 1973 में रोडवेज विभाग के एक उच्चपदाधिकारी से कह कर तिवारी जी की बदली पास में आठ कि.मी. दूर भवाली रोडवेज में करवा दी । तिवारी जी बाबा के इस कार्य से दुःखी हो गये क्योंकि वे कैंची से बाहर नहीं जाना चाहते थे । बाबा ने यह कार्य उनके भविष्य के हित को देख कर किया था । वे अपनी अनुपस्थिति में उनके लिये एक पक्की व्यवस्था बना रहे थे। वे जानते थे कि बाद में घर से दूर बदली हो जाने पर तिवारी जी अपने धन्धों की देखभाल भली प्रकार नहीं कर पायेंगे और वृद्धावस्था में स्वास्थ्य के गिरने से जीवन दुःखमय हो जायेगा । बाबा ने उन्हें समझाया कि उन्होंने ऐसी व्यवस्था की है कि दो महीने भवाली में काम करने के बाद वे फिर कैंची वापस भेज दिये जायेंगे और इस प्रकार वे बदली के भय से आगे मुक्त हो जायेंगे । बाबा की महासमाधि के बाद वास्तव में आप कैंची बस स्टैण्ड को वापस भेज दिये गये । इनकी वापसी के एक वर्ष के भीतर ही आर्थिक लाभ न होने से यह बस स्टैण्ड बन्द कर दिया गया और तिवारी जी जीवनपर्यन्त इस खाली इमारत के चौकीदार हो गये । इनके पास काम नहीं रहा पर वेतन पूरा था । यह पक्की इमारत और इसका फर्नीचर आपके अपने काम के हो गये ।

(285) श्री पवार परिवार

श्री एस.एस. पवार (अवकाश प्राप्त) आइ.पी.एस. सहारनपुर महाराज के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि बाबा मेरे हर कष्ट के निवारक थे । मेरी समस्त परेशानियाँ उन्होंने हर लीं और मेरे परिवार पर सदा कृपा बरसाते रहे ।

आप कहते हैं कि सन् 1961 में जब मैं कानपुर में वर्टिको बीमारी के कारण चिन्ताजनक एवं असहाय अवस्था में पड़ा था, कृपा मूर्ति बाबा तब अर्धरात्रि में मेरे घर उपस्थित हुए और मेरी पत्नी को ढाढ़स देते हुए बोले, **"माँ ! तू चिन्तित है ? पवार ठीक हो जायेगा ।"** उनका आशीर्वाद सफल हुआ । यह उनके आदेश का ही बल था कि मैं अपने एक मात्र पुत्र को इन्जीनियरिंग में शिक्षा दिलवाने के लिये जर्मनी भेज सका। सोलह वर्ष, जब तक वह सुयोग्य बन कर भारत नहीं आ गया, हम लोग उसकी प्रतीक्षा करते रहे और बाबा हमारा मनोबल बढ़ाये रहे ।

(286) लड़की का विवाह

पवार जी और उनकी पत्नी बड़ी लड़की के विवाह के लिये बहुत चिन्तित थे । एक दिन बाबा ने दर्शन दिये और बोले, **"एक इन्जीनियर लड़का अभी विदेश से आया है । तेरी बिरादरी का है । जा, उससे बातें कर ।"** बाबा ने उस लड़के के बारे में सब विवरण मुझे दिये। मैंने निवेदन किया कि विदेश में शिक्षा प्राप्त इन्जीनियर लड़कों की माँग बहुत होती है और उसे शायद मैं पूरा नहीं कर सकूंगा । बाबा तुरन्त बोल उठे, **"सब ठीक हो जायेगा, तू जा तो ।"** मैंने लड़के के सम्बन्ध में मालूमात कर बातें की । काम बनते देर नहीं लगी । बाबा की कृपा ऐसी हुई कि विवाह बहुत आसानी से हो गया । दामाद किर्लोस्कर इण्डिया, विश्व विख्यात फर्म का वाइस प्रेजिडेण्ट है ।

(287) सखा असहाय को

हल्द्वानी सन् 1951 की घटना है । शरद ऋतु थी और रविवार का दिन था, उत्तर प्रदेश वन विभाग के कर्मचारी श्री पूरन चन्द्र जोशी की पत्नी पर लकवा पड़ गया । इस छोटी उम्र में आपका चेहरा विकृत हो गया और रंग भी धूमिल हो गया । आँखों में सफेद बादल से छा गये । ऐसी दयनीय

स्थिति में आपके पतिदेव को घर से बाहर जाना पड़ा और उनके लौटने पर स्थिति और भी खराब हो गयी । जब जोशी जी ने आपको डाक्टर को दिखाया तो उसने लखनऊ या अन्य बड़े स्थानों में इलाज कराने की राय दी । इलाज में अत्यधिक व्यय की आशंका थी जो उनकी सामर्थ्य से बाहर था । ये दोनों उस रोज़ निराशा में महाराज को याद करते–करते सो गये। स्वप्न में बाबा ने आप दोनों को दर्शन दिये और दूसरे दिन से आपके स्वास्थ्य में सुधार आने लगा । इसके कुछ दिन बाद बाबा स्वयं इनके घर पधारे और बड़ी सहानुभूति से आपसे पूछने लगे, **"बहू, क्या हुआ तुझे?"** उन्होने बड़ी कृपापूर्ण दृष्टि से आपको देखा और अपनी एक हथेली आपके सिर पर और दूसरी ठुड्डी के नीचे रख कर आपके मुँह को घुमाया और उसे सीधा कर दिया । इससे आपके चेहरे की कान्ति भी वापस आ गयी ।

(288) धन धनहीन को

श्री बद्रीविशाल का जन्म और पुनर्जन्म बाबा की कृपा से हुआ और उनका संरक्षण भी वे ही करते रहे । आपके पिताजी का स्वर्गवास हो जाने पर घर की आर्थिक दशा अत्यन्त दयनीय हो गयी थी । बाबा के आदेश से ही आपने अध्ययन किया और बी.एस.सी. कर लेने के बाद, उनकी आज्ञा से आपने के.आर. कालेज आगरा में एम.एस.सी. कक्षा में दाखिला लिया । इसी दौरान एक समय ऐसा आया कि धन के अभाव में आप बहुत चिन्ताग्रस्त हो गये । कोई उपचार न पाकर आप आगरा राजामण्डी स्थित एक भक्त के घर, जहाँ बहुधा बाबा आया–जाया करते थे, उनकी खोज में पहुँचे । वहाँ आपको ज्ञात हुआ कि एक महीने पूर्व बाबा कभी आये थे और तब से फिर नहीं आये । इस उत्तर से आप बहुत निराश और दुःखी हो गये । अपने अन्तःकरण में बाबा का ध्यान करते हुए आप मन ही मन कहने लगे, "गुरुदेव ! आप सर्वव्यापी हो, अन्तर्यामी हो, मुझ पर दया करो । मैं आज आप के दर्शन के लिये ही आया हूँ ।" इस प्रकार चिन्तन करते आप गली से बाहर आ ही रहे थे कि उन भक्त महोदय का नौकर आपके पीछे भागता हुआ आया और बोला, "महाराज अभी–अभी बाहर से आये हैं और आप को बुला रहे हैं ।" आप लौट कर वहाँ गये और बाबा के आगे नत मस्तक हुए । आपको देखते ही वे कहने लगे, **"हमें पता है तेरे पास पैसों की बहुत कमी है । मेहनत से पढ़ना, कल तक व्यवस्था हो जायेगी ।"** दूसरे दिन जब आप कालेज पहुँचे आपको आफिस से सूचना मिली कि आपकी छात्रवृत्ति सरकार से आ गयी है और उसी दिन

उसे लेने का आदेश भी था । अब आप पाली इन्टर कालेज, शिकोहाबाद में भौतिक विज्ञान के प्रवक्ता हैं । इस प्रकार न मालूम कितने बद्रीविशालों के योग क्षेम का निर्वाह बाबा करते रहे ।

श्रीमती चम्पा साह पर कृपा

श्रीमती चम्पा साह, मल्लीताल, नैनीताल, महाराज की अहैतुकी कृपा का बखान करते हुए कहती हैं कि साधु वर्ग पर किसी प्रकार की आस्था न रखने पर भी आप पर बाबा ने अनेक छोटे–बड़े उपकार किये और आपके जीवन की गतिविधि ही बदल दी ।

(289) छाया चित्र

आरम्भ में जब महाराज का नैनीताल में आगमन हुआ और उनकी ख्याति घर–घर फैल गयी तो आपने एक या दो बार उनके दर्शन किये थे । इससे आपकी मानसिक प्रवृत्ति में कोई खास अन्तर तो आया नहीं, पर अन्य महिलाओं के घरों में बाबा के छाया चित्रों को देख कर आपके मन में भी यह इच्छा पैदा हुई कि आपको भी बाबा का एक चित्र प्राप्त हो जाता । आपने अपनी जान–पहचान में इसके लिये प्रयत्न किया पर आपको निराश ही होना पड़ा और इसके न मिलने का मलाल भी आपके मन में बना रहा ।

नन्दा देवी के मेले का अवसर था । आप अपनी पूजा–सामग्री का थाल लेकर मन्दिर में पूजन हेतु गयी थीं । वहाँ से वापस आते समय आपने देखा कि एक बालक जिसके हाथ में केवल एक फोटो थी, वह उसे आपको दिखाते हुए बोला, "खरीदना चाहेंगी ?" आपने देखा शीशे से मढ़ा हुआ यह छाया चित्र महाराज का था जिसकी आप पिछले कई दिनों से खोज में थीं । उसकी कीमत उसने डेढ़ रुपया बतायी । तुरन्त उसे उसका मूल्य देने के बाद आप हर्ष और उल्लास से उस छाया चित्र को गौर से देख रही थीं इतने में वह बालक ऐसा गायब हुआ कि फिर दिखायी नहीं दिया । आप सोचने लगीं कि केवल महाराज का एक छाया चित्र लिये वह बालक कौन था ? आप समझ नहीं पायीं कि उसे बेचने के लिये कैसे वह सीधे आपके पास चला आया !

बाबा के इस प्रथम छाया चित्र को आपने अपने पूजा–गृह में स्थान दिया । इस प्रकार इस छाया चित्र की प्रतिष्ठा के बाद से आपके गृहस्थ में सुख और समृद्धि की उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी और आपके विचारों ने ऐसा पलटा खाया कि आपकी आस्था बाबा पर दिन प्रतिदिन बढ़ती गयी ।

(290) मकान की परेशानी

चम्पा जी जिस मकान में पचीस वर्ष से रह रही थीं उसके मालिक ने आपसे वह मकान खाली करने को कहा और इसके लिये उसने अदालत से आदेश भी प्राप्त कर लिया था । आपको दूसरा मकान कहीं मिल नहीं रहा था और आपको भय था कि वह पुलिस की सहायता से कभी भी आप को हटा सकता है । इससे आप बहुत चिन्तित और दुःखी थीं और नित्य बाबा के छाया-चित्र के आगे आर्तभाव से प्रार्थना किया करती थीं ।

बाबा ने एक दिन आपकी जान-पहचान के किसी व्यक्ति द्वारा आपको बुलवाया और बहुत सहानुभूति दर्शाते हुए वे आपसे बोले, "**तू इतना दुःख क्यों मान रही है । सोच कर देख सीता माँ को जीवन में कितने कष्ट उठाने पड़े । समय आने पर तेरे खुद का मकान बन सकता है, फिर यह कष्ट नहीं होगा ।**" ऐसा कह कर उन्होंने अपनी गर्दन उठायी और आकाश की ओर देखते हुए बोले, "**बहुत ऊँचा मकान होगा ।**"

वास्तव में उस समय आपको उस घर को छोड़ कर एक छोटी जगह में बड़े कष्टों में दिन बिताने पड़े, पर कुछ ही दिनों में बाबा का कथन सत्य हो गया । ऐसे बानक बने कि मल्लीताल में ही कई मंजिलों का आपका एक ऊँचा मकान बन कर तैयार हो गया और वह कष्ट हमेशा के लिये समाप्त हो गया ।

(291) लड़के का विवाह

आपका अनुभव है कि बाबा के लिये कुछ भी अदेय न था । आप कहती हैं कि आप अपने पुत्र का विवाह उसकी मनपसन्द लड़की से करना चाहती थीं, पर लड़की वालों की इच्छा इसके विपरीत थी । आपने श्री माँ को इस परिस्थिति से अवगत किया । माँ ने बाबा की उपस्थिति में ही आपसे बाबा से निवेदन करने को कहा । आपकी समस्या सुनकर बाबा बोले, "**इस नवम्बर के महीने में कर दे ।**" आप प्रत्युत्तर में बोलीं, लड़की वाले तो मानते नहीं और इतनी जल्दी मैं भी इस कार्य को नहीं कर सकती । बाबा ने नाराजगी के रुख में अपनी बात दोहरा दी । सितम्बर 1973 में बाबा का महाप्रयाण हो गया । बाद में जब आपने विधिवत् अपना प्रस्ताव लड़की वालों के पास भेजा, उन्होंने उसे स्वीकार कर लिया और नवम्बर 73 में ही विवाह सम्पन्न हो गया ।

(292) 'वह सब कुछ दे सकता है'

श्री श्रवण नाथ संग, प्रिन्सिपल, बिड़ला विद्यामन्दिर, नैनीताल कहते थे कि उनका जन्म किसी सन्त के आशीर्वाद के फलस्वरूप ही हुआ, पर वे सन्त–महात्मा कहे जाने वाले व्यक्तियों के प्रति सदा उदासीन ही रहे । एक दिन सन् 1954 में आपके विद्यालय के एक अध्यापक श्री किशन चन्द्र तिवारी महाराज को अपने घर लिये जा रहे थे, रास्ते में श्रवण नाथ जी और बाबा की आँखे चार हुईं । बाबा बोल उठे, "हमारा **प्रिन्सिपल आ गया ।"** पर संग जी उनसे कुछ बोले नहीं और अपने घर चले गये । उस क्षणिक दर्शन से आपके अन्दर जो प्रतिक्रिया हुई उससे उनमें बाबा के दर्शन की इच्छा उत्तरोत्तर बढ़ती गयी और एक दिन वे उनके दर्शन हेतु स्वयं हनुमानगढ़ पहुँच गये । बाबा ने अपनी कोठरी में अकेले इन्हें दर्शन दिये और लगभग बीस मिनट वार्ता की ।

इसके बाद एक बार आप भूटानी विद्यार्थियों को पहुँचाने भूटान गये थे, वहाँ के राजा जिग्मी डोरजी चोग्याल ने आपको आमन्त्रित किया । वे आपको अपने राजगुरु लामा के दर्शन कराने भी ले गये । लामा इतने वृद्ध थे कि वे अपनी पलक उठा कर देख भी नहीं पाते थे । उनकी आयु का अनुमान एक सौ पचास वर्ष से अधिक था । उन्होंने अपनी उंगलियों के सहारे अपनी पलकें उठायीं और आपको देखते हुए बोले, "यहाँ क्यों आया ?" 'आपके दर्शन और आशीर्वाद के लिये', आपने उत्तर दिया । इस पर वे बोले, "तेरे पास तो महान सन्त है, वह तुझे सब कुछ दे सकता है", ऐसा कह कर वे बाबा नीब करौरी के आकार और वेश–भूषा का वर्णन करने लगे । लामा की वार्ता से आपकी आस्था बाबा पर अगाध हो चली । आप बाबा को भगवान् का ही रूप मानने लगे और बराबर उनके दर्शन करने जाते रहे । बाबा की भी उन पर विशेष कृपा रही । कभी–कभी उनका दरबार संग जी के घर पर ही लग जाता था । बाबा की कृपा से आपके प्रिन्सिपल रहते आपके विद्यामन्दिर की प्रगति भी बहुत ऊँची रही ।

सन् 1962 में आप 'पब्लिक स्कूल्स कान्फरैन्स' में भाग लेने इन्दौर गये, वहीं आप पर फ़ालिज पड़ गया । आप वहाँ से मोतीमहल, लखनऊ आये जहाँ जाड़ों में आपके विद्यार्थी नैनीताल से आते और वहीं पढ़ाये जाते थे । यहाँ मेडिकल कालेज में आपका उपचार किया गया । बहुत खोज बीन के बाद आपकी बीमारी 'कार्सिनोमा ब्रेन' घोषित की गयी । इस भयंकर असाध्य रोग से आपकी दृष्टि भी खत्म होती जा रही थी । आप मोती महल में अपने बिछौने में पड़े–पड़े नित्य महाराज को याद किया करते थे

और यह कहते थे कि बाबा जिधर मुँह फेरते हैं उधर ही ब्रह्माण्ड घूम जाता है । मार्च 1963 में एक दिन तिवारी जी आपके पास ही उपस्थित थे एकाएक बाबा ने कई भक्तों के साथ संग जी के कमरे मे प्रवेश किया । बाबा को आया जान कर आप उनके चरणों को स्पर्श करने की लालसा से उठना चाहते थे और इस हेतु घोर परिश्रम करने लगे । बाबा ने तीव्र स्वर में उन्हें ऐसा करने से मना किया और अपने लौट जाने की धमकी भी दी। संग जी के बिछौने के पास ही एक चौकी में बाबा का आसन लगाया गया। बाबा ने उसमें बैठ कर अपने चरण उनकी ओर बढ़ा दिये और उनका आत्मबल बढ़ाने के अभिप्राय से कहने लगे, "**तू उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्त का ब्राह्मण है, तू बहुत वीर है**" और फिर बोले, "**हम तेरे लिये क्या करें ? तू माँग ले जो तू चाहता है, हम तुझे सब कुछ देने को तैयार हैं ।**" संग जी बाबा के पैर के अंगूठे को अपने हाथ से मलते हुए बाबा की वार्ता सुन रहे थे । उनकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी जो बाबा के चरणों को धो रही थी । आप बाबा से कहने लगे, "प्रभु ! आपने मुझे सब कुछ तो दे दिया, अब बचा क्या है जो मैं आपसे माँगू ।" संग जी की वार्ता ने बाबा के मर्म को स्पर्श किया और वे उनके सिर पर हाथ फेरते हुए लोगों से कहने लगे, "**संग वास्तव में सन्त है । इस में किसी प्रकार की कामना नहीं है ।**" ऐसा कहते वे भावावेश में आने लगे और अपने को उस परिस्थिति से हटाने के लिये उन्हें वहां से चला जाना था । आप यह कहते हुए, "**हम विन्ध्याचल जा कर माँ से कहेंगे,**" उठ कर कमरे से बाहर चले गये और उनके साथ सब आगन्तुक भक्त भी । तिवारी जी सुनाते हैं कि बाबा के जाते ही संग जी अचेत हो गये और इसी स्थिति में पन्द्रह दिन रहने के बाद उनका शरीर शान्त हो गया । संग जी ने जब शरीर छोड़ा बाबा उस समय इलाहाबाद में थे । बाबा की आँखों से दो अश्रु–बूंदें टपकी और वे बोल उठे, "**आज संग मुझ में समा गया ।**"

बाबा की कृपा से संग जी के न रहने पर भी उनके परिवार को कोई असुविधा नहीं हुई । उनके दोनों लड़कों और लड़की की शिक्षा सुचारु रूप से पूर्ण हुई और वे सब जीवन में सुव्यवस्थित हो गये ।

(293) जोशी जी पर कृपा

श्री किशन चन्द्र तिवारी, अध्यापक, बिड़ला विद्यालय, नैनीताल अपने सह–कार्यकर्ता श्री कैलाश चन्द्र जोशी पर महाराज की आश्चर्यजनक कृपा का

वर्णन प्रस्तुत करते हैं । आरम्भ में जोशी जी लोरेटो कान्वेन्ट, लखनऊ में कार्य करते थे । जब नैनीताल में बिड़ला विद्यामन्दिर की स्थापना हुई तो जोशी जी बाबा के आदेश से नैनीताल आये और इस संस्था में काम करने लगे । उन दिनों आपका स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा था और अनेक उपचारों के बाद भी कुछ लाभ नहीं हुआ । आपको एक वर्ष छुट्टी में रहना पड़ा और अन्ततोगत्वा आप भवाली में टी.बी. के विशेषज्ञ डा. खजान चन्द के इलाज में आये । डाक्टर ने सब जाँच-पड़ताल के बाद आपके दोनों फेफड़ों को बिलकुल बेकार और लाइलाज बताया और बोले, "इस भात का अब चावल बनाना सम्भव नहीं है ।"

ऐसी नैराश्यपूर्ण एवं खिन्न मनःस्थिति में जोशी जी को एक दिन बाबा के दर्शन हुए । आपने उन्हें अपनी स्थिति से अवगत करते हुए कहा कि विद्यालय अब आपको सेवा से निवृत्त कर देगा । इस पर बाबा कहने लगे, **"तुझे कोई नौकरी से नहीं हटा सकता । तू ही उसे छोड़ दे, यह बात दूसरी है ।"** आपकी बीमारी के सम्बन्ध में वे बोले, **"तू पचास रुपये के इन्जेक्शन पर विश्वास करता है, दो पैसे की दवा पर नहीं । जा बिन्दकी रोड (कानपुर के पास) । वहाँ एक साधु वैद्य मिलेगा, उसका इलाज कर । अपने बरतन लेते जाना वह खाना भी खिलायेगा ।"**

बाबा की आज्ञा मान कर आप बिन्दकी रोड गये । उस वैद्य ने जिगर की खराबी बतायी और आपके एक्स-रे रिपोर्टों को महत्व नहीं दिया। उसने पीपल के चूर्ण के साथ एक दवा मिलाकर दूध के साथ सेवन करने को कहा । आपको वैद्यजी के निदान पर सन्देह और उनकी औषधि पर अविश्वास हुआ, पर कुछ ही दिनों के उपचार से आप स्वास्थ्य लाभ कर गये। कुछ दिन यही इलाज अपने घर पर करने के बाद आप पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गये । आपने लखनऊ मेडिकल कालेज में भी जाँच-पड़ताल करवाई । आप स्वस्थ घोषित किये गये । डा. खजान चन्द आपके स्वास्थ्य को देख कर चकित रह गया । विद्यामन्दिर से हटाये जाने वाली बात पर भी बाबा की वाणी सत्य घटित हुई । जोशी जी 75 वर्ष की आयु पार कर चुके हैं, बाबा के महाप्रयाण के बाद अभी तक वे सेवा से निवृत्त नहीं किये गये ।

(294) 'कछुक दिवस जननी धरु धीरा'

लेखक की फुफेरी बहिन श्रीमती मुन्नी देवी के पति श्री पीताम्बर पन्त भारतीय सेना में थे और सिपाहीधारा नैनीताल में रहते थे । विवाह के

कुछ ही समय बाद आपको द्वितीय महायुद्ध में जर्मनी भेजा गया था । युद्ध समाप्त होने के कई वर्ष बाद भी आप घर लौट कर नहीं आये । 'आर्मी हेड–क्वार्टर्स' की सूची में आपका नाम लापताओं में प्रकाशित हुआ था, मृत्यु के विश्वसनीय प्रमाण उपलब्ध न होने से, मृतकों में नहीं । कुछ महिलाओं ने मुन्नी जी को प्रत्येक सोमवार के दिन मन्दिर में शिव पूजन और उपवास रखने का सुझाव दिया था जिसे आप बराबर करती आ रही थीं । कुछ वर्ष व्यतीत हो जाने पर लोग उन्हें श्रृंगार उतारने की सलाह भी देने लगे ।

एक बार जाड़ों में आप अपने पिता के पास लखनऊ में निवास कर रही थीं । एक सोमवार के दिन आप किसी महिला के साथ मनकामेश्वर महादेव के पूजन को जा रही थीं । रास्ते में गोमती के किनारे बालू पर आपने एक स्थूलकाय साधु को पड़ा देखा । आपको देख कर अपना हाथ हिलाते हुए वह आपको अपने पास बुला रहा था । आपको वहाँ जाने में संकोच हो रहा था । इतने में उसने अपने एक भक्त को भेजकर आपको बुलवाया । आपने वहाँ जाकर उन्हें नमन किया ही था, वे बोल उठे, **"कहाँ जा रही है ? पूजा करने ? बैठ जा । पति कहाँ है?"** आपने अन्तिम प्रश्न का सूक्ष्म उत्तर दिया, "पता नहीं ।" बाबा कहने लगे, **"फौज में है ? चिट्ठी नहीं आती ? आ जायेगी ।"**

अपनी उस नैराश्यपूर्ण स्थिति में मुन्नी जी कहती हैं कि उनको बाबा के शब्दों से अपने पति के जीवित होने का जो भरोसा हुआ उस प्रसन्नता में वे आत्मनियन्त्रण खो बैठीं और रोने लगीं । बाबा ढाढस बँधाते हुए बोले, **"कछुक दिवस जननी धरु धीरा, कपिन्ह सहित अइहहिं रघुवीरा। घबरा मत । उसकी चिट्ठी आयेगी और वह भी आयेगा ।"**

घर जाकर आपने यह दास्तान अपने पिता को सुनाया । उन्होंने कहा, "वे बाबा नीब करौरी थे । जब उन्होंने ऐसा कहा है, तो यह होकर रहेगा ।" इसके कुछ समय बाद ही आपको अपने पति का पत्र प्राप्त हुआ और कुछ महीने बाद एक दिन वे स्वयं आ गये ।

पन्त जी ने बताया कि वे युद्ध में बन्दी बना दिये गये थे । एक दिन उनके पहरेदार ने स्वतः आकर उनसे कहा कि वह रात में आकर उन्हें भाग निकलने का मौका देगा और वे इसके लिए तैयार रहें । इस प्रकार भाग कर अनेक मुसीबतों का सामना करते हुए वे घर पहुँचे थे । यह सब बाबा की प्रेरणा शक्ति का चमत्कार था ।

इस घटना के बाद कभी कभी बाबा मुन्नी देवी के घर नैनीताल में आते रहे और यहीं मुन्नी जी ने लेखक की चाची का परिचय बाबा से कराया जो बाद में उनकी अनन्य भक्त हो गयीं ।

इसी प्रकार की एक घटना कानपुर में भी हुई, जिसका पूर्ण विवरण अभी प्राप्त नहीं हो पाया । इस प्रसंग में बाबा ने एक फौजी अफसर के जीवित रहने का आश्वासन उसके सम्बन्धियों को दिया था । बाबा के कथन पर उन्होंने दो वर्ष तक फौजी अफसर के आने की प्रतीक्षा भी की । अन्त में उसकी पत्नी का दूसरा विवाह कर दिया गया । जब बाद में वह व्यक्ति शत्रु के बन्दीगृह से छुटकारा पाकर घर आया तो सभी लोगों को अपने उतावलेपन पर ग्लानि हुई ।

(295) करुणाकर का स्वभाव

खन्टिया नामक एक वृद्ध नेपाली मजदूर कैंची आश्रम के पास एक झोंपड़ी में रहता था । उसका अपना कहने को कोई न था । वह अकेला किसी तरह बुढ़ापे के दिन काट रहा था । उसके पास दो गायें थीं और ये ही उसकी सम्पत्ति थी । वह बूढ़ा अपने मन ही मन दुःखी था कि मरने के बाद उसका क्रियाकर्म भी नहीं हो पायेगा । जिन्दगी भर वह दरिद्रता से छुटकारा नहीं पा सका और मरने पर उसकी सद्गति भी नहीं हो पायेगी । वह कैंची में बाबा के पास एकत्रित भीड़ को देखता रहता था । एक दिन उसके मन में एक विचार आया – क्यों न बाबा पर अपनी गाय का दूध चढ़ा आऊँ । वह दूसरे ही दिन एक बोतल में दूध भरकर चल दिया । जैसे शिवलिंग पर दूध चढ़ाया जाता है वैसे ही वह बाबा के सिर पर दूध डालना चाहता था, पर बाबा को भद्र पुरुषों से घिरा हुआ देखकर वह संकुचित रह गया । उसे अपना इरादा छोड़ देना पड़ा । उस दूध को उस समय वह, बल्लियों से बने कच्चे पुल से, नदी में बहा कर अपनी झोंपड़ी को वापस चला गया ।

उसने फिर एक दिन दूसरी बार ऐसा प्रयास किया । वह बोतल लेकर पुल के पास आया ही था उसने दूर से बाबा को उसी प्रकार लोगों से घिरा देखा । बाबा ने तुरन्त भुवन चन्द्र तिवारी जी को, जो अब नैनीताल में रोडवेज स्टेशन के इन्चार्ज हैं, उस बूढ़े को पुल से सँभाल कर लाने को कहा । वह बूढ़ा काँप रहा था, आप उसकी बोतल को साधे उसे पुल पार करा लाये । बाबा ने बड़ी फुर्ती से बूढ़े के हाथ से दूध की बोतल अपने हाथ में ले ली और सारा दूध सिर से अपने ऊपर बहा दिया । बूढ़े की आँखें प्रेमाश्रु से सजल हो उठीं और वह मूक हो बाबा के मुखारविन्द को एकटक देखता ही रह गया। बाबा ने उस से पूछा, "क्या चाहता है?'

उसने अपनी सद्‌गति की प्रार्थना की । बाबा बोले, "**हम तेरा क्रियाकर्म करायेंगे और तुझे सद्‌गति दिलायेंगे ।**" अपनी बात पक्की करने के लिए बाबा ने उससे हाथ मिलाने को कहा, पर वह ऐसी हिम्मत न कर सका और संकुचित होकर रह गया । बाबा ने तुरन्त एक झटके में उसका हाथ अपने हाथ में लेकर वायदे की पुष्टि कर दी ।

इसके बाद जैसे सुदामा की दरिद्रता से कृष्ण द्रवित हुए थे, बाबा भीं सजल नेत्र हो इस बूढ़े की दरिद्रता का बखान करने लगे । "**इसकी झोंपड़ी में वर्षा का पानी भीतर टपकता रहता है । इसके पास एक पिचकी थाली और एक फूटा लोटा है । न पहनने को और कोई कपड़ा है और न बिछाने को ही पर्याप्त कपड़ा है**" आदि । उसी समय बाबा ने आश्रम से वस्त्र, बिस्तर, बर्तन आदि अनेक सामग्रियाँ उसकी झोंपड़ी में भिजवा दीं और आदेश दिया कि नित्य मन्दिर से उसके पास भोजन पहुँचाया जाय ।

अन्त में जब वह बीमार हो गया तो बाबा ने कार में उसे रैमसे अस्पताल नैनीताल भिजवाया और उस बड़े अस्पताल में उसके उपचार का खर्चा उठाया । उसकी देख–भाल के लिए अस्पताल में हरिदास बाबा को रखा । उसके शरीर के शान्त हो जाने पर बाबा ने तेरह व्यक्तियों को भेजकर उसकी अन्त्येष्टि क्रिया करवायी और आश्रम में ही, उस क्षेत्र के नियमानुसार उसकी बारहवीं मनायी गयी ।

(296) अशरण के शरण

एक बार बाबा की दृष्टि एक साधनहीन बुढ़िया पर पड़ी, जिसका अपना कोई न था । बाबा का दिल उस बुढ़िया के कष्टों से द्रवित हो गया । उन्होंने तुरन्त उसे अपना लिया । उसे रहने के लिये आश्रम में उचित स्थान दिया और बुढ़ापे में उसे भोजन आदि सब प्रकार की सुख सुविधाएँ सुलभ कीं । कालान्तर में जब उसका शरीर अत्यधिक जीर्ण हो गया और आश्रम का जीवन उसके लिये कष्टप्रद होने लगा तो बाबा ने उसके खाने और रहने आदि की व्यवस्था, कैंची आश्रम के मैनेजर श्री विनोद चन्द्र जोशी के घर हल्द्वानी में करा दी और उनकी माँ उस बुढ़िया की सेवा करती रहीं । एक दिन उस बुढ़िया के शरीर के शान्त हो जाने पर, बाबा ने पूर्णानन्द तिवारी से उसका यथोचित क्रियाकर्म करवाया और आश्रम में बारहवीं करवाई ।

(297) चेचक का अपहरण

एक बार अपने कुछ भक्तों के साथ बाबा ने कई दिन ऋषिकेश और हरिद्वार में निवास किया और भक्तों को नित्य उनकी नूतन लीलाओं को देखने का सौभाग्य प्राप्त होता रहा । एक दिन उनके सारे शरीर में चेचक के से दाने दिखायी दिये पर उन्हें ज्वर नहीं था । श्री माँ यह न समझ पायीं कि बाबा ने किस की और कौनसी बीमारी अपने ऊपर ले ली। माँ ने उन दानों पर बोरोलिन का लेप कर दिया और वे दूसरे ही दिन विलीन हो गये । इसके बाद बाबा नैनीताल ज़िले में स्थित अपने भूमियाधार आश्रम में रहने लगे । कुछ ही दिन बाद इलाहाबाद से श्री सुधीर मुकर्जी ने आकर बाबा के दर्शन किये । उन्होंने सुनाया कि चेचक के निकल आने से उनके परिवार के किसी सदस्य की तबीयत गम्भीर हो चली थी । घर में सभी चिन्तातुर हो बाबा को याद करने लगे और घर में सुरक्षित उनके चरणोदक का ही बीमार को पान कराते रहे । यह बाबा की महिमा थी कि बहुत जल्दी ही चेचक से निवृत्ति हो गयी । इससे बाबा के बदन में प्रकट हुए दानों का रहस्य समझ में आया ।

सभी लोग सर्वत्र बाबा को याद कर अपने-अपने गम्भीर कष्टों से मुक्त होते रहे पर कोई भी यह न जान सका कि करुणानिधान बाबा को उनके कष्टों की क्या कीमत चुकानी पड़ती थी । यह था उनका स्वभाव और उनकी कृपा का स्वरूप ।

(298) पाठक जी पर कृपा

श्री बनवारी लाल पाठक, पण्डा-वृन्दावन, बाबा को मनुष्य नहीं ईश्वर मानते थे और तदनुसार ही आप उनकी सेवा में तत्पर रहा करते थे । आप बताते हैं कि आपकी वर्तमान भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति बाबा की देन है । जब आप अपने विगत जीवन को देखते हैं तो आप अपने को बहुत सामान्य पाते हैं । गरीबी, स्वास्थ्य का ठीक न रहना और कार्य भी सम्मान पूर्ण न होने से चित्त खिन्न रहा करता था । बाबा के प्रति प्रेम, श्रद्धा और विश्वास से स्थिति बदल गयी । उनके दर्शन और उनके बताये रास्ते पर चलने से आपको जो भौतिक सफलताएँ प्राप्त हुईं, उसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते थे और साथ में आध्यात्मिक विकास की जो आपको अनुभूति हुई है, उससे आप सन्तुष्ट हैं । फलतः आप में अब कोई लालसा

नहीं रही । आप कहते हैं कि बाबा की कृपा को व्यक्त करने के लिये आपके पास शब्द नहीं हैं ।

(299) प्राणों की रक्षा

घटना वृन्दावन 7 सितम्बर 1970 की है । पाठक जी कहते हैं कि आपका रक्तचाप असाधारण रूप से बढ़ गया था । दिल का दौरा पड़ जाने से आपकी स्थिति बहुत गम्भीर हो गयी थी । घर में बच्चे घबरा गये और भाग कर आश्रम में बाबा के पास पहुँचे । उन्होंने उनसे निवेदन किया कि जैसे भी हो वे आपकी रक्षा करें । बाबा बच्चों के साथ भागते हुए घर आये और आपको फटकारते हुए बोले, **"रोता क्यों है ? हमने कह दी बिलकुल ठीक हो जायेगा ।"** उनकी कृपा से आप तत्काल ही स्वस्थ हो गये । दूसरे दिन उन्होंने आपको जाँच-पड़ताल के लिये हृदय रोग के विशेषज्ञ डा. के.एस. माथुर के पास आगरा भेजा । उसने आपको स्वस्थ घोषित कर निश्चिन्त कर दिया ।

(300) ईश्वर चन्द्र जी पर कृपा

एक बार महाराज श्री ईश्वर चन्द्र तिवारी को उनके घर कानपुर से अपने साथ कैंची ले आये और एक महीना उन्होंने आपको अपने पास रखा। तिवारी जी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी । वे 'मिल्क बोर्ड' में काम करते थे और परिवार आपका बड़ा था । कई लड़कियों के विवाह की जिम्मेदारी भी थी । आपकी अनुपस्थिति में घर में भोजन की व्यवस्था भी नहीं रही । अतः घर से आपके पास इस आशय का एक दुःखद पत्र आया जिसे पढ़कर आप चुपचाप अपने कमरे में रो रहे थे । संयोगवश आपके कानपुर के मित्र श्री भगवती सेवक बाजपेयी उनके पास पहुँच गये और उनसे उनके दुःख का कारण पूछने लगे । तिवारी जी ने वह पत्र दिखाकर अपनी स्थिति से उन्हें अवगत किया । बाजपेयी जी मौन रह गये, कुछ कह नहीं पाये । थोड़ी देर बाद वे उठकर बाबा की कुटिया में गये । बाबा उन्हें देखकर स्वतः कहने लगे, **"तिवारी रो रहा है ? घर से पत्र आया है ? ला हमें दिखा ।"** बाजपेयी पत्र माँगने तिवारी जी के कमरे में गये। तिवारी जी ने थोड़ा पानी पीकर अपने को स्वस्थ किया और फिर पत्र को लेकर स्वयं बाबा के पास आये और उनसे घर जाने की अनुमति माँगने लगे । बाबा उनके दुःख से दुःखी हो कर बोले, **"तू नहीं, यह (बाजपेयी) खुद देख कर आयेगा ।"** उन्होंने तुरन्त वाजपेयी जी को कानपुर भेजा। दूसरे दिन घर पहुँचते ही वे अपनी गाड़ी में सीधे तिवारी जी के घर पहुँचे

और वहाँ घरवालों से उनकी आवश्यकताओं के बारे में पूछने लगे । घर के लोग चकित हो कहने लगे, "यह आप क्या कह रहे हैं ? कल ही तो आप इसी कार में सभी खाद्य सामग्रियाँ यहाँ पहुँचा गये और नगद खर्च के लिये साठ रुपये भी दे गये थे ।" यह सुन कर बाजपेयी जी चकरा गये और समझ नहीं पाये कि यह सब कैसे हुआ ? आप उसी दिन कैंची लौट गये और वहाँ उन्होंने यह सूचना तिवारी जी को दी । वे बाबा की कृपा पर द्रवित हो गये ।

बाद में बाबा ने तिवारी जी को कानपुर में ही सस्ते दाम में बृहत् जमीन खरीदवा दी जिससे उनकी आर्थिक स्थिति सुधर गयी और वे अपनी जिम्मेदारियों का भी निर्वाह कर सके ।

(301) दुःख दर्द के साथी

श्री जगमोहन शर्मा, इक्ज़ीक्यूटिव इन्जीनियर, नैनीताल से आगरा बदली होने पर बाबा के दर्शनार्थ कैंची आये । आपकी पत्नी ने बाबा से साथ चलने का आग्रह किया । वे बोले, **"हम तुझे आगरा में मिलेंगे ।"** बाबा ने आपसे आगरे का पता भी नहीं पूछा, इस कारण उनकी बात केवल व्यावहारिक समझी गयी ।

आगरा जाकर शर्मा जी बहुत बीमार हो गये । आपकी घबराहट को दूर करने के लिये बाबा ने आपके घर में आकर दर्शन दिये । बाबा बार बार शर्मा जी को समझाते रहे कि उन्हें चिन्ता छोड़ देनी चाहिये । थोड़ी देर बाद वे जाने के लिये उद्यत् हो गये । बहुत आग्रह करने पर भी आप रुके नहीं और यही कहते रहे कि, **"जब तक हम यहाँ रहेंगे, तू बैठा ही रहेगा । तुझे आराम की ज़रूरत है, तू आराम कर ।"** ऐसा कह कर आप चले गये । शर्मा जी का यह अपना अनुभव है कि अप्रत्यक्ष रूप से बाबा सदा साथ रहते हैं और हर समस्या को हल करते रहते हैं ।

(302) कारुण्य रूप

श्री जगन्नाथ आनन्द, आनन्द ट्रान्सपोर्ट एजेंट, हल्द्वानी, ज़िला नैनीताल, की पत्नी दिमागी खराबी से एक दिन घर से कहीं चली गयीं । बहुत खोजने पर भी उनका कुछ पता नहीं चल पाया । किसी ने बताया कि उनको किसी ने कानपुर में देखा था । वहाँ भी खोज करायी गयी पर कुछ पता नहीं चला । आनन्द जी की चार लड़कियाँ हैं, दूसरी लड़की

सरला जी पोलियो के कष्ट से पंगु हैं । आपको जमीन में खिसक कर चलना पड़ता है । माँ के इस प्रकार चले जाने से आप अत्यन्त दुःखी हो गयीं । यह परिवार बाबा का भक्त है । सरला जी को अपनी लाचारी के कारण कभी बाबा के दर्शन नहीं हो पाये थे, पर कानों से उनका सुयश सुनते–सुनते आप उनसे बहुत प्रभावित हो चुकी थीं । माँ के वियोग से दुःखी हो आपने बाबा के आगे रोने का निश्चय किया । एक दिन जुलाई 1972 में आप बहुत कष्ट उठा कर बस द्वारा अकेली कैंची आश्रम गयीं और अपने को घसीटते हुए जब आश्रम के भीतर पहुँची तो अंधेरा हो चला था । बाबा उस समय भूमियाधार में थे । सरला जी बाबा को वहाँ न पा कर बहुत निराश हो गयीं । उन दिनों पहाड़ में बहुत वर्षा हो रही थी, इस कारण सर्दी भी हो चली थी । आश्रम के एक सेवक ने आपको एक कम्बल दे कर बरामदे में स्थान दे दिया और कहा कि बाबा की आज्ञा बिना वह कोई भी कमरा खोल कर उन्हें नहीं दे सकता ।

कुछ ही समय बाद रात्रि के आठ बजे । बाबा एकाएक आश्रम में प्रकट हो गये । आते ही वे सेवकों को फटकारने लगे कि हमारी लड़की को ठण्ड में मार दिया । तुरन्त कमरा खुलवा कर उन्होंने सरला जी के आराम के लिये बिस्तर दिलवाया । सरला जी उनसे अपना दुःख कहना चाहती थीं पर बाबा ने उस समय उनसे भोजन और शयन करने को कहा और बोले, **"कल बातें होंगी ।"** दूसरे दिन जब आपने अपनी माँ का जिक्र किया तो वे बोले, **"घबरा मत, चिन्ता छोड़ दे तेरी माँ मिल जायेगी । तेरे बाप के पास बहुत पैसे हैं जो उसकी खोज में उन्हें बेकार बहा रहा है । वह बिना खोजे मिल जायेगी ।"** बाबा ने आपको विदा कर दिया । आपने घर जा कर एक हफ्ता सब्र किया और अन्त में अधीर हो फिर उतना ही कष्ट उठाकर कैंची में बाबा के दर्शनार्थ उपस्थित हुयीं । आपने बाबा से निवेदन किया कि एक सप्ताह हो गया और अब भी माँ का कोई पता नहीं चल सका, कब तक और बाट देखी जाय ? बाबा तुरन्त बोले, **"अगस्त–सितम्बर । अब घर जा, बार–बार आने का कष्ट मत करना ।"** बाबा ने आपको बीस रुपये दिये और विदा किया ।

पता नहीं कैसे आपकी माता जी अपने पागलपन में गोंडा, बलरामपुर पहुँच गयीं । एक दिन जब वहाँ एक सेठ जी की दुकान के आगे से वे जा रही थीं, सेठजी की दृष्टि उन पर पड़ी । एक अच्छे घर की महिला को ऐसी दयनीय दशा में देखकर उनके प्रति उनका मातृभाव जाग गया । वे उन्हें घर ले आये, नहलवाया, स्वच्छ नये कपड़े पहनवाये, इनके बाल जो जटा का

रूप धारण किये हुए थे, सुलझवाये और इनके सिर में जो अनेक घाव दिखायी दिये उनका इलाज वहाँ के अस्पताल में करवाया । जब ये स्वस्थ हो चलीं और स्वयं आपने अपना हल्द्वानी का पता बताया तो सेठ जी ने अपने दामाद को, जिनकी हल्द्वानी में एक 'फैक्ट्री' है, इनके घरवालों को सूचित करने को लिखा । 31 अगस्त 72 का दिन था, जब सेठ जी के दामाद ने सरला जी के पिता के पास जाकर शुभ सन्देश पहुँचाया । आनन्द जी तुरन्त गौंडा गये और सितम्बर 72 के आरम्भ में उन्हें घर ले आये ।

इस प्रकार बाबा की कही 'अगस्त–सितम्बर' में होने वाली घटना सच्ची उतरी और आप की माता जी बिना खोज के मिल गयीं । सरला जी बताती हैं कि इस घटना से आपके पिता जी का विश्वास बाबा में दृढ़ हो गया और उनकी यह धारणा बन गयी कि लोग इस दुनियाँ में व्यर्थ भगवान् को इधर–उधर खोजते हैं । भगवान् तो बाबा में हैं और बाबा ही स्वयं भगवान् हैं ।

(303) स्वामी जी की विदाई

एक स्वामी जी रेशमी वस्त्र धारण किये हुए थे, कार में कैंची के रास्तें काठगोदाम की ओर जा रहे थे । वे आश्रम के पास गाड़ी से उतर गये और महाराज के दर्शन हेतु भीतर चले आये । बाबा ने अत्यधिक प्रेम से उनका स्वागत किया और अपने पास ही आसन दे उन्हें भोजन करवाया। बहुत प्रेमपूर्ण वार्ताओं के बाद आपने सजल नयनों से उनकी विदाई की । इस प्रकार बाबा ने स्वामी जी को तृप्त कर दिया और आपके प्रेमपूर्ण व्यवहार से आनन्दमग्न हो वे अपनी कार में बैठ कर चल दिये । स्वामी जी के जाने के बाद एक भक्त ने उनके प्रति किये गए बाबा के असाधारण व्यवहार का कारण जानना चाहा । बाबा बोले, **"उसका समय पूरा हो चला था । हमने उसे प्रेम से विदा कर दिया ।"** कार से काठगोदाम का एक घन्टे का रास्ता पार भी नहीं हो पाया था, एकाएक हृदय की गति के रुक जाने से स्वामी जी का शरीर शान्त हो गया ।

(304) अपने भक्त की अन्तिम विदाई

घटना उस समय की है जब कि सुशीतल बनर्जी, आइ.ए.एस, सचिव केन्द्रीय सरकार, नैनीताल के स्कूल में पढ़ते थे । आपके पिता श्री रमेशचन्द्र बनर्जी वहाँ राजकीय कालेज में प्रधानाचार्य थे । यह परिवार बाबा का

भक्त था । एक दिन सायंकाल बाबा आपके घर आये और रात बहुत देर तक बातें करते रहे । एकाएक उन्होंने अपने को कम्बल से पूरी तरह ढक लिया और सिसक–सिसक कर रोने लगे । उनके इस आचरण से कमरे में स्तब्धता छा गयी । इसके बाद वे उठे और सीधे बाहर को चल दिये । सुशीतल जी तब अपनी युवावस्था में थे । आप बाबा से बोले, "मैं आपको अंधेरे में जाने नहीं दूँगा और यदि आपका जाना ज़रुरी हो तो आप मुझे अपने साथ चलने की अनुमति दें ।" बाबा मौन रहे और दोनों नैनीताल से पैदल चलकर भवाली सेनिटोरियम पहुँचे । वहाँ वे उस कमरे में गये जहाँ उनका भक्त बीमार पड़ा था । उसने चारपाई में पड़े–पड़े बाबा को हाथ जोड़ कर नमस्कार किया और आँखों से प्रेमाश्रु बहाते हुए बोला, "बाबा मैं आपको ही याद कर रहा था । मेरी यही इच्छा थी कि चलते समय आपके दर्शन कर लेता ।" महाराज कुछ बोले नहीं उनकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी और वे उसे एकटक दृष्टि से देखते ही रहे । बीमार आनन्दमग्न हो गया । बुझती दीप शिखा की भाँति उसका मुख मण्डल सन्तोषपूर्ण प्रसन्नता से चमक उठा । उसकी आँखें धीरे–धीरे बन्द हो गयीं । बाबा के देखते–देखते उसने अपना शरीर छोड़ दिया ।

(305) अल्प–मृत्यु निवारण

रामगढ़, नैनीताल के ठाकुर शिव सिंह की पत्नी को उस क्षेत्र के एक सिद्ध सन्त के दर्शन करने का सौभाग्य हुआ जो हस्तरेखा देख कर भविष्य में होने वाली सच्ची बात बता देते थे । उन्होंने आपका हाथ देखा, पर चुप्पी साध ली । बहुत आग्रह करने पर उन्होंने दुःख के साथ बताया कि छः महीने में किसी बड़े अस्पताल में आपकी मृत्यु होनी है । महिला कम उमर की थी और स्वस्थ थी । इस भविष्यवाणी से उसके मन में भय व्याप गया । ठाकुर महाराज के बड़े भक्त थे । वे बहुत चिन्तित हो गये और बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करने की इच्छा से आपको लेकर कैंची आश्रम आये । आप लोगों को देखते ही बाबा बोल उठे, **"सन्त महात्मा ने क्या कहा ?"** बिना आपके उत्तर की प्रतीक्षा किये फिर कहने लगे, **"छः महीने में मर जायेगी ?"** इस बात को वे उपस्थित लोगों के आगे दोहराते रहे और ज़ोर देते हुए बोले, **"पिचहत्तर वर्ष के पहले नहीं मरेगी ।"** यह दुःखद घटना उस महिला के जीवन में घटित नहीं हो पायी। बाबा ने अपनी शक्ति से अल्प–मृत्यु योग का निवारण कर दिया ।

समर्पण

बन्दउँ गुरु पद कन्ज,
कृपा सिन्धु नर रूप हरि ।

त्वदीय वस्तु गोविन्द तुभ्यमेव समर्पये ।

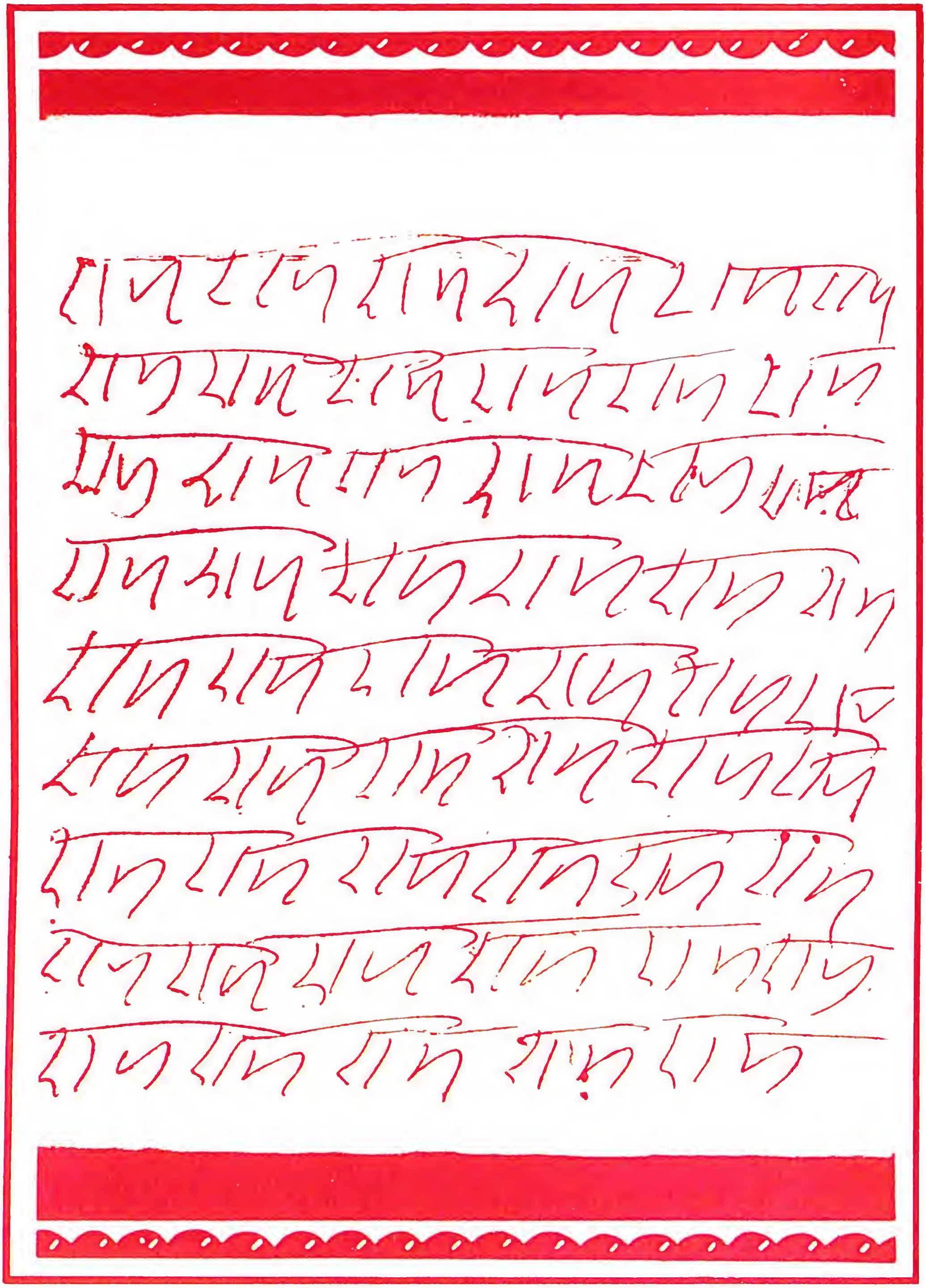

बाबा का हस्त लेख

(306) प्रारब्ध भोग की पूर्ति

श्री राम रतन वर्मा, एडवोकेट, मैनपुरी, के घर महाराज सन् 1938 से आया जाया करते थे । आपकी कन्या शान्ति विवाह योग्य हो चली थी । लड़की की जन्मपत्री में सप्तम स्थान में मंगल था और ज्योतिषियों का कहना था कि यदि उसे मंगली लड़का प्राप्त न हुआ तो उसका वैवाहिक जीवन अधिक से अधिक चार वर्ष का होगा । वर्मा जी को मंगली लड़का प्राप्त होना ही नहीं था, इस कारण ऐसा संयोग नहीं बन पा रहा था । एक दिन बाबा इनके घर पधारे । शान्ति जी उनके लिए रोटी बना रही थीं । महाराज वर्मा जी से बोले, **"लड़की का विवाह कर दे ।"** वर्मा जी ने बताया कि उन्हें अपने प्रयास में कहीं सफलता नहीं मिल पा रही है। बाबा ने लड़की को रसोईघर से बुलवाया और उसका हाथ देखने लगे । शान्ति जी प्रसन्न थीं यह सोचकर कि बाबा उनके जीवन के सम्बन्ध में कुछ बतायेंगे, पर उन्होंने उनकी हथेली में थूक दिया । घर में उपस्थित सभी लोग हँसने लगे और शान्ति जी भी हँसते हुए वहाँ से चली गयीं और अपने काम में व्यस्त हो गयीं । बाबा ने इस प्रकार विवाह में बाधक ग्रहों को प्रभावहीन कर दिया । यह बात उस समय किसी की समझ में नहीं आयी ।

इसके बाद बाबा ने स्वयं जयपुर में एक लड़का बताया और उससे विवाह करने को कहा । वर्मा जी ने निवेदन किया कि वहाँ यह कार्य सम्भव नहीं है, क्योंकि पड़ोस में बिरादरी की एक लड़की के लिए वहाँ बातें चल रही हैं । बाबा तुरन्त बोले, **"उनका काम नहीं बनेगा, तू बातें कर ।"** बाबा की बात सच्ची उतरी और वर्मा जी को अपनी बात चलाने का अवसर मिला । बाबा की कृपा से वे इस कार्य में सफल हो गये । यह लड़का मंगली नहीं था, पर घरवाले बिना जन्मपत्री मिलाये विवाह करना चाहते थे । आप अपनी तुष्टि हेतु लड़के की जन्मपत्री माँग लाये । ज्योतिषियों से परामर्श लेने पर उन्होंने चार वर्षों के भीतर ही लड़के के डूबने की सम्भावना बतायी । बाबा का आदेश था आपने विवाह पक्का कर ही दिया था, पर मन में आपके दुश्चिन्ता घर कर गयी । अपनी लड़की के भविष्य की कल्पना कर आप दुःखी रहने लगे जिससे आप का स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता गया । अचानक एक दिन बाबा ने घर में आकर दर्शन दिये। परिस्थितिवश घर के सब लोगों की उपस्थिति में वर्मा जी को अपनी गुप्त चिन्ता बाबा के आगे व्यक्त करनी पड़ी और इस प्रकार लड़की की भी जानकारी में यह बात आ गयी । बाबा बोले, **"विधि का विधान ऐसा ही है, कर दे ।"**

जब से शान्ति जी श्वसुर गृह आयीं तभी से उनके मन में अपने पिता की दुश्चिन्ता व्याप गयी । आप इस कारण, मन ही मन अशान्त रहने लगीं। उन्होंने यथाशक्ति अपने पतिदेव को प्रेरित किया कि वे नदी और तालाब में कभी स्नान न करें, पर उन्हें भरोसा नहीं होता था । विवाह के डेढ़ साल बीत चुके थे । मई का महीना था । आपके पति श्री वी. बी. सिंह, जो उस समय लखनऊ में पढ़ रहे थे, परीक्षा दे चुके थे । शान्ति जी बताती हैं कि बाबा उन्हें लखनऊ से अपने साथ ही लेकर आये । घर आने पर वे जमुना स्नान को गये और साथ में सिंह जी और उनके बुआ के लड़के को भी ले गये । जमुना में नहाने का सिंह जी में साहस न था, पर बाबा के कहने पर उन्हें नदी में उतरना ही पड़ा । वे किनारे में ही थोड़े जल से स्नान करने की सोच रहे थे, पर बाबा ने उन्हें अपने आगे खड़ा कर दिया और जानबूझ कर पीठ में धक्का दिया और उन्हें धारा में बहा दिया । वे तैरना जानते नहीं थे, जलमग्न हो, बहुत दूर बह गये । बाबा ने उनका पीछा किया और उन्हें बाहर निकाल लाये । इस प्रकार आपने उनका प्रारब्ध भोग पूरा करा दिया और अल्प–मृत्यु योग का निवारण भी कर दिया । शान्ति जी कहती हैं कि मैनपुरी वापस आने पर बाबा, बाबूजी से बोले, **"ले अपने कुंअर साहब को, अब चार साल बाद भी कुछ नहीं होना है।"** आपके पतिदेव पूर्ण सेवा कर सहायक अभियन्ता के पद से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं और अब सुखपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे हैं ।

(307) डाक्टर का अरिष्ट टला

डाक्टर नवल किशोर आगरा मेडिकल कालेज में स्त्री रोगों के चिकित्सक थे । जब हनुमानगढ़, नैनीताल का निर्माण कार्य चल रहा था, आपने गर्मियों के तीन महीने रैमसे अस्पताल नैनीताल में चिकित्सा करने की सुविधा प्राप्त कर ली थी । आप महाराज के भक्त थे । बाबा ने इस कार्य के एक महीना पूर्व आप से हनुमानगढ़, नैनीताल में पर्वतीय माइयों की चिकित्सा करने को कहा । आप नित्य दस बजे सबेरे से शाम के चार बजे तक बाबा के आदेश का पालन करते थे । एक दिन आप इस काम पर न आ सके । बाबा इन दिनों अन्यत्र थे, पर उसी दिन हनुमानगढ़ आ गये और डाक्टर की अनुपस्थिति का कारण पूछने लगे । वहाँ कोई भी आपके इस प्रश्न का उत्तर न दे सका । शाम को बाबा भक्तों के साथ घूमते–घामते इम्पायर होटल के पास जा कर खड़े हो गये और पूछने लगे,

"डाक्टर कहाँ रहता है ?" एक भक्त ने उस होटल को इंगित कर बताया, "इसी में ।" बाबा ने डाक्टर को बाहर बुलवाया और उससे पूछने लगे, "तबीयत खराब है ?" डाक्टर के 'ना' कहने पर आप फिर बोले, "जुकाम हो रहा है ?" डाक्टर ने उत्तर दिया, "साधारण सा ।" बाबा ने तुरन्त डाँडी मँगवायी और डाक्टर से रैमसे अस्पताल में भरती होने को कहा । उसने इसकी आवश्यकता नहीं समझी पर बाबा ने उसे मज़बूर कर दिया और कुछ भक्तों के साथ उसे अस्पताल भेज दिया जहाँ वह भरती कर लिया गया ।

यहाँ से महाराज स्व. देवीदत्त जोशी, प्रधानाचार्य, राजकीय नार्मल स्कूल, भीमताल, श्री पूरन चन्द्र जोशी आदि भक्तों के साथ धोबीघाट के एक घर में गये जहाँ सत्यनारायण का पूजन हो रहा था । रात के साढ़े सात बजे एकाएक डाक्टर का भाई उनके पास आकर कहने लगा, "डाक्टर की हालत खराब है । दिल का दौरा है और एक तरफा साँस चल रही है ।" बाबा बोले, "हम क्या कर सकते हैं । तुम जाओ ।" बाबा ने उपर्युक्त लोगों को उसके साथ अस्पताल भेज दिया । ये लोग जब लौट कर आये तो बाबा कैलाखान की ओर जा रहे थे । वे उन लोगों से डाक्टर और उसके परिवार के बारे में अपनी चिन्ता व्यक्त करने लगे ।

इसके बाद बाबा आगे उतार में नीचे जाकर मोहन बाबा की कुटिया में पहुँचे । मोहन बाबा विष्णु के भक्त थे । महाराज ने उनसे विष्णु भगवान् को डाक्टर के बारे में टेलिफोन करने को कहा । मोहन बाबा ने अपने हाथ को मोड़ कर एक काल्पनिक टेलिफोन नारद को किया कि वे विष्णु भगवान् से वार्ता करना चाहते हैं । नारद ने उत्तर दिया कि विष्णु भगवान् लक्ष्मी जी से वार्ता कर रहे हैं, वे इस समय नहीं मिल सकते । कुछ देर बाद महाराज ने उनसे पुनः फोन करने को कहा । इसके बाद फोन में नारद जी के शब्द मोहन बाबा को स्पष्ट नहीं सुनायी दिये । वे अपने काल्पनिक फोन में चिल्लाते रहे पर परिणाम कुछ नहीं निकला । महाराज एकाएक उठ खड़े हुए । उन्होंने मोहन बाबा को उनके सिर के बालों से पकड़ कर ऊपर उठाया और जमीन में छोड़ दिया । उनके इस प्रकार गिरने पर बाबा चिल्ला उठे, "अब बच गया । अब बच गया ।" उसी समय से अस्पताल में डाक्टर के स्वास्थ्य में सुधार आने लगा । इसके बाद बाबा अकेले अन्यत्र चले गये और उनके साथ के दो व्यक्ति जब वापस आये तो उन्हें डाक्टर के स्वास्थ्य में सुधार आने का सुखद समाचार मिला ।

(308) पाण्डे जी की संकट से निवृत्ति

मेरे (लेखक के) चाचा श्री देवी प्रसाद पाण्डे पर बाबा की सदा बड़ी अनुकम्पा रही । उन्हें प्रोस्टेट ग्लैंड का कष्ट था । बाबा ने उनसे रैमसे अस्पताल नैनीताल में अपने भक्त डा. भुवन चन्द्र जोशी द्वारा ऑपरेशन करवाने को कहा । ऑपरेशन हुआ पर उनकी दशा गिरती चली गयी । डाक्टर के भरसक प्रयत्न करने पर भी स्थिति नियन्त्रण में नहीं आ पा रही थी । घर के सभी लोग घबरा उठे । मेरी चाची आतुर हो उन्नीस कि.मी. दूर कैंची आश्रम पहुँच गयीं । आपको देखते ही बाबा रुद्ररूप हो गये । आपकी पीठ में घूँसा मारने लगे और आपसे आश्रम से निकल जाने को कहते जा रहे थे । आप अपना दुःख बाबा से व्यक्त भी नहीं कर पायी थीं, आपको निराश होकर वापस लौट आना पड़ा । आपके नैनीताल लौटने के पूर्व ही डाक्टर ने चाचाजी को खतरे से बाहर घोषित कर दिया था और उनके स्वास्थ्य में धीरे-धीरे सुधार आता चला गया । बाबा का यह क्रोध प्रदर्शन उनके प्रेम का ही एक परिवर्तित रूप था ।

(309) दिमाग़ सही हो गया

श्री राधेश्याम, सर्राफ, फिरोजाबाद, के दामाद के बड़े भाई बांदा में शहर कोतवाल थे । कुछ लोगों ने उन्हें ऐसी चीजें खिला दीं जिससे उनका दिमाग़ हमेशा के लिये खराब हो गया । सभी प्रकार के उपचार किये गये पर कोई भी कारगर न हुआ । आपके समधी इस कारण बहुत दुःखी थे । फिरोजाबाद में एक वैद्य जी की ख्याति से प्रभावित हो वे अपने लड़के को लेकर आपके घर आ गये । वैद्य जी ने बहुत सोच विचार कर एक दवा दी और कहा कि इसके तीन महीने सेवन करने के बाद भी यदि यही स्थिति बनी रही तो आपको इसे पागलखाने में भरती करना पड़ेगा । इसी बीच महाराज आपके घर आ गये । राधेश्याम जी ने अपने समधी का परिचय कराया और उनके लड़के के सुधार के लिये विनीत प्रार्थना की । बाबा ने उस लड़के के सिर पर हाथ रख कर सहज भाव से उसके चेहरे पर अपनी दृष्टि डाली और फिर इस सम्बन्ध में उन्होंने कोई बात नहीं की । बाबा उसी दिन चले गये । यह उनकी दिव्य दृष्टि एवं स्पर्श का ही फल था कि दूसरे दिन जागने पर उसका दिमाग़ सही हो गया ।

(310) बूढ़ा अभी नहीं मरेगा

श्री कन्हैया लाल श्रीवास्तव अपने घर 1040 कटरा, इलाहाबाद में एक बार लेटे हुए छिलके सहित सेव खा रहे थे । एक सेव का टुकड़ा गले से नीचे उतरते ही श्वास की नली में फँस गया, इस कारण उन्हें साँस लेने में कष्ट होने लगा । जितना भी उन्होंने इस टुकड़े को बाहर निकालने का प्रयत्न किया, वह उतना ही अधिक भीतर चला गया । आपका कष्ट बढ़ता चला गया और आप को तुरन्त मेडिकल कालेज के अस्पताल में ले जाना पड़ा । डाक्टरों ने यथोचित जाँच–पड़ताल के बाद दूसरे दिन ऑपरेशन निश्चित किया । उन दिनों महाराज वहाँ चर्चलेन में आये हुए थे । घर के लोग भाग–भाग कर उनके पास आते और रोते । सभी उनकी जान बचाने के लिये बाबा से प्रार्थना करते । बाबा सब से सहज भाव से कहते, **"बूढ़ा अभी नहीं मरेगा ।"** इन लोगों को उनकी बात पर विश्वास ही नहीं हो पा रहा था, क्योंकि वे श्वास की नली के ऑपरेशन से भयभीत थे । जब इधर बाबा से ये बातें हो रही थीं उधर उनकी कृपा से कन्हैया लाल जी को एक ज़ोर का खाँसी का दौरा आया जिससे वह सेव का टुकड़ा समूचा बाहर आ गिरा । आपके घर के लोग जब वापस गये तो आप बिना ऑपरेशन के स्वस्थ मिले ।

(311) अयाचित कृपा का स्वरूप

नज़रबाग लखनऊ में बाबा एक घर में विराजमान थे । बाहर उनके भक्तों की कारों की कतार लगी थी । एकाएक बाबा ने श्री पूरन चन्द्र पाण्डे से जो उत्तर प्रदेश सचिवालय में कार्य करते हैं, महानगर किसी के घर जाने के लिये रिक्शा लाने के लिये कहा । उपस्थित किसी भी कार में जाना उन्होंने पसन्द नहीं किया । रिक्शा आने पर वे पाण्डे जी के साथ उसमें बैठ गये । रास्ते में इस अपरिचित रिक्शावाले का नाम लेते हुए वे बोले, **"रहीम ! तेरी घरवाली की तबीयत खराब है ?"** उसने उत्तर दिया, "वह सख्त बीमार है ।" बाबा बड़ी विनम्रता से बोले, **"चल, हमें अपने घर ले चल ।"** वह बाबा को घर ले गया । बाबा ने उस बीमार पर अपनी दृष्टि डाली और कहने लगे, **"घबरा मत, बिलकुल ठीक हो जायेगी ।"** ऐसा कह कर वे चले आये । इसमें सन्देह नहीं कि बाबा की कृपा से वह अच्छी हो गयी होगी ।

(312) रानी भद्री पर कृपा

श्रीमती गिरजा देवी, रानी भद्री बाबा के प्रति अपना आभार प्रकट करते हुए कहती हैं कि श्रीचरणों की महान् अनुकम्पा मेरे ऊपर हमेशा बनी रही और मुझे उनके दर्शन सुलभ होते रहे । जब राजा भद्री कुलपति होकर पन्तनगर विश्वविद्यालय में आये तो मैं भी उनके साथ थी । कुछ दिनों बाद मेरी माँ की तबीयत बहुत खराब हो गयी । इससे मैं अत्यन्त चिन्तित हो उठी और उस परेशानी में रोने लगी । उसी समय आकर बाबा ने मुझे परेशानी से मुक्त किया और बोले, **"रो मत, तेरी माँ ठीक हो जायेगी।"**

इसी प्रकार सन् 1964 में मेरी लड़की अलका की शादी हो रही थी। उस समय भी मैं बड़ी परेशानी में थी, तभी आराध्यदेव श्री महाराज जी बिना किसी पूर्व सूचना के लखनऊ मेरी कोठी में पहुँच गये और लड़की को आशीर्वाद देकर चले गये । मेरी समस्त परेशानियाँ स्वतः गायब हो गयीं और विवाह कार्य बहुत सुख और शान्ति से पूर्ण हुआ ।

(313) भक्त वत्सलता

एक अविस्मरणीय घटना श्रीचरणों के अलौकिक चमत्कार की सन् 1968 की है । मेरी (रानी भद्री की) पुत्री अलका प्रसव काल में थी और उसे अत्यन्त कष्ट था । हम सब परेशान और हताश थे । डाक्टरों ने लाचारी व्यक्त कर दी थी और वे आश्वासन भी नहीं दे पा रहे थे कि ऑपरेशन के बाद लड़की की जान बची रहेगी । ऐसे समय आराध्यदेव महाराज वहाँ प्रकट हो गये और सीधे अलका के कमरे में जाकर बैठ गये । आशीर्वाद के रूप में उन्होंने लड़की को एक पुष्प दिया और ढाढ़स बँधा कर चले गये। इसके बाद सब कार्य सहज हो गये और पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई।

(314) आर्त की पुकार की पूर्ति

श्रीमती सावित्री देवी, प्राइमरी स्कूल नैनीताल में अध्यापिका हैं । जिगर की खराबी से आप ढाई वर्ष से परेशान रहीं, अन्त में एकाएक आपका स्वास्थ्य इस प्रकार गिर गया कि आपको क्रासवेट अस्पताल में भरती होना पड़ा । वहाँ आपकी दशा और भी चिन्ताजनक हो गयी । डाक्टरों ने भी कुछ निराशा के संकेत दे दिये । इस नैराश्यपूर्ण स्थिति में आपके पतिदेव

श्री रमेश चन्द्र चौधरी हतोत्साहित हो गये । वे सीधे कैंची आश्रम में बाबा के पास आये और उनके चरणों में गिर कर बोले, "मारिये चाहे बचाइये, अब स्थिति मेरे बस की नहीं है ।" करुणा सागर इनका आत्मबल बढ़ाते हुए बोले, **"मरना कोई खेल है ! बहू अभी बहुत बचेगी । डाक्टर झूठ बोलते हैं ।"** बाबा ने एक फूल उठाकर चौधरी जी को देते हुए कहा, **'बहू को दे देना ।'** इस फूल को लेकर वे अस्पताल पहुँचे और उसे अपनी पत्नी के सिर पर रख दिया । धीरे-धीरे सावित्री जी की दशा में सुधार आता चला गया और कुछ ही दिनों में पूर्ण रूप से स्वस्थ हो आप घर लौट आयीं ।

(315) दारिद्र्य का उन्मूलन

एक दिन कैंची आश्रम में बाबा के दरबार में श्री गंगाधर पढ़ालनी नामक एक व्यक्ति उपस्थित हुआ जो इसी पर्वतीय भू-भाग का रहने वाला था । इसकी पत्नी केरल की थी । यह रोडवेज में एक छोटी नौकरी में था और अपने गृहस्थ के खर्चों को पूरा न कर पाने के कारण मन ही मन दुःखी रहता था । यद्यपि उसने बाबा से इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कहा, पर उन्होंने उपस्थित एक दर्शनार्थी से पाँच रुपये इसे दिलवाते हुए कहा, **"अपनी पत्नी के नाम से लाटरी का टिकट खरीद लेना ।"** पत्नी के नाम से, बाबा ने सप्रयोजन कहा इसलिए कि उपलब्धि सुरक्षित रह सके । इस व्यक्ति ने अपनी दुःखद स्थिति में बाबा की आज्ञा के अनुसार ही कार्य किया और उनकी कृपा से इसे पाँच लाख रुपयों की प्राप्ति हुई । पत्नी ने इस धन से यहाँ कुछ स्थूल सम्पत्ति प्राप्त कर ली और ये दोनों कुछ काल सुख पूर्वक रहे । अन्त में अपने पति के फिजूल खर्चों से दुःखी होकर पत्नी केरल चली गयी ।

(316) कृपा करने का अपना ढंग

बिहारी जी के मन्दिर के पास वृन्दावन में एक भिखारी माला फेर रहा था । दिन बहुत चढ़ चुका था, और उसे कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ, इस कारण वह मन ही मन बहुत दुःखी था । मन की जानने वाले बाबा की दृष्टि जब उस पर पड़ी तो वे तुरन्त उसकी बगल में जा बैठे । वह भिखारी बड़बड़ाने लगा कि सबेरे से बैठे चार पैसे भी मिल नहीं पाये अब यह भी हिस्सा बँटाने आ गया । बाबा ने जल्दी से, एक झटके में उसकी माला

छीन ली और स्वयं उससे जाप करने लगे । वह उन पर बहुत क्रुद्ध हुआ, पर बाबा शान्ति से उसकी माला जपते रहे । थोड़ी देर में उसकी माला सिद्ध कर उन्होंने उसे लौटा दी और आप उठ कर चल दिये । अब वह भाव कुभाव कैसे ही क्यों न माला फेरे उसके दारिद्र्य ने मिट ही जाना था।

(317) बाबा की सहृदयता

जिला नैनीताल में भवाली के पास भूमियाधार में बाबा का एक छोटा आश्रम है जिस के चारों ओर अधिकतर हरिजन ही रहा करते हैं । एक दिन बाबा इस आश्रम में आये हुए थे । एक हरिजन अपने स्वच्छ गिलास में बड़े प्रेम से बाबा के लिए दूध गर्म कर लाया, परन्तु उस गरीब ने जिस कपड़े से उस दूध को ढक रखा था वह बहुत गन्दा था । उस कपड़े को देखने के बाद किसी की भी उस दूध को पीने की रुचि नहीं हो सकती थी। बाबा ने बड़ी उतावली से गरम दूध के उस गिलास को अपने हाथ में ले लिया । उस गन्दे वस्त्र को स्वयं हटाकर वे बड़े प्रेम से उस दूध को पीने लगे । सहृदय बाबा की दृष्टि उस गरीब की भावना में थी, उन्हें उस कपड़े की गन्दगी नहीं दिखायी दी ।

(318) प्रतिकूल परिस्थिति और सन्तोषप्रद विवाह

कुटुल नामक एक अहीर चर्चलेन इलाहाबाद में, जहाँ बहुधा महाराज आकर ठहरते थे, दूध दिया करता था । उसने अपनी लड़की के लिए लड़का तो खोज रखा था पर धनाभाव के कारण विवाह करने में असमर्थ था । एक दिन उसने अपनी समस्या महाराज के आगे रखी और उनके आशीर्वाद की प्रार्थना की । बाबा बोले, **"जल्दी से जल्दी इस विवाह को कर दे ।"** उसने अपनी विषम परिस्थिति में बाबा पर भरोसा करते हुए पहले लग्न में ही विवाह निश्चित कर दिया, पर धन की चिन्ता यथावत् बनी रही । उसने कुछ वर्ष पूर्व एक अहीर को कई सौ रुपये उधार दिये थे, पर वह उससे उन रुपयों को वसूल नहीं कर पाया था । वह अहीर सदा टालता जा रहा था और कुटुल की भी धारणा पक्की हो चली थी कि अब ये रुपये उससे वसूल नहीं किये जा सकते । अपनी स्थिति उसकी ऐसी गिरी थी कि कर्ज मिलना भी सम्भव न था । अन्य कोई उपचार न देख

कर वह फिर उस अहीर के पास रुपये माँगने गया और रोष में उस से बुरा भला कह कर लौट आया ।

विवाह का दिन आ गया । कुटुल के सम्बन्धी हाथ बँटाने उसके घर आ गये । घर में कुछ साधन था नहीं । वह चिन्तामग्न बैठा था कि अब क्या करे । इतने में एक अज्ञात प्रेरणा से वह अहीर पूरे रुपये मय ब्याज के लाकर दे गया । उसी समय आवश्यक सामग्री जुटायी गयी और विवाह बड़ी धूम-धाम से हुआ । कहाँ से सामग्री इतनी बढ़ गयी, कुटुल देखता ही रह गया ।

(319) निराशा की सन्तुष्टि में परिणति

श्री रामदत्त पाण्डे की नैनीताल में दुकान है । आप अपनी दुकान का सामान हल्द्वानी से मँगाते हैं । एक दिन आपको सूचना मिली कि महाराज हल्द्वानी आये हुए हैं । आप उनके दर्शन की लालसा से बस में हल्द्वानी चले गये । वहाँ पहुँचने पर यह सूचना निराधार सिद्ध हुई, बाबा वहाँ नहीं थे । इस निराशा में आप दुकान की कुछ सामग्री लेकर नैनीताल जाने वाली एक बस में बैठ गये । करुणाकर किसी का दिल दुखाना जानते ही न थे, फिर जो उनके लिये कष्ट उठाकर आया हो उसे कैसे इस प्रकार लौटाते ! बस चलने को ही थी, एकाएक एक टैक्सी वहाँ आकर रुक गयी। उसमें से महाराज और उनके साथ आये कुछ भक्त उतरे और नैनीताल जाने के लिये उसी बस में बैठ गये । इस प्रकार महाराज का सामीप्य पाकर पाण्डे जी प्रसन्न हो गये । उनकी दुःखद निराशा की सुखद सन्तुष्टि में परिणति हो गयी ।

(320) क्षमाशीलता

घटना चर्चलेन इलाहाबाद की है । मई महीने की एक शाम थी । घर के बाहर 'लॉन' के एक सिरे पर बाबा एक कुर्सी पर बैठे थे और प्रयाग उच्चन्यायालय के कुछ न्यायाधीशों के परिवार भूमि पर बैठे उन्हें घेरे थे । मैं (लेखक) लॉन के दूसरी ओर अकेला बैठा था । थोड़ी देर में मेरे पास ही दो व्यक्ति आकर खड़े हो गये । एक काला कोट पहने वकील की पोशाक में और दूसरा कुर्ता-धोती पहने था । दोनों ने दूर से ही बाबा को नमन किया पर उनकी दृष्टि इन लोगों पर नहीं गयी । इनके प्रवेश के पूर्व से ही बाबा सिर नीचे किये हुए अपने पास बैठे लोगों से बातें करते जा रहे

थे, सम्भवतः वे इनकी ओर देखना ही न चाहते हों । ये लोग कुछ देर इसी प्रतीक्षा में खड़े रहे कि बाबा इनकी ओर देखेंगे, पर अन्त में निराश हो चुपचाप बैठ गये । दस मिनट ऐसे ही बीतने पर भी बाबा ने अपना सिर उठाया नहीं और वे उसी प्रकार बातें करते रहे । इस बीच काला कोट पहना हुआ व्यक्ति मुझे कुछ बेचैन सा दिखायी दिया । वह कुर्ता–धोती पहने व्यक्ति से वापस चलने का इशारा कर रहा था । उस को बेचैन देख उसका मित्र उठ खड़ा हुआ और बाबा का ध्यान वाणी से अपनी ओर आकर्षित करने लगा । वह बोला, "महाराज ! मैं अपने एक मित्र को लेकर आया हूँ । ये बड़े कष्ट में हैं और आपकी कृपा चाहते हैं ।" अपने मित्र को खड़ा देख काले कोट वाला व्यक्ति भी खड़ा हो गया । बाबा कुर्ता–धोती वाले से बोले, **"तू तो वकील है ।"** उसने उनकी बात का समर्थन किया । इसके बाद वे काले कोट वाले से कहने लगे, **"तू तो वकील नहीं है ।"** उसने भी उनकी बात का समर्थन किया । उपस्थित सभी लोग इस व्यक्ति को आश्चर्य की दृष्टि से देखते रहे । बाबा को कौन धोखा दे सकता ? बाबा ने सीधे काले कोट वाले से पूछा, **"क्या कष्ट है तुझे ?"** वह घबरा गया और कुछ बोल नहीं पाया । उसकी ओर से उसका मित्र वकील बोल उठा, "महाराज, ये कत्ल के केस में फँस लिये गये हैं और पुलिस इनका पीछा कर रही है ।" बाबा फिर काले कोट वाले से बोले, **"क्या तूने कत्ल नहीं किया ?"** उसके नकारात्मक सूक्ष्म उत्तर पर वे तीव्र स्वर में बोले, **"क्या तेरा कत्ल में हाथ नहीं था?"** वह सच बोल उठा, "था, महाराज !" यद्यपि वहाँ उस समय इस कत्ल का विवरण किसी ने भी नहीं दिया पर बाबा की आँखों के आगे सारी घटना आदि से अन्त तक चलचित्र की भाँति स्पष्ट हो रही थी । वे बोले, **"जिस व्यक्ति का तूने कत्ल करवाया वह बहुत सीधा था। तूने उसे क्यों मरवाया ?"** उसने विनम्र स्वर में उत्तर दिया, "महाराज ! वह मेरे रास्ते का रोड़ा हो रहा था ।" करुणासागर दुःखी होकर कहने लगे, **"उसके बच्चे अभी छोटे हैं ।"** उसने बाबा की बात का समर्थन किया। वे बोले, **"अब उनकी परवरिश कैसे होगी ?"** इसका उत्तर वह व्यक्ति नहीं दे सका और लज्जित हो गया । बाबा ने उससे कान पकड़ कर यह कहने को कहा कि आगे वह ऐसा काम कभी नहीं करेगा । उसने तुरन्त रोते हुए उनकी आज्ञा का पालन किया । बाबा ने वकील से पूछा, **"किस के इजलास में मुकदमा है ?"** वकील ने एक मुसलमान जज का नाम बताया । बाबा ने कहा, **"जाओ सब ठीक हो जायेगा ।"**

इस प्रकार महाराज ने अपराध से उसके दुष्कृतों की स्वीकृति सच्चे हृदय से जनसमुदाय के समक्ष करवा कर उचित प्रायश्चित करा दिया और

तदनन्तर अपने दरबार में उस शरणागत को क्षमा प्रदान कर लौकिक दण्ड से भी मुक्त कर दिया । इसमें सन्देह नहीं कि कृपा मूर्ति बाबा ने उन अनाथ बच्चों के पालन–पोषण का भार स्वयं अपने ऊपर ले लिया होगा – थे तो वे जगत पिता ही ।

(321) उदारता

हनुमानगढ़, नैनीताल की देखभाल हरिदास बाबा ही किया करते थे और कैंची आश्रम और मन्दिरों का निर्माण कार्य भी उनकी ही देख–रेख में चल रहा था । एक दिन उनकी अनुपस्थिति में हनुमानगढ़ के मन्दिरों से आभूषणों की चोरी हो गयी । हरिदास बाबा ने पुलिस में 'रिपोर्ट' लिखवायी। चोर पकड़े गये और पुलिस के तालों में बन्द कर दिये गये । एकाएक कहीं से महाराज हनुमानगढ़ आ गये और उन्होंने हरिदास बाबा को इस विषय में बहुत फटकारा और उन अपराधियों को छुड़वा कर ले आने का आदेश दिया । बड़े प्रयास से छुड़वाकर जब उन्हें उनके सम्मुख लाया गया तो बाबा उनके प्रति किये गये व्यवहार से बहुत दुःखी हुए और अपनी कृपापूर्ण दृष्टि उन पर डालते हुए आपने समस्त आभूषण उन्हीं को दे विदा किया ।

(322) बाबा का सेन्ट्रल जेल

घटना उस समय की है जब वृन्दावन आश्रम का निर्माण हो रहा था । वहाँ एक चौकीदार था जो सीमेंट की बोरियों को बेचकर रुपये बना रहा था । बाबा सब जानते हुए भी अनजान बने रहे, पर जब उस व्यक्ति की शिकायत आपसे की गयी तो आपने उसे बुलाकर पूछा, **"कितने रुपयों में तूने सीमेंट बेची ?"** इसके उत्तर में उसने दो सौ पचास रुपये बताये। बाबा ने उसे दो सौ पचास रुपये और देकर आश्रम से हटा दिया । इसके बाद वह बेरोज़गार हो गया । कुछ दिन भटकने के बाद वह फिर बाबा के सामने उपस्थित हुआ और दुःखी हो अपने दुष्कृतों के लिये क्षमा माँगने लगा और पुनः सेवा में लिये जाने की प्रार्थना करने लगा । बाबा ने अब की बार उसे संकटमोचन हनुमान मन्दिर लखनऊ का चौकीदार बना दिया, जिसकी देख रेख का भार आपने अपने परम भक्त सेन्ट्रल जेल आगरा के भू.पू. अधीक्षक श्री भूषण चन्द्र जोशी को सौंपा था । बाबा लोगों से कहने लगे, हमने उस चौकीदार को सेन्ट्रल जेल में भेज दिया है ।

प्रसन्न मुद्रा में

विविध लीलाएँ

महाराज की लीलाओं के अनेक प्रकार हैं । ये जीवन की सभी स्थितियों से सम्बन्धित हैं । आपकी सभी लीलाएँ रहस्यपूर्ण हैं और इनसे आपकी महानता, करुणा, कृपा, प्यार, अपनत्व, हास्य और विनोद का परिचय मिलता है । इस प्रकरण में उन लीलाओं को स्थान दिया गया है जिनसे पाठकों को बाबा के दर्शन निकट से हो सकें और उनके बारे में उन्हें अच्छी जानकारी प्राप्त हो सके । अतः इसमें बाबा के साथ की गयी यात्राओं का उल्लेख है या ऐसे प्रसंगों का जो व्यक्तियों के साथ उनके सम्बन्ध, व्यवहार, वार्ता या अद्भुत कार्यों को दर्शाते हैं ।

बाबा के साथ की गयी यात्रा में अपना अनोखा आनन्द रहता था – एक ओर दिव्य विभूति के निरन्तर दर्शन होते रहते और दूसरी ओर भाँति–भाँति के लीलाजन्य आश्चर्यपूर्ण अनुभव । यात्रा समाप्त हो जाती पर उसकी सुखद स्मृति बनी रहती । बाबा के लीलाकाल में प्रायः यह सभी का अनुभव रहा कि उनके दर्शन की कुछ ऐसी अवर्णनीय विशेषता थी कि उसके आगे उनकी आश्चर्यजनक लीलाएँ अधिक प्रभावोत्पादक नहीं प्रतीत होती थीं । इस कारण सब कुछ प्रत्यक्ष होते हुए भी बाबा को समझ पाना सम्भव न था।

बाबा स्वप्नों में भी दर्शन दिया करते थे । परहितार्थ, लोक कल्याणार्थ एवं भक्त को कृतार्थ करने के उद्देश्य से आपके स्वप्न में दर्शन वास्तविक और मुदमंगलदायक होते । इन स्वप्नों की सार्थकता जागने पर कभी स्पष्ट प्रमाणों या परिणामों में दिखायी देती । महाप्रयाण के बाद भी यह स्थिति बनी है ।

(323) महीने भर की आवभगत

एक बार महाराज ने अपने कुछ भक्तों को श्री बद्रीनाथ एवं गंगोत्री के दर्शन कराने का विचार किया । आपके प्रिय भक्त श्री हीरा लाल साह, जो हब्बा नाम से प्रख्यात थे, उन दिनों पौड़ी गढ़वाल में अपने पुत्र श्री बसन्त लाल साह के पास थे । बाबा ने श्री तुलाराम साह को श्री माँ के साथ हब्बा जी के पास जाने का आदेश दिया और कहा **"हम तुम्हें वहीं मिलेंगे ।"** इसके बाद बाबा अन्य भक्तों को भी इसी प्रकार हब्बा जी के पास भेजते रहे और उनके घर में भीड़ इकट्ठी कर दी, पर स्वयं वहाँ नहीं पहुँचे । सप्ताह भर वहाँ रहने के बाद तुलाराम जी कुछ संकोचवश और कुछ बाबा के न आने की निराशा से जब अपने घर वापस जाने के लिए उद्यत् होते, तभी बाबा के आने का तार आ पहुँचता । इस प्रकार सम्पूर्ण भक्त मण्डली हब्बा जी के यहाँ एक महीना रही और हर सप्ताह समय से बाबा का तार प्राप्त होता रहा और कोई अपने घर नहीं लौट पाया ।

एक दिन बाबा आ ही गये और उनके आगमन पर भण्डारा भी किया गया जिसमें अनेक स्थानीय लोगों ने प्रसाद पाया, पर बसन्त लाल जी कहते हैं कि उन्हें इसके लिए अलग से कोई सामग्री एकत्रित नहीं करनी पड़ी । अपने छोटे परिवार की जो माहवारी रसद थी वह महीने भर अतिथि सत्कार एवं भण्डारे के लिए पर्याप्त हुई ।

(324) क्षतिग्रस्त बस से पर्वतीय यात्रा

दूसरे दिन बाबा ने यात्रा आरम्भ करने का आदेश दिया । उस दिन पौड़ी में कोई बस उपलब्ध नहीं हो पायी, केवल एक बस थी जिसका पट्टा टूटा हुआ था । चालक उन्हें श्रीनगर तक ले जाने के लिए तैयार हो गया, क्योंकि गाड़ी की दशा ठीक न होने से उसे पहाड़ में ऊपर जाने का 'परमिट' नहीं मिल सकता था । सब लोग इसी बस से श्रीनगर को चल दिये, इसी आशा से कि वहाँ से दूसरी बस मिल ही जायेगी । श्रीनगर में भी गाड़ियों का अभाव था और वहाँ भी कोई बस नहीं मिल पायी । बाबा बस से उतरे ही नहीं और बोले, **"इसी बस से चलेंगे ।"** चालक ने जब पुलिस से 'परमिट' की प्रार्थना की तो उन्होंने उस गाड़ी को तुरन्त पास कर दिया, जबकि बस की हालत ऐसी खस्ता थी कि कहीं भी वह क्षतिग्रस्त हो सकती थी । उन दिनों जोशीमठ तक ही बस से जाया जा सकता था । अतः यह गाड़ी आप लोगों को सकुशल वहाँ पहुँचाकर वापस चली आयी ।

अपने ठिकाने कोटद्वार लौट आने पर वह एक दुर्घटना से बेकार हो गयी पर किसी को क्षति नहीं पहुँची । चालक और कण्डक्टर बाबा की इस अलौकिकता से चकित हो अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते रहे ।

(325) भार में अदला बदली

जोशीमठ से बद्रीनाथ को डाँडियाँ की गयीं, एक महाराज जी के लिए और दूसरी बसन्त लालाजी के ढाई वर्ष के बच्चे के लिये क्योंकि आगे की चढ़ाई में बच्चे को गोद में लेकर चल पाना कठिन था । डाँडी उठाने वाले मज़दूर बाबा के डील-डौल को देखकर घबरा गये और कहने लगे, "इस मोटे को भी क्या डाँडी की ज़रुरत है ?" भक्तों की भावना थी वे महाराज को पैदल नहीं ले जाना चाहते थे । उन्होंने उन्हें मुँहमाँगी मज़दूरी दी पर वे तैयार नहीं हुए । अन्त में यह समझौता हुआ कि बच्चे की डाँडी में लगे मज़दूर बाबा की डाँडी के मज़दूरों से अदला-बदली करते चलेंगे । चालाक मज़दूरों ने बच्चे की डाँडी उठानी पसन्द की और वे अदला-बदली करना नहीं चाहते थे । पर जिस डाँडी में बाबा विराजमान थे वह बहुत तेज़ी से आगे निकल गयी । उन मज़दूरों को बाबा का भार मालूम ही नहीं दिया, ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वे खाली डाँडी ढो रहे हों, परन्तु जिस डाँडी में बच्चा बैठा था, वह बहुत पीछे रह गयी । उसके मज़दूरों का कन्धा जवाब दे रहा था । उन्हें आश्चर्य था कि इतना छोटा बच्चा इतना भारी कैसे ! इस बात को व्यक्त करने में उन्हें लज्जा आ रही थी, पर जब स्थिति बर्दाश्त के बाहर हो गयी तो उन्हें कहना ही पड़ा । मज़दूरों की बात पर बच्चे के माँ-बाप को विश्वास नहीं हुआ, फिर भी उन्होंने बच्चे को कुछ दूर पैदल चलाया, जिससे मज़दूरों को कुछ राहत मिले । उधर बाबा बहुत आगे निकल चुके थे उन्होंने अपनी डाँडी रुकवा दी और इन लोगों की प्रतीक्षा करने लगे । जब मज़दूरों से अदला-बदली करने को कहा गया तो बाबा की डाँडी के मज़दूर बच्चे की डाँडी उठाने को तैयार नहीं हुए । बच्चा भी बाबा के साथ डाँडी में बैठने की ज़िद करने लगा । बाबाने उसे अपनी डाँडी में बिठा लिया । इससे समस्या और भी जटिल हो गई । बाबा की डाँडी के मज़दूर अब अपनी डाँडी उठाने में आनाकानी करने लगे । बाबा के मनाने पर जब मज़दूरों ने उस डाँडी को उठाया तो उन्हें भार में कोई अन्तर नहीं मालूम दिया और वे सरलता से बद्रीनाथ पहुँच गये । बच्चे की डाँडी बराबर खाली गयी । क्या अनोखी लीला थी बाबा की यह !

(326) बद्रीनाथ विग्रह में बाबा के दर्शन

बद्रीनाथ पहुँचने पर बाबा ने सभी भक्तगणों को काली कमली वाले की धर्मशाला में ठहराया और हब्बा जी के साथ आप बद्रीवन में रहे । उन दिनों बद्रीवन में कोई बस्ती नहीं थी, वह ऊबड़–खाबड़ और वीरान था । बसन्त लाल जी की पत्नी श्रीमती मुन्नी जी, श्री माँ के साथ ही स्नान करतीं और तदुपरान्त माँ के बद्रीवन जाने पर आप धर्मशाला में आकर भक्तजनों को चाय पिलातीं और फिर बद्रीविशाल जी के दर्शन कर बद्रीवन बाबा के दर्शनार्थ जाया करती थीं । बाबा सभी आगन्तुकों को गरम–गरम मालपुओं से तृप्त करते थे । रोज की भाँति जब एक दिन मुन्नी जी बाबा के पास गयीं तो वे आपसे बोले, **"तूने आज बद्रीनाथ के दर्शन नहीं किये ?"** आप दर्शन कर चुकी थीं, इस कारण चुप रहीं । बाबा पुनः बोले, **"जा, फिर दर्शन कर आ ।"** बद्रीनाथ के मन्दिर में भीड़ के कारण दर्शनार्थियों को बहुत देर तक भीतर रुकने नहीं देते थे, यह बाबा की महिमा थी कि उनका भक्त जो भी वहाँ जाता उसे कोई टोकता न था । मुन्नी जी उनके आदेशानुसार पुनः मन्दिर में उपस्थित हुईं । आपको इस बार बद्रीनाथ जी की मूर्ति नहीं दिखायी दी, उस स्थान में आपको बाबा सशरीर बैठे दिखायी दिये । आप मूर्तिवत् खड़ी यह दृश्य देखती रह गयीं । आपको मन्दिर भेजने के उपरान्त बाबा ने आपके श्वसुर हब्बा जी को भी दर्शन करने भेजा था । वे भी आपके पास ही खड़े–खड़े बहुत देर तक रोते–रोते दर्शन करते रहे, सम्भवतः उन्हें भी मूर्ति के स्थान पर बाबा ही दिखायी दे रहे थे । कुछ समय बाद दोनों लौट कर बाबा के पास आये और वहाँ पहुँचते ही हब्बा जी बोले, "सरकार ! आपने हमें बेकार दौड़ाया, जो दर्शन आपके हमें यहाँ होते हैं, वही वहाँ विग्रह में भी हुए ।"

(327) बच्चा ज़िद भूल गया

बद्रीनाथ से सब लोग लौटकर गंगोत्री ज़ाने के लिए ऋषिकेश की ओर बस में आ रहे थे । श्रीनगर से बसन्त लाल जी ने पौड़ी वापस जाना था और आपकी पत्नी ने भक्तों के साथ गंगोत्री । बच्चे को पहाड़ में ले जाने में बहुत कठिनाई थी, पर वह अपनी माँ के साथ जाने की ज़िद पकड़े हुए था । यह भी एक आश्चर्य की घटना हुई कि श्रीनगर पहुँचते ही वह एकाएक स्वतः अपने पिता के साथ पौड़ी जाने के लिये तैयार हो गया ।

(328) दूध और नगों में परिणति

जब यह दल गंगोत्री की ओर जा रहा था, मार्ग में एक स्थान में भागीरथी के पास बाबा बैठ गये और हब्बा से बोले, **"सतयुग में यह दूध की गंगा थी ।"**

"सरकार ! अब भी है ।"

"तुझे दूध की दिखायी दे रही है ?"

"सरकार ! आपके पास से दूध की ही दिखायी देती है ।"

बाबा ने उन से एक लोटा गंगा जल और एक मुट्ठी भर रेत ले आने को कहा । हब्बाजी एक लोटा भर दूध और मुट्ठी भर रेत ले आये । जब उन्होंने बाबा के पास आकर रेत से भरी अपनी बन्द मुट्ठी खोली तो समस्त रेत के कण कीमती नगों में बदल गये । महाराज ने उन नगों को सब लोगों में बाँट देने को कहा, पर हब्बा जी को यह स्वीकार नहीं हुआ । उनकी दृष्टि में महाराज के आगे नगों का कोई मूल्य न था । आपने बाबा की आज्ञा लेकर उन्हें गंगा में ही प्रवाहित कर दिया ।

(329) साक्षात् शंकर के दर्शन

अपरान्ह में सब लोग गंगोत्री पहुँचे । महाराज ने वहाँ भक्त लोगों को एक मकान में ठहराया और हब्बा जी को लेकर आप अन्यत्र रहे । बाबा से कोई निश्चयात्मक आदेश प्राप्त न होने के कारण माइयाँ शाम तक घर में ही रहीं । जब शाम को उन्हें गंगोत्री के दर्शन की आज्ञा हुई तो श्री माँ और मुन्नी जी को वहाँ सामने हिमालय में साक्षात् शंकर जी के दर्शन हुए । आप लोग मन्दिर की ओर पीठ किये शंकर भगवान् के रमणीक दर्शन में लीन हो गयीं । लोगों को आपका मन्दिर की ओर पीठ किये खड़ा होना अच्छा नहीं मालूम दे रहा था, पर उनकी बातों को उचित समझते हुए भी आप लाचारी का अनुभव कर रही थीं । थोड़ी देर में तुलाराम जी भी वहाँ पहुँच गये । उन्हें भी शंकर भगवान् के दर्शन कराने की चेष्टा की गयी, पर इतनी देर में उस पर्वत को बादलों ने आच्छादित कर दिया, इस कारण वे देख नहीं पाये । वहाँ पर खड़ा एक व्यक्ति बता रहा था कि इस पर्वत पर सदा बादल ही छाये रहते हैं। अवश्य यहाँ आज कोई महात्मा आया है जिसके लिये यह पर्वत बड़े अरसे के बाद दर्शन दे रहा है ।

(330) साँप और बिच्छू की लड़ाई

गंगोत्री से आप लोगों ने ऋषिकेश को प्रस्थान किया । उस दिन रात के आठ बजे आप लोग धराली नामक स्थान में पहुँचे और वहीं आपने वास

किया । धराली में सब गृहस्थ एक धर्मशाला में ठहरे । श्री उमादत्त शुक्ला ने एक चाय की दुकान में ही रात बिता दी । बाबा वहीं चाय की दुकान के पीछे एक लकड़ी के गोदाम में लेट गये । जब सबेरे गिरीश जी धर्मशाला से उठ कर बाबा के दर्शन के लिये लकड़ी के गोदाम में पहुँचे तो उन्होंने बाबा की छाती के ऊपर कम्बल पर एक साँप और बिच्छू को लड़ते देखा। इस दृश्य से वे भयभीत हो चिल्ला उठे । उनके इस प्रकार चीखने पर बाबा ने ज्योंही कम्बल उठाया तो साँप एक ओर और बिच्छू दूसरी ओर को चल दिये ।

(331) तीन जानें बचीं

धराली से आप लोग ऋषिकेश पहुँचे और वहाँ पन्द्रह दिन रहे । एक दिन प्रातःकाल सभी लोग गंगा–स्नान कर रहे थे । मुन्नी जी नहा कर गंगा जी से बाहर आ रही थीं और श्री माँ नहाकर कपड़े बदल रही थीं, उनकी पीठ उस समय गंगा की ओर थी । मुन्नी जी ने देखा तुलाराम जी बह चले और आपने चीखते हुए श्री माँ का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया । तुलाराम जी धारा के वेग में डूबते–उबरते बहते जा रहे थे । माँ तैरना जानती नहीं थीं, पर पति को बचाने के लिये उस प्रवाह में कूद पड़ीं । मुन्नी जी यह दृश्य देखकर भयभीत हो उठीं । उन्होंने निर्णय किया कि इन दोनों के डूबने के बाद अपना जिन्दा घर लौटना उचित नहीं है । तैरना आप भी नहीं जानती थीं । स्वयं को प्रवाहित करने के उद्देश्य से आपने पुनः गंगा में प्रवेश किया । हब्बा जी स्नान कर चुकने के बाद पास में ही ध्यानावस्थित थे, उन्हें कुछ पता न था । महाराज कुटिया में ही रहे, वे यहाँ आये ही न थे । वे कमरे में उस समय इधर–उधर गश्त लगा रहे थे । मुन्नी जी ने एकाएक अनहोनी बात देखी । श्री माँ तुलाराम जी को धारा से निकाल कर किनारे ले आयीं और गंगा से बाहर आने पर तुलाराम जी ने स्वस्थ होने में कुछ समय नहीं लिया । मुन्नी जी यह सब देखती रह गयीं । उन्हें अपने डूबने के संकल्प की भी याद न रही, और गंगा से बाहर चली आयीं। जब सब लोग स्नान के बाद बाबा के पास पहुँचे तो वे कहने लगे, "आज तीन जानें बचीं । सिद्धि ने अपने पति को बचा लिया।"

(332) सिद्धेश्वर महाराज

एक बार बाबा कानपुर में सेठ राम रतन गुप्ता जी के घर गये थे । वहाँ उनके भाई ने भी बाबा के दर्शन किये और उन्होंने बाबा को अपने

घर बम्बई में आमन्त्रित किया । बाबा के साथ उस समय उनके भक्त गिरीश जी थे जिन्हें गुप्ता जी ने प्रिन्स स्ट्रीट, बम्बई का अपना पता लिखा दिया था ।

कुछ वर्षों बाद ऐसा संयोग बना कि बाबा दक्षिण यात्रा में जा रहे थे, उनके साथ उस समय श्री माँ, तुलाराम साह जी, उनके पुत्र रमेश जी और गिरीश जी भी थे । वे बम्बई पहुँचे और गुप्ता जी के निवास स्थान प्रिन्स स्ट्रीट में रहे । गुप्ता जी ने दक्षिण भारत की एक प्रख्यात् ब्रह्मचारिणी महिला के चमत्कार पूर्ण कार्यों का वर्णन सुनाया और वे बाबा, रमेश जी और गिरीश जी को लेकर बम्बई से बाहर उस महिला के घर गये । उस महिला ने इन लोगों का स्वागत किया और इन्हें उस कमरे में बिठाया जहाँ अन्य दर्शनार्थी उपस्थित थे । गुप्ता जी ने उससे नवागन्तुकों को प्रसाद देने का आग्रह किया ।

उस महिला के पास दो कटोरे थे, एक में रोली और दूसरे में चन्दन था । वह प्रत्येक के हाथ में रोली छोड़ती तो वह चन्दन बन जाता और जब चन्दन छोड़ती तो वह रोली बन जाती । इसके बाद वह अष्टधातु की एक मूर्ति अपने हाथ में पैदा कर दर्शनार्थी को प्रसाद रूप में दे देती थी । उसने इसी प्रकार गिरीश जी को दुर्गा की मूर्ति दी । जब रमेश जी की बारी आयी तो वे मन ही मन बाबा से प्रार्थना करने लगे कि उस महिला के हाथ में उनको देने के लिये कोई मूर्ति पैदा न हो । हुआ ऐसा ही, फलतः वह महिला अचेत होकर गिर पड़ी । उसके संरक्षक अथवा सचिव उसे दूसरे कमरे में उठा ले गये और वहाँ कुछ देर विश्राम के बाद वह सचेत हो गयी। इस बीच घबराहट में रमेश जी ने सब बातें बाबा से कह दीं । महिला के बाहर आने पर बाबा ने फिर रमेश जी से प्रसाद लेने को कहा । इस बार महिला के हाथ में लक्ष्मी जी की मूर्ति प्रकट हुई जिसे उसने रमेश जी को दे दिया । तदनन्तर गुप्ता जी के आग्रह पर उसने एक शिव परिवार की मूर्ति बाबा को दी । इसके बाद बम्बई वापस आने पर रमेश जी और गिरीश जी ने अपनी मूर्तियाँ बाबा को समर्पित करते हुए इसका रहस्य पूछा । बाबा केवल इतना ही बोले, **"ऐसा हो जाता है ।"** उन्होंने इन तीनों मूर्तियों को माँ के आँचल में बाँध दिया । जब माँ ने अपने आँचल की गाँठ खोली तो बाबा की कृपा से, बिना किसी प्रकार के प्रदर्शन के, चौथी मूर्ति राम जी की प्रकट हो गयी । ये चारों मूर्तियाँ इन्डिया होटल, नैनीताल में सुरक्षित हैं ।

(333) एक बहकावा

श्रीमती शकुन्तला साह, बाल्यकाल से ही अपनी माता जी के साथ आकर हनुमानगढ़ नैनीताल में बाबा के दर्शन किया करती थीं । नैनीताल ही में विवाह हो जाने से आपको बाबा के दर्शन की सुविधा बराबर मिलती रही। यह आपका सौभाग्य रहा कि आप बाबा के निकट सम्पर्क में रहीं । भक्तों को बाबा के साथ इधर-उधर यात्रा में जाते देख आप की भी इच्छा होती थी कि ऐसे अवसर आप को भी प्राप्त होते । पर आपके बच्चे छोटे थे, इस कारण आप स्वयं ही अपने को लाचार पाती थीं । संयोगवश आप एक बार अपने सम्बन्धी स्व. जगाती बाबू के निवास स्थान कर्नलगंज, इलाहाबाद में थीं और बाबा भी उन दिनों पास में चर्चलेन इलाहाबाद में विराजमान थे । एक दिन आपने बाबा से चित्रकूट यात्रा के लिए विनीत आग्रह किया । बाबा आपके प्रस्ताव को टालने की कोशिश करते रहे, पर आप अपनी बात पर दृढ़ रहीं । उन्होंने आपकी इच्छा रख दी और तैयार हो गये । एक कार में जितने भक्तजन समा सकते थे बैठ कर रवाना हुए। श्री माँ भी उस यात्रा में साथ थीं । दिन ही दिन में यात्रा पूरी कर शाम तक इलाहाबाद आने की योजना थी । इलाहाबाद से गाड़ी चार मील दूर ही चल पायी थी, कुछ खराबी आने से नैनी से पूर्व ही एकाएक रुक गयी । महाराज उतर कर पास में अरहर के खेत में स्थित एक छोटे हनुमान मन्दिर में जा बैठे । सब भक्तजन वहीं उनकी वार्ताओं का आनन्द लेते रहे। कई घण्टे बीत गये । बालक नामक कार चालक उस खराबी का अन्दाज़ नहीं लगा पा रहा था । बाबा बीच-बीच में ताकीद करते जाते, **"जल्दी करो वरना फिर जाने का समय नहीं रहेगा ।"** वह यही कहता कि गाड़ी तो सब तरह से ठीक ही दिखायी दे रही है, पर क्यों नहीं चल पा रही है यह समझ में नहीं आता । वह अनेकानेक युक्तियाँ लगा कर हार गया । इधर चर्चलेन में बाबा के जाने के बाद से श्री सुधीर मुकर्जी की तबीयत विशेष रूप से खराब हो चली । उनकी मौसी माँ अत्यधिक चिन्तित हो गयीं और महाराज को याद करने लगीं । बाबा चालक से बोले, **"कार में एक लोटा पानी डालो ।"** आपके आदेश का पालन करते ही गाड़ी चलने योग्य हो गयी । सब लोग लौटकर चर्चलेन आ गये । बाबा मौसी माँ से बोले, **"तूने हमें याद किया था, हम आ गये ।"**

(334) रामनाम से अंकित वृक्ष

दूसरे दिन बाबा के आदेश से यह यात्रा फिर आरम्भ की गयी । एक बस में अनेक भक्तजन और माइयाँ चित्रकूट के लिये रवाना हुए । दिन ही दिन में लोग चित्रकूट हनुमान धारा, अनुसूइया, स्फटिक शिला आदि स्थानों के दर्शन कर इलाहाबाद को लौटे । कामतानाथ में बाबा ने सब लोगों को रामकुलू वृक्षों के दर्शन करने के लिये भेजा और आप यथास्थान बैठे रहे । इन वृक्षों की हर शाखा और पत्ते में सभी लोगों को रामनाम अंकित दिखायी दिया और वे इस दृश्य से चकित रह गये । जब लौटकर लोगों ने बाबा से अपना आश्चर्य व्यक्त किया तो वे बोले, **"हम इस बात को तब सच मानेंगे जब रमेश कहेगा ।"** रमेश जी श्री माँ के सुपुत्र हैं, आप स्वभावतः किसी बात पर एकाएक विश्वास नहीं करते । आपने जाकर उन वृक्षों का निरीक्षण किया और एक वृक्ष से उसकी छाल निकाल कर भी देखी । आप यह देख कर चकित रह गये कि छाल के भीतर भी रामनाम अंकित था । इससे आपके विचारों में मौलिक परिवर्तन आये और आप की इस ओर आस्था बढ़ी ।

(335) प्रेम की रोटी से तृप्ति

सन् 1949 में महाराज एक दिन नौ भक्तों को साथ लेकर नैनीताल से हल्द्वानी होते हुए काशीपुर पहुँचे और वहाँ उन्होंने श्री किशन चौबे के घर को पवित्र किया । चौबे जी काशीपुर के धनी-मानी व्यक्ति थे, उन्होंने महाराज और उनके भक्तों की बहुत अच्छी आवभगत की । दिन भर उस नगर के भक्तगण भी बाबा की सेवा में भोग की थाली और दूध लेकर आते रहे । बाबा ने उस दिन बहुत अधिक संख्या में भोग की थालियाँ खाली कर दीं और वे बहुत मात्रा में दूध भी पी गये । इसके बाद शाम होने से पूर्व ही वे अपने को भूखा दर्शाने लगे । उन्होंने अपने एक भक्त श्री पूरन चन्द्र जोशी को पास की गली में यह कह कर भेजा **"वहाँ एक बुढ़िया मेरे लिये रोटी बनाकर प्रतीक्षा में बैठी है, उससे रोटी ले आ।"** जोशी जी उस तंग गली में गये, वहाँ एक खुले दरवाज़े के पास उन्हें एक बुढ़िया बैठी दिखायी दी । आपने जैसे ही उसके आगे बाबा का नाम लिया वह प्रसन्न बदना भीतर से एक मोटी रोटी और हरी सब्जी लेकर आयी । इतने में बाबा स्वयं वहाँ आ गये और बड़े चाव से बुढ़िया की रोटी को अपने हाथ में लेकर खाने लगे ।

रोटी खाकर बाबा आगे बढ़े । चन्द मिनटों में इस कस्बे के बाहर पहुँच गये । उन दिनों काशीपुर का अधिक विकास नहीं हुआ था । चौबे जी के घर में ठहरे भक्तगण भी उन्हें खोजते हुए उनके पास पहुँच गये । सब लोग धूलि–धूसरित मार्ग से होकर जा रहे थे, इतने में दूसरी ओर से कुछ कुम्हारों की टोली आती दिखायी दी जो अपने मिट्टी के बरतनों को गधों पर लाद कर कस्बे की ओर आ रहे थे । इस टोली में एक युवा कुम्हार का हृदय परिवर्तन कर बाबा ने तत्काल उसे साधु बना दिया । इस घटना का उल्लेख प्रसंग संख्या 255 में किया गया है ।

(336) टिकटों में वृद्धि

काशीपुर से बाबा भक्त मण्डली के साथ रेल द्वारा हल्द्वानी को लौटे। चौबे जी ने उनके लिये द्वितीय श्रेणी का और अन्य भक्तों के लिये तृतीय श्रेणी के भूल से आठ टिकट लेकर एक भक्त को दे दिये थे, जब कि बाबा के साथ में आये लोगों की संख्या नौ थी । एक पण्डित जी को छोड़ कर जो तृतीय श्रेणी में सफर कर रहे थे अन्य भक्तजन बाबा के साथ ही द्वितीय श्रेणी में बैठे थे । बाबा एकाएक भक्तों से बोले, **"टिकट कितने हैं ?"** एक भक्त ने बताया कि पूरे हैं । बाबा ने तीव्र स्वर में कहा, **"पण्डित का टिकट कहाँ है ?"** इस पर सब को इस भूल पर खेद हुआ । बाबा ने सब टिकट अपने पास ले लिये और चलती गाड़ी से उन्हें बाहर फेंक कर सभी को बिना टिकट का यात्री बना दिया । उस दिन गाड़ी में 'स्पेशल चेकिंग' हो रही थी । बाबा के पास बैठे आठों भक्त राजकीय कर्मचारी थे । बिना टिकट पकड़े जाने की सम्भावना से इन्हें अपनी नौकरी का भय होने लगा । अगला स्टेशन आते ही बाबा अपने कक्ष से उतर गये और तृतीय श्रेणी में पण्डित के पास बैठ गये । सभी भक्तजन उनके साथ ही इस कक्ष में आ बैठे । उसी समय बाबा ने एक भक्त के हाथ में तृतीय श्रेणी के नौ टिकट रख दिये ।

(337) एक मुसलमान का आत्मसमर्पण

गाड़ी चलने से पूर्व इस कक्ष में एक मुसलमान फलवाला अपनी फलों की टोकरी लिये चला आया । वह फल बेचने हल्द्वानी जा रहा था । इस कक्ष में बाबा के आगे भक्तजन कीर्तन कर रहे थे । वह फलवाला बाबा के

दर्शन से मन्त्र–मुग्ध सा हो गया । वह उनके चरणों के पास बैठ गया और उन्हें एकटक दृष्टि से देखता रह गया । उसने अपने फलों का टोकरा बाबा के भोग के लिये प्रस्तुत कर दिया था । प्रसाद के रूप में वे फल उस कक्ष में उपस्थित सभी लोगों में बँट गये और टोकरा खाली हो गया । बाबा ने उसके सिर में अपना हाथ रख कर उसे जो आशीर्वाद दिया इससे उसके आनन्द की कोई सीमा न रही । उसके नेत्र सजल हो उठे, देह में पुलकावली छा गयी और कण्ठ रुंध गया । उसे अपनी सुध–बुध ही न थी ।

(338) ट्रक के चालक पर कृपा

गाड़ी के विलम्ब से लालकुँआ स्टेशन पहुँचने के कारण हल्द्वानी की गाड़ी छूट चुकी थी । उस समय रात्रि में हल्द्वानी के लिये कोई गाड़ी न थी । बस का भी समय न था । अब रात लालकुँआ स्टेशन में ही गुजारनी थी । बाबा जब गाड़ी से उतर कर प्लेटफार्म पर आये तो पास में खड़े एक मुसलमान ट्रक–चालक की दृष्टि कम्बलधारी बाबा पर पड़ी । वह बड़े कौतूहलपूर्ण नेत्रों से उन्हें देखता रहा । बाबा उसकी ओर देख कर बोले, **"औरत बीमार है तेरी ? तू दुःखी है ? बरेली आगरा सब जगह दिखा चुका, कुछ लाभ नहीं हो रहा है ? घबरा मत ठीक हो जायेगी ।"** वह चुपचाप बाबा की बातें सुनता रहा और आश्चर्यचकित हो निवेदन करने लगा, "बाबा आप को कहाँ जाना है ? यदि आज्ञा हो तो मेरी ट्रक बाहर खड़ी है आप जहाँ चाहें मैं पहुँचा दूं ।" वह सब लोगों को अपनी ट्रक में बिठा कर हल्द्वानी ले आया ।

(339) इच्छा साकार हो जाती

महाराज एक बार श्री माँ, जीवन्ती माँ, रमेश साह आदि अनेक भक्तों के साथ दक्षिण यात्रा को गये । 9 जनवरी 1973 को मद्रास पहुँचने पर आपने इच्छा व्यक्त की कि वे सिन्धी धर्मशाला में ठहरना चाहेंगे । भक्तजन उसी धर्मशाला में बाबा को ले गये । आपने तुरन्त धर्मशाला का निरीक्षण कर कुछ कमरों की ओर संकेत करते हुए बताया कि इन्हीं कमरों में रहना होगा । ये कमरे बन्द थे । सामान सब उतार कर इन कमरों के आगे बरामदे में रख दिया गया । भक्तजन मैनेजर से मिले और उन्होंने उन कमरों को खुलवाने का आग्रह किया । उसने इनकी बात नहीं मानी और बोला कि वे कमरे वृन्दावन से आज आने वाले किसी व्यक्ति के लिए

आरक्षित हैं और वह उनकी प्रतीक्षा कर रहा है । उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि धर्मशाला के अन्य कमरे घिरे हैं और इसमें उनके लिए स्थान नहीं है । सुझाव के तौर पर उसने अन्यत्र स्थान खोजने की राय दी । जब लोगों ने बाबा को सारी परिस्थिति समझायी तो वे बालक की भांति ज़िद् पकड़ गये और बोले, **"हम इन्हीं कमरों में रहेंगे ।"** अतः बरामदे में ही एक बिस्तर खोलकर उनके विश्राम की व्यवस्था कर दी गयी । इतने में मैनेजर वहाँ आ पहुँचा और नाराजगी दिखाते हुए बोला, "आप सामान उठाइये यहाँ बरामदे में नहीं रह सकते ।" उसके ऐसा कह कर चले जाने के बाद भी बाबा ने वहाँ से जाना पसन्द नहीं किया और बोले, **"इन कमरों में कोई नहीं आयेगा । मैनेजर को बकने दो ।"** दिन बीतता जा रहा था और सांझ होने के पूर्व ही भक्तजन फिर मैनेजर से मिले और पुनः उन कमरों के लिये अनुरोध करने लगे । इस पर उसने आप लोगों को एक तार दिखाया जो उसी समय आया था जिसमें वृन्दावन के उस आरक्षण को रद्द करने की प्रार्थना थी । उसने सहर्ष ये कमरे महाराज के लिये खोल दिये ।

(340) प्रयोजन अज्ञात रहता

इस धर्मशाला में रहते बाबा एक दिन भक्तों को लगभग 23 कि.मी. दूर वैष्णवी देवी मन्दिर के दर्शन कराने ले गये । दो टैक्सियाँ मँगायी गयीं । महाराज पिछली टैक्सी में बैठ गये और कुछ भक्तजन आगे वाली में । सदा उनकी कार आगे-आगे चला करती थी पर आज पीछे-पीछे चल रही थी । परिणाम यह हुआ कि मन्दिर रास्ते में ही छूट गया और गाड़ियाँ 9 कि.मी. आगे निकल गयीं और वीरापुरम् के पास एक विस्तृत, बंजर और वीरान मैदान में पहुँचीं । बाबा के आदेश से गाड़ियाँ रोकी गयीं और महाराज गाड़ी से बाहर आकर यहाँ विचरण करने लगे और बोले, **"हम तो बताना भूल गये, हमें याद ही नहीं रही, मन्दिर तो पीछे छूट गया है ।"** इस प्रकार वे उस भूमि को पवित्र कर गये । वे फिर टैक्सी में बैठे और वैष्णवी देवी मन्दिर की ओर लौटे । अब की बार उनकी गाड़ी सदा की भाँति आगे चली । वीरापुरम् की यह वही भूमि है जहाँ एक अनोखे संयोग से, बाबा के समाधिस्थ होने के दस वर्ष बाद, 19 जनवरी 1984 को श्री हुकुम चन्द जी के प्रयत्न से बाबा के विग्रह की स्थापना बड़े समारोह के साथ की गयी जिसमें देश-विदेश के भक्त एकत्रित हुए । उत्तरी भारत के सन्त का दक्षिणी भारत में यह प्रथम मन्दिर है । श्री हुकुम चन्द

जिन्होंने इस भूमि में अनेक मन्दिर और आश्रम बनाये, उनकी जानकारी में भी यह बात कभी नहीं रही कि उस भूमि पर बाबा का पहले पदार्पण हो चुका था ।

(341) सात्विक दृष्टि से भावनाओं की शुद्धि

श्री हुकुम चन्द, सिन्ध के रहने वाले थे । हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के विभाजन होने पर 1947 में आप मद्रास में आकर व्यापार करने लगे । स्वभावतः आप साधु प्रकृति के हैं । आप मद्रास में सदा, वैष्णवी देवी मन्दिर एवं आश्रम के अध्यक्ष, एक विद्वान् गृहस्थ सन्त से सत्संग किया करते थे । बाबा ने अपने परिकरों को वैष्णवी देवी के दर्शन कराये और उस गृहस्थ सन्त को अपने दर्शन से कृतार्थ किया । बाबा के चले जाने के बाद जब हुकुम चन्द जी उन सन्त महोदय से मिले तो उन्होंने आपको बाबा के दर्शन करने का सुझाव दिया और सिन्धी धर्मशाला का पता भी बताया । आप बाबा को पहचानते नहीं थे इस कारण एक बार इस धर्मशाला में आकर लौट गये थे और दूसरी बार भी ये निराश हो कर लौट ही रहे थे कि एकाएक बाबा ने रमेश जी को भेजकर आप को बुलवाया । आप जब बाबा के कमरे के द्वार पर उपस्थित हुए तो आपने कुछ माइयों को बाबा के चरण दबाते देखा । इस दृश्य से आपकी भावना विकारग्रस्त हो गयी और आप भीतर प्रवेश करने में हिचकिचाये, पर जब आपकी दृष्टि उनके मुस्कान भरे मुख–मण्डल पर पड़ी तो उनकी दिव्य दृष्टि से आपकी भावनाएँ शुद्ध हो गयीं और आप तुरन्त उनके सम्मुख हाथ जोड़ कर खड़े हो गये । बाबा ने आपसे दूसरे दिन सुबह आने को कहा ।

(342) दूसरों की चिन्ता

दूसरे दिन निर्धारित समय पर हुकुम चन्द जी बाबा के दर्शन के लिये सिन्धी धर्मशाला में उपस्थित हुए और उनसे पूछने लगे कि माया से कैसे पार पाया जाय ? बाबा तुरन्त बोले, **"माया क्या होती है ? कहाँ है?"** और स्वयं ही उत्तर देने लगे, **"है ही नहीं ।"** इसके बाद वे बोले, **"आँख में तकलीफ है । यहाँ कौन डाक्टर अच्छा है ?"** आपने डाक्टर अग्रवाल और डाक्टर अब्राहम दो नाम बताये । बाबा ने पूछा, **"अब्राहम कौन है ?"**

"क्रिश्चियन ।"

"अब्राहम अच्छा है। अब्राहम अच्छा है। उसी को दिखायेंगे।"
इसके बाद बाबा ने आप से दो दिन बाद आने को कहा । हुकुम चन्द जी ने डाक्टर से सम्पर्क करना चाहा । आपको ज्ञात हुआ कि वह बंगलौर गया हुआ है और दो दिन बाद ही आयेगा । दो दिन बाद डाक्टर के आने पर हुकुम चन्द जी फिर बाबा के पास पहुँचे । बाबा उस समय रामेश्वर को प्रस्थान कर रहे थे । वे बोले यात्रा से आने पर देखेंगे ।

बाबा के चले जाने के बाद हुकुम चन्द जी को एक काम से बम्बई जाना पड़ा, जहाँ उनका ऐनक रास्ते में गिर कर टूट गया । आपने बम्बई पहुँचते ही दूसरा ऐनक बनवाया, पर इससे आपके सिर में दर्द रहने लगा । मद्रास वापस आने पर आपकी इच्छा हुई कि डाक्टर अब्राहम से ही, जिसकी सराहना बाबा कर चुके थे, दूसरा ऐनक बनवाया जाय । आप इस कार्य के लिए जा ही रहे थे कि आपके लड़के ने भी डाक्टर को अपनी आँख दिखाने की इच्छा व्यक्त की । वह बी.काम. में पढ़ता था । उसकी परीक्षा के दिन नजदीक आ रहे थे और उसकी आँख में तकलीफ थी । आप लड़के को लेकर डाक्टर अब्राहम के पास गये । आपके ऐनक बदलने में कोई परेशानी नहीं हुई, पर लड़के की आँख को देखकर उसने तत्काल ऑपरेशन की राय दी अन्यथा उसकी आँख को खतरा था । आपने डाक्टर की राय मान ली और शीघ्र ही ऑपरेशन करा दिया । इस प्रकार बाप–बेटे दोनों को डाक्टर अब्राहम के द्वारा आँखों के कष्टों से छुटकारा मिला । आपको यह अनुभव होने लगा कि बाबा को आँख दिखानी थी नहीं, उन्होंने आप दोनों के आगामी कष्टों को दूर करने के लिये ही डा. अब्राहम की सिफारिश की थी ।

(343) मकान की समस्या का हल

बाबा सिन्धी धर्मशाला में 9 जनवरी से 23 जनवरी 73 तक रहे । एक दिन वे स्वतः हुकुम चन्द जी से कहने लगे, **"तू अपने लिये अच्छा मकान ले ले ।"** आपने बाबा को बताया कि आप इस कार्य के लिये गत दो वर्षों से प्रयत्नशील हैं । नीचे की मंज़िलें तो कई मिलीं पर आप ऊपर की मंज़िल चाहते हैं । बात यहीं समाप्त हो गयी बाबा के मद्रास छोड़ने के एक सप्ताह के भीतर ही आपका सौदा अपने मनपसन्द एक मकान के लिये हो गया । बात आपकी समझ में आयी कि बाबा ने सुझाव के रूप में आप पर अपनी कृपा की वर्षा की और आपको मकान सम्बन्धी चिन्ता से हमेशा के लिये मुक्त कर दिया ।

(344) चित्रकूट यात्रा

माघ का महीना था । प्रयाग में मकर स्नान का मेला चल रहा था। कुछ ही दिनों बाद कुम्भ स्नान था । कानपुर के श्री देव कामता दीक्षित शहर में कहीं ठहरे थे और बाबा 4 चर्चलेन में निवास कर रहे थे । एक दिन शाम को बाबा स्वयं दीक्षित जी के पास पहुँचे और उनसे दूसरे दिन प्रातःकाल चित्रकूट यात्रा में चलने को कह आये । इस यात्रा में अनेक भक्तगण बाबा के साथ जा रहे थे । दीक्षित जी दूसरे दिन सबेरे ही चर्चलेन पहुँच गये । उस समय बाबा की कुटिया के द्वार बन्द थे और वे भीतर किसी को बहुत फटकार रहे थे ।

थोड़ी देर बाद द्वार खुले और बाबा के भक्त श्री गिरीश जी बाहर आये । दीक्षित जी ने उनसे बाबा की नाराजगी का कारण पूछा । वे बोले, "आज प्रातःकाल भक्तों के नाश्ते के लिये बाबा ने कल मुझ से ताजी जलेबी का प्रबन्ध करने को कहा था, पर मैं सेवा में ही लगा रह गया । रात्रि के बारह बजे जब मैं सोने गया तो उस समय मुझे इस बात का स्मरण हुआ, तब हो ही क्या सकता था ? सबेरे उठते ही मेरी पेशी हो गयी और फटकार पड़ने लगी ।" दीक्षित जी जब कमरे में प्रविष्ट हुए तो उन्हें बाबा बड़ी शान्त मुद्रा में बैठे दिखायी दिये । बाबा ने पुनः गिरीश जी को बुलाया और अपने तख़्त के नीचे एक बड़े 'पैकेट' की ओर इंगित करते हुए बोले, "उसे निकाल कर ले जाओ ।" यह पैकेट ताजी और गरम जलेबी से भरा था । सब को जलेबी खिलाकर बाबा ने चित्रकूट को प्रस्थान किया ।

वहाँ पहुँचने पर बाबा ने दीक्षित जी से सब लोगों के रहने की व्यवस्था बनाने के लिये किसी पण्डे से बातें करने को कहा । पण्डे ने एक बहुत पुराने मकान में प्रबन्ध कर दिया और बोला कि कल आइ.जी. पुलिस के जाने के बाद अच्छी व्यवस्था हो सकेगी । वह आई.जी. के परिवार की प्रतीक्षा कर रहा था जिनके लिये उसने एक अच्छा स्थान रोक रखा था । जो मकान उसने इन्हें दिया वह इतना जीर्ण था कि उसके एक कमरे की छत गिरने को थी । उसने इस मकान को गिराने का ठेका भी दे रखा था । सब लोगों ने उसी मकान में शरण ली और क्षतिग्रस्त कमरे में बाबा ने अकेले सोना पसन्द किया । दूसरे दिन जब उस मकान में आइ.जी. पुलिस महोदय सपरिवार आकर बाबा के चरणों में नतमस्तक हुए तो यह दृश्य देखकर पण्डे की आँखें खुलीं और उसे बहुत ग्लानि हुई ।

एक दिन बाबा मन्दाकिनी के तट पर खड़े होकर ज़ोर–ज़ोर से 'गोपाल' नाम लेकर नदी के दूसरी ओर से किसी को बुला रहे थे । दीक्षित जी ने नदी पार के गाँव वालों से गोपाल के बारे में पूछ–ताछ की । उन्हें बताया गया कि चार पीढ़ी पूर्व गोपाल नाम का एक ग्वाला, जिसके परिवार के लोग अभी इस गाँव में हैं, कोई बाबा नीब करौरी का भक्त था और उनकी सेवा में लगा रहता था । उनकी इस वार्ता से सब भक्तों को बाबा की आयु के बारे में भ्रम होने लगा ।

(345) बाबा की आयु

चर्चलेन, इलाहाबाद में बाबा का दरबार लगा था । लेखक वहाँ उस समय उपस्थित था । एक महिला उनका सुयश सुन कर प्रथम बार दर्शन करने आई थी । वह उन्हें नमन कर बैठ गयी । वह कुछ भ्रमित सी दिखायी दे रही थी और थोड़ी देर में बाबा से बोल उठी कि उसके यहाँ लगभग नब्बे वर्ष की एक बुढ़िया आयी है, जो उससे बहुत स्नेह करती है । वह उसे साथ लेकर यहाँ आना चाहती थी, पर उसने यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया और आश्चर्यचकित हो कर कहा, "बाबा नीब करौरी के दर्शन ! अब वे कहाँ रहे ? होंगे कोई उनके चेले–चांटी । मैं जब लगभग नौ वर्ष की थी तब वे बहुत बड़े थे और कभी–कभी हमारे घर आकर दर्शन दे जाते थे । मेरे पिता उनके बड़े भक्त थे ।" इतना कह कर वह महिला बाबा से पूछने लगी कि बात क्या है ? बाबा बड़े ज़ोर से हँसे, उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया । वे इस बात को समय–समय पर अनेक बार उसके मुँह से भक्तों को सुनवाते रहे और स्वयं हँसते रहे । हर बार उनका दरबार खिलखिला उठता ।

(346) घोड़ा–शाह

एक बार चर्चलेन के एक दरबार में बाबा ने एक नवागन्तुक से पूछा, "तुम घोड़ा–शाह के बारे में क्या जानते हो ?" उसने उत्तर दिया, "बाबा ! कुछ नहीं, केवल इतना हमने सुना कि पाँच या छः सौ वर्ष पूर्व हमारे गाँव के पास घोड़ा–शाह नाम के एक फकीर थे जो सदा घोड़े पर सवार होकर घूमा करते थे । बाबा ने जो विस्तार पूर्वक घोड़ा–शाह के बारे में सूक्ष्मातिसूक्ष्म बातें सुनायीं उससे यह भासित होता था कि वे स्वयं अपना ही वर्णन सुना रहे हैं ।

(347) भगवान सिंह का स्वप्न

एक बार छत्तीसगढ़, वृन्दावन में श्री सिद्धि माँ और श्री जीवन्ती माँ निवास कर रही थीं और भगवान सिंह उनकी सेवा में था । उन दिनों बाबा के वृन्दावन आश्रम का निर्माण कार्य चल रहा था । वे इस सिलसिले में कभी–कभी अपने आश्रम में आ जाते थे । एक दिन यह विचार कर कि कहीं बाबा आ न गये हों, दोनों माइयाँ उनके दर्शनार्थ एक रिक्शा में आश्रम को जा रही थीं और उनके पैरों के पास बैठा भगवान सिंह गत रात का अपना स्वप्न उन्हें सुना रहा था । वह कह रहा था कि पिछली रात स्वप्न में बाबा ने अपने हाथों से उसे जनेऊ पहनायी और वहाँ एक आदमी उनकी पुरानी लम्बी जटा लिये खड़ा था ।

माइयों ने पीछे के रास्ते आश्रम में प्रवेश किया और बाबा की कुटिया के पास गलियारे में बैठ कर उनकी प्रतीक्षा करने लगीं । बाहर बाबा का दरबार लगा था । जैसे ही भगवान सिंह ने वहाँ जाकर उन्हें नमन किया, बाबा ने अपने हाथों से एक जनेऊ उसके कन्धे में डाल दी और उपस्थित पण्डितजन उच्च स्वर से वेद मन्त्रों का उच्चारण करने लगे । इसके बाद भगवान सिंह माइयों का आशीर्वाद प्राप्त करने चला आया । इस प्रकार भगवान सिंह के स्वप्न का पहला भाग पूर्ण हुआ ।

इस घटना के बाद महाराज उठ कर अपनी कोठरी में चले आये । उनके साथ उनका एक भक्त भी था जो उन से कह रहा था कि उसे उनके उस स्वरूप की याद है जब उनकी लम्बी जटायें थीं, वे नग्न रहते थे और केले की छाल की कौपीन पहने रहते थे । बाबा कुछ अनमने से होकर उससे बोले, **"माइयाँ हमें वैसे ही परेशान करती हैं, तुम ऐसी बात कह कर हमारे लिए मुसीबत पैदा कर रहे हो ।"** फिर कहने लगे, **"अच्छा, तुम उस समय कितने वर्ष के थे ?"**
"मैं साठ का था ।"
"अब कितने वर्ष के हो ?"
"अब चौरानबे का हूँ ।" माइयाँ गलियारे से सब वार्ताएँ सुन रही थीं, इससे वे बाबा की वास्तविक आयु का कुछ अनुमान ही नहीं लगा सकीं । यह था दूसरा भाग भगवान सिंह के स्वप्न का ।

(348) सक्सेना जी की अपनी गाथा

जब हनुमानगढ़ का निर्माण हो रहा था, उस समय श्री मोहन लाल सक्सेना बाबा के बड़े भक्तों में थे । आप फौजदारी अदालत नैनीताल में कार्य करते थे और वहीं पास में चिनाखान लाइन में रहते थे । आप के

चार लड़के थे जो उन दिनों स्कूल में पढ़ते थे । बाद में बाबा की कृपा से सभी सुयोग्य और सम्पन्न हो गये । उन दिनों जब-जब बाबा नैनीताल आते और पाँच सात मील के भीतर भूमियाधार, गेठिया, हनुमानगढ़ आदि कहीं भी होते तो सक्सेना जी नित्य अपने बच्चों के द्वारा उनके पास भोजन पहुँचाते रहे । जब कभी वे स्वयं बाबा के दरबार में उपस्थित होते तो बाबा उनके मुँह से उनकी जीवन गाथा भक्तों को सुनवाया करते थे ।

सक्सेना जी कहते, "मेरे पिता जी इस संसार से तब विदा हुए जब मेरी माँ केवल बीस वर्ष की थीं और मैं ही एक मात्र उनका बच्चा था । कुछ अपने ही लोग हमें गाँव से भगाकर हमारी जमीन हम से छीनना चाहते थे । एकाएक न मालूम कहाँ से एक बाबा आ गये । वे हमारे ही घर में रहने लगे, हमारी खेती-बाड़ी करते और हम लोगों की देखभाल भी । उन्होंने हमें शिक्षा दिलवायी और हमें अपने पैरों पर खड़ा कर हमारा विवाह भी किया । विवाह के तीसरे दिन जब बारात घर पहुँची तो वे ग़ायब हो गये ।" यह सब सुनने के बाद बाबा बहुत आश्चर्य दिखाते हुए कहते, **"देखो, बाबा होकर भी इनके घर में रहता था । इन लोगों की और इनकी खेती की देख-भाल करता रहा और फिर समय पर ग़ायब हो गया !"** इस प्रसंग की उनके दरबार में बार-बार आवृत्ति यह दर्शाती है कि बाबा ने स्वयं उस साधु के रूप में यह लीला की। इससे उनकी आयु के बारे में बड़ी भ्रान्ति होती है ।

(349) मूर्ति में दरार

एक बार चर्चलेन इलाहाबाद में बाबा कई दिनों से विश्राम कर रहे थे और कानपुर के कुछ भक्तगण भी उन्हें अपने साथ ले जाने के लिये वहाँ ठहरे थे । एक दिन दो कारों में बाबा अनेक भक्तों को लेकर चल दिये । बाबा कहाँ और किस लिये जा रहे हैं, यह कोई नहीं जानता था। रास्ते में फतेहपुर में बाबा सेशन जज गोयल साहब के आवास में कुछ देर टिके और यहाँ सब भक्तों ने प्रसाद पाया । यहाँ से लगभग पाँच बजे सायंकाल बाबा कानपुर को रवाना हुए । बाबा ने कानपुर में रुकना पसन्द नहीं किया और वे चालक से वृन्दावन गाड़ी ले जाने को बोले । फजलगंज से उन्होंने गुरुदत्त शर्मा जी को ले लिया और सब भक्तों को दूध पिलाकर वे आगे चले । थोड़ी देर वे पनकी मन्दिर में भी रुके फिर रात भर दोनों गाड़ियाँ दौड़ती रहीं । रास्ते भर बाबा सब को चाय पिलाते रहे और प्रातःकाल छः बजे वृन्दावन आश्रम पहुँचे । सभी भक्तों ने रात भर जागते

हुए सफर किया था, इसलिए बाबा ने सब से दो घण्टे आराम करने को कहा ।

वृन्दावन आश्रम में हनुमान जी का मन्दिर श्री मंगतूराम जयपुरिया ने बनवाया था और इसमें स्थापना हेतु मूर्ति जयपुर से मँगवायी गयी थी । उस समय आश्रम की देख–भाल प्रेम दास बाबा किया करते थे । जब मूर्ति की पेटी आश्रम में खोली गयी तो सभी लोगों को हनुमान जी की मूर्ति खण्डित मिली । उसमें आर–पार दरार दिखायी दे रही थी । प्रेमदास बाबा के यह कहने पर कि वे खण्डित मूर्ति को स्थापित नहीं होने देंगे, वहाँ स्थापना की समस्या खड़ी हो गयी थी । यह सब दृश्य बाबा चर्चलेन इलाहाबाद से देख रहे थे और इसके उपचार हेतु ही वे वहाँ से एकाएक चल पड़े ।

अस्तु, दो घण्टे बाद महाराज का वृन्दावन में दरबार लगा । बाबा ने साथ में आये भक्तों को आदेश दिया कि **वे जाकर मूर्ति का निरीक्षण करें और बतावें कि मूर्ति खण्डित है या नहीं ?** बाबा ने यह भी कहा कि **प्रेमदास बाबा झूठ कहता है कि मूर्ति खण्डित है । वह उसे स्थापित नहीं होने देगा ।** सभी लोगों ने मूर्ति का सूक्ष्मता से निरीक्षण किया और कहीं भी उन्हें वह मूर्ति खण्डित नहीं दिखायी दी । महाराज ने प्रेमदास बाबा से पुनः मूर्ति का निरीक्षण करने को कहा । उन्हें यह देख कर महान् आश्चर्य हुआ कि कल तक मूर्ति खण्डित दिखायी दे रही थी पर आज नहीं । उन्होंने दरबार में बाबा के आगे अपनी गलती मानी और बाबा ने उसी दिन मूर्ति की स्थापना करा दी । तभी भक्तजन जान पाये कि रात भर जाग कर वृन्दावन आने का प्रयोजन क्या था ।

(350) शंकर के दर्शन

कानपुर से महाराज देव कामता दीक्षित जी को यह आश्वासन देकर अपने साथ लाये थे कि बनारस में वे उन्हें विश्वनाथ के दर्शन करायेंगे । यहाँ विजयानगरम् के महल से बाहर आने पर बाबा ने अपना विचार बदल दिया । अब वे दीक्षित जी को विश्वनाथ मन्दिर न ले जा कर ज्ञानवापी गली ले गये । इस गली में बाबा एक सन्यासी से मिले और कुछ समय तक उससे वार्ता करते रहे । दीक्षित जी यह नहीं समझ पाये कि बाबा किस भाषा में बातें कर रहे थे और उनकी वार्ता का विषय क्या था । बाबा ने उस भिक्षुक को आप से चार आने दिलवाये और इसके बाद आप को किसी व्यक्ति को बुलाने भेजा । आप ज्योंही मुड़ कर जाने लगे आपको एकाएक वह व्यक्ति अपनी ओर आता दिखायी दिया । आप उसी समय

बाबा की ओर उन्मुख हुए, पर आपको न बाबा दिखायी दिये और न वह सन्यासी ही । इसके कुछ ही क्षणों में आपने एक ऐसा विचित्र दृश्य देखा जैसे महाराज भूमि से बाहर निकल रहे हों । इस प्रकार बाबा ने उस भिक्षुक सन्यासी के रूप में आपको साक्षात् शंकर के दर्शन करा कर अपना वादा पूरा किया, पर आपको तब ऐसा कुछ बोध नहीं हुआ और न बाबा ने ही इस सम्बन्ध में कुछ कहा ।

इस घटना के दो वर्ष बाद, कैंची आश्रम में गुहा नाम का एक बंगाली, महाराज से बनारस जाने के लिये आज्ञा लेने उपस्थित हुआ । दीक्षित जी भी संयोगवश उस समय वहीं पर थे । गुहा गत एक महीने से कैंची आश्रम में रात भर चण्डी पाठ किया करता था । बाबा ने उस से पूछा, **"काशी में क्या करेगा ।"**

"विश्वनाथ के दर्शन करुंगा और ज्ञानवापी में भिक्षुकों को जो बन पड़े दान करुंगा ।"

"क्यों ?"

"ऐसी मान्यता ग्रन्थों में बतायी गयी है कि ज्ञानवापी में शंकर भिक्षु के रूप में विचरण करते हैं । मैं उन्हें पहचान तो सकता नहीं इस कारण सभी को कुछ न कुछ दूंगा ।"

बाबा उस समय दीक्षित जी को ऐसी दृष्टि से देख रहे थे जैसे दो वर्ष पूर्व की घटना का स्मरण करा रहे हों । उन्होंने दीक्षित जी से गुहा को इस कार्य के लिये कुछ रुपये दिलवाये ।

(351) एक विचित्र घटना

एक दिन सायंकाल चर्चलेन इलाहाबाद में महाराज अपने दरबार में बातें करते–करते एकाएक शान्त और निश्चल हो गये । उनकी आँखें आधी खुली थीं और दृष्टि स्थिर थी । ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे किसी गम्भीर चिन्तन में निमग्न हों । चैतन्य समाधि की स्थिति थी । उन्हें अपना बोध ही न था । धीरे–धीरे उनकी हथेली और तलुओं का रंग सुर्ख हो चला और उनके शरीर से तीव्र सुगन्ध फैल उठी जिसका प्रभाव उस घर में ही नहीं, अपितु बाहर भी सड़क में दूर तक दिखायी दिया । यह स्थिति लगभग बीस मिनट तक बनी रही । सभी उपस्थित लोग मौन होकर यह दृश्य देखते रह गये । इसके बाद बाबा अपनी पूर्व स्थिति में आ गये और दरबार यथावत् चलने लगा । यह सब क्या था ? और कैसे यह हुआ ? यह रहस्य कोई समझ नहीं पाया ।

(352) भक्त को भुलावा

कुमारी मोहनी साह, तल्लीताल, नैनीताल, में बाल्यावस्था से ही उच्च कोटि की भगवत् निष्ठा रही । जब से महाराज का नैनीताल में आगमन हुआ तभी से आपको उनके दर्शनों का सौभाग्य बराबर प्राप्त होता रहा । इस प्रकार उन पर आपकी आस्था उत्तरोत्तर बढ़ती गयी और इसके साथ भक्तिजन्य आनन्द की उपलब्धि भी । एक बार आपको सूचना मिली कि बाबा कैंची आये हुए हैं । आपने उन्हें अर्पित करने के लिये फल खरीदे और उनको अपने आँचल में भर कर कैंची आ गयीं ।

यह घटना सन् 1962 की है, जब कैंची में निर्माण कार्य हो रहा था । केवल एक बाबा की कुटिया भर तब बन पायी थी । वहाँ बाबा का दरबार लगा था, उसमें उपस्थित थे श्री संग, प्रधानाचार्य, बिड़ला विद्यामन्दिर नैनीताल, किशन चन्द्र तिवारी और श्री माँ आदि । मोहनी जी के वहाँ पहुँचने के पूर्व ही बाबा संग जी के साथ नैनीताल को चल पड़े थे । नैनीताल से 19 कि.मी. दूर कैंची पहुँचने पर जब मोहनी जी को बाबा के दर्शन नहीं हुए तो वे ऐसी खिन्न हुयीं कि वे अपनी सुध-बुध ही खो बैठीं । आप बिना चप्पल उतारे बाबा के आसन तक चली गयीं और सब फलों को उनके तख़्त के ऊपर बखेर कर अपनी दोनों मुट्ठियों से उनके आसन को थपथपाते हुए अपना रोष व्यक्त करने लगीं । तदनन्तर आप उस शिला के पास गयीं जिस पर बाबा बहुधा बैठा करते थे । वहाँ आप बहुत मस्ती में अनेकानेक सुन्दर-सुन्दर भजन सुनाती रहीं । अन्त में आप ने "जय राम, जय राम" का कीर्तन आरम्भ किया और बहुत देर तक इस कीर्तन को करते करते आप भाव विभोर हो उठीं और अचेत होकर वहीं गिर गयीं । लगभग बारह बजे रात बाबा का आगमन हुआ । आपको जगाने की बहुत चेष्टा की गयी पर आप को होश ही नहीं था । दूसरे दिन सबेरे उठने पर आपने बाबा के दर्शन किये और उस समय आप उनके चरणों को उसी प्रकार थपथपाने लगीं जैसे पिछले दिन आप उनके आसन पर कर रही थीं । पिछली शाम आपके अनवरत् भजन और कीर्तन का कारण पूछने पर आपने बताया कि शिला के पास स्थित वृक्ष की हर पत्ती में आपको सितारों से राम नाम अंकित दिखायी दिया इस से आप आनन्दमग्न हो गयीं । यह बाबा की एक सृजनात्मक लीला थी ।

(353) बाबा के दरबार से गैर हाजरी

हनुमानगढ़, नैनीताल के निर्माण होने के बाद जब भी बाबा पहाड़ आते वे भूमियाधार के छोटे आश्रम में ही रहते । यहाँ दिन रात आपका दरबार लगा रहता लोग बड़ी संख्या में दर्शन करने आते । लेखक की चाची, जिन्हें बाबा नन्दन माई कहा करते थे, नित्य नियमपूर्वक उनके दर्शन करने नैनीताल से भूमियाधार आया करती थीं । एक बार कुछ कारण विशेष से वे लगातार तीन दिन दर्शन करने न जा सकीं । चौथे दिन जब आप अन्य दिनों की भाँति भूमियाधार पहुँची तो आपने बाबा को बृहत् जन समुदाय से घिरा देखा । आपने दूर से ही उन्हें मन ही मन प्रणाम किया । अन्तर्यामी बाबा ने उनका प्रणाम तो स्वीकार किया पर वे दरबार में ज़ोर से बोल उठे, **"तेरी तीन दिन की गैरहाजरी हमने ऊपर वाले के रजिस्टर में नोट कर दी है । हम ऐसी मुरौवत नहीं कर सकते कि तुम तीन दिन गैरहाजिर रहो और हम तुम्हारी हाजरी लगा दें ।"** बाबा की बात सुन कर आप अवाक् रह गयीं और चकित हो गयीं यह देख कर कि इतने व्यस्त होते हुए भी बाबा को प्रत्येक व्यक्ति की गैरहाजरी की पूरी जानकारी रहती है । आप को यह भी बोध हुआ कि सन्त और भगवान् में भेद न होने से, सन्त के दरबार की गैरहाजरी भगवान् के दरबार की गैरहाजरी होती है ।

(354) यशपाल पर प्रतिबन्ध

श्री यशपाल हल्द्वानी में व्यापार करते थे । बाबा के आप बड़े भक्त रहे और कैंची आश्रम की आपने बहुत सेवा भी की । एक दिन बाबा ने उनका आश्रम में आना निषेध कर दिया । वे इस कारण दुःखी थे और उनके आदेश की अवहेलना का साहस भी नहीं कर सकते थे । आप अपने घर में ही बाबा के छाया-चित्र के आगे प्रार्थना करते और लोगों को उनके दर्शन के लिये प्रेरित करते थे । एक दिन आपके मित्र नन्दलाल जी ने बाबा से इस प्रतिबन्ध को हटाने का अनुरोध किया । बाबा बोले, **"वह बेईमान है ।"** इस पर आपने कहा, "ऐसा तो नहीं मालूम देता । वह आपका बड़ा भक्त है और इस आश्रम का बड़ा सेवक प्रतीत होता है ।" बाबा बोले, **"यही तो बेईमानी है ।"** वास्तव में भगवान् के दरबार में अपने को बड़ा समझना अनुचित है क्योंकि अभिमान किसी रूप में भी उन्हें प्रिय नहीं होता । "जन अभिमान न राखहिं काऊ ।"

(355) दो महान् आत्माओं का मिलन

श्री यज्ञेश्वर पाण्डे, न्यू हैदराबाद, लखनऊ को एक बार स्वामी रामानन्द जी के साथ महाराज के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ । यह दो महान् आत्माओं का मिलन था ।

साधारण आतिथ्य के बाद बाबा ने स्वामी जी से कहा कि वे अपनी ओढ़नी (काश्मीरी शाल) उन्हें दे दें । स्वामी जी ने तुरन्त शाल उतार कर बाबा को दे दिया । स्वामी जी ने बड़ी विनम्रता से उनसे एक भीख माँगने की अनुमति माँगी । अनुमति माँगना तो एक औपचारिकता थी, सहज ही में मिल गयी । स्वामी जी ने उस कम्बल की माँग की जो वे ओढ़े थे । वह कम्बल बाबा ने उतने ही सहज भाव से दे दिया जैसे स्वामी जी ने अपना शाल दिया था ।

दर्शन लाभ के पश्चात् लौटने पर पाण्डे जी ने स्वामी जी से अपने मन के भावों को व्यक्त करते हुए जिज्ञासा की कि कीमती शाल के बदले में साधारण कम्बल लेना कैसे लाभदायक समझा जाय ? इस पर स्वामी रामानन्द जी ने कहा कि बाबा नीब करौरी एक बहुत उच्च कोटि के महात्मा हैं । वे इस संसार में अपने पार्थिव शरीर को लेकर अवश्य विचरण कर रहे हैं, पर उनको अपने चारों ओर के वातावरण का भान बिलकुल नहीं है । वे परमहंस की स्थिति में हैं । उनका हँसना, अश्रुपात करना आदि उनके उस समय के वातावरण से प्रभावित नहीं होता । वे अपने प्रभु के साथ सम्बद्ध हैं और उसी सम्बद्धता से उनका सब व्यवहार परिचालित होता है । ऐसे महान् व्यक्ति की ओढ़नी को साधारण कम्बल की संज्ञा देना वाँछनीय नहीं है । यह उनका महान् प्रसाद है ।

(356) मुख्यमन्त्री का स्वागत

घटना कैंची आश्रम की है जब श्री चन्द्रभान गुप्ता, उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री थे । एक दिन महाराज अपनी कुटिया के भीतर तख़्त पर विराजमान थे और पास में उनकी सेवा में खड़े थे श्री रमेश चन्द्र चौधरी, नैनीताल कारपोरेशन के कर्मचारी । बाबा बोले, **"रामू एक स्टूल लाकर हमारे पास रख दे ।"** चौधरी जी सोचने लगे अवश्य कोई न कोई महान् व्यक्ति आ रहा है जिसके स्वागत के लिए बाबा स्टूल रखवा रहे हैं । उनकी उत्सुकता जागृत हो उठी क्योंकि बाबा ने ऐसा दिखावा पूर्व में कभी राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और राज्यपालों के लिये भी नहीं किया था । उन्होंने स्टूल लाकर वहाँ रख दिया और आगन्तुक की प्रतीक्षा करने लगे ।

थोड़ी देर में श्री चन्द्रभान गुप्ता का आगमन हुआ । बाबा उस स्टूल की ओर अपने हाथों से संकेत करते हुए बोले, **"बैठिये ।"** वे हाथ जोड़ कर कहने लगे, "महाराज ! मैं बनिया हूँ । आपकी बराबरी में कैसे बैठ सकता हूँ ।" ऐसा कहते हुए वे जमीन पर उनके चरणों के पास जा बैठे । बाबा उनकी ओर देख कर मुस्करा दिये । उल्लेखनीय बात यह है कि गुप्ता जी ने लखनऊ में गोमती के किनारे कारपोरेशन की भूमि पर बिना किसी अनुमति के बाबा द्वारा निर्मित हनुमान मन्दिर का विरोध किया था और बाद में उनकी सरकार को बाबा से समझौता करना पड़ा जिसमें सरकार की सब प्रकार से हानि हुई । इस सम्बन्ध में "निर्माण कार्य" के प्रकरण में "लखनऊ में पास-पास दो हनुमान मन्दिरों की स्थापना" के प्रसंग का अवलोकन करें ।

(357) राज्यपाल का स्वागत

हनुमानगढ़, नैनीताल के पास किशनपुर में महाराज कभी-कभी श्री शिवदत्त जोशी के घर आकर ठहरा करते थे । उनके आने पर वहाँ लोगों के आने-जाने का क्रम इस प्रकार दिन-रात चलता रहता था कि गृहस्वामिनी को कमरा साफ़ करने में बड़ी कठिनाई होती थी । एक दिन बाबा बोले, **"भगवान सहाय (राज्यपाल हिमाचल प्रदेश) आ रहा है।"** इससे गृहस्वामिनी की चिन्ता और भी बढ़ गयी । दरवाजे पर जूतों का ऐसा ढेर लगा था कि झाड़ू लगाना सम्भव न था । मन की जानने वाले बाबा तुरन्त उठकर सामने मोटर सड़क पर चले गये वहीं कुछ दूर पर एक दीवार पर जा बैठे । सभी भक्तगण अपने जूते पहन कर बाबा के पास चले गये । इस प्रकार गृहस्वामिनी को सफ़ाई करने का बाबा ने पूरा अवसर दिया । कमरा साफ़ हो जाने पर बाबा का दरबार फिर वहीं लग गया । इतने में भगवान सहाय भी आ पहुँचे । आपने बाबा को विनम्र भाव से प्रणाम किया और द्वार पर पड़े जूतों के पास ही जा बैठे । बाबा कुछ बोले नहीं, वे प्रसन्न मुद्रा में उनको देखते हुए मुस्कराते रहे । एक भक्त ने उनसे भीतर बैठने का आग्रह किया पर वे नहीं माने, एकटक दृष्टि से बाबा के दर्शन करते रहे । बाबा ने उन्हें प्रसाद दिलवाया और वे उनकी आज्ञा पाकर चले गये ।

(358) राष्ट्रपति का चुनाव

श्री वी.वी. गिरि, उपराष्ट्रपति, सरकारी यात्रा में नैनीताल आए हुए थे। आप राष्ट्रपति का चुनाव जीतना चाहते थे, इस कारण बाबा के

आशीर्वाद के इच्छुक थे । आप कैंची आश्रम आये और बाबा के चरणों में आपने साष्टांग प्रणाम किया । बाबा कम्बल ओढ़े खड़े थे । उनका एक हाथ अपनी कमर पर था और दूसरा वरदान देने की मुद्रा में गिरि जी के ऊपर । कैसा दृश्य था वह । त्याग मूर्ति बाबा के आगे उपराष्ट्रपति के रूप में भारत का वैभव पड़ा था । बाबा गिरि जी से कहते जा रहे थे, **"चुनाव जीतना चाहता है ? जा, हमने कह दी तू भारत का राष्ट्रपति बनेगा ।"**

गिरि जी की बाबा पर तभी से बड़ी आस्था रही जब वे उत्तर प्रदेश के राज्यपाल थे । बाबा का स्पष्ट आशीर्वाद पाकर आप दिल्ली आये और भारत के सर्वोच्च पद के उम्मीदवार बन गये । बाबा के आशीर्वाद ने फलीभूत होना ही था, गिरि जी चुनाव जीत गये और भारत के राष्ट्रपति घोषित किये गये ।

(359) आत्मिक सम्बन्ध

स्व. श्री रफी अहमद किदवई, भूतपूर्व मन्त्री उत्तर प्रदेश और केन्द्रीय सरकार, महाराज के अनन्य भक्त रहे । वे सच्चे मायने में बाबा से प्रेम करते थे । कोई भी व्यक्ति जब बाबा का नाम लेकर उनके पास आता तो वे उसकी बहुत इज़्जत करने लगते और कहते जाते "फ़रिश्ते का भेजा आया है ।" आश्चर्य की बात यह थी कि अन्य भक्तों की भाँति रफ़ी साहब कभी बाबा के पास आते-जाते नहीं दिखायी दिये ।

बाबा कभी भक्तों के साथ रफ़ी साहब के घर चले जाते । उनके परिवार के लोग उन्हें घर का बुजुर्ग मानते और उसी प्रकार उनकी इज़्जत करते । बाबा सब से बहुत प्रेम से मिलते । यद्यपि रफ़ी साहब से विशेष प्रेम रखते, पर उनसे बिना मिले ही लौट आते थे । बाबा अपने भक्तों से उनकी बड़ी सराहना किया करते और कहते थे **"रफ़ी बहुत दयालु है, उदार है, निर्लिप्त है, परोपकारी है और अपने विरोधियों से भी मैत्रीपूर्ण व्यवहार रखता है ।"** जिस दिन रफ़ी साहब दफनाये गये बाबा उस रात ढाई बजे एक भक्त के साथ उनकी मज़ार पर पहुँचे और बहुत देर तक उनसे (मृत-आत्मा से) बातें करते रहे । इसके बाद भी कभी-कभी वे भक्तों के साथ वहाँ जाते और उनकी कब्र पर बैठ कर एकान्त में उनसे बातें करते-करते उनकी आँखें सजल हो उठतीं । बाबा **रफ़ी साहब को महान् योगी बताते थे और कहते थे कि इसकी कब्र पर आगे चल कर मेला लगा करेगा ।**

अनुमान है कि बाबा रफ़ी साहब को भी एकान्त में उनके कमरे में ही प्रकट होकर दर्शन दिया करते हों जैसे वे नासिर अली को दिया करते थे । इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या 110 का अवलोकन करें ।

(360) ब्रह्म, जीव और जगत

एक दिन चर्चलेन इलाहाबाद में सायंकाल महाराज का दरबार लगा हुआ था और मैं (लेखक) भी वहाँ उपस्थित था । प्रयाग विश्वविद्यालय के एक प्रवक्ता ने बाबा से पूछा, "महाराज हमें भगवान् के दर्शन कैसे हो सकते हैं ?" बाबा तुरन्त बोले, **"अंधेरी रात में बिना रोशनी और हथियार के भगवान् को खोजने जंगल में चला जा, दर्शन हो जायेंगे ।"** प्रवक्ता महोदय घबरा गए और बोले, "यह दुष्कर कार्य मुझ से नहीं हो पायेगा, कोई सरल साधन बताइये ।" बाबा ने कहा, **"मनुष्य बहुत स्वार्थी है, उसकी शक्ल भी मत देख, एकान्त में रह, तुझे दर्शन हो जायेंगे ।"** प्रवक्ता ने उत्तर दिया, "मुझे मनुष्यों के बीच में रहना पड़ता है, मैं अपने को कैसे छिपा सकता हूँ ? अतः कोई इस से भी सरल साधन बतायें ।" बाबा बोले, **"अच्छा, मनुष्यों के बीच रहते हुए किसी से बोलना मत, मौन हो जा।"** प्रवक्ता ने अपनी परिस्थिति समझाते हुए कहा, "मेरा काम पढ़ाने का है, मैं मौन हो नहीं सकता ।" बाबा ने सुझाव दिया कि कक्षा में पढ़ाते समय बोल लेना पर उसके बाद हर समय मौन रहना । इस पर वे बोले, "यह भी सम्भव नहीं है, क्योंकि मुझे विश्वविद्यालय में अपने से बड़े लोगों से परामर्श लेना पड़ता है ।" अन्त में बाबा ने सरलतम उपाय बताते हुए कहा, **"सब से बोलना पर किसी से नमस्ते न करना और यदि कोई तुझे नमस्ते करे तो उसकी ओर मत देखना और अपनी राह पकड़ना ।"** प्रवक्ता ने अपनी कठिनाई बतायी और कहा कि यह अशिष्टता होगी और लोगों की मेरे बारे में बुरी धारणा बन जायेगी । इस पर बाबा बोल उठे, **"तो तू लोगों की धारणा ही बनाता रह, भगवान् के दर्शन की इच्छा छोड़ दे ।"** उपस्थित सभी लोग इस बात पर हँस पड़े और महाराज मुस्कराते रहे ।

(361) स्थिति यथावत् बनी रही

एक बार कैंची आश्रम में महाराज की कुटिया में रामगढ़, नैनीताल के अध्यापक श्री किशन लाल साह अपनी सात वर्ष की लड़की के साथ

बाबा के सम्मुख बैठे थे । इतने में एक बड़े फौजी अफसर ने कुटिया में प्रवेश किया जिसके कान में बड़े-बड़े बाल थे । वह लड़की उसके कान में उगे बालों को देखकर अपनी हँसी रोक नहीं पायी और अपने पिता का ध्यान उस ओर आकर्षित करने के लिये उनके कान में मन्द स्वर में कुछ कहने लगी । तख़्त पर बैठे बाबा ने भी लड़की की बात सुनने को अपना सिर झुकाया, पर लड़की अपनी बात कह कर चुप हो गयी थी । उन्होंने उसके पिता से पूछा, **"लड़की क्या कह रही है ?"** पिता असमंजस में पड़ गये और कुछ उत्तर नहीं दे पाये क्योंकि फौजी अफसर हाथ जोड़े उनके पास ही खड़ा था । सब कुछ जानते हुए भी बाबा कहते जा रहे थे, **"बोलता नहीं ।"** लाचार हो आपको लड़की की कही बात सुनानी पड़ी । बाबा बोले, **"चुप कर लड़की को ।"** यह उनकी महिमा थी कि पास में खड़ा हुआ वह फौजी अफसर कुछ भी नहीं सुन पाया, उसकी भाव भंगिमा यथावत् बनी रही । बाबा के दरबार में व्यक्ति जो कुछ भी सुन पाता वह उनकी कृपा से ही सुनता था ।

(362) रहस्यपूर्ण यातायात

बाबा का यातायात विभाग बड़ा रहस्यपूर्ण था । उनके दरबार से आज्ञा लेकर जाने वाले के मनोरथ पूर्ण होते और उसे यातायात सम्बन्धी कभी कोई कष्ट नहीं होता था । यही कारण है कि महिलाएँ, बाल, वृद्ध हर समय निश्चिन्त होकर उनके दर्शन करने चले आते थे । एक बार श्री कुन्दन लाल साह, इन्जीनियर, बाबा के दर्शनार्थ कैंची आये हुए थे । उन्हें बरेली जाने के लिए हल्द्वानी जाकर बस पकड़नी थी । शाम हो चली थी, बाबा अन्य लोगों को जाने की आज्ञा दे रहे थे पर आप की ओर देख भी नहीं रहे थे । देर होती जा रही थी।आप घबराहट में बाबा को नमन कर, बिना उनकी आज्ञा प्राप्त किये बाहर चले आये । जिनको भी बाबा की आज्ञा हुई थी सभी को बस में जगह मिल गयी और आपको निराश होना पड़ा । यह अन्तिम बस हल्द्वानी की थी, अब कोई साधन रहा नहीं, आप फिर लौट कर बाबा के पास आकर बैठ गये । बाबा ने तुरन्त उनको जाने की आज्ञा दे दी । आप आश्रम के बाहर आये ही थे, आपको एक सहायक इन्जीनियर दिखायी दिये जिन्होंने आपको अपनी जीप में आमन्त्रित किया । आप हल्द्वानी से भोजीपुरा स्टेशन रेल द्वारा चले आये । यहाँ से भी बरेली को कोई साधन न था । एकाएक एक युवक ने आपको प्रणाम किया और वह मोटर साइकिल के पीछे इन्हें बिठाकर बरेली ले गया ।

आप उसे जानते नहीं थे, पर वह आप को जानता था । वह आपके मित्र एक वकील का लड़का था ।

(363) बाबा के व्यवहार की यथार्थता

श्री इन्द्र देव नारायण साही, आइ.सी.एस. तभी से बाबा के भक्त रहे जब आप उत्तर प्रदेश सरकार में थे । बाद में आप केन्द्र में बुला लिये गये और दिल्ली में रहने लगे । यह घटना उनके दिल्ली निवास काल की है । आप बाबा के पुराने भक्तों में रहे, और आपने कैंची में कुछ कमरों के निर्माण में अपना आर्थिक सहयोग भी दिया । कहा जाता है कि एक बार सम्भवतः 1971–72 में आप सपत्नीक बाबा के सान्निध्य में कुछ दिन व्यतीत करने की लालसा से कैंची आये और बाबा के दर्शन कर प्रसन्न हुए । भण्डारे में प्रसाद पाकर जब आप पुनः उनके दरबार में उपस्थित हुए तो बाबा ने तत्काल उन्हें दिल्ली लौट जाने का आदेश दिया । आपने कभी ऐसी कल्पना भी नहीं की थी कि बाबा आपको अपने पास नहीं रहने देंगे । बाबा के इस शुष्क व्यवहार से आप दोनों मन ही मन बहुत दुःखी हुए । बहुत अनुनय विनय करने पर भी उन्होंने आपकी प्रार्थना स्वीकार नहीं की और कहने लगे, **"घर किस पर छोड़ आये हो ? बाद में यही कहोगे कि बाबा के दर्शन करने गये थे, हम लुट गये ।"** आपने बाबा को समझाया कि आप घर की देख–भाल का भार अपने एक विश्वसनीय सेवक पर छोड़ कर आये हैं, पर उन्होंने आप की बात नहीं मानी । आपको उसी समय दिल्ली वापस जाना पड़ा । घर पहुँचते ही आप आश्चर्यचकित हो गये यह देख कर कि आपके विश्वसनीय सेवक ने आपका अधिकांश कीमती सामान बाँध लिया था और वह उसे ले जाने के चक्कर में था । बाबा की कृपा से वह रंगे हाथ पकड़ा गया । इस घटना से आप लोगों की आँखें खुल गयीं और आप उनकी भक्त–वत्सलता पर मुग्ध हो गये । आपको ग्लानि हुई कि आप नादानी के कारण, बाबा के व्यवहार से घर पहुँचने तक दुःखी रहे ।

(364) "तुझे कोई 'रिटायर' नहीं करेगा ।"

लेखक के चाचा स्व. देवी प्रसाद पाण्डे राजभवन, नैनीताल में दैनिक वेतन पर सदा इलैक्ट्रीशियन का कार्य करते रहे । सार्वजनिक निर्माण विभाग, उत्तर प्रदेश, ने उन्हें मासिक वेतन में लाकर स्थाई करना चाहा । इसके

लिये उन्होंने आपसे अपनी कार्य क्षमता की पुष्टि हेतु किसी प्रतिष्ठित संस्था का प्रमाण पत्र देने को कहा और साथ में अपनी आयु के सम्बन्ध में भी विश्वसनीय प्रमाण प्रस्तुत करने की माँग की । आपने हाईस्कूल परीक्षा दी ही न थी, इस कारण आप अपनी जन्मपत्री दे रहे थे जिसके अनुसार आपके 'रिटायर' होने में अर्थात् अठावन वर्ष पूर्ण होने में केवल दो वर्ष शेष थे । आप बहुत चिन्तित थे कि आपकी पेन्शन बहुत कम बनेगी और आपको सरकारी क्वार्टर भी छोड़ना पड़ेगा । इस समस्या का आपके पास कोई उपचार भी न था । इस बीच बाबा का घर में आगमन हुआ । जब मेरी चाची ने बाबा से यह चिन्ता व्यक्त की तो वे चाचा जी से बोले, "**तू चिन्ता मत कर, तुझे कोई रिटायर नहीं करेगा** ।" आपकी कार्य क्षमता का प्रमाण पत्र स्वीकार हुआ, पर आयु के सम्बन्ध में जन्म पत्री को विश्वसनीय नहीं माना गया । आपको आदेश मिला कि आप अपनी आयु निर्धारण के लिये सिविल सर्जन, नैनीताल का प्रमाण पत्र प्रस्तुत करें । यह बाबा की प्रेरणा शक्ति का खेल था कि सिविल सर्जन, नैनीताल ने आपकी आयु बयालीस वर्ष निर्धारित की । फलतः आप बहत्तर वर्ष तक कार्य करते रहे और इसी वर्ष 'रिटायर' होने के पूर्व ही आपका शरीर शान्त हो गया ।

बाबा की वाणी के ऐसे उदाहरण अनेक हैं । बाबा के आशीर्वाद से श्री कैलाश चन्द्र जोशी 75 वर्ष की आयु पार कर चुके हैं और अभी तक सेवा निवृत्त नहीं किये गये । इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या 293 का अवलोकन करें ।

(365) अमरनाथ यात्रा

स्व. देवी प्रसाद पाण्डे जी लगभग सत्तर वर्ष के वृद्ध थे । शरीर उनका कमजोर हो गया था । बहुत दिनों से खांसी, कफ और ज्वर की आप को शिकायत थी, इस कारण आप का स्वास्थ्य बहुत गिर गया था । एक चतुर्दशी को आप उपवास में थे और शिवार्चन करने के बाद कैंची आश्रम महाराज के दर्शन करने गये । उन्होंने जैसे ही बाबा को नमन किया बाबाने उनके माथे में लात मार दी, वे अपने को साध नहीं पाये और गिर पड़े । वे बाबा से प्रार्थना करने लगे कि अज्ञानतावश जो भी अपराध उनसे हुआ हो वे उन्हें क्षमा कर दें । बाबा बोले, "**तूने पहाड़ की माइयों को अमरनाथ के दर्शन कराने ले जाना है** ।" यद्यपि आप अपने स्वास्थ्य से लाचार थे, पर आपने बाबा की आज्ञा मान ली और दो दिन बाद आपने माइयों के साथ अमरनाथ की कठिन यात्रा के लिये प्रस्थान

किया । पहलगाँव से आप नंगे पैर ही अपने इष्टदेव के धाम को चले और वहाँ जाकर आपने विधिवत् रुद्राभिषेक किया । यह बाबा की एक लात का चमत्कार था कि उनमें ऐसी शक्ति का संचार हुआ कि वे अपने शारीरिक कष्टों से मुक्त हुए और सानन्द इस कठिन यात्रा को कर पाये ।

(366) "बाबा सच्चा है"

एक बार प्रयाग में श्री उमादत्त शुक्ला के साथ महाराज संगम के उस पार एक बाबा के आश्रम में गये । वे जानते थे कि उस बाबा ने अनेक गायें पाल रखी हैं । उन्होंने वहाँ गोशालाओं का निरीक्षण किया और कार्यकर्ताओं से हर प्रकार की पूछ–ताछ करने के बाद वे उस बाबा से मिले । औपचारिक रूप से नमन किये बिना, उन्होंने सहज भाव से उस बाबा से पूछा, **"ये तुम्हारी गायें हैं ? थोड़ा हम लोगों को दूध पिलाओगे ?"** महाराज के शब्द एवं व्यवहार से ही बाबा को उनके व्यक्तित्व का बोध हो जाना चाहिये था, पर हो सकता है कि उन्होंने उन्हें भ्रान्तिवश कोई सेठ समझा हो, इस कारण वे उदासीन भाव से गम्भीर वाणी में बोले, "हमारे पास दूध नहीं है ।" महाराज मुस्कराते हुए शुक्ला जी से बोले, **"बाबा सच्चा है"** और इतना कहकर वे वहाँ से चले आये । बाबा को सचेत करने के लिये उनका इतना संकेत यथेष्ट था ।

(367) भक्तों से माँगकर खाते

प्रयाग के कुम्भ में महाराज का विशाल भण्डारा चल रहा था जिसमें प्रतिदिन हजारों व्यक्ति भोजन पा रहे थे । एक झोंपड़ी में एक बुढ़िया भोजन बना रही थी । बाबा उस झोपड़ी के आगे खड़े हो गये और बोले, **"माँ हम रोटी खायेंगे ।"** बुढ़िया बोली, "बाबा, मैंने दाल रोटी बनायी है । तू जा अपने बरतन ले आ उसी में दे दूंगी ।" बाबा ने सुझाव दिया कि रोटी के ऊपर दाल डाल कर उन्हें दे दे । बुढ़िया ने दो रोटियाँ बाबा के हाथ में दे दीं और ऊपर से थोड़ी दाल भी छोड़ दी । बाबा ने बड़े प्रेम से बुढ़िया की रोटी खाकर उसे अनुग्रहीत किया ।

(368) एक विनोदपूर्ण हास्य

एक बार सायंकाल के समय कैंची आश्रम में महाराज का दरबार खुले में लगा था । धीरे–धीरे अँधेरा हो चला । एकाएक उत्तर वाहिनी गंगा के उस पार गर्गाचल पर्वत की मोटर सड़क पर एक व्यक्ति लालटेन के

प्रकाश में जाता दिखायी दिया । उस व्यक्ति की ओर सब का ध्यान आकर्षित करते हुए बाबा बोले, **"वह सिद्ध जा रहा है ।"** बाबा के शब्दों में भक्तों का अटूट विश्वास रहता था, इस कारण लोग दरबार से भाग कर उस सिद्ध के दर्शन करने चले गये उनके ध्यान में यह नहीं रहा कि उस व्यक्ति को सिद्ध बताने वाला स्वयं परमसिद्ध है । बाबा लोगों को भागते देख कर हँस रहे थे ।

(369) "अच्छा, वह तेरा घर था !"

बाबा के एक भक्त ने एक बार उनके दरबार में उनसे शिकायत की कि आपने वायदा किया था, पर आप मेरे घर आये नहीं । बाबा बोले, **"हम तो आये थे । अच्छा, वह तेरा घर था ! हम उसे अपना घर समझे थे ।"** सम्पूर्ण वसुधा बाबा के लिये कुटम्ब रही । अपने भक्तों के घरों को बाबा अपना ही समझते थे और अप्रत्यक्ष रूप से वहाँ वास करते थे ।

(370) "वह तो अपना घर है"

यद्यपि बाबा के दर्शन बाहर होते रहते थे, पर उन्हें घर में आये बहुत दिन हो चुके थे । एक दिन इस बात की याद दिलाते हुए लेखक ने उनसे घर चलने का अनुरोध किया । वे बड़े प्रेम से बोले, **"वह तो अपना घर है ।"** बाबा के इस प्रेमपूर्ण आत्मीय उत्तर ने मुझे कृतार्थ कर दिया ।

(371) "हम भी, ऐसा ही करते हैं"

श्री मोतीराम वैद्य ने गंगाराम गुजराल जी के साथ आकर कैंची में बाबा के दर्शन किये । आपने बाबा को बताया कि जनता की गरीबी का फायदा उठा कर मिशनरी हिन्दुओं को ईसाई बनने के लिये प्रोत्साहित करते हैं । इस पर बाबा बोल उठे, **"हम भी तो ऐसा ही करते हैं । मन्दिर बनवा और भण्डारा चला कर हम हिन्दुओं को अपने धर्म में रहने को प्रेरित करते हैं ।"**

(372) दर्शन से आत्म–विस्मृति

श्रीमती अशोका, भारतीय आकाशवाणी, दिल्ली, महाराज से सम्बन्धित एक अनुभव प्रस्तुत करती हैं । आप सन् 1971 में कैंची आयी हुई थीं और वहाँ मन्दिर परिसर की राधा कुटी में निवास कर रही थीं । शाम के साढ़े चार बजे का समय था, आपके कमरे में आगमन हुआ महाराज का और उनके साथ श्री सिद्धि माँ, जीवन्ती माँ और विनोद जोशी का । इस प्रकार बाबा का वहाँ एक छोटा दरबार लग गया । एकाएक बाबा ने पूछा, **"क्या बजा है ?"** एक बज चुका था । सभी लोग चकित हो गये इतनी जल्दी कैसे इतनी रात बीत गयी ! इससे भी अधिक आश्चर्य की बात थी कि मन्दिर परिसर में उपस्थित होते हुए भी किसी ने आरती के समय चारों ओर मन्दिरों में बजाये गये शंख, घण्टों, घड़ियालों की ध्वनि भी नहीं सुनी । सभी लोग बाबा के दर्शन में अपने को भूले थे ।

स्वप्नों में बाबा के दर्शन

(373) दुष्कर कार्य का समाधान

हनुमानगढ़, नैनीताल, में हनुमान जी की विशाल मूर्ति का निर्माण हो रहा था । ग्रीवा तक सभी अंग बन गये थे, पर मुख का बनना किसी प्रकार भी सम्भव न हो पाया । कारीगर यथाशक्ति परिश्रम कर निराश हो गया । इससे अच्छे कलाकार का वहाँ मिलना भी सम्भव न था । मूर्ति के आगे परदा डाल कर निर्माण कार्य स्थगित करना पड़ा । इसके अतिरिक्त कोई उपचार भी नहीं था । सभी भक्तगण मन में खिन्न थे । बाबा कहीं अन्यत्र थे, नैनीताल में नहीं । एक रात शिवदत्त जोशी जी की कन्या को बाबा के स्वप्न में दर्शन हुए और वे बोले, "दैहिक,

हनुमान गढ़ नैनीताल में हनुमान विग्रह

दैविक, भौतिक तापा, राम राज काहू नहिं व्यापा के सम्पुट से अखण्ड पाठ रामायण का करो और असंख्य राम नाम लिख कर गारे में मिलाओ उसी से मुख मण्डल का निर्माण हो सकेगा ।" उनके आदेशानुसार कार्य किया गया और वही कारीगर फिर बुलाया गया । यह दुष्कर कार्य बड़ी सरलता से पूर्ण हो गया ।

(374) एक चूड़ी कम थी

अमरीकी महिला श्रीमती राधा जी, जिनके अनुभवों का उल्लेख इस पुस्तक में अन्यत्र भी हुआ है, यहाँ एक और घटना का वर्णन कर रही हैं। घटना अमरीका की है पर इसके घटित होने का समय उन्हें निश्चित रूप से स्मरण नहीं है । आपका विचार है कि यह सम्भवतः जून 1972 के बाद की है, जब महाराज जी अपने शरीर में थे ।

आप कहती हैं कि मेरी सास ने सात चाँदी की चूड़ियाँ मैक्सिको से लाकर मुझे दी थीं । मैं नित्य रात सोते समय उन्हें उतार कर अपने पलंग के पास श्रृंगारदान की दराज़ में रख दिया करती थी और दूसरे दिन सबेरे उन्हें पहले गिनती और फिर पहना करती थी ।

एक रात महाराज मेरे स्वप्न में प्रकट हो गये । मैं उन्हें देख कर बहुत प्रसन्न हुई और उनके चरणों में प्रणाम करने के बाद मैंने उनसे पूछा कि मैं उनकी क्या सेवा करूँ । उन्होंने मेरी चूड़ियों को देखा (जिन्हें मैं स्वप्न में पहने हुए थी) और बोले, **"हम उन्हें लेना चाहते हैं ।"** मैंने तुरन्त सब चूड़ियाँ हाथ से उतार कर उनके चरणों में रख दीं । मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि मेरे पास भी कुछ है जिसे वे चाहते हैं । वे बोले, **"सब नहीं हम केवल एक लेंगे ।"** मैंने एक चूड़ी उठा कर उन्हें दी, मेरी आँख खुल गयी । मैंने श्रृंगारदान देखा, वहाँ एक कम थी केवल छह ही चूड़ियाँ थीं ।

इस घटना ने मुझे ऐसा स्तब्ध कर दिया कि बहुत समय तक इस सम्बन्ध में मैं किसी से कोई बात कह नहीं पायी ।

(375) स्वप्न में मन्त्र

घटना जनवरी 1955 की है । राजा भद्री उस समय हिमाचल प्रदेश के उपराज्यपाल थे । शिमला में भीषण हिमपात हो रहा था । राजा भद्री

ज्वर में पड़े थे और रानी साहिबा श्रीमती गिरिजा देवी बहुत चिन्तित और उद्विग्नमना हो रही थीं । उस रात नींद में आपको स्वप्न हुआ । आपने राजभवन में खिड़की के रास्ते एक छाया को प्रवेश करते देखा जिसने महाराज का पूर्ण रूप धारण कर आपको दर्शन दिया । यह बाबा का वही रूप था जिसमें उनके दर्शन आपको प्रथम बार रामगढ़ ज़िला नैनीताल में हुए थे । बाबा जाप के लिये आपको एक मन्त्र दे रहे थे, पर आप यह कह कर टाल रही थीं कि निद्रा में लिया मन्त्र आप भूल जायेंगी । बाबा ने दूसरी बार आपको जगाया और मन्त्र दिया । इस बार भी निद्रा के वेग में आपने अपनी असमर्थता व्यक्त की । तीसरी बार बाबा ने आपको पलंग में बैठा दिया और पास की मेज से कलम और कागज उठा कर आपको दिया और मन्त्र लिखने को कहने लगे । आपने सुप्तावस्था में ही मन्त्र लिखा और फिर सोती रहीं । प्रातः जब आप जागीं तो आपने अपने बिस्तरे पर कागज कलम और अपनी हस्तलिपि में लिखा हुआ वह मन्त्र देखा । उन्होंने राजा साहब को यह अलौकिक स्वप्न सुनाया और अब भी आप उसी मन्त्र का जाप करती हैं ।

(376) अपने चरित्र की एक झांकी

श्रीमती कमला पाण्डे को इलाहाबाद में एक बार स्वप्न में बाबा के दर्शन हुए । आपने स्वप्न में देखा कि सड़क के पास के एक मकान के आगे के कमरे में महाराज एक तख्त पर बैठे दरवाज़े से बाहर देख रहे थे। कुछ युवक उस सड़क में बेलिहाज सिनेमा के भद्दे गाने गाते जा रहे थे । उस कमरे में उस समय श्री माँ और जीवन्ती माँ के साथ आप भी उपस्थित थीं । देश की इस महान् विभूति के आगे युवकों का ऐसा आचरण देख आपको इस अभद्र आधुनिकता पर क्षोभ हुआ, पर आप मौन रहीं । बाबा ने तुरन्त उन युवकों को अपने पास बुलाया और उनसे गाना सुनाने को कहा। उनके सम्मुख उपस्थित होने पर वे मीरा, कबीर आदि के सुन्दर भजन सुनाने लगे और उन्होंने कई भजन सुनाये । बाबा उनसे बोले, **"हमने तुम्हें इसलिए बुलाया था कि तुम वही गाने सुनाओगे जो सड़क में गा रहे थे ।"** वे लोग लज्जित हो हाथ जोड़ कर बोले, "बाबा ! हम उन गानों को भूल गये हैं, हमें ये ही भजन आते हैं ।" बाबा ने कमला जी

की ओर मुड़कर धीरे से उनके कान में कहा, **"हमें कुछ आता-जाता नहीं है । हम केवल हृदय परिवर्तन करना जानते हैं ।"**

(377) आत्मबल बढ़ाने का आदेश

कमला जी का जीवन सदा भीषण बीमारियों से संघर्ष करता रहा । एक बार आप अपनी दो भतीजियों के विवाह में लखनऊ गयी थीं । वहाँ आपको ज्वर हो गया जिससे आपका शरीर और भी शक्तिहीन हो गया । आपको बहुत दुःख था कि ऐसे उत्सव के समय भी आप घर के काम-काज में हाथ नहीं बटा पा रही हैं । उसी रात बाबा स्वप्न में आपको दिखायी दिये और बोले, **"अपना आत्मबल बढ़ाओ ।"** दूसरे दिन से आपने अपनी कमजोरी की ओर ध्यान न देकर यथाशक्ति काम करना आरम्भ किया और आपको आत्म सन्तोष हुआ । इस घटना के कुछ ही समय बाद आपको मेरठ आकर अपने छोटे लड़के का विवाह करना पड़ा जिसका सारा भार अकेले आप को ही उठाना था । बाबा के इस आदेश के पालन से यह कार्य भी सन्तोषप्रद एवं सफल रहा ।

(378) सार्थक आशीर्वाद

सन् 1976 में श्री भुवन चन्द्र तिवारी, रोडवेज स्टेशन, लोहाघाट के इन्चार्ज थे और साथ ही टी.आई. का कार्यभार भी संभाले हुए थे । एक रात बाबा आपके स्वप्न में प्रकट हो गये और बोले, **"तिवारी, तूने अपने पिता का श्राद्ध नहीं किया ? चल करा देता हूँ ।"** इतने में दृश्य बदल गया । आपने अपने घर ग्राम धुगोली, पो.आ. बांस भीड़ा, अल्मोड़ा में सब श्राद्ध की सामग्री लिये बाबा के सम्मुख अपने को श्राद्ध करता पाया। वे आप को विधिवत् श्राद्ध करा रहे थे । आप सामग्री में पिण्ड वस्त्र लाना भूल गये थे । बाबा ने सुझाव दिया कि कुछ रुई फैला कर पिण्डों को ढक दो । श्राद्ध पूरा होने पर बाबा ने पिण्डों के ऊपर से कुछ रुई उठाई और आशीर्वाद के रूप में आपके सिर पर रख दी । इसके बाद आप चले गये ।

दूसरे दिन सहायक क्षेत्रीय प्रबन्धक श्री मौ. जफर साहब दौरे में आये और अगले दिन आपसे टनकपुर रोड पर साथ चलने को कह गये । उस दिन स्टाफ कार के चालक मिश्रा जी की बगल में जफर साहब सपत्नीक बैठे और पीछे की सीटों में उनके पुत्र और तिवारी जी बैठे । मार्ग में सुपाला नामक स्थान में उस कार की एक फौजी गाड़ी से दुर्घटना हो गयी। कार नीचे जा रही थी और फौजी गाड़ी ऊपर आ रही थी । कार के नीचे का चेसिस कई जगहों से मुड़ गया था पर कार के ऊपरी भाग में किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुँची । कार में बैठे सभी लोगों की जानें बच गयीं, पर चोट सब को आयी । जफर साहब की पत्नी के पैर की हड्डी टूट गयी। तिवारी जी के सिर में केवल उस स्थान पर जहाँ बाबा ने दो रात पूर्व स्वप्न में रुई रखी थी, एक साधारण सी चोट आयी जिसके उपचार में वहाँ पर कुछ औषधि के साथ रूई फैला कर रख दी गयी ।

(379) कैन्सर से छुटकारा

घटना 88 एलेनगंज इलाहाबाद की है । लेखक की बहन श्रीमती रमा जोशी का स्वास्थ्य उदर विकार से गिरता चला गया । अन्त में उन्हें मेडिकल कालेज अस्पताल, इलाहाबाद में भरती होना पड़ा। वहाँ सभी प्रकार की जाँच हुई और पेट में नली डालकर भीतरी भाग का अवलोकन भी किया गया । सभी डाक्टरों ने एक मत होकर कैन्सर का निदान किया और 'बायोप्सी' के लिये यथोचित कारवाई भी की गयी । डा. नैथानी जी के हाथों से यह ऑपरेशन होना था, उन्होंने रिपोर्ट की प्रतीक्षा किये बिना शीघ्र ही ऑपरेशन करने का सुझाव दिया ।

यह बाबा का भक्त परिवार है । आपके पतिदेव इस चिन्ताजनक स्थिति से बहुत घबरा उठे । उन्होंने कई पत्र कैंची मन्दिर को भेजे । उनमें बाबा से अपनी हार्दिक व्यथा का सच्चा निवेदन करते हुए उनसे उनकी कृपा की प्रार्थना की । संयोगवश डाक्टर को आवश्यक कार्य से तुरन्त इलाहाबाद के बाहर जाना पड़ा । उन्होंने चार दिन बाद वापसी पर ऑपरेशन करने का निश्चय किया और सहायक डाक्टर को आदेश भी दिया कि उस दिन मरीज को ऑपरेशन के लिये तैयार रखें ।

इस बीच परिवार के एक सदस्य को स्वप्न में बाबा के दर्शन हुए । बाबा अस्पताल में बालकों की भाँति काँच की गोलियाँ खेलते दिखायी दिये, पर वे उन्हें सामने की ओर नहीं, पीठ पीछे उल्टी दिशा क़ो फेंक रहे थे । इस स्वप्न का आशय उस समय निश्चित रूप से समझ में नहीं आया, पर चौथे दिन डाक्टर के आने तक रमा जी के स्वास्थ्य में अप्रत्याशित सुधार आ गये । जब डाक्टर का ध्यान इस ओर आकर्षित किया गया तो उसने पुनः नली डालकर भीतर की स्थिति देखी । कैन्सर का कहीं पता ही न था। रमा जी को घर जाने की अनुमति दे दी गयी । बाबा की उल्टी गोली चलाने का आशय तब समझ में आया ।

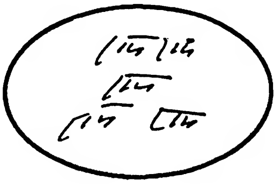

अमर ज्योति

महाप्रयाण और उसके बाद

यद्यपि महाराज अपने भक्तों से अत्यधिक घुलेमिले थे और लोग भी उनका सान्निध्य नहीं छोड़ पाते थे, पर ऐसा प्रतीत होता है कि किसी उद्देश्य विशेष से बाबा जन समुदाय से अलग होना चाहते थे । आप इस कार्य को इस प्रकार करना चाहते थे कि भक्तों के हृदय को किसी प्रकार का आघात न पहुँचे । आपने विचार पूर्वक अपने महाप्रयाण की युक्ति निकाली । आपका शरीर सदा आपकी क्रीड़ा की वस्तु रहा जिसे आप जब चाहते लुप्त कर देते, विभिन्न रूपों में प्रस्तुत करते अथवा एक ही रूप में अनेक स्थानों में एक साथ दर्शाते रहे । ऐसे किसी एक रूप को समाप्त दर्शा देना आपके लिये दुष्कर न था । आपने इस हेतु जिस नाटक की रचना की उसकी भूमिका बड़े कौशल से निभाई, अभिनय भी आपका प्रशंसनीय रहा और यद्यपि इस नाटक में आपने कोई भी बात छिपा कर नहीं रखी, फिर भी कोई यह अनुमान नहीं लगा पाया कि आगे क्या होने जा रहा है । बाबा ने अपना शरीर शान्त कर दिखाया पर लोगों में, जैसा वे चाहते थे विषम प्रतिक्रियाएँ नहीं होने पायीं ।

अपनी नर लीला की समाप्ति के पूर्व आपने एक साधु के निधन की कहानी पहेली के रूप में प्रस्तुत की । वह साधु चिता में राख हो जाने के कुछ दिनों बाद फिर प्रकट हो गया था । इस प्रकार इस पहेली के माध्यम से आपने स्वयं अपना वास्तविक परिचय दिया, पर लोगों की बुद्धि में यह बात नहीं समा पायी । शरीर के शान्त होने के बाद भी बाबा के कार्यों की गतिविधि में कोई अन्तर नहीं आ पाया । आपकी लीलाओं का क्रम यथावत् चलता आ रहा है – भक्तों के योग–क्षेम के वहन में, अपने को सुपरिचित रूप में या अन्य किसी रूप में प्रस्तुत करने और अपने स्वप्नों को सार्थक प्रमाणित करने में ।

महाप्रयाण

महाराज की यह यात्रा 9 सितम्बर 1973 के दिन कैंची से आरम्भ हुई और आगरा, मथुरा होते हुए 11 सितम्बर 1973, अनन्त चतुर्दशी की रात्रि को वृन्दावन के अस्पताल में समाप्त हुई । यह एक ऐसी विचित्र घटना है जिसकी पूरी जानकारी होते हुए भी सभी लोगों ने अपने को अनजान पाया।

इसमें सन्देह नहीं कि बाबा ने अपना शरीर एक साधारण मानव की भाँति शान्त कर दिखाया, पर इसे उनका अवसान नहीं कह सकते । इस घटना के पूर्व और बाद के सभी प्रसंग इस तथ्य को पुष्ट करते हैं कि बाबा अमर हैं और यह घटना आपकी रहस्यमय लीला है, जिसका सम्बन्ध आपके अनन्त कार्यक्रम से हो सकता है । न जाने कितनी बार आप जनसमुदाय के बीच प्रकट हुए और फिर इसी प्रकार लीलात्मक रूप से अदृश्य हुए । अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु आपको यही रास्ता अपनाना पड़ा ।

आप भक्तों के हृदय में अपने वियोग जन्य दुःख से ठेस नहीं पहुँचाना चाहते थे । इस कारण आपको ऐसे नाटक की रचना करनी पड़ी, जिसमें शरीर–त्याग के पूर्व से ही आप अपने भक्त परिवार से अलग बहुत दूर वृन्दावन चले गये । वहाँ रात्रि के नीरव वातावरण में एक अस्पताल में आपने विदा ली ।

ऐसा अनुमान है कि यह योजना बाबा ने दो वर्ष पूर्व बना ली थी । लोगों को इस दुःखद घटना का सामना कराने के लिये इसकी जानकारी के संकेत समय समय पर देते हुए वे उन्हें तैयार भी कर रहे थे । लोग आपके दर्शन से ऐसे भ्रमित थे कि वे यथार्थ नहीं देख पा रहे थे । यद्यपि बाबा के सभी कार्य अप्रत्याशित हुआ करते थे पर कुछ बातें ऐसी भी थीं जो सदा उनमें देखी गयीं । वे संकल्प–विकल्प करते नहीं पाये गये । वे निर्णय तत्काल लिया करते थे । वे अपने गन्तव्य स्थान और अपने आने–जाने की तिथि की घोषणा नहीं करते थे । अन्तिम दिनों में बाबा के आचरण और व्यवहार में भी अन्तर दिखायी देने लगा । आप नित्य अपनी उंगलियों में गिन कर अपने जाने के दिन की घोषणा किया करते । भ्रमणशील होते हुए भी आपने इधर–उधर जाना बन्द कर दिया । इस यात्रा के दो महीने पूर्व से आपने आश्रम के बाहर पैर भी नहीं रखा । जनसमुदाय आपको प्रिय होते हुए भी आप दिन में बारह बजे से चार बजे तक एकान्त में रहने लगे। यदि कोई इस बीच आपके पास चला आता तो आप उसे खोये–खोये से दिखायी देते । आपकी आत्मीयता भी लोगों के प्रति ऐसी बढ़ती प्रतीत

होने लगी जिससे आपकी निर्लिप्तता लुप्त लगने लगी । दर्शकों को बाबा में यह अन्तर देख कर आश्चर्य तो होता पर इनसे वे कुछ अनुमान नहीं निकाल पाते थे ।

सितम्बर 1971 में एक भक्त ने उनकी वाणी टेप करने के लिये बाबा से अनुमति माँगी । आपने स्वीकृति तो दे दी पर साथ में आदेश भी दिया कि दो वर्ष तक वह इस टेप को किसी को नहीं सुनायेगा । यद्यपि इसके लिये आपने कोई कारण नहीं बताया पर दो वर्ष बाद होने वाली महाप्रयाण की घटना इसके कारण को स्वतः स्पष्ट करती है ।

एक दिन सन् 1972 में, महाप्रयाण के लगभग एक वर्ष पूर्व बाबा एकाएक श्री के.के. साह से पूछने लगे, **"हमें कहाँ शरीर छोड़ना चाहिये?"** बाबा के मुँह से ऐसी अरुचिकर वार्ता सुन कर वे अवाक् रह गये, कुछ बोल नहीं पाये ।

सन् 1972 के अन्त में या जनवरी 1973 के आरम्भ में आगरा में बड़ी सर्दी पड़ रही थी । महाराज ठाकुर महावीर सिंह जी के घर में कम्बल ओढ़े बैठे थे । आपने स्नान करने की इच्छा व्यक्त की । नौकर पानी और लोटा लाकर रख गया । बाबा ने तुरन्त स्नान किया । ठाकुर साहब के पुत्र श्री कर्णवीर सिंह उनके बदलने के लिये धोती ले आये । बाबा का बदन गीला था, पर धोती सूखी । कर्णवीर बोले, "नहाया नहीं !"

"नहा तो लिया ।"

"धोती तो गीली हुई नहीं, कहाँ नहाये ?"

"यही तो तारीफ है ?"

कर्णवीर जी ने धोती बदलने का अनुरोध किया, पर आप माने नहीं और बोले, **"आज नहीं बदलता हूँ ।"** फिर कुछ अनमने और खोये हुए से बोले, **"पता नहीं कब आना हो, दूर जा रहा हूँ ।"** यह इस परिवार को बाबा के अन्तिम दर्शन थे ।

दिल्ली के एक वैद्य जी जो महाराज को जानते न थे और उनके द्वारा भेजे गये अनेक मरीज़ों का इलाज कर चुके थे, श्री आर.एस. यादव, बी.डी.ओ. दिल्ली, के सुझाव से उनके दर्शनार्थ कैंची चले आये । वैद्य जी के साथ दो व्यक्ति और थे । बाबा ने तीनों को एक–एक पेटी सेव की प्रसाद में देते हुए विदा किया । वैद्य जी ने कुछ दिन आश्रम में रहने की अपनी इच्छा व्यक्त की । बाबा ने उस दिन उन्हें नैनीताल में निवास कर दूसरे दिन प्रातःकाल सीधे दिल्ली वापस जाने का आदेश दिया । जब वे चलने को

उद्यत् हुए, बाबा बोल उठे, **"अब तू मुझे नहीं देख पायेगा ।"** वैद्य जी को भ्रान्ति हुई, उन्होंने इन वार्ताओं का आशय अपने ऊपर घटित किया और दिल्ली आकर वे अपने समस्त लेन–देन के कार्यों को पूरा करने लगे । वे समय पर तीर्थयात्राएँ भी कर आये और अन्तिम दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे। एकाएक उन्हें बाबा के निधन की सूचना मिली । वे चकरा उठे और तभी उनकी वार्ता का सही अर्थ समझ पाये ।

कैंची के पूर्णानन्द तिवारी जी के भविष्य के हित को देखते हुए बाबा ने, अपनी महासमाधि के दो माह पूर्व उत्तर प्रदेश परिवहन के एक अधिकारी से कह कर, उनकी बदली 8 कि.मी. दूर भवाली स्टेशन में करवा दी । इस घटना का उल्लेख हो चुका है । तिवारी जी बदली चाहते नहीं थे । यह जानकर कि यह बदली बाबा के आदेशों से हुई, वे अत्यन्त दुःखी थे । बाबा ने उन्हें अपने पास बुलवाया और बोले, **"बदली तेरी नहीं, हमारी हुई है । अब हम अमरकण्टक चले जायेंगे और तू हमसे कभी नहीं मिल पायेगा ।"** उस समय आपने मुस्कराते हुए यह शेर सुनाया –

"छोड़ कर इस कोट किले को, बदली हो गई और ज़िले को ।
आया है एक तार ज़रुरी, उसने कर दी है मजबूरी ।।"

तिवारी जी बाबा की वाणी के रहस्य को दो महीने बाद उनके महाप्रयाण होने पर ही समझ पाये ।

सब से प्रेम करते हुए भी बाबा सदा निर्लिप्त रहे, पर इन दिनों उनका लगाव लोगों के प्रति अत्यधिक प्रतीत होने लगा । अब वे किसी से दरबार से जाने को कहते ही नहीं थे । लोग स्वयं आपसे अनुमति प्राप्त कर चले जाया करते थे । मैं (लेखक) अगस्त 1973 के अन्तिम सप्ताह में कैंची गया हुआ था और मुझे पहली सितम्बर को इलाहाबाद लौट कर आना था। बाबा सब कुछ जानते होते, उनसे कभी कुछ कहने की आवश्यकता होती ही नहीं थी । जब मेरे पास एक ही दिन शेष रह गया और मुझे नैनीताल भी जाना था, तो मुझे लाचार होकर उनसे अनुमति माँगनी पड़ी । बाबा बड़ी प्यार भरी दृष्टि और भावपूर्ण आग्रह से बोले, **"अब कब आयेगा?"** मैं आपके इस अपनत्व में बह गया और बिना कुछ सोचे समझे बोल उठा, "बाबा, जब आपकी आज्ञा होगी मैं उपस्थित हो जाऊँगा ।" बाबा मधुर वाणी में बोले, **"कल आ जा ।"** मैं बाबा को नमन कर उसी समय नैनीताल को रवाना हुआ और दूसरे दिन प्रातःकाल ही कैंची आ गया । उनका पूजन कर मैंने भण्डारे में प्रसाद पाया । बाबा ने किसी कार्य के लिये मुझे

बुलाया नहीं था, यह केवल उनकी कृपा थी । जब मैंने जाने की अनुमति माँगी तो उनका संक्षिप्त उत्तर यही था, **"अभी बैठो ।"** लगभग दिन के दो बज चुके थे, एकाएक कई कारें आश्रम के प्रवेश द्वार पर आ रुकीं । कुछ महानुभाव सेवों की अनेक पेटियाँ लेकर बाबा के सम्मुख उपस्थित हुए । उन्हें विदा करने के बाद आपने अनेक फल हमें प्रसाद में देते हुए अपने प्रेमपूर्ण नेत्रों से अभूतपूर्व विदाई दी । मेरे साथ स्थल सेना के मेजर (अब कर्नल) प्रमोद चन्द्र जोशी भी थे । एक अवर्णनीय स्थिति रही, हम लोगों को अपना होश ही न था । हम लोग मौन हो उनका चिन्तन करते हुए नैनीताल पहुँच गये । उस समय हम यह न जान सके कि यह बाबा की हमें अन्तिम विदाई है । वे सभी दर्शनार्थियों को आत्मिक तुष्टि प्रदान कर रहे थे ।

अपनी अन्तिम यात्रा के लगभग एक सप्ताह पूर्व बाबा ने कैंची में कुछ आवश्यक कार्य भी करवाये जिनकी ज़रूरत उन्हें कभी प्रतीत नहीं हुई पर आप अपनी अनुपस्थिति में इन कार्यों की उपयोगिता को महत्वपूर्ण समझते थे । कैंची में डाकघर और रोडवेज स्टेशन तो आप पहले ही बनवा चुके थे, पर दूरभाष की सुविधा इस घाटी में कहीं नहीं थी । बाबा ही आश्रम के संचालक थे । आपके पास अपना अलौकिक दूरभाष था जिसका उपयोग आप किया करते थे । आपकी प्रेरणा से दूरभाष विभाग का एक उच्चपदाधिकारी अपने लड़के के मानसिक उपचार हेतु आपकी शरण में आया । बाबा के पास अधिक समय था नहीं । आपने उससे चौबीस घण्टों में कैंची डाकघर में दूरभाष लगाने को कहा और पूर्ण आश्वासन दिया कि **इस सेवा कार्य से हनुमान जी उसकी इच्छा पूरी कर देंगे** । हुआ भी ऐसा ही । पर्वतीय भाग में यह दुष्कर कार्य बाबा की कृपा से ही निर्धारित समय में पूरा हो गया जिसकी उपादेयता से इस घाटी के सभी लोग लाभान्वित हैं ।

आपका दूसरा कार्य था आश्रम में एक पक्की यज्ञशाला का निर्माण । कैंची में यज्ञ प्रतिवर्ष एक कच्ची यज्ञशाला में हुआ करते थे । बाबा अपनी लीला समाप्त करने के पूर्व इसे स्थाई रूप देना चाहते थे । आपने यह कार्य यथाशीघ्र इन्दर जी की देख रेख में करवाया । 9 सितम्बर को जब इसकी छत पड़ रही थी, बाबा ने अपनी अन्तिम यात्रा आरम्भ की ।

सितम्बर 1973 के प्रारम्भिक दिन थे । कैंची पर्वतीय क्षेत्र में कुछ ठण्डक बढ़ने लगी थी । एक ओर यज्ञशाला का निर्माण कार्य चल रहा था, इस कारण अनेक मज़दूर आश्रम में ही रहते, प्रसाद पाते और दिन भर काम किया करते । आश्रम में निवास करने वालों में अनेक पुरुष और

महिलाएँ थीं । अनेक विदेशी भी यहाँ निवास कर रहे थे और बहुत संख्या में लोग जिनमें विदेशी भी थे, नित्य प्रातःकाल ही नैनीताल से आ जाते और सायंकाल वापस चले जाते । इस प्रकार आने–जाने का क्रम चलता रहता और कैंची में बहुत चहल–पहल दिखायी देती थी । श्री हुकमचन्द जिन्हें प्रथम बार बाबा के दर्शन इस वर्ष के आरम्भ में मद्रास में हुए थे और श्री किशन लाल अरोरा आश्रम में बीमार पड़े थे । इस प्रकार एक दिन के बाद दूसरा दिन आता जा रहा था । बाबा सभी दर्शनार्थियों से बड़े प्रेम से मिलते और नित्य अपनी अंगुलियों में 9 सितम्बर तक के दिनों को गिन कर अपने जाने की तिथि को बताते रहते । आपके इस अनोखे आचरण से सब लोग यही समझते कि जब आप स्वतः कह रहे हैं तो अवश्य अन्य दिनों की भाँति ही जायेंगे, पर इससे दर्शनार्थियों की भीड़ नित्य बढ़ती जा रही थी ।

बाबा इन दिनों लोगों को सब प्रकार से स्वस्थ दिखायी दे रहे थे । उनके मुखमण्डल में प्रसन्नता छाई रहती और वे हास्य और विनोद पूर्ण वार्ता करते रहते । उनकी दयालुता, उदारता, प्रेम और आत्मीयता जो सदा उनके स्वभाव में निहित रहती थी, इन दिनों आपके व्यवहार में प्रत्यक्ष हो रही थी। आप सब से कुशल क्षेम पूछते, सब को प्रसाद देते और उनकी इच्छा पूर्ति हेतु आशीर्वाद भी देते थे । 7 सितम्बर के दिन हल्द्वानी के आनन्द ट्रान्सपोर्ट एजेंट श्री जगन्नाथ आनन्द की पुत्री कुमारी सरला जी बाबा के दर्शन करने आयीं । उन्होंने बाबा से कहा, "बाबा! एफ. सी. आई. कार्यालय में जिस अस्थाई पद में आपने मेरी नियुक्ति करवाई थी अब वह छंटनी की लिस्ट में आ गया है, इस कारण मैं चिन्तित हूँ" । बचपन में पोलियो के रोग से इनके पैर बेकार हो गये थे, इस कारण आप अपने हाथों के बल पर ही शरीर को चलाती थीं । बाबा ने आपको और आपके पिताजी को फल और मिठाइयाँ खिलायीं और भण्डारे में प्रसाद खिलवाया, इसके बाद बाबा सरला जी से बोले, **"तू शादी करना चाहती है ?"** आपके मना करने पर बाबा बहुत प्रसन्न हो गये और उन्होंने आपको पक्का आश्वासन दिया कि **तुझे नौकरी से कोई नहीं हटा सकता, तुझे पक्का करना ही पड़ेगा।** इसके थोड़े ही दिन बाद एक ऐसा विचित्र संयोग घटित हुआ कि केवल इनके कारण सारी लिस्ट रद्द कर देनी पड़ी और सब नियुक्तियाँ स्थाई कर दी गईं । अस्तु, तदनन्तर बाबा कहने लगे, **"हम तुझ से बहुत खुश हैं । आज तू जो माँगना चाहती है माँग ले ।"** इसके उत्तर में आप बोलीं, "बाबा, मैं केवल आपका आशीर्वाद चाहती हूँ ।" इस पर बाबा सजल नेत्रों से आपकी ओर देखते रहे और गद्गद् कण्ठ से बोले, **"अबसे**

तेरे सब काम हमें करने होंगे ।" बाबा का यह लौकिक और पारलौकिक वरदान पाकर सरला जी धन्य हुयीं ।

जहाँ एक ओर बाबा की ऐसी प्रसन्न मुद्रा में दर्शन होते और ऐसी लीलाएँ देखने में आतीं, वहीं दूसरी ओर हास्य और विनोद की वार्ताओं के बीच-बीच में उदासीन प्रसंग भी सुनने में आते, जिसका सीधा या परोक्ष सम्बन्ध नश्वरता से होता । कभी-कभी आप कहते कि इस जीवन में हम उन्हीं से मिलते हैं, जिनसे हमारा मिलना पहले से निश्चित होता है । प्रत्येक व्यक्ति से सम्पर्क की अवधि भी निश्चित होती है । इस से अधिक न रहने या बिछुड़ने का दुःख नहीं होना चाहिये। कभी वे शरीर के सम्बन्ध में कहते कि यह प्रेतयान है । हर किसी को मरना है । व्यक्ति रोता है स्वार्थ और मोह के कारण, मरने वाला व्यक्ति भी अपने परिवार के लिये रोता है । कभी कहते कि जो इस संसार में आया है, उसे जाना ही होगा । कोई यहाँ रह नहीं सकता । हम भी जायेंगे, किसी को दर्शन नहीं देंगे। यह पूछने पर कि आप कहाँ जायेंगे ? बाबा बोले, "बहुत दूर नर्मदा के किनारे ।" एक बार आप श्री माँ से बोले, "हम कर क्या सकते हैं जब हमें ईश्वर बुला रहा है ।" एक बार इसी तरह अन्तिम संस्कार के बारे में कहने लगे, "दाह संस्कार से आत्मा की पुनः शरीर धारण करने की इच्छा कम हो जाती है ।" इस बात को दोहराते हुए आपने कहा कि जब सन्त अपना शरीर शान्त कर देता है तो उसका आश्रम ही उसका शरीर हो जाता है । एक बार वार्ता करते हुए आप बोले, "हम नहीं मरेंगे ।"

8 सितम्बर का दिन भी अन्य दिनों की भाँति रहा । आगन्तुकों की भीड़ के कारण आश्रम में चहल-पहल बहुत थी । बाबा की कुटिया के बाहर विदेशियों का कीर्तन चल रहा था और भीतर लोगों को अनेक आनन्द पूर्ण दर्शन हो रहे थे । बीच-बीच में बाबा, हुकमचन्द जी और अरोरा जी की बीमारियों से अपने को चिन्तित दर्शा रहे थे । प्रातःकाल से वे दो बार भवाली से उनके लिये डाक्टर बुला चुके थे । तीसरी बार नैनीताल से वे इन लोगों के लिये सिविल सर्जन बुला रहे थे । आपने इन्दर जी (श्री सर्वदमन रघुवंशी) को नैनीताल यह कह कर भेजा कि आपको (स्वयं बाबा को) दिल की शिकायत हो रही है, डाक्टर मशीन लेता हुआ आवे । इन्दर जी को न सिविल सर्जन मिला और न मशीन ही । वे रात के ग्यारह बजे तक इस खोज में भटकते रहे । अन्त में कैंची लौट आये । इस बीच शाम के तीन बजे श्री किशन चन्द्र तिवारी, नैनीताल से, बाबा के दर्शनार्थ, कैंची पहुँचे । बाबा ने उनसे भी बीमारों के लिये भवाली से पुनः डाक्टर बुलाने

को कहा । उन्होने निवेदन किया कि बार–बार डाक्टर आना पसन्द नहीं करेगा और कहेगा कि जो औषधियाँ बीमारों को दी गयी हैं उन्हें भी काम करने का समय देना चाहिये । बाबा बोले, **"डाक्टर से कहना हमें दिल की शिकायत मालूम दे रही है ।"** डाक्टर आया, उसने बाबा को स्वस्थ पाया । उसने कहा वायु विकार के कारण बाबा को कुछ घबराहट है । उसने दवा लिख दी और आराम एवं हल्का भोजन करने की राय दी। बाबा ने उस डाक्टर से फिर उन बीमारों को देखने के लिये कहा । बाबा ने उन बीमारों से पुछवाया कि उनके घरवालों को बुलवा दिया जाय । वे हुकमचन्द जी के नकारात्मक उत्तर से बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें बार–बार सन्त कह कर उनकी सराहना करने लगे । यह बाबा का बाल स्वभाव था जो इस प्रकार के खिलवाड़ में रस ले रहा था । बाबा एक बार भी इन बीमारों को देखने नहीं गये । वे व्यर्थ डाक्टर बुलवा रहे थे जब कि वे अपनी इच्छाशक्ति से उन्हें स्वस्थ कर सकते थे । दूसरे दिन बाबा के प्रस्थान के समय इन बीमारों को अपना होश न था और ये उनके दर्शन भी न कर पाये, पर बाबा के जाने के दूसरे दिन से इनके स्वास्थ्य में ऐसा सुधार आया जैसे इन्हें कुछ हुआ ही न हो । बाबा की लीला समाप्त होने पर ये पूर्ण स्वस्थ हो आश्रम छोड़ कर चल दिये ।

अस्तु, इस रात बाबा ने अन्न ग्रहण नहीं किया । बहुत आग्रह करने पर आपने रामदाना स्वीकार किया । रात के ग्यारह बज चुके थे । कुछ भक्तगण और श्री माँ बाबा की कुटिया में उनके सम्मुख बैठे थे । बाबा ने एकाएक एक कहानी सुनानी आरम्भ की । वे बोले, **"एक साधु था, उसने अपना शरीर छोड़ दिया । उसके भक्तों और परिवार के लोगों ने उसे चिता में जला दिया । कुछ समय बाद वह साधु फिर आ गया ।"** इतना कहने के बाद आप माँ से बोले, **"तू बता वह कैसे वापस आ गया ?** माँ मौन रहीं और बाबा ने भी स्वयं उसका कोई उत्तर नहीं दिया । उपस्थित भक्तजन इसका कोई उत्तर खोज नहीं पाये । इस प्रकार हमेशा के लिये बाबा ने इसे पहेली बना कर छोड़ दिया ।

इसी प्रकार 9 सितम्बर भी आ गया जिस दिन बाबा को यात्रा आरम्भ करनी थी । आश्रमवासियों को आपके प्रातःकालिक दर्शन बड़ी प्रसन्न मुद्रा में हुए । **श्री माँ को इस दर्शन में आपने अपने अनेक प्रिय भक्तों का जो वहाँ उपस्थित न थे, संक्षिप्त पर पूर्ण परिचय दिया।** धीरे–धीरे दर्शनार्थियों की भीड़ बढ़ती गयी । विदेशी लोग नित्य की भाँति आपकी कुटिया के बाहर ध्यानावस्थित हो भावपूर्ण कीर्तन करने लगे और कुटिया में दर्शनार्थियों का ताँता बँधा था । बाबा सब से हँसते हुए बड़े प्रेम से बातें करते रहे । सभी आगन्तुक आपके दर्शन से सन्तुष्ट थे और

अपने को कृतार्थ समझ रहे थे । अपने कीर्तन को विश्राम देने के लिये विदेशी लोग बीच–बीच में बाबा की जयकार बोल रहे थे । एक बार ऐसी जयकार को सुन कर बाबा अपनी कुटिया में बोल उठे, **"नीब करौरी मर गया ।"** बाबा की दृष्टि में भविष्य का सम्पूर्ण दृश्य था और भक्तों की दृष्टि उपस्थित बाबा तक ही सीमित थी । इस प्रकार अनेक हास्य और विनोद की बातें बाबा करते रहे और दिन के दस बज गये ।

इसके बाद बाबा शौच स्नान आदि के लिए राधा कुटी गये । यहाँ भक्तों ने जिनमें महिलाएँ भी थीं, उनको परात में बिठा कर रुद्राभिषेक के मन्त्रों से स्नान कराया । बाबा ने अपना शरीर भक्तों को अर्पित कर रखा था । सब को सब प्रकार की छूट थी । सब लोग श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ अपने प्रिय मन्त्र एवं स्तुतियों का उच्चारण करते हुए अपने–अपने ढंग से उन्हें स्नान करा रहे थे । मन्दिरों में जिस प्रकार स्त्री, पुरुष शिवलिंग पर जल चढ़ाते हैं, वही दृश्य यहाँ था । बाबा की आँखों में प्रगाढ़ प्रेम, मुख–मण्डल में अद्‌भुत आकर्षण छाया था – प्रसन्नतापूर्ण मन्द मुस्कान उसमें व्याप्त थी । सभी लोगों ने उनके चरणोदक का पान किया और कुछ अज्ञात प्रेरणा से उसे अनन्तकाल के लिए सुरक्षित कर दिया । तदुपरान्त चन्दन, धूप आदि से उनका पूजन हुआ और आरती की गयी । बाबा ने सागूदाने का भोग लिया और वे उपस्थित सभी लोगों से प्रेम और हास्य मिश्रित बातें करते रहे । बीच–बीच में आप सब को यह याद दिलाते जा रहे थे कि **हमने आज जाना है** ।

दो वर्ष पूर्व आपकी ही प्रेरणा से किसी भक्त ने आप को एक डायरी भेंट की थी । बाबा ने उसका उपयोग इस प्रकार किया कि वे नित्य उसके एक पृष्ठ पर दिनांक अंकित करते और राम नाम लिखा करते थे । आप स्वयं कहते भी थे कि **राम नाम से सब काम पूरे हो जाते हैं** । बाबा का यह कार्य भक्तों के लिये अनुकरणीय आचरण सिद्ध हुआ । वे जब कभी यात्रा में इधर–उधर जाते, माँ उनके लिये इस डायरी को साथ ले जाया करती थीं । बाबा ने आज 9 सितम्बर का दिनांक देकर डायरी का पृष्ठ भरा । इसके बाद आपने 10 सितम्बर का दिनांक अंकित कर दूसरा पृष्ठ भी भर दिया । तदुपरान्त तीसरे पृष्ठ में 11 सितम्बर का दिनांक लिख कर उस पृष्ठ को कोरा छोड़ दिया और डायरी माँ को देते हुए बोले, **"अम्मा अब यह कापी तेरी है, तू ही इसमें आगे लिखेगी ।"** बाबा का यह सम्पूर्ण कार्य उद्देश्यपूर्ण और प्रतीकात्मक था । 11 सितम्बर के दिन आपने अपनी जीवन यात्रा समाप्त दर्शायी, इस कारण डायरी में यह पृष्ठ कोरा छोड़ दिया गया था । डायरी माँ को देकर आपने परोक्ष रूप से अपना कार्यभार उन्हीं को सौंप दिया ।

लगभग एक बजने को था, बाबा एकाएक बोले, "**अब जाते हैं ।**" आपने किशन चन्द्र तिवारी जी से श्री सर्वदमन रघुवंशी को (जिन्हें वे इन्दर कहा करते थे) अपनी कार प्रवेशद्वार पर लगवाने के लिये कहलवाया । बाबा ने पिछले दिन दिल की शिकायत के बहाने तिवारी जी से ही भवाली से डाक्टर बुलवाया था । इस कारण वे बाबा की नब्ज़ अपने हाथ में लेकर देखने लगे । नब्ज़ का कहीं पता ही नहीं था । यह देखकर आप घबरा गये और चिल्ला उठे, "बाबा यह क्या हो रहा है ?" बाबा हँसते हुए बोले, "**तू डाक्टर हो गया ? अच्छा, जरा ठहर जा ।**" इसके बाद तिवारी जी ने देखा कि नब्ज़ सही हो चली जो आपकी स्वस्थता का प्रमाण दे रही थी । आप इन्दर जी को बाबा का सन्देश पहुँचाने चले और इधर राधा कुटी में बाबा ने श्री माँ से विदाई ली । आप अनेक बार बातों के सिलसिले में माँ से कह चुके थे, "**अम्मा, तूने जैसी हमारी सेवा की, ऐसी काहू से किसी की न बन पायी और न आगे किसी से होगी । जब मैं अन्त में जाउँगा तो तेरे आगे रोता हुआ जाउँगा और दुनियाँ के आगे हँसता हुआ ।**" आज वह दिन आ गया । बाबा ने माँ को अभय वरदान देते हुए कहा कि **जहाँ भी तू रहेगी वहीं मंगल हो जायेगा ।** आप सिसक-सिसक कर रो रहे थे और आपकी आँखों से अविरल अश्रुपात हो रहा था । जब माँ ने आपके साथ चलने का आग्रह किया तो आप बोले, "**हम अपने एक भक्त डाक्टर के पास आगरा जा रहे हैं । वह हमारी बड़ी सेवा करेगा और अमरीका से आयी अपनी नयी मशीन से हमारी जाँच भी करेगा । हम उसे दिखाकर दूसरे दिन वापस आयेंगे ।**" माँ को आश्वासन देते हुए आप बोले, "**ज़रूरत होगी तो तार कर देंगे । तुम रमेश (अपने पुत्र) के साथ आ जाना ।**" बाबा की प्रत्येक बात अक्षरशः सत्य घटित हुई ।

अस्तु, माँ से विदा लेकर ज्योंही आप राधाकुटी से बाहर आये, आपको दो व्यक्तियों ने प्रणाम किया । बाबा इन लोगों का हाथ पकड़ कर हँसते-बोलते हनुमान मन्दिर की ओर चल पड़े । उस समय वहाँ मन्दिर परिसर में उपस्थित सभी लोग दौड़ते हुए आये और आपके चरणों में नत मस्तक हुए । कुछ लोग आपके दाएँ या बाएँ और अन्य लोग पीछे-पीछे चले जा रहे थे । बाबा कहते जा रहे थे, "**आज हम सेन्ट्रल जेल से रिहा हो रहे हैं ।**" प्रेमपूर्ण मुद्रा में कही गयी बाबा की यह सार गर्भित बात उस समय केवल हास्य रूप में ग्रहण की गयी । पहले जब कभी बाबा किसी स्थान को छोड़ कर जाते तो उनका व्यवहार अपने परिकरों के

प्रति ऐसा उदासीन हो जाता था कि वे उनकी ओर पीछे मुड़ कर देखते तक नहीं थे । आज आपका यह अभूतपूर्व व्यवहार स्वतः सब लोगों को उनकी ओर आकर्षित किये हुए था । जब बाबा हनुमान मन्दिर के द्वार पर पहुँचे तो आप कुछ क्षण हाथ जोड़े भाव पूर्ण मुद्रा में खड़े रहे । यह दूसरी बार इस प्रकार का नमन था । पहली बार आपने ऐसा नमन वर्षों पूर्व तब किया था जब हनुमान जी की स्थापना हुई थी । यहीं पर बाबा का कम्बल, जो आपका ही प्रतीक था, आपके कन्धों से ज़मीन पर गिर गया । लोगों ने तुरन्त उसे उठाया और बाबा को ओढ़ा दिया, यद्यपि वे चाहते नहीं थे । कम्बल का इस प्रकार गिरना अपने में आगामी दुःखद घटना का स्पष्ट संकेत था, पर उस विदाई के समय इस ओर किसी का ध्यान नहीं गया । इसके बाद वे लक्ष्मी–नारायण और शिव मन्दिरों के दर्शन कर थोड़ी देर वहाँ मौन खड़े रहे और इधर–उधर देखते रहे । फिर जल्दी–जल्दी कदम बढ़ाते हुए प्रवेश द्वार की ओर चल दिये । वहाँ एक भक्त ने (अन्तिम बार) आपका छाया–चित्र लिया और यहीं पर दुबारा आपका कम्बल बदन से गिर गया । भक्तों ने उसे उठा कर उन्हें ओढ़ाना चाहा पर वे इसके लिये तैयार नहीं हुए । वह कम्बल तहा कर उनकी कार में रख दिया गया ।

कार में बैठने के पूर्व बाबा ने आश्रम के भण्डारे को बन्द करने का आदेश दिया और प्रबन्धकों से दर्शनार्थ आयी हुई माइयों के घर जाने की व्यवस्था करने को कहा । अनेक भक्त उनके साथ जाने की अनुमति माँगने लगे, पर बाबा ने केवल रवि खन्ना नाम के एक युवक को, जो कि कुछ ही समय से आप की सेवा में आया था, कार में बैठने को कहा । अन्तिम यात्रा में जो थोड़ी सेवा रवि खन्ना से बन पायी इससे उसका भाग्य खुल गया । बाबा की कृपा ऐसी हुई कि उनके विदेशी भक्तों ने खन्ना जी को अमरीका में सुव्यवस्थित कर वहीं का नागरिक बनवा दिया । अस्तु, जब बाबा कार में बैठ गये तो सभी लोगों ने अन्तिम बार उनका चरण स्पर्श किया । कार चलने को थी, एक बूढ़ी महिला जिसे बाबा कचौड़ी माई नाम से सम्बोधित किया करते थे 8 किमी. दूर भवाली से पैदल चलकर समय पर वहाँ आ गयी । उसने बाबा के चरणों में अपना सिर रख दिया फिर उसे सुध ही नहीं रही । आप कुछ देर मौन बैठे रहे, फिर बोले, "माई, हम तेरी इन्तज़ार में थे ।" सम्भवतः बाबा इस बुढ़िया के लिये ही विलम्ब कर रहे थे । आप किसी को भी निराश करना नहीं चाहते थे ।

बाबा के जाते ही आश्रम की उस भीड़–भाड़ और चहल–पहल में एक अभूतपूर्व निस्तब्धता और उदासी छा गयी । सभी लोग एकाएक एकान्त

प्रिय और मौन हो उठे । कुछ लोग अपने घरों को जाने की तैयारी करने लगे, अन्य अपने कक्षों में या इधर–उधर जा बैठे । केवल यज्ञशाला में मज़दूर कार्य कर रहे थे और दो बीमार अपने तख़्तों पर सोये पड़े थे ।

जिस समय बाबा की अनुमति पाकर इन्दर जी ने कार चलायी उस समय मौन आकाश में बृहत् इन्द्रधनुष अपने समस्त रंगों में देदीप्यमान हो रहा था । कार से काठगोदाम रेल के स्टेशन पहुँचने तक भी, लगभग डेढ़ घण्टे यह यथावत् बना रहा । बाबा की दृष्टि इस पर थी और वे भगवान् की इस सुन्दर कृति की प्रशंसा करते जा रहे थे । इन्दर जी को ध्यान दिला रहे थे कि मनुष्य ऐसी सुन्दर रचना नहीं कर सकता। रास्ते में बाबा आपसे भाग्य और भविष्य की अनिश्चितता पर भी बातें करते रहे । गाड़ी चलाते हुए इन्दर जी की दृष्टि एकाएक बगल में बैठे बाबा के चरणों पर पड़ी । आप मन ही मन घबरा उठे यह देख कर कि उनके चरण लगभग डेढ़ फुट लम्बे हो चले थे। पर काठगोदाम पहुँचने पर वे पूर्ववत् हो गये । कार से उतर कर बाबा रवि खन्ना के साथ आगरा फोर्ट एक्सप्रेस गाड़ी में बैठ गये । इन्दर जी ने उनके साथ जाने की अनुमति माँगी, पर बाबा ने उन्हें प्रेम से समझाते हुए कहा, "तूने आज यज्ञशाला की छत तैयार करानी है, हम तुझे जल्द बुलायेंगे ।" जिस प्रकार राम जी को छोड़ कर सुमन्त अयोध्या लौटे, उसी प्रकार इन्दर जी अपनी खाली कार में सूर्यास्त के बाद अंधेरे में आश्रम पहुँचे ।

उस रात बाबा गाड़ी में रवि खन्ना से बातें करते रहे । श्री माँ ने उनके लिये थर्मस में दूध और बाल्टी में गंगा जल रखा था । खन्ना ने बाबा को दूध पिलाना चाहा, पर उन्होंने उसकी बात नहीं मानी । वह बहुत देर तक आग्रह करता रहा, अन्त में उन्हें मजबूर करने की गरज़ से थर्मस का दूध गिलास में पलटने लगा । बाबा उसकी ओर देख कर मुस्करा रहे थे । गिलास में पलटने पर उसने देखा कि दूध खराब हो गया था और पीने योग्य नहीं रहा । तभी वह समझ पाया कि बाबा क्यों मना कर रहे थे । बाबा ने थर्मस बाहर फेंक देने को कहा, पर खन्ना को ऐसा करना उचित न जान पड़ा । बाबा ने अपने हाथ से थर्मस गाड़ी से बाहर फेंक दिया और खन्ना से बोले, "मोह नहीं करना चाहिये ।" इसके बाद आप उससे विभिन्न लोगों और विषयों के सम्बन्ध में बातें करते रहे और अन्त में अपने बारे में कहने लगे, "हम धर्म प्रचार और प्रसार के लिये आये हैं ।"

दूसरे दिन 10 सितम्बर के प्रातःकाल आगरा स्टेशन में बाबा ने पुल से होकर जाना पसन्द नहीं किया । वे रेल की पटरियों को कूदते–फाँदते पार कर गये और स्टेशन के बाहर चले आये । यहाँ से आप छः बजे श्री जगमोहन शर्मा के घर पहुँचे । शर्मा जी ने बाबा का स्वागत किया । आप बताते हैं कि बाबा के पास उसी रात काठगोदाम वापस जाने वाली गाड़ी के टिकट थे । बाबा ने यहाँ नाई बुलवाकर अपनी दाढ़ी और बाल साफ़ करवा लिये । आपने केवल रामदाने का भोग स्वीकार किया और बोले, **"अब अन्न, फल आदि में शक्ति कम हो गयी है । रामदाना बनाओ, वही खायेंगे ।"** आप शर्मा जी से कहने लगे, **"अब बुरा समय आ रहा है, बड़े–बड़े मकानों में मत रहना । बहुत लूट, मार–काट होगी, छोटे मकान में रहना ।"** इसी प्रकार वे दिन भर बातें करते रहे । शर्मा जी के पिताजी से आप बोले, **"जब शरीर बूढ़ा हो जाता है तो काम का नहीं रह जाता, उसका मोह छोड़ देना चाहिए ।"** बाबा बड़ी प्रसन्न मुद्रा में थे । उनका रुख देखकर शर्मा जी की सास ने उनसे पूछा, "क्या आप वही बाबा हैं जिन्होंने एक बार रेल रोक दी थी ?" इस पर बाबा बहुत हँसे और कहने लगे, **"क्या तुझे भी यह बात मालूम हो गयी ।"**

यहाँ से कुछ समय के लिये बाबा अपने भक्त डाक्टर माथुर, दिल के रोग के विशेषज्ञ के पास गये । आपने उन्हें दिल की शिकायत बतायी और जाँच करने को कहा । डाक्टर ने तुरन्त आपका कार्डियोग्राम लिया और आपको स्वस्थ पाया । उसने कहा कि बुढ़ापे में खून कुछ गाढ़ा हो जाता है जिससे इस अवस्था में घबराहट पैदा हो जाती है । उसने एक दवा की गोलियाँ बहुत मात्रा में भेंट की और कहा कि समय–समय पर इसके सेवन से घबराहट नहीं होने पायेगी । बाबा अपनी बात में अड़े रहे और बोले, **"तू ग़लत कहता है हमें दिल की बीमारी है ।"** "मेरे पास अमेरिका से आयी यह नयी मशीन है यह झूठ नहीं बताती ।" **"तेरी मशीन भगवान् है जो झूठी नहीं हो सकती ?"** आपने डाक्टर की दी हुई दवा को रख लिया पर उसका सेवन नहीं किया । आपका डाक्टर के पास जाकर अपनी जाँच कराने का अभिप्राय इसके अतिरिक्त और क्या हो सकता है कि आप कैंची में भक्तों की धारणा को कि आपको दिल की बीमारी है, निर्मूल दर्शाना चाहते हों । बाबा को क्या कष्ट था और उन्होंने किस की बीमारी अपने ऊपर ले रखी थी कुछ भी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता । ऐसा अनुमान किया जा सकता है कि बाबा ने उन दो

बीमारों का कष्ट अपहरण किया होगा, जिनके लिये वे कैंची में अपने को चिन्तित दर्शा रहे थे और जिन्हें आश्रम में अचेत छोड़कर वे आगरा चले आये थे, क्योंकि इसके एक दिन बाद ही वे लोग स्वस्थ हो आश्रम छोड़ कर चले गये ।

आगरा से बाबा ने धर्म नारायण जी को भी साथ ले लिया । आप तीनों रात्रि में समय से स्टेशन पहुँच गये । टिकट बाबा के पास पहले से ही थे । आप लोग आगरा से काठगोदाम जाने वाली गाड़ी के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठ गये । मथुरा स्टेशन आने पर बाबा के आदेश से काठगोदाम की यात्रा स्थगित कर दी गयी और सभी वहाँ उतर गये । प्लेटफार्म पर उपस्थित कुछ व्यक्तियों ने उनके चरण स्पर्श किये । इसके कुछ देर बाद बाबा ने अपनी आँखें बन्द कर दीं और उनके शरीर से पसीना छूटने लगा। आपने पानी माँगा और उसे पीकर वृन्दावन चलने का आदेश दिया । टैक्सी के प्रबन्ध होने तक आप अचेत हो गये । अतः आपको सीधे वृन्दावन आश्रम न ले जाकर वहाँ रामकिशन मिशन अस्पताल ले जाया गया । इस अचेतावस्था में आपकी नाक में आक्सीजन की नली लगा दी गयी और रक्तचाप के यन्त्र द्वारा रक्तचाप लेने का विधान किया जा रहा था । बाबा ने एक अंगुली से नाक पर लगी नली को हटा दिया और रक्तचाप के यन्त्र को हटाते हुए वे मन्द स्वर में बोले, **"यह सब बेकार है ।"** इसके तुरन्त बाद ही आपने तीन बार धीरे-धीरे 'जगदीश' नाम का उच्चारण किया फिर पूर्ववत् शान्त हो गये । उस समय ग्यारह तारीख आरम्भ हो चुकी थी और रात्रि के एक बज कर पन्द्रह मिनट का समय था । इस प्रकार अनन्त चतुर्दशी के पर्व में बाबा ने हृदय गति रोककर अपने को अनन्त में विलीन कर दिया ।

यहाँ से महाराज का शरीर आश्रम ले जाया गया । जो भी थोड़े लोग उस रात्रि में वहाँ उपस्थित थे वे आगे के कार्यक्रम को निर्धारित कर उसे कार्यान्वित करने में लगे थे । केवल आश्रम का चौकीदार त्रिलोक सिंह अकेला भीतर बाबा के शान्त शरीर के पास उनका हाथ अपने हाथ में लिये आँखें बन्द किये बैठा था । उसे उनकी नब्ज़ बराबर चलती प्रतीत हो रही थी, पर जब वह आँख खोलकर देखने लगता तो वह शान्त हो जाती थी । इस प्रकार बाबा की लीला का क्रम चलता जा रहा था ।

अपने भक्तों को दुःख न पहुँचाने की भावना से बाबा ने दूर जाकर वृन्दावन के एकान्त अस्पताल में उस रात्रि को जब सम्पूर्ण भारत निद्रा की गोद में बेखबर पड़ा था, अपनी नर लीला समाप्त दर्शा दी । इस से उनके कार्यों की इतिश्री नहीं हुई । सम्पूर्ण विश्व में अपने भक्तों तक इस सूचना

के पहुँचाने का उत्तरदायित्व भी आप पर था जिसे आपने स्वतः किया । श्री बनवारी लाल पाठक, पण्डाजी, आपके वृन्दावन के पुराने भक्त हैं । आप उस रात्रि में अस्पताल उस समय पहुँचे, जब बाबा को वहाँ से आश्रम ले जाने की तैयारी हो रही थी । आश्रम आने पर आगरा, दिल्ली, कानपुर, लखनऊ, नैनीताल आदि स्थानों में कुछ विशिष्ट लोगों को यह सूचना पहुँचाने के लिये आप से कहा गया । आपके पास कुछ लोगों के पते पहले से थे और अन्य लोगों के पते आपने आश्रम से प्राप्त कर लिये । जिन लोगों के टेलिफोन नम्बर प्राप्त हो सके उन्हें टेलिफोन द्वारा और अन्य लोगों को उनके पते से तार द्वारा सूचना भेजी । यह कार्य आप रात्रि के अन्तिम चरण में करते रहे । आप कहते हैं कि आपने यह सूचना किसी पत्रकार या आकाशवाणी से सम्बन्धित व्यक्ति को नहीं दी और न किसी ने इसके प्रकाशन हेतु आपसे इस सूचना की पुष्टि ही चाही । यह महान् आश्चर्य की बात है कि दिल्ली आकाशवाणी ने उस दिन प्रातःकाल के प्रसारण में यह समाचार देश के कोने–कोने में पहुँचा दिया । ऐसा देखा जाता है कि किसी भी विशिष्ट व्यक्ति के निधन का समाचार प्रसारित करते समय उस व्यक्ति की जीवनी में प्रकाश डालना आकाशवाणी का दस्तूर होता है । बाबा के सम्बन्ध में आकाशवाणी ने केवल एक सूक्ष्मतम वाक्य में उनके अवसान का समाचार प्रसारित किया और उनकी जीवनी के बारे में कुछ भी नहीं कहा । बाबा ने अपने जीवन–काल में अपनी अलौकिक शक्ति से किसी भी प्रचार के माध्यम द्वारा अपना प्रचार नहीं होने दिया था, इस कारण उनके भक्तों को भी उनकी विशेष जानकारी नहीं थी । सम्भवतः इस जानकारी के न होने से ही आकाशवाणी उनकी जीवनी पर कुछ कहने में असमर्थ रही हो । पर प्रश्न होता है कि ऐसी स्थिति में इस प्रसारण की आवश्यकता उन्हें क्योंकर प्रतीत हुई ? निःसन्देह यह कार्य बाबा का ही था जो अपने गुणों का गान कराये बिना अपने भक्तों तक यह सूचना पहुँचाना चाहते थे, जिसके लिये उन्होंने अपने ढंग से आकाशवाणी का उपयोग किया ।

अस्तु, यह प्रसारण उस दिन प्रातः, सन्ध्या और रात्रि के समाचारों के साथ बराबर किया गया । इलाहाबाद में मुझे इस सूचना की प्राप्ति, बाबा की कृपा से, सायंकाल के प्रसारण से हुई । एक विशेष संयोग घटित हुआ । मेरी माँ जो बीमार पड़ी थी उसके मन में रेडियो सुनने की इच्छा जाग उठी । मैंने उसके आदेश पर रेडियो खोला ही था, एकाएक बाबा के निधन से सम्बन्धित एक सूक्ष्मतम् वाक्य सुनने में आया और तुरन्त बाद ही दूसरा समाचार प्रसारित होने लगा । हम माँ–बेटे दोनों स्तब्ध रह गये । रेडियो

तत्काल बन्द कर दिया गया । मैंने इलाहाबाद में अन्य भक्तों तक यह दुःखद सूचना पहुँचाई और चन्द घण्टों में ही हम लोग अपर इन्डिया एक्सप्रेस गाड़ी से वृन्दावन को चल दिये । जिसे भी यह सूचना जब और जहाँ मिली वह अवाक् रह गया और यह न जान पाया कि बाबा को हुआ क्या ?

दूसरे दिन प्रातःकाल से ही लोग बिना कुछ अन्न–जल ग्रहण किये सभी दिशाओं से वृन्दावन को चल पड़े । पास के नगरों और क्षेत्रों से लोग सुबह ही आ पहुँचे, पर दूर–दूर से दिन भर आते रहे । कैंची आश्रम से श्री माँ और श्री जीवन्ती माँ, रमेश जी के साथ एक टैक्सी में चले और अन्य लोग बस और टैक्सियों में आते ही रहे । काँग्रेस कमेटी के तत्कालीन अध्यक्ष डा. शंकर दयाल शर्मा समेत अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति एवं उच्च पदाधिकारी वहाँ श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिये सबेरे से ही उपस्थित थे । विदेशी भक्त जो भारत में थे, आते गये, पर जो बाहर थे लाचारी से छटपटाते रहे । बाबा ने सभी भक्तों को येन–केन प्रकारेण सूचना पहुँचवा दी । अमरीका से तीस भक्तों की एक टोली विमान द्वारा विलम्ब से पहुँची । ये लोग कैंची आश्रम की बारहवीं और वृन्दावन की तेरहवीं में भाग ले पाये ।

आश्रम में बाबा के अन्तिम संस्कार के विषय में कोई निर्णय नहीं हो पा रहा था । कुछ लोग गंगा में प्रवाह के पक्ष में थे और कुछ समाधि बनाना चाहते थे । इसी समय वृन्दावन के वयोवृद्ध माननीय बाबा लीला नन्द ठाकुर जी का, जो पग्गल बाबा के नाम से प्रख्यात थे, आगमन हुआ । यह महाराज की प्रेरणा शक्ति का ही चमत्कार रहा कि पग्गल बाबा ने उनका दाह संस्कार करने का आदेश दिया और वह भी आश्रम के भीतर यज्ञशाला में । उनका यह आदेश महाराज द्वारा आठ सितम्बर की रात्रि को सुनाई गई पहेली से सम्बन्धित था । इस यज्ञशाला का निर्माण श्री बाबा की आज्ञा से उसी वर्ष अप्रैल की नवरात्रों में हुआ था । नवरात्रों में किये गये यज्ञ के उपरान्त समस्त भस्म यमुना में प्रवाहित कर दी गयी और इस यज्ञ कुण्ड के चारों ओर पत्थरों की मुडेर बना कर उसे ऐसे सुरक्षित रखा गया था, जैसे इसी कार्य के लिये रखा गया हो ।

अस्तु, श्री माँ दिन के दो बजे तक भी नहीं आ पायीं । लोग भूखे–प्यासे थे । अधिकांश लोग इस कार्य में अधिक विलम्ब करना नहीं चाहते थे, पर कुछ लोग इस पक्ष में थे कि श्री माँ के आगमन की प्रतीक्षा की जाय । जब बहुमत का बोलबाला हो गया तो बाबा का पार्थिव शरीर बाहर आश्रम के प्रांगण में लाया गया । उसी समय एकाएक भीषण तूफान आ गया । ऐसी प्रलयकारी वर्षा होने लगी कि कार में बैठे व्यक्ति को दस

पग दूर कुछ भी नहीं दिखायी दिया । काली–काली घटाओं से अंधेरा छा गया था । आने–जाने वाली गाड़ियों का प्रकाश बिल्कुल मन्द एवं धुंधला हो गया । फलतः अर्थी को प्रांगण के दूसरी ओर बरामदे में रखना पड़ा । इस प्रकार यह कार्य स्वतः रुक गया । इस तूफान के रुकने के पूर्व ही श्री माँ का आगमन हुआ । उनके आने पर शोक का पारावार न रहा । सभी इसमें निमग्न हो गये ।

इस तूफान के शान्त होते ही चन्दन की लकड़ियाँ एकत्रित की गयीं और यज्ञ कुण्ड पर एक विशाल चिता का निर्माण किया गया । बाबा चिरनिद्रा में थे । अब भी उनके अंग प्रत्यंग कोमल बने थे, वे आसानी से हिलाये–डुलाये और मोड़े जा सकते थे । उनके हाथ–पैर की अंगुलियों में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं दिखायी दे रहा था । उनके मुख–मण्डल की आभा यथावत् बनी थी । शाम के छः बजने जा रहे थे बाबा के शरीर को कार के ऊपर एक अति सुन्दर विमान में रख कर रोशनी और बाजे–गाजे के साथ वृन्दावन में घुमाया गया । अपार जनसमुदाय उनके विमान के पीछे चलता जा रहा था, सभी मन्दिरों एवं घरों से उन पर पुष्प–वृष्टि होती रही । पग–पग पर विमान को रोक कर लोग उनकी आरती करते रहे । इस यात्रा में बहुत समय लग गया । रात्रि के लगभग नौ बजे विमान आश्रम लाया गया । यहाँ भक्त समुदाय और बाबा के निजी परिवार ने मिलकर, इस वियोगजन्य दुःखद वातावरण में बड़े श्रद्धा और प्रेम से बाबा के पार्थिव शरीर को चितार्पण किया ।

यद्यपि बाबा शरीर में नहीं थे पर उनकी लीलाओं का क्रम चलता जा रहा था । जिस स्थान पर चिता बनायी गयी थी उसके बिलकुल पास ही एक अशोक वृक्ष था जिसकी ऊँचाई चिता से लगभग दो फुट अधिक थी । चिता के ऊपर थोड़ी ही ऊँचाई से एक बिजली का तार भी प्रांगण के आर–पार गया था । चिता प्रातःकाल तीन बजे तक प्रज्वलित रही, उसमें ऊँची–ऊँची लपटें उठती रहीं, पर इस से न तो अशोक वृक्ष का एक पत्ता ही मुर्झाया और न बिजली के तार के रबर को ही कोई क्षति पहुँची । अनेक भक्तों को इस दृश्य में अनेक प्रकार के अनुभव हुए । श्री जगमोहन शर्मा को चिता की ज्वाला में राम लक्ष्मण के बीच बाबा के दर्शन हुए जिनकी परिक्रमा हनुमान जी कर रहे थे ।

उचित समय में चिताग्नि के शान्त हो जाने पर बाबा के अस्थि–पुष्प एवं भस्म को उपस्थित सभी लोगों ने अनेक कलशों में एकत्रित किया । ये कलश हरिद्वार, प्रयाग आदि विभिन्न तीर्थों में ले जाकर वहाँ पवित्र नदियों में

विधिवत् प्रवाहित किये गये । कुछ कलश बाबा के आश्रमों को भी भेजे गये, जहाँ इनके ऊपर उनके विग्रह की स्थापना होती गयी । केहर सिंह जी को भी अस्थि–पुष्प बीनते देखकर कानपुर के श्री देवकामता दीक्षित को बाबा की कहीं एक बात याद आयी । उन्होंने बताया कि एक बार बाबा बोल उठे थे, **"केहर सिंह मेरी अस्थि बीनेगा ।"** उस समय उनकी बात अरुचिकर एवं निरर्थक प्रतीत हुई पर आज उसे सत्य घटित होते देख कर उन्हें आश्चर्य होने लगा ।

बाबा की तेरहवीं सामूहिक रूप से वृन्दावन आश्रम में एक वृहत् भण्डारे के रूप में मनायी गयी और इसके पूर्व कैंची आश्रम में पर्वतीय प्रथा के अनुसार उनकी बारहवीं मनायी जा चुकी थी । जो भक्तगण बाबा को विदाई देने के लिये उपस्थित नहीं हो पाये थे, वे इन बारहवीं और तेरहवीं में उनका प्रसाद पा कर कृतार्थ हुए ।

महाप्रयाण के बाद

अपनी अन्तिम यात्रा के पूर्व महाराज की वार्ताएँ यह बोध कराती हैं कि वे मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे, अमरकण्टक और नर्मदा के किनारे रहेंगे जहाँ उनसे मिलना सम्भव नहीं हो पायेगा । जनदृष्टि से अपने को ओझल करने की आपकी यह लीला अत्यन्त रहस्यमय है जिसकी यथार्थता का बोध उनके द्वारा सुनायी गयी 8 सितम्बर 73 की कहानी से होता है जिसका उल्लेख पीछे किया जा चुका है । यद्यपि बाबा के अन्तिम संस्कार के बारे में बड़ा मतभेद रहा, पर अन्ततोगत्वा उनका चिता दाह संस्कार ही हुआ, वह भी उनके परिवार और परिकरों द्वारा जो उक्त कहानी के संदर्भ में है । बाबा अपने लीला काल में विभिन्न स्थानों पर एक साथ प्रकट होते रहे । इसमें आश्चर्य नहीं कि वे अपने इन रूपों में किसी एक को समाप्त भी दर्शा सकते थे । बाबा की उक्त कहानी का उत्तरार्ध, चिता में उनके शरीर के जलाये जाने के बाद भी उनके अस्तित्व को पुष्ट करता है । आप अब भी उसी रूप में या अन्य किसी रूप में अथवा स्वप्न में पूर्ववत् दर्शन देते रहते हैं और अपने कृपापूर्ण कार्यों से जाने जाते हैं ।

कहा जाता है कि बाबा नीब करौरी के निधन की घटना को अवास्तविक बताते हुए इस युग के महान् सन्त एवं योगीराज देवरहा बाबा ने अपने भक्तों से कहा, "ऐसा खिलवाड़ वे अनेक बार कर चुके हैं । वे जा कहाँ सकते हैं ? वे जीवित हैं और सदा जीवित रहेंगे ।"

(380) भगवान सिंह के प्राणों की रक्षा

भगवान सिंह बचपन से ही अनाथ था । बाबा ने उसको अपनी सेवा में लेकर उस पर अनेक उपकार किये । उसका यज्ञोपवीत संस्कार भी उन्होंने अपने कर कमलों से किया और उसे वृन्दावन हनुमान मन्दिर का पुजारी बना दिया । उस अनपढ़ ठाकुर के मुँह से गीता का पाठ सुनवा कर उन्होंने उसकी प्रतिष्ठा भी बना दी थी । अन्त में उन्होंने उसे श्री संकटमोचन हनुमान मन्दिर, लखनऊ का पुजारी बना कर सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करने का अवसर भी प्रदान किया । एकाएक बाबा के महाप्रयाण की सूचना पाकर उसे अपने बीते दिनों की याद आने लगी और वह फिर अपने को अनाथ समझने लगा । वह अत्यन्त दुःखी हो गया । गुरु, पिता, माता सब कुछ उसके बाबा ही थे । जब से बाबा का अस्थि-कलश वहाँ पहुँचाया गया, वह भी अपना जीवन समाप्त करने की सोचने लगा । उसने मन ही मन इसके लिये योजना भी तैयार कर ली और अगले दिन हनुमान-सेतु से गोमती में गिर कर अपने प्राणों का अन्त करने का निश्चय भी उसने कर लिया था । अन्तर्यामी बाबा का करुणामय स्वभाव यह सब देख नहीं सकता था । वे भगवान सिंह के संकल्प की दृढ़ता को भी देख रहे थे । अतः दूसरे दिन प्रातःकाल जब वह हनुमान की अर्चना से निवृत्त हुआ तो लम्बे बदन और गेरुए वस्त्र धारण किए हुए एक साधु ने मन्दिर में प्रवेश किया । उन्होंने भगवान सिंह को बाबा की दी हुई कण्ठमाला की ओर संकेत करते हुए पूछा, **"यह माला तुम्हें कहाँ से मिली ?"** उसने बाबा नीब करौरी का नाम बताया । फिर अपने अस्थि-कलश को इंगित करते हुए उन्होंने पूछा, **"इसमें क्या है ?"** भगवान सिंह के यह बताने पर कि इसमें बाबा की अस्थियाँ हैं, वे तुरन्त बोल उठे, **"झूठ, बिलकुल झूठ । हम बाबा नीब करौरी को अच्छी तरह जानते हैं । हम सीधे अमर कण्टक से आ रहे हैं । हमें बाबा वहाँ टाँट लपेटे दिखायी दिये।"** हमने उनसे पूछा, **"महाराज, आपने अपना कम्बल कहाँ छोड़ दिया ?"** वे बोले, "हम उसे कैंची में छोड़ आये हैं, अब हम एकान्त में भजन करना चाहते हैं ।" यद्यपि भगवान सिंह महाराज को अलौकिक शक्ति सम्पन्न मानता था, पर वह यह नहीं समझ सकता था कि अस्थि-कलश के आने के बाद भी वे जीवित हो सकते हैं । साधु की आँखों देखी बातें सुनकर उसका संकल्प कुछ डगमगाया । वह साधु फिर महाराज के लहजे में बोला, **"हम नहाना चाहते हैं, हमारे लिये साबुन और पानी रख दो ।"** भगवान सिंह

एक बड़ी साबुन की टिकिया खरीद कर ले आया और पानी रख कर उसने नहाने का आग्रह किया । साधु ने उससे नहलाने के लिये कहा । ज्योंही वह उन्हें साबुन लगाने के लिये उद्यत् हुआ उन्होंने मना कर दिया और वे बोले, **"साधु साबुन नहीं लगाते ।"** उस साधु की ये उल्टी-सीधी बातें उसे महाराज की सी लगीं । वह बोला "आपके कहने से ही मैं साबुन खरीद कर लाया, अब मैं इसे अवश्य लगाऊँगा ।" जब भगवान सिंह उन्हें नहला रहा था उसने देखा कि वह साधु वही सब बच्चों की सी हरकतें कर रहा था जिनका अनुभव उसे महाराज को नहलाने में हुआ करता था । बाबा से मेल खाती इन सब बातों से वह चकित ही नहीं, भ्रमित भी हो गया। साधु को भोजन कराकर विदा करते समय भगवान सिंह ने पूछा, "आप कहाँ ठहरे हैं ? आप के दर्शन कब हो सकते हैं ?" साधु ने उत्तर दिया, **"हम पास में अमीनाबाद के हनुमान मन्दिर में पड़े रहते हैं । वहाँ का पुजारी हमारी बड़ी सेवा करता है । तुम कभी भी फुरसत में आकर मिल सकते हो ।"**

उसी दिन दोपहर बाद मन्दिर बन्द कर भगवान सिंह अपनी शंका समाधान हेतु उस साधु से फिर मिलने अमीनाबाद के हनुमान मन्दिर पहुँचा । उसे वह साधु मन्दिर में कहीं भी नहीं दिखायी दिया । उसने वहाँ के पुजारी से उस साधु का हुलिया बताते हुए पूछा कि वे कहाँ हैं ? पुजारी ने बताया कि ऐसा कोई साधु वहाँ नहीं रहता । उसके यह कहने पर कि वह साधु बता रहा था कि आप उसकी बहुत सेवा करते हैं, पुजारी ने उत्तर दिया कि यह सब झूठ है । भगवान सिंह की आँखें खुल गयीं, उसे विश्वास हो गया कि इस साधु के रूप में बाबा नीब करौरी ही प्रकट हुए थे, जो उसके संकल्प को खत्म कराने के लिये उसके पास आये थे ।

(381) वायदे का निभाना

घटना कैंची आश्रम की है । एक भक्त से एक दिन किसी वार्ता के सिलसिले में महाराज ने कहा था कि हम तेरे लिए पशुपति नाथ से एक रुद्राक्ष माला, नर्मदा से एक शिवलिंग और दक्षिणावर्त शंख लाकर देंगे । बाबा के कथन मात्र से वे अपने को कृतार्थ समझ रहे थे और उन्होंने कभी भी उनको इन वस्तुओं की याद नहीं दिलायी । 11 सितम्बर 1973 को बाबा ने अपना शरीर शान्त कर दिया अब उनसे इन वस्तुओं की प्राप्ति की कोई सम्भावना नहीं हो सकती थी । एक दिन अकस्मात् एक युवा साधु इन

वस्तुओं को लाकर आपको दे गया । उसने यही कहा कि ये वस्तुएँ आपके लिये भिजवायी गयी हैं । आपकी यही धारणा है कि महाराज ही उस साधु के रूप में अपना वायदा निभाने आये थे ।

यह घटना निधन के बाद भी बाबा के अस्तित्व को पुष्ट करती है । इसका उल्लेख मिरेकिल ऑफ लव के पृ.सं. 400 में भी हुआ है ।

(382) मौन स्वीकृति

श्री ब्रज किशोर टण्डन की हल्द्वानी में कपड़े और मिठाई की दुकानें हैं । सन् 1973 में एक दिन कैंची में आप बाबा के दरबार में बैठे थे । बाबा बिना किसी प्रसंग के स्वतः आप से बोले, "तू अपने लड़के का विवाह कर दे ।" टण्डन जी ने उत्तर दिया, "यदि आप इस विवाह में आने का वायदा करें तो मैं तैयार हूँ।" बाबा ने मुस्कराते हुए मौन स्वीकृति दे दी । इसी वर्ष सितम्बर में बाबा ने अपना शरीर त्याग दिया, इस कारण उनकी मौन स्वीकृति का अब कोई महत्व नहीं समझा गया ।

दो तीन वर्ष बाद टण्डन जी ने अपनी सुविधा से अपने लड़के का विवाह किया । लड़की वालों के घर जब बारात का स्वागत हुआ तो लड़के को पण्डाल के मध्य में एक सुन्दर सोफे पर बिठाया गया । उसके साथ उस सोफे में उसका मित्र भी बैठा था, इधर-उधर और पीछे बच्चे व महिलाएँ भी वहाँ उपस्थित थीं । इतने में कहीं से आकर कम्बल-ओढ़े एक बूढ़ा उस लड़के के मित्र की बगल में आ बैठा । इन लोगों के साथ उस बूढ़े की उपस्थिति सब को खल रही थी, पर उससे कुछ कह सकने का साहस वहाँ पर किसी को न था । लड़की वाले यह सोच रहे थे कि यह कोई लड़के के घर का वयोवृद्ध है और लड़के वालों का भी मिलता-जुलता अनुमान था कि यह वृद्ध लड़की वालों से सम्बन्धित होगा । जब लड़के और उसके इधर-उधर उपस्थित बच्चे और महिलाओं की फोटो ली जा चुकी तो वह वृद्ध उठा और धीरे-धीरे टण्डन जी की ओर आया । वहाँ उस समय उपस्थित टण्डन जी के मित्र और महाराज जी के परम भक्त जीवन चन्द्र जी ने उनको सुझाया कि इस शुभ अवसर पर इस वृद्ध को कुछ रुपये देने चाहिये । उनके ऐसा कहने पर टण्डन जी ने एक पाँच का नोट उसकी ओर बढ़ाया । वृद्ध ने उसे स्वीकार नहीं किया और वह बोला, "इसे उस भिखारी को (जो पास में ही खड़ा था) दे दे । इन दोनों का ध्यान उस भिखारी की ओर गया, इतने में वह वृद्ध वहाँ से बाहर निकल गया ।

एकाएक इन दोनों को आभास होने लगा कि ये बाबा नीब करौरी ही थे जो अपनी मौन स्वीकृति को इस रूप में पूरा कर गये । बाबा ने अपने इस आदेश से अपनी उपस्थिति का प्रमाण दिया और प्रेरणा से अपना परिचय भी । उसी समय सर्वत्र उनकी खोज की गयी, पर वे अन्तर्धान हो चुके थे, दिखायी नहीं दिये । जब बाद में उपर्युक्त फोटो बन कर आयी तो लोगों की रुचि को ध्यान में रखते हुए बाबा ने ऐसी माया रची कि फोटो में उनका अक्ष नहीं आया पर जिस कम्बल को वे ओढ़े थे उसका पूरा आधा भाग उस सोफे पर टंगा दिखायी दिया । यह फोटो टण्डन जी के पास सुरक्षित है ।

(383) बुढ़िया के रूप में

चैत्र 1980 की नवरात्रियों के बाद श्री माँ के साथ अनेक भक्त हल्द्वानी से नीब करौरी ग्राम पहुँचे । माँ के आदेश से वहाँ दूसरे दिन बारह बजे हनुमत् जयन्ती पर हनुमान जी को विधिवत् चोला चढ़ाने का कार्यक्रम निश्चित किया गया । यह कार्य श्री विनोद चन्द्र जोशी, मैनेजर कैंची आश्रम और पण्डित किशोरी रमण जी, वृन्दावन के प्रख्यात कथा वाचक, को सौंपा गया । दूसरे दिन प्रातःकाल से ही मन्दिर की सफ़ाई और सजावट का कार्य चल रहा था । पण्डित जी बारह बजे के कुछ ही समय पूर्व मन्दिर में पधारे । आप कार्यकर्ताओं को यह बताना भूल गये थे कि पूजा के लिये आपको किन-किन वस्तुओं की आवश्यकता होगी, इस कारण वहाँ सभी आवश्यक सामग्रियों का अभाव था । पण्डित जी अपनी भूल पर दुःखी थे, परन्तु अब कोई उपचार न था । इतना समय नहीं था कि उनका किसी प्रकार संग्रह हो सके । उस गाँव की दुकानों में वे उपलब्ध नहीं थीं और बाहर आदमी भेज कर उनका मँगवाना सम्भव नहीं था । अतः सामग्री के अभाव में आपने मन्त्रोचार द्वारा मानसिक पूजा कराने का विचार किया।

विनोद जी ने हनुमान जी के सम्मुख पूजा हेतु आसन ग्रहण किया और मन्दिर के द्वार के बाहर बैठकर पण्डित जी पूजा आरम्भ करने जा रहे थे । अन्य सभी दर्शनार्थी मन्दिर के आगे बैठे थे और मैं (लेखक) पण्डित जी के सामने मन्दिर के द्वार के पास ही बैठा था । इतने में एक भारी शरीर और गम्भीर स्वभाव की ग्रामीण बुढ़िया एक गठरी साथ में लिये, सब दर्शनार्थियों के मध्य से होकर आगे चली आयी और मेरे और पण्डित जी के

बीच में बैठ गयी । वह बिना किसी से कुछ बोले अपनी गठरी में से एक-एक कर सभी पूजा की सामग्री श्री फल, रक्त वस्त्र, कलेवा, कच्चा दूध आदि निकाल कर विनोद जी को देने लगी । हम सभी लोग मुग्ध हो गये और चकित दृष्टि से उस वृद्धा को देखते ही रह गये । यह समझ में नहीं आ रहा था कि यह बुढ़िया कौन है ? कहाँ से आयी है ? इस पिछड़े भू-भाग में उसे कर्मकाण्ड की इतनी अच्छी जानकारी कैसे है ? वह बिना बुलाये पूजा के आरम्भ करते समय ही कैसे वहाँ उपस्थित हो गयी ? अस्तु, विधिवत् पूजन के बाद आरती हुई, तदुपरान्त हनुमान चालीसा के पाठ का क्रम चलता रहा । बुढ़िया अपनी गठरी खाली कर चुकी थी, वह उठकर बाहर आ गयी । हल्द्वानी से माँ के साथ आयीं कुछ महिलाओं ने उससे भण्डारे में प्रसाद पाने का आग्रह किया । उसने बताया कि वह प्रसाद साथ में लायी है और उसने वहाँ उपस्थित सभी महिलाओं को पूरी और सब्जी का प्रसाद अपनी गठरी से निकाल कर दिया । उसने यह भी बताया कि वह सात कोस दूर से आ रही है । एकाएक उस भीड़ में वह किधर ग़ायब हो गयी कोई जान नहीं पाया । नीब करौरी ग्राम के लोगों का कहना है कि यह बुढ़िया कहीं बाहर से आयी थी । चारों ओर दूर-दूर के गाँवों में भी वह कभी नहीं देखी गयी ।

(384) साधु के रूप में

बाबा के अनन्य भक्त श्री देव कामता दीक्षित वृन्दावन आश्रम ट्रस्ट के सदस्य हैं । एक बार वृन्दावन में ट्रस्ट की मीटिंग होने जा रही थी, इसके लिये आपको पहले दिन से ही वहाँ चला जाना चाहिये था । आप कुछ कारणों से उदासीन रहे और वहाँ गये नहीं । मीटिंग के दिन प्रातःकाल कानपुर में आपके घर के बाहर लॉन में एक साधु आकर बैठ गया । आपने साधु से पूछा कि वे कहाँ से आ रहे हैं? उसने उत्तर दिया, "वृन्दावन से ।" दीक्षित जी बोले, "आज हमें भी वृन्दावन गुरु आश्रम के ट्रस्ट की मीटिंग में उपस्थित होना था, पर हम गये नहीं ।" इस पर वह साधु बोला, "गुरु के काम में तो अवश्य जाना चाहिये ।" आप उस साधु के सेवार्थ कुछ लेने भीतर गये, इतने में वह ग़ायब हो गया । आपके मन में उस समय यही भाव आया कि उस साधु के रूप में बाबा नीब करौरी आपको उचित आदेश देने स्वतः आये थे । आपने चारों ओर उनकी बहुत खोज करायी पर वे कहीं भी दिखायी नहीं दिये । आप तुरन्त साढ़े नौ बजे की गाड़ी से चलकर शाम को ट्रस्ट की मीटिंग में वृन्दावन पहुँचे । इस मीटिंग के बाद

आप को अनुभव हुआ कि उस दिन वहाँ जो निर्णय लिये गये उसमें आपकी उपस्थिति बहुत ज़रुरी थी ।

(385) साधारण व्यक्ति के रूप में

एक बार श्री देव कामता दीक्षित, लखनऊ से अपने घर कानपुर मिनी–बस में जाने का विचार कर रहे थे । बस के पास आकर आपकी इच्छा आगे की सीट में बैठने की हुई, पर उसमें पहले से ही एक व्यक्ति बैठा था । आप उसके पीछे की सीट में बैठ गये । वह आदमी आपकी ओर देख कर मुस्करा रहा था । आप उसकी मुस्कराहट का कारण नहीं समझ पाये और यही सोचते रहे कि सम्भव है कि वह आगे बैठने की आपकी इच्छा को ताड़ गया । जब गाड़ी चलने के लिये तैयार हुई तो वह व्यक्ति सीट छोड़ कर चला गया । आप तुरन्त उसकी जगह पर जा बैठे और आपको ऐसा प्रतीत होने लगा कि जैसे वह आप ही के लिये सीट सुरक्षित करने वहाँ बैठा था । रास्ते में एक मोड़ पर यह गाड़ी दुर्घटना ग्रस्त हुई । चार पाँच यात्री मरे और कई घायल हुए । दीक्षित जी के सिर पर एक साधारण सी चोट आयी जो अस्पताल की प्राथमिक चिकित्सा से ही ठीक हो गयी । जिस सीट पर आप पहले बैठे थे उसमें बैठे व्यक्ति की तो जान ही चली गयी । गाड़ी के चलते समय उतर कर चले जाने वाला वह व्यक्ति कौन हो सकता है, जिसके कारण आप सुरक्षित रह पाये ? आपका विश्वास है कि बाबा ने इस रूप में प्रकट होकर आपकी रक्षा की ।

(386) चालक के रूप में

शिकागो निवासी महाराज का एक अमरीकी भक्त सन् 1971 में भारत आया था और नैनीताल के एक होटल में ठहरा । उसने लगातार ग्यारह दिन कैंची आश्रम में आकर घण्टों बाबा के दर्शन किये थे । नेपाल से अपने व्यापार के सिलसिले में वह मार्च 1982 में पुनः भारत आया था । दिल्ली में अपने देशवासियों से उसे ज्ञात हुआ कि बाबा का एक आश्रम वृन्दावन में भी है । वह वृन्दावन चला आया और वहाँ उसे श्री माँ के दर्शन हुए । उसने माँ को अँग्रेजी में अपना एक अनुभव सुनाया जिसका माँ के लिये अनुवाद केहर सिंह जी ने किया । वह सन् 1976 की घटना सुनाने लगा जब वह लौट कर घर जा रहा था । रात्रि में उसका विमान शिकागो के हवाई अड्डे पर उतरा । बाहर आकर जब वह एक 'कैब' में बैठ गया तो उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि बगल में खड़ी 'कैब' का

चालक डील–डौल और आकृति में बाबा से बिलकुल मिलता था । वह कुछ क्षण स्तब्ध हो उन्हें देखता ही रह गया, इतने में वह 'कैब' चल दी । उसने अपने 'कैब–मैन' से उस कैब का पीछा करने को कहा । उसने जितनी तेज़ी से हो सकता था पीछा किया, पर वे अपनी गाड़ी और भी अधिक तेज़ी से भगाते चले गये । फलतः दो मोड़ों के बाद उनकी गाड़ी ओझल हो गयी । अन्त में उसने कहा कि मैं इसे बाबा की कृपा समझता हूँ कि ब्रह्म लीन होने के बाद भी आपने मुझे इस प्रकार दर्शन दे कृतार्थ किया ।

(387) ताँगे वाले के रूप में

एक दिन सन् 1982 में एक सिख उच्च सैनिक अधिकारी सपत्नीक रानीखेत जा रहे थे, रास्ते में दर्शनार्थ आप कैंची आश्रम में आये । आप आश्रम की स्वच्छता, सुन्दरता और शान्ति से प्रभावित हो मुझसे (लेखक से) पूछने लगे कि यहाँ का इन्तज़ाम कौन करता है ? मैंने उन्हें बताया कि इसका भार श्री माँ पर है । आपने माँ के दर्शन की इच्छा व्यक्त की और मैं उन्हें उनके पास ले गया । माँ से बातें करते आपकी दृष्टि दीवारों पर टगे बाबा के छाया–चित्रों पर पड़ी और आप चकित दृष्टि से बराबर उन्हें देखते ही रहे। अन्त में आपने माँ से पूछा, "ये फोटो किसकी हैं ?" जब आपको बताया गया कि ये बाबा नीब करौरी की हैं जिन्होंने सन् 1973 में महा समाधि ले ली, तो आप बेलिहाज़ बोल उठे, "आप कैसी बात कर रही हैं। मैं जालन्धर से आ रहा हूँ, वहाँ मैंने इन्हें ताँगा चलाते देखा । तब मेरा ध्यान इनकी ओर विशेष रूप से आकृष्ट हुआ था ।" हो सकता है, बाबा ने इन्हें अपने आश्रम में भेजने के पूर्व अपने दर्शन से कृतार्थ किया हो ।

(388) मज़दूर के रूप में

कैंची 15 जून 1983, प्रतिष्ठा दिवस समारोह की तैयारियाँ हो रही थीं। आश्रम में चहल–पहल बढ़ती जा रही थी । नित्य देश के कोने–कोने से और विदेशों से भक्तजन इस समारोह में सम्मिलित होने के लिये आ रहे थे । इस अवसर के तीन दिन पूर्व एक मज़दूर आया उसने आश्रम के व्यवस्थापक से निवेदन किया कि वह आश्रम् द्वारा निर्धारित वेतन पर सेवा करना चाहता है । उस समय आश्रम को सेवकों की बहुत आवश्यकता थी, व्यवस्थापक ने उसकी तत्काल नियुक्ति कर दी और उसे भण्डारे में बर्तन साफ़ करने के कार्य में लगाया । वह रात–दिन घोर परिश्रम करता रहा ।

उसने अपने कार्य से सभी लोगों को प्रभावित किया । वह अकेला व्यक्ति दो तीन आदमियों के बराबर काम करता और आराम की परवाह नहीं करता था । वह सब से बहुत प्रेम से मिलता और सब का आदर करता था । 15 जून को प्रतिष्ठा दिवस समारोह धूमधाम से सम्पन्न हुआ । लगभग बीस हज़ार आदमियों ने भण्डारे में प्रसाद पाया । इसके बाद लोगों का वापस जाना आरम्भ हुआ और दो–चार दिन में अधिकांश आगन्तुक चले गये । एक दिन अकस्मात् प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व अंधेरे में ही वह मज़दूर भी चला गया । आश्रम से बिस्तर आदि जो भी वस्तुएँ उसे उपयोग के लिये दी गयी थीं उन्हें वह यथावत् छोड़ गया । उसने अपने अथक परिश्रम की मज़दूरी भी लेनी नहीं चाही । वह व्यक्ति कौन था ? लोगों की धारणा यही रही कि आश्रम की कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए बाबा स्वयं मज़दूर के रूप में प्रकट हुए और काम पूरा कर चले गये ।

(389) रूप भ्रम

संकटमोचन हनुमान मन्दिर, लखनऊ में 26 जनवरी 83 के दिन प्रतिष्ठा दिवस समारोह मनाया जा रहा था । सायंकाल लगभग तीन बजे श्रीमती शान्ता पाण्डे भावपूर्वक वही गुरु स्तुति गा रही थीं जिसे वे बहुधा महाराज को सुनाया करती थीं । उनके पास बैठे थे उनके पति श्री ललित मोहन पाण्डे, कैंची आश्रम के मैनेजर श्री विनोद चन्द्र जोशी, मन्दिर ट्रस्ट के सचिव श्री भूषण चन्द्र जोशी, अवकाशप्राप्त आइ.जी. कारागार, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री केहर सिंह और अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति जो इस अवसर पर वहाँ उपस्थित थे। इतने में उस मन्दिर में एक सुगठित शरीर के लम्बे साधु ने प्रवेश किया। उन्होंने पहले हनुमान विग्रह के आगे नमन किया और पुजारी के सम्मुख कुछ 'नोट' निकाल कर भेंट पात्र में डाले । इसके बाद आप शान्ता जी के पास जा कर बैठ गये और प्रेम से भजन सुनते रहे । आपके दर्शन मात्र से शान्ता जी विभोर हो उठीं और आँखें बन्द कर भजन सुनाती रहीं । आप बताती हैं कि आपको मन में भय होने लगा था कि कहीं भावावेश में आप बेहोश न हो जाँय । उन्हें ऐसी अनुभूति हो रही थी कि इस साधु के वेश में बाबा नीब करौरी स्वयं पधारे हैं । उपस्थित लोगों में आपके पतिदेव, केहर सिंह जी, भूषण जी एवं विनोद जी को भी बाबा की उपस्थिति का आभास होने लगा, पर साधु की भिन्न आकृति देख कर सभी भ्रमित रहे । भजन समाप्त होते ही साधु उठ कर चला गया । केहर सिंह जी कुछ उनसे कहने आगे बढ़े भी थे, पर संकोचवश कुछ कह नहीं पाये । बाबा तुरन्त

एक रिक्शा में बैठ कर चला गया । साधु के जाने के बाद उनके विषय में चर्चा होने लगी । तब ज्ञात हुआ कि उपर्युक्त चार व्यक्तियों के अतिरिक्त वहाँ उपस्थित किसी को भी वे दिखायी नहीं दिये । यहाँ तक कि पुजारी ने भी उन्हें नहीं देखा ।

इस घटना के कुछ महीने बाद एक दिन वृन्दावन आश्रम के परिक्रमा मार्ग में केहर सिंह जी को इस व्यक्ति के पुनः दर्शन हुए । इस बार वह अपनी मौज में एक खुली घोड़ागाड़ी चला रहा था, पर उसकी वेशभूषा साधुओं की सी नहीं, एक साधारण मनुष्य की थी । इस बार सिंह साहब और भी अधिक भ्रमित हुए । बाबा को पहचान पाना मानवी बुद्धि से परे है, वे किसी भी रूप और किसी भी स्थिति में अपने को प्रकट कर सकते हैं । केवल उनकी कृपा से ही वे जाने जाते हैं ।

(390) अनेक बार दर्शन

स्व. विजय चौधरी जी उत्तर प्रदेश आबकारी महकमे में रहे । आपका चर्चलेन इलाहाबाद में मकान है । आपकी पत्नी साधु सन्तों में विशेष आस्था रखती थीं और बाबा की भक्त रहीं । बाबा आपके मकान में कई बार गये भी और श्री माँ उनके मकान में रह चुकी हैं ।

एक बार भक्तों के बीच महाराज की चर्चा हो रही थी । चौधरी जी बोले कि मेरी पत्नी को महाप्रयाण के बाद भी बाबा के प्रत्यक्ष दर्शन अनेक बार होते रहे । एक दिन आप गंगा स्नान कर घर को आ रही थीं आपने बाँध पर बाबा को अकेले रिक्शा पर बैठे त्रिवेणी की ओर जाते देखा । इस दृश्य से उन्हें महान् आश्चर्य हुआ । उस भीड़ में उनके रिक्शा को रुकवाना या उसका पीछा करना सम्भव न था । घर आकर आपने यह घटना मुझे सुनायी, पर मैंने उनकी बात को कुछ महत्व नहीं दिया, केवल इतना कहा कि गलतफ़हमी भी हो सकती है ।

इस घटना के कई महीने बाद हम गर्मियों में नैनीताल से लौटकर लखनऊ अपने एक सम्बन्धी के घर पर ठहरे थे । वहाँ से एक दिन किसी से मिलने हम कानपुर गये । वहाँ बाजार में कुछ सामान खरीदते समय मेरी पत्नी ने एक सफ़ेद कार में चालक की बगल में बैठे, कम्बल ओढ़े बाबा को जाते देखा । आपने इंगित कर यह दृश्य मुझे भी दिखाया, पर भलीभाँति देखने का मुझे पूरा अवसर नहीं मिला, मैं जल्दी में इतना ही देख पाया कि एक बड़े डील–डौल का व्यक्ति कम्बल ओढ़े चालक की बगल में बैठा था । कार आगे चली गयी । इस बार भी मैं पत्नी की बात को न मान सका कि वे बाबा ही थे ।

इसके बाद उसी दिन शाम को हम लखनऊ वापस जाने के लिऐ रिक्शा से कानपुर के बस स्टेशन को जा रहे थे । मेरी पत्नी को उसी सड़क में विपरीत दिशा से आते हुए एक रिक्शा में बाबा अकेले बैठे दिखायी दिये । आपने इस ओर मेरा ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, "अब मत कहना, बाबा नहीं हैं ।" मैंने जो बाबा को पास से देखा, मैं अवाक् रह गया । मेरी बुद्धि चकरा गयी । मैं न उनका रिक्शा रुकवा पाया, न अपना ही और उन्हें नमन करना तो मैं भूल ही गया ।

(391) रामनाथ जी को दर्शन

श्री रामनाथ बड़े सरल एवं साधु स्वभाव के वृद्ध हैं । आप अलीगढ़ में रहते हैं और हनुमान जी के उपासक हैं । महाराज के आप पुराने भक्त हैं और उनकी उपस्थिति में आप वर्ष में दो चार बार उनके दर्शन करने आश्रम आया करते थे । बाबा के शरीर शान्त होने के कुछ वर्ष उपरान्त एक दिन जब आप अपने घर में हनुमान चालीसा का पाठ कर रहे थे, आप का मन पाठ में स्थिर न हो पाया । आप उठ कर पास के हनुमान मन्दिर में चले गये और वहाँ मन लगाने का प्रयास करने लगे । वहाँ भी आपको सफलता नहीं मिली । आप घर लौट आये और कुछ आवश्यक वस्तुओं को साथ लेकर, घर के लोगों के मना करने पर भी, वृन्दावन आश्रम आ गये । यहाँ रह कर दो दिन आपने सानन्द हनुमान मन्दिर में पाठ किया । तीसरे दिन एकाएक आप में कैंची दर्शन की लालसा जाग उठी । आप कैंची आश्रम चले आये, यहाँ गुरु-पूर्णिमा का महोत्सव मनाया जा रहा था । सायंकाल चार बजे का समय था, आप मन्दिर परिसर में बाबा के तख़्त के पास हनुमान मन्दिर की ओर मुँह किये बैठ गये । एकाएक आपको मन्दिर की छत पर कम्बल ओढ़े बाबा दिखायी दिये । इस दृश्य ने आपको अवाक् कर दिया । आपको अपनी आँखों पर सन्देह होने लगा । कुछ देर के लिये आपने अपना सिर नीचे कर लिया पर फिर उस ओर देखने पर वही दृश्य सामने आ गया । अब आपने अपनी आँखों को हथेलियों से मला और पुनः उस ओर देखा तब आपको बाबा सफेद चादर ओढ़े दिखायी दिये। इस दृश्य से आप अत्यधिक चकरा गये । आपने फिर आँखों को मसला और कुछ देर इधर-उधर देखते रहे । इसके बाद फिर जब बाबा की ओर उन्मुख हुए तो वे पुनः कम्बल में दिखायी देने लगे । आप उठ खड़े हुए और आगे न बढ़ कर कुछ पग पीछे मुड़ कर चले आये । कुछ समय बाद जब आप पलटकर बाबा को देखने लगे तो वे अदृश्य हो गये ।

इस प्रकार आधा घण्टा से ऊपर बाबा ने आपको प्रत्यक्ष दर्शन दिये। सम्भवतः इसी हेतु उनकी प्रेरणा आपको यहाँ ले आयी हो।

(392) दर्शन देकर रक्षा

घटना अप्रैल 1982 की है। पुलिस अधीक्षक, बुलन्दशहर श्री जी. एल. साह सपत्नीक अपनी कार में अल्मोड़ा गये हुए थे। एक दिन सायंकाल आप वहाँ से नैनीताल को रवाना हुए। अल्मोड़ा से कुछ दूर बाहर आने पर ढाल पर आपकी गाड़ी का ब्रेक खराब हो गया। इससे गाड़ी को संभालना कठिन हो गया। हर मोड़ पर आपको भय होता रहा कि ऊपर को आने वाली किसी भी गाड़ी से टक्कर हो सकती है। आप स्वयं त्रसित थे और अपनी पत्नी को यह स्थिति जान-बूझ कर नहीं बताना चाहते थे। आपकी पत्नी बगल में बैठी आपसे बातें करती जा रही थीं, पर आप पर उनकी बातों का कोई असर नहीं हो रहा था। आपकी बेरुख़ी का कारण वे नहीं समझ पा रही थीं और आपकी गाड़ी को बेतुके ढंग से चलती देख हैरान थीं। जब काकड़ीघाट की तलहटी में बाबा के मन्दिर के सामने की सड़क से आपकी गाड़ी जा रही थी, आपकी पत्नी ने एक बाबा को वहीं सड़क के किनारे खड़ा देखा। वे अपना वरद् हस्त उठाये आप की ओर देख रहे थे। यहाँ पर सड़क में ढाल भी कम थी और अपनी बढ़ती हुई घबराहट के कारण साह जी ने मन ही मन यह निश्चय कर लिया था कि यहाँ पर गाड़ी को एक चट्टान से टकरा कर रोक दिया जाय। आप जैसे ही यह कार्य करने को उद्यत् हुए आपकी गाड़ी का एक्सिल टूट गया और गाड़ी स्वतः रुक गयी। आप पास की एक दुकान वाले की देख-रेख में गाड़ी छोड़ कर उस रात एक ट्रक से नैनीताल चले गये। जिस परिवार में आप वहाँ ठहरे, आपकी पत्नी को महाराज का एक छाया-चित्र दिखायी दिया। इसमें महाराज की आकृति और वेशभूषा उस बाबा से मिलती-जुलती थी जिसे चन्द घन्टे पूर्व आपने काकड़ीघाट में देखा था। पूछताछ करने पर आपको ज्ञात हुआ कि वह चित्र अलौकिक शक्ति सम्पन्न बाबा नीब करौरी का था जिन्होंने नौ वर्ष पूर्व शरीर छोड़ दिया था और वह काकड़ीघाट का मन्दिर उन्हीं ने बनवाया था। आपको अत्यधिक आश्चर्य यह जानकर हुआ कि उन्हें न जानते हुए भी आप लोगों को बाबा ने दर्शन देकर उस संकटापन्न स्थिति में आपकी रक्षा की। बाबा की इस उदारता से आपकी निष्ठा उन पर बढ़ी और 15 जून 1983 के दिन कैंची आश्रम के प्रतिष्ठा दिवस समारोह के अवसर पर प्रथम बार कैंची आकर आपने यह अनुभव सुनाया।

(393) केहर सिंह जी को दर्शन

श्री कैंची हनुमान मन्दिर के आगे सन् 1982 की गर्मियों में अयोध्या के एक बाबा नित्य नियमपूर्वक अपरान्ह में रामायण का सरस पाठ और उसकी व्याख्या किया करते थे । दिन के दो बजे का समय था, केहर सिंह जी रामायण सुनने के लिये उद्यत् हो रहे थे । आप अपने कमरे में अकेले बैठे चाय पी रहे थे । एकाएक आपको बाबा सुपरिचित रूप में कम्बल ओढ़े, धोती पहने, कमर में हाथ रखे, इधर–उधर निरीक्षण करते धीरे–धीरे सामने से अपनी ओर आते दिखायी दिये । बाबा लगभग दो सौ गज चल कर आपके कमरे तक आये और दरवाज़े की ओट में अदृश्य हो गये । आपने बाहर आकर उन्हें खोजा पर फिर वे दिखायी नहीं दिये ।

(394) मूर्ति बोल उठी

उपर्युक्त घटना के कुछ दिन बाद, एक दिन सायंकाल चार बजे केहर सिंह जी आश्रम में आयोजित रामायण सुन कर महाराज के मन्दिर के पास से अपने कमरे को वापस जा रहे थे । आपको मन्दिर के भीतर से आती हुई बाबा की सुपरिचित वाणी सुनायी दी । वे आपको नाम लेकर बुला रहे थे । आप तुरन्त मन्दिर की ओर लपके । आपको बाबा के कुछ अस्पष्ट शब्द सुनायी दिये । विग्रह के सम्मुख उपस्थित होने पर आपको कोई नवीनता नहीं दिखायी दी ।

(395) एक बालक का अनुभव

सन् 1985 अनन्त चतुर्दशी पर महाराज के निर्वाण दिवस के उपलक्ष में वृन्दावन में भण्डारा हो रहा था । श्री राधेश्याम सर्राफ फिरोजाबाद, अपने भाई और नाती के साथ वहाँ उपस्थित थे । आप वर्षों से पैरों में 'सिरोसिस' की बीमारी से बहुत कष्ट झेल रहे थे । इसके उपचार में आप बहुत धन व्यय कर चुके थे और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में इलाज कराने के बाद आप निराश हो गये थे ।

वृन्दावन आश्रम में बाबा की कुटिया में उनके तख़्त पर उनका एक विशाल छाया–चित्र रखा रहता है । राधेश्याम जी का नाती अकेले इस कमरे में चला गया और वहाँ एकान्त में उस चित्र के आगे हाथ जोड़ कर बाबा

से विनीत प्रार्थना करने लगा कि वे उसके दादा को कष्ट से मुक्ति दिला दें । बाबा अपने छाया-चित्रों में तत्वतः विद्यमान रहते ही हैं, बालक की प्रार्थना से प्रसन्न हो गये । उस बालक ने देखा कि उस छाया-चित्र से एक प्रकाश पुंज बाहर आया जिसने तुरन्त उनके हाथ का आकार ग्रहण कर लिया और उसके सिर को स्पर्श किया । उसी समय उसे उस छाया-चित्र से स्पष्ट शब्दों में यह सुनायी दिया, **"जा, सब ठीक हो जायेगा ।"** वह बालक इस घटना से भयभीत हो गया । वह भागता हुआ राधेश्याम जी के पास पहुँचा और उसने सारा वृत्तान्त उन्हें सुनाया । इस घटना के लगभग दस महीनों में शनैः शनैः अपने कष्ट से राधेश्याम जी छुटकारा पा गये ।

(396) एक युवक को दर्शन

अगस्त 1982 में एक दिन दोपहर में स्व. किशोरी लाल साह जी के सुपुत्र अपनी माँ के साथ अल्मोड़ा से नैनीताल जा रहे थे । रास्ते में वे कैंची के मन्दिरों के दर्शन करने चले आये । दोनों ने एक साथ पद्मासन में बैठे बाबा के विग्रह के दर्शन किये । आपकी माता जी, मूर्ति को नमन कर श्री माँ से मिलने भीतर चली गयीं पर आप वहीं खड़े रहे । आपको मूर्ति नहीं, साक्षात् बाबा दिखायी दे रहे थे और वह भी बैठे नहीं, खड़े । आपने बाबा की यह मूर्ति पहले भी देखी थी और ऐसी विलक्षणताओं पर आप का विश्वास भी न था । आप इस दृश्य से स्तब्ध रह गये । अपने भ्रम को मिटाने के लिये आप कुछ समय मन्दिर परिसर में घूमते रहे इसके बाद भी आप को विग्रह में साक्षात् उसी रूप के दर्शन हुए । आप वहाँ अधिक खड़े नहीं रह सके और सीधे उस कमरे में गये जहाँ आप की माता जी श्री माँ से बातें कर रही थीं । वहाँ जाकर आप ज़मीन पर लेट गये । जब माँ ने आपकी अस्वस्थता का कारण पूछा तो आपने यह अनुभव सुनाया।

(397) स्पष्ट आदेश और प्रत्यक्ष दर्शन

श्रीमती रेवा साह को बाबा के महाप्रयाण के चार वर्ष बाद कैंची में उनके दर्शन हुए । आपकी उनपर आस्था बचपन से ही थी । एक दिन अपने घर नैनीताल में आप अकेली थीं, एकाएक आपके कान में बाबा के शब्द गूंजने लगे, **"कैंची क्यों नहीं जाती ? जा, कैंची जा ।"** दूसरे दिन सबेरे जागने पर फिर वही वाणी सुनायी दी, **"जा, कैंची जा ।**

हनुमान चालीसा पढ़ ।" आप कैंची चली आयीं और बाबा के विग्रह के आगे आसन लगा कर आपने विनय चालीसा और हनुमान चालीसा का पाठ किया । पाठ की समाप्ति पर ज्योंही आपने विग्रह के आगे नमन कर सिर उठाया तो आपको विग्रह में बाबा के साक्षात् दर्शन होने लगे । इस दृश्य को देख कर आप स्तम्भित रह गयीं । इसके बाद आप को भय होने लगा, आप अपना आसन छोड़ मन्दिर के बाहर चली गयीं । बाहर आश्रम में जहाँ–जहाँ भी आपकी दृष्टि बाबा के छाया–चित्रों में पड़ी, आपको सर्वत्र बाबा सशरीर दिखायी देने लगे ।

(398) बुझा दीप जल उठा

घटना 16 जून 1976 की है । बाबा के एक अनन्य भक्त श्री होतृ दत्त शर्मा, अलीगढ़ निवासी अपने गुरु भाई विश्वम्भर के साथ बाबा की प्राण प्रतिष्ठित प्रतिमा के पूजन के लिये पूजा सामग्री लेकर नौ बजे कैंची मन्दिर में उपस्थित हुए । उन्होंने विधिवत् धूप, दीप, नैवेद्य आदि से श्री चरणों का पूजन आरम्भ किया । वहाँ बैठे सभी भक्तजन भाव विभोर हो रहे थे । बाबा ने सब का मन इस प्रकार आकर्षित कर लिया था कि सभी शरीर से निस्तब्ध और निश्चेष्ट हो गये थे और उनकी आँखें ऐसी हो गयी थीं जैसे सुप्तावस्था में हों । इस बीच न मालूम कब और कैसे पूजा का दीपक बुझ गया । दीप के बुझने के साथ ही होतृदत्त जी की आँखें भी खुल गयीं, और उनके मन ने पूजा को प्रभु से अस्वीकृत समझा । तुरन्त आप ने दीप जलाने के लिये दियासलाई खोली, ज्योंही वे दियासलाई की सींक रगड़ कर दीप जलाने की तैयारी कर रहे थे, उससे पहले वह बुझा हुआ दीप अपनी सहज स्थिति में प्रकाशवान हो गया । इस घटना को आपके पीछे बैठे हुए और दो सज्जनों ने भी देखा जिनकी आँखें खुली थीं । एक तो हलवाई था जिसने 15 जून 76 की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर में माल पूए बनाये थे और दूसरे थे कानपुर के श्री ईश्वर चन्द्र तिवारी । होतृदत्त जी के अशान्त मन को यह जान कर पूर्ण शान्ति मिली कि पूजा उपास्य देव को स्वीकार हुई । वे दोनों इस घटना को देख कर चकित रह गये ।

(399) हनुमान विग्रह में आँखों का सुधार

महाराज के पार्थिव शरीर के विलय होने की लीला के लगभग चार वर्ष बाद एक दिन एक कार में कुछ व्यक्ति नीब करौरी ग्राम पहुँचे ।

उन्होंने वहाँ ग्रामवासियों से बाबा द्वारा निर्मित हनुमान मन्दिर के बारे में पूछताछ की । अपना परिचय देते हुए उन्होंने बताया कि वे कलाकार हैं और बम्बई से एक साधु ने उन्हें आने जाने आदि का खर्चा देकर यहाँ हनुमान विग्रह की आँखों का सुधार करने भेजा है । गाँव वालों ने उन्हें वह मन्दिर दिखाया और वे हनुमान जी की आँखों को सुचारु बना कर चले गये । इस अज्ञात गाँव में एकान्त में पड़े इन हनुमान जी की आँखों के सुधार के लिये इतना खर्चा देकर इन कलाकारों को भेजने वाला साधु, महाराज के अतिरिक्त कौन हो सकता है ?

(400) खाद्य सामग्री में वृद्धि

बाबा के महाप्रयाण के बाद 22 सितम्बर 1973 के दिन वृन्दावन आश्रम में तेरहवीं के उपलक्ष्य में एक बृहत् भण्डारे का आयोजन हुआ । आश्रम में उपस्थित देश विदेश के लोग और वृन्दावन के आमन्त्रित लगभग डेढ़हज़ार व्यक्तियों के लिये यह प्रबन्ध किया गया, पर साढ़े तीन हज़ार से ऊपर व्यक्तियों ने प्रसाद ग्रहण किया और फिर भी अत्यधिक सामग्री बची रही । बाबा की उपस्थिति में सामग्री का इस प्रकार बढ़ना भक्तजनों का साधारण अनुभव था, पर उनके महाप्रयाण के बाद ऐसी घटना उनके अस्तित्व को पुष्ट करती है ।

(401) मानस से नोटों की वर्षा

बाबा की उपस्थिति में वृन्दावन आश्रम का कोई बैंक एकाउण्ट नहीं था । आश्रम की व्यवस्था का सम्पूर्ण भार स्वामी सेवानन्द जी के ऊपर था। आप मद्रास के हैं और उत्तरी भारत भ्रमण के लिये आये हुए थे । एक दिन वृन्दावन की परिक्रमा करते हुए आप इस मन्दिर से हो कर जा रहे थे, बाबा इन्हें भीड़ से पकड़ कर भीतर ले आये और उन्होंने इन को मन्दिर और आश्रम का कार्य सौंप दिया । आप निःस्वार्थ भाव और सच्चाई से सेवा कार्य करते रहे । आप पढ़े–लिखे नहीं थे, इस कारण आय–व्यय का कोई लेखा–जोखा नहीं रखते थे । बाबा का शरीर शान्त हो जाने पर ट्रस्ट ने आपसे आश्रम की आर्थिक स्थिति जाननी चाही । आपके पास न कुछ लेखा–जोखा था और न देने को धन राशि ही थी । आपके पास जो रुपये आते उसे वे आश्रम की सेवा में ही लगा देते थे । बाबा सदैव आपसे प्रसन्न रहे, पर ट्रस्ट के सदस्यों को आप अपने इस व्यवहार से सन्तुष्ट न

कर सके । अतः उन्होंने अपनी इच्छा व्यक्त कर दी कि वे आगे इस कार्य को नहीं करेंगे । उनके पास आश्रम की वस्तु केवल एक रामायण थी जो उन्होंने ट्रस्ट को दे दी । जब उनके द्वारा लौटायी हुई पुस्तक – राम चरितमानस के पन्ने बिना किसी प्रयोजन पलटे गये तो उन पन्नों के बीच–बीच से भारतीय रिजर्व बैंक के अनेक नोट बाहर आने लगे । इस प्रकार प्राप्त बृहत् धन राशि से बाबा की तेरहवीं मनायी गयी और शेष कई हज़ार रुपयों से वृन्दावन आश्रम का पहला बैंक एकाउण्ट खोला गया । बाबा की इस लीला से सब चकित हो गये ।

(402) असाध्य रोग से छुटकारा

सन् 1981–82 में हल्द्वानी में घी के बड़े व्यापारी श्री नन्द लाल को एक असाध्य और असह्य बीमारी ने घेर लिया । आपके सिर में बराबर दर्द बना रहता था । आपकी आँखें सुर्ख और सूजी रहतीं । आपने हल्द्वानी में अनेक उपचार किये पर कोई लाभ नहीं हुआ । अन्त में आपको दिल्ली जाना पड़ा । वहाँ भी कई उपचार किये गये पर स्थिति यथावत् बनी रही । बीमारी का कारण डाक्टर लोग खोज नहीं पाये । सभी प्रकार के 'टेस्ट' किये गये, यहाँ तक कि रीढ़ की हड्डी से कुछ तरल पदार्थ निकाल कर उसकी भी परीक्षा की गयी । आपको कोई भी जो दवा बताता आप उसका सेवन करते जा रहे थे । आपकी पत्नी आपके कष्टों से दुःखी थीं । एक दिन अकेली बैठी वे इसी चिन्ता में रो रही थीं, एकाएक आपको ध्यान में बाबा के दर्शन वृन्दावन आश्रम के हनुमान विग्रह के पास हुए । वे अपनी (तर्जनी) अंगुली उठा कर हनुमान जी से कह रहे थे, **"नन्द लाल को अच्छा करोगे या नहीं ?"** बाबा के इस क्षणिक दर्शन से आपका चित्त आनन्दित हो उठा और आपको विश्वास हो गया कि आपके पतिदेव स्वस्थ हो जायेंगे ।

आपने उसी समय नन्द लाल जी से उनके स्वास्थ्य की स्थिति पूछी । उन्होंने कहा कि उनके सिर का दर्द उतर कर गर्दन में आ गया । धीरे–धीरे वह दर्द नीचे खिसकता गया और एक दो दिन में ही आप उस रोग से पूर्ण रूप से मुक्त हो गये ।

(403) टी.बी. गायब

उपर्युक्त घटना से कुछ वर्ष पूर्व भी, आप एक बार बीमार हुए थे । हल्द्वानी के एक डाक्टर ने पूरी जाँच–पड़ताल के बाद आपको टी. बी.

बताया। भले ही आप वृद्ध हो चले हैं, पर आपका शरीर सदा से हृष्ट-पुष्ट रहा । आपको डाक्टर के निदान पर विश्वास नहीं हुआ । उसके बताये इन्जेक्शन और दवा के सेवन के पूर्व, आपकी पत्नी ने राय दी कि उनको भवाली टी.बी. सेनिटोरियम में भी दिखा लेना चाहिये । आप अपनी कार में पत्नी के साथ भवाली गये । वहाँ के डाक्टरों ने पूरी देख-भाल के बाद हल्द्वानी के डाक्टर के निदान और उपचार को सही बताया और साथ में कुछ और औषधियाँ भी सेवन के लिये लिख दीं ।

भवाली से लौटते समय आपकी पत्नी ने पास में कैंची दर्शन की इच्छा व्यक्त की । बाबा के शरीर के शान्त हो जाने के बाद नन्द लाल जी कभी कैंची नहीं आये थे, उनकी धारणा यही रही कि बाबा अब नहीं रहे । जब आप कैंची पहुँचे तो श्री माँ ने आपका स्वागत किया और राधा कुटी में बाबा के तख़्त के पास आप लोगों को बैठाया । आप दोनों ने वहाँ बाबा के छाया-चित्र को नमन किया । आप लोगों को बाबा की सुपरिचित वाणी स्पष्ट सुनायी दी, वे कह रहे थे, **"कैंची क्यों नहीं आता ? आया कर ।"** जब आपने अपना यह अनुभव माँ को सुनाया तो उन्होंने बाबा के आदेश का स्पष्टीकरण करते हुए आपसे कहा कि आप चिन्ता न करें, आप शीघ्र स्वस्थ हो जायेंगे । आपने कैंची आना छोड़ दिया था, इस कारण बाबा को यह लीला करनी पड़ी ।

जब आपकी बीमारी का समाचार आपकी पत्नी के भाई को दिल्ली में प्राप्त हुआ तो वे आपका अच्छा इलाज कराने के लिये आपको दिल्ली ले गये । वहाँ उन्होंने आपको एक नामी विशेषज्ञ को दिखाया और हल्द्वानी और भवाली सेनिटोरियम के डाक्टरों की रिपोर्टें भी दिखायीं । विशेषज्ञ ने इन रिपोर्टों को ग़लत बताया, इन्जेक्शन लगवाने की मनाही कर दी और उनकी बतायी सभी दवाइयाँ रद्द कर दीं । उसने इन्हें सस्ते दामों की सर्दी जुकाम की पेटेन्ट दवाइयों की कुछ टिकियाँ लिख दीं और उन्हें भी केवल तीन दिन सेवन करने को कहा । इस छोटे से इलाज से आप पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गये । बाबा अपने भक्तों के योग क्षेम के वहन में अब भी सक्रिय दिखायी देते हैं ।

(404) सारे परिवार की जान बचायी

दिल्ली से एक संभ्रान्त व्यक्ति अपनी दो कारों में सारे परिवार के साथ नैनीताल भ्रमण के लिये आये थे । आप यहाँ एक होटल में रहे और कुछ दिन इधर-उधर सर्वत्र घूमने के बाद दिल्ली वापस जाना चाहते थे ।

19 कि.मी. दूर कैंची मन्दिर एवं आश्रम की ख्याति से प्रभावित हो आप दिल्ली न जाकर 6 जून 1982 को अपनी कारों में कैंची आये । उस समय प्रवेश द्वार पर ट्रक से उतारी गयी लकड़ियों का ढेर लगा था और आश्रमवासी उन्हें कन्धों पर लाद कर भीतर ले जा रहे थे । आप सब लोग भी सेवा भाव से प्रेरित हो लकड़ियों को लिये आश्रम में आये । आपने सभी मन्दिरों के दर्शन किये और भण्डारे में प्रसाद पाया । आपने श्री माँ के दर्शन किये और उन्हीं से बाबा के बारे में जानकारी प्राप्त की । आप बाबा की लीलाओं को सुन कर अत्यधिक प्रभावित हुए । माँ ने उन्हें बाबा का छाया–चित्र देते हुए कहा कि वे उसे सदा अपने पास रखें । इससे उन्हें विपत्तियों का सामना करने में सहायता मिलेगी । आप मन्दिरों के पुनः दर्शन कर नैनीताल वापस चले गये ।

नैनीताल पहुँचने पर बच्चों की इच्छा पूर्ति के लिये आप सब लोग वहाँ दो नावों में सवार हो गये । नावें आधी झील तक भी नहीं पहुँच पायी थीं, एकाएक भयंकर तूफान आ गया जिससे पर्वतों पर दूर–दूर तक पेड़ टूट कर गिरने लगे । नावों के खेने वाले भी बच्चे ही थे, वे भयभीत हो गये और उनके हाथों से पतवारें भी झील में गिर गयीं । आप अत्यधिक घबरा उठे, पर उस आपतकाल में आपको एकाएक बाबा की अलौकिक शक्तियों का स्मरण हो आया । आपने माँ से प्राप्त बाबा की 'फोटो' को निकाल कर अपने हाथ में ले लिया और बड़े आर्तभाव से चीखते हुए आप उनसे जीवन रक्षा की प्रार्थना करने लगे । इसके अतिरिक्त और कोई उपचार भी न था । बाबा ने तुरन्त ऐसी लीला रची कि तूफान उसी क्षण शान्त हो गया और बिना पतवारों की आपकी नावें किनारे की ओर ऐसी भागीं जैसे स्टीम बोट जा रही हो । आप लोग किनारे पर उतर कर भागते हुए अपनी कारों में जा बैठे । इसके बाद फिर आँधी चल पड़ी और बड़े–बड़े ओले भी गिरने लगे । कुछ समय बाद जब वायु मण्डल शान्त हुआ तो आप अपने होटल आ सके । दूसरे दिन दिल्ली वापस न जाकर आप फिर कैंची आश्रम आये और वहाँ बाबा के विग्रह के आगे अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए आपने अपना यह अनुभव आश्रमवासियों को सुनाया ।

(405) अप्रत्यक्ष होते हुए भी प्रत्यक्ष

सन् 1979 में घुटनों में वात हो जाने से मैं (लेखक) बहुत कष्ट का अनुभव कर रहा था । मुझे सपत्नीक मेरठ से कैंची आश्रम जाना था । बस की सीटों की सीमित जगह में पैर उठाकर बैठा नहीं जा सकता । ऐसी

स्थिति में पैरों को नीचे लटकाये दस घन्टों की यात्रा करने का साहस मैं नहीं कर पा रहा था । चालक के पीछे तीन सीटों वाली बर्थ में, पैर को फैलाने और मोड़ने की सुविधा तो होती है, पर बस स्टेशन की भीड़ में उसमें कब्जा कर पाना सम्भव न था । मेरी समस्या का कोई हल नहीं था, पर मेरे पुत्र का यह विश्वास था कि बाबा कोई उचित सुविधा अवश्य प्रदान करेंगे । वह लड़का हमें बस स्टेशन पहुँचाने साथ चला, पर रास्ते में ही हमें हल्द्वानी जाने वाली बस मिल गयी । संकेत मात्र से चालक ने बस रोक दी, इससे भरोसा हुआ कि गाड़ी में जगह मिल जायेगी । गाड़ी में प्रवेश करते ही हमें यह देख कर आश्चर्य हुआ कि चालक के पीछे वाली बर्थ ऐसी खाली थी जैसे वह हमारे लिये आरक्षित की गयी हो । हम लोग बाबा की कृपा का अनुभव करते हुए उस पर आराम से बैठ गये । गाड़ी की अन्य सभी सीटों में लोग बैठे थे । मैं समझ नहीं पाया कि उपस्थित यात्रियों में किसी ने भी आगे की इन सीटों पर बैठने का प्रयास क्यों नहीं किया । मुझे अत्यधिक आश्चर्य इस बात पर हुआ कि हर स्टेशन पर लोग चढ़ते उतरते जा रहे थे और जगह की कमी के कारण लोग खड़े–खड़े भी यात्रा कर रहे थे, पर कोई भी व्यक्ति मेरे बर्थ की तीसरी रिक्त सीट पर बैठने की चेष्टा भी नहीं कर रहा था । मैं अपने कष्ट से लाचार था, किसी से उस सीट पर बैठने का आग्रह नहीं कर पा रहा था ।

बाबा के लीलाकाल में बहुधा ऐसा देखने में आता था कि कहीं वे कुछ लोगों को दिखायी देते और अन्य को नहीं । इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि भले ही इस यात्रा में हम उन्हें नहीं देख पाये पर अन्य यात्रियों को आदि से ही वे तीन रूपों में दिखायी दिये होंगे । मुझे खेद है कि मेरे कष्ट के कारण बाबा को विभिन्न रूपों में बस में जगह घेरनी पड़ी।

(406) डा. सर्राफ को सपत्नीक दर्शन

आध्यात्मिक स्वास्थ्य केन्द्र, सोनागिरि, भोपाल के डा. एस. आर. सर्राफ और उनकी डाक्टर पत्नी को बाबा के लीलाकाल में कभी उनके दर्शन नहीं हुए और न कभी आप लोगों को नैनीताल या कैंची जाने का अवसर ही मिला । सन् 1980 में एक दिन जब आप दोनों ध्यान योग का अभ्यास कर रहे थे एकाएक आपको धोती और कम्बल में एक बड़े डील–डौल के साधु के प्रत्यक्ष दर्शन हुए, जिन्होंने आपको नैनीताल होते हुए कैंची जाने का आदेश दिया और तत्काल अन्तर्धान हो गये । कैंची, नैनीताल में एक स्थान

का नाम है, इसकी जानकारी न होने से आप बाबा की बात अच्छी तरह समझ नहीं पाये । आप नैनीताल आये और वहाँ पूछ–ताछ कर कैंची आश्रम पहुँचे । वहाँ अपने विग्रह में बाबा आपको उसी रूप में प्रत्यक्ष हुए जिस रूप में उन्होंने भोपाल में दर्शन दिये थे । उन्होंने आप से बद्रीनाथ दर्शन कर आने को कहा । आप लोग बद्रीनाथ गये और वहाँ से लौट कर आने पर जब विग्रह के आगे उपस्थित हुए तो महाराज ने आपको घर लौट जाने की आज्ञा दी । आप आश्रम में श्री माँ से मिले और आपने उन्हें यह अनुभव सुनाया ।

सन् 1981 में एक दिन पुनः आपको बाबा के प्रत्यक्ष दर्शन हुए और उन्होंने आपके अनेक प्रश्नों के उत्तर दिये । सन् 1982 में भी इसी प्रकार उनके दर्शन हुए और उस दिन भी आपके अनेक प्रश्नों के उन्होंने उत्तर दिये । सन् 1983 और 1984 में आपको दर्शन नहीं हुए । अक्टूबर 1985 में एक दिन आपके मन में यह विचार आया कि अब बाबा के दर्शन होने नहीं हैं, उसी दिन ध्यान में बाबा प्रत्यक्ष हो गये और उन्होंने आप से कैंची दर्शन कर आने को कहा । उनके इस आदेश के पालन हेतु आप दोनों अक्टूबर 1985 के अन्तिम सप्ताह में कैंची आये हुए थे तभी आपने अपने ये अनुभव लेखक को सुनाये । आपने बताया कि बाबा ने आपसे कहा कि हर त्रयोदशी को वे अपने भक्तों के घरों में जाया करते हैं ।

(407) हनुमान के दर्शन मनुष्य रूप में

घटना सन् 1984 की है । श्री आर. एस. यादव, बी. डी. ओ. दिल्ली, के चचेरे भाई अमर सिंह यादव जी अपने गुरु के साथ वृन्दावन में उनके आश्रम में रह कर साधना किया करते थे । आप कहते हैं कि एक दिन उनके गुरु देव श्री स्वामी गिरधारी लाल भक्तमाल अपनी शिष्य मण्डली को लेकर परिक्रमा मार्ग पर स्थित गोरे दाऊ के मन्दिर गये थे, वहाँ सत्संग हो रहा था । हनुमान जी के प्रसंग में एकाएक मेरे मन में विचार आया कि सभी इन्हें अमर कहते हैं, पर कोई भी यह नहीं कहता कि उसने इन्हें देखा है । मरे व्यक्ति का न दिखायी देना स्वाभाविक है पर अमर किसी को न दिखायी दे, आश्चर्य की बात है । मैंने अपना यह विचार सन्त समाज के विचारार्थ प्रस्तुत किया । मेरी शंका का जो भी समाधान किया गया मुझे सन्तोष नहीं हुआ । मेरे गुरुदेव ने गुरु भाइयों को पास में नीब करौरी बाबा के आश्रम में जाकर हनुमान विग्रह के दर्शन कर आने का आदेश दिया । उनके लौट आने पर आपने मुझे भी ऐसी आज्ञा दी ।

आश्रम के प्रवेशद्वार के सामने ही यह सुन्दर मन्दिर मुझे दिखायी दिया। उसमें हनुमान जी की मूर्ति नहीं दिखायी दी । एक मोटा आदमी धोती पहने और कम्बल ओढ़े उस कक्ष के मध्य में बाहर की ओर मुँह किये आराम से अकेला बैठा था । मैंने अनुमान लगाया कि आप ही इस मन्दिर और आश्रम के व्यवस्थापक होंगे । मूर्ति की प्रतीक्षा होगी, उसके आने पर ही स्थापना होगी ।

गोरे दाऊ से वापसी में, मैंने जो कुछ देखा था उसका वर्णन गुरु महाराज से किया । मेरे गुरु भाइयों ने आश्चर्य व्यक्त किया कि मुझे उस मन्दिर में हनुमान जी की विशाल मूर्ति नहीं दिखायी दी, पर गुरुदेव बोले, "यह हनुमान जी की कृपा है कि उनके मनुष्य रूप में तुम्हें दर्शन हुए ।"

इस घटना के कुछ वर्ष बाद मैं अपने भाई आर. एस. यादव जी के घर गया था । संयोगवश वहाँ मुझे उसी मोटे आदमी का छाया–चित्र दिखायी दिया जिसे मैंने बाबा नीब करौरी आश्रम के मन्दिर में देखा था । वही आकृति थी और वही वेश–भूषा । मैंने इस छाया–चित्र की ओर इंगित करते हुए अपने भाई से कहा कि मैंने इन्हें देखा है । उन्होंने पूछा, "कब और कहाँ ? " मैंने सन् 1984 की उपर्युक्त घटना का सविस्तार वर्णन किया । वे मेरी बात सुन कर प्रसन्न हुए और बोले, "यह चित्र बाबा नीब करौरी का है, जिन्हें लोग हनुमान का अवतार मानते हैं । इन्होंने अपना शरीर सन् 1973 में शान्त कर दिया था । यह इनकी कृपा है कि इन्होंने आपको प्रत्यक्ष दर्शन दिया । उस मन्दिर में हनुमान जी की एक विशाल मूर्ति की स्थापना सन् 1970 के आस पास हुई थी जो आपको दिखायी नहीं दी ।"

इस सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि इस प्रकार की घटनायें पूर्व में भी हुई हैं । उन्होंने अपने मित्र एवं बाबा नीब करौरी के भक्त श्री वृहस्पति देव त्रिगुणा वैद्यजी, के दो अनुभव प्रस्तुत किये । 24 सितम्बर 1973 के दिन वैद्य जी जौनापुर में स्थित बाबा के दिल्ली आश्रम में उनकी तेरहवीं का प्रसाद पाने गये हुए थे । वहाँ जब उन्होंने हनुमान विग्रह के आगे नमन कर अपना सिर उठाया तो उन्हें हनुमान मूर्ति के स्थान पर बाबा खड़े दिखायी दिये । वे इस दृश्य से बहुत देर तक स्तम्भित रह गये, अन्त में जब उन्होंने पुनः प्रणाम किया तो उन्हें पूर्ववत् हनुमान विग्रह के दर्शन हुए ।

उनका दूसरा अनुभव 1976 के बाद का था जब कैंची में एक विशाल संगमरमर के मन्दिर में पद्मासन में विराजमान बाबा नीब करौरी के विग्रह की स्थापना हो चुकी थी । वैद्य जी सन् 1980 में दिल्ली से कैंची दर्शन को गये थे । वे जितने समय वहाँ रहे उन्हें उस मन्दिर में बाबा के नहीं एक विशाल हनुमान विग्रह के दर्शन होते रहे । उनकी जानकारी में भी यह

श्री सिद्धि माँ

नहीं था कि वह बाबा का मन्दिर है । दिल्ली वापस आने पर उन्होंने संगमरमर के मन्दिर की प्रशंसा में यह बात मुझे सुनायी तो मैंने उन्हें बताया कि वह हनुमान मन्दिर नहीं बाबा का मन्दिर है, उसमें बाबा पद्मासन में विराजमान हैं । वैद्य जी को मेरी बात पर विश्वास नहीं हुआ ।

इससे अमर सिंह जी की शंका का पूरी तरह समाधान हुआ । वास्तव में हनुमान अमर हैं । बाबा नीब करौरी के रूप में दर्शन देकर उन्होंने अनेकों को कृतार्थ किया ।

(408) अदृश्य बाबा के दृश्य कार्य

"माँ ! जहाँ भी तू रहेगी, वहीं मंगल हो जायेगा", ये थे बाबा के शब्द कैंची आश्रम में अपनी अन्तिम यात्रा के पूर्व श्री सिद्धि माँ के प्रति ।

सन् 1983 जनवरी का महीना था, श्री माँ अपने साथ दस भक्तों को लेकर बाबा की तपोभूमि नीब करौरी गयीं थीं । 14 जनवरी मकर संक्रान्ति के उपलक्ष्य में फर्रुखाबाद में गंगा स्नान कर, दूसरे दिन आपने नीब करौरी में भण्डारा किया, जिसमें उस अज्ञात स्थान में लगभग बारह हज़ार लोगों ने प्रसाद पाया । यह अपने में महान् आश्चर्य था । वातावरण ऐसा मंगलमय हो गया था कि स्त्री, पुरुष अपना-अपना समुदाय बना कर कीर्तन करते रहे।

यहां वास करते हुए, माँ के मन में बाबा की जन्म भूमि ग्राम अकबरपुर के दर्शन की इच्छा ज़ाग उठी । जाड़ों की उस ठण्ड में आपने एकाएक वहाँ जाने का निर्णय ले लिया और 17 जनवरी को रेल द्वारा उन्होंने हिरनगऊ स्टेशन को प्रस्थान कर दिया । आप उस गाँव में बिना पूर्व सूचना भेजे ग्यारह भक्तों के साथ जा रही थीं, जहाँ आपको कोई जानता न था । बाबा का घर पन्द्रह वर्षों से बन्द पड़ा था, वहाँ उनके परिवार का कोई भी न था, जो आपका स्वागत करता । गाँव में होटल, दुकान आदि के न होने से निजी व्यवस्था कर पाना भी सम्भव न था । खाने-पीने, रहने आदि की समस्याओं का कोई समाधान न था । माँ की उच्च भक्ति-भावना और अपने गाँव की विषम परिस्थितियों को देखते हुए बाबा, माँ के अनुकूल स्थितियों के सृजन में सक्रिय हो गये ।

माँ के साथ एक अनुभवी वृद्ध थे, जो एक बार पहले कभी उस गाँव में गये थे और वे वहाँ केवल विद्याराम जी को जानते थे, जो संयोगवश वहाँ नहीं थे । उन्होंने उनके छोटे भाई राम सनेही जी से सम्पर्क किया और

अपना और माँ का परिचय दिया । राम सनेही जी पैंसठ वर्ष के अविवाहित वृद्ध थे जो घर से दूर "ट्यूब वैल" में रहा करते थे । उन्होंने अतिथियों से शिष्टाचार निभाने का प्रयत्न किया और उन्हें चाय पिलाने के लिये दूध की खोज में निकले । कहीं से दूध का खरीदना सम्भव था नहीं, वे श्याम सुन्दर जी के घर दूध माँगने पहुँचे । उनकी भैंस लातन थी, दिन में एक बार सबेरे एक लीटर दूध देती थी, जो उनके घर के काम में उठ चुका था । वे निराश हो लौटने जा रहे थे, उनके उदास चेहरे को देख कर श्याम सुन्दर जी के लड़के ने अपनी माँ से उसे पुनः दुहने का आग्रह किया और इसके लिये भैंस के बच्चे को छोड़ने की अनुमति माँगी । कटरा छोड़ने पर थन में दूध उतर आया और चाय भर के लिये यथेष्ट दूध प्राप्त हो गया । इस प्रकार शाम के चार बजे कैंची आश्रम के समय से ही बाबा ने सब को चाय पिलवा दी । चाय के दौरान वार्ता करते हुए वृद्ध महाशय ने राम सनेही जी से पूछा, "क्या कभी स्वप्न में बाबा आप को दिखायी देते हैं ?" उन्होंने सिर हिलाते हुए समर्थन किया और बोले, "कभी कभी ।"

"पिछली बार कब दिखायी दिये ?" उन्होंने मुस्कराते हुए उत्तर दिया, "कल रात ।" "क्या कह रहे थे ?" वे संकोचवश कुछ उत्तर न दे सके, पर बहुत आग्रह करने पर कहने लगे, "लक्ष्मी नारायण (बाबा का अकबरपुर का नाम) बोला कि माँ आ रही है । अच्छा सत्कार करना । नाक मत कटवाना ।"

चाय पिलाने के बाद साढ़े पाँच बजे सायंकाल राम सनेही जी सब लोगों को लेकर डाक बंगलिया आ गये क्योंकि माँ की इच्छा उसी में निवास करने की थी । यह वर्षों से बन्द पड़ी थी । इसके ताले की चाबियाँ बगल में श्याम सुन्दर जी के पास थीं, पर उस समय मिल नहीं पायीं । श्याम सुन्दर जी इटावा जेल में नाबालिग कैदियों के शिक्षक थे और काम पर गये हुए थे । राम सनेही जी अपनी परिस्थितियों से लाचार थे, इससे अधिक आवभगत करने में वे असमर्थ थे । इसलिए बाबा को इतनी दूर इटावा में अप्रत्यक्ष रूप से श्याम सुन्दर को पकड़ना पड़ा और उन्होंने इन्हें खूब हिलाया । नवागन्तुकों को वे जानते भी न थे और न ये लोग आपके मेहमान बन कर ही आये थे, परन्तु बाबा ने सभी काम इन से ही लेना था, इस कारण वे इन्हें कठपुतली की भाँति नचाते रहे । आप कहते हैं कि दोपहर से ही आपमें अकस्मात् और अकारण घर जाने की बलवती इच्छा जाग उठी । घर का कोई कार्य आपको विवश कर नहीं रहा था, पर आप बहुत बेचैन हो गये और मेल गाड़ी में बैठ कर रवाना हो गये । मेलगाड़ी हिरनगऊ स्टेशन में रुकती नहीं थी, आपने टूण्डला का टिकट लिया और

वहाँ से रिक्शा द्वारा हिरनगऊ आने का विचार किया । एकाएक बाबा की कृपा से हिरनगऊ के पास गाड़ी की रफ्तार कम होने लगी और आप अज्ञात प्रेरणा से दरवाज़े के पास आकर खड़े हो गये । बाबा ने उन्हें यहाँ उतारना था । एक सेकिण्ड के लिये न मालूम कैसे गाड़ी एकाएक रुकी और आप बाहर निकल आये । गाड़ी रोकना बाबा की क्रीड़ा ही थी इसी के कारण वे नीब करौरी नाम से प्रख्यात हुए थे । इस प्रकार श्याम सुन्दर जी जो सदा रात दस बजे पैसेन्जर गाड़ी से घर पहुँचा करते थे, आज बाबा ने अपने काम के लिये उन्हें छः बजे ही घर पहुँचा दिया ।

आप सीधे डाक बंगलिया की चौपाल में आये । वहाँ तालों को खोलने की समस्या उपस्थित थी। आपने घर जा कर चाबियाँ खोजने का प्रयत्न किया, पर आपको भी वे न मिल पायीं । आप तुरन्त लोहे का एक सूजा लेकर उपस्थित हुए जिसके छुआते ही वे पक्के ताले खटाखट ऐसे खुले जैसे किसी ने जादू किया हो । मकान की सफ़ाई करते-करते अंधेरा हो चला । श्याम सुन्दर जी अपने घर से एक लम्बा बिजली का तार ले आये, उससे आपने एक बल्ब को अपने मकान के कोठे की मुड़ेर से ऐसे लटका दिया कि डाक बंगला, सामने चौपाल और चारों ओर दूर दूर तक बिजली का उजाला फैल गया । इसके बाद श्याम सुन्दर जी और राम सनेही जी ने मिलकर अतिथियों के भोजन की तैयारी की । इन दोनों के अलावा कोई भी व्यक्ति इनकी मदद को न था । रात्रि के आठ बजे आगन्तुक कैंची के भक्तों को उनके आश्रम के समय से वहाँ का सा प्रसाद – शुद्ध घी की पूरियाँ और आलू की सूखी सब्जी, खिलाकर तृप्त कर दिया ।

भोजन आरम्भ होने जा रहा था, उसी समय अनेक लोग बाजे-गाजे के साथ चौपाल में प्रकट हो गये । वे बिना किसी आग्रह के, भक्ति भाव से ओतप्रोत, मीरा, सूर और तुलसी के सुन्दर भजन सुनाने लगे और यह सिलसिला रात डेढ़ बजे तक चलता रहा । इस गाँव में न कोई मन्दिर दिखायी दिया और न भक्ति-भावना का वातावरण ही । ये गाने बजाने वाले कौन थे ? कहाँ से और कैसे बिना बुलाये चले आये । राम सनेही जी और श्याम सुन्दर जी ने, न तो इनका स्वागत किया, न चाय-पानी को पूछा और न इनका उत्साह ही बढ़ाया । दूसरे दिन प्रस्थान के समय इनमें से कोई भी वहाँ उपस्थित न था । ये सब बाबा के निराले खेल थे – उनकी सृजनात्मक लीला ।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही आप बैलगाड़ी में सामान रख कर पैदल नागऊ होते हुए फिरोजाबाद-आगरा की मोटर सड़क की ओर जा रहे थे ।

बिना कुछ खिलाये–पिलाये माँ की विदाई बाबा को स्वीकार नहीं हुई । तुरन्त रास्ते में नागऊ पर श्री राम शंकर यादव, इन्सपैक्टर रोडवेज, अपने घर के आगे ऐसे खड़े मिले जैसे उनकी प्रतीक्षा कर रहे हों । आपने माँ को प्रणाम किया और सब को घर ले गये । आपने सुन्दर गायें पाल रखी थीं । उन्होंने उनका स्वच्छ, स्वादिष्ट, अमृतमय दूध सब लोगों को स्वेच्छानुसार पिला कर तृप्त किया । आपको ड्यूटी में आगरा जाना था । आप आठ बजे मोटर सड़क पर सब को ले आये । जब सबेरे की गाड़ी वहाँ आयी तो यह देखकर सब को आश्चर्य हुआ कि उसमें लगातार बारह सीटें आप लोगों के लिये रिक्त थीं । ऐसी कृपा बाबा ने लेखक और उनकी पत्नी पर भी की थी जब वे मेरठ से कैंची आश्रम जा रहे थे । इसका विस्तार पूर्वक उल्लेख प्रसंग संख्या 405 में किया जा चुका है । अस्तु, यादव जी और कण्डक्टर ने मिलकर आप लोगों को गाड़ी में बिठाया और सामान रखवाया ।

बाबा बहुधा कहते थे कि सब की चाबी उनके हाथ में है । इस सारे प्रसंग में हर एक उनकी इच्छा के अनुसार नाचता दिखायी दे रहा है, यहाँ तक कि भैंस भी । रेल और मोटर गाड़ियाँ सदा की भाँति उनके नियन्त्रण में दिखायी देती हैं । महासमाधि के बाद बाबा के अस्तित्व का इससे अधिक और क्या प्रमाण हो सकता है ?

(409) सार्थक स्वप्नादेश

श्री पी. के. चोपड़ा, जनरल मैनेजर, जल निगम, देहरादून ने सन् 1984 में बाबा के ऋषिकेश हनुमान मन्दिर के गुम्बज के निर्माण हेतु श्री शेर सिंह इक्ज़िक्यूटिव इन्जीनियर, आवास विकास देहरादून से परामर्श लिया था । उस समय सिंह जी ने इस कार्य के लिए दस बोरे सीमेंट देने की इच्छा व्यक्त की थी । अपने इस वायदे को वे बाद में भूल गये । एक बार मन्दिर के काम में सीमेंट की बड़ी कमी हो गयी । यद्यपि सिंह साहब को बाबा के दर्शन कभी नहीं हुए थे, पर उस रात वे उनके स्वप्न में प्रकट हो गये । आप कहते हैं कि आपने स्वप्न में एक भारी डील–डौल के व्यक्ति को अपना कन्धा झकझोरते देखा । वह आपसे कह रहा था, **"जल्दी मन्दिरमें सीमेंट पहुँचा दे ।"** आपकी नींद खुल गयी और आपको अपना वायदा याद आया । आपने तुरन्त मन्दिर को सीमेंट खरीदने के लिये एक हज़ार रुपये दिये ।

(410) पत्नी की जान बची

घटना बाबा के महाप्रयाण के बाद दिसम्बर 1973 की है । भुवन चन्द्र तिवारी जी उस समय पिथौरागढ़ रोडवेज स्टेशन पर ए.टी.आइ. के पद पर कार्य कर रहे थे । धुमौली ग्राम, अल्मोड़ा में आपकी पत्नी और माँ रहती थीं । एक दिन आपकी भैंस ने सींग से आपकी पत्नी की जांघों में भीषण आघात पहुँचाया । उनका रक्त प्रवाहित होता रहा और ग्रामीण उपचारों से उसका बहना रोका न जा सका । गाँव के लोग उन्हें सुदूर चौखुटिया में राजकीय अस्पताल ले गये और वहाँ उन्हें भरती करवा दिया ।

तिवारी जी को उसी रात स्वप्न में बाबा के दर्शन हुए, वे बोले, **"तिवारी तेरी औरत ठीक है, घबरा मत, तेरी औरत ठीक है ।"** आपकी नींद खुल गयी और आप बाबा की बात का आशय समझ नहीं पाये । अगले दिन आपको तार द्वारा उक्त घटना की सूचना मिली, साथ ही गत रात्रि के स्वप्न में बाबा के मुँह से निकले शब्द भी आपके कान में गूंज उठे । इससे आपको घबराहट नहीं हुई । आप सीधे घर गये और माँ से स्थिति का बोध कर अस्पताल पहुँचे । वहाँ आपको डा. जगदीश चन्द्र चौधरी के दर्शन हुए जो नवीं से बारहवीं कक्षा तक आपके सहपाठी रह चुके थे । डाक्टर ने आपको बताया कि आपकी पत्नी केवल भगवान् की असीम कृपा से बच गयीं, उनके उपचार से नहीं । उनकी जांघ में इतना बड़ा घाव हो गया था कि अस्पताल लाने तक सारा खून निकल चुका था और टाँकों का लगना भी सम्भव न था । जब आप की पत्नी यहाँ लायी गयीं उस समय रात में हम सब लोग यहाँ ऐसे उपस्थित थे जैसे उन्हीं की प्रतीक्षा में बैठे हों । कारण यह था कि दूसरे दिन अस्पताल में डाइरेक्टर मैडिकल हैल्थ, उ.प्र., का आगमन था । अस्पताल की सफ़ाई और ऑपरेशन रूम के औज़ारों को ठीक किया जा रहा था । आपकी पत्नी के यहाँ पहुँचते ही तुरन्त उपचार आरम्भ कर दिया गया । दूसरे दिन डाइरेक्टर के आगमन के स्थगित होने की सूचना प्राप्त हुई, पर बिना किसी सूचना के एकाएक विश्व स्वास्थ्य संघ के डाक्टर लारी, बाबा नीब करौरी के अमरीकी भक्त, यहाँ आ पहुँचे । उन्होंने इस मरीज़ के उपचार में अपना पूर्ण योगदान दिया और आप स्वस्थ हो गयीं ।

(411) शिवार्चन का आदेश

कैंची आश्रम के सामने एक मकान में भैरव दत्त तिवारी जी रहा करते थे । एक बार महाराज ने आपको स्वप्न में दर्शन दिये और आदेश

दिया कि **अब की श्रावण कृष्ण चतुर्दशी को आप शिवार्चन करें।** आपने अपना स्वप्न श्री माँ को सुनाया। माँ ने आपको समझाया कि बाबा ने आपके हित के लिये स्वप्न में यह आदेश दिया। आपको कैंची मन्दिर में ही यह कार्य अवश्य करना चाहिये। माँ उस समय वृन्दावन जाने की तैयारी में थीं और उन्होंने प्रस्थान कर दिया। जैसी होनी होती है वैसी ही बुद्धि भी पैदा हो जाती है। तिवारी जी ने इसे स्वप्न की बात जान कर महत्व नहीं दिया। वे उस दिन पिथौरागढ़ चले गये और वहीं उनकी मृत्यु हो गयी।

(412) आश्रम को गेहूँ की प्राप्ति

श्री कैलाश चन्द्र सक्सेना बरेली में रहते हैं और कीच्छा में आपका फार्म है। आप बताते हैं कि 30 अप्रैल 1983 को आप एक स्वप्न देखते हुए उठे। स्वप्न में आपको महाराज के दर्शन हुए। वे बोले, **"कैंची आश्रम में गेहूँ नहीं है, जल्दी वहाँ गेहूँ पहुँचा दे।"** उस समय बड़ा पानी और तूफान चल रहा था, इस कारण मैंने बाबा से अपनी लाचारी व्यक्त की। इस पर बाबा कुछ तेज़ स्वर में कहने लगे, **"उठ, तेरे बस का नहीं है, हमारे तो बस का है, जा काम पर जा, तीन मई तक गेहूँ पहुँच जाना चाहिये।"** आप की आँख खुल गयी और आप सबेरे ही अपने फार्म को चले गये। आपने गेहूँ कटवाया, बोरे मँगवाये और उन्हें भरवा कर ट्रक की चिन्ता करने लगे जिसमें वे कैंची भेजे जा सकते। उसी समय एक खाली सरकारी ट्रक आपके फार्म के आगे आकर खड़ी हो गयी। यह ट्रक हल्द्वानी जा रही थी। आपने चालक से बातें कीं और उन गेहूँ के बोरों को आगे कैंची भेजने के लिये हल्द्वानी में बाबा के एक व्यापारी भक्त नन्द लाल जी के पास पहुँचाने को कहा। आपने इनाम के तौर पर कुछ रुपये चालक को देने चाहे पर उसने स्वीकार नहीं किये। सब को अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरित करना और परिस्थितियों का सृजन करना बाबा के सहज कार्य थे। अस्तु, नन्दलाल जी को भी एक ट्रक कैंची के लिये तत्काल मिल गयी और उन्होंने तुरन्त उन बोरों को उसमें लदवा कर आश्रम भिजवा दिया। इस प्रकार 3 मई से पूर्व ही गेहूँ आश्रम में आ गया। वास्तव में यह कार्य बाबा के ही सामर्थ्य का था।

(413) कचौड़ियों का भोग (1)

एक पर्वतीय महिला भवाली में रहती हैं । आपका यह नियम था कि जब कभी बाबा कैंची में निवास करते आप हर मंगलवार को कचौड़ी बना कर लातीं और बाबा को भोग लगाती थीं । कचौड़ियाँ साधारण थीं पर विशेष प्रेम में तली होती थीं । बाबा इन कचौड़ियों पर टूट पड़ते थे । इस महिला को वे कचौड़ी माई कहा करते थे ।

सितम्बर 1973 बाबा के महाप्रयाण के बाद, आपने यह सोचकर कि बाबा अब रहे नहीं, यह नियम समाप्त कर दिया था । फरवरी 1976 की एक रात में बाबा इस महिला के स्वप्न में प्रकट हुए । आप उस समय उनका खाली भोग पात्र लिए खड़ी थीं । बाबा उस खाली बरतन को अपने हाथ में लेकर आपसे कहने लगे, **"तू कचौड़ियाँ लाई नहीं । तू समझती है अब हम नहीं रहे । हम अब भी कैंची में रहते हैं । तू कचौड़ियाँ लाया कर ।"** महिला की आँख खुल गयीं । उसने अगले मंगलवार से अपना नियम फिर से बनाये रखने का संकल्प किया ।

इस बार मंगल के दिन पहाड़ में चारों ओर हिमपात हो रहा था । आप इस सर्दी में कचौड़ियों का भोग लेकर कैंची पहुँची । आश्रम के सभी कमरों में ताले पड़े थे, केवल मन्दिर खुले थे । बाबा की कुटिया का उत्तर–पूर्वी दरवाज़ा आपको कुछ खुला हुआ दिखायी दिया । आपने अपने हाथों से उन किवाड़ों को फैलाया । एक पैर आपका दहलीज़ के बाहर था और दूसरा भीतर, एकाएक आपकी दृष्टि बाबा के तख़्त पर पड़ी । आप भयभीत हो उठीं । आपने बाबा को सशरीर तख़्त पर बैठा देखा । उनके दोनों हाथ तख़्त पर थे और पैर नीचे लटक रहे थे, जैसे वे प्रतीक्षा कर रहे हों । आप त्रसित हो घर भाग आयीं और लगभग तीन महीने विक्षिप्तावस्था में रहीं । श्री माँ के समझाने पर उनके आदेश से आपने अपना नियम पुनः आरम्भ किया । इससे आप स्वस्थ हो गयीं और अब भी वर्षपर्यन्त अपने नियम का यथावत् पालन करती हैं ।

(414) बाबा के सान्निध्य में आनन्द की वर्षा

श्रीमती शकुन्तला साह, मल्लीताल, नैनीताल बाबा के सम्बन्ध में अपना एक बहुत पुराना अनुभव प्रस्तुत करती हैं । आप कहती हैं कि एक दिन आपके पड़ौस में श्री हरि किशन ठेकेदार के घर महाराज का आगमन हुआ, तब आप आठ वर्ष की थीं और धोबी–घाट नैनीताल में रहती थीं । आप

वहाँ दर्शनार्थ गयी थीं । आपने बाबा के कम्बल के एक छोर को पकड़ कर उनसे अपने घर चलने का आग्रह किया । बाबा ने तुरन्त आप की बात मान ली और आप उनके कम्बल का छोर पकड़े हुए उन्हें अपने घर ले आयीं । बाबा के साथ उपस्थित सभी भक्तजन आपके घर आ गये जिनमें श्री सिद्धि माँ भी थीं । बाबा ने भोजन करने का आग्रह स्वीकार कर लिया था, इस कारण बहुत जल्दी में पूरी सब्जी आदि से उनका भोग तैयार किया गया । जब भोग की थाली बाबा के आगे रखी गयी तो भोग ग्रहण करने के पूर्व आप श्री माँ से बोले, **"माँ भजन सुना ।"** माँ ने अपनी सरस एवं मधुर वाणी में तन्मयता से बाबा की स्तुति में यह भजन प्रस्तुत किया –

हो निर्विकार तथापि तुम हो भक्त वत्सल सर्वदा,
हो तुम निरीह तथापि अद्‌भुत सृष्टि रचते हो सदा ।
आकारहीन तथापि तुम साकार सन्तत सिद्ध हो,
सर्वेश होकर भी सदा तुम प्रेम–वश्य प्रसिद्ध हो ।।

करते तुम्हारा ही मनन, मुनि रत तुम्हीं में ऋषि सभी,
सन्तत तुम्हीं को देखते हैं, ध्यान में योगीन्द्र भी ।
विख्यात वेदों में विभो ! सब के तुम्हीं आराध्य हो,
कोई न तुमसे है बड़ा, तुम एक सब के साध्य हो ।।

पाकर तुम्हें फिर और कुछ पाना न रहता शेष है,
पाता न जब तक जीव तुमको भटकता सविशेष है ।
जो जन तुम्हारे पद कमल के असल मधु को जानते,
वे मुक्ति की भी कर अनिच्छा तुच्छ उसको मानते ।।

हे सच्चिदानन्द प्रभो ! तुम नित्य सर्व सशक्त हो,
अनुपम, अगोचर, शुभ, परात्पर ईश–वर अव्यक्त हो ।
तुम ध्येय, गेय, अजेय हो, निज भक्त पर अनुरक्त हो,
तुम भव विमोचन, पद्‌म लोचन, पुण्य, पद्‌माशक्त हो ।।

तुम एक होकर भी अहो ! रखते अनेकों वेश हो,
आद्यन्त हीन, अचिन्त्य, अद्‌भुत आत्मभू अखिलेष हो ।
कर्ता तुम्हीं, भर्ता तुम्हीं, हर्ता तुम्हीं हो सृष्टि के,
चारों पदारथ दयानिधे ! फल हैं तुम्हारी दृष्टि के ।।

हे ईश ! बहु उपकार तुमने सर्वदा हम पर किये,
उपकार प्रत्युपकार में क्या दें तुम्हें इसके लिये ?
है क्या हमारा सृष्टि में ? यह सब तुम्हीं से है बनी
संतत ऋणी हैं हम तुम्हारे, तुम हमारे हो धनी ।।

जय दीनबन्धो, सौख्य–सिन्धों, देव–देव, दयानिधे,
जय जन्म–मृत्यु–विहीन, शाश्वत विश्व–वन्द्य माया विधे ।
जय पूर्ण–पुरुषोत्तम, जनार्दन, जगन्नाथ, जगत पते,
जय जय विभो, अद्भुत हरे, मंगलमते, माया पते ।।

जितनी देर तक यह लम्बा भजन चलता रहा, बाबा ध्यानावस्थित हो उसे सुनते रहे । उनकी आँखों से अविरल अश्रुधारा बहती रही । हाथ उनका भोग की थाली में था, पर वे एक कौर भी खा नहीं पाये । समस्त दरबार निस्तब्ध था । सारे वातावरण में अलौकिक आनन्द छाया था । किसी को भी अपना होश न था । शकुन्तला जी कहती हैं कि उस छोटी उम्र में उन्हें ऐसी आनन्द की अनुभूति हुई कि उनका शरीर कम्पायमान होने लगा । यह एक अविस्मरणीय अनुभूति है । आज लगभग चालीस वर्ष बाद भी जब कभी आप इस भजन को गाती हैं , आपकी स्मृति जाग उठती है । वही दृश्य सामने आ जाता है और अलौकिक कम्पन होने लगते हैं । वास्तव में प्रेम की उत्कृष्टता में बाबा का वही अलौकिक सान्निध्य भक्तजनों को अब भी उसी प्रकार सुलभ है जैसे पहले था, केवल प्रत्यक्ष दर्शन नहीं होता ।

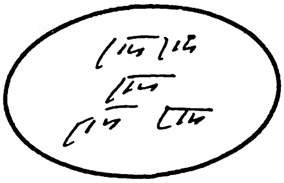

परिशिष्ट

बाबा महाराज की लीलाओं का क्रम आगे भी चला जा रहा है । इस पुस्तक के समर्पण के बाद भी इस सम्बन्ध में लोगों के और जो नए अनुभव प्राप्त हुए हैं , उन्हें पाठकों की जानकारी के लिये परिशिष्ट में स्थान दिया गया है ।

(415) 'अभी सब इन्तजाम हुआ जाता है'

घटना 30 सितम्बर 1987 की है । श्री बी. बी. सिंह और श्रीमती शान्ति देवी के पुत्र राजू, आयु 18 वर्ष, और पुत्री श्रीमती सुमन, आयु 28 वर्ष अपने घर मैनपुरी से बस द्वारा मेरठ जा रहे थे । मार्ग में एटा जिले की छछैना नहर के पास इन की बस क्षतिग्रस्त हो गयी । इस दुर्घटना से बस में बैठे अनेक लोग घायल हो गये । राजू के सिर और हाथ में भीषण चोट आयी और वह अचेत हो गया । सुमन जी को साधारण चोट आयी, पर वे भाई की चोट से घबरा उठीं । उस असहाय स्थिति में आप रोती हुई आर्त भाव से अपने मामा, बाबा नीब करौरी जी को याद करने लगीं ।+

यद्यपि बाबा ने चौदह वर्ष पूर्व अपना शरीर शान्त कर दिया था, पर आज सुमन जी की पुकार पर उन्हें सशरीर प्रकट होना पड़ा । वे आधी धोती पहने और आधी ओढ़े राजू के पास इधर–उधर चलते फिरते दिखायी दिये और आपसे बोले, "चुप हो । अभी सब इन्तजाम हुआ जाता है ।" इस प्रकार आप के अधीर मन को शान्त कर वे अन्तर्धान हो गये ।

इसके बाद ही वहाँ एक जीप आकर रुकी । एक भद्र पुरुष ने उतर कर सुमन जी से सहानुभूतिपूर्ण वार्ता की और सारी स्थिति का बोध कर वह उनको मैनपुरी वापस ले गया । वहाँ यादव नर्सिंग होम में राजू की प्राथमिक

+ इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या 184 का अवलोकन करें ।

चिकित्सा हुई । इसके बाद विशेष चिकित्सा के लिये आप के. पी. श्रीवास्तव नर्सिंग होम आगरा ले जाये गये । वहाँ उन्हें स्वास्थ्य लाभ हुआ ।

(416) बाबा के विग्रह पर नया कम्बल

घटना कैंची आश्रम, 19 जनवरी 88 की है । जाड़ों के दिन थे । आश्रम में सुनसानी छाई हुई थी । केवल चौकीदार, भण्डारी, पुजारी आदि कर्मचारी मन्दिर में अर्चना और आश्रम की देख-भाल के लिये वहाँ थे । मैनेजर महोदय श्री विनोद चन्द्र जोशी उन दिनों आश्रम में ही थे । प्रातःकाल की पूजा हो चुकी थी । नित्य की भाँति सब मन्दिरों की सफ़ाई कर त्रिलोक सिंह ने उनके प्रवेश द्वारों पर ताले लगा दिये थे । बाबा के मन्दिर के पश्चिमी द्वार पर भी ताला पड़ गया था और उत्तरी द्वार लोगों के दर्शन करने के लिये खुला था । प्रसाद पा कर वह अपने कमरे में आराम कर रहा था, विनोद जी फार्म के धन्धों की देख-भाल में वहाँ चले गये थे । केवल अमर सिंह दर्शनार्थियों के स्वागतार्थ मन्दिर परिसर के प्रांगण में बैठा दिन की धूप सेंक रहा था ।

शाम के चार बजे नित्य की भाँति मन्दिरों में आरती की तैयारी के लिये जब त्रिलोक सिंह ने बाबा के मन्दिर का ताला खोल कर प्रवेश किया तो आश्चर्यचकित हो गया । बाबा के विग्रह पर जो कम्बल प्रातः आरती के समय था उसके स्थान पर एक दूसरा ही कम्बल नज़र आ रहा था । पास जाकर देखने पर ज्ञात हुआ कि बाबा ने पुराने कम्बल के ऊपर एक नया कम्बल ओढ़ रखा है । इससे उसके मन में अनेक शंकाएँ होने लगीं । कैंची में बाबा के विग्रह को धोती और कम्बल से सुशोभित किया जाता है, क्योंकि ये ही वस्त्र वे पहना करते थे । विनोद जी समय-समय पर जब मन्दिरों में श्रृंगार बदलते, इस विग्रह की धोती और कम्बल भी बदल दिया करते थे, पर आज इस बदलाव की सम्भावना भी नहीं थी । फिर एक कम्बल के ऊपर दूसरे कम्बल का ओढ़ाना भी अनोखी बात थी । अस्तु, विनोद जी के फार्म से लौट आने पर उसने उन्हें सब बातें सुनायीं । उन्होंने मन्दिर में प्रवेश कर देखा, यह नया कम्बल उन कम्बलों से भिन्न था जिन्हें अदल-बदल कर वे पहनाते थे । अमर सिंह से पूछने पर उसने कहा, "आज केवल दो व्यक्ति दर्शन करने आये थे, पर उनके पास चढ़ाने को कोई कम्बल न था। फिर जब प्रवेश द्वार पर ताला पड़ा था तो भीतर जा ही कौन सकता ?" कहाँ से बाबा यह कम्बल उठा लाये और कैसे उन्होंने इसे धारण किया, यह एक रहस्य बन गया । यह नया कम्बल आश्रम में सुरक्षित है ।

(417) कचौड़ियों का भोग (2)

घटना कैंची आश्रम, बुधवार दिनांक 3 फरवरी 88 की है । इसके बारह वर्ष पूर्व फरवरी 1976 में अपनी समाधि के बाद बाबा कचौड़ी माई से एक खिलवाड़ कर चुके थे ।+ यह बाबा का दूसरा खिलवाड़ है ।

फरवरी 1976 की घटना के बाद से माई नियमपूर्वक हर मंगल को कैंची में उनके विग्रह के आगे कचौड़ियों का भोग लगाती आ रही थीं । फरवरी 88 के प्रथम मंगल के दिन आप अपने घर से चार कि.मी. दूर भूमियाधार में बाबा द्वारा निर्मित हनुमान मन्दिर दर्शनार्थ गयी थीं, इस कारण कैंची न जा सकीं । आप दूसरे दिन बुधवार को कचौड़ियों का भोग लेकर कैंची आयीं ।

जाड़ों के दिन थे, मन्दिर में सुनसानी थी । प्रातःकाल की पूजा हो चुकी थी और त्रिलोक सिंह मन्दिर परिसर के प्रांगण में धूप में बैठा मन्दिर के बर्तन साफ़ कर रहा था । उसने माई को आते देख लिया था और अपने काम को जल्दी निबटा कर, वह माई की कचौड़ियों का बाबा को भोग लगाने की तैयारी में था । माई ने भी इस कार्य के लिये उससे आग्रह कर दिया था और यह सोच कर कि वह पीछे से आता ही होगा आप सीधे बाबा के मन्दिर में पहुँची । उन्होंने मन्दिर के उत्तरी द्वार पर रखी दान–पेटी पर अपने टिफिन का डिब्बा, जिसमें वे कचौड़ी लायी थीं, अच्छी तरह रख दिया । आप सदा कचौड़ियाँ कटोरदान में लाया करती थीं जिसका ढक्कन ढीला हो गया था, इस कारण आप इस बार टिफिन कैरियर के डिब्बे में लायीं, जिसका ढक्कन सख्त था । त्रिलोक सिंह के आने में विलम्ब होता देख, आपने मन्दिर की परिक्रमा करनी आरम्भ कर दी । आप इस परिक्रमा में मन्दिर के पीछे ही पहुँच पायी थीं कि एकाएक आपने अपने भोग के डिब्बे का संगमरमर के फर्श पर गिरने का शब्द सुना । आप तुरन्त मन्दिर के उत्तरी द्वार की ओर लपकीं । उधर त्रिलोक सिंह ने भी यह शब्द सुना । वह मन्दिर को भागता हुआ गया, यह जानने के लिये कि कैसे भोग का डिब्बा माई के हाथ से गिर पड़ा । दोनों लगभग साथ ही मन्दिर के आगे द्वार पर आये । दोनों यह देख कर चकित हो गये कि डिब्बा यथास्थान दान–पेटी के ऊपर था और फर्श पर बिना गिरे उनको उसके गिरने की ध्वनि सुनायी दी । डिब्बा अभी तक खोला नहीं गया था, पर उसका ढक्कन दान–पेटी के ऊपर अलग से रखा दिखायी दिया । कुछ

\+ इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या 413 का अवलोकन करें ।

कचौड़ियाँ मन्दिर के भीतर इधर–उधर बिखरी थीं और कुछ डिब्बे में बची थीं । यह सब कैसे हुआ ! बात किसी के समझ में नहीं आयी ।

कुछ समय बाद. कचौड़ी माई को स्वतः बोध हुआ कि यह सब उनकी भूल के कारण हुआ। वे नियमानुसार मंगल के दिन भोग न ला पायी थीं । बाबा उन्हें यही दर्शाना चाहते थे ।

(418) हनुमान विग्रह में बाबा के दर्शन

26 जुलाई 1989 की सुबह ले. कर्नल एस.एस. चिन्वान महोदय अपनी पत्नी के साथ दर्शनार्थ कैंची आश्रम में आये थे । आपने बाबा से सम्बन्धित सन् 1969 का अर्थात् बीस वर्ष पुराना अपना अनुभव स्वतः उपस्थित कार्यकर्ताओं को सुनाया जो इस प्रकार है :–

हम बाबा नीब करौरी जी को जानते नहीं थे । इनकी महानता की जानकारी हमें नैनीताल में देवी लाल साह जी से प्राप्त हुई और उनके ही आग्रह से हममें बाबा के दर्शन की इच्छा जाग उठी । मैं अपनी पत्नी और दो बच्चों को, जिनकी उम्र छः और चार वर्ष थी, लेकर कैंची आया । बाबा के दर्शन हुए । हम दोनों के प्रणाम करने के बाद हमारे बच्चे बिना हमारे कुछ कहे, स्वतः बाबा के चरणों में दण्डवत् हो गये । बाबा ने अपने दोनों हाथ उनके सिरों पर रख कर आशीर्वाद देते हुए कहा कि **ये जीवन में अच्छी प्रगति करेंगे और उच्च पद प्राप्त करेंगे** । बाबा का यह आशीर्वाद सुनकर हम लोगों को उस समय बहुत प्रसन्नता हुई और अब उनकी वाणी सार्थक होती दिखायी दे रही है ।

अस्तु, इसके बाद बाबा मुझ से बोले, **"तू तो नास्तिक है, तुझे इन सब बातों में विश्वास नहीं है ।"** मैंने उनकी बात का समर्थन करते हुए कहा, "वास्तव में, मैं इन सब में विश्वास नहीं स्थापित कर पाया ।" बाबा ने तुरन्त हमें विदा करते हुए कहा, **"अब जाओ, मन्दिर में हनुमान के दर्शन करो ।"** उनके पास से लौटने पर जब हम लोग मन्दिर में हनुमान विग्रह के सम्मुख पुनः उपस्थित हुए तो हमें हनुमान जी की मूर्ति नहीं दिखायी दी । उस स्थान में हमें मूर्तिवत् साक्षात् बाबा के दर्शन हुए ।+ यह दृश्य देख कर हम लोग अवाक् रह गये और कुछ समय तक मूक हो दर्शन करते रहे । तदनन्तर मन्दिर से बाहर चले आये । इस घटना से हमारी विचारधारा ने पलटा खाया । हमें जब कभी इस मार्ग से जाने

+ इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या (326) का भी अवलोकन करें ।

का अवसर मिलता है, हम यहाँ आकर दर्शन अवश्य करते हैं । हर बार हमारी पुरानीं स्मृति जाग उठती है ।

(419) बाबा को गुरु बनाने का आदेश

उन्नाव निवासी श्री प्रेम शंकर मिश्र, कानपुर में न्यू इंडिया इंश्योरेंस कम्पनी लिमिटेड में प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं । आरम्भ में आप कर्म में ही आस्था एवं विश्वास रखते थे, ईश्वर प्रार्थना में नहीं । सन् 1975 से आपकी विचारधारा में परिवर्तन आता गया और जैसी कि आपके बारे में भविष्यवाणी थी कि आपको शीघ्र हनुमान–सिद्धि प्राप्त होगी, आपकी आस्था हनुमान जी में दृढ़ होती गयी । हनुमान जी आपको आध्यात्मिक संकेत देते, आपसे वार्ता करते और आपका मार्ग प्रदर्शन करने लगे । आप भी रोज़मर्रा के अहम् निर्णय हनुमान जी की इच्छा से ही लेने लगे । हनुमान जी बराबर आपकी सभी इच्छाओं को पूरी करते रहे हैं । इस प्रकार आपको जीवन में अनेकानेक अद्भुत एवं आश्चर्यजनक अनुभव होते रहे ।

सन् 1979 में हनुमान जी ने आपसे बाबा नीब करौरी जी को, जिन्होंने अपना शरीर 1973 में शान्त कर दिया था, गुरु बनाने को कहा और यह भी कहा कि मेरी प्राप्ति तुझे उन्हीं की कृपा से हुई है और तेरी कई जन्मों की योग–साधना उन्हीं की कृपा का परिणाम है । अतः आपने बाबा को अपना गुरु बनाया और हनुमान जी के निर्देशन से ही आप कैंची आश्रम आये और बाबा के विग्रह से गुरु मन्त्र प्राप्त किया । इस अलौकिक घटना का वर्णन मिश्रजी के शब्दों में ही नीचे दिया जाता है ।

29 मार्च 1978 के प्रातःकाल 4 बजे मैंने स्वप्न में देखा कि हनुमान जी अपने पूर्ण (खड़े) रूप में मेरे घर पधारे और मुझे आवाज़ देकर बोले, "बेटा मैं तुमसे प्रसन्न हूँ, तुम जो भी वरदान चाहो माँग लो ।" मैंने स्वप्न में ही उठकर उनके चरण स्पर्श किये और कहा "यदि आप मुझसे वास्तव में प्रसन्न हैं तो मुझे बतायें कि आप मेरे किस कर्म से प्रसन्न हुए ताकि मैं उन कर्मों को और अधिक से अधिक कर सकूँ ।" इस पर हनुमान जी ने मेरे पिछले जन्म के सम्बन्ध में कुछ बताकर आदेश दिया कि मुझे इस जन्म में योग साधना की दिशा में कहाँ से प्रारम्भ करना है । इस सम्बन्ध में अपने आदेशों को समझाने के बाद उन्होंने बताया कि उनकी प्रसन्नता का मुख्य कारण मेरी कर्म के प्रति आस्था एवं विश्वास है । उनके द्वारा बताये गये योग साधना के मार्ग पर चलने का निर्णय लेकर मैंने उन्हीं की मूर्ति के सामने योग साधना प्रारम्भ की । इस प्रकार की योग साधना करते हुए लगभग 6 माह बाद, मुझे ईश्वरीय संकेत मिलने लगे ।

31 मई 1979 को मेरठ में योग–साधना के दौरान, मैंने स्वामी हनुमान जी से प्रार्थना की कि वे मेरी साधना में सुधार लाने के लिये मेरा मार्ग प्रदर्शन करने की कृपा करें । प्रत्युत्तर में हनुमान जी ने मुझे आदेश के रूप में कहा "और तो सब ठीक है, किन्तु तुमने कोई गुरु नहीं बनाया ।" मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार कहा, "स्वामी ! आज तक मुझे जो भी ज्ञान आपके आशीर्वाद से प्राप्त हुआ उसके अनुसार गुरु ईश्वर का मार्ग बताता है । क्योंकि आप मुझे मिल ही गये, मुझे गुरु की क्या आवश्यकता है ? पुनः सत्‌गुरु, जो योग्य और भरोसे का हो, का ढूँढ़ना मनुष्य के लिये सम्भव नहीं । यदि ऐसा गुरु मिल भी जाय तो शायद वह हिमालय की गुफा में ही मिलेगा, जिसकी कृपा प्राप्त करने के लिये अपने पारिवारिक एवं सांसारिक दायित्वों को देखते हुए, मेरे लिए वहाँ जाना कैसे सम्भव होगा ?" इसके उत्तर में हनुमान जी बोले, "पहले तो गुरु की आवश्यकता समझ लो फिर योग्य व भरोसेमंद गुरु के बारे में विचार करेंगे ।

"संसार में मनुष्य चाहे कितना ही ज्ञानी हो, केवल अपने दम पर अपने समस्त सांसारिक कार्यों को पूर्ण रूप से संपादित नहीं कर सकता । यदि अपवाद में ऐसा सम्भव भी हो तो वह कार्य–संपादन के अहं से नहीं बच सकता । वह अहं उसके पतन का कारण बन जायेगा ।"

"ईश्वर कर्म से मुक्त है, अतः वह अपने प्रिय से प्रिय मनुष्य के लिये भी स्वयं कर्म नहीं कर सकता । यह गुरु की महिमा है कि शिष्य जो कार्य अपनी क्षमता से न पूरा कर सके, उसे शिष्य के लिये पूर्ण करने में सहायता करे । गुरु के होते शिष्य अपनी समस्त उपलब्धियों का श्रेय पूर्ण रूप से गुरु कृपा को ही देकर, समस्त प्रकार के अहं एवं अन्य विकारों से स्वयं को अछूता रख सकता है और सब प्रकार से कल्याण को प्राप्त होता है ।"

सत्‌गुरु के चयन के बारे में विस्तृत जानकारी न देकर, मुझे बाबा नीब करौरी को गुरु रूप में धारण करने का आदेश दिया । "क्योंकि उन्होंने सन् 1973 में निर्वाण प्राप्त कर लिया है, अतः उनकी सेवा या कृपा प्राप्त करने के लिये कहीं जाने की कोई आवश्यकता नहीं है । हाँ, इस जन्म में एक बार उनके स्थान पर गुरु धारणा तथा गुरु–मन्त्र प्राप्ति के लिये जाना आवश्यक होगा । मेरी प्राप्ति भी तुम्हें उन्हीं की कृपा से हुई है और तुम्हारे कई जन्मों की योग–साधना उन्हीं के मार्ग प्रदर्शन एवं कृपा का सहज़ परिणाम है ।"

निर्वाण प्राप्ति के बाद गुरु मंत्र कैसे प्राप्त किया जा सकता है ? इस अहम् प्रश्न के उत्तर में मुझे 'औरा किरणों' की साधना का आदेश दिया गया, जिनके द्वारा किसी भी सिद्ध आत्मा को वायुमय शरीर में पृथ्वी पर

बुलाया जा सकता है । आवश्यक निर्देश प्राप्त करने के बाद, मैं तुरन्त कानपुर आया, जहाँ मेरे परिवार के बाकी लोग रहते थे और सब को अपना आशय बताकर मैंने गुरु महाराज को अपना गुरु तुरन्त मान लिया । ठीक वैसे ही जैसे सावित्री ने सत्यवान को अपना पति माना था । ततपश्चात तुरन्त 'औरा किरणों' की साधना में लग गया । गुरु महाराज के स्मरण मात्र से शरीर रोमांचित हो उठा तथा हृदय में ऐसी अनुभूति हुई मानो जन्म–जन्मान्तरों से खोजी जा रही मणि सहज ही प्राप्त हो गयी ।

कैंची आश्रम के लिये हमारे परिवार की यह ऐतिहासिक यात्रा दिनांक 15 जून 1979 से प्रारम्भ हुई । नैनीताल के लिए लखनऊ से काठगोदाम की गाड़ी सायं लगभग आठ बजे की थी, हम लखनऊ सबेरे ही पहुँच गये । सायंकाल हनुमान सेतु मन्दिर में गुरु महाराज की प्रतिमा के दर्शन किये और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया ।

16 जून 1979 दोपहर को हम कैंची आश्रम, नैनीताल पहुँचे । प्रारम्भ में ऐसा प्रतीत हुआ कि हम जिस आशय से आये थे वह सफल नहीं होगा, क्योंकि प्रत्येक वर्ष 15 जून को ही कैंची आश्रम में वार्षिक महोत्सव एवं भडारा होता है । इस कारण रुकने के लिये यहाँ कोई स्थान 16 जून को उपलब्ध नहीं था । हम लोगों को अधिकारियों द्वारा यह आदेश मिला कि हम स्नान आदि करके दर्शन कर वापस चले जायें, क्योंकि इस समय रुकने का स्थान किसी नए व्यक्ति के लिये नहीं है । जो लोग गुरु महाराज के समय से आते रहते हैं या जिन्होंने अपना कमरा बनाया हुआ है वे ही इस समय रुक सकते हैं । स्नान करने के पूर्व ही तुरन्त मैं समाधिस्थ हो गया और गुरु महाराज का ध्यान, उनके एक चित्र के आधार पर करने लगा । साथ ही यह प्रार्थना करने लगा कि इष्टदेवता के आदेश के अनुसार मैंने तो आपको अपना गुरु मान ही लिया है और ऐसा सुना है कि गुरु सदैव शिष्य के कल्याण के लिये सारी व्यवस्था अपने आप करता रहता है । इन विषम परिस्थितियों में बिना रात्रि में रुके हुए हम आपसे किस प्रकार गुरु मन्त्र प्राप्त कर सकते हैं आदि प्रश्न, प्रार्थनाएँ मैं करता रहा । इसी बीच कोई महोदय मन्दिर से दौड़ते हुए आये कि गुरु महाराज ने विश्राम करते हुए किसी को स्वप्न में यह आदेश दिया है कि मन्दिर के बाहर रुके हुए तथा कानपुर से आये हुए प्रेम शंकर मिश्र एवं उनके परिवार के ठहरने की व्यवस्था तुरन्त की जाय । फिर तो जिसे देखो वही अपने कमरे में हम सब को ठहरवाने का निमन्त्रण देने लगा । खैर, स्नान आदि के बाद हम एक कमरे में ठहर गये ।

पूर्व योजना के अनुसार दूसरे दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त के समय स्नान आदि के बाद 'औरा किरणों' की साधना शुरु की । लगभग 15–20 मिनट के बाद गुरु महाराज ने अपने सम्पूर्ण वायुमय शरीर के दर्शन दिये । आज भी हमें याद है कि उस समय सारा वातावरण अनोखी खुशबू से भर गया था और मेरे शरीर का एक–एक रोम पूर्णरूप से रोमांचित हो उठा । पूजा–अर्चना के बाद गुरु महाराज ने गुरु मन्त्र दिया एवं आशीर्वाद देकर विदा किया । प्रातः 9 बजे हमने कैंची आश्रम से विदा ली ।

यह लीला वैचित्र्य है । यहाँ हनुमान जी अपनी ही प्रतिमूर्ति बाबा नीब करौरी को, किसी विशेष कारण से गुरु बनाने का आदेश दे रहे हैं ।

(इस सम्बन्ध में प्रसंग संख्या 47, 138, 198, 407 और 418 का अवलोकन करें ।)

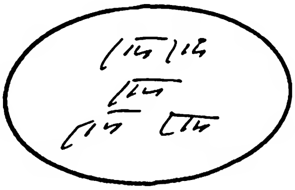

शुद्धि पत्र

(नीचे कुछ अशुद्धियों की सूची दी जा रही है, पाठक सुधार लेने की कृपा करें)

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
9	10	सुमित्रा नन्दन (कवि)	कविवर सुमित्रानन्दन पन्त
26	30	राम, कृष्ण	रामकृष्ण
49	5	लीस	सम्भवतः लीज़
91	9	भाव कुभाव अलख	भायँ कुभायँ अनख
91	14	नहि तंह	नहिं तहँ
		लस लेसा	लवलेसा
40	1	30 मई 1995	1 अप्रैल 1995
400	9	कीच्छा	किच्छा

श्री कैंची हनुमान मन्दिर एवं आश्रम
कैंचीधाम नैनीताल